



साहित्य परिवार



रामदरश मिश्र
आलोचना के नए रंग

सम्पादक - डॉ. सुरजीत यादव

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi

अग्रिक की बान

अग्रिक फिर एक बार सामन होन की कोशिश में हाथ-पंख मार रहा ह कि गर्भ में जल्दी बाहर आऊं और अनुभवी रचनाकारों, विद्वान पाठकों से रुबरु होकर उनके साहित्यिक जीवन में कोई नई गीतक, तानगी चेतना जगाऊं। अग्रिक इस बान पर हँगा कि अंग में यह क्या कह गया 'म किर्मी का कर्ता जगाना है। जगाने तो मत्य आंग इंश्रुण स्वरूप हमारा मचनन साहित्य परिवार में अटूट रूप में जुड़े हुए क्रियाशील रचनाकार वाचक हैं। अथा. पाठकों का अपना ही होगा।

संपादक

साहित्य परिवार

सूर्यदीन यादव का पचासत गमथ साहित्य मंशिम में प्रकाशित

साहित्य परिवार के सदस्यों के लिए विशेष छूट

आधी कीमत पर मात्र तीन में रूपए अग्रिम

भंजन पर डाक खर्च हम वहन करेंगे।

“समकालीन साहित्य : सृजन और समीक्षा”

सूर्यदीन यादव की काबिता, कहानी, उपन्यास, तथा

समीक्षा में रुबरु होकर उनके समय

साहित्य का मत्य-मार पाएँ।

संपादक

साहित्य परिवार

मो. ९४२७५ ८४६२५

NSL/ISSN/INF/2011

ISSN 2250-1495

गुजरात एवं उत्तरप्रदेश से एक साथ प्रकाशित हो रही साहित्य कला एवं

संस्कृति-चेतना की षट्मासिक पत्रिका

संपादक : डॉ. सूर्यदीन यादव, १६वाँ रामदरश मिश्र विशेषांक २०१२

संस्थापक

संरक्षक

डॉ. रघुनन्दन यादव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

डॉ. शशिबहादुरसिंहश्रीवास्तव

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८



सरिता प्रकाशन

३, पुनीत कॉलोनी, पवन चर्को रोड,

नडियाद-२, जि. खेडा (गुज.)

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

मो. ९४२७५ ८४६२५ / ८००४१७०६८

साहित्य-परिवार' के सभी सदस्यों रचनात्मक अवसरों में शामिल हो सकते हैं। लिखन सम्बन्धी कोई भी विवाद नडियाद (गुज.) में ही सुलझाए जायेंगे। इस अंक का मूल्य १००२ रूपए है। 'साहित्य-परिवार' की वार्षिक सदस्यता टाउन शुल्क ३०० रु. मात्र है। आवेदन वतन २,००० रु., संरक्षक वतन २,००० रु. है।

1. 'प्रेम' के प्रति आस्थावान रामदरश मिश्र - प्रा. सूर्येन्द्र कुमार यादव / 07
2. रामदरश मिश्र के आवृत्त में गुजरात - डॉ. गिरिश सोलंकी / 11
3. रामदरश मिश्र की साहित्य-यात्रा - डॉ. एम.जी. गांधी / 15
4. रामदरश मिश्र की कविताएँ: अस्तित्व-से आगाज तक - डॉ. जितेन परमार / 19
5. रामदरश मिश्र : सामाजिक संरोकार के कवि - डॉ. विजय महादेव गाडे / 24
6. रामदरश मिश्र और उनकी कविता का चेहरा - डॉ. शशि पंजाबी / 32
7. जल टूटता हुआ : आँचलिक-रंगों की पहचान - डॉ. यशवंत गोस्वामी / 40
8. रामदरश मिश्र की बाल चरित्र प्रधान कहानियाँ - डॉ. अमी रवे / 49
9. रामदरश मिश्र की कहानियों में दलित विमर्श - डॉ. धीरजभाई वणकर / 60
10. वसंत का एक दिन : समाज का सच्चा आइना - प्रा. मुकेश कुमार कांजिया / 66
11. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में राजनैतिक संदर्भ - डॉ. अमरासिंह वधान / 71
12. अपने लोग में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक यथार्थ - डॉ. मूलजीभाई पटेल / 80
13. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आँचलिकता - डॉ. जशवंतभाई पंड्या / 83
14. रात का सफर में नारी-चेतना - प्रा. विशाल परमार / 89
15. बिना दरवाजे का मकान और पात्र विश्लेषण - प्रा. हिममतीसिंह चौहान / 95
16. अन्तर्विरोध का साक्षी : सूखता हुआ तालाब - चन्द्रलता यादव / 101
17. बीस बरस उपन्यास में ग्रामीण रिवेश - डॉ. सविता शुक्ल / 105
18. अभावों के बीच दबी आजादी : जल टूटता हुआ - डॉ. बी.के. कलासबा / 112
19. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में भाग्योप-विशेषता - डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे / 118
20. रामदरश मिश्र : एक साहित्यिक परिचय - रंगपरिया वृत्ति जे. / 123
21. रामदरश मिश्र का समग्र साहित्य : एक परिदृश्य - डॉ. एन.टी. गामीत / 128
22. 'जहाँ मैं खड़ा हूँ' आत्मकथा में प्राकृतिक सौन्दर्य - डॉ. कल्पना रासठण्डा / 133
23. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक चेतना - डॉ. दक्षा जानी / 138
24. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में जल की प्रतीकत्वकता - भालोडिया मित्तल / 146
25. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में शोषित नारी - नीता वाघेला / 150
26. रामदरश मिश्र के काव्य में शोषण का विरोध - पुष्पा वाघेला / 156
27. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी संघर्ष - डॉ. दिलीप मेहरा / 162
28. जल टूटता हुआ : गाँव का सत्य चित्र - प्रा. इन्दुबहन आर. माहला / 169
29. विवाहेतर संबंध के परिप्रेक्ष्य में रामदरश मिश्र के उपन्यास - प्रवीण पी. चौहाण / 173
30. 'जलटूटता हुआ' : उपन्यास में ग्राम चेतना - अनिल कुमार खावडु / 178
31. अनुभूति के परिप्रेक्ष्य में रामदरश मिश्र के काव्य - दीपक कुमार सोदरवा / 182
32. गहरे सौन्दर्यानुभवों के कवि रामदरश मिश्र - प्रा. राजेन्द्र परमार / 188

दिल्ली विश्वविद्यालय में वर्ग से पढ़ाकर जब बाहर निकलते थे, उस समय डॉ. रामदरश मिश्रजी से मेरी पहली मुलाकात दिनांक 13-12-1979 को (मॉडल टाउन में मकान नंबर ई-11) उनके घर बैठक रूप में घंटों तक वार्तालाप करते हुए, चाय की चुस्कियाँ लेते हुए, साहित्यिक एवं शोध-कार्य संबंधी बातें करते हुए होने के एक दिन पूर्व) दिल्ली विश्वविद्यालय स्टूडेंट्स को पढ़ाकर बाहर निकलते थे तथा (हम दोनों एक दूसरे से अपरिचित) खड़े खड़े दो चार मिनट की देखा देखा और फिर उन्होंने मेरी डायरी में गुरुवर द्वारा लिखे गलत पते ई-4 को काटकर दूसरा सही पता की जगह ई-11 मॉडल टाउन, लिख कहा कि 'कल सुबह इस सही पते पर आ जाइए।'

उस पहली मुलाकात के बाद तो आज तक वे एक (आत्मा या ईश्वर) सत्य-आस्था की तरह मुझमें रहते हैं। और मैं अपने को उनके समीप पाता हूँ। हम उनसे और उनके परिवार तथा उनके बहुमुखी साहित्य से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। हम वास्तव में उनकी प्रतीकत्वकता 'जल टूटता हुआ' और 'अपने लोग' के समान हैं 'पानी के प्राचीर' और 'सूखता हुआ तालाब' हैं। 'बिना दरवाजे का मकान' की तरह आज भी यह जीवन कितना असुरक्षित है, उसे तो मिश्रजी का साहित्य पढ़ने पर ही महसूस किया जा सकता है। ऐसे लगता है, जैसे मिश्रजी आज भी मेरी डायरी के पन्ने पर गलत पते की जगह सही पता लिख रहे हैं। उस एक गलती को सुधारने के बाद तो मिश्रजी ने अनेक गलतियाँ सुधारने के लिये सुझाव दिये। यहाँ तक कि मेरे पास आये मिश्रजी के सैकड़ों पत्रों की पंक्तियाँ, एक एक शब्द भरे जाने पहचाने होते हैं। मैं उनके बहुमुखी साहित्य-सृजन को आप सुधी पाठकों शोधाधियों तक पहुँचाने के लिए यह प्रयास कर रहा हूँ।

दूसरी बात यह कि मैं नये लेखकों के नये आलेखों को छापकर मिश्रजी के साहित्य को एक नया मोड़ देना चाहता हूँ। अतः अटूट रूप से जुड़े नये रचनाकारों को प्राथमिकता देते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। यहाँ आप पायेंगे कि रामदरश मिश्र नये दृष्टिकोण में नवीनतम एवं भिन्न लगेंगे। रचनाएँ, कृतियाँ, वही हैं उन्हें देखने समझने परखने का नजरिया भिन्न है। समय की मांग के अनुसार विशेषकर साहित्य एवं संपादन के स्वतंत्र्य को लक्ष्य में रखकर नई सामग्री देने के लक्ष्य में यह प्रयास महत्वपूर्ण माना जायेगा। यहाँ आप डॉ. रामदरश मिश्रजी की सर्भी विधाओं को आंशिक रूप से पढ़ ग्रहण कर सकेंगे।

ता. 12-10-2012

सूर्यदीन यादव
(संपादक : साहित्यकार)

डॉ. रामदरश मिश्र - सामाजिक सरोकार के कवि !

डॉ. विजय महादेव गाड़े

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. रामदरश मिश्र गद्य तथा पद्य दोनों विधाओं के सशक्त हेस्ताक्षर हैं। मिश्रजी ने कविता, गीत, गजल, कहानी, उपन्यास, निबंध, समीक्षा, आत्मवृत्त, शोध, यात्रावृत्त आदि अनेक विधाओं के माध्यम से स्वयं को अधिव्यक्त किया है। हाल ही में चौदह खण्डों में मिश्रजी की रचनावाली का प्रकाशन हुआ है। मूल रूप से आप कवि ही हैं और बाद में गद्य के साहित्यकार अर्थात् कहानीकार एवं उपन्यासकार। 'पथ के गीत' (1951) उनका सर्वप्रथम काव्य-संकलन है। 'पानी के प्राचीर' उनका आँचलिक उपन्यास बहुचर्चित रहा है जिसने 'रेणु' की 'मैला आँचल' की परंपरा को समृद्ध किया है। 'कभी कभी इन दिनों', 'आग कुछ नहीं बोलती', 'ऐसे में जब कभी', 'बारिश में भीगते बच्चे', 'कंधे पर सूरज', 'प्रतिनिधि कविताएँ' आदि काव्य संकलन विशेष महत्त्वपूर्ण मान्यता रखते हैं। प्रस्तुत आलेख में हमने इन्हीं काव्य संकलनों को मद्देनजर रखते हुए अपने विचारों को प्रकट किया है।

मूलतः कविता साहित्य की सबसे प्राचीन एवं लोकप्रिय विधा रही है और कई समीक्षकों एवं आलोचकों ने कविता की मृत्यु की घोषणा की है। 'कविता की मृत्यु हो चुकी है' यह नारा सर्वप्रथम पश्चिम से उभरा था। किन्तु हम सब के लिए सौभाग्य की बात है कि इतनी सारी आलोचना होने के बावजूद भी कविता का अंत नहीं होता और भविष्य में न इसकी कोई संभावनाएँ हैं। इस संदर्भ में अचानक याद आते हैं मुक्तिबोध जिन्होंने कभी लिखा था- "नहीं होती, कहीं भी खत्म कविता नहीं होती / कि वह आवेग त्वरित कालयात्री है / मैं उसका मैं नहीं कर्ता पिता-धाता / कि वह कभी दुहिता नहीं होती / परम स्वाधीन है वह विश्व-शास्त्री है / गहन गंभीर छाया आगामिष्यत की / लिए वह जन-चरित्रि है।"¹

साहित्य जीवन का दर्पण होता है। साहित्यिक जीवन से कुछ प्रेरणाएँ ग्रहण करता है और उन अनुभवों का साधरणोकरण करते हुए साहित्य को वापस देता है। मुक्तिबोध मूलतः जिस 'ज्ञानत्मक संवेदन' और 'संवेदनात्मक ज्ञान' ही बात करते हैं वही बात सरस साहित्य पर लागू होती है ऐसा हम मानते हैं।

रामदरश मिश्र अपनी साहित्य यात्रा के संदर्भ में लिखते हैं- "मेरे अनुभवों की यात्रा अत्यंत स्व से लेकर-बृहतर सामाजिक यथार्थ तक है, मन की एकांत सौंदर्य प्रतीतियों से लेकर सामाजिक विघटन, मूल्य हड़ता और मानव-यातना की -उद्विघ्नताओं तक है, धूप की तरह एक फूल से लेकर आकाश के आंदोलित विस्तार तक है। मैंने अपने परिवेशजन्य अनुभवों को सदा महत्व दिया है इसलिए न तो मैंने बहुत आधुनिक कहे जा सकनेवाले कलाकारों की तरह विश्व के अनुभवहीन यथार्थ को अपने से पैबंद की तरह जोड़ा है और न अकवितावादियों या इसी तरह की अन्य स्वकीन्द्रित, अस्वीकृतिमयी, छद्मधारकों के कवियों की तरह परिवेश अस्वीकारा है।"²

रामदरशजी की यह अवधारणा मुक्तिबोध की परिभाषा के संदर्भ में कितनी सार्थक है यह बताने की जरूरत नहीं है। अतः मिश्रजी का भाषा की ओर देखने का दृष्टिकोण अपने आप स्पष्ट होता है और शायद साहित्य की उपादेयता जीवन के संदर्भ में अपने आप स्पष्ट हो जाती है। इसलिए कवि लिखता है- "दरअसल / भाषा एक ही है / लेकिन उसे विविध अर्थ देते रहते हैं / समय संदर्भ / और हाथों के निजी स्पर्श / ये पहले हमारे अनुभव में उतरते हैं / फिर समा जाते हैं भाषा में / अर् 'बनकर।"³

आज के तथाकथित 'उत्तर आधुनिकता' के परिवेश ने सारे जीवन को व्याप्त किया है। हमने कई बार कई स्थानों पर उत्तर आधुनिकता पर विचारों को स्पष्ट करते हुए यह कहा भी है कि हम अभी तक आधुनिक नहीं हुए हैं तो उत्तर आधुनिकता की बात करना लगभग बेमानी ही है। किन्तु इसके साथ-साथ बाजारवाद ने इतनी हड़ता से अपने 'अंगद पाँव' जमाए हैं कि अब यह उत्तर आधुनिकता कभी एक 'विराट फंतासी' - सी प्रतीत होती थी जो अब एक 'कठोर यथार्थ' के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हो रहा है। बाजारवाद से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कितना मुनाफ़ा हुआ यह महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन यह अधिक महत्वपूर्ण तथ्य है कि बाजारवाद से सर्वसामान्य मानव अपने ही घर में अपने आप को पराया एवं तन्हा महसूस करने लगा है। मनुष्य भौतिक सुविधाओं के पीछे दौड़ता हुआ उन्हें सर्वोच्च वरीयता प्रदान करता है। फलस्वरूप उसे खुद अपना पता याद नहीं रहता। लिहाजा रामदरश जी अपनी कविता 'केवल मैं नहीं हूँ' में लिखते हैं-

"तुम्हारे लिए लाता रहा / रंग बिरंगे उपहार / लैण्डस्केप / रेडियो / टी.वी. / बीडीयो गेम्स / फ्रीज / तरह-तरह के फर्नीचर / और न जाने कितने

रामदरश मिश्र : आलोचना के नए दौर में

24

रामदरश मिश्र : आलोचना के नए दौर में

रामदरश मिश्र : आलोचना के नए दौर में

25

रामदरश मिश्र : आलोचना के नए दौर में

सा.प.-१६ वि. 5376

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology
Asst. Professor,

ATTESTED

24

रामदरश मिश्र : आलोचना के नए दौर में

2017-18 (21)

International Journal of Advance and Applied Research

Search...

ISSN – 2347-7075 (Peer Reviewed Bi-Monthly Research Journal)

Home

[HOME](#) [ABOUT](#) [AUTHOR INFO](#) [EDITORIAL BOARD](#) [CURRENT ISSUE](#) [PREVIOUS ISSUE](#) [SPECIAL ISSUE](#)

HOME

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR) is a multidisciplinary research journal, publish bi-monthly. This is a double-blind peer-reviewed refereed journal. Our Editorial and Advisory members including investigators in universities, research institutes of government, and industry with research interests in the general subjects.

ISSN 2347-7075

Impact Factor – 7.323

Our Other Journal



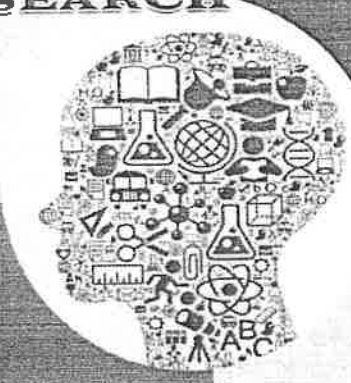
ISSN-2277-9

YOUNG RESEARCHER

Inter Disciplinary Research Journal

ISSN - 2347-7075
Impact Factor – 7.323

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH



Young Researcher Association

Journal Indexing





Publisher: P. R. Talekar.
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur (MS)

*** Journal Indexing ***










ECONOMICAL PERSPECTIVE ON GRAPES AND ITS BY PRODUCTS IN INDIA

Mrs. Dr. N. S. Gaikwad

Associate Professor & Head,
Dept. of Economics,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi,
Tal.-Palus, Dist.-Sangli.

ABSTRACT:

In agriculture, Commercial agriculture is a current backbone of Indian economy. Grape is one of the most important commercial fruit crops in the world. Grapevine is a perennial long-lived plant; it is a tropical, sub-tropical fruit and can be grown in a wide range of climatic condition. India is the 9th largest grape producing country in the world with the production of 2689910 tones, which make a share of 3.88 per cent of total production of grape in the world. The country has the distinction of achieving the highest productivity of grape among the 91 grape growing countries in the world, with an average yield of 25 to 30 tons per hectare. The increase grape cultivated area and growth of grape processing industry has manifold effects on socio-economic conditions of cultivator. The present paper attempts to study the international status of grapevine cultivation about production and processing industry in India. This attempt has been made to 2001-02 to 2013-14 area under grapevine cultivation in India.

Keywords: Grapevinecultivation, Area, production, productivityand consumption pattern.

INTRODUCTION:

Grape is one of the most important commercial fruit crop in the world. It is one of the most ancient crops known to man. Grapevine is a perennial long-lived plant and one of the most widely cultivated in tropical, sub-tropical region of the world. China and Italy stood at first and second position respectively among grape producing countries in the world. At present India is 9th position among grapes growing countries of the world (Shikamany, 2001; Ramanan, 2012;). In



(21)
2017-18

AN ECONOMICAL STUDY OF WINERIES IN SANGLI DISTRICT OF MAHARASHTRA

Dr. Mrs. N. S. Gaikwad,
Head,
Department of Economics,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawdi (M.S.)

INTRODUCTION:

Wine industry is the largest fruit processing industry in the world. It is manufactured by fermentation of grape juice. It has been produced and consumed throughout history for cultural, economical, social, religious, and, more recently, health reasons. Today enormous varieties of wines are available, made from more than 5000 varieties of a single species of grape: *Vitis vinifera*. Many varieties of wines are made throughout the world. There are various types of wines available in the world like white wine, red wine, dessert wine etc. In 2018-19 worldwide production of wine was approximately 281000 hectoliters (7.4 billion gallons). Which were up by over 8.8 percent (23 mhl) from 258.2 mhl in the 2017-18. They are produced in many regions of the world, Such as Spain, Italy France, USA, Argentina, Australia, China, Chile, South Africa, Germany Portugal Romania, Brazil, Greece, Hungary, New Zealand, Croatia, Bulgaria and Switzerland (Christian .et. al. 2012). About two third wine is produce from the Mediterranean countries. Italy, France, and Spain are the greatest wine producing countries in the world and also the greatest consumers.

OBJECTIVES:

Present investigation is to study the Wineries in Sangli District of Maharashtra with an economic status of the world, India, Maharashtra. Nashik and Sangli districts are famous in grapes and wine production in the state.

Signature



COMPARATIVE STUDY OF LITERACY RATIO AND SEX RATIO IN SANGLI DISTRICT

Dr. Mrs. N. S. Gaikwad.

*Babasaheb Chitale Mahavidyala,
Bhilawadi, Tal.-Palus, Dist.-Sangli.*

INTRODUCTION:

The study of population characters of any area is studied under the Population Geography which is the branch of Human geography. Population Geography relates spatial variations in the distribution, composition, migration, and growth of populations to the terrain. Population geography involves demography in a geographical perspective. It focuses on the characteristics of population distributions that change in a spatial context. This often involves factors such as where populations are found and how the size and composition of these populations is regulated by the demographic processes of fertility, mortality, and migration.

There is variation in the population characters such as population, sex ratio and literacy rate place to place. We are studying this variations and we will analyse the relation between the characters of population of Sangli district and their tehsils in the following report. There are 10 tehsils in Sangli district. We will use qualitative as well as quantitative methodology for our study.

Population, is the number of people in a city or town, region, country or world; population is usually determined by a process called census (a process of collecting, analysing, compiling and publishing data).

POPULATION OF SANGLI DISTRICT:

Sangli district is a district of Maharashtra state in west-central India. Sangli city is the district headquarters. The district is 25.11% urban. Sangli and Miraj are the largest cities. Sangli District is one of the most fertile and highly developed districts in Maharashtra. According to the 2011 census Sangli District has a population of 2,822,143, roughly equal to the nation of Jamaica or the US state of Kansas. This gives it a ranking of 137th in India (out of a total of 640). The district has a population density of 329 inhabitants

Effect of Culture and Parenting Styles on Ambivalent Sexism in Mexican Population

Ilse Gonzalez-Rivera, Rolando Diaz-Loving

Abstract—Family and parents in particular, are the main agents of socialization of children since they transmit values, beliefs and cultural norms based on their own guidelines, so that children acquire the knowledge on how to interact with others in terms of the interaction with their parents. One way to measure socialization parenting is through parenting styles. Parenting styles are the set of parental behaviors that have a direct effect on the development of specific behaviors of children. The ideal parenting style depends on the cultural characteristics where people develop. In Mexico, the hierarchical structure of the family is built on a model in which men are dominant over women and their power is legitimized. This research explores the effect of parenting styles and the culture of the ambivalent sexism in the Mexican population. 150 men and 150 women participated. The instrument of individualism-collectivism was used to measure culture; participants also answered the instrument of ambivalent sexism and the parenting styles questionnaire. Regression analyses were done using sexism as the dependent variable and individualism-collectivism and parenting styles as independent variables. In addition, an analysis of variance between parental styles and gender of the participants was performed. The results indicate that the permissive style and authoritarian style are predictors of ambivalent sexism and higher levels of collectivism predict higher levels of sexism in both men and women. It is also found that parents tend to use authoritarian parenting style with women and permissive style with males. These results confirm the findings of other studies that indicate that parenting is an important variable that influences the interaction of adults. On the other hand, the effect of collectivism on sexism may be related to the fact that gender Mexican rules are rigid and for people with higher levels of collectivism, the social rules are more important than individual interests. In conclusion, these results indicate that both culture and parenting styles contribute to the maintenance of the status quo and proposals that break with this cultural paradigm and to further develop democratic styles of parenting with the aim of reducing prejudice and the legitimization of gender roles.

Keywords—Culture, gender, parenting style, sexism.

I. Gonzalez-Rivera is with the National Autonomous University of Mexico, Mexico City, Mexico (e-mail: igrivera1@gmail.com).
R. Diaz-Loving is with the National Autonomous University of Mexico, Mexico City, Mexico.

The Developmental Model of Self-Efficacy Emotional Intelligence and Social Maturity among High School Boys and Girls

Shikant Chavan¹, Minchekar Vikas S²

Abstract—The present study examined the self-efficacy, emotional intelligence and social maturity of High school students. Furthermore, study aimed at to foster the self-efficacy, emotional intelligence and social maturity of high school students. The study was conducted on 100 high school students, out of which 50 boys and 50 girls were selected through random sampling method from the single city of Maharashtra state, India. The age range of the sample is 14 to 18 years. Self-efficacy scale developed by Bandura (1982), Emotional intelligence scale developed by Salovey and Sluyter (2003) and Social Maturity scale developed by Kaur and Pearson (2007) test further Karl Pearson's product moment correlation of co-efficient was used to know the

Students' correlation between emotional intelligence, self-efficacy, and social maturity. Results revealed that boys and girls did not differ significantly in their self-efficacy and social maturity. Further, the analysis revealed that girls are having high emotional intelligence compared to boys, which is significant at 0.01 level. It is also found that there is a significant and positive correlation between self-efficacy and emotional intelligence, self-efficacy and social maturity and emotional intelligence and social maturity. Some developmental strategies to strengthen the self-efficacy, emotional intelligence and social maturity of high school students are suggested in the study.

Key Words—Self-efficacy, Emotional Intelligence, Social Maturity, Developmental Model and High School Students.

1. INTRODUCTION

The term Emotional Intelligence was first used in the USA in 1985 by a student while writing his doctoral dissertation. In 1995, Salovey wrote a book "Emotional Intelligence". In this book he compiled a lot of interesting information on brain, emotions, and behavior and defined Emotional Intelligence as the capacity to reason with emotion in four areas: to perceive emotion, to integrate it in thoughts, to understand and to manage it. Bar-on (1977) said that "emotional intelligence" reflects one's ability to deal with daily environment challenges and helps predict one's success in life, including professional and personal pursuits.

Salovey (1999) developed a definition of emotional intelligence which involves five characteristics viz., self-awareness or knowing one's own emotions, the ability to manage one's emotions and impulses, self-motivation, skills empathy or the ability to sense how other are feeling and finally, social skills or the ability to handle the emotions of other people. Mayer and Cobb (2000) defined "emotional intelligence" as the ability to process emotional information, particularly as it involves the perception, assimilation, understanding and management of emotions.

Emotional intelligence is a different way of being smart. It includes knowing what your feelings are and using your feelings to make good decisions in life. It's being able to manage distressing mood well and control impulses. It's being motivated and remaining hopeful and optimistic when you have setbacks in working toward goals. It's empathy, knowing what the people around you are feeling and it's social skill getting along well with other people, managing emotions in a relationship, being able to persuade or lead others (O'Neill, 1996, P.6).

¹ Shikant Chavan is with the National Autonomous University of Mexico, Mexico City, Mexico (e-mail: shikantchavan@gmail.com).
² Minchekar Vikas S is with the National Autonomous University of Mexico, Mexico City, Mexico.

May 28, 19 - 2017

TABLE OF CONTENTS

| Article | Page | Page |
|--|-------------|-------------|
| 1556 Enhancing National Integrity through Teaching Secular Perspectives in Medieval Indian History Curriculum: A Secular Paradigm <i>Deepak Dasgupta, Vikas Mishra</i> | 4202 - 4205 | 4262 - 4265 |
| 1557 The Political Economic Analysis of a Border Town's Development in Thailand: A Case Study of Mae Sai, Chiang Rai <i>Po-Chin Hing</i> | 4206 - 4216 | 4266 - 4268 |
| 1558 Feminising Football and Its Fandom: The Ideological Construction of Women's Super League <i>Dorna Ifloodise, Beth Fielding-Lloyd, Ruth Segura</i> | 4217 - 4217 | 4269 - 4272 |
| 1559 Polish Catholic Discourse on Gender Equality in the Face of Social and Cultural Changes in Poland <i>Anna Jędrzejak</i> | 4218 - 4222 | 4273 - 4273 |
| 1560 The Projection of Breaking Sexual Repression: Modern Women in Indian Fictions in Meerut <i>Sireen B. Siddique</i> | 4223 - 4225 | 4274 - 4264 |
| 1561 The Role of Socio-Cultural Structure and Sex Role Perception in Fear of Success among Female Managers in India <i>Laxman Kumar, Vikas Mishra</i> | 4226 - 4229 | 4265 - 4265 |
| 1562 The Role of Hemoglobin in Psychological Well Being and Academic Achievement of College Female Students <i>Ramesh Adul, Vikas Mishra</i> | 4230 - 4230 | 4266 - 4266 |
| 1563 Effect of Culture and Parenting Styles on Amblyopia: Sexism in Mexican Population <i>Diego Garcia-Rivera, Rolando Diaz-Leiva</i> | 4231 - 4231 | 4267 - 4267 |
| 1564 The Developmental Model of Self-Efficacy, Emotional Intelligence and Social Maturity among High School Boys and Girls <i>Srinivas Prasad, Vikas Mishra</i> | 4232 - 4234 | 4268 - 4272 |
| 1565 The Intoxicated Eye-witness: Effect of Alcohol Consumption on Identification Accuracy in Lineup <i>Vikas S. Mishra</i> | 4235 - 4238 | 4273 - 4273 |
| 1566 Heroic Villains: An Exploration of the Use of Narrative Poitlines and Emerging Identities within Recent Stories of Former Substance Abusers <i>Traci Moore, Anne Walker-Curtis</i> | 4239 - 4239 | 4274 - 4274 |
| 1567 The Cases Studies of Eye-witness Misidentifications during Criminal Investigation in Taiwan <i>Chia-Hung Shih</i> | 4240 - 4240 | 4275 - 4275 |
| 1568 Home Emotions and Social Adjustment: The Predictors of Neurotic Tendency among Elderly People <i>Guangyan Chang, Vikas Mishra, Ramesh Adul</i> | 4241 - 4243 | 4276 - 4276 |
| 1569 The Effect of Experimentally Induced Stress on Facial Recognition Ability of Security Personnel's <i>Zunaira Khatun, Vikas Mishra</i> | 4244 - 4246 | 4277 - 4277 |
| 1570 Fretful Oscillatory Activity and Phase-Amplitude Coupling during Chen Meditation <i>Arthur C. Tsai, Cui-Siyang Xue, Tienwei S. C. Chen, Michelle Liu, Philip E. Cheng</i> | 4247 - 4247 | 4278 - 4278 |
| 1571 Effect of OH-DPAT on the Behavioral Indicators of Stress and on the Number of Astrocytes after Exposure to Chronic Stress <i>Araceli Garcia-Bermejo, Diana B. Paz-Trejo, Oscar Galicia-Castillo, David N. Felacoque-Marrines, Hugo Sanchez-Castillo</i> | 4248 - 4248 | 4279 - 4284 |
| 1572 Changes in EEG and Emotion Regulation in the Course of Inward-Attention Meditation Training <i>Yuchue Lin</i> | 4249 - 4249 | 4285 - 4284 |
| 1573 The Effects of Critical Incident Stress Debriefing and Other Related Interventions on the Psychological Recovery of Earthquake Survivors <i>Javier Fernandez</i> | 4250 - 4250 | 4285 - 4285 |
| 1574 The Role of Emotional Intelligence in the Manager's Psychophysiological Activity during a Performance-Review Discussion <i>Mikko Salminen, Vikas Mishra</i> | 4251 - 4251 | 4286 - 4286 |
| 1575 The Inclusion of the Cabbage Waste in Buffalo Ration Made of Sugarcane Waste and Its Effect on Characteristics of the Silage <i>Ashanti, Arun Kumar, Sri Anvita, Adika Sugara, Timo Boppre</i> | 4252 - 4254 | 4287 - 4287 |
| 1576 Utilization of Composite Feed Based on Ammoniated Cotton Waste on Bull Cattle Performance <i>Ethirajadas, Ramesh Mishra</i> | 4255 - 4255 | 4287 - 4287 |
| 1577 Ethno-Botanical Diversity and Conservation Status of Medicinal Plants at High Terrains of Garhwal (Uttarakhand) Himalaya, India: A Case Study in Context to Multi-uses Tourism Growth and Peri-Urban Encroachments <i>Anand Kumar</i> | 4256 - 4261 | 4288 - 4294 |
| 1578 Recovery of Isolate from TPT-LCD Wastewater by Forward Osmosis <i>Yu-Ping Chen, Shun-Sheng Chen, Hing-Te Hsu, Sankar Saha, Ren</i> | 4262 - 4262 | 4295 - 4295 |
| 1579 Treatment of High Concentration Crude Oil Wastewater by Ceramic Membrane Bioreactor <i>Kai-Sheng Chung, Shun-Sheng Chen, Sankar Saha, Hing-Te Hsu</i> | 4263 - 4263 | 4296 - 4296 |
| 1580 Improved Exponential Mean Estimator in Partial Quantitative/Balanced Response Models <i>Vijaya Datta</i> | 4264 - 4264 | 4297 - 4297 |
| 1581 Determination of the Effective Economic and/or Demographic Indicators in Classification of European Union Member and Candidate Countries Using Partial Least Squares Discriminant Analysis <i>Ezra Polak</i> | 4265 - 4265 | 4298 - 4298 |
| 1582 Methodological Aspect of Energy Accounting in Co-Production in an Inland System <i>Kashub Sreerika, Hing-Suek Park</i> | 4266 - 4266 | 4299 - 4299 |
| 1583 An Inquiry of the Impact of Flood Risk on Housing Market with Geographical Weighted Regression <i>Lan-Yan Chang, Hsueh-Hsueh Li, Hsiang-Yi Lin</i> | 4267 - 4267 | 4300 - 4300 |
| 1584 Supplier Selection by Bi-Objectives Mixed Integer Program Approach <i>Kang-Hong Yang</i> | 4268 - 4272 | 4301 - 4301 |
| 1585 Braille Lab: A New Design Approach for Social Entrepreneurship and Innovation in Assistive Tools for the Visually Impaired <i>Chando Lucanovic, Denise Leonardi, Antonio Brinetti, Giampaolo Paveseto Trovati, Nicholas Cypriano, Vincentio Bertolotto</i> | 4273 - 4273 | 4302 - 4302 |
| 1586 Design and Implementation of a Nano-Power Wireless Sensor Device for Smart Home Security <i>Chia-Chi Chang</i> | 4274 - 4274 | 4303 - 4303 |
| 1587 Optimal Sequential Scheduling of Imperfect Maintenance Last Policy for a System Subject to Shocks <i>Yen-Luan Chen</i> | 4275 - 4275 | 4304 - 4304 |
| 1588 Optimal Continuous Scheduling Time for a Cumulative Damage System with Age-Dependent Imperfect Maintenance <i>Chia-Chi Chang</i> | 4276 - 4276 | 4305 - 4305 |
| 1589 Computer-Aided Diagnosis System Based on Multiple Quantitative Diagnostic Resonance Imaging Features in the Classification of Brain Tumor <i>Chih-Jen Hsiao, Chung-Ming Lo, Li-Chun Hsieh</i> | 4277 - 4277 | 4306 - 4306 |
| 1590 Computer-Aided Diagnostic Diagnosis for the Screening of Diabetic Insulinopathy <i>Shu-Mei Tsou, Chung-Ming Lo, Shou-Chun Chen</i> | 4278 - 4278 | 4307 - 4307 |
| 1591 Characterization of Extreme Low-Resolution Digital Encoder for a Control System with Simulated Reference Signal <i>Zhenyu Zhang, Qinglin Guo</i> | 4279 - 4284 | 4308 - 4308 |
| 1592 Minimum-Fuel Optimal Trajectory for Reusable First-Stage Rocket Landing Using Particle Swarm Optimization <i>Yi-Hsin Spencer G. Janglin, Zhenyu Zhang, Qinglin Guo</i> | 4285 - 4285 | 4309 - 4309 |
| 1593 Fabrication of SnO ₂ Nanotube Arrays for Enhanced Gas Sensing Properties <i>Yi-Hsin Spencer G. Janglin, Zhenyu Zhang, Qinglin Guo</i> | 4286 - 4286 | 4310 - 4310 |
| 1594 Development of Sulfide Biosensor Based on Sulfide Oxidase Immobilized on Poly(2-vinylpyridine)-Modified Indium Tin Oxide Electrode <i>Parvaneh Saeedi, Chahras Prangmea, Ting Zeng, Silke Lamlinger, Ulla Wollenberger</i> | 4287 - 4287 | 4311 - 4311 |
| 1595 Development of Impressed and Reposed Multiscale Numerical Solution of Surface <i>Yung-Jia Wang, Chih-Chia Wang, Ching-Ching Chen</i> | 4288 - 4288 | 4312 - 4312 |

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.

Handwritten signature: dg

Official stamp: Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli. Stamp number: 1962 3595.



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कार्य :

चर्चा व चिंतन

Special Issue, एप्रिल २०१८

प्रा. विराग गावंडे

संचालक

आधार सोशल रिसर्च अँड डेव्हलपमेंट ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूट, जि.अमरावती

संपादक

प्रा. डॉ. कुसुमेंद्र गं. सोनटक्के



Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.

At. Post. Limbaganesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell: 07588057695, 09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

| | |
|---|----|
| 12) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्याचे ऐतिहासिक अध्ययन प्रा. वसंत एम.राठोड, वाशीम | 53 |
| 13) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि दलितांचे शिक्षण - एक ऐतिहासिक अवलोकन रविंद्र अ.पवार, वाशीम | 55 |
| 14) मानवी हक्कासाठी महाड सत्याग्रह प्रा. डॉ. कुसुमेंद्र गं. सोनटक्के, दर्यापूर, जि.अमरावती | 58 |
| 15) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धार्मिक कार्य प्रा.डॉ.विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर, रा.माळवाडी, ता.पलूस | 60 |
| 16) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक कार्य प्रा.डॉ.नरेंद्र ठाकरे, मानोरा | 63 |
| 17) डॉ. आंबेडकरांचे आर्थिक विचार प्रा. डॉ. सीमा गोलाईत, नागपूर | 67 |
| 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक चळवळी डॉ. सिमा मधुकर काळे, अकोला | 70 |
| 19) दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, कार्य आधुनिक भारतातील सामाजिक क्रांतीचे उद्गाते डॉ.बाबासाहेब... छाया सवडतकर, सिंदखेड राजा | 73 |
| 20) 'समाजसुधारक : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर' रजनी कानेकर (जोगे), नागपूर | 74 |
| 21) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अस्पृश्यता व जातीयवादावरील विचार डॉ.रोहीणी यु. देशमुख. अमरावती | 78 |
| 22) आम्ही मैत्रिणी या त्रैमासिकातून प्रतिबिंबित होणारी महिला दलित चळवळीचे वैचारिक अध्ययन प्रा. डॉ. रश्मी प्रविण गजरे, यवतमाळ | 79 |
| 23) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक आणि राजकीय कार्य प्रा.कल्पना एस. गोडघाटे, यवतमाळ | 82 |

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धार्मिक कार्य

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर
रा. माळवाडी, चव्हाण प्लॉट ता. पलूस, जि.
सांगली

प्रस्तावना :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे या पृथ्वीतलावरील महामानव. उत्तम नेतृत्व, उत्तम कर्तृत्व व उत्तम वक्तृत्व असे बहुआयामी व्यक्तीमत्व म्हणजे डॉ. बाबासाहेब. प्रचंड विद्वत्ता असून ही तितकीच नम्रता दाखविणारे अर्थतज्ञ, शिक्षणतज्ञ, कायदेतज्ञ, कृषीतज्ञ, धर्मनिष्ठ, कला व क्रिडाप्रेमी असे सर्वगुण संपन्न व्यक्तीमत्व म्हणजे बाबासाहेब.

डॉ. बाबासाहेब यांना त्यांच्या आयुषात दुःख, यातना व तिरस्कार या शिवाय काहीच मिळाले नाही. समाजातील काही माणसं जन्मताच मोठी असतात, काही माणसावर मोठेपण लादलं जातं तर काही माणसं स्वःताच्या कर्तृत्याने मोठी होतात. स्वःताच्या बुद्धीच्या व कर्तृत्वाच्या जोरावर जगावर हुकमत गाजविणारे महान विचारवंत म्हणजे बाबासाहेब.

१.१) शोधनिबंधाची उद्दिष्टे :

- १) तत्कालीन परिस्थितीचा अभ्यास करणे.
- २) मनुस्मृती ग्रंथाच्या विरोधात बाबासाहेबानी बंड का पुकारले त्याचा अभ्यास करणे.
- ३) डॉ. बाबासाहेबानी बौद्धधर्म का स्विकारला याचा आढावा घेणे.
- ४) डॉ. बाबासाहेबानी अपेक्षित असलेल्या समाज व्यवस्थेची मांडणी करणे.
- ५) डॉ. बाबासाहेबांचे अनुयायी व त्यांच्यावर बाबासाहेबांच्या विचारांचा पडलेला प्रभाव याचा

१.२) समाजातील तत्कालीन परिस्थिती :

दोन हजार पाचशे वर्षापूर्वी मनु नावाच्या दुष्ट महाभागाने 'मनुस्मृती' नावाचा एक ग्रंथ लिहिला होता. तेव्हा पासून दलितताच्या अस्तित्वाला सुरुंग लागला होता. त्यांनी आपल्या ग्रंथात व्यक्तीनिष्ठ व पूर्वग्रहदूषित विचार मांडले होते. त्यांनी वर्णव्यवस्थेची पेरणी केली होती. १) ब्राम्हण २) क्षत्रिय ३) वैश्य ४) शुद्र. ब्राम्हणाचा जन्म मुखातून, क्षत्रियांचा जन्म बाहूतून, वैश्याचा जन्म मांडीतून व शुद्राचा जन्म पायातून होतो अशी भ्रामक कल्पना त्या मनु नावाच्या मूर्खाने मांडली होती. पृथ्वीवरील सर्वच लेकर ईश्वराची आहेत असे म्हणतात. मग असा भेद का? हा खरा प्रश्न डॉ. बाबासाहेबाना भेडसावत होता. समाजातील दुःख, दारिद्र्य, बेकारी, विषमता, अज्ञान, अंधश्रद्धा, वर्णभेद, वंशभेद, या बद्दल डॉ. आंबेडकरांना खूप चीड होती. तत्कालीन समाजात अस्पृशलोकांना कोणतीच किंमत नव्हती. उदा. क्षुद्र म्हणजे महार, मांग, चांभार, व ढोर या लोकांना पशुपेक्षा ही हीन दर्जाची वागणूक दिली जात होती या शिवाय

- १) क्षुद्राना कोणते ही धार्मिक कार्य करण्यास बंदी होती. सवर्णांशी रोटी बेटी व्यवहार करण्यास बंदी होती पण सवर्णांना क्षुद्रस्त्री रखेल म्हणून ठेवण्यास परवानगी होती.
- २) क्षुद्राना रस्त्यावर धुकण्यास बंदी होती. रस्त्यावर त्यांची सावली पडलेली चालत नव्हती म्हणून गळ्यात मडके व पाठीमागे झाडू बांधून वावरावे लागत होते.
- ३) शिक्षण घेणे, अंगावर नविन वस्त्र घालणे, नविन घर बांधणे, पाणवट्यावर पाणी भरणे, मंदिरात जाणे, या सर्व गोष्टी करण्यास मनाई होती.

धोडक्यात तत्कालीन परिस्थितीत क्षुद्रांचा जन्म उकिरड्यात व्हायना, उकिरड्यात जगायचे व उकिरड्यातच मरून जायने, संपूर्ण आयुष्य दुःख, दारिद्र्य, विषमता, अन्याय, पिळवणूक, गुलामात घालवावे लागत होते. ज्या गोष्टी मानवाने निर्माण केलेल्या नाहीत. निरर्गताच पृथ्वीवरील सर्व प्राणीमात्रासाठी उपलब्ध आहे. उदा. हवा, पाणी,

१.५) धर्मांतराचे कारण :

स्माजातील दुःख, दारिद्र्य, विषमता, जातीभेद, वर्णभेद ठराविक लोकांची समाजातील मक्तेदारी, आर्थिक, सामाजिक, राजकिय गुलामगिरी, समाजातील लाचारी यामुळे डॉ. बाबासाहेब दुःखी बनले होते. ते समाजवादाचे पुरस्करते होते. समाज एकसंध राहावा, प्रगत व्हावा, प्रत्येकाचे जीवनमान, राहणीमान सुधारवे, राष्ट्रकीय ऐक्य निर्माण व्हावा, सर्वजातीधर्मातील लोकांनी एकत्रित येवून व्यवहार करावा, सर्वांना समान संधी, समान न्याय, समान शिक्षण, संपत्ती मिळावी अशी त्यांची इच्छा होती. पण हिंदू धर्मातील आचार, विचार, कृती वरील सर्व गोष्टींना मूठमाती देणाऱ्या ठरत हेत्या. त्यामुळे बाबासाहेबानी १९३५ ला धर्मांतराचा विचार मनावर घेतला होता. पण त्यांनी एकतर्फी निर्णय न घेता १७ वर्षे प्रत्येक धर्माचा वस्तुनिष्ठपणे अभ्यास केला व शेवटी सर्व धर्मात बौध्द धर्म त्यांना आवडला कारण बौध्द धर्माची तत्त्वे माणसाला प्रगतीकडे घेवून जाणारी आहेत. माणसाला माणूस म्हणून जगविणारी आहेत. दुःख व दारिद्र्याला वाचा फोडणारी आहेत हे त्यांनी अनेक गोष्टीवरून सिध्द केले आहेत.

१.६ बौध्द धर्माचा स्विकार :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे महामानव होते हे अनेक गोष्टीवरून सिध्द झाले आहे. विद्वत्ता बरोबर नम्रता ही असावी लागते याची जाणीव त्यांना होती. अनेक वाईट परिस्थितीतून तावून सुलाखून निघालेले बाबासाहेब समाजातील वाईट आवस्था पाहून व्याकुळ झाले होते. समाजात बदल घडवून आणण्याची हिम्मत त्यांच्यात होती. समाजातील ७ कोटी जनतेचा विश्वास बाबासाहेबांच्यावर होता. बाबासाहेब स्वतांच्या शेवटच्या थेंबापर्यंत बळकट विचाराने कर्मठ व अविचारी लोकांच्याबरोबर लढले. शेवटी हिंदू धर्म हा कर्मठ लोकांचा धर्म आहे. वेद, पुराण, गीता, निषद, उपनिषद, देव, देवता, राम, कृष्ण, यांना महत्व देणारा आहे. विषम, अन्यायी व्यवस्थेवर आधारलेला आहे. या धर्मांमुळे समाजाची कधीच प्रगती

होणार नाही ह त्यांना पटल्यामुळे शेवटचा मार्ग म्हणून बौध्दधर्म स्विकारला.

१.७) बौध्द धर्माची तत्त्वे :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे कुणा पुढे ही सहजासहजी झुकले नाहीत. ते फक्त तीन लोकांच्यापुढे झुकले होते. १) गौतमबुध्द २) संतकबीर ३) महात्मा फुले

कारण या तीन महामानवानी समाजाला अंधारातून प्रकाशाकडे घेवून गेले. वर्णभेद, जातीभेद नष्ट केला. माणसाला माणूसपण मिळवून दिले. दुःखाला, दारिद्र्याला वाचा फेडली. समाजाला प्रगतीचा मार्ग दाखविला. बौध्द धर्माची एकूण २२ तत्त्वे आहेत. उदा.

- १) मी कोणत्याही देवाची उपासना करणार नाही.
- २) मी ब्रम्हा, विष्णु, महेश्वरा, गौरी, गणपती, राम, कृष्ण यांना महत्व देणार नाही त्यांची उपासना करणार नाही.
- ३) पुनरजन्मावर विश्वास ठेवणार नाही. श्राध्द घालणार नाही.
- ४) ब्राम्हणाच्या हातून कोणते ही क्रियाक्रम करुन घेणार नाही.
- ५) व्यसन, व्यभिचार, चोरी, अपमान करणार नाही. छोटे बोलणार नाही.

श्राद्धकालात समाज हिताला व देशहिताला नातक ठरेल असे कोणतीही कृती मी करणार नाही. अशा नांगल्या तत्त्वांनी आचार सहिता म्हणजे बौध्द धर्म होय.

१.८) परिवर्तनाचा महानायक :

महात्मा कोणाला म्हणतात जो माणूस मरुन सुध्दा आपले विचार समाजात तेवत ठेवतो, समाजाला प्रेरणा देतो. त्याला महानायक म्हणतात. डॉ. आंबेडकर हे चमत्कार मिना अवतार नव्हते तर ते महात्मा आहेत. त्यांच्या मरणानंतर करोडो अनुयायी निर्माण केले आहेत. माणसाने वय कसे मोजायचे तर जो पर्यंत एखाद्या माणसाने विचार समाजाला प्रेरणा देत राहतात तेवढे त्या माणसाचे वय असते. जो पर्यंत आकाशात सूर्य, चंद्र, ग्रह, तारे आहेत तो



The Role of Women in the Development of India after Independence

Editor
Prin. Dr. S. M. Maner



■ During and after the Indian freedom struggle, the political and social leadership emerged from women. During the 70 Years of Independence, Indian society has undergone great transformation. Women have got opportunities to work in educational, social, political, business and administrative spheres of life. They have proved their abilities and contributed significantly in the development of the nation. At the same time, they are facing peculiar problems related to gender discrimination, patriarchy, family responsibilities etc. These aspects should be studied thoroughly. ■

किंमत : ₹. २००/-

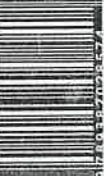


संवाब प्रकाशन प्रा. लि.

८७३, क/२, सी बाई, सिव्हीस्री क्लासा, रावा
मो. ९८९०५४३४०

साहित्य

ISBN - 978-81-820728-57-4



anilnirmithi@gmail.com | शेवाब प्रकाशन प्रा. लि.

३.२.२०
१७-१८

**The Role of Women in the Development
of India after Independence**

Chief - Editor

Prin. Dr. S. M. Maner

Co-Editor

Mr. S. S. Sutar

Publisher

Dr. S. M. Maner

Principal

Kakasaheb Chavan College, Talmavale

Tal - Patan, Dist - Satara

&

Sanwad Pro. Pvt. Ltd.

873, C/2, Siddhishri Plaza,

Rajaram Road, Kolhapur - 416002

Mob. 9890554340

E-mail. nirmutisanwad@gmail.com

Typesetting : Bharatbhushan P. Narandekar

Cover : Gangadhar S. Mhamane

Printer : Miroor Offset, Kolhapur

First Edition : 6, June 2017

Publishing No. 6

ISBN : 978-93-82028-57-4

Price : 200/-

Disclaimer:

The views expressed in research papers by the authors are their own and the editors do not accept any legal responsibility regarding plagiarism or inaccuracy for the views of authors.

Copyright Reserved (2016)

No part of this proceeding should be reproduced or translated in any form or by any ways, without the prior permission of the publisher.

“ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार”
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

MESSAGE

It is a matter of great pleasure to present a collection of research papers from academicians on 'The Role of Women in the Development of India after Independence'. It is an interdisciplinary effort to bring together the scholars and experts to deliberate over various aspects of the women's leadership, struggle and achievements in post - independence India.

The contemporary Indian society is very dynamic and inclusive. Still the issues related to women's career and social contribution need to be studied exhaustively. It has political, psychological, cultural, social, historical, and gender related aspects that pose challenges to women.

I congratulate the team of editors that worked under the leadership of Prin. Dr. S.M. Maner, Kakasaheb Chavan College, Talmavale for providing a platform for the experts and researchers. I am sure that the book will be useful as a reference book for the students of Humanities & Commerce.

With best wishes,

Prin. Abhaykumar Salunkhe

Executive Chairman,

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilaradi, Tal. Palus, Dist. Sangli.



| | |
|---|---|
| Media in Sports | |
| Women Entrepreneurship's Problems and solutions | - Prof. Patil N.D. / 85 |
| - Asso. Prof. Sheetal Mahadik / Prin. Dr. Sanjeev Late / 87 | |
| Women Self Help Groups (SHG) and Micro Finance | |
| गौण-शक्तिर भारतातील महिलांचा राजकीय सहभाग | - Prof. Heddure B.R. / 90 |
| श्री. ए.बी. गायकवाड / प्रा. श्री. डी. आर. निकाळजे / प्रा. बी. के. नारे / 93 | |
| Self Help Groups and Women Empowerment: A Study | |
| Human Rights - Book Review | - Prof. Arage Laxman Tavanappa / 96 |
| Participation of Women in Industrial and Agricultural Development | |
| ग्रहण | - Dr. Bharat Patil / 99 |
| Women Empowerment | |
| | - Mr. Gurav Santosh Arun/ 103 |
| Women's socio-economic condition in India: A Review | |
| | - Mr. Sudhir Narayan Sawant / 106 |
| Women Empowerment in India | |
| | - Uthale Jayamala Arjun / 109 |
| Women Empowerment in India | |
| | - Dr. Anjuman I. Motmin / Mr. Vaibhav J. Mali / 112 |
| महिला संरक्षण आणि भारतीय राज्यघटना | - Prof. M.R.Mangutkar / Prof. K.K. Chawan / 114 |
| | |
| | - प्रा. ए.बी. जाधव / 117 |
| माध्यमस्थितीतील इतिहास लेखनात स्त्रियांचे योगदान | |
| | - प्रा. डॉ. संभाजी आनंद मोरे / 119 |
| महिलाशोचक काळातील स्त्रीचा विकास | |
| | - प्रा. सौ. स्मिता तानाजी पाटील / 121 |
| महिला शक्तीकरण - काळाची गरज | |
| | - प्रा. डॉ. दादासाहेब बापूराव जाधव / 124 |
| माध्यमस्थितीतील स्वातंत्र्योत्तर स्त्रीसुधारणा चळवळीची वाटचाल | |
| | - प्रा. डॉ. नितेश प्रेमनाथ सुखसे / 127 |




Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.

| | |
|--|--------------------------------|
| Women and Indian Constitution | |
| - Dr. Bhimashankar M. Dahalake / 50 | |
| Role of Women in Agriculture Development | |
| - Dr. Patil Amol Ashokkumar / 52 | |
| An Analytical Study on Psychological Factors of football Players & Hockey Players in Satara District | |
| - Dr. Vikas Anandrao Jadhav / 55 | |
| Specially Problems in Youth Sports | |
| - Mr. Uday E. Shinde / Dr. Vinayak B. Bhagwat / 58 | |
| Contribution of Women in Physical Education | |
| - Dr. S. Y. Bharsakale / Mr. Mahadeo S. Suryawanshi / 60 | |
| Contribution of Women Wrestlers of Haryana (India) in the Field of Wrestling | |
| | - Prof. Pratap Jadhav / 63 |
| Empowerment of Women through Sports and Physical Activity | |
| - Prof. P. N. Chaougule & Dr. Prabha Patil / 65 | |
| Effect of Yoga practice on Mental Health of Women executives in Kolhapur | |
| - Prof. Patil Vidya C. / Dr. Sunita Girwalkar / 68 | |
| Professional Opportunities and Career in Physical Education and Sports | |
| - Vikrant V. Supugade / Dr. Sunita Girwalkar / 72 | |
| Yoga for Sports Performance | |
| - Mr. N. D. Bansode / Mr. P. D. Jagdale / 74 | |
| Designing Digital Games for Rural Children: A Study of Traditional Village Games in India | |
| - Mr. Sanjay Patil / Mr. Jahangir Tamboli / 75 | |
| Role Of Women In The Development Of India | |
| - Dr. Mahesh Rangrao Patil / 78 | |
| The Economics of Corruption in Sports : The Special case of Doping | |
| | - Prof. Lt. Bhosale B. D. / 81 |
| Sports Injuries In Children And Adolescents | |
| | - Dr. B. N. Ulape / 83 |

Role Of Women In The Development Of India In Sports After Independence

Dr. Mahesh Rangrao Patil

Director Of Physical Education,

Babasaheb Chitale Mahavidyalay, Bhilawadi


Introduction :

Sport is one area where gender inequality is strongly evident. Today, as we stand at the start of a new millennium it is deplorable that men and women are treated so differently, especially in sport. Women make up 50% of the worlds population but they are not give equal opportunities. Men are still considered the better sex and this is one of the reasons why the world is yet to produce a female Michael Schumacher, Tiger Woods, Mike Tyson or a Sachin Tendulkar.

Sport in India is yet to reach its peak. The Mughals ruled India for centuries, the Britishers for another one and a half-century. It was only after 1947, when we achieved independence that we started developing as a modern nation, with special rights to half of its citizens namely women. Indian women are still trying to establish their own identity. Women in India are still unable to take a stand for themselves.

Women and Sports :

The recent report of the National Commission for Youth (2004) has traced in detail the Participation of women in Sports before and after 1947. The first Indian women to participate in the Olympics was in 1952. In 1975, the Government of India instituted the National Sports festival for women with a view to promote womens sports. The National festival is preceded by competitions at the local and the district level. However the report has observed that these competitions have been reduced to mere issuing of certificates and the subsequent selection at the national level is done on ad-hoc basis. The National Commission report has also pointed towards the issue of dropout rate of girls from the schools. The



report observed, Sports is by and large an elite activity in the country and the adoption of a sports policy, as the government has done in 1984, is hardly likely to change the situation very much. Achievements of Indian Athletes After Independence :

Athletics

At the point of time, Anju Bobby George is the only athlete whose name comes to mind while talking about Indian athletics. And it's not for nothing. Anju won the bronze medal at the 2002 Manchester Commonwealth Games; won gold medal in the 2002 Busan Asiad Games; became the first Indian athlete ever to win a medal in a world Championship when by winning bronze at the Paris World Championship.

PT Usha, the name, which is synonymous with Indian athletics is arguably the greatest ever Indian women athlete. She inspired generations to seek glory in track and field event and continues to do so. Her biggest moment of glory came when she became the first Indian women to enter the final of and Olympics event in 1984 Los Angeles Olympics. She had won silver medals in the 100 m. and 200 m. events in the 1982 New Delhi.

Boxing

Indian women boxing has been doing reasonably well in the International arena. In the 2006 Colombo SAF Games, Indian boxers managed to bag four gold medals. In November 2007, Manipur's M C Mary Kom won the best boxer title for the third time and created a hattrick. India is a regular medal-holder at Asian Games and Commonwealth Games. It is indeed a matter of pride that the English boxing champion is an Indian.

Shooting Sport

Shooting generally regarded as an expensive sport, gave India its first Olympic individual silver medal in the 2004 Olympic Anjali Bhagwat is the face of Indian women in the sport. She had won four gold medals at the 2002 Manchester Commonwealth Games.

Weight-Lifting

Karnam Malleshwari won bronze in the 2000 Sydney

Olympic Games. She won the Women's 69 kilogram segment. Pugilist Mary Kom became the first Indian woman to win a medal in boxing with her bronze medal finish in Women's flyweight category. Badminton

Saina Nehwal won bronze medal in badminton in Women's singles getting the country's first Olympic medal in Badminton. P. V. Sindhu became the first Indian woman to win a silver medal in Olympics and also the youngest Indian Olympic medalist. Wrestling

Shakshi Malik became the first Indian women wrestler to win a Olympic medal with her bronze medal finish in Women's freestyle 58 kg category.

Conclusion:

After independence India is improving in sports. Pre-Independence Olympics Achievements - The first Indian Olympian medalist was Norman Pritchard. He won 4 silver medals at the 1900 Paris Olympics. The first gold medal for India was won by the National Indian Hockey Team in the 1928 Olympic Games held in Amsterdam. There was no women's achievement Pre-Independence Olympic. Ten individual medals were won by Men players and Five Individual medals were won by Women players in Olympic. At the 2016 Rio Summer Olympics, a record number of 118 athletes competed. Sakshi Malik became the first Indian woman wrestler to win a Olympic medal with her bronze medal finish in Women's freestyle 58 kg. category. Shuttler P. V. Sindhu became the first Indian woman to win a silver medal in Olympics and also the youngest Indian Olympic medalist. This shows that Indian women lead ups in Sports. They doing better work for developing India in Sports.

References:

1. <http://ncw.nic.in/pdfreports/Gender%20Issue%20in%20Sports.pdf>
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Sport_in_India
3. <http://www.denews.in/2016/08/india-sportspersons-rio-olympics-competing-names-events-list-date-details.html>

The Economics of Corruption in Sports : The Special case of Doping

Prof. Lt. Bhosale B. D.

D.P. Bhosale college, Koregaon

Introduction :

This is a remarkably increased awareness that fighting corruption is fundamental to mitigating the wide ranging set of the accompanying negative externalities of corruption. Among these research points at an increase in income disparities and poverty, discontinuous, economic development, squeeze out of foreign direct investments, emigration of high skilled citizen (brain drain) and like.

Unsurprisingly corruption also occurs in various forms and pretry much as any area of sports. Here embezzlement, match fixing, transfer of players, or any kind of dilution of results are corresponding examples. Especially with professional sports attraction not only a lot of interest (estimates range from 800 million to 1.2 billion active sports person world wide) but also huge amounts of money, corruption in sports might create a tremendous societal and economic burden.

The general figures relating to the stakes in sports are very impressive. For example :- Bures argues that, "an estimated EUR 2.5 billion were spent on advertising in connection with the 2006 FIFA world Cup. The sports industry at large generates on average between 2.5 and 3.5 of the GDP of countries. The involvement of money always given rise to attempts to bias the expected outcome to ones own advantage likely by using performance enhancing substances. An athletes incentive are shaped not only by expected inflow of prize money, but also with one pursuit of self fulfillment. Such incentives give rise to crossing legal boundaries in order to create a cutting edge.

In 1991, coaches concerned that steroid propelled the success of East Germans womens swimming teams excelled in nearly every contest during this period, culminating in crushing the

3.3.3
17-18

Review of Research



International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 7 | Issue - 6 | March - 2018

5.2331(UIF) 2249-894X

PSYCHO-SOCIAL DEVELOPMENT IN ADOLESCENTS



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilwadi Tal. Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

Shrikant Bhanudas Chavan

Principal,

Bhilwadi Tal. Palus, Dist. Sangli, Maharashtra

ABSTRACT:- "In no order of things is adolescence the simple time of life" The word adolescence comes from the Latin word adolescere, which means "to grow" or "to grow to maturity". It is defined as a period of growth between childhood and adulthood (deBrun, 1981). It is generally considered...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal
REVIEW OF RESEARCH II
ISSN NO: 2249-894X

Reviews address the IJRRM articles to the International Multidisciplinary Review and Research Journal
monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be through online
peer reviewed, filtered by members of the Editorial Board. The journal will include investigations in various fields of research
institutes/government and industry with research interest in the general subjects

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok Yakkaldevi

Iran



Bijan Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- MENDALFY
- GOOGLE
- CITULIKE



- ENDNOTE
- ZOTERO
- DRJI

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Falus, Dist. Sangli.

4

2.3.4

International Online Multidisciplinary Journal

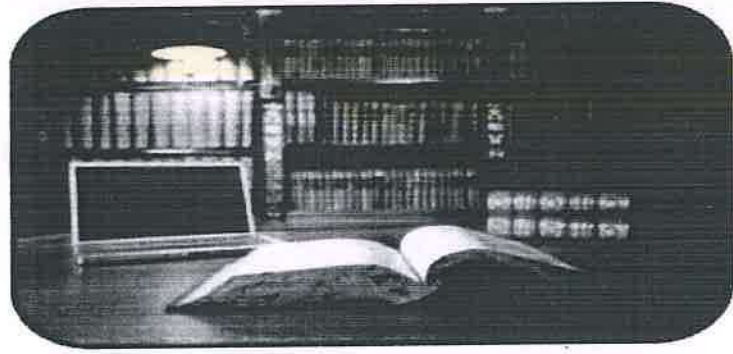
Review of Research

Save Tree. Save Paper. Save World

ISSN NO:- 2249-894X

Impact Factor : 5.2331(UIF)

Vol.- 7, Issue - 6, March-2018



| Sr. No | Title And Name Of The Author (S) | Page No |
|--------|---|---------|
| 1 | AGONIES OF PROTAGONISTS ENVISIONED IN V.S. NAIPAUL'S SELECTED NOVELS Dr. P. Satheeshkumar | 1 |
| 2 | Digital Information Literacy Skills And Cometenecy Among The Faculty Members Of Degree Colleges In North Karnataka: A Study. Renuka Pujari Gavisiddappa Anandhalli | 7 |
| 3 | India's Women Vaishali Chandrashekhar Chougule | 14 |
| 4 | A STUDY ON MARKETING OF SERVICES IN EDUCATIONAL INSTITUTIONS (A case study on MBA department of Akkamahadevi Women's University, Vijayapur) Dr. Anitha R. Natekar | 16 |
| 5 | Walking A Fine Line: Ethical Conflicts And clinical Research On Vulnerable Populations Hema Prasad | 20 |



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

BOOK PUBLISH at U.S.A.



THESIS DISSERTATION PROJECT CONVERT INTO BOOK



LAXMI

BOOK PUBLICATION, Solapur

Ph.: 0217-2372030/+91-9595-359-435

Emil.: ayisrj2011@gmail.com

Webdite.: lbp.world

dg
Principal,
Chitale Mahavidyalaya
Tal. Palus, Dist. Sangli.



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.2331 (UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of
Dr./Shri./Smt.: **Shrikant Bhanudas Chavan** Topic:- **Psycho-Social Development In
Adolescents.** College:-Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilwadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra). The research paper is original &
innovative it is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month
of **MARCH** 2018.



Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

LBPA
Laxmi Book
Publication's

Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
e-Mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.
Principal,
Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief

December 2017
Special Issue

ISSN: 2319-3689

UGC Approved Journal
Sr. No. 126 Journal No.44813

3.3.2.1

Pro

2017-18

Critical Space[®]

A Peer-reviewed (refereed) International Journal
in English Language and Literature

Special Issue

on

**Transformation in Language, Literature,
Society and Culture in the 21st Century**

Guest Editors

Dr. Milind Desai

Mr. Vithal Rote

Dr. Suvarna Patil

Contents

- | | |
|---|----|
| 1. Library Automation: An Overview Pratibha Pachange | 1 |
| 2. Sense of Dislocation in Gish Jen's <i>Typical American</i> Dr. Bhandare Shrikant Jayant | 7 |
| 3. Psycho-Social Challenges and Struggle for Enlightenment in the Modern age with reference to <i>Journey to Ithaca</i> by Anita Desai Dr. Prashant Patangrao Yadav | 17 |
| 4. Indian Women in Films via Literature: a Changing Scenario Mr. Mansing Vitthal Thombare | 23 |
| 5. Cultural Degradation in The 21st Century Indian Society Mr. Rajendra Ashok Pradhan | 29 |
| 6. A Brief Review of Arundhati Roy's <i>The God of Small Things</i>: A Booker Winning Novel. Dr. Sunil Gunwant Patil | 35 |
| 7. Metafiction as a Post-modern Form of Literature Smt. Indrayani S. Jadhav Dr. Tejaswini D. Patil Dange | 41 |
| 8. Exploring Significance of Quilt Image in Nikki Giovanni's Poetry Vaijayanta V. Patil | 47 |
| 9. Accountability: The Master Key to Social Change Zeenat Merchant | 53 |
| 10. The Wrestler's Diet Mr. Prashant Mohanrao Shinde | 57 |
| 11. Web 3.0 Technology in Perspective of Five Laws of Library Science Ms. Satvashila T. Salgar | 61 |
| 12. e-Granthalaya Library Management Software Smt. Susmita Mahadev Walake | 71 |
| 13. Trends in India's Exports Direction: A Comparative Study of Pre and Post Reform Period | |

v

६५. २१ व्या शतकातील मराठी कादंबरीतील बदलते स्त्रीचित्रण : 'नातिचरामिच्या' अनुषंगाने
श्रीमती शैलजा श्रीधर शिंदे ३७१
६६. ग्रंथालयातील सेवांचे बदलते स्वरूप
डॉ. विकास वसंतराव खराडे ३७७
६७. ग्राहक हक्क संरक्षण चळवळीचे बदलते स्वरूप
प्रा.डॉ. चंपाताई श्रीरंग बोधले ३८१
६८. कल्पना दुधाळ यांची कविता : २१ व्या शतकातील ग्रामीण जाणिवांचा सशक्त आविष्कार
डॉ. रचना सचिन माने ३८७
६९. प्रवासवर्णनातील सांस्कृतिकता तोकोनोमाच्या अनुषंगाने
सौ. वैशाली श्रीकांत गुंजेकर ३९५
७०. अंधश्रद्धा निर्मूलन सामाजिक व्यवस्थेपुढील एक आव्हान
प्रा. एस. एन. दांडगे ३९९
७१. २१ व्या शतकातील सामाजिक व राजकीय आव्हाने : विशेष संदर्भ महाराष्ट्र राज्य
झाकीरहुसेन हाकीम सदे ४०३
७२. सानियांच्या कादंबरीतील संस्कृती संघर्ष
डॉ. सुवर्णा नामदेव पाटील ४०९
७३. २१ वे शतकातील भारतीय शेती उत्पादकता व उत्पादनातील बदल
प्रा. डॉ. माने डी. एन. ४१३

ग्रंथालयातील सेवांचे बदलते स्वरूप

डॉ. विकास वसंतराव खराडे

प्रस्तावना :

१९ व्या शतकात सार्वजनिक ग्रंथालयांची चळवळ अस्तित्वात आली आणि ग्रंथालयाचा खऱ्या अर्थाने वाचनभिमुख प्रवास सुरू झाला. २१ व्या शतकात मायक्रोफॉर्मस्, चुंबकीय, ध्वनिमुद्रण व इलेक्ट्रॉनिक माध्यमांनी ग्रंथाची जागा घेतली. तसेच माहिती तंत्रज्ञानामुळे ग्रंथालयाचे बदलते स्वरूप लक्षात घेता वाचकांना पारंपारिक सेवा देत असताना आधुनिकतेची जोड देवून विविध माध्यमातून अधिकाधिक सेवा उपलब्ध करून देणे हे आजच्या ग्रंथालयाचे व ग्रंथपालाचे उद्दिष्ट असले पाहिजे. आपल्याला ग्रंथालयातून देवू न शकणाऱ्या 'ई' सेवा अशा विविध बाबींचा आढावा तसेच प्रचलित जागरूकता सेवा इंटरनेटचा वापर करून अधिक प्रभावीपणे कशी देता येईल याची माहिती प्रस्तूत लेखामध्ये दिली आहे.

विषय संज्ञा - 'ई' संसाधने, इंटरनेट, वेब, ब्लॉग

'ई' सेवांचे स्वरूप :-

२१ व्या शतकात संगणकीय व माहिती तंत्रज्ञानाचा ग्रंथालयातही वापर वाढल्याने पारंपारिक ग्रंथालयाव्दारे दिल्या जाणाऱ्या सेवा नवीन स्वरूपात माहिती तंत्रज्ञानाच्या सहाय्याने दिल्या जावू लागल्या. यामुळे ग्रंथालय म्हणजे केवळ ग्रंथ संग्रहित करणारी संस्था नसून अद्ययावत माहिती साठविणारी आणि ऑन लाईन व ऑफ लाईन माहिती पुरविणारी महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्था बनली आहे. आधुनिक सेवा देणाऱ्या घटकामध्ये इंटरनेट, मल्टीमीडिया, सोशल नेटवर्किंग, ब्लॉग, वेब इत्यादीचा समावेश होतो.

इंटरनेट सेवा :-

इंटरनेट म्हणजे जगातील लाखो संगणकांनी मिळून तयार झालेले जाळे होय. इंटरनेटव्दारे जगातून कोणतीही माहिती प्रसारीत करता येते व माहितीचा शोध घेता येतो. इंटरनेटच्या सहाय्याने अनेक माहिती स्रोत मिळविता येतात. वर्ल्ड वाईड वेबच्या सहाय्याने माहितीचा शोध संग्रह व प्रसारण याबाबत नविन मार्ग निर्माण झाला. वेबसाईटच्या माध्यमातून इंटरनेटवर मुक्त स्वरूपात उपलब्ध असणारी माहिती वाचकांना उपयुक्त ठरत आहे.

इलेक्ट्रॉनिक संसाधने :-

इलेक्ट्रॉनिक संसाधने म्हणजे संगणकाचा वापर करून डिजिटल स्वरूपात केलेले साहित्य यामध्ये

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता.पलूस, जि. सांगली

इलेक्ट्रॉनिक पेपर सेवा :-

ग्रंथालये वाचकांसाठी राष्ट्रीय, राज्य व स्थानिक वर्तमानपत्र उपलब्ध करून देतात, मात्र काही मर्यादा पडतात. अशावेळी ई-पेपर उपयुक्त उपाय असू शकतो. सध्या सर्वत्र वर्तमानपत्रे इलेक्ट्रॉनिक स्वरूपात वेबवर उपलब्ध आहेत. यामध्ये या http://www.world_newspapers.com/indiahtml या संकेतस्थळाचा वापर करून भारतातील तसेच जगातील वर्तमान पत्रांच्या लिंक्स एकत्रित मिळू शकतात.

बुलेटिन बोर्ड सेवा :-

यामध्ये एकच मोठी मेल बॉक्स असते. ही सेवा ई-मेल प्रमाणेच आहे. ई-मेलमध्ये खाजगी मेल बॉक्स असतो. यातील संदेश हा एका विशिष्ट व्यक्तीसाठी किंवा अनेक व्यक्तीसाठी असतो. युजनेट हे जाळे इंटरनेट बुलेटिन बोर्डसाठी वापरण्यात येते. अशा तऱ्हेने ई-मेल, एफ. टी. वी. युजनेट, टेलनेट या सेवा इंटरनेट मार्फत दिल्या जातात.

आर. एस. एस. फीड :-

आर. एस. एस. हे ब्लॉगर आणि वाचकांसाठी पॉप्युलर टुल आहे. आर. एस. एस. फीडच्या माध्यमातून त्यांनी सबस्क्राईब केलेल्या संकेत स्थळांवरील नव्या माहितीची अपडेटची माहिती त्यांना त्या संकेत स्थळांवर न जाता मिळणार आहे.

निष्कर्ष :-

आजच्या ग्रंथालयाचे संगणकीकरण, यांत्रिकीकरण वेगाने झाल्यामुळे ग्रंथालये इलेक्ट्रॉनिक माध्यमाद्वारे अतिशय जलद व अचूक माहिती वाचकांना हव्या त्या ठिकाणी उपलब्ध करून देत आहेत. इंटरनेट सी.डी. रोम, डेटाबेसेस, नेटवर्क, OPAC, ई-जर्नल, ई-बुक अशा डिजिटल स्वरूपातील माहिती साधनांची देखभाल व वापर याबाबत ग्रंथपाल आणि वाचकांनी जागृत राहणे आवश्यक आहे. थोडक्यात ग्रंथालयाच्या तांत्रिक, आर्थिक आणि कार्यात्मक क्षेत्रात होणाऱ्या बदलांचा ग्रंथपालांनी स्वीकार केला पाहिजे.

संदर्भ :-

- १) कोण्णूर, एम. बी. व इतर (२००८), ग्रंथालय व माहितीशास्त्र कोश, पुणे. डायमंड पब्लिकेशन
- २) धर्मापुरीकर, रणजीत (२०१२), इलेक्ट्रॉनिक संसाधनांचे व्यवस्थापन गरज आणि परिपुर्ती, ज्ञान गंगोत्री (जून ते नोव्हेंबर २०१२), नाशिक, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ
- ३) बुआ, जी. ए. (२००७), ग्रंथालय माहितीशास्त्र व्यवस्थापनाचे नवे प्रवाह बांदा. श्री. साई प्रकाशन
- 4) Arms, W, (July, 1995), Key Concepts in the Architecture of the Digital Library. D. Lib. Magazine.
- 5) Kaul, H. K. & Baby, M. D. (2002), Library and Information Networking (NACLIN), New Delhi : DELNET

2017-18

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
4.002(IJIF)

Printing Area
International Research Journal

August 2017
Issue-32, Vol-02

01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
August 2017, Issue-32, Vol-02

Editor

Dr. Babu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com



Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

3.3.7

3.3.4

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
4.002(IJIF)*Printing Area*
International Research JournalAugust 2017
Issue-32, Vol-02

07

- 16) MULTIMEDIA PRESENTATION & ITS EFFECT ON SCIENCE SUBJECT ACHIEVEMENT OF...
Ms. Anupriya Mishra, Lucknow || 77
- 17) Kannashree: A Strategy for Inclusion of Girl Children in School Education
Anindya Mitra—Dr. Sujit Kumar Paul, West Bengal || 83
- 18) RESONANCE-JOURNAL OF SCIENCE EDUCATION: A BIBLIOMETRIC STUDY
Ku. Pradnya M. Ramteke.(Bhagat)—Mr.Arvind A.Bhagat || 88
- 19) MULTICULTURALISM IN BHARTI KIRCHNER'S NOVEL "PASTRIES: A NOVEL OF...
Dr. Ashok P. Khairnar—Prof. Bhaskar A. Patil || 94
- 20) WOMEN EMPOWERMENT THROUGH SELF EMPLOYMENT
Dr. Pragna K. V., Chitradurga, Karnataka || 97
- 21) Socio-Economic Aspects Migration
Dr. Ugrasen Pandey, FIROZABAD U.P. || 100
- 22) TRAINING PRACTICES IN AUTOMOBILE SECTOR
Mrs. Rekha S. Mudkanna || 110
- 23) Effect of a Six Week Emotional Intelligence Programme on the Sports Performance....
Dr. Bappaheeb Maske—Krishna Parbhane || 112
- 24) A Geographical Study of land Use Changes in Nandurbar District (MS)
Dr. A. T. Patil—Dr. S. K. Shelar—Dr. N. D. Mali || 117
- 25) अण्णाकाठ मध्ये चित्रित झालेला स्वातंत्र्य लढा
डॉ शिंदे सुरेश बाळकृष्ण, जि. सांगली || 121
- 26) विदर्भातील जहाल विचारधारा आणि बंग-भंग आंदोलन
डॉ. अण्णासाहेब म्हळसने, बुलडाणा || 124
- 27) माध्यमिक स्तरावरील स्त्रीशिक्षिकांचे महिला सबलीकरणविषयी जाणीव जागृती—.....
छाया शिरसाट || 126
- 28) बाबुराव बागूल यांच्या लेखनामगील प्रेरणा आणि वैशिष्ट्ये
डॉ. बाळासाहेब शंकर शेळके जि. अहमदनगर || 130
- 29) भारतीय राज्यव्यवस्थेवरील समाजवादी विचारसरणीचा प्रभाव आणि वास्तव
प्रा. सुनिल एन. संदानशिव, दहिवेल, ता. साक्री, जि. धुळे || 136

Printing Area : Interdisciplinary Multilingual Refereed JournalUGC Approved
Jr.No.43055

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.

कृष्णाकाठ मध्ये चित्रित झालेला स्वातंत्र्य लढा

डॉ. शिंदे सुरेश बाळकृष्ण

मराठी विभागप्रमुख,

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली

संयुक्त महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री, गांधीवादी स्वातंत्र्यसैनिक समाजसुधारक, विचारवंत, उत्तम वक्ता, लेखक, उत्तम प्रशासक, उत्कृष्ट संसदपटू, सुसंस्कृत द्रष्ट्यानेता, महाराष्ट्राचे शिल्पकार, अशा अनेक पैलूंनी महबलेले, व्यक्तिमत्त्व म्हणून यशवंतराव चव्हाण यांना महाराष्ट्र ओळखतो. एका सामान्य शेतकरी कुटुंबामध्ये जन्म घेवून स्वतंत्र भारताच्या संरक्षणमंत्री व उपपंतप्रधान पदापर्यंत झेप घेतलेले उत्तुंग व्यक्तिमत्त्व म्हणजे यशवंतराव चव्हाण.

यशवंतराव चव्हाण यांचा जन्म १२ मार्च १९१२ मध्ये सांगली जिल्ह्यातील देवराष्ट्रे या छोट्याशा खेड्यामध्ये झाला. देवराष्ट्रे हे यशवंतरावांचे आजोळ. त्यांचे मूळगाव विटा. त्यांचे वडील न्यायालयात बेलीफ म्हणून काम करीत होते. त्यांची नेमणूक कराड - विटा - दहिवडी अशा गावाना होत असे. हे कुटुंब कराड येथे स्थायिक झाले. पुढे यशवंतराव अवघे चार वर्षांचे असताना त्यांच्या वडीलांचा मृत्यू झाला. यशवंतरावांना दोन मोठे भाऊ होते. वडीलांच्या मृत्यूमुळे या कुटुंबाची मोठी बिकट परिस्थिती झाली. त्यांच्या मातोश्री विठाई ही मोठी धीराची खंबीर स्त्री होती. पती निधनानंतर आपल्या मुलांना त्यांनी चांगल्या प्रकारे सांभाळले. पुढे यशवंतरावांचे मोठे बंधू जानोबा यांना त्यांच्या वडिलांच्या जागी बेलिफ म्हणून नोकरीस घेतले. कराड येथे यशवंतराव शाळेमध्ये शिकू लागले. कराडमध्ये त्यांचा शालेय जीवनामध्ये स्वातंत्र्य लढयाशी संपर्क आला व ते या लढयामध्ये सक्रिय झाले. स्वातंत्र्यानंतर मुंबईमध्ये येईपर्यंत त्यांचे वास्तव्य कराडलाच होते. यशवंतरावांचे शिक्षण बी. ए. पर्यंत झाले त्यांनी एल. एल. बी. चे शिक्षण घेतले. परंतु वकिल व्यवसाय मात्र केला नाही. कारण काही दिवस कराड येथे त्यांनी वकिली करून पहिली परंतु या व्यवसायात आपण कधीच रमणार नाही हे यशवंतराव चव्हाणाच्या एका वर्षामध्ये लक्षात आले. कारण त्यांची ध्येय वेगळी होती.

कृष्णाकाठ हे यशवंतराव चव्हाण यांचे आत्मचरित्र. त्यांच्या

जन्मापासून ३० मार्च १९४६ साली पार्लमेंटरी पार्टीचे सेक्रेटरीपदी त्यांची निवड झाली म्हणून ते मुंबईला निघाले या कालावधीतील आत्मकथा म्हणजे कृष्णाकाठ होय. या कालावधीमधील यशवंतरावांच्या जीवनातील अनेक महत्त्वाच्या घटना या आत्मकथेमध्ये चित्रित झालेल्या आहेत. त्यामध्ये यशवंतरावांनी स्वातंत्र्यामध्ये भाग घेतलेल्या घटनाही आलेल्या आहेत. त्याचबरोबर या कालखंडातील स्वातंत्र्य लढयातील महत्त्वाच्या घटनांचा यशवंतराव चव्हाण यांच्यावर झालेला परिणामही आपल्या आत्मकथेमध्ये त्यांनी नमूद केलेला आहे.

१९३० साली लाहोरला रावी नदीच्या तीरावर राष्ट्रीय काँग्रेसचे अधिवेशन झाले त्यामध्ये २६ जानेवारी १९३० रोजी स्वातंत्र्य दिन साजरा करण्याचे ठरविले. ही बातमी कळाल्यानंतर यशवंतराव व त्यांच्या मित्रांना खूप आनंद झाला. यशवंतरावांनी एक प्रतिज्ञापत्रक तयार केले. कराडमधील कृष्णाघाटावर झेंडावंदन करून या प्रतिज्ञापत्रकाच्या प्रती जमलेल्या लोकांना वाटल्या. या घटनेनंतर यशवंतराव चव्हाण म्हणतात, राष्ट्रीय काँग्रेसच्या तिरंगी झेंडयाखाली आज आपण प्रतिज्ञा वाचन केल्यामुळे मनाची शांती वाढली. माझे राजकीय जीवन ख-या अर्थाने सुरु झाले. १

महात्मा गांधींचा दांडी - मोर्चा सुरु झाला. त्याचा समाजावर झालेला परिणाम वर्णन करताना यशवंतराव म्हणतात, शांत, एकाकी, अविचल व स्थिर असा एखादा पाण्याचा डोह असावा आणि अचानक कुटून तरी वादळी, सोसाट्याचा बारा यावा म्हणजे त्यावरती असे लाटांचे तरंग उडू लागतात. तसेच शांत पडलेल्या या समाजाचे होऊ लागले. २ याकाळात कराडमध्ये होणा-या भाषणांचा त्याचा लोकमानसावरील प्रभावाचे चित्रण यशवंतरावांनी केले आहे. कराडमध्ये गांधीजींच्या मार्गाने तयार केलेले मीठ जाहीरपणे विक्री केले गेले ते विक्री करणारे श्री. निकम व खरेदी करणारे शामजीभाई आणि हरिभाऊ लाड यांना अटक आली. या घटनेमुळे कराडमधील चळवळीला उधाण आले असा उल्लेख यशवंतराव यांनी केला आहे. त्याकाळी हरिभाऊ लाड हे कराडमधील चळवळीचे नेतृत्व करीत होते. त्यांना अटक झाल्यामुळे कराडमधील स्वातंत्र्यलढयाचे नेतृत्व यशवंतराव चव्हाण यांच्याकडे आले. त्यांनी दररोज सकाळी प्रभात फेरी काढण्याचे काम सुरु केले. याबद्दल त्यांच्याबरोबर दहा - पंधरा मंडळींवर खटल्याचे समनस निघाले व त्यांच्यावर खटला भरण्यात आला. या दरम्यान यशवंतरावांना पोलीस कस्टडीमध्ये ठेवून चौकशीही करणेत आली.

स्वातंत्र्य लढयाच्या कालखंडामध्ये सांगली जिल्हातील बिळाशी येथील लोकांनी इंग्रजी सत्तेशी असहकार्याचे जे आंदोलन केले त्याचा परिणाम सर्वत्र झाला. त्यामुळे चळवळीला उत्तेजन मिळाले. त्यानंतर ब्रिटीश सत्तेने तेथील लोकांवर अत्याचार केले. तेथील लोकांचे



Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

मनोधैर्य वाढावे म्हणून यशवंतराव चव्हाण व राघू अण्णा लिमये बिळाशी परिसरात गेले. या प्रसंगाचे वर्णन कृष्णाकाठ मध्ये रोमहर्षकपणे यशवंतरावानी केलेले आहे. संध्याकाळच्या वेळी यशवंतराव व राघू अण्णा मंगरूळ या गावाजवळ आले. अंधार पडेपर्यंत एका शेतात ते बसले आणि नंतर त्यांनी गावात प्रवेश केला. नंतर देशपांडे नावाच्या जमीनदाराच्या घरी ते गेले. दुस-या दिवशी आजूबाजूच्या गावातील अनेक लोक त्यांना दिवसभर भेटण्यास येऊ लागले. त्यांना राघूअण्णा व यशवंतरावानी धीर दिला. त्यानंतर त्याच रात्री बिळाशी येथे पोलीसांची नजर चुकवून एक सभा घेतली आणि तेथील लोकांना धीर दिला. बिळाशीला घेतलेली सभा व तेथील भूमीगतपणे यशवंतरावाचे वावरणे यातून यशवंतराव चव्हाण यांनी किती धाडसाने स्वातंत्र्यलढयात सहभाग घेतलेला होता याचे दर्शन येथे घडते. त्यानंतर यशवंतराव पुढे रत्नागिरीला जाऊन स्वातंत्र्यवीर सावरकरांना भेटून आले या घटनेबद्दल यशवंतराव चव्हाण म्हणतात, ज्या घटनेने मला काही शिकवले आणि माझ्यावर कायमचा परिणाम केला. अशा १९३० सालच्या माझ्या आयुष्यातील अविस्मरणीय घटनांपैकी ही एक घटना आहे.३

२६ जानेवारी १९३२ साली यशवंतरावांच्या हायस्कूलच्या पटागंगामध्ये झेंडा फडकवला झेंडयाला सलामी देवून राष्ट्रगीत म्हणून वंदे मातरम च्या घोषणा दिल्या. हा सर्व कार्यक्रम शाळेच्या तपासणीला आलेल्या एज्युकेशन इन्स्पेक्टरनी पाहिला आणि शाळा सुरु झाल्यानंतर हेडमास्तरांकडे चौकशी केली. नंतर एका पोलीस अधिका-याने शाळेत येवून यशवंतरावानी अटक केली. यशवंतरावानी अशा रीतीने पहिली शास्त्रशुध्द अटक झाली. पुढे त्यांच्यावर खटला चालविणेत आला. त्यांनी गुन्हा कबूल केल्यामुळे त्यांना अठरा महिन्यांची शिक्षा झाली. ही शिक्षा झाल्यानंतर दुस-या दिवशी त्यांची आई त्यांना भेटायला आली. आईच्या डोळ्यात पाणी आले. त्यावेळी यशवंतरावाचे वय कमी होते. आईबरोबर मराठी शाळेतील एक शिक्षकही आले होते ते म्हणाले माफी मागितलीस तर फौजदारसाहेब सोडून देतील. पण त्यावर यशवंतरावांची आई म्हणाल्या माफी मागायच काही एक कारण नाही. तब्येतीची काळजी घे, म्हणजे झाल. एवढ बोलून आई निघूनही गेल्या. आईच्या या कणखर व स्वाभिमानी वृत्तीबद्दल यशवंतराव म्हणतात, आईच्या या स्वाभिमानी गुणाचा ठेका अंतःकरणात जतन करून मी कोठडीत परत आलो. मनाने मी निश्चित झालो. आजही प्रसंग आठवतो, तव्हा आईचा हा मोठेपणा मला किती उदात्त वळण देवून गेला, हे जाणवतो. ४ आईबद्दलच्या यशवंतरावाच्या भावना येथे व्यक्त होताना दिसतात. तुरुंगामध्ये असताना यशवंतराव चव्हाणांच्यावर तेथील राजकीय क्रांतीकारांच्या सहवासाचा खूप चांगला परिणाम झाला. आचार्य भागवत, श्री. भुस्कूटे, एस. एम. जोशी, ह. रा. महाजनी, रावसाहेब

पटवर्धन अशा विव्दान लोकांच्या सहवासांमुळे यशवंतरावांच्या ज्ञानामध्ये भर पडल्याचा उल्लेख यशवंतरावांनी केला आहे. याच काळात शेडयूल कास्टना स्वतंत्र मतदार संघ देण्याच्या ब्रिटीशांच्या योजनेला विरोध म्हणून महात्मा गांधी यांनी येरवडा तुरुंगामध्ये उपोषणाला सुरुवात केली. त्यावेळेची यशवंतराव चव्हाणांची मनोवस्था त्यांनी कृष्णाकाठ मध्ये चित्रित केली आहे. त्यावेळीही त्यांना डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराबद्दल आदर होता. डॉ. आंबेडकरांनी शेवटी पुणे करारावर सही केली. याबद्दल यशवंतराव म्हणतात, डॉक्टर आंबेडकरांनी गांधीजीचे प्राण वाचविले, याबद्दल डॉक्टर आंबेडकरांच्याबद्दल माझ्या मनात रुजलेली आदराची भावना दुरावली. ५

या दरम्यान म. गांधी जेलमधून सुटून बाहेर आले आणि त्यांनी कायदेभंग व राजकीय कार्य याच्यापेक्षा हरिजन-सेवेवर लक्ष केंद्रित केले. परंतु या कार्यक्रमाला लोकांचा फारसा प्रतिसाद मिळत नव्हता. परंतु यशवंतरावांचे मत या कार्यक्रमाच्या पूर्णपणे बाजूचे होते. याबद्दल ते म्हणतात, समाजाच्या सर्व शाखांना एका मुख्य प्रवाहात आणायचे असेल तर खाणे, पिणे, धर्म या बाबतींमध्ये माणसाने माणसाला एकमेकांपासून दूर ठेवावे हे बरोबर नाही, हा गांधीचा विचार बिनचूक होता. ६ यावरून यशवंतरावांचे अस्पृश्य निर्मूलनाबद्दल मत लक्षात येते. याचप्रकारे महारवतन रद्द व्हावे म्हणून यशवंतरावानी प्रयत्न केला. पुढे ते मुख्यमंत्री झाल्यानंतर त्यांनी महार वतन रद्द केले. ७

दुस-या महायुद्धाबद्दल ही कृष्णाकाठ मध्ये सविस्तरपणे आपली मते यशवंतरावांनी मांडली आहेत. रॉयवादी व कम्युनिष्ट यांची या युद्धाबद्दल भूमिका चुकीच्या होत्या व त्या युद्धाचे स्वरूप बदल्यानंतर बदलत होत्या याचे विवेचनही यशवंतरावांनी केले आहे. काँग्रेसने या युद्धाच्या विरोधी जी भूमिका सुरुवातीपासून शेवटपर्यंत घेतली होती ती कशी बरोबर आहे याचे विश्लेषणही यशवंतरावांनी येथे केले आहे. इ. स. १९४२ चे भारत छोडो या आंदोलनामध्ये काँग्रेसच्या प्रमुख कार्यकर्ते यांना अटक होऊ लागली. त्यावेळी यशवंतराव भूमिगत झाले या भूमिगत काळातील अनेक ठिकाणी त्यांनी भ्रमंती केली. त्यावेळचे अनुभव कृष्णाकाठ मध्ये सविस्तरपणे आले आहेत. याकाळात त्यांनी कवठे या भागात एक जाहिर सभा घेतली. भूमिगत काळात अनेक कार्यकर्त्यांना भेट देवून चळवळ पुढे चालू राहिल याची दक्षता यशवंतरावांनी घेतली. अनेक गांवामध्ये निघालेल्या मोर्चांचे नियोजनही कार्यकर्त्यांना भेटून यशवंतरावांनी केले. इस्लामपूरच्या मोर्च्यांमध्ये प्रत्यक्ष सहभागही घेतला. याकाळात अनेक गांवामध्ये मोर्चे निघाले. याबद्दल यशवंतराव चव्हाण म्हणतात, कराड, पाटण, तासगांव, वडूज आणि इस्लामपूर या ठिकाणी झालेले हे मोर्चे १९४२ च्या चळवळीच्या इतिहासातले एक सोनेरी पान आहे. असे मी मानतो. ८



या मोर्च्यावर झालेल्या गोळीबारात झालेले बलिदान याचे वर्णनही कृष्णाकाठ मध्ये असेच जन आंदोलनाच्या उत्स्फूर्त उद्रेकाचे दर्शन घडणारे आहे. शिरवडे स्टेशन जाळले यामध्येही यशवंतरावाचा अप्रत्यक्ष सहभाग होता. हे स्टेशन जाळणारे रामूमामा पवार पोलीसांची बंदूक पळवून घेवून यशवंतरावांच्या भेटोस आले होते. भूमिगत काळात मुंबई पासून अनेक गांवांमध्ये यशवंतरावांनी भ्रमती केली. यावेळेचा एक मजेशीर अनुभव कराड ते पुणे रेल्वे प्रवासामध्ये आला. भूमिगत यशवंतराव तिकिटाशिवाय रेल्वे प्रवास करत असताना एका पोलीसाने त्यांच्याकडून तिकिटाचे पैसे घेवून पुण्यापर्यंत त्यांना सुखरूप पोहचविले. यशवंतराव सापडत नाहीत, म्हणून पोलीसांनी यशवंतरावांचे भाऊ गणपतराव व पत्नी रेणूबाई यांना अटक केली. यशवंतरावांचे मोठे बंधू ज्ञानोबा यांनी गणपतरावांना तुरुंगातून सोडवून आणण्यासाठी स्वतःवर एक शस्त्रक्रिया करवून घेतली व त्यातच त्यांचा अंत झाला. या प्रसंगांचे यशवंतरावांनी केलेले वर्णन मनाला चटका लावून जाते. पुढे यशवंतरावाची पत्नी रेणूबाई आजारी पडल्या आणि आपल्या माहेरी फलटणला राहणेस गेल्या. त्यांना पाहण्यास गेल्यानंतर यशवंतरावांना पोलीसांनी अटक केली आणि त्यांचे सुमारे दहा महिन्यांचे भूमिगत आयुष्य संपले. पुढे त्यांना येरवड्या तुरुंगामध्ये ठेवण्यात आले.

कृष्णाकाठ या यशवंतराव चव्हाण यांच्या आत्मचरित्रात अशा स्वातंत्र्य लढयाच्या अनेक घटना चित्रित झाल्या आहेत. स्वातंत्र्य चळवळीचे बारीक तपशिलासह चित्रण येथे होते. त्याचबरोबर जनसामान्यांवर या चळवळीचा कसा परिणाम होत होता. याचेही विवेचन कृष्णाकाठ मध्ये येते. भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीचा एक महत्वाचा ऐतिहासिक दस्तऐवज म्हणून कृष्णाकाठ कडे पाहिले पाहिजे. या स्वातंत्र्य लढयामध्ये भाग घेतलेल्या शांताराम इनामदार, बाळासाहेब उंडाळकर, व्यंकटराव ओगले, शंकरराव करंबेलकर, भाऊसाहेब कळंबे, कासेगावकर वैद्य, किसनवीर, अनंतराव कुलकर्णी, दयार्णव कोपर्डेकर, तात्यासाहेब कोरे, माधवराव घाटगे, परशुराम घागे, बाबुराव चरणकर, विष्णूपंत चितळे, दिनकराव जवळकर, आत्माराम बापू जाधव, माधवराव जाधव, पांडूतात्या डोईफोडे, दिवेकर वैद्य, दिनकरराव निकम, मगतभाई पटेल, आत्माराम पाटील, के. डी. पाटील, पंडया इंजिनियर, व्यंकटराव पवार, विठ्ठलराव पागे, पांडू मास्तर, यशवंतराव पार्लेकर, गुलाब बागवान, व्यंकटराव माने, हरिभाऊ लाड, राघुअण्णा लिमये, पांडूअण्णा, शिराळकर, आण्णासाहेब सहस्त्रबुध्दे, शंकरराव साठे, गोरीहर सिंहासने, भाऊसाहेब सोमण अशा अनेक कार्यकर्त्यांचे उल्लेख, त्यांच्यासंबंधीच्या घटना येथे आल्या आहेत. यावरून स्वातंत्र्य लढयाचे चित्रण करणारा हा अत्यंत महत्वाचा ग्रंथ आहे. हे ही आपल्या लक्षात

येते यशवंतरावांचे आत्मचरित्र एकाचवेळी तीन पातळ्यावर वावरताना दिसते. एक वैयक्तिक - कोट्टबिक जीवन, दुसरी कराड सातारा या ठिकाणची चळवळ आणि तिसरी राष्ट्रीय पातळीवरील नेत्यांचे राजकारण पण हे सर्व चित्रण एकत्रितपणे यशवंतरावांनी अत्यंत कौशल्याने केले आहे. त्यामुळे वाड्मयीन दृष्ट्या जसा हा ग्रंथ महत्वाचा आहे. (केसरी मराठा संस्थेतर्फे साहित्य सम्राट न.चि. केळकर पारितोषक या ग्रंथास मिळाले.) तसाच स्वातंत्र्य चळवळीचा एक ऐताहासिक दस्तऐवज म्हणूनही या ग्रंथाकडे पाहिले पाहिजे.

संदर्भ

- १) चव्हाण यशवंतराव, कृष्णाकाठ, पुणे, रोहन प्रकाशन, विशेष-जनआवृत्ती, एप्रिल २०१२, पृ. ५८
- २) तत्रैव, पृ. ६३
- ३) तत्रैव पृ. ८७
- ४) तत्रैव पृ. ११६
- ५) तत्रैव पृ. १३१
- ६) तत्रैव पृ. १३८
- ७) कवठेकर बाळकृष्ण, कृष्णाकाठ आणि ऋणानुबंध, समाज प्रबोधन पत्रिका, जानेवारी - मार्च २०१३, पृ. ८५
- ८) लोकराज्य, संपा. प्रमोद नलावडे, मार्च २०१२, पृ. ११



dg

Principal,
Bahasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bahilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli

6

2017-18

Review of Research



International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 8 | Issue - 2 | November - 2018

5.7631(UIF)

2249-894X

EXERCISE, HEALTH AND STRESS



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Shrikant Bhanudas Chavan
Principal

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal. Palus Dist. Sangli (Maharashtra)

ABSTRACT:- Few things are more stressful than illness. Many forms of exercise reduce stress directly, and by preventing bodily illness, exercise has extra benefits for the mind. Regular physical activity will lower your blood pressure, improve your cholesterol, and reduce your blood sugar...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Review of Research (ROR) Journal is an Online International Multidisciplinary Research Journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the Editorial Board. Readers will include investigators in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok
Yakkaldevi

Iran



Bijan
Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Perera

Associate Editors



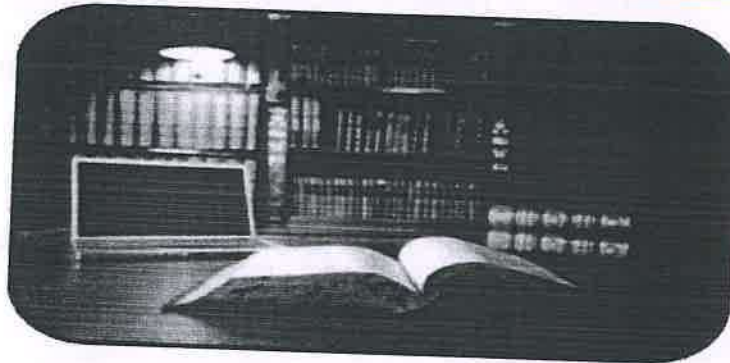
Dr. T. Manichander



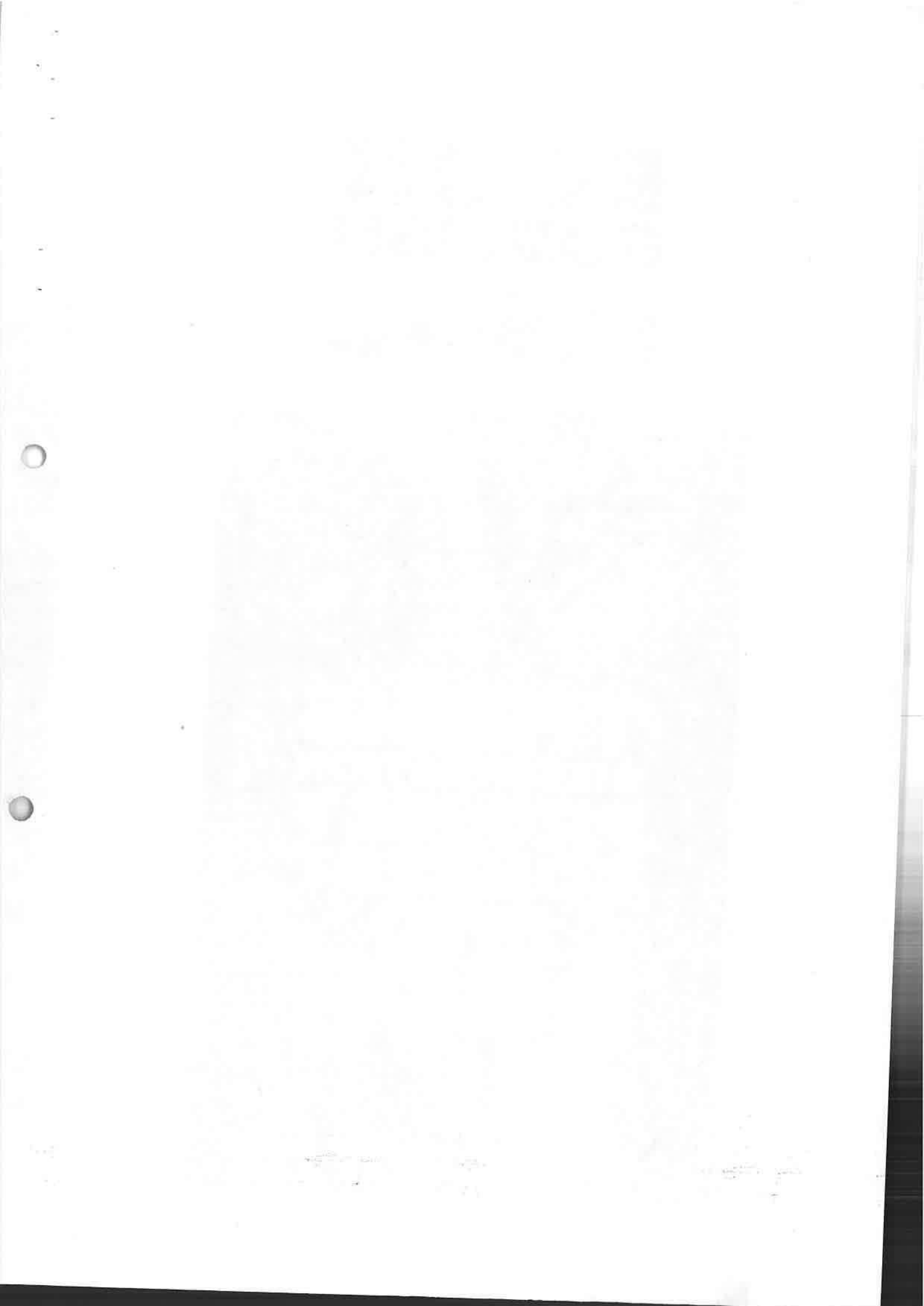
Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- MENDALEY
- GOOGLE SCHOLAR
- CITULIKE
- ENDNOTE
- ZOTERO
- DRJI



| Sr. No. | Title and Name of The Author (S) | Page No. |
|---------|---|----------|
| 1 | EXERCISE, HEALTH AND STRESS Dr. Shrikant Bhanudas Chavan | 1 |
| 2 | An Analytical Study On Inconsistency In Supreme Court Judgments In Chque Dishonour Cases S. M. Mohamed Miskeen ¹ and Dr. I. Francis Gnanasekar ² | 9 |
| 3 | Higher Education In India: Growth Prospects And The Role Of Ict In Admission Process Dr. Pushkar Dubey ¹ and Deepak Pandey ² | 13 |
| 4 | A Study Of Achievement Of Social Science Of Std. 10 th Student In Relation To Gender Falguni Ishwarbhai Vaghela | 19 |
| 5 | Assessment And Classification Of Baseball Players Of Vidarbha With Respect To Their Somatotypes Dr. Riyaj Uddin ¹ and Vivek Surendra Sahu ² | 23 |





Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631 (IJR)



Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of
Dr./Shri./Smt.: **Shrikant Bhanudas Chavan** Topic:- **Exercise, Health and Stress**
College:- Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal. Palus
Dist. Sangli (Maharashtra). The research paper is original & innovative it is done
double blind peer reviewed. Your article is published in the month of **November 2018**.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Path, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
e-Mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal. Palus.

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief

**EXERCISE, HEALTH AND STRESS****Dr. Shrikant Bhanudas Chavan**Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).**ABSTRACT**

Few things are more stressful than illness. Many forms of exercise reduce stress directly, and by preventing bodily illness, exercise has extra benefits for the mind. Regular physical activity will lower your blood pressure, improve your cholesterol, and reduce your blood sugar. Exercise cuts the risk of heart attack, stroke, diabetes, colon and breast cancers, osteoporosis and fractures, obesity, depression, and even dementia (memory loss). Exercise slows the aging process, increases energy, and prolongs life.

Except during illness, you should exercise nearly every day. That doesn't necessarily mean hitting the gym or training for a marathon. But it does mean 30 to 40 minutes of moderate exercise such as walking or 15 to 20 minutes of vigorous exercise. More is even better, but the first steps provide the most benefit. Aim to walk at least two miles a day, or do the equivalent amount of another activity. You can do it all at once or in 10- to 15-minute chunks if that fits your schedule better. Add a little strength training and stretching two to three times a week, and you'll have an excellent, balanced program for health and stress reduction. And if you need more help with stress, consider auto-regulation exercises involving deep breathing or muscular relaxation. Remember, too, that mental exercises are the time-honored ways to cut stress (see box). Popular beliefs notwithstanding, exercise is relaxing.

KEYWORDS: mental health, buffering the brain, Exercises for Mental Health.

INTRODUCTION

The exercise effect:

Proof is mounting for the advantages of activity, yet analysts don't frequently utilize practice as a component of their treatment munitions stockpile. Here's more research on why they should.

At the point when Jennifer Carter, PhD, advises patients, she regularly recommends they stroll as they talk. "I take a shot at a delightful lush grounds," says the directing and game analyst at the Center for Balanced Living in Ohio.

Walking around a treatment session frequently enables patients to unwind and open up, she finds. However, that is not by any means the only advantage. As prompt past leader of APA's Div. 47 (Exercise and Sport Psychology), she's very much aware of the emotional wellness advantages of moving your muscles. "I regularly suggest practice for my psychotherapy customers, especially for the individuals who are restless or discouraged," she says.

Lamentably, graduate preparing programs once in a while show understudies how to enable patients to change their activity conduct, Carter says, and numerous analysts aren't steering without anyone else. "I figure clinical and directing analysts could complete a superior employment of joining exercise into treatment," she says.

"Exercise is something that therapists have been extremely ease back to take care of," concurs Michael Otto, PhD, a teacher of brain research at Boston University. "Individuals realize that activity helps



physical results. There is substantially less familiarity with psychological wellness results — and a whole lot less capacity to make an interpretation of this mindfulness into exercise activity."

Scientists are as yet working out the subtleties of that activity: how much exercise is required, what components are behind the lift practice brings, and why — regardless of the considerable number of advantages of physical movement — it's so difficult to go for that morning run. Yet, as proof heaps up, the activity psychological well-being association is getting to be difficult to disregard.

TEMPERAMENT IMPROVEMENT

In the event that you've at any point gone for a pursue a distressing day, odds are you felt better subsequently. "The connection among exercise and inclination is truly solid," Otto says. "For the most part inside five minutes after moderate exercise you get a mind-set upgrade impact."

Be that as it may, the impacts of physical movement stretch out past the present moment. Research demonstrates that activity can likewise help mitigate long haul gloom.

A portion of the proof for that originates from expansive, populace based connection ponders. "There's great epidemiological information to propose that dynamic individuals are less discouraged than idle individuals. Also, individuals who were dynamic and halted will in general be more discouraged than the individuals who keep up or start an activity program," says James Blumenthal, PhD, a clinical therapist at Duke University.

The proof originates from exploratory investigations too. Blumenthal has investigated the disposition practice association through a progression of randomized controlled preliminaries. In one such examination, he and his associates relegated inactive grown-ups with real burdensome confusion to one of four gatherings: directed exercise, locally established exercise, stimulant treatment or a fake treatment pill. Following four months of treatment, Blumenthal discovered, patients in the activity and stimulant gatherings had higher rates of reduction than did the patients on the fake treatment. Exercise, he closed, was commonly equivalent to antidepressants for patients with real burdensome turmoil (Psychosomatic Medicine, 2007).

Blumenthal caught up with the patients one year later. The kind of treatment they got amid the four-month preliminary didn't anticipate abatement a year later, he found. Notwithstanding, subjects who revealed standard exercise at the one-year follow-up had lower sadness scores than did their less dynamic partners (Psychosomatic Medicine, 2010). "Exercise appears essential for treating despondency, as well as in avoiding backslide," he says.

Surely, there are methodological difficulties to inquiring about the impacts of activity, from the recognizable proof of suitable examination gatherings to the impediments of self-detailing. Regardless of these difficulties, a convincing assortment of proof has developed. In 2006, Otto and associates audited 11 considers examining the impacts of activity on psychological wellness. They confirmed that activity could be an incredible mediation for clinical misery (Clinical Psychology: Science and Practice, 2006). In light of those discoveries, they finished up, clinicians ought to consider adding activity to the treatment gets ready for their discouraged patients.

Mary de Groot, PhD, an analyst in the bureau of drug at Indiana University, is making the exploration one stride further, researching the job exercise can play in a specific subset of discouraged patients: those with diabetes. It's a huge issue, she says. "Rates of clinically critical burdensome side effects and judgments of significant burdensome turmoil are higher among grown-ups with diabetes than in the overall public," she says. Furthermore, among diabetics, she includes, despondency is frequently harder to treat and bound to repeat. The affiliation runs both ways. Individuals with diabetes are bound to create wretchedness, and individuals with dejection are likewise bound to create diabetes. "Various examinations show individuals with the two issue are at more serious hazard for mortality than are individuals with either clutter alone," she says.



ds
Principal,

Babasaheb Chitla Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Sangli, Dist. Sangli.

Since diabetes and corpulence go connected at the hip, it appeared to de Groot that activity could successfully treat the two conditions. When she checked on the writing, she was astonished to discover the theme hadn't been inquired about. Along these lines, she propelled a pilot venture in which grown-ups with diabetes and sorrow embraced a 12-week practice and psychological social treatment (CBT) intercession program (Diabetes, 2009). Promptly following the program, the members who practiced indicated enhancements both in sorrow and in dimensions of A1C, a blood marker that reflects glucose control, contrasted and those in a control gathering. She's currently embraced a bigger report to additionally investigate exercise and CBT, both alone and in blend, for treating diabetes-related dejection.

Fight-or-flight

Specialists have additionally investigated exercise as a device for treating — and maybe anticipating — uneasiness. When we're frightened or undermined, our sensory systems bounce enthusiastically, setting off a course of responses, for example, perspiring, discombobulation, and a hustling heart. Individuals with elevated affectability to nervousness react to those sensations with dread. They're likewise bound to create freeze issue not far off, says Jasper Smits, PhD, Co-Director of the Anxiety Research and Treatment Program at Southern Methodist University in Dallas and co-writer, with Otto, of the 2011 book "Exercise for Mood and Anxiety: Proven Strategies for Overcoming Depression and Enhancing Well-being."

Smits and Otto contemplated that normal exercises may help individuals inclined to tension turn out to be more averse to freeze when they encounter those battle or-flight sensations. All things considered, the body produces huge numbers of the equivalent physical responses — substantial sweat, expanded pulse — in light of activity. They tried their hypothesis among 60 volunteers with elevated affectability to uneasiness. Subjects who took part in a fourteen day practice program demonstrated critical enhancements in tension affectability contrasted and a control gathering (Depression and Anxiety, 2008). "Exercise from multiple points of view resembles introduction treatment," says Smits. "Individuals figure out how to connect the manifestations with wellbeing rather than threat."

In another examination, Smits and his associates solicited volunteers with differing levels from tension affectability to experience a carbon-dioxide challenge test, in which they inhaled CO₂-improved air. The test frequently triggers similar side effects one may understanding amid a fit of anxiety: expanded heart and respiratory rates, dry mouth and wooziness. Obviously, individuals with high nervousness affectability were bound to freeze in light of the test. In any case, Smits found that individuals with high tension affectability who additionally announced high action levels were less inclined to freeze than subjects who practiced rarely (Psychosomatic Medicine, 2011). The discoveries recommend that physical exercise could avert freeze assaults. "Action might be particularly imperative for individuals in danger of creating uneasiness issue," he says.

Smits is presently exploring activity for smoking discontinuance. The work expands on past research by Bess Marcus, PhD, a brain science specialist now at the University of California San Diego, who found that energetic exercise helped ladies quit smoking when it was joined with intellectual conduct treatment (Archives of Internal Medicine, 1999). Notwithstanding, a later report by Marcus found that the impact on smoking discontinuance was progressively restricted when ladies occupied with just moderate exercise (Nicotine and Tobacco Research, 2005).

In that lies the issue with recommending exercise for emotional wellness. Scientists don't yet have an idea about which sorts of activity are best, what amount is fundamental, or considerably whether practice works best related to different treatments.

"Emotional well-being experts may figure exercise might be a decent supplement [to other therapies], and that might be valid," says Blumenthal. "However, there's exceptionally constrained information that recommends joining exercise with another treatment is superior to the treatment or the activity alone."



dg

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

Analysts are beginning to address this inquiry, nonetheless. As of late, Madhukar Trivedi, MD, a therapist at the University of Texas Southwestern Medical College, and associates contemplated exercise as an auxiliary treatment for patients with significant burdensome turmoil who hadn't accomplished abatement through medications alone. They assessed two exercise dosages: One gathering of patients consumed four kilocalories for each kilogram every week, while another consumed 16 kilocalories for every kilogram week by week. They found both exercise conventions prompted critical enhancements, however the higher-portion practice program was increasingly compelling for most patients (Journal of Clinical Psychiatry, 2011).

The investigation additionally brought up some captivating issues, in any case. In people without family ancestry of dysfunctional behavior, just as men with family ancestry of psychological instability, the higher-portion practice treatment demonstrated progressively powerful. In any case, among ladies with a family ancestry of psychological sickness, the lower practice portion really seemed progressively gainful. Family ancestry and sexual orientation are directing variables that should be additionally investigated, the scientists closed.

Questions likewise stay about which sort of activity is generally useful. Most examinations have concentrated on vigorous exercise, however some exploration proposes weight preparing may likewise be successful, Smits says. At that point there's the domain of mind-body practices like yoga, which have been polished for a considerable length of time yet presently can't seem to be altogether contemplated. "There's potential there, however it's too soon to get energized," he says.

Buffering the brain

It's additionally misty precisely how moving your muscles can have such a noteworthy impact on psychological wellness. "Biochemically, there are numerous things that can affect inclination. There are such a large number of good, open inquiries concerning which components contribute the most to changes in sorrow," says de Groot.

A few analysts speculate practice mitigates interminable misery by expanding serotonin (the synapse focused by antidepressants) or mind determined neurotrophic factor (which underpins the development of neurons). Another hypothesis proposes practice helps by normalizing rest, which is known to effectsly affect the cerebrum.

There are mental clarifications, as well. Exercise may support a discouraged individual's standpoint by helping him come back to important movement and giving a feeling of achievement. At that point there's the way that an individual's responsiveness to stretch is directed by movement. "Exercise might be a method for organically toughening up the cerebrum so push has to a lesser extent a focal effect," Otto says.

Almost certainly, different elements are at play. "Exercise has such expansive impacts that my supposition is that there will be different systems at numerous dimensions," Smits says.

Up until this point, little work has been done to disentangle those systems. Michael Lehmann, PhD, an exploration individual at the National Institute of Mental Health, is trying the issue by contemplating mice — creatures that, similar to people, are defenseless against social pressure.

Lehmann and his partners exposed a portion of their creatures to "social annihilation" by matching little, compliant mice with bigger, progressively forceful mice. The alpha mice consistently endeavored to threaten the agreeable rodents through the reasonable segment that isolated them. What's more, when the segment was expelled for a couple of minutes every day, the harasser mice must be limited from hurting the agreeable mice. Following two weeks of normal social thrashing, the littler mice investigated less, covered up in the shadows, and generally shown side effects of misery and nervousness.

One gathering of mice, be that as it may, demonstrated flexible to the pressure. For three weeks previously the social annihilation treatment, the majority of the mice were exposed to two drastically unique living conditions. Some were bound to austere pens, while others were blessed to receive advanced situations with running haggles to investigate. Dissimilar to the mice in the no frills confines, tormented mice that had been housed in improved conditions hinted at no rat wretchedness or nervousness after social



annihilation (Journal of Neuroscience, 2011). "Exercise and mental advancement are buffering how the mind will react to future stressors," Lehmann says.

Lehmann can't state the amount of the impact was because of activity and what amount originated from different parts of the invigorating condition. In any case, the mice ran a ton — near 10 kilometers per night. Also, different tests indicate that running might be the most essential piece of the advanced condition, he says.

Looking further, Lehmann and his partners analyzed the mice's cerebrums. In the invigorated mice, they discovered proof of expanded movement in an area called the infralimbic cortex, some portion of the cerebrum's passionate preparing circuit. Harassed mice that had been housed in straightforward conditions had significantly less action in that locale. The infralimbic cortex has all the earmarks of being an essential part of the activity impact. At the point when Lehmann carefully removed the district from whatever remains of the cerebrum, the defensive impacts of activity vanished. Without a working infralimbic cortex, the earth improved mice demonstrated mind examples and conduct like those of the mice who had been living in barebones confines.

People don't have an infralimbic cortex, yet we do have a homologous locale, known as cingulate territory 25 or Brodmann zone 25. Also, truth be told, this area has been recently ensnared in gloom. Helen Mayberg, MD, a nervous system specialist at Emory University, and partners effectively mitigated gloom in a few treatment-safe patients by utilizing profound mind incitement to send unfaltering, low-voltage current into their region 25 areas (Neuron, 2005). Lehmann's investigations indicate that activity may ease sadness by following up on this equivalent piece of cerebrum.

Getting the payoff

Of the considerable number of inquiries that stay to be replied, maybe the most confounding is this: If practice makes us feel so great, for what reason is it so difficult to do it? As indicated by the Centers for Disease Control and Prevention, in 2008 (the latest year for which information are accessible), somewhere in the range of 25 percent of the U.S. populace revealed zero relaxation time physical action.

Beginning excessively hard in another activity program might be one reason individuals despise physical movement. At the point when individuals practice over their respiratory edge — that is, over the moment that it motivates hard to talk — they put off exercise's quick temperament support by around 30 minutes, Otto says. For learners, that postponement could turn them off of the treadmill for good. Given that, he prescribes that exercise novices begin gradually, with a moderate exercise plan.

Otto additionally accuses an accentuation for the physical impacts of activity for our national lack of concern to action. Doctors as often as possible advise patients to work out to get in shape, bring down cholesterol or counteract diabetes. Sadly, it takes a very long time before any physical consequences of your diligent work in the exercise center are evident. "Taking care of the results of wellness is a formula for disappointment," he says.

The activity state of mind support, then again, offers close moment satisfaction. Specialists would do well to urge their patients to tune into their psychological state after exercise, Otto says — particularly when they're feeling down.

"Numerous individuals skirt the exercise at the very time it has the best result. That keeps you from seeing exactly how much better you feel when you work out," he says. "Neglecting to practice when you feel awful is like unequivocally not taking a headache medicine when your head harms. That is the time you get the result."

It might take a more drawn out course of activity to reduce state of mind issue, for example, uneasiness or despondency, Smits includes. Yet, the prompt impacts are substantial — and clinicians are in a special position to enable individuals to get going. "We're specialists in conduct change," he says. "We can enable individuals to end up persuaded to work out."



What are the mental/social advantages of physical activities?

Physical movement improves an individual's life both socially and mentally. Studies have appeared physical action may alter nervousness and dejection (Sachs 1982, p. 44). Layman (1972, p. 5) gave proof that poor physical condition inclines people to poor psychological wellness. Hanson (1974, p. 2) expressed that "physical action adds to the general sentiment of prosperity It is a road for articulation of annoyance, hostility and joy. It implies for revelation of self just as a social facilitator." Moreover, as indicated by Espenschade (1960), "The status of the grade school youngster with his friends is reliant, as it were, on his engine aptitudes and his conduct in amusement circumstances" (p. 3). Clarke (1982, p. 10) added to these announcements, proposing that the kid's acknowledgment of individual and social viability depends intensely on direction inside the physical instruction encounter. Direction helps the individual receive alluring methods of conduct and enhance relational connections.

Exercises for Mental Health

Studies have demonstrated that the procedure of activity realizes both short-and long haul mental upgrade and mental prosperity. Physical movement has been found to have a positive easygoing impact on confidence changes in grown-ups. High-impact action can lessen uneasiness, misery, strain, and stress, and it can expand energy and advance unwavering discernment. From the clinical point of view, proof proposes that activity can usefully influence hypertension, osteoporosis, grown-up beginning diabetes, and some mental issue. It is evaluated that the same number of as 25% of the populace experiences mellow to direct sorrow, uneasiness, and other passionate clutters. Some adapt to these clutters independently, without expert help. Physical movement in the indigenous habitat can be a promising guide for such individuals, as physical latency might be related with side effects of sadness. Concentrates on discouraged patients have uncovered that oxygen consuming activities are as viable as various types of psychotherapy and that the activities have had an enemy of burdensome impact on patients with mellow to direct types of wretchedness. North et al, applying the meta-investigation strategy, found that activity action is more gainful than relaxation movement for all assortments of burdensome issue.

Staying Mentally Fit

A few organizations urge all individuals to take an interest in free-decision vivacious physical movement all the time. It is prescribed that they participate in more than one action, testing both vigorous and anaerobic limits. Noncompetitive exercises are favored. In any case, when rivalry is alluring, animosity and nonethical direct ought to be kept away from. The physical exercises picked ought to be specifically satisfying and fulfilling, as pleasure is identified with exercise adherence. So as to profit mentally from physical action, deVries has prescribed low-power practice as reflected by 30% to 60% of the contrast among resting and maximal pulse esteems. In spite of the fact that 20 to 30 minutes of activity might be adequate for stress decrease, a hour may result in much increasingly mental advantage. It appears that a span of 20 to 30 minutes no less than 3 times each seven day stretch of 60% to 90% of age assessed pulse max (American College of Sports Medicine) could result in attractive mental advantages. Be that as it may, other recreational exercises, for example, ball games, aquatics, and such, can be mentally profitable. In synopsis, considering the agreement explanation of the different research surveyed thus, the potential mental advantages of being effectively engaged with normal incredible physical movement programs are as per the following:

- Exercise can be related with diminished state nervousness;
- Exercise can be related with a diminished dimension of mellow to direct misery;
- Long-term practice is normally connected with decreases in neuroticism and tension;
- Exercise might be an assistant to the expert treatment of serious gloom;
- Exercise can result in the decrease of different pressure files; and
- Exercise can have gainful enthusiastic impacts over all ages and for both genders.



The relation of physical activity and exercise to mental health.

Mental disorders are of major public health significance. It has been claimed that vigorous physical activity has positive effects on mental health in both clinical and nonclinical populations. This paper reviews the evidence for this claim and provides recommendations for future studies. The strongest evidence suggests that physical activity and exercise probably alleviate some symptoms associated with mild to moderate depression. The evidence also suggests that physical activity and exercise might provide a beneficial adjunct for alcoholism and substance abuse programs; improve self-image, social skills, and cognitive functioning; reduce the symptoms of anxiety; and alter aspects of coronary-prone (Type A) behavior and physiological response to stressors. The effects of physical activity and exercise on mental disorders, such as schizophrenia, and other aspects of mental health are not known. Negative psychological effects from exercise have also been reported. Recommendations for further research on the effects of physical activity and exercise on mental health are made.

Personal Bio-Data Sheet was prepared for the study. The name of student, sex, age their permanent and local address, telephone and required personal information is included in this bio-data sheet.

The standardized psychological test is used for the study. The selection of tests is done on the basis of the reliability, validity and norms of test.

The tests and tools used in this study are listed below:

| Tests and Tools Used | | |
|----------------------|--|--|
| S.No. | Variables | Test and Technique |
| 1. | Personal Bio-Data Sheet | Self Made |
| 2. | Anxiety, Stress, Depression, Arousal, Extraversion, Guilt, Regression, Fatigue | 8 SQ (Eight State Questionnaire by Curran and Cattell adopted in Hindi by Malay Kapoor & Dr. Mahesh Bhargava |

OBJECTIVES

1. To study the Anxiety and Stress level of selected subjects before and after imparting physical training.
2. To study the Depression and Regression level of selected subjects before and after imparting physical training.

Hypotheses

1. There is no effect of physical training on anxiety and stress of secondary students.
2. There is no effect of physical training on depression and regression of secondary students.

CONCLUSIONS

There is no significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of girls of control group. There is no significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of control group. There is significant difference between Stress scores of pre and post test situation of boys of experimental group. It infers that due to physical exercises there is a reduction in Stress level of boys. There is significant difference between Stress scores of pre and post test situation of girls of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is a reduction in Stress level of girls.

There is significant difference between Stress scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is a reduction in Stress level of students (boys & girls). There is no significant difference between Stress scores of pre and post test situation of boys of control group. There is no significant difference between Stress scores of pre and post test situation of girls of control group. There is no significant difference between Stress scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of control group.



There is significant difference between extraversion scores of pre and post test situation of boys of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is enhancement of extraversion level of boys. There is significant difference between extraversion scores of pre and post test situation of girls of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is enhancement of extraversion level of girls. There is significant difference between extraversion scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is enhancement of extraversion level of students (boys & girls).

REFERENCES:

1. Brown JD, Lawton M. Stress and well-being in adolescence: The moderating role of physical exercise. *J Human Stress*. 2006;12:125-31.
2. Brown JD, Lawton M. Stress and well-being in adolescence: The moderating role of physical exercise. *J Human Stress*. 2006;12:125-31.
3. Crews DJ, Landers DM, O'Connor JS, Clark JS. Psychosocial stress response following training *Med Sci Sport Exercise* 2008. 20Suppl 1S85[Abst]
4. Crews DJ, Landers DM, O'Connor JS, Clark JS. Psychosocial stress response following training *Med Sci Sport Exercise* 2008. 20Suppl 1S85[Abst]
5. Gutin B. Effect of increase in physical fitness on mental ability following physical and mental stress. *Res Q*. 1966 May;37(2):211-220.
6. Roth DL, Holmes DS. Influence of physical fitness in determining the impact of stressful life events on physical and psychological health. *Psychosomatic Med*. 2005;47:164-73.
7. Roth DL, Holmes DS. Influence of physical fitness in determining the impact of stressful life events on physical and psychological health. *Psychosomatic Med*. 2005;47:164-73.
8. Salmon, P (2001). Effects of Physical exercise on Anxiety, Depression, and Sensitivity to Stress through Unifying Theory *Clinical Psychology Reviews*, 21(1), 33-61.
9. Salmon, P (2001). Effects of Physical exercise on Anxiety, Depression, and Sensitivity to Stress through Unifying Theory *Clinical Psychology Reviews*, 21(1), 33-61.
10. Scanlan TK, Passer MW. Factors related to competitive stress among male youth sport participants. *Med Sci Sports*. 2008;10:103-8.
11. Scanlan TK, Passer MW. Factors related to competitive stress among male youth sport participants. *Med Sci Sports*. 2008;10:103-8.
12. Pang, M. Y., et al. (2013). "Using aerobic exercise to improve health outcomes and quality of life in stroke: evidence-based exercise prescription recommendations." *Cerebrovasc Dis* 35(1): 7-22.
13. Regier DA, Goldberg ID, Taube CA. The de facto US mental health services system: a public health perspective. *Arch Gen Psychiatry*. 1978 Jun;35(6):685-693.
14. Roth DL, Holmes DS. Influence of physical fitness in determining the impact of stressful life events on physical and psychological health. *Psychosomatic Med*. 2005;47:164-73.
15. Rowland TW. *Exercise and Children's Health*. Champaign: Human Kinetics; 2010.



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Patus, Dist. Sangli.

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®

July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-05

01

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-05

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

“Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Arckana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.”



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

3.3.4 2017-18

3.3.7

Index

| | |
|---|----|
| 01) Nothing to be Frightened of:A Philosophical Exploration Dr. Tapas Chakrabarti—Dr. Hetal S. Patel, Patan | 10 |
| 02) ACADEMIC COLLEGE LIBRARY NETWORKING: INDIAN SENARIO Vimal K. Gandhi, Gujarat | 13 |
| 03) STUDIES ON COMPOSITION AND COMPONENTS OF AIRSPORA BELONGING TO..... G. M. Pathare, Maharashtra | 18 |
| 04) A Case Study of Caste and Untouchability : Dr. Shyamsundar P. Waghmare, Maharashtra | 23 |
| 05) L2 Acquisition-The Rise and Motivation of Error Analysis Megha Shrivastava, Indore M.P | 27 |
| 06) INCOME INEQUALITY IN INDIA Dr. Chetna Bisht | 30 |
| 07) Performance anaylsis & mathematical MODELLING OF MAterial ReMOVal RATE OF... Dr. Shirish D. Dhobe—Dr. R. A. Kubde, Maharashtra | 35 |
| 08) A STUDY OF AWARENESS OF BETI BACHAV THROUGH.... Dr. Hardikkumar D. Mehta, Visnagr | 40 |
| 09) Spatio-Temporal Status of Urbanization in Uttar Pradesh Brijendra Nath Singh, Varanasi, U.P. | 45 |
| 10) IMPACT OF ALCOHOLIC PARENTS ON THEIR CHILDREN, FOCUSING ON STUDENT.... Dr. Anju Verma, Sikkim | 51 |
| 11) A STUDY ON EMPLOYEE SATISFACTION B. VENKATARATNAM—K. SUDHA | 57 |
| 12) An Overview of Ethical Management & Code of Ethics in Business Dr. Dilip B. Patil, Dist.Dhulia (MS) | 62 |
| 13) आदिवासी कवींची कविता डॉ. शिंदे सुरेश बाळकृष्ण, जि. सांगली | 68 |

❖ विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 4.014 (IJIIF)



Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

आदिवासी कवींची कविता

डॉ. शिंदे सुरेश बाळकृष्ण
मराठी विभाग प्रमुख,
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली

प्रास्ताविक :-

भारताच्या इतिहासामध्ये शेकडो वर्षे दुर्लक्षित झालेला समाज म्हणजे आदिवासी होय. आर्यांचे भारतामध्ये आगमन होण्यापूर्वी आदिवासी हे ह्या भारताचे मूळ निवासी लोक होते. या भारतात रहिवासी करणारे मूळ भूमीपूत्र होते. त्यांची राज्ये होते. त्यांची शासन व्यवस्था होती. त्यांची स्वतंत्र विचारप्रणाली, तत्त्वे होती. त्यांच्या रुढी, परंपरा, धर्मव्यवस्था होती.

सर्वसाधारण इ. स. पूर्व ३००० वर्षे च्या दरम्यान आर्यांचे भारतामध्ये आगमन झाले. ते धाडसी व शूर होते. त्यांनी हळूहळू आपले संख्याबळ व शस्त्रबळ वाढवले. आणि त्यांनी आदिवासी लोकांवर हल्ले करण्यास सुरुवात केली. आदिवासी व आर्य यांच्या संघर्ष दीर्घकाळ चालू राहिला. यामध्ये अनार्य लोकांचा पराभव झाला. त्यांच्यातील निर्घृण कत्तली करण्यात आल्या. त्यांची संपत्ती लुटण्यात आली. त्यांना या भूमीवरून पिटाळून लावण्यात आले. मोहेंजोदारो व हरप्पा येथे उत्खननानंतर मिळालेल्या अवशेषांमध्ये या संघर्षाच्या खुणा आढळून येतात. ऋग्वेदामध्ये ज्या दस्युचा समूळ नाश केलेल्याचा उल्लेख आढळतो तो समाज म्हणजेच आदिवासी समाज होय. या मूळ भूमिपूत्रांचा पराभव झाल्यानंतर हा समाज दूर डोंगर कपारीत पळून गेला व तेथेच राहू लागला. भारतातील मुख्य समाजधारेपासून त्यांची नाळ तुटली गेली. त्यामुळे स्वाभाविकपणे हा समाज दुर्लक्षित राहिला गेला.

भारत स्वतंत्र झाल्यानंतर मात्र परिस्थिती

बदलली. भारतामध्ये तळागाळापर्यंत सुधारणा होत गेल्या. विशेषतः शिक्षणाचे वारे सर्वत्र वाहू लागले. त्याचा परिणाम आदिवासी समाजमध्येही सुधारणा होऊ लागल्या. त्याही अगोदर ब्रिटीशांचे या आदिवासी समाजाकडे लक्ष गेले होते. आधुनिक काळातही आदिवासी समाजाचे शोषण करण्याचे प्रकार घडले आहेत. त्यामुळेही त्यांचे जीवन ढवळून निघाले आहे. वारली, कोकणा, भिल्ल, कोरकू, गोंड, कोलीम अशा अनेक जमाती महाराष्ट्रा मध्ये अस्तित्वात आहेत. अनुसूचित जमातींच्या यादीत ४७ जमाती आज आढळतात.

आदिवासी साहित्याचा विचार करताना मौखिक व लिखित साहित्याची परंपरा आढळते. भारत स्वतंत्र झाल्यानंतर अनेक आदिवासी कवींनी आपल्या भावना व विचार कवितेद्वारे व्यक्त केले आहेत. आदिवासी जीवन, त्यांच्या परंपरा, श्रद्धा, त्यांच्यावर झालेला अन्याय या कवितांद्वारे चित्रित झाला आहे.

आदिवासी कवींची कविता

भुजंग मेश्राम, वाहरु सोनवणे, विनायक तुमराम, उषाकिरण अत्राम, एस.टी. मडावी, नरेद्र पोयाम, माधव सरकुडे, कुसुम आलाम, वामन शेडमाके, वसंत कनाके अशा अनेक कवींनी आपल्या कवितांद्वारे आदिवासी साहित्यात भर टाकली आहे.

भुजंग मेश्राम हे आदिवासी साहित्यातील महत्वाचे नाव. गोंडी भाषेतील त्यांची कविता आदिवासी जीवन चितारते. तसेच, नागर भाषेतील त्यांनी कविता लिहिली आहे. सकाळच्या चहासोबत या कवितेत कवी म्हणतो, सकाळच्या चहा सोबत नियमित

आता रोज आदिवासीवरील अत्याचाराच्या बातम्या वरुड ...कोडपाखंडी ...कोडयाची वाडी

आणि आता इंदरवल्ली ..

किती स्वस्त होत चाललोय आम्ही?

कितेक शतके आदिवासी समाज जमीनदार, सावकार यांच्या शोषणाला बळी पडला आहे. समाज सुधारला तरी शोषण थांबले नाही. आदिवासी स्त्रियांवरील बलात्काराच्या बातम्या अनेक वेळा वर्तमानपत्रामध्ये येत असतात. त्यामुळे मेश्राम यांना वाटते की, आम्ही स्वस्त होत चाललो आहे. आदिवासी लोकोची असहाय्यता व अस्वस्थता या कवितेमध्ये व्यक्त होते.

✪ विद्यावाता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal (Impact Factor 4.014 (IIJIF))



Principal,
Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

पडतात.

आदिवासी कवींचा पहिला कवितासंग्रह मोहोळ इ.स. १९८२ मध्ये प्रसिध्द झाला या पुस्तकाचे संपादन आदिवासी कवी भुजंग मेश्राम व प्रभु राजगडकर यांनी केले होते. राजगडकर यांच्या या कविता संग्रहात काही कविता आहेत. कवी प्रभु राजगडकर महाकाय शहर या कवितेत मुंबईबद्दल म्हणतो,

खेडयातून आलेले कामासाठी
घर नाही दार नाही, झोपतोय फ्लाटफारमवर साहेब
हवालदारांनी हाकललं कुठं जावं
महाकाय शहरात

चिमण्यागत, अन्नासाठी काम मागते

सकाळ झाली

साहेब मेहरबानी

मुंबई मध्ये आलेल्या आदिवासींची या शहराबद्दची प्रतिक्रिया या कवितेमधून व्यक्त होते. बाँम्बे सेन्ट्रलच्या फ्लॉटफॉर्मवरून हया कवितेत कवी म्हणतो,

गर्दीत आपलेपणा सांभाळणारे

लाटांनी किनाऱ्यावर आदळावे तसे लोकलचे येणे जाणे

आताशा पुनः लोकल आली

आणि बांध फुटावा तस्सा माणसांचा पूर आलाय
तेव्हा मला आठवू लागले गावचे माळरान शांत
अन भला मोठा सूर्य शेतावर डोकावणारा

मुंबईच्या गर्दीतही कवीमनाला गावाकडची येणारी आठवण कवितेतून व्यक्त होते. एस.टी.मडावी हे एक महत्वाचे आदिवासी कवी. निसर्गमध्ये वाढणारा आदिवासी त्यांना अधिक संस्कारशील, प्रामाणिक आणि मोकळा वाटतो म्हणून ते निसर्गपुत्र कवितेत ते म्हणतात, जंगलच्या पाखरांना, रान वन हेची घर शहरीच्या भावनांना, येई ना त्याची सर

परंतु तरीही या आदिवासीला गुलामी पत्काराची लागते म्हणून कवी म्हणतो,
गा आता क्रांतीचे गायन
माणुसकीला हे आवाहन

त्यातूनही कवी माणुसकीला आवाहन करतो परिस्थितीशी झुंजण्याचा निश्चय तो करतो. झुंजत

असताना आपण विनाशी आहोत याची जाणीव करून देताना कवी म्हणतो,

बांधा आकांक्षा हृदयाशी
झगडा आता विरोधकांशी
जाणा आम्ही असू विनाशी
होवो मग फाशी ...

आदिवासी जीवन दुःखी असले तरी त्यातून ते मुक्त होऊ पाहते. वर्तमानातील काळोखाला नकार देऊ पाहते. अशी भावना व्यक्त करताना कवी वामन शेडमाके म्हणतात,

जन्मलाल तू काटेरी पिंजऱ्यात
वाढलास गुलामीच्या काळोखात
पण तुला शपथ घेऊन सांगतो आहे
मरू देणार नाही तुला

या वनव्याच्या पसाऱ्यात

येत आहोत आम्ही

तुझ्या मुक्तीचा संदर्भ घेऊन

समारोप :- आदिवासी कवितेचे स्वरूप समजून घेण्यासाठी काही कवींच्या कवितांचा विचार आपण येथे केला. या कवींच्या कवितांवरून आदिवासी कवितेचे स्वरूप लक्षात येते. या कवितेमध्ये विद्रोहाची आग आहे. हजारो वर्ष जो अन्याय झाला त्याबद्दलचे दुःखही ही कविता व्यक्त करते परंपरेने आपणावर अन्याय केला आहे. तसाच वर्तमान स्थितीतही आदिवासीवर अन्याय होत आहे. असे ही कविता सांगते. पुराणाचे संदर्भ या कवितेत येतात तसेच वर्तमानही ही कविता मांडते. अन्यायाविरुद्ध लढण्यासाठी क्रांतीची भाषा ही कविता करते. तर आपल्या परंपरेचा, आपल्या जीवनशैलीचा अभिमानही ही कविता व्यक्त करते यावरून ही कविता अधिकच प्रगल्भ होत चालली आहे असेही दिसून येते.

संदर्भ :-

१. तुकाराम विनायक, आदिवासी साहित्य साहित्य स्वरूप आणि समीक्षा, विजय प्रकाशन, नागपूर, १९९४

२. सबनीस श्रीपाल, आदिवासी, मुस्लिम, ख्रिश्चन साहित्य मीमांसा अनुबंध प्रकाशन, पुणे, इ.स. २००७

❖ विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal (Impact Factor 4.014 (IIJIF))



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

2017-18

REVIEW OF RESEARCH



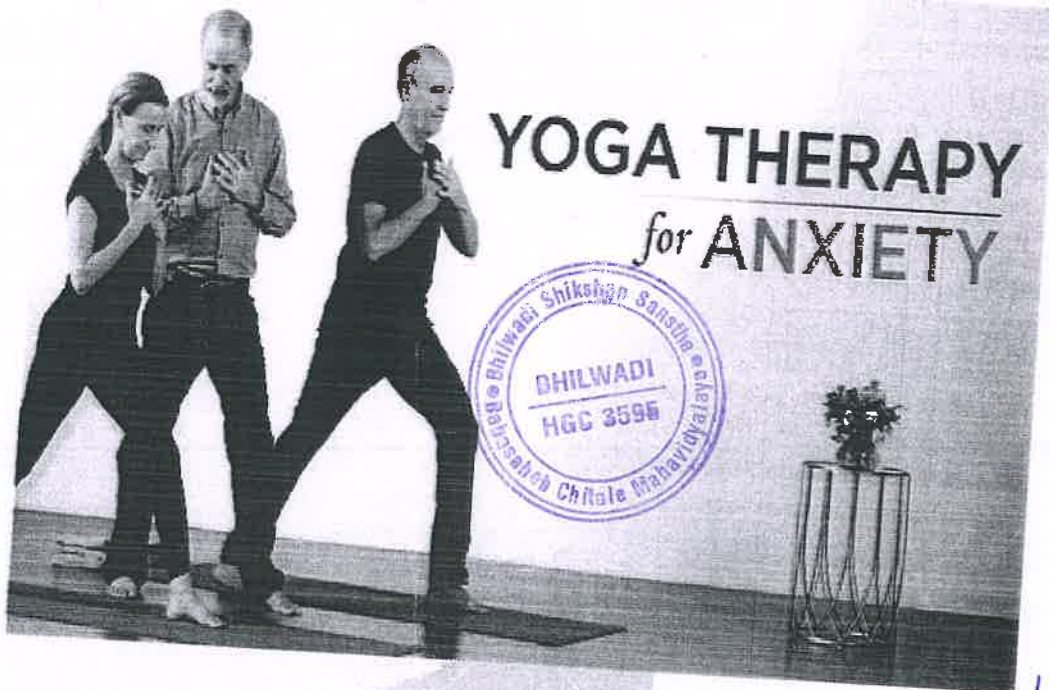
International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 7 | Issue - 10 | July - 2018

5.2331(UIF)

2249-894X

YOGA ANXIETY THERAPY (A Form of Exercise)



YOGA THERAPY for ANXIETY



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, (Maharashtra).

Shrikant Bhanudas Chavan

Principal,

Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli Mahavidyalaya

ABSTRACT:- People suffering from depression often withdraw and stop engaging in pleasurable activities. This in turn, reduces opportunities for enjoyment, making depression worse. Most depressed persons I see have stopped exercising altogether. Only occasionally do I see a patient...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal

ISSN: 2249-894X

Research papers submitted to the journal will be published in English, Hindi & Marathi language. All research papers submitted to the journal will be published after a review of referees by members of the Editorial Board. Referees will be selected from universities, research institutes, governmental and industry with research interest in the general subjects.

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok Yakkaldevi

Iran



Bijan Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- MENDALEY
- GOOGLE SCHOLAR
- CITULIKE
- ENDNOTE
- ZOTERO
- DRJI

5

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research



Save Tree. Save Paper. Save World

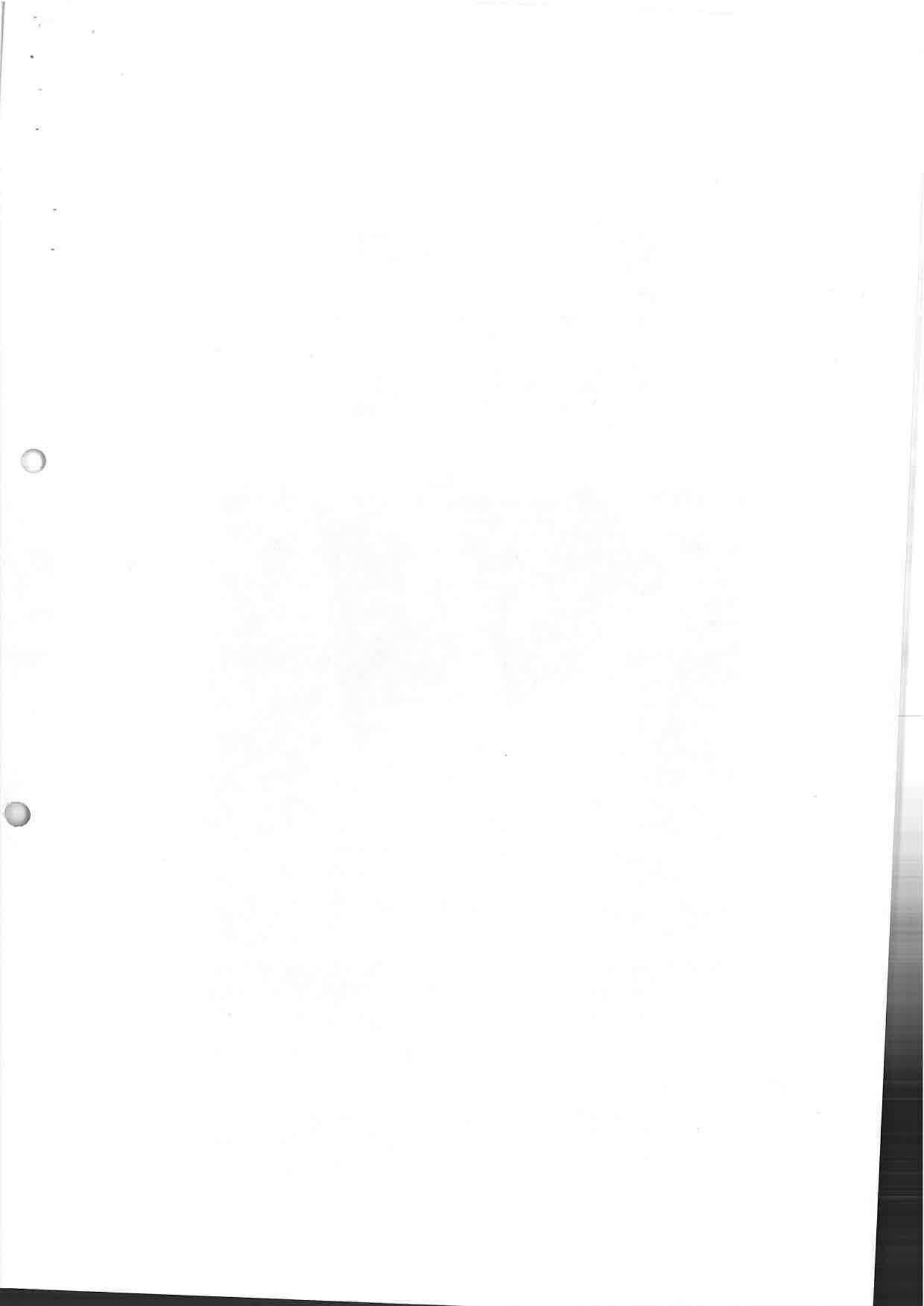
ISSN NO:- 2249-894X

Impact Factor : 5.2331(UIF)

Vol.- 7, Issue - 10, July-2018



| Sr. No | Title And Name Of The Author (S) | Page No |
|--------|--|---------|
| 1 | 'AN EMPLOYEE MOTIVATION AND JOB SATISFACTION.' AT SANSERA ENGINEERING PVT.LTD. Dr. Rekha N. Patil and Renuka Guttedar | 1 |
| 2 | Banking Sector Reforms In India Prof. S. G. Rodgi and Dr. Bhakti Mahindrakar (Tatuskar) | 6 |
| 3 | Awareness Of Menstrual Health And Hygiene Amongst Adolescent Girls Of ICDS, Urban Project in Indore Sudha Tiwari, Anita Joshi ² and Nandita Sarkar | 14 |
| 4 | Digital Libraries And Search Engines D. E. Dadpe | 18 |
| 5 | Shashi Deshpande's Depiction Of Undaunted Woman Amidst Orthodoxy Kapii K. Gajbhiye | 29 |





Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.2331 (IJIR)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of

Dr./Shri./Smt.: **Shrikant Bhanudas Chavan** Topic:- **YOGA ANXIETY THERAPY (A Form of**

Exercise). College:- Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi

Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra). The research paper is original & innovative it is

done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of **July** 2018.



Laxmi Book Publication
258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
e-Mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

Sangli, Tal. Palus, Dist.

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief





IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)

REVIEW OF RESEARCH

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

ISSN: 2249-894X



VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

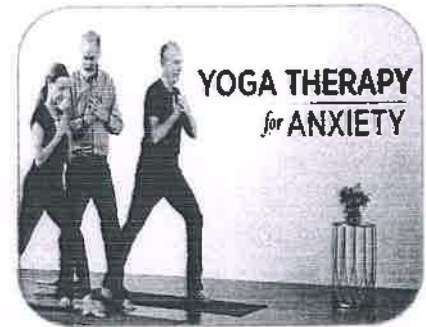
YOGA ANXIETY THERAPY (A Form of Exercise)

Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

ABSTRACT

People suffering from depression often withdraw and stop engaging in pleasurable activities. This in turn, reduces opportunities for enjoyment, making depression worse. Most depressed persons I see have stopped exercising altogether. Only occasionally do I see a patient who is depressed but still exercising regularly; and when that happens it is likely that their exercise has kept their depression from getting even worse. One established psychological treatment for depression is behavioral activation: encouraging the patient to engage in activities that create pleasurable experiences, lessening symptoms of depression. Exercise can be one of these positive experiences. It facilitates opportunities to interact with others and get positive feedback, even if it's a mere smile as one walks around the neighborhood.



In addition, it is believed that exercise causes physiological changes in the body that help reduce depression. The physiological mechanisms behind this are not fully understood, but exercise appears to increase the supply of certain neurotransmitters in the brain that keep one happy, as well as boosting endorphins (the feel-good chemicals behind the "runner's high").

There are indications that the antidepressant effects of exercise begin as early as the first session of exercise and persist beyond the end of the exercise program. While even a single exercise session has been found to improve a person's immediate mood state, antidepressant effects are greater when exercise training is longer than nine weeks and involves more sessions. The greatest benefits seem to occur after 17 weeks of exercise. Effects also are bigger when exercise is of longer duration, more intense, and more frequent. Some studies indicate that exercise can be almost as powerful an antidepressant as psychotherapy.

KEY WORDS : pleasurable activities , facilitates opportunities , reduces opportunities.

INTRODUCTION

Exercise Reduces Anxiety and Stress

Anxiety sufferers often have physical symptoms such as muscle tension, aches and pains, shortness of breath, and racing heart. These symptoms are caused by a misfiring of the sympathetic nervous system, the part of the body designed to save one's life in the face of physical danger. Changes occur in the body as if one were getting ready to fight or run. However, in the case of anxiety there is no release: in the absence of true physical danger, the sufferer has nothing to fight and nowhere to run.

In this case, exercise can allow the sufferer to discharge frustration and muscle tension, often helping to reverse anxiety symptoms. Exercise can give a feeling of release from one's problems. Daily tension is displaced by close awareness of the body's movements. In that a person's attention shifts from

Available online at www.ijbp.world




Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

diffuse worries or repeated negative thoughts to the physical activity at hand, exercise shares some of the properties of meditation.

Exercise is correlated to a reduction in anxiety. Research has demonstrated that even short bursts of 5 minutes of aerobic exercise stimulate anti-anxiety effects. It produces greater effects when the exercise is aerobic, the length of the aerobic training program is at least 10 weeks, and the subjects have initially lower levels of fitness or higher levels of anxiety.

Once again the mechanisms are not entirely understood, but it is believed that exercise removes the build-up of stress hormones in the body. Published studies have concluded that individuals with improved levels of fitness are capable of managing stress more effectively than those who are less fit, and in fact report that they experience less stress in the first place. Even a single session of exercise may help to prevent stress, generating 90 to 120 minutes of relaxation response and reducing jittery and hyperactive behaviors. Exercise has also been associated with improved sleep.

Exercise Improves Self-Esteem

Exercise has been shown to have a positive influence on our perception of ourselves, providing a sense of accomplishment as we master skills, improve our body image and self-worth. Taking a proactive step such as exercising to manage depression or anxiety is a positive coping strategy that leads to active feelings of self-efficacy and self-esteem, as opposed to dwelling on these feelings, numbing them with alcohol, or hoping anxiety and depression will go away on their own.

Yoga (A Form of Exercise) as Anxiety Therapy

Recent research in support of yoga indicate that it can be highly effective in the treatment of anxiety. At the Boston University School of Medicine, professor of psychiatry and Trauma Center medical director Bessel van der Kolk recently published a study of yoga for the treatment of post-traumatic stress disorder (PTSD), a chronic anxiety disorder that can develop after someone is involved in a traumatic event, such as a sexual or physical assault, a war, a natural disaster or even a car accident. One physiological marker of PTSD is rapid heart rate. Yoga training can decrease heart rate; van der Kolk theorized that it would reduce PTSD's psychological symptoms as well. In the study, van der Kolk divided female patients with PTSD into two groups. One group completed eight hatha yoga classes. The other group had eight sessions of group psychotherapy. The hatha yoga group showed significantly more improvement, including less frequent intrusive thoughts and less tense nerves, than the psychotherapy group.

As a result, even the US military has begun to investigate the therapeutic potential of yoga, treating returning active-duty soldiers with PTSD with yoga. Preliminary results show the yoga produces a reduction in depression and an improvement in sleep. It seems likely that further work will demonstrate the benefits for yoga on other populations with anxiety or depression.

Successfully Adding Exercise to Our Life

First, if anyone have not been engaging in regular exercise, it is a good idea to consult a medical doctor and have a physical checkup before embarking on a new exercise program.

Don't think of exercise as a burden. Think of it instead as emotional medicine. Remember that starting out is the hardest part, especially if you are depressed; many people find that once they start exercising it quickly becomes a welcome part of their routine.

Pick an activity he/she like or try something new. Bring his/her headphones: music can make a solitary activity like running or walking more enjoyable. There are even water-proof iPod cases you can take swimming. Vary the types of physical activity to keep up your interest level and benefit from the cross-training.

An exercise partner can be a great incentive: the social obligation reduces the risk you will back out and the company can distract you from the exertion. You may find that joining a group class may inspire you

even more, the group feeding off its own energy and the instructor pushing you while ensuring you are doing the exercise correctly.

If this is intimidating at first or financially infeasible, there are numerous exercise videos offering excellent home workouts, ranging from yoga to step aerobics to belly dancing. Exercise does not have to be an elaborate or expensive endeavor. Simply going for a brisk walk around the neighborhood is a great moderate intensity exercise.

Set reasonable goals. Start small and build up gradually. You will not be ready to run a marathon in your first training session. At first you may only be able to swim 4 laps, jog for 15 minutes, or walk once around the block. However, by sticking with it, you will eventually build up stamina and muscle strength and be able to go for longer. Work up gradually.

Keeping Motivated

Treat exercise as a priority on our busy schedule, just as one would an important meeting. Although one may feel like he/she is too busy to fit in exercise, remember that its benefits will help in winning back that time, increasing your ability to focus and concentrate during the rest of the day.

If one do not already enjoy exercise itself, treat yourself to an additional reward for our efforts. Plan something of enjoyment, like a cup of tea, immediately after exercising; or treat oneself to a foot massage to reward oneself for his/her efforts after a whole week of exercise. Give yourself credit for every effort he/she make – believe it or not, this simple conditioning really does help to build a positive association with exercise. Keeping an activity diary where one should record his exercise (activity and distance or duration) can also be very reinforcing. Simply getting a pedometer to track your increased endurance can be a great motivator.

Make a list of the reasons exercise will be beneficial: I will feel better about myself. I will be healthier. I will be less stressed. I will look better in my clothes. And so on. Keep this list in wallet so it can pull it out and remind yourself why he have committed to exercise.

Address any barriers to exercise. Make a list of the excuses make Write each of these down on an index card. On the back side, write down the counterargument to this excuse: for example, if your excuse is "I'm too tired," the response might read, "If I exercise now I will have more energy later." Pull the cards out whenever you're tempted to blow off your workout.

And expect that there will be setbacks. If exercise is skipped one day, don't be too hard on oneself. Convincing thyself that have totally failed might make want to give up entirely. Remind self that one can get back on track the next day.

How Much Should One Exercise?

Even small amounts of activity – as little as 10 to 15 minutes at a time – can bring about some improvements in mood. However, more is better: the research suggests that it may take at least 30 minutes of exercise a day for at least three to five days a week to significantly improve depression symptoms.

The American College of Sports Medicine and the American Heart Association provide these guidelines (<http://www.acsm.org/>):

Moderately intense cardio 30 minutes a day, 5 days a week

or

Vigorously intense cardio 20 minutes a day, 3 days a week and 8 to 10 strength-training exercises two times every week.

Moderate-power physical movement implies buckling sufficiently down to raise your pulse and start to sweat, yet as yet having the capacity to carry on a discussion. It ought to be noticed that to get in shape or keep up weight reduction, 60 to a hour and a half of physical movement might be vital. The 30-minute suggestion is for the normal solid grown-up to keep up wellbeing and decrease the hazard for incessant infection.

Obviously, while the recommendations above ought to be useful to numerous individuals, remember that uneasiness and wretchedness, as other therapeutic issues, ought not be dealt with daintily. In the event that your side effects hold on or are extreme, making it difficult to work, counsel an emotional wellness proficient. Psychotherapy and medicine likewise offer a lot of assistance to people experiencing nervousness and dejection.

What Are the Psychological Benefits of Exercise With Depression?

Enhanced confidence is a key mental advantage of normal physical action. When you work out, your body discharges synthetics called endorphins. These endorphins associate with the receptors in your mind that decrease your impression of torment.

Endorphins likewise trigger a positive inclination in the body, like that of morphine. For instance, the inclination that pursues a run or exercise is regularly depicted as "euphoric." That inclination, known as a "sprinter's high," can be joined by a positive and invigorating point of view.

Endorphins go about as analgesics, which implies they lessen the impression of torment. They likewise go about as tranquilizers. They are fabricated in your cerebrum, spinal rope, and numerous different parts of your body and are discharged in light of mind synthetic concoctions called synapses. The neuron receptors endorphins tie to are similar ones that predicament some torment drugs. Be that as it may, not at all like with morphine, the actuation of these receptors by the body's endorphins does not prompt compulsion or reliance.

Customary exercise has been demonstrated to:

- Reduce push
- Ward off tension and sentiments of dejection
- Boost confidence
- Improve rest

Exercise likewise has these additional medical advantages:

- It fortifies your heart.
- It builds vitality levels.
- It brings down circulatory strain.
- It enhances muscle tone and quality.
- It fortifies and assembles bones.
- It lessens muscle to fat ratio.
- It makes you look fit and sound.

Exercising to relax

Rest and unwinding. It's such a typical statement, to the point that it has turned into a cliché. What's more, despite the fact that rest truly can be unwinding, the pat expression makes numerous men neglect the way that activity can likewise be unwinding. It's valid for most types of physical action just as for explicit unwinding works out.

Exercise is a type of physical pressure. Could physical pressure mitigate mental pressure? Alexander Pope thought so: "Quality of brain is work out, not rest." Plato concurred: "Exercise would fix a feeling of remorse." You'll suspect as much, as well — in the event that you figure out how to apply the physical worry of activity in a controlled, reviewed manner.

Aerobic and endurance exercise

Vigorous exercise is key for your head, similarly for what it's worth for your heart. You may not concur at first; in reality, the initial steps are the hardest, and at the outset, exercise will be more work than

fun. Be that as it may, as you get into shape, you'll start to endure work out, at that point appreciate it, lastly rely upon it.

Standard high-impact exercise will convey astounding changes to your body, your digestion, your heart, and your spirits. It has a one of a kind ability to thrill and unwind, to give incitement and quiet, to counter discouragement and disperse pressure. It's a typical affair among perseverance competitors and has been confirmed in clinical preliminaries that have effectively utilized exercise to treat tension issue and clinical gloom. In the event that competitors and patients can get mental advantages from exercise, so can you.

In what capacity can practice battle with issues as troublesome as tension and sadness? There are a few clarifications, some synthetic, others social.

The psychological advantages of oxygen consuming activity have a neurochemical premise. Exercise decreases dimensions of the body's pressure hormones, for example, adrenaline and cortisol. It additionally invigorates the generation of endorphins, synthetic compounds in the mind that are the body's common painkillers and state of mind lifts. Endorphins are in charge of the "sprinter's high" and for the sentiments of unwinding and confidence that go with numerous hard exercises — or, at any rate, the hot shower after your activity is finished.

Conduct factors likewise add to the enthusiastic advantages of activity. As your waistline contracts and your quality and stamina increment, your mental self view will make strides. You'll acquire a feeling of authority and control, of pride and fearlessness. Your reestablished life and vitality will enable you to prevail in numerous assignments, and the order of customary exercise will enable you to accomplish other imperative way of life objectives.

Exercise and sports likewise give chances to make tracks in an opposite direction from everything and to either appreciate some isolation or to make companions and manufacture systems. "All men," composed St. Thomas Aquinas, "require relaxation." Exercise is play and amusement; when your body is occupied, your mind will be diverted from the stresses of day by day life and will be allowed to think imaginatively.

Practically any sort of activity will help. Numerous individuals find that utilizing huge muscle bunches in a cadenced, redundant design works best; call it "solid reflection," and you'll start to see how it functions. Strolling and running are prime precedents. Indeed, even a straightforward 20-minute walk can clear the brain and decrease pressure. However, a few people incline toward lively exercises that consume worry alongside calories. That is one reason ellipticals are so well known. What's more, a similar extending practices that assistance loosen up your muscles after a hard exercise will help loosen up your psyche also.

Auto-regulation exercises

Standard physical action keeps you sound as it diminishes pressure. Be that as it may, another exceptional kind of activity known as auto-direction activities can likewise diminish pressure.

Stress comes in numerous structures and delivers numerous indications. Mental side effects extend from stress and peevishness to eagerness and sleep deprivation, outrage and antagonistic vibe, or impressions of fear, premonition, and even frenzy.

Mental pressure can likewise deliver physical indications. Muscles are tense, bringing about nervousness, tight outward appearances, migraines, or neck and back torment. The mouth is dry, creating voracious thirst or maybe the vibe of a bump in the throat that makes gulping troublesome. Gripped jaw muscles can create jaw torment and cerebral pains. The skin can be pale, sweat-soaked, and damp. Intestinal side effects extend from "butterflies" to acid reflux, spasms, or the runs. Visit pee might be a trouble. A beating beat is normal, as is chest snugness. Fast breathing is likewise ordinary, and might be joined by murmuring or dull hacking. In extraordinary cases, hyperventilation can prompt shivering of the face and fingers, muscle issues, wooziness, and notwithstanding blacking out.

The physical manifestations of stress are themselves upsetting. Actually, the body's reaction to stress can feel so terrible that it delivers extra mental pressure. Amid the pressure reaction, at that point, brain and body can enhance each other's trouble signals, making an endless loop of strain and nervousness.

Since the underlying driver of stress is passionate, it is best constrained by picking up understanding, decreasing life issues that trigger pressure, and altering conduct. In any case, stretch control can — and should — additionally include the body. Oxygen consuming activity is one methodology; physical wellness will help advance mental wellness. Be that as it may, there is another methodology: you can figure out how to utilize your psyche to loosen up your body. The casual body will, thusly, send signs of quiet and control that assistance diminish mental strain.

Auto-direction practices are a gathering of strategies intended to supplant the winding of worry with a cycle of rest. A few methodologies are accessible.

Breathing exercises

Indeed, even without formal contemplation and controlled breathing, the delicate muscle extending of yoga can diminish pressure. "Full administration" yoga is far and away superior. However, on the off chance that that is not your thing, basic breathing activities can help independent from anyone else. Quick, shallow, unpredictable breathing is a typical reaction to push. Moderate, profound, customary breathing is an indication of unwinding. You can figure out how to control your breaths so they emulate unwinding; the impact, truth be told, will unwind.

Here's the means by which profound breathing activities work:

1. Breathe in gradually and profoundly, driving your stomach out so your stomach is put to maximal use.
2. Hold your breath quickly.
3. Exhale gradually, thinking "unwind."
4. Repeat the whole succession five to multiple times, focusing on breathing profoundly and gradually.

Profound breathing is anything but difficult to learn. You can do it whenever, in wherever. You can utilize profound breathing to help disperse worry as it happens. Practice the daily schedule ahead of time; at that point use it when you require it most. On the off chance that you think that its accommodating, consider rehashing the activity four to six times each day — even on great days.

Mental activities, as well Substantial exercise can help loosen up the brain, and mental moves can, as well. Frequently, that implies talking out issues with a strong audience, who can be a companion, a pastor, or a prepared advocate or psychotherapist. However, you can likewise do it without anyone's help, tackling the intensity of your own brain to decrease pressure. Essentially recording your considerations and sentiments can be useful, and formal reflection practices have helped numerous individuals lessen pressure and increase point of view.

Contemplation is a prime case of the solidarity of brain and body. Mental pressure can speed the heart and raise the circulatory strain; reflection can really turn around the physiological indications of stress. Logical investigations of Indian yoga aces exhibit that reflection can, actually, moderate the pulse, bring down the circulatory strain, lessen the breathing rate, decrease the body's oxygen utilization, diminish blood adrenaline levels, and change skin temperature.

In spite of the fact that reflection is an old Eastern religious procedure, you don't need to wind up an explorer or convert to give it something to do for you. Truth be told, your best manual for reflection isn't an Indian mystic however a Harvard doctor, Dr. Herbert Benson. Here's a blueprint of what Dr. Benson has named as the unwinding reaction:

- Select a period and place that will be free of diversions and intrusion. A semi-obscured room is regularly best; it ought to be calm and private. On the off chance that conceivable, hold up two hours after you eat before you contemplate and void your bladder before you begin.

- Get agreeable. Discover a body position that will enable your body to unwind with the goal that physical signs of distress won't encroach upon your psychological procedures. Inhale gradually and profoundly, enabling your brain to end up mindful of your cadenced breaths.
- Achieve a casual, aloof mental demeanor. Shut your eyes to shut out visual upgrades. Endeavor to release your mind clear, shutting out considerations and stresses.
- Concentrate on a psychological gadget. A great many people utilize a mantra, a basic word or syllable that is rehashed again and again in a cadenced, serenade like mold. You can rehash your mantra quietly or state it so anyone might hear. It's the demonstration of reiteration that matters, not the substance of the expression; even "one" will do pleasantly. Some meditators like to gaze at a settled item as opposed to rehashing a mantra. In either case, the objective is to concentrate on an unbiased article, subsequently shutting out standard musings and sensations.

Reflection is the most requesting of the auto-control procedures, but at the same time it's the most helpful and fulfilling. When you've aced contemplation, you'll most likely anticipate committing 20 minutes to it on more than one occasion per day.

DYNAMIC SOLID UNWINDING

Focused on muscles are tight, tense muscles. By figuring out how to loosen up your muscles, you will most likely utilize your body to scatter pressure.

Muscle unwinding takes somewhat longer to learn than profound relaxing. It likewise requires greater investment. Be that as it may, regardless of whether this type of unwinding requires a little exertion, it very well may be a valuable piece of your pressure control program. Here's the manner by which it works:

Dynamic muscle unwinding is best performed in a peaceful, separated place. You ought to be easily situated or extended on a supportive sleeping pad or tangle. Until you gain proficiency with the daily schedule, have a companion present the bearings or hear them out on a tape, which you can prerecord yourself.

Dynamic muscle unwinding centers consecutively around the significant muscle gatherings. Fix each muscle and keep up the withdrawal 20 seconds before gradually discharging it. As the muscle unwinds, focus on the arrival of pressure and the vibe of unwinding. Begin with your facial muscles and afterward work down the body.

Forehead

Wrinkle your temple and curve your eyebrows. Hold; at that point unwind.

- Eyes

Close your eyes firmly. Hold; at that point unwind.

- Nose

Wrinkle your nose and flare your noses. Hold; at that point unwind.

- Tongue

Push your tongue solidly against the top of your mouth. Hold; at that point unwind.

- Face

Scowl. Hold; at that point unwind.

- Jaws

Grip your jaws firmly. Hold; at that point unwind.

- Neck
Tense your neck by pulling your jaw down to your chest. Hold; at that point unwind.
 - Back
Curve your back. Hold; at that point unwind.
 - Chest
Take in as profoundly as possible. Hold; at that point unwind.
 - Stomach
Tense your stomach muscles. Hold; at that point unwind.
 - Buttocks and thighs
Tense your backside and thigh muscles. Hold; at that point unwind.
 - Arms
Tense your biceps. Hold; at that point unwind.
 - Forearms and hands
Tense your arms and grip your clenched hands. Hold; at that point unwind.
 - Calves
Press your feet down. Hold; at that point unwind.
 - Ankles and feet
Draw your toes up. Hold; at that point unwind.
- The whole normal should take 12 to 15 minutes. Practice it twice day by day, hoping to ace the strategy and experience some help of worry in around about fourteen days.

MODULE 1: YOGA

Module 1 consisted of physical postures (asanas), voluntary regulated breathing (pranayama), relaxation techniques and meditations. Initially in this training module subjects were explained the theory and philosophy of yoga through lectures to develop their interest in these activities and to ensure their regularity during the training.

Asanas are meant to increase physical stamina and mental balance. Pranayams are carried out to achieve a relaxed state of mind and to increase inner awareness. (Appendix 1 & Appendix 2)
1 represents the outline of training module 1.

Table 1 Outline of Training Module 1

| Exercises | Time | Frequency |
|---------------------|-----------|-----------|
| Prayer | 30 secs | Daily |
| Udgeet | 3 - 5 min | Daily |
| Bhastrika | 3 - 5 min | Daily |
| Kapalbhati | 3 - 5 min | Daily |
| Murcha (Relaxation) | 1 min | Daily |
| Anulom-Vilom | 3 - 5 min | Daily |
| Relaxation | 1 min | Daily |
| Bhramri | 1 min | Daily |
| Sarwngasana | 1 min | Alternate |
| Halasana | 1 min | Alternate |
| Matsyasana | 1 min | Daily |
| Shirsasana | 1 min | Alternate |
| Shalabasana | 1 min | Daily |
| Bhujangasana | 1 min | Daily |
| Dhanurasana | 1 min | Alternate |
| Aradhmatasayana | 1 min | Daily |
| Paschimotasana | 1 min | Daily |
| Gomukhasana | 1 min | Alternate |
| Suryanamaskar | 1 min | Daily |
| Hasyasana | 1 min | Daily |
| Shavasana | 3-5 min | Daily |
| Thanks | | |

The detail of various activities of this module is discussed below.

Prayer: The module began with prayer to foster a sense of values and feelings of responsibility. The meaning of prayer was that everyone in this world remain happy and healthy and no one suffers with problems.

Udgeet: (Sound of 'Om'): The word 'Om' is made up of three words a, o, and m. It is considered that it unfolds inner power. It gives peace to mind and body. For udgeet one sits in padmasana or sukhasana keeping his spine straight, hands on knees making gyan mudra. With closed eye individual needs to take long breath and will start sound of 'O' with open lips in low sound. Then will close the lips and make sound of 'm'. For one breathing 'O' sound should be for 1/3 time and 'M' sound for 2/3 time. Sound should be clear, sweet and vibrating. This process was repeated for three times. It is said to improve concentration, memory and peace. It affects parasympathetic nervous system and reduces tension and stress. Some precautions should be taken in 'udgeet'. It should be according to the own capacity of breathing. Symptoms of calmness and happiness should be in body and mind. No tension on face or at any place of the body. No hurry should be made in breathing or making sound of 'Om'.

Bhastrika: Sit in padmasana or sukhasana or ardhpadmasana with closed eyes, straight back and hands on knees. Take long breath and breath out and feel the breath. Repeat this process for three to five minutes.

Kapal Bhati: This pranayam is helpful in cough problems. For this pranayam sit in padmasana or sukhasana or ardhpadmasana with closed eyes and hands on knees with palm towards sky. Now only breath out with force and let the breath come in automatically. Repeat this process for three to five minutes.

Anulom Vilom: Sit in padmasana or sukhasana or ardhpadmasana with straight back left hand on knees. Now put thumb of right hand on right nostril and little, ring and middle fingers on left nostril. First take long breath with only left nostril and breath out with right nostril. Now take breath from right nostril and breath out with left nostril. Repeat this process. This pranayam helps to keep one healthy.

Relaxation: After 15-20 minutes of yogic exercises subjects were asked for relaxation, lying on the back and loosening each muscle in the body to turn, as it were into soft clay. This lightening relaxation takes only few seconds to few minutes.

Bhramari Pranayama: For this pranayam one sits in padmasana or ardhpadmasana or sukhasana with closed eye and straight back. Thumbs of both hands will be on ears and middle fingers on eyes, ring fingers and little fingers will be on nose and first finger will be on eye brows. Concentration will be on inside sound. Take long breath and make the sound of bhanwara. It is said to provide inner peace to an individual.

Pawanmuktasana: It is an easy posture helpful in problems of digestion and abdomen part. The legs are turned towards abdomen from knee part. The lower back is also stretched in this asana. It can be done by both legs together or one by one leg.

Sarvangasana: (The Candle shoulder stand): It is an inverted posture, chosen for its considerable and immediate effect on the circulation of the blood and for the very small amount of muscular effort required to perform it. The force of gravity speeds up the rate of the circulation of any stagnating venous blood, which then return to the heart by gravitational force instead of being forced to run counter to it. Sarvangasana gets rid of any stoppage in the veins of the legs and the abdominal organs. All inverted postures powerfully activate the circulation with almost no muscular effort. That is why some Masters recommend Shirsasana, the Head-stand, but Warvangasana is within reach of everyone, and which includes the thyroid region, stretches the nape of the neck, and liberates the nervous network of the cervical region. The essential crossroads in our bodies.

Halasana (The Plough): This posture, by increasing the compression of the neck, cleanses the thyroid and stretches the cervical regions (the neck and nape). It therefore increases the effects of Sarvangasana. The forward bending stretches the spinal column and the stomach is massaged. Because the thoracic cage is compressed and the rib-cage blocked, breathing is done from the stomach.

Matsyasana (The Fish): Matsyasana forms a counter-position for the Sarvasanga and Halasana exercises. In other words the neck which has been compressed for a considerable time is set free. In the inverse position, the cervicals are squeezed instead of stretched. The thorax opens widely which has a good effect upon thoracic breathing. The stomach is stretched, the back hollowed in the opposite way to the Plough, and the breathing is chiefly thoracic.

Shirsasana (The Head-stand): The Shirsasana is considered the queen of the asanas. This asana was introduced to subjects when they became comfortable in other asanas. The blood flow is more towards the brain in this posture.

Shalabhasana: It is also known as the Locust. It is muscular structure below the belt which contracts forcibly in order to raise the legs.

Bhujangasana (The Cobra): During the dynamic phase the stomach is stretched. The spinal column is bent backwards in the opposite manner to the Plough and the Forward Bend. In the Cobra the dorsal muscles, which in both the preceding postures were stretched and emptied of their blood like a squeezed sponge are about to contract; and it is possible to see how these contractions induce a great quantity of fresh blood in the back.

Dhanurasana (The Bow- Backward Bending): The bow posture which raises the bust and the bottom of the back together combines both Cobra and locust, complementary asanas which have prepared the dorsal muscles and the spinal column to stand up to the accentuated curve required in the bow, which therefore comes logically after these postures.

Ardh-Matsyendrasana (The spinal twist): The successive bending both forwards and backwards, elaborated and repeated, induces a special sensation in the muscles, intensifying the curvature which Ardha-Matsyendrasana immediately corrects because it twists the spinal column in both directions. This is why the posture is placed all the bending ones.

Pashimottasana (The Forward Bend sitting): It bends the spinal column forward without compressing or pulling out the nape or the neck itself. The curve reaches in particular to the bottom part of the back which is

why this asana completes the Plough posture. This time the stomach is compressed whereas in the Matsyasana it was stretched.

Gomukhasana: It is beneficial for joints and stretches the back. It also increases oxygen intake in lungs.

Suryanamaskar: A Salutation to the Sun is a splendid exercise, and a yoga session without it is inconceivable. It prepares for the asanas and completes them, toning up the muscles, quickening and intensifying the respiration and cardiac rhythm, without inducing any fatigue or breathlessness. Suryana-maskar is a very complex exercise, but do not be put off. In fact it is made up of just six movements, to be repeated in reverse. The subjects started it by learning the first four then work backwards, and then take up positions.

Hasyasana: This exercise was included in the module as relaxation. Subjects were first asked to laugh without make sound and then with sound.

Shavansana: This asana is done for complete relaxation of both body and mind. It removes strain and stress and helpful in problems of heart. In this asana subjects are asked to lie down on back with spread legs. Loose the body from any strain. Loose every part of body from toe to head one by one. This asana improve blood circulation. It was given to students once in every fifteen days.

Thanks: After completing all the scheduled asanas students recite thanks giving prayer for God, which is mentioned below:

It is good to give thanks

It is good to give thanks to the Lord (2)

To sing praises to your name O Most High !

It is good to give thanks to the Lord !!

To declare your steadfast Love (2)

And declare your faithfulness !

It is good to give thanks to the Lord !!

For you have made me glad by your work (2)

At the works of your hands I sing for joy !

It is good to give thanks to the Lord !!

How great are your works O Lord (2)

Your thoughts O Lord are very deep !

It is good to give thanks to the Lord !!

Concentration during Asanas:

Although it is possible to benefit from Western methods of physical exercise done without regard to mental attitude or to concentration of the mind, yet the latter, when used in conjunction with relaxation, is indispensable to the study of yoga as well as to the asanas.

The focus for concentration varies according to whether the active or static stage of the asana is being practised-and also according to the degree of progress reached by the student.

The expert keeps a perpetual check on muscular relaxation. In the Plough posture, for example, everything relaxes: the face, arms, hands, feet, calves, thighs and especially the muscles which are being stretched, for example those in the back. This lengthening process empties them of blood, like a sponge being squeezed, and on returning to their normal state after the posture they take up eagerly a fresh supply of blood.

When the adept can remain still and relaxed, breathing normally, he is able to concentrate on the asana's strategic point of action. Each asana (and here lies one of the essential differences between yoga and every other method of physical education), produces easily assessed effects upon some part of the body: the thyroid region, for instance is affected by the Sarvangasana posture, the solar plexus by the Bow posture and so on. This is the point on which the adept will concentrate.

It is interesting to see that an adept may be mastering different degrees of the various asanas, that is to say, when learning a new one he is a beginner, while for those which he has learnt thoroughly he may already have reached the most advanced stage.

Variation in series:

Module was given for nearly 45 minutes and therefore variation in the list of activities given in the table 3.7 were made. Prayer, Udgeet and all Pranayams were given daily to subjects but some changes were made in the sequence of postures. Initially subjects were asked to do comparatively easy asanas. When they become comfortable with asanas they were to do difficult asanas like Shirshana, Chakrasana etc. It was also considered in deciding the sequence of asanas that any bend made in a forward direction may be replaced by another in the same category. Any variation in a posture came before and after this principle, so long as it does not replace it. In this way, the structure of series remained unchanged and correct.

Precautions in Asanas:

It was kept in the mind that Asanas are not forced exercise; they work of their own volition, not by the application of violence. The researcher instructed to the subjects that the slow pace of the movements is essential to the effectiveness of yoga. Subjects were told to hold the posture for the prescribed length of time. Subjects were told to concentrate on the regions of the body assigned to each asana. The return to the starting position should also be done very slowly. Between two postures, rest for a few seconds relaxing the greatest possible number of muscles, including those of the face. The session was always ended with Shavasana for at least one minute.

It is not possible to lay down any fix plan for beginners, which will suit everyone without exception. In yoga everything is individual and personal. Therefore, many postures (asanas) were included in the module. Subjects were not made to do all the postures everyday but they used to do some of them.

Postures were maintained for as long as possible while relaxed. As subjects had more experience in asanas the time for which the posture was maintained was gradually increased. Through out the practices, the emphases were on relaxation and awareness of physical and other sensations. Asanas work in depth in our interior being, partly on the physical plane (viscera, endocrine glands, brain, voluntary and involuntary nervous system) and also on the mental level, where they produce the sort of calm and serenity, which may be the key to energy and happiness. The suppleness they create is unequalled and with this endurance there is no fatigue or nervousness.

CONCLUSIONS

The fast pace of life is entertained through television and like activities. Physically they are unfit due to lack of opportunities in participation in games and sports like activities. Therefore, various types of physical activities aerobic, anaerobic sports, games and yoga should be made compulsory and should be added in their curriculum.

Yoga plays a positive role in the development of an individual as an integrated person (Budhanada, 1990). The daily practice of yoga may help one to achieve a perfect understanding of the intellect of the body. Through the practice of Yoga one attains not only physical well being or "toning" of the body, but also emotional stability and clarity in the intellect (Yog Mimansa, 2004).

A physical exercise is a bodily activity that develops and maintains physical fitness and overall health. It is often practiced to strengthen muscles and the cardiovascular system, and to have athletic skills. These physical exercises help in increasing the blood and oxygen flow to brain, creating new nerve cells and increasing chemicals in the brain that helps cognition.

REFERENCES:

1. Aladro-Gonzalvo, A. R., et al. (2013). "Pilates-based exercise for persistent, non-specific low back pain

- and associated functional disability: a meta-analysis with meta-regression." *J Bodyw Mov Ther* 17(1): 125-136.
2. Bernard, J. (1988). The inferiority curriculum. *Psychology of Women Quarterly*, 12, 261-268.
 3. Muldoon, G. (2004). Starved for Perfection What do you do when your yoga practice becomes just one more way of telling yourself you're not good enough? *Yoga Journal*, 5, 26-31.
 4. Muldoon, G. (2004). Starved for Perfection What do you do when your yoga practice becomes just one more way of telling yourself you're not good enough? *Yoga Journal*, 5, 26-31.
 5. Saraswati, S. (2004). *Asana Pranayama Mudra Bandha*. Bihar Yoga Bharati, Munger.
 6. Saraswati, S. (2004). *Asana Pranayama Mudra Bandha*. Bihar Yoga Bharati, Munger.
 7. Woolery, A., Myers, H., Sternlieb, B., & Zeltzer, L. (2004). A yoga intervention for young adults with elevated symptoms of depression. *Alternative Therapies of Health Medicine*, 10(2), 60-3.
 8. Woolery, A., Myers, H., Sternlieb, B., & Zeltzer, L. (2004). A yoga intervention for young adults with elevated symptoms of depression. *Alternative Therapies of Health Medicine*, 10(2), 60-3.



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.

2017-18

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®

July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-05

01

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-05

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

“Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.”



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

MAH/MUL/ 03051/2012

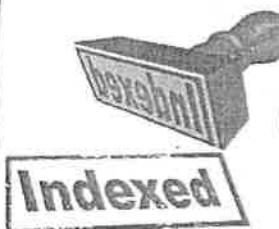
ISSN :2319 9318

vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editorial Board & Advisory Committee

- 1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
- 2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
- 3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arabia)
- 4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
- 5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
- 6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
- 7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
- 8) Jubraj Khamari (Orissa)
- 9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
- 10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
- 11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
- 12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
- 13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
- 14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
- 15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
- 16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
- 17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
- 18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
- 19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
- 20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
- 21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
- 22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bengal)
- 23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
- 24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
- 25) Dr.Seema Sharma (Indor)
- 26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
- 27) Dr. Yallowad Rajkumar (Parli v.)
- 28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
- 29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
- 30) Vipin Pandey, Kanpur (U.P.)
- 31) Dr. Rajendra Acharya (Parli v.)
- 32) Manmeet Kaur (Uttrakhand)
- 33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
- 34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
- 35) Dr. Pandey Piyush (Delhi)
- 36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
- 37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
- 38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
- 39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
- 40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
- 41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
- 42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
- 43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
- 44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
- 45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
- 46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja)



Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any liability regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Vidyawarta is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

www.vidyawarta.com

❖ विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 4.014 (IJIF)

Index

| | |
|--|----|
| 01) Nothing to be Frightened of:A Philosophical Exploration Dr. Tapas Chakrabarti—Dr. Hetal S. Patel, Patan | 10 |
| 02) ACADEMIC COLLEGE LIBRARY NETWORKING: INDIAN SENARIO Vimal K. Gandhi, Gujarat | 13 |
| 03) STUDIES ON COMPOSITION AND COMPONENTS OF AIRSPORA BELONGING TO..... G. M. Pathare, Maharashtra | 18 |
| 04) A Case Study of Caste and Untouchability : Dr. Shyamsundar P. Waghmare, Maharashtra | 23 |
| 05) L2 Acquisition-The Rise and Motivation of Error Analysis Megha Shrivastava, Indore M.P | 27 |
| 06) INCOME INEQUALITY IN INDIA Dr. Chetna Bisht | 30 |
| 07) Performance analysis & mathematical MODELLING OF MATERIAL ReMOVal RATE OF.... Dr. Shirish D. Dhobe—Dr. R. A. Kubde, Maharashtra | 35 |
| 08) A STUDY OF AWARENESS OF BETI BACHAV THROUGH.... Dr. Hardikkumar D. Mehta, Visnagr | 40 |
| 09) Spatio-Temporal Status of Urbanization in Uttar Pradesh Brijendra Nath Singh, Varanasi, U.P. | 45 |
| 10) IMPACT OF ALCOHOLIC PARENTS ON THEIR CHILDREN, FOCUSING ON STUDENT.... Dr. Anju Verma, Sikkim | 51 |
| 11) A STUDY ON EMPLOYEE SATISFACTION B. VENKATARATNAM—K. SUDHA | 57 |
| 12) An Overview of Ethical Management & Code of Ethics in Business Dr. Dilip B. Patil, Dist.Dhulia (MS) | 62 |
| 13) आदिवासी कवींची कविता डॉ. शिंदे सुरेश बाळकृष्ण, जि. सांगली | 68 |

आदिवासी कवींची कविता

डॉ. शिंदे सुरेश बाळकृष्ण
मराठी विभाग प्रमुख,
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली

प्रास्ताविक :-

भारताच्या इतिहासामध्ये शेंकडो वर्ष दुर्लक्षित झालेला समाज म्हणजे आदिवासी होय. आर्यांचे भारतामध्ये आगमन होण्यापूर्वी आदिवासी हे ह्या भारताचे मूळ निवासी लोक होते. या भारतात रहिवासी करणारे मूळ भूमीपूत्र होते. त्यांची राज्ये होते. त्यांची शासन व्यवस्था होती. त्यांची स्वतंत्र विचारप्रणाली, तत्त्वे होती. त्यांच्या रुढी, परंपरा, धर्मव्यवस्था होती.

सर्वसाधारण इ. स. पूर्व ३००० वर्ष च्या दरम्यान आर्यांचे भारतामध्ये आगमन झाले. ते धाडसी व शूर होते. त्यांनी हळूहळू आपले संख्याबळ व शस्त्रबळ वाढवले. आणि त्यांनी आदिवासी लोकांवर हल्ले करण्यास सुरुवात केली. आदिवासी व आर्य यांच्या संघर्ष दीर्घकाळ चालू राहिला. यामध्ये अनार्य लोकांचा पराभव झाला. त्यांच्यातील निर्घृण कत्तली करण्यात आल्या. त्यांची संपत्ती लुटण्यात आली. त्यांना या भूमीवरून पिटाळून लावण्यात आले. मोहेंजोदारो व हरप्पा येथे उत्खननांनंतर मिळालेल्या अवशेषामध्ये या संघर्षाच्या खुणा आढळून येतात. ऋग्वेदामध्ये ज्या दस्युचा समूळ नाश केलेल्याचा उल्लेख आढळतो तो समाज म्हणजेच आदिवासी समाज होय. या मूळ भूमिपूत्रांचा पराभव झाल्यानंतर हा समाज दूर डोंगर कपारीत पळून गेला व तेथेच राहू लागला. भारतातील मुख्य समाजधारकासून त्यांची नाळ तुटली गेली. त्यामुळे स्वाभाविकपणे हा समाज दुर्लक्षित राहिला गेला.

भारत स्वतंत्र झाल्यानंतर मात्र परिस्थिती

बदलली. भारतामध्ये तळागाळापर्यंत सुधारणा होत गेल्या. विशेषतः शिक्षणाचे वारे सर्वत्र वाहू लागले. त्याचा परिणाम आदिवासी समाजमध्येही सुधारणा होऊ लागल्या. त्याही अगोदर ब्रिटीशांचे या आदिवासी समाजाकडे लक्ष गेले होते. आधुनिक काळातही आदिवासी समाजाचे शोषण करण्याचे प्रकार घडले आहेत. त्यामुळेही त्यांचे जीवन ढवळून निघाले आहे. वारली, कोकणा, भिल्ल, कोरकू, गोंड, कोलीम अशा अनेक जमाती महाराष्ट्रा मध्ये अस्तित्वात आहेत. अनुसूचित जमातीच्या यादीत ४७ जमाती आज आढळतात.

आदिवासी साहित्याचा विचार करताना मौखिक व लिखित साहित्याची परंपरा आढळते. भारत स्वतंत्र झाल्यानंतर अनेक आदिवासी कवींनी आपल्या भावना व विचार कवितेद्वारे व्यक्त केले आहेत. आदिवासी जीवन, त्यांच्या परंपरा, श्रद्धा, त्यांच्यावर झालेला अन्याय या कवितांद्वारे चित्रित झाला आहे.

आदिवासी कवींची कविता

भुजंग मेश्राम, वाहरु सोनवणे, विनायक तुमराम, उषाकिरण अत्राम, एस.टी.मडावी, नरेद्र पोयाम, माधव सरकुंडे, कुसुम आलाम, वामन शेडमाके, वसंत कनाके अशा अनेक कवींनी आपल्या कविताद्वारे आदिवासी साहित्यात भर टाकली आहे.

भुजंग मेश्राम हे आदिवासी साहित्यातील महत्वाचे नाव. गोंडी भाषेतील त्यांची कविता आदिवासी जीवन चितारते. तसेच, नागर भाषेतील त्यांनी कविता लिहिली आहे. सकाळच्या चहासोबत या कवितेत कवी म्हणतो, सकाळच्या चहा सोबत नियमित

आता रोज आदिवासीवरील अत्याचाराच्या बातम्या वरुड ...कोडपाखिंडी ...कोडयाची वाडी आणि आता इंटरवल्ली .. कित्ती स्वस्त होत चाललेय आम्ही?

कितेक शतके आदिवासी समाज जमीनदार, सावकार यांच्या शोषणाला बळी पडला आहे. समाज सुधारला तरी शोषण थांबले नाही. आदिवासी स्त्रियांवरील बलात्काराच्या बातम्या अनेक वेळा वर्तमानपत्रामध्ये येत असतात. त्यामुळे मेश्राम यांना वाटते की, आम्ही स्वस्त होत चाललो आहे. आदिवासी लोकोची असहाय्यता व अस्वस्थता या कवितेमध्ये व्यक्त होते.

आदिवासींवर होत असलेल्या अन्याय ही आजचीच गोष्ट नाही. हजारो वर्ष हा अन्याय होत आहे म्हणून मेश्राम एका कवितेत म्हणतात.

पाच हजार वर्षापूर्वीच्या ता-यांच्या प्रकाश अस्ती अवसेचा आलेख आज उजेडात कोरण्याची शपथ घेतांना

माझ्या मित्रांनो एवढं करा

गुड्या गुड्यांवर, पोळा पोळावर, तुमचे मुक्त हात दिसू द्या

अन लोकशाहीच्या समुद्रात दीपस्तंभ शोधताना

कैक सुसंस्कृत द्रोणाचार्य भेटतील

मात्र तुमच्या अंगठा शाबूत असू द्या

पाच हजार वर्षांपासून होणारा अन्याय, द्रोणाचार्यांनी एकलव्याचा घेतलेला अंगठा या सर्वांचे प्रतिबिंब या कवितेत पडले आहे. त्याचबरोबर, आजच्या संस्कृतीतही सुसंस्कृत द्रोणाचार्य भेटतील याची जाणिवही आदिवासींना मेश्राम करून देतात. ख्रिस्ती लोकांनी आदिवासी लोकांना भुलवून केलेले धर्मातर, राजकारणी लोकांनी त्यांचा मतासाठी केलेला वापर, आदिवासी लोकांनी या गोष्टीला फसू नये व स्वतःचे हात मुक्त ठेवावेत असे कवीला वाटते. आदिवासी आता जागरूक झाला आहे. पेटून उठला आहे. याचे चित्रण मोहोळ या कवितेत करताना मेश्राम म्हणतात, कापूस आतूनच पेटत असतो भुरभुर हे त्यांना माहित असावे म्हणून तर तुझ्या ओटीतला कापूस पाहून ते गुपचाप निघून गेले

आदिवासीच्यामध्ये होणारी जागृती इतरांनाही कळत आहे. हे या कवितेत नमूद केले आहे.

कवी विनायक तुमराम यांच्या गोंडवन पेटले आहे हा कविता संग्रह प्रसिध्द आहे. त्यांच्या कवितेतही विद्रोहाची आग दिसून येते. एका कवितेत ते म्हणतात,

रान वृक्षांच्या पानोपानी

मी वनवासावर

महाकाव्य लिहून ठेवले आहे

ये त्या प्रबुध्द युगाच्या

रक्ताळ डोळ्यांना वाचता येण्यासाठी

आदिवासींनी हजारो वर्ष वनवास भोगला त्याचा

इतिहास वनातील पानापानावर लिहिला आहे. परंतु हा इतिहास वाचण्यासाठी प्रबुध्द युग हवे आणि डोळेही क्रांतीने रक्ताळलेले हवेत असे कवीला वाटते. त्यांच्याही कवितेत पुराणांचे संदर्भ येतात. एकलव्याचा अंगठा द्रोणाचार्यांनी कपाटाने कापला परंतु तरीही कविला वाटते,

अंगठयाचे दान देताना

सूर्योदय आपला साक्षी आहे

म्हणजे एकलव्याने द्रोणाला दिलेले हे दान आहे तेही सूर्योदयाच्या साक्षीने. यामध्येही आदिवासीला उन्नती करण्याची प्रेरणा मिळते असे कवीला वाटते. आदिवासींचे जगणे कोणी नासवले हे सांगताना कवी तुमराम म्हणतात,

आपल्या निष्ठेची आणि अस्मितेची

दलाली करणाऱ्यांनीच

नासवून टाकले आहे

आदिवासींचे सामाजिक जगणे

माधव सरकुंडे यांचा मनोगत हा कविता संग्रह

प्रसिध्द आहे. ठणक या कवितेत कवी म्हणतो

जिथं वाटच नाही

तिथं कुठल्या मैलाच्या दगडावर विश्वास ठेवावा?

आदिवासी समाज हजारो वर्ष अंधकारामध्ये जीवन जगला आहे. त्यांना प्रकाश दाखविणारा दिवाच नाही. दिशा दाखविणारा कोणी नाही. तर या उपेक्षित समाजाने प्रगती कशी करायची हा प्रश्न कवीला विचारायचा आहे. आदिवासी समाजाला इतर समाजाने इतके शोषले आहे की, कवीला वाटते, माणसानं माणसाला इतकं नग्न करावं की प्राण्यानेही डोळे झाकावे

आदिवासीला अनेक बंधनात समाजाने बांधले असले तरी आदिवासी आता मुक्त होऊ पाहत आहे म्हणून कवी सरकुंडे म्हणतात,

मी तुरुंगच होऊन उडालो सूर्याच्या दिशेने

जखमेवरची खपली गळून पडावी

तसा अंगाभोवतालचा तुरुंग कधी गळून पडला

ते कळलेच नाही

स्वातंत्र्याचा ध्यास घेऊन मन उठते त्यावेळी ते

आत्मविश्वासाने भरून येते व त्याची सर्व बंधने गळून

2017-18

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
4.002(IJIF)

Printing Area
International Research Journal

August 2017
Issue-32, Vol-02

01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
August 2017, Issue-32, Vol-02

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)

“Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.”



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

Editorial Board & Advisory Committee

- 1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
- 2) M. Saleem, Sialkot (Pakistan)
- 3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arabia)
- 4) N. Nagendrakumar (Sri Lanka)
- 5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
- 6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
- 7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
- 8) Jubraj Khamari (Orissa)
- 9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
- 10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
- 11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
- 12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
- 13) Prof. Surwade Yogesh (Satara)
- 14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
- 15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
- 16) Tadvi Ajj (Jalgaon)
- 17) Dr. Patwari Vidya (Jalna)
- 18) Dr. Varma Anju (Gangatok)
- 19) Dr. Padwal Promod (Waranasi)
- 20) Dr. Lokhande Nilendra (Mumbai)
- 21) Dr. Narendra Pathak (Lucknow)
- 22) Dr. Bhairulal Yadav (West Bengal)
- 23) Dr. M. M. Joshi, (Nainital)
- 24) Dr. Sushma Yadav (Delhi)
- 25) Dr. Seema Sharma (Indor)
- 26) Dr. Choudhari N. D. (Kada)
- 27) Dr. Yallowad Rajkumar (Parli v.)
- 28) Dr. Yerande V. L. (Nilanga)
- 29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
- 30) Vipin Pandey, Kanpur (U.P.)
- 31) Dr. Rajendra Acharya (Parli v.)
- 32) Manmeet Kaur (Uttrakhand)
- 33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
- 34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
- 35) Dr. Pandey Piyush (Delhi)
- 36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
- 37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
- 38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
- 39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
- 40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
- 41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
- 42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
- 43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
- 44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
- 45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
- 46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja)



Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Note : The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publication is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

www.vidyawarta.com

Printing Area : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal UGC Approved Jr.No.43053

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
4.002(IJIF)

प्रिंटिंग एरिया
Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2017
Issue-32, Vol-02

06

|| Index ||

| | |
|--|----|
| 1) Need and Importance of Skill Development in Formal Education Dr. G. P. SATAV, Hadapsar | 09 |
| 2) CROP DIVERSIFICATION IN DROUGHT PRONE AREAS OF NASIK DISTRICT.... Mr. Somnath T. Arote—Dr. S. M. Lawande..... | 14 |
| 3) The Theme of Hunger in Kamala Markandaya's Nectar in a Sieve Dr. Arun Kumar Singh, Bhaisma, Distt.- Korba (C.G.) | 19 |
| 4) DIGITAL LIBRARY IT'S ADVANTAGES & LIMITATIONS Masarat Ali | 23 |
| 5) A Protest in Namdeo Dhasal's Poetry Mr. Madhukar Ramesh Wankhede, Dhule (M.S) | 27 |
| 6) E-Governance Dr Rachana Srivastava—Dr Tanushree Srivasatava | 30 |
| 7) WOMEN & GLOBALIZATION IN INDIA: A SOCIOLOGICAL PERSPECTIVE Dr. Seema Kumari, Delhi/NCR | 37 |
| 8) Problems of First Generation Learners at the Higher Secondary School in Relation to their.... Dr. Subhash Sarkar—Suman Barman, Tripura | 44 |
| 9) An analysis of floriculture business in West Bengal Kalachand Sain—Dr. Amitava Mondal | 49 |
| 10) Relevance of Educational Philosophy of Giju Bhai in Present Scenario Dr. Sapna Sharma—Diksha Bhartiya, Rajasthan | 56 |
| 11) Study of Some Major Aspects about Rural Reconstruction Initiated by R.N. Tagore Dr. Chandvir, Haryana | 61 |
| 12) STUDY OF ABIOTIC FACTORS OF JAKEKUR WATER BODY TQ. OMERGA DIST. OSMANABAD (M.S.) Dr. S. D. Kamble, , Makani, Lohara, Osmanabad | 66 |
| 13) Effect of Demonetization On Indian Economy Dr. Anil S. Khandekar, Amravati. | 68 |
| 14) Analysis of Bibliometric term in Web of Science Gajanan Pralhadrao Khiste—Dr. Rajeev R. Paithankar | 70 |
| 15) Use of Modern Technologies in English Language Teaching & Learning Mitali K. Ahire, Bhusawal | 75 |

| | |
|---|-----|
| 16) MULTIMEDIA PRESENTATION & ITS EFFECT ON SCIENCE SUBJECT ACHIEVEMENT OF... Ms. Anupriya Mishra, Lucknow | 77 |
| 17) Kannashree: A Strategy for Inclusion of Girl Children in School Education Anindya Mitra--Dr. Sujit Kumar Paul, West Bengal | 83 |
| 18) RESONANCE JOURNAL OF SCIENCE EDUCATION: A BIBLIOMETRIC STUDY Ku. Pradnya M. Ramteke.(Bhagat)—Mr.Arvind A.Bhagat | 88 |
| 19) MULTICULTURALISM IN BHARTI KIRCHNER'S NOVEL "PASTRIES: A NOVEL OF... Dr. Ashok P. Kholrnar—Prof. Bhaskar A. Patil | 94 |
| 20) WOMEN EMPOWERMENT THROUGH SELF EMPLOYMENT Dr. Pragna K. V., Chitradurga, Karnataka | 97 |
| 21) Socio-Economic Aspects Migration Dr. Ugrasen Pandey, FIROZABAD U.P. | 100 |
| 22) TRAINING PRACTICES IN AUTOMOBILE SECTOR Mrs. Rekha S. Mudkanna | 110 |
| 23) Effect of a Six Week Emotional Intelligence Programme on the Sports Performance.... Dr. Bappaheeb Maske—Krishna Parbhane | 112 |
| 24) A Geographical Study of land Use Changes in Nandurbar District (MS) Dr. A. T. Patil—Dr. S. K. Shelar—Dr. N. D. Mali | 117 |
| 25) कृष्णाकाठ मध्ये शिक्षित झालेला स्वातंत्र्य लढा डॉ शिंदे सुरेश बाळकृष्ण, जि. सांगली | 121 |
| 26) विदर्भातील जहाल विचारधारा आणि वंग-भंग आंदोलन डॉ. अण्णासाहेब म्हळसने, बुलडाणा | 124 |
| 27) माध्यमिक स्तरावरील स्त्रीशिक्षिकाचे महिला सबलीकरणाविषयी जाणीव जागृती—..... छाया शिरसाट | 126 |
| 28) बाबुराव बागूल यांच्या लेखनामगील प्रेरणा आणि वैशिष्ट्ये डॉ. बाळासाहेब शंकर शेळके जि. अहमदनगर | 130 |
| 29) भारतीय राज्यघटनेवरील समाजवादी विचारसरणीचा प्रभाव आणि वास्तव प्रा. सुनिल एन. संदानशिय, दहिवेल, ता. साक्री, जि. धुळे | 136 |

कृष्णाकाठ मध्ये चित्रित झालेला स्वातंत्र्य लढा

डॉ. शिंदे सुरेश बाळकृष्ण

मराठी विभागप्रमुख,

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली

संयुक्त महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री, गांधीवादी स्वातंत्र्यसैनिक समाजसुधारक, विचारवंत, उत्तम वक्ता, लेखक, उत्तम प्रशासक, उत्कृष्ट संसदपट्ट, सुसंस्कृत द्रष्टानेता, महाराष्ट्राचे शिल्पकार, अशा अनेक पैलूंनी महवलेले, व्यक्तिमत्व म्हणून यशवंतराव चव्हाण यांना महाराष्ट्र ओळखतो. एका सामान्य शेतकरी कुटुंबामध्ये जन्म घेवून स्वतंत्र भारताच्या संरक्षणमंत्री व उपपंतप्रधान पदापर्यंत झेप घेतलेले उरुंगु व्यक्तिमत्व म्हणजे यशवंतराव चव्हाण.

यशवंतराव चव्हाण यांचा जन्म १२ मार्च १९१२ मध्ये सांगली जिल्ह्यातील देवराष्ट्रे या छोट्याशा खेड्यामध्ये झाला. देवराष्ट्रे हे यशवंतरावांचे आजोळ. त्यांचे मूळगाव विटा. त्यांचे वडील न्यायालयात बेलीफ म्हणून काम करीत होते. त्यांची नेमणूक कराड - विटा - दहिवडी अशा गावाना होत असे. हे कुटुंब कराड येथे स्थायिक झाले. पुढे यशवंतराव अवघे चार वर्षांचे असताना त्यांच्या वडीलांचा मृत्यू झाला. यशवंतरावांना दोन मोठे भाऊ होते. वडीलांच्या मृत्यूमुळे या कुटुंबाची मोठी बिकट परिस्थिती झाली. त्यांच्या मातोश्री विटाई ही मोठी धीराची खंबीर स्त्री होती. पती निधनानंतर आपल्या मुलांना त्यांनी चांगल्या प्रकारे सांभाळले. पुढे यशवंतरावांचे मोठे बंधु ज्ञानोबा यांना त्यांच्या वडिलांच्या जागी बेलीफ म्हणून नोकरीस घेतले. कराड येथे यशवंतराव शाळेमध्ये शिकू लागले. कराडमध्ये त्यांचा शालेय जीवनामध्ये स्वातंत्र्य लढ्याशी संपर्क आला व ते या लढयामध्ये सक्रिय झाले. स्वातंत्र्यानंतर मुंबईमध्ये येईपर्यंत त्यांचे वास्तव्य कराडलाच होते. यशवंतरावांचे शिक्षण बी. ए. पर्यंत झाले त्यांनी एल. एल. बी. चे शिक्षण घेतले. परंतु वकिल व्यवसाय मात्र केला नाही. कारण काही दिवस कराड येथे त्यांनी वकिली करून पहिली परंतु या व्यवसायात आपण कधीच रमणार नाही हे यशवंतराव चव्हाणाच्या एका वर्षामध्ये लक्षात आले. कारण त्यांची ध्येय वेगळी होती.

कृष्णाकाठ हे यशवंतराव चव्हाण यांचे आत्मचरित्र. त्यांच्या

जन्मापासून ३० मार्च १९४६ साली पार्लमेंटरी पार्टीचे सेक्रेटरीपदी त्यांची निवड झाली म्हणून ते मुंबईला निघाले या कालावधीतील आत्मकथा म्हणजे कृष्णाकाठ होय. या कालावधीमधील यशवंतरावांच्या जीवनातील अनेक महत्वाच्या घटना या आत्मकथेमध्ये चित्रित झालेल्या आहेत. त्यामध्ये यशवंतरावांनी स्वातंत्र्यामध्ये भाग घेतलेल्या घटनाही आलेल्या आहेत. त्याचबरोबर या कालखंडातील स्वातंत्र्य लढयातील महत्वाच्या घटनांचा यशवंतराव चव्हाण यांच्यावर झालेला परिणामही आपल्या आत्मकथेमध्ये त्यांनी नमूद केलेला आहे.

१९३० साली लाहोरला रावी नदीच्या तीरावर राष्ट्रीय काँग्रेसचे अधिवेशन झाले त्यामध्ये २६ जानेवारी १९३० रोजी स्वातंत्र्य दिन साजरा करण्याचे ठरविले. ही बातमी कळल्यानंतर यशवंतराव व त्यांच्या मित्रांना खूप आनंद झाला. यशवंतरावांनी एक प्रतिज्ञापत्रक तयार केले. कराडमधील कृष्णाघाटावर झेंडावंदन करून या प्रतिज्ञापत्रकाच्या प्रती जमलेल्या लोकांना वाटल्या. या घटनेनंतर यशवंतराव चव्हाण म्हणतात, राष्ट्रीय काँग्रेसच्या तिरंगी झेंडयाखाली आज आपण प्रतिज्ञा वाचन केल्यामुळे मनाची शांती वाढली. माझे राजकीय जीवन ख-या अर्थाने सुरु झाले.१

महात्मा गांधींचा दांडी - मोर्चा सुरु झाला. त्याचा समाजावर झालेला परिणाम वर्णन करताना यशवंतराव म्हणतात, शांत, एकाकी, अविचल व स्थिर असा एखादा पाण्याचा डोह असावा आणि अचानक कुठून तरी वादळी, सोसाट्याचा वारा यावा म्हणजे त्यावरती असे लाटांचे तरंग उठू लागतात. तसेच शांत पड्डलेल्या या समाजाचे होऊ लागले.२ याकाळात कराडमध्ये होणा-या भाषणांचा त्याचा लोकमानसावरील प्रभावाचे चित्रण यशवंतरावांनी केले आहे. कराडमध्ये गांधीजींच्या मार्गाने तयार केलेले मीठ जाहीरपणे विक्री केले गेले ते विक्री करणारे श्री. निकम व खरेदी करणारे शामजीभाई आणि हरिभाऊ लाड यांना अटक आली. या घटनेमुळे कराडमधील चळवळीला उधाण आले असा उल्लेख यशवंतराव यांनी केला आहे. त्याकाळी हरिभाऊ लाड हे कराडमधील चळवळीचे नेतृत्व करीत होते. त्यांना अटक झाल्यामुळे कराडमधील स्वातंत्र्यलढयाचे नेतृत्व यशवंतराव चव्हाण यांच्याकडे आले. त्यांनी दररोज सकाळी प्रभात फेरी काढण्याचे काम सुरु केले. याबद्दल त्यांच्याबरोबर दहा - पंधरा मंडळींवर खटल्याचे समन्स निघाले व त्यांच्यावर खटला भरण्यात आला. या दरम्यान यशवंतरावांना पोलीस कस्टडीमध्ये ठेवून चौकशीही करणेत आली.

स्वातंत्र्य लढयाच्या कालखंडामध्ये सांगली जिल्हातील बिळाशी येथील लोकांनी इंग्रजी सत्तेशी असहकार्याचे जे आंदोलन केले त्याचा परिणाम सर्वत्र झाला. त्यामुळे चळवळीला उत्तेजन मिळाले. त्यानंतर ब्रिटीश सत्तेने तेथील लोकांवर अत्याचार केले. तेथील लोकांचे

ISSN 2319-6785

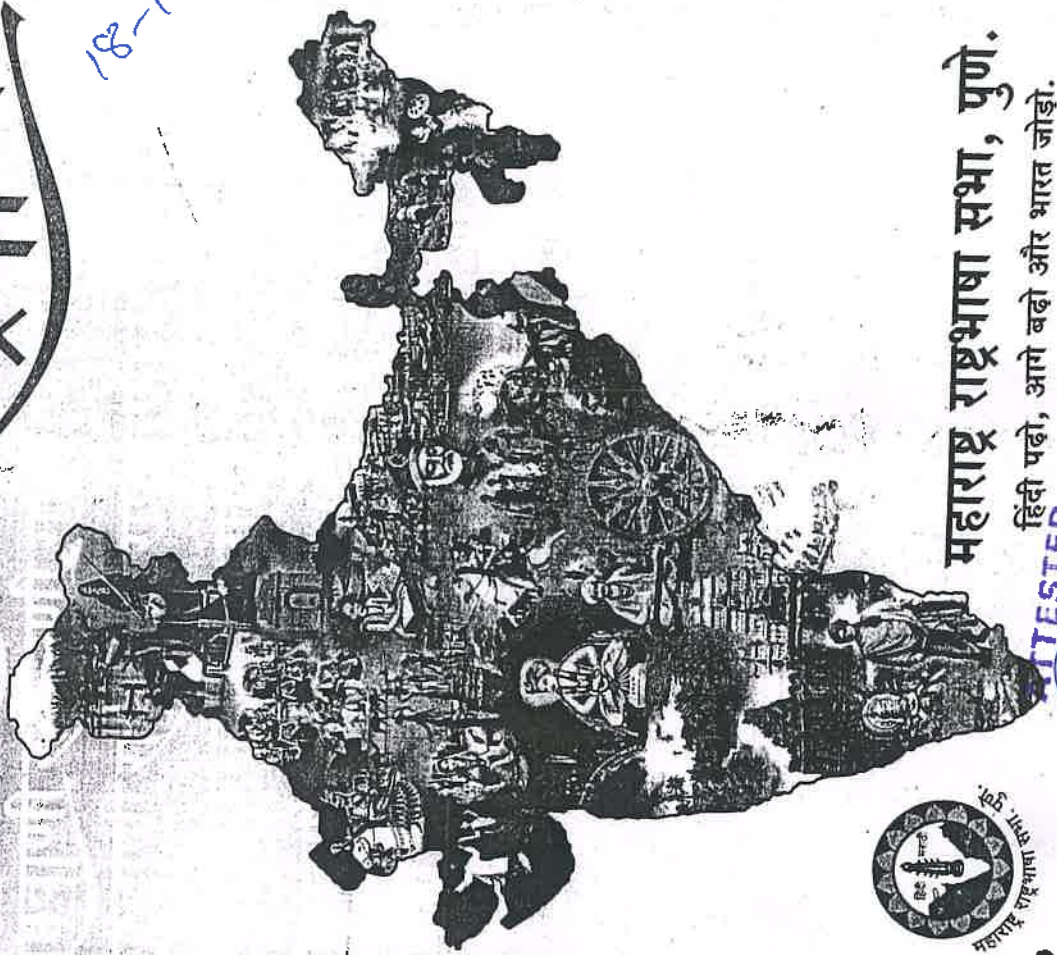
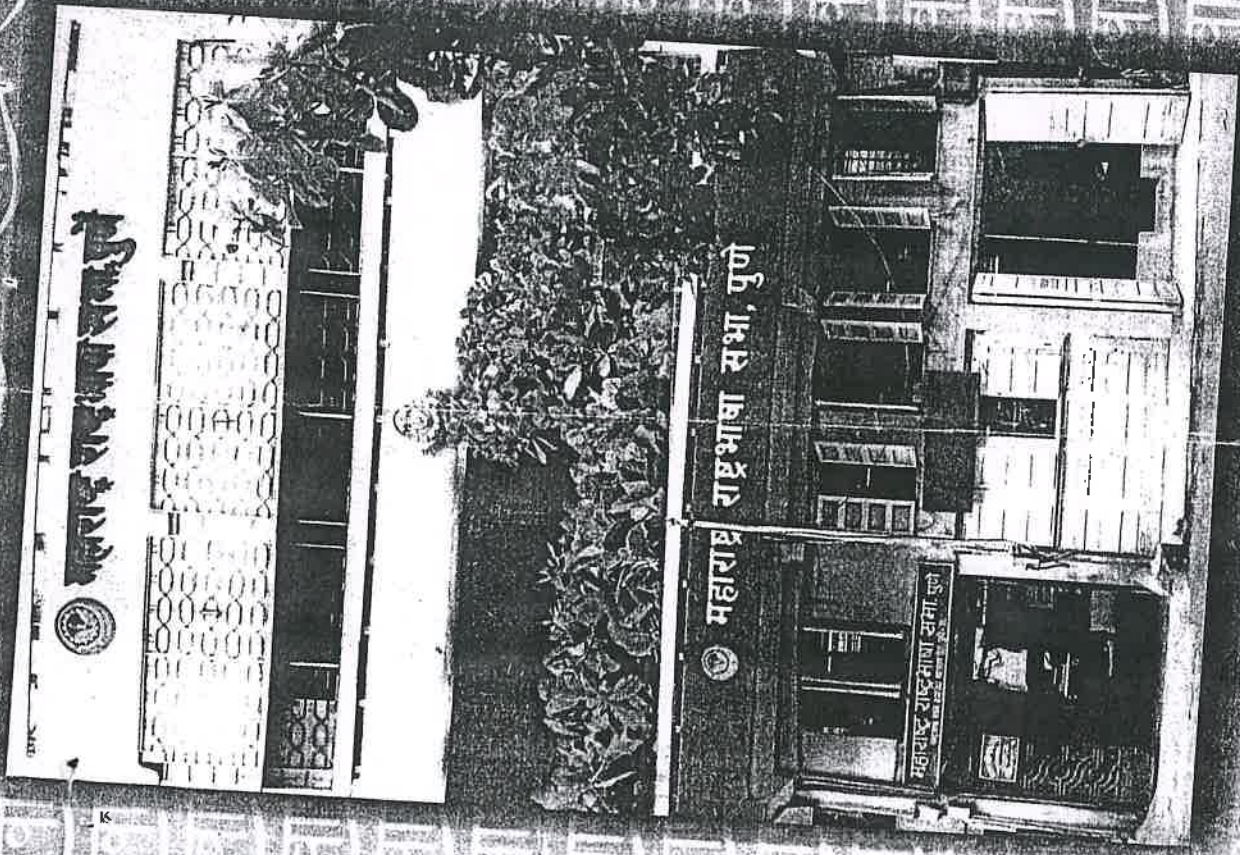
वर्ष 30 (अंक 5)

दिसंबर 2018 - जनवरी 2019

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी

18-19



महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे.

हिंदी पढो, आगे बढ़ो और भारत जोड़ो.

ATTESTED

Signature

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology.

Asso. Professor.

Sahasra Shiksha Mahavidyalaya
Pune - 411 004

ATTESTED

Signature

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. of Psychology.

Asso. Professor,

Sahasra Shiksha Mahavidyalaya
Pune - 411 004

255
348

हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका
वर्ष 30 (अंक 5)

दिसंबर 2018 - जनवरी 2019



--: संपादक मंडल :-

पूर्व अध्यक्ष - प्राचार्य सु. मो. शाह

कार्याध्यक्ष - डॉ. वीणा मनबदा

--: सहायक :-

डॉ. नीला बोरवणकर डॉ. रुचा शर्मा

डॉ. निशा दबळे



राष्ट्रवाणी सदस्यता शुल्क :-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' के नाम से भेजिए।

प्रति अंक : रु. 50/-

द्वैवार्षिक : रु. 500/-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट भेजने का पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे -

राष्ट्रभाषा भवन, 387 नारायण पेठ, पुणे - 411030

दूरभाष : 020 - 24458947 / 24454268

संलग्न पत्र में शुल्क का प्रकार,

अपना पूरा नाम और पिनकोड सहित पूरा पता, दूरभाष क्रमांक लिखिए।

प्रबंधक :- सौ. वंदना ठकार, सौ. सुनेत्रा गोंदकर

प्रकाशक, मुद्रक :- शे. आ. जगताप, सचिव,

मुद्रणस्थान :- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, मुद्रणालय

387, नारायण पेठ, पुणे - 411030



राष्ट्रवाणी साहित्यिक-समीक्षात्मक पत्रिका है। यह जसरी नहीं कि लेखकों के विचारों से संपादक सहमत हो। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का स्वामित्व-अधिकार पत्रिका का है।

1. अपनी ओर से - शिक्षण महर्षि चिपळूणकर - प्रा. सु. मो. शाह 2
2. सुनीता जैन के उपन्यासों में लोक संस्कृति - डॉ. इंद्रदेव सिंह 6
3. गुप्त जी के काव्य में नारी विषयक धारणा - डॉ. पूनम बोसे 10
4. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र - डॉ. विनायक कुरणे 15
5. कुमारी महिलाओं की दास्तान - 'कुमारिकाएँ' उपन्यास - डॉ. बेबी खिलारे 19
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में जनवादी चेतना - डॉ. रामकृष्ण बरने 22
7. महादेवी और इंदिरा संत के काव्य में 'आँसू' - डॉ. अंजली चौधरी 26
8. उपन्यासकार 'अजेय'-शेखर:एक जीवनी' के विशेष... - डॉ. विजय गाडे 29
9. रामचरित मानस में सूक्तियों का सौंदर्य - डॉ.तेजपाल चौधरी 33
10. गीत से नवगीत की ओर - एक विमर्श - श्री ब्रजेश श्रीवास्तव 38
11. दिनकर के साहित्य में नारी विमर्श - डॉ. संजय गडपायले 43
12. हिंदी प्रश्नों के चक्रव्यूह में - श्री दर्शन सिंह रावत 46

* * * * *

'रिस्तो ना तुज रिता ओंठ्ठी मध्ये
ठिक्करा येब अशुबा'

दोनों कवियत्रियों के काव्य में असह्य विरह वेदना के व्याकुल चित्र अंकित हुए हैं। प्रियतम के अभाव में मन की दुर्दम्य निराशा तथा वेदना की सूक्ष्म संवेदनशीलता व्यक्त हुई है। उनकी वेदना को विह्वल, धायल अभिव्यक्ति पाठकों का हृदय करुणा से द्रवित कर देती है। विरह की दाहकता एवं अश्रुपूर्ण अभिव्यक्ति प्रभाषपूर्ण है। दोनों की विरह वेदना में अंतर यह है कि महादेवी अपने मन में दुःख तथा वेदना के प्रति सामंजस्य ढूँढ लेती हैं। और अपनी छोटी-सी आत्मा को भी उस महान आत्मा से कम नहीं मानती। लेकिन इंदिरा संत असहाय होकर प्रियतम के विरहजन्य वेदना तथा निराशा में डूब जाती है।

महादेवी वर्मा छायावादी युग में विशेष स्थान रखती हैं। हिंदी साहित्य के करुणा की कोमल भावधारा में बहनेवाली महादेवी वास्तव में 'नीर परी जल की बदरी-सी लगती है।' उनकी रचनाओं से रहस्यवादी भाव एवं वेदना की प्रधानता दिखाई देती है। कवयित्री कहती हैं -

'जो तुम आ जाते एक बार।

कितनी करुणा कितने संदेश पय में बिछ जाते बन पराम।

माता प्रणों का तार-तार अनुराग भरा उन्माद राग;'
औंसू लेते वे पद 'खबार'।

कवयित्री के मन में अपने प्रियतम से मिलने की फिर प्यास है। अपने विरह के दुःख में भी वह उनके आने की प्रतीक्षा कर रही है। प्रेमिका को लगता है कि दोनों का मिलन ही उसकी आत्मा तृप्त कर देगा। उसका प्रियतम उसकी आत्मा और शरीर के कण-कण में व्याप्त है। अगर वह आ जाता है तो वह अपनी सारी भावनाएँ, करुणा आदि को उसके सामने व्यक्त करेगी। औंसूओं से चरण धोकर उसका स्वागत करेगी।

कवयित्री का जगत दुःखी है। उसका दुःख एक साधक का सात्विक दुःख है। उसके पीछे उनका कारुणिक भाव है। इसलिए वे मानती हैं -

'सब आँखों के आँसू उजले
सबके सपनों में सत्य पला।'

महादेवी सबके दुःखों को अपना मानती है। इसलिए वह 'नीर परी बरली' है।

संदर्भ -

1. महादेवी का काव्य
2. इंदिरा संत का काव्य

* * * *

उपन्यासकार 'अज्ञेय' - 'शेखर: एक जीवनी' के विशेष संदर्भ में
डॉ. धिंजय महादेव गाडे,

हिंदीविभागाध्यक्ष, बाबासाहेब पितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, जि. सांगली (महाराष्ट्र)

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हुए हैं। इन उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता है बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। 'सच्चिदानंद' मुख्यतः व्यक्तिवाद की प्रबलता जिसे अज्ञेय ने यहाँ इनके बहुमुखी व्यक्तित्व है, जब कि कवि 'अज्ञेय' अंतर्मुखी माध्यम से चित्रित किया है। व्यक्तिवाद की प्रबलता कलाकार हैं। उनके जीवन का उनके साहित्य से को सर्वप्रथम प्रसाद ने उद्घाटित किया था।

संसार के लगभग सभी वैज्ञानिक भूख, भय को आदित्य प्रेरणाएँ मानते हैं। लेकिन इसके साथ-साथ एक और भी आदित्य प्रेरणा मानव ही में नहीं अपितु जानवरों में भी होती है और वह है 'अहं' अर्थात् आधुनिक बनाने का श्रेय अज्ञेय को दिया जाता है। केवल कविता ही नहीं अपितु आधुनिक साहित्य की हर एक विधा को अज्ञेय ने आधुनिकता प्रदान की है। अपने आप में एक समर्थ कलाकार होने के साथ-साथ वे हिंदी के साहित्य संदर्भ में एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व भी हैं। अज्ञेय ने विविध कोटि के बहुत से प्रयोगों की रचना की है और साहित्य का संपादन भी किया है। कविता, कहानी, निबंध, यात्रा वृत्तांत, संपादित ग्रंथ, समीक्षा, आलोचना, नाटक, अंग्रेजी कविता और उपन्यास यही सारी बातें इसी तथ्य को उजागर करती हैं। अज्ञेय का रचना संसार काफ़ी विशाल एवं विराट है जो अपनी असीमता का परिचय दिलाता है।

उपन्यासकार अज्ञेय का सफर 'शेखर एक जीवनी' (1941) से आरंभ होकर 'नदी के द्वीप' (1961) के माध्यम से 'अपने-अपने अजनबी' (1961) तक जाकर पहुँचता है। अज्ञेय के ये तीन बहुचर्चित उपन्यास बीस वर्षों के अंतराल में प्रकाशित

यह कथन गलत नहीं होगा कि - विद्वाह और क्रांति 'शेखर : एक जीवनी' के मुख्य स्वर हैं। 'शेखर : एक जीवनी' असंधारण स्थिति में एक असंधारण चरित्र का असंधारण संवेदन है। उसका विद्वाह अन्याय और रूढ़ियों के विरुद्ध है जो मनोवैज्ञानिक भित्ति पर प्रतिष्ठित है। शेखर की वेदना से यही अनुभूत होता है कि वेदनाग्रस्त व्यक्ति द्रष्टा और

राष्ट्रवाणी : दिसंबर-2018 : जनवरी-2019 ♦ 28

ATTESTED

(Signature)
Dr. Shrikant S. Chavan
Head of Department of Hindi,
Babasaheb Chavan Mahavidyalaya
Bilwadi

350

कवर 2 का शेष भाग

जिनमें 75 उनकी मौलिक पुस्तकें हैं और अन्य सम्पादित। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं: 'अंगद की नियति', 'छितवन की छाँह', 'कदम्ब की फूली डाल', 'आँगन का पंखी और बनजारा मन', 'कँटीले तारों के आर-पार', 'कौन तू फूलवा बोननिहारी', 'गाँव का मन', 'तुम चन्दन हम पानी', 'मैंने सिल पहुँचाई', 'वसन्त आ गया पर कोई उल्टा नहीं', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', 'तमाल के झरोके से', 'शेफाली झर रही है', 'लागू रंग हरी', 'साहित्य की चेतना', 'परम्परा बन्धन नहीं', 'अस्मिता के लिए', 'निज मुख मुकुट', 'साहित्य का प्रयोजन', 'महाभारत का काव्यार्थ', 'संचारिणी', 'भारतीयता की पहचान', 'नैर्ऋत्य और बुनौती', 'भारतीय परम्परा', 'भावपुरुष श्रीकृष्ण', 'जीवन अलम्ब्य है जीवन सौभाग्य है', 'देश, धर्म और साहित्य', 'सोऽहम्', 'भ्रमरानन्द के पत्र (हास्य-व्यंग्य)', 'पानी की पुकार' (कविता-संग्रह), 'भारतीय दर्शन की पीठिका', 'भाषा और सम्प्रेषण', 'हिन्दू धर्म: जीवन में सनातन की खोज', 'श्रुति विज्ञान', 'हिन्दी की शब्द सम्पदा', 'देव की दीपशिखा', 'नदी, नारी और संस्कृति', 'फागुन डूड़े रे दिना', 'शिरीष की याद आयी', 'भारतीय चिन्तनधारा', 'साहित्य का खुला आकाश', 'यात्राओं की यात्रा', 'बूँद मिली सागर में', 'सहृदय', 'उत्तर गीत गोविन्द' (कविता), 'तन्त्र-कला और आस्वाद', 'सपने कहां गये', 'राधा माधव रंग रंजी', 'हिन्दी साहित्य का पुनरावलोकन', 'अध्यापन: अनौति दृष्टि', 'हल्दी दूब और दधि अच्छत', 'लोक और लोक का स्वर', 'व्यक्ति-व्यंजना', 'जसुब के नन्दन', 'निर रहा है आज पानी', 'हिन्दी और हम', और 'शोड़ी-सी जगह है'।

सृजनात्मक स्तर पर मिश्रजी ने शोध, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, पत्र-लेखन, सम्पादन, कविता आदि क्षेत्रों को अपना महत्वपूर्ण अवदान दिया। मगर व्यापक प्रतिष्ठा उन्हें निबन्धकार के रूप में मिली।

भारतीय एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अप्रतिम उदाहरण हैं मिश्रजी के आत्मव्यंजक निबन्ध। इनमें भारतीयता के विरुद्ध पड़नेवाले विचारों से उनकी बराबर टक्कर होती रही। मगर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के आगे ही अन्य साहित्यकारों से मिश्रजी बिल्कुल अलग थे।

मिश्रजी के निबन्धों के लोकपथ, प्रकृतिप्रेम, सौन्दर्यबोध और विश्व-दृष्टि ने जहाँ लुगाया वहीं शास्त्रीय अध्ययन के विविध आयामों में भी उनके ज्ञान और चिन्तन की शक्ति का सबने लोहा माना। क्रिटिकल टैकनीक ऑफ पाणिनि, 'श्रुति विज्ञान', भारतीय भाषा दर्शन की पीठिका, जैसी पुस्तकों ने उनके शास्त्रीय चिन्तन की गहराई बतायी। प्राचीन और नवीन के बीच सेतु बनाते हुए, भारतीय रचनात्मकता के अनेक पड़ावों से गुजरते हुए उन्होंने पाश्चात्य चिन्तन को परखा।

चिन्तन, मनन और सृजन की भूमिकाओं में भाषा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में मिश्रजी का अवदान ऐतिहासिक महत्व का है। *

"हिन्दी के निर्माता" पुस्तक से साभार

| | | |
|---|---|---------------------|
| पत्र-व्यवहार का पता :- प्रेषक : प्रधान संपादक विवरण पत्रिका (मासिक) हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001. दूरभाष : 23201956, 23201965 E-Mail : hps1935@gmail.com | सेवा में, श्री ATTESTED Dr. Shrikant B. Chavan Head Dept. of Psychology. | PRINTED BOOK |
| स्वामिल-हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, संपादक, मुद्रक, प्रकाशक 33, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001. 33, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001. 33, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001. | | |

सभा का अमृत वर्ष पर्व 2011 से

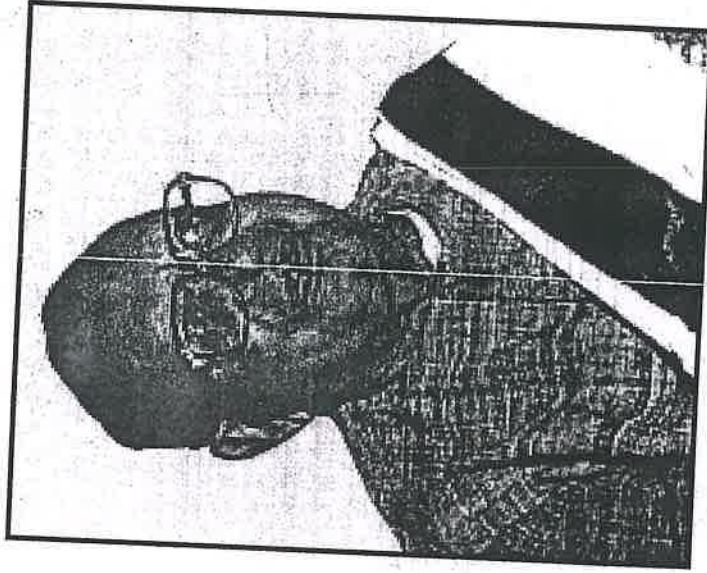
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा- विभाग) भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित।

जनवरी-2018



हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद का मासिक मुख-पत्र

विवरण पत्रिका



पं. विद्यानिवास मिश्र

जातीय स्मृति के आलोक

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor, जनवरी 1926

मृत्यु : फरवरी 2005



Babasaheb Chitambekar Mahavidyalaya

Philtawadi

पं. विद्यानिवास मिश्र : जातीय स्मृति के आलोक

भारतीय रूप, रस, गन्ध से सराबोर पं. विद्यानिवास मिश्र ऐसे विरल विद्वान और साहित्य मनीषी थे जिन्होंने अपने चिन्तन, मनन, अध्ययन और अभिव्यक्ति की क्षमताओं से न केवल हिन्दी और संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। बल्कि विशिष्ट निबन्धकार, गम्भीर चिन्तक, भाषाविद्, भारतीय संस्कृति के व्याख्याता, लोक और शास्त्र के अद्वितीय प्रवक्ता और सम्पादक के रूप में उन्होंने भाषा, भाषा-विज्ञान, साहित्य, धर्म, संस्कृति, कला, प्रशासन, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में निरन्तर उभरने वाले अन्वेषियों तथा जटिलताओं से टकराते हुए, उनसे लड़ते हुए चिन्तन की ऐतिहासिक प्रणाली के लिए राह बनायी। नये-पुराने के बीच सामंजस्य बिठाया। संवेदनशील व्यक्तिता की भूमिकाओं, गहन अनुभूति संवेदनाओं तथा जातीय स्मृति की गूँज से सम्पूवृत व्यक्ति-व्यंजक निबन्धों का आदर्श प्रतिमान खड़ा किया। उनकी चिन्तनधारा ने परम्परा और आधुनिकता का नया समीकरण बनाया। भावना और अनुभवों को संगठित करते हुए मानवीय आस्थाओं को जिलाये रखने का प्रयास किया। पुरुषोत्तमद्वारा टण्डन, मदनमोहन मालवीय की परम्परा की कड़ी में हिन्दी की मशाल जलाये रखी।

मिश्रजी का जन्म 14 जनवरी, 1926 को गोरखपुर के 'पकड़ीहा' गाँव में हुआ तथा निधन 14 फरवरी, 2005 को हुआ। मिश्रजी को अपने रचनात्मक व्यक्तित्व को जन्मने वाले बीज इसी गाँव की धरती से मिले। वे वाकिक सम्प्रेषण में पले-बढ़े। माँ, दादी, बाबा, नानी आदि वाकिक स्रोतों से उन्होंने लोक के गर्भ में छिपे अज्ञात रहस्यों का अर्थ पाया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। माध्यमिक शिक्षा गोरखपुर से और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। संस्कृत में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के बाद मिश्रजी के कर्मक्षेत्रों और संकल्पों का द्वार खुल गया। प्रारम्भ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में कोश कार्य किया। फिर सरकारी सेवा में आये। 1957 से विश्वविद्यालय में अध्यापन कर्म से जुड़े। गोरखपुर विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय में अध्यापन कर्म से जुड़े। गोरखपुर विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय में प्राध्यापक, आचार्य, निदेशक, अतिथि आचार्य और कुलपति पदों पर रहे। फिर 'नवभारत टाइम्स' के प्रधान सम्पादक हुए। इसके बाद विश्वस्तरीय धर्मदर्शन अध्यात्म कोश के प्रधान सम्पादक तथा साहित्यिक पत्रिका 'साहित्य अमृत' के सम्पादक हुए।

मिश्रजी के कर्मक्षेत्र बदलते रहे, बरसे बदलते रहे, मगर भारतीय उदारता, त्याग, मेहमानवाजी और गंगा-यमुना के तट पर बहनेवाली अनवरत संस्कृति उनके समूचे व्यक्तित्व और कृतित्व में समायी रही। संस्कृत भाषा के वैभव, हिन्दी की असीम ऊर्जा और लोकजीवन की समरसता से उन्होंने अपने लेखन को बिल्कुल अलग श्रेणी में खड़ा किया। संस्कृत में जन्मने और उसी में पलने और शिक्षित होनेवाले मिश्रजी ने सृजन के लिए आजीवन हिन्दी की सेवा का संकल्प लिया। हिन्दी को समुचित स्थान दिलाने की अदम्य लालसा, उसकी हारी हुई लड़ाई को जीत में बदलने की बेचैनी, हिन्दी का आहत स्वाभिमान वापस लौटाने का संकल्प उन्हें हिन्दी विरोधी मानसिकता के विरुद्ध खड़ा किये रहा। गाँव, कस्बे, देश, प्रकृति, मनुष्य, समग्र लोक और इस लोक के भीतर पनप रही तथा जाल बुन रही महीन भावनाओं के अपार तन्त्र का साक्षात्कार कराने के लिए अपार साहित्य-सम्पदा सौंपी। पुस्तकों का विराट अम्बार खड़ा किया। किताबों की संख्या 100 से ऊपर है।

(शेष भाग कवर 4 पर)

जनवरी - 2018

वर्ष-42

मासिक मुख-पत्र

अंक-6

विषय-क्रम

क्र.सं. लेख का नाम लेखक पृ.सं.

1. संपादकीय : डॉ. टी.जे. रेखा रानी 4
2. भक्ति की अवधारणा : डॉ. विजय महादेव गाडे 5
3. ठगुर की हृदि में जन सामान्य की शिक्षा : नकिरेकंठि नागराजू 9
4. भारतीय संस्कृति में पश्चिमी सभ्यता का हस्तक्षेप : डॉ. एम. श्रीगणपतु 11
5. सभा को प्राप्त पत्रिकाएँ : 13
6. आधुनिक उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ : डॉ. वि. गोविंद 14
7. सुदत्त कविकर्म के विधान पक्ष : डॉ. आदिनाथराय बदरवत 16
8. राष्ट्रभाषा (कविता) : मीना खोंड 17
9. बालसौरिष्ठी : व्यक्तित्व और कृतित्व : चेतकेशव रेड्डी 18
10. छायावादी काव्य में सौंदर्य चेतना : डॉ. प्रमोद पडवल 22
11. दोहे (कविता) : महेंद्र जैन 24
12. भारतीय ली की अत्कड़ी यात्रा : लक्ष्मण सुजाता 25
13. पं. सिद्धान्तवास मिश्र : 2
14. वर्ष 2018 के लिए स्वीकृत अस्कार सूची : 3

○○○

डॉ. चंद्रदेव भगवंतराव कवडे
अध्यक्ष, संपादक-मंडल

एम. प्रभु जी
प्रधान संपादक

संपादक-मंडल

1. प्रो. सुभाष पुरी : सदस्य
2. डॉ. श्रीगणपतु : सदस्य
3. डॉ. नातवण वाळके : सदस्य
4. डॉ. कवीरुद्दीनमान झाल्की : सदस्य
5. डॉ. सी.रेच. चंदव्या : सदस्य
6. प्रो. युषदा बांबवे : सदस्य

डॉ. टी.जे. रेखा रानी

सहाय्यी संपादक

एक प्रति मूल्य -18=00,
वार्षिक चंद्र -200=00,
संस्थागत (वार्षिक) -250=00,
आजीवन सदस्यता -1100=00,

पत्रिका संबंधी किसी भी तरह के विवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र हैदराबाद होगा।

'विवरण-पत्रिका' में प्रकाशित लेखकों की पत्रकारों एवं विचारों से संपादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रकारों के किसी विचार, लेख में प्रकृत तत्व, विस्लेषण एवं रायित्व है।

विवरण पत्रिका /जनवरी-2018

ब्रह्माण्ड के गर्भ में सूर्य, चन्द्रमा, तारे, आकाश, पृथ्वी, समुद्र आदि के अलावा करोड़ों उल्का पिंडों की उपस्थिति में अमसुलझी रहस्यमय रूप में भरे पड़े हैं। जिसमें पृथ्वी प्रकृति की एक अनुपम देव है। मनुष्य नामक जीव इसी पृथ्वी पर ही पाया जाता है। इस जीव रूपी मनुष्य ने अपनी समझ और बौद्धिकता का लौहा मनवा लिया है। मनुष्य अपनी व्यक्तित्व सुख-सुविधाओं, सुरक्षा, मनोरंजन आदि के लिए नाना प्रकार के आचार विचारों को अपनाता है और कुछ सामान्य नियमों से अनुशासित होने का पारस्परिक निर्णय लेता है क्योंकि संगठन एवं एकता के अभाव में बिखरी हुई विभिन्न व्यक्तियों की दृढ़ शक्ति किसी भी जाति अथवा समूह को दुर्बल बना देती है।

समाज ऐसे मनुष्यों का सामूहिक रूप है जिन्होंने अपनी व्यक्तित्व सुख सुविधाओं की सुरक्षा के लिए अपने रास्ते स्वयं बनाये हैं। उसने अपने विकास का रास्ता स्वयं तय किया है। अपने सुपने, संवेदनाओं को यथार्थ में परिवर्तित करने के लिए कड़ा परिश्रम किया है।

किसी भी युग में तत्कालिन परिस्थितियों द्वारा वहाँ का साहित्य अत्याधिक प्रभावित हुआ करता है। युग विशेष का परिवेश, साहित्यकार को उन परिस्थितियों पर सोचने के लिए मजबूर करता है जिससे उस समय की परिस्थितियों का सही आकलन कर सकें। ऐसे में यह तथ्य सामने आता है कि शिक्षा एवं अनुसंधान मानव जीवन के समग्र विकास की चरित्रमूलक अवधारणा है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् और दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन् की मान्यता है कि किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके नागरिकों के चरित्र का निर्माण करके उसे पूर्णरूपेण नैतिक या आदर्श नागरिक बनाना है।" नैतिक शिक्षा आज के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। भारत में फैली भयंकर जातिगत भेद भाव, गरीबी-अमीरी, बेकारी, अस्पृश्यता, आदि बीमारियों से प्रसिक्त भारतीय जनता का कल्याण नैतिक शिक्षा द्वारा ही संभव है। भारतीय मानसिकता में नवीन विचारों का काम शैक्षणिक आंदोलन द्वारा ही संभव दिखाई देता है। तत्कालिन हो या फिर समकालिन परिस्थितियों की समस्याएँ जैसे पिरोसरा, ईस्वीवादी व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव, रूढ़िवादी परम्पराएँ, सामंतवादी सोच, स्त्री शोषण, लोकतांत्रिक, संवैधानिक एवं राजनीतिक की बढ़ती समस्याओं से प्रसिक्त भारतीय जनता का कल्याण केवल उन्नत नैतिक शिक्षा द्वारा ही संभव हो पायेगा।

सौभाग्यवश भारत को विरासत में एक महान जीवन-दर्शन युगों से प्राप्त है गौतम बुद्ध, कबीरदास, ज्योतीबा फूले, अम्बेडकर, गांधी, विवेकानंद आदि ऐसे भारतीय जागरण के अग्रदूतों में गिनाया जा सकता है। उनके अनुसार किसी राष्ट्र को गौरवशाली उसके अतीत की महत्ता की नींव पर ही बनाया जा सकता है। साहित्य हमेशा से ही इसमें अग्रणी रहा है और समय-समय पर साहित्य ने मानव सभ्यता, समाज, संस्कृति एवं देशहित विचारधारा को प्रवाहित कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निभाया है।

वर्तमान समय की राजनीतिक-सामाजिक स्थिति चीख-चीखकर अपनी बदहली पर रो रही है। अपनी प्राचीन परम्परा और संस्कृति जिस पर हम अभिमान करते थे आज जंग खाई गूँडला बन चुकी है, जो थोड़ा भी दबाव पड़ने पर अपनी अस्मिता से दूर हो रही है। देश साम्प्रदायिकता, वैश्विक आतंकवाद, बाजारवाद, ईजीवाद, अर्थव्यक्तिक दृष्टिकोण जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे में नैतिक शिक्षा और साहित्य ने समय-समय पर चलाए जानेवाले जन-आंदोलनों में प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज की है। आम जनता में भाईचारा, निर्भयता, उपयोगशीलता, अनुशासन, सहिष्णुता, सेवा, पारस्परिक सद्भावना, समानता आदि मूल्यों को जगाकर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की ज्योति प्रज्वलित करने का भारसक प्रयत्न किया है।

- डॉ. टी.जे. रेखा रानी, सहयोगी संपादक

'भक्ति की अवधारणा'

- डॉ. विजय महादेव गाडे

संवेदना में जागृत कराना। यह केवल मन की अनुभूति का विषय है। इसकी कोई निश्चित शास्त्रीय परिभाषा नहीं दी जा सकती।

आगे उसका स्पष्टीकरण इस तरह से दिया गया है-

"A mystic understand a words of divine reality behind & within this world. He thinks that this external universe always speaks through his sense, to his soul. He believes that the supreme soul or God is on & the same & that it animates Man as well as Nature. He thus works out identify of Being between Man, Nature & God. He sees, "one undivided changeless life in all lives, one inseparable in the superate." All things in this visible world are different, manifestations of the one divine Life.

A mystic is anti-rational & unscientific. He reaches the truth not by reason but by intuition. He also believes that the Human soul is eternal. The body dies & decays but the soul lives on."

अर्थात् गूढवाक्यों के अनुसार मानव उस ईश्वरी सत्ता के बारे में सदैव सोचता रहता है। यह सोचने की भावना किसी शास्त्रीय सिद्धांत के नियमों के अनुसार नहीं होती बल्कि यह अनुभूति की बात है जहाँ आत्मा उस दिव्य, ईश्वर के प्रति अपना संबंध स्थापित करने के लिए प्रयासत रहती है। मानव, प्रकृति और ईश्वर के मध्य स्थापित भाव गूढवाद है। जो केवल प्रतिभा के सहारे इन जान सकते हैं। अंत में आत्मा शाश्वत और अमर होती है केवल शरीर का नाश होता है यह पंक्ति हमें भगवद्गीता के उन पंक्तियों का स्मरण दिलाती है, जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं-

'वाससि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति

नरोपरणि

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept of Psychology,

Abasahsh Chavan

Abasahsh Chavan

विवरण पत्रिका / जनवरी-2018

Dr. S. K. Patil

3-3-2

CERTIFICATE OF ATTENDANCE AND PRESENTATION

This certificate is awarded to
SURESH SHINDE
for oral and technical presentation, recognition and appreciation of research
contributions to ICPLT 2017 : 19th International Conference on
Psychology, Language and Teaching

The Projection of Breaking Sexual Repression: Modern Women in Indian Fictions in Marathi
Suresh Shinde

INTERNATIONAL SCIENTIFIC RESEARCH AND EXPERIMENTAL DEVELOPMENT



TOKYO, JAPAN

MAY 28-29, 2017

2017.12

8/1/17

Handwritten signature



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.

CERTIFICATE OF ATTENDANCE AND APPRECIATION

This certificate is awarded to
DEEPAK DESHPANDE, Session Chair
for oral and technical presentation, recognition and appreciation of research
contributions to **ICECH 2017 : 19th International Conference on
European Civilization and History**

INTERNATIONAL SCIENTIFIC RESEARCH AND EXPERIMENTAL DEVELOPMENT

TOKYO, JAPAN



MAY 28-29, 2017



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Pata, Dist. Sangli.

Enhancing National Integrity through Teaching Secular Perspectives in Medieval Indian History Curricula: A Secular Paradigms

Deepak Deshpande, Vikas S. Minchekar

Abstract—Day by day in modern India communal forces became stronger and stronger. Each and every caste group trying to show their strength through massive marches. Such kind of marches or rallies ruinous national integrity in India. To test this assumption present investigation has been carried out. This research was undertaken by using survey techniques. The study has been carried out in two phases. In the first stage, the students' attitudes were collected while in the second phase the views of the members of the historical association were collected. The social dominance orientation scale and sources of social dominance inventory have been administered on 200 college students belonging to Maratha caste. Analyzed data revealed high level of social dominance in Maratha caste students. Approximately, 80 percent students have reported that they have learned such dominance from the medieval history. The other sources disappear very less prominent. These results and present Indian social situation have been communicated with the members of the historical association of India. The majority members of this association agreed with this reality. The consensus also received on that Maratha caste person experiencing dominance due to the misinterpretation of the King Shivaji Empire; synchronize by politicians. The survey monkey app was used through electronic mail to collect the views on 'The attitude towards the modification of curricula questionnaire'. The maximum number of members of the historical association agreed to employ to teach the medieval Indian history accordingly the secular perspectives.

Keywords—Social Dominance Orientation, Secular Perceptive, National Integrity, Maratha Caste and Medieval Indian History

I. INTRODUCTION

Medieval Indian history has seen great kings amongst them the one that stands out is Chatrapati Shivaji Bhosale (well known as Chatrapati Shivaji Maharaj). He is considered to be a secular king though he being from the Maratha. (Maratha as a Caste). In India and especially in Maharashtra from 1960's onwards politics in terms of caste, has come to the floor. Politicians have taken the leap from medieval India boasting about the dominance of Maratha Caste since this time.

The researcher vehemently through the summary of 200 college students has tried to prove this fact. Recent development in Maharashtra regarding echoing of undercurrents of Maratha Caste dismantled from theseat of

Dr. Deepak Deshpande, Principal, Babasaheb Chitale College, Bhiawadi, MS, India (e-mail: dgddeepak@gmail.com).

Dr. Vikas S. Minchekar, Asso. Prof. Smt. Kasturba Waichand College, Sangli, MS, India (e-mail: vikasminchekar@yahoo.com)

power has viewed through different "Muk-Morcha"(Silent Front). All print media and electronic media in India provide front page and main headlines to this morcha. The first time Maratha people came under the banner of caste and feeling their huge power. The youngsters in this caste being very aggressive. At the same time, some politicians were trying to tease the Maratha mocha's that they are very passive and deaf. The direct provocation lead by such politicians provides violent forms to this Muk-Morcha. Some incidents were taken place in the western and northern parts of Maharashtra state. These incidents did not happen first time in India ample outbreaks had been taken place previously. If such incidents were not stopped day by day these forces became more and more violent. Several other caste people are feeling insecurity and fear due to this massive morchas. To overcome their fear the other people are also proving their forces by organizing such morchas. In this sense, the national integrity is falling in the shade of endangering.

The king Shivaji was very secular in nature. Shivaji's religious policy was very liberal. He respected the holy places of Hindu temples and Muslim tombs and mosques also. The majority of soldiers in Shivaji army was non-Maratha. There have been several attempts to use his name as a supporter of Hindutva and anti-Muslim for their personal benefits. Some politicians portrayed him as a Hindu savior and used his name for their Hindutva agenda. This picture should be changed accordingly the national integrity. The new generation should become secular and gave importance to the nation rather than the religion.

The attitudes of new generations can be changed through the school curricula. The secular principles should be taught to the school students by providing the examples of great kings like Shivaji. The medieval Indian history curricula should emphasize this fact. Such attempts have been made previously in CBSE (Central Board of Secondary Education) syllabus only. Instead of this small efforts, all type of educational boards in India should include the secular principles in history curricula. Such kind of efforts through the research to modify the syllabus has been made throughout the world according to their local issues. Helena Gillespie (2007) have submitted her report of Teaching Emotive and Controversial History to 7-11 Year Olds to the Historical Association in the United Kingdom. Darsun Dilec and Gulcin Yapiki (2010) have conducted a research on The Use of Stories in the Teaching of History and provided his findings to the Turkey government. Felicia Pratto and his twenty-eight coauthors (2013) through their research they prove how the social dominance ruinous the national integrity. Barton, K. (2001). In his research 'History Education and National Identity in Northern Ireland and the United States: Differing Priorities' also provide the empirical support how history curricula provide national integrity. Several other efforts made by worldwide researchers also emphasize the teaching national integrity through the national history curricula (Clair, H. 2001).



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhiawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

Claire, H. 2002; Claire, H. 2005; Gray, R. 2005; Hoodless, P. 2005). In the present investigation, such an effort has been made to provide the empirical evidence how Maratha people have held the social dominance which may harmful to the national integrity in India.

II. OBJECTIVES OF THE STUDY

Study has been undertaken accordingly the following objectives.

- 1) To measure the level of social dominance level in Maratha students.
- 2) To explore the sources of social dominance among Maratha students.
- 3) To investigate the attitudes of the members of the historical association of India towards the modification of medieval history curricula.

III. HYPOTHESES OF THE STUDY

- 1) The level of social dominance in Maratha students will not exist excessive.
- 2) The classification of sources of social dominance will not exist significantly differ.
- 3) The attitudes of the members of the historical association of India towards the modification of medieval history curricula will not exist significantly differ.

III. METHOD

A. Sample: The two kinds of populations are included in the final sample. For the first phase of the survey, the sample consisted of 200 college students of both sexes as 1:1. The age range of the students was ranged from 20 to 24 years. All the participated students are belonging to Maratha caste. For the second phase of the survey the members of the historical associations are surveyed. They were well known in the field of historical researchers.

B. Tools: To collect the views of students and the members of the history association following psychological scales are used.

I) Social Dominance Orientation Scale (SDOS): Jim Sidanius and Felicia Pratto were developed this scale. This scale consists 16 items with five alternatives. First eight items are negative, and last eight items are positive. A high score on this scale indicates strong tendency toward Social Dominance Orientation.

II) Sources of Social Dominance Inventory (SSDI): This is self-constructed inventory and it has 15 questions classified into five sources viz. history, traditions, parents, friends and organizations etc.

The SDOS and SSDI are two scales were used to collect the responses of college students while the third scale has been used to collect the responses of members of the history association.

III) The Attitude towards the Modification of Late Medieval History Curricula Scale (ATM Scale): This scale is also self-constructed and standardized tool. The scale has ten items with five-point Likert-type options ranging from strongly agree to strongly disagree. The Cronbach alpha for this scale is .93 which indicates the high utility of an instrument.

IV. PROCEDURE

The study has been carried out in two phases. In the first stage. The 200 college students were randomly selected for this study and their attitudes were collected by using the

social dominance orientation scale. While in the second phase, the Attitude towards the Modification of Late Medieval History Curricula scale was sent to the members of the historical association through the Survey Monkey online survey system. The 66 members were replied to ATM Scale.

V. THE DESIGN OF THE STUDY

The one group (plus additional another group) design was used to this survey research. The descriptive statistics and nonparametric inferential statistical approach have been used to analyze the obtained data.

VI. RESULTS AND DISCUSSION

Table 1 the Distribution of the Levels of Social Dominance Orientation among Maratha Caste Students

| No. of Extremely High Social Dominance Students | No. of High Social Dominance Students | No. of Average Social Dominance Students | No. of Low Social Dominance Students | No. of Very Low Social Dominance Students | Total no. of Students |
|---|---------------------------------------|--|--------------------------------------|---|-----------------------|
| 78 | 94 | 12 | 9 | 7 | 200 |



Table 1 indicates the clear picture of the level of social dominance among Maratha students. The 200 college students are randomly surveyed through the social dominance orientation scale in the Sangli districts of Maharashtra states in India. It is seen that 78 and 94 students have extremely high and high level of social dominance respectively. It means that 86% students possess a high level of social dominance. Though India became independent and labeling the second largest democracy throughout the world, still the Maratha people those have the highest number of population in Maharashtra are holding the destructive level of social dominance. The high level of social dominance always leads the communal violence and caste discrimination (Naik, B. A., and Kamble, V. S., 2015).

Table 2 the Distribution of Sources of Social Dominance

| Parents | Friends | Traditions | History | Organizations |
|---------|---------|------------|---------|---------------|
| 31 | 24 | 7 | 117 | 21 |



dg

Principal
 Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
 Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

भारतीय संस्कृति
में
पंजाब के साहित्य का योगदान

संपादक
डॉ. आशा राणा



साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

भारतीय संस्कृति

में

पंजाब के साहित्य का योगदान

संपादक

डॉ. आशा राणा

भारतीय संस्कृति में पंजाब के साहित्य का योगदान

डॉ. आशा राणा

भारतीय संस्कृति में पंजाब के साहित्य का योगदान



डॉ. आशा राणा

जन्म : 25 जून

शिक्षा : बी.ए., बी.एड., एम.ए., पी-एच.डी., गुरु

नानक देव विज्वविद्यालय, अमृतसर,

पुण्य

गतिविधियाँ : विभिन्न पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में

आलोच्य प्रकाशित, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, कार्यशालाओं

में भागीदारी एवं पत्रव्यवहार

ATTESTED

D. P. KHARADE

Lecturer in History,

Babasaheb Chitela Mahavidyalaya

Bhilawadi Tal Patus Dist Sangli

साहित्य संघ

ISBN 978-81-8804-11-2

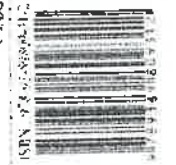
ISSN 0970-0018

www.sahityasangh.com

e-mail : sahyas-sangh@gmail.com

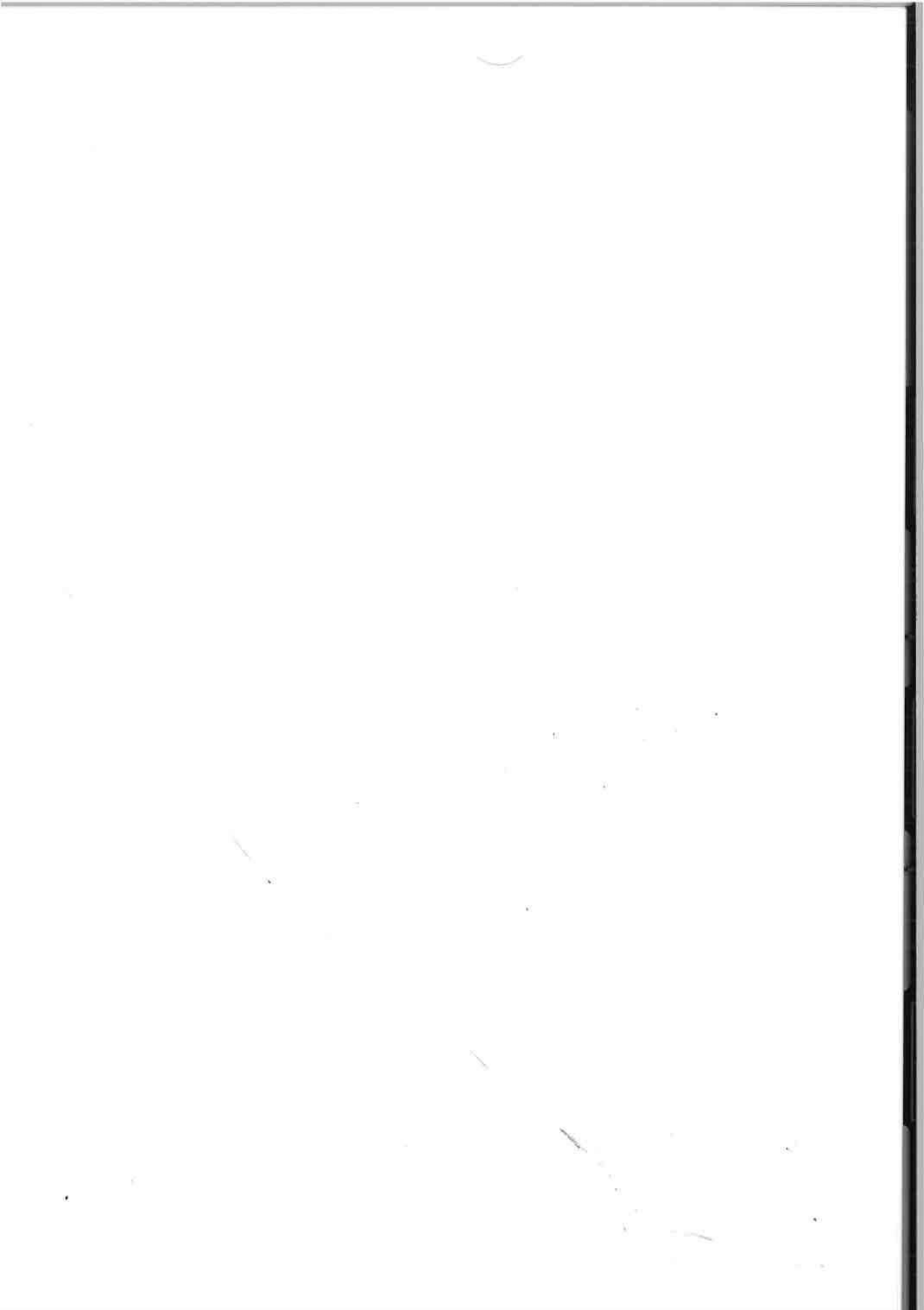
Mob : 98711 19244, 9136175560

₹ 200



अनुक्रम

| | |
|---|----|
| सम्पादकीय | 5 |
| 1. पंजाब के सिक्ख गुरुओं का भारतीय संस्कृति में योगदान अभिषेक सौरभ | 9 |
| 2. पंजाब में रचित संत-साहित्य प्रो. शकुंतला | 14 |
| 3. पंजाबी लोकधर्म की सार्थकता : पीर फकीरों के संदर्भ में डॉ. रश्मि शर्मा | 19 |
| 5. पंजाब के सिक्ख गुरुओं के भारतीय संस्कृति में योगदान की आधुनिक प्रासंगिकता डॉ. सुनीला शर्मा | 32 |
| 6. कुल्ली यार दी! डॉ. विजय महादेव गाडे | 36 |
| 7. पंजाब का हिंदी साहित्य में योगदान रमेश कंबोज | 51 |
| 8. हिंदी सिनेमा में पंजाबी लोक-संगीत का प्रभाव दुर्गा देवी | 57 |
| 9. पंजाब का हिंदी साहित्य में योगदान रजनी बाला | 62 |
| 10. पंजाब के हिंदी साहित्यकार दीक्षा शर्मा | 68 |
| 11. पंजाब में भक्त नामदेव का साहित्य रतिन्द्रजीत कौर | 74 |
| 12. पंजाब का संत-साहित्य सपरनजीत कौर | 80 |
| 13. पंजाब का गुरु साहित्य यशमीत कौर, रेखा रानी | 84 |
| 14. हिंदी चित्रपट संगीत में पंजाब का योगदान जजबीर सिंह | 89 |



2018-19

172

**Interdisciplinary International Conference
contemporary Issues & Challenges in Social
Sciences & Languages**

22nd Sept.2018

Organizer

Department of Political Science,

Shri Sahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

Special Issue published By



Aayushi International Interdisciplinary

Research Journal (AIIRJ)

ISSN 2349-638X

Peer Review and Indexed Journal

Impact Factor 4.574

Website www.aiirjournal.com

Email :- aiirjpramod@gmail.com

प्रसार माध्यमातील भाषेचा उपयोग

जगात रेडिओचा शोध 'मार्कोनी' या शास्त्रज्ञाने लावला आणि सर्वत्र क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात कांती घडवून आणली. प्रगतीला पोषक वातावरण मिळाले याचे कारण रेडिओनंतर 'बीनतारी संदेश' सेवा उपलब्ध झाल्याने सैन्यामध्ये मोठ्या कांती घडवून आली आहे. म्हणूनच रेडिओचे महत्त्व आजच्या इलेक्ट्रॉनिक्सच्या युगात कमी होत आहे. असे म्हणता येत नाही. तर स्वरूप बदलले असेच म्हणावे लागेल. रेडिओ फक्त श्राव्य इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यम आहे 20 व्या शतकामध्ये रेडिओला फार महत्त्व होते. ग्रामीण भागात ज्याच्याकडे रेडिओ आहे तो श्रीमंत गणला जायचा रेडिओवर एखादा लोकांच्या सामुदायिक कार्यक्रम, बातम्या सुरु झाल्या की, गावातील लोक एकत्र जमून हा कार्यक्रम ऐकायचे म्हणून रेडिओ या माध्यमाचे महत्त्व अत्यंत महत्त्वाचे आहे. रेडिओ नंतर प्रसार माध्यमामध्ये पुन्हा कांती झाली आणि जी व्यक्ती बोलते ती व्यक्ती दृश्य स्वरूपात समोर यावयास लागली ते माध्यम म्हणजे 'टेलिव्हिजन' म्हणजेच दूरदर्शन संच होय या माध्यमांनी समाज घडविण्यासाठी मोठा हातभार लावला आहे. त्याचा विचार आणि या प्रसार माध्यमामध्ये भाषांचा उपयोग कसा होत गेला याचा विचार करावाचा आहे.

रेडिओ

रेडिओ हा मुख्यतः बोलविता धनी आहे. वाचविता धनी नाही. "बोलेल तो करील काय?" या प्रश्नाला रेडिओनं चांगलं उत्तर दिले आहे जो चांगला बोलेल, तो उत्तम चांगला रेडिओ चांगला निवेदक होईल. रेडिओ निवेदक आणि रेडिओसाठी बोलणारे यांना वेळेचे बंधन पाळावे लागते. त्यामध्ये कमी वेळेत लोकांच्या पर्यंत पोहचण्याचे कौशल्य भाषेद्वारा रेडिओला करावे लागते उदा. आमची माती आमची माणसं या कार्यक्रमातर्गत एखाद्या व्यक्तीची मुलाखत चालू आहे. त्यामध्ये ती व्यक्ती शेतकऱ्यांना समजेल अशी भाषा, शब्दोच्चार करत नसेल, शेतकऱ्यांच्या जिह्याच्या प्रश्नावर बोलत नसेल तर त्या कार्यक्रमाची असफलता नक्कीच आहे म्हणजेच प्रत्येक क्षेत्रानुसार भाषेचा आणि शब्दांचा वापर केला पाहिजे संस्कृत प्रच्यूर, अलंकारिक, अतिशुध्द, बोजडशब्द यांचा वापर करू नये उदा. प्रारब्ध क्षीप्रा, विप्र इ. संस्कृत भाषेचा वापर त्या-त्या कार्यक्रमानुसार करावा मागधी, अधेमागधी, कन्नड भाषा ह्या महाराष्ट्रामध्ये कालबाह्य क्षेत्र चाललेल्या आहेत. त्यांचा योग्य नाही कारण रेडिओवर एक शब्द, वाक्य, ओळ एकदाच उच्चारिली जाते. इथं शब्द सेकंदच्या तालात मोजून बोलावे लागतात आणि म्हणून रेडिओसाठी भाषेचा वापर करताना काळजी घ्यावी लागते. रेडिओसाठी मोजून मापून बोलल्यासारखं लिहावं म्हणजेच मोजून मापून बोलला येतं. पण ऐकणाऱ्याला बोलणारा मोजूनमापून बोलतो आहे कळू नये म्हणजेच गालावर सहज रुळणाऱ्या केशांच्या बटेची सोपा असावी. पण पाहणाऱ्याला पत्ता लागू नये की ही बट सारी केशभूषा वेशभूषा आटोपल्यावर हलक्या वरंगळीनं हळूच गालावर ओढली होती हे सहजतेचं चातुर्य मोठं अवघड आहे. पण रेडिओसाठी भाषेचा वापर करताना आपल्याला करता आलं पाहिजे.

भाषेची सहजता-

वेळेच्या बंधनात साधायची ही सहजता सोपी नाही त्यातून सान्या विषयांना ही सहजता पेलणारी नाही जस या माध्यमांकडे अधिक निरखून पाहिलं पाहिजे कठीण विषय सोपा करून सांगायचा आहे. पंधरा निनिटांच्या अवधीत सारं नाटयविश्व उभं करायचं आहे. आणि हे सारं कुणासाठी तर अज्ञात श्रोत्यांसाठी. त्या श्रोत्यांमध्ये मख्ख आहेत, जख्ख आहेत, आणि चतुर लख्खही आहेत. बरं, खास श्रोत्यांसाठी कार्यक्रम असेल

तरी कलम अवघड आहे. उदा. बालकांसाठी कार्यक्रम लावला 'बरं का बाळांनो, तेव्हा किनई वगैरेचं पालुपद बाळांना रुचेलच असं नाही पु.ल.देशपांडे आपला अनुभव सांगताना म्हणतात "माझा चिमुकला पूतण्या, एकदा मी लहान मुलांचा कार्यक्रम खास त्यांच्यासाठी लावल्यावर मला म्हणाला, काका, हे लहान मुलाचं आहे.

चांगलं काहीतरी लावा" कारण हया लहान पुतण्याला स्वतःची गणना बाळगोपाळात केलेली आवडत नव्हती. कारण तो त्याच्या रांगत्या भावाचा दादा हाता. येथे कार्यक्रमाची सहजता आणि भाषेची सहजता आपण साधण्याचा प्रयत्न करत असतो पण पुढील व्यक्तीस ही सहजता आवडेलच हे सांगता येत नाही. उदा. कार्यक्रमाच्या निवेदनामध्ये 'बरं का भगिनीनो, प्रिय भगिनीनो' कळलं का ताई, मावशी, आवका, बहिणी असे जवळचे शब्द सर्वांनाच आवडतील असे नाही. म्हणजेच एखादी तरुणी म्हणेल मी कुठे आवका आहे. किंवा हाच शब्द फार गावढळ ही वाटेल किंवा एखादया वयाने जास्त असणाऱ्या स्त्रीला तरुणीनो. ताई हे शब्द आवडणार नाही माऊली, मावशी, माय हे सुध्दा शब्द आवडणार नाहीत रेडिओवरील भाषणांच्या बाबतीत सांगायचं म्हणजे ते प्रवचन नव्हे किंवा व्याख्यानही नव्हे ऐकणारे श्रोते असख्य आहे. असंख्यामध्ये सर्वच बाबतीत असंख्य हे समजून घ्यावे. उदा.संध्याकाळचे जेवण आटोपून सुपारी पघळत बसलेला श्रोता. फार तर त्याच्या कुटूंबातली चार पाच माणसं म्हणून इथं व्यासपीठावरचं वक्तृत्व कामी नाही येतं. इथं थोडया हितगुजाच्या भाषेची गरज आहे. कुटूंबातील काही सुख-दुःखांच्या गोष्टीची चर्चा व्हायला हवी आहे.

रेडिओच्या बोलण्याकडे श्रोत्याचं लक्ष वेधून घेणारी भाषत असायला हवी. तुमच्या आवातील भाषेची स्पष्टताच लक्ष वेधून घेणारी असावी. रेडिओकडे श्रोत्याचा फक्त कान लागलेला असतो तुमचं बोलणं तो आपल्या बोलण्यानं नाही अडवणार. तो रेडिओ बंद करेल. भाषेतील शब्द हे वेळेच्या तालात चालले पाहिजेत म्हणजे त्यातला प्रत्येक शब्द गोलाचा आहे. इथं एक एक अक्षर, एक,एक शब्द, एक,एक वाक्य महत्त्वाचे आहे. त्या सर्वांना अर्थही आहे येथे पाल्हाळाला जागा नाही, मुद्यांची गर्दी नको. दहा किंवा पंधरा मिनिटांच्या अवधीत दोन-तीन मुद्दे जरी व्यवस्थित मांडले गेले तरी ठीक आहे. आपण एखाद्या विषयाला सुरुवात करण्यापूर्वी आपल्याला जे काही श्रोत्यांना ऐकवायचं आहे. त्याची मनाशी खात्री करावी भाषाशैली हा प्रत्येकाच्या व्यक्तिमत्त्वाचा भाग आहे. काही लोक मंजूळ,मऊ,मुलायम वाटणारी तर काही लोक जडभाषा देखील बोलतात पण याला अपवाद आहे,आधुनिक भाषेनं आधुनिकतेला साजेसाच पहेराव सुटसुटीत ठेवला आहे. पूर्वीच्या जुन्या वळणाने बोलणारी पिढी जवळ जवळ संपली आहे. काही वेळा काही शब्द फक्त लेखन करण्यासाठी उपयुक्त आहेत. उदा. व हे ऐ उभयान्वयी अव्यय "मी व तो मिळून गेलो" हे लेखनात योग्य आहे बोलण्यात नाही कारण "तू व तूझे बाबाकाल मंडईत भेटले" असं आपण म्हणत नाही तर "तू आणि तूझे बाबा" असं म्हणू खरंतर "तू न तूझे बाबा" असंच आपण नेहमी म्हणतो. हे शब्द लिहण्याच्या भाषेसाठी उपयुक्त आहेत बोलण्यासाठी उपयुक्त नाहीत. उदा. एखादया व्यक्तीची रेडिओवर मुलाखत झाली ती व्यक्ती इथे आली म्हणून आभार मानण्याची पध्दत आहे त्या रेडिओ मुलाखत कर्त्याने मी आपले "धन्यवाद मानते" असे उद्गार काढल्यास पुढील व्यक्तीने त्याचा अर्थ काय घ्यावा? काही उच्चार आणि शब्द गोंधळात टाकतात असे शब्द असू नयेत भाषेत वापरू नयेत.

रेडिओवरील नाटकाची भाषा -

रेडिओवरील नाटक हे केवळ ध्वनी माध्यमाद्वारे लोकांपर्यंत पोहचविले जाते. रेडिओच्या नाटकातील संवाद व रंगभूमीवरील संवादामध्ये फरक करावा लागतो. उदा."नमस्कार बंडोपंत" एवढया वाक्यानं स्टेजवर भागतं. कारण स्टेजवर बंडोपंत दिसतात. त्यांचा पोशाख, मिशांची ठेवण, देहयष्टी यांवरून बरेच अंदाज बांधता येतात. पण रेडिओवर "नमस्कार बंडोपंत" असे उच्चारल्यावर नमस्कार करणारे कोण आणि बंडोपंताचे

व्यक्तीमत्व लक्षात येणार नाही. म्हणून रेडिओवर पात्रांची ओळख कमालीच्या कलात्मक आणि सूचक शब्दात करावी लागते. यासाठी सूचक आणि योग्य भाषेचा वापर करावा लागतो. उदा. "मी रामभाऊ, नमस्कार करतो आहे तुम्हांला बंडोपंत," असं म्हटलं की बंडोपंत हे आंधळे गृहस्थ आहेत असंही वाटायला लागतं पण रेडिओवरील या भाषेमुळे चतुर लोक समजून जातात की, बंडोपंत हे रेडिओकडे पाहुणे आले आहेत आणि रामभाऊ हे त्यांच नमस्काराने स्वागत करत आहेत. हे लक्षात येईल तर चतुर नभोनाटय हे केवळ श्राव्य माध्यम आहे. त्यामुळे भाषेत संवादात नेमकेपणा असावा.

रेडिओवर वर्णांचे उच्चार

भाषेमध्ये खर आणि व्यंजनाचा उच्चार म्हणजेच वर्णांचा उच्चार करताना सावकाश करावा म्हणजेच इतिहासातील 'ध' चा 'म' येथे होऊ नये. कठोर वर्णांचे उच्चार उदा. स, श, ठ चा उपयोग बेतानं करावा लागतो. रेडिओवरील भाषा ही दैनंदिन वापरातील बाजारातील भाषा असावी, परंतु ती उथक किंवा असम्य असता कामा नये. कितीही अवघड विषय असला तरी सोप्या बोली, परिचित शब्दामध्येच मांडावा लागतो. उदा. 'झाडावर बसलेला पक्षी मला दिसत आहे' हे वाक्य 'वृक्षावर विराजमान झालेला खग मजसी दृग्गोचर होत आहे' असं म्हटल्यास समाजातील सर्वच लोकांना ही भाषा समजणार नाही की श्रोता त्या निवेदनाकडे दुर्लक्ष करतो. एखादे निवेदन करताना नेता, लोकनायक यांनी जनतेला आवाहन करताना उदा. लोकही, बंधुनो, भगिनीनो असे उच्चारून अलंकारीक व काव्यात्मक भाषा वापरल्यास हरकत नाही. रेडिओवर बोजड, विद्वज्जड भाषा वापरु नये फारमोठी लांबलचक वाक्ये असली तरी त्यांचा अर्थ लावता लावताच श्रोता मेटाकुटीला येण्याची शक्यता असते. त्याऐवजी छोटी-छोटी वाक्ये असली तर ती श्रोत्याच्या मनाला पटकन रुजतात. रेडिओवरील भाषा मृदू, प्रसन्न, कोणालाही न दुखावणारी अशी असावी. भाषेतून भाऊकता निर्माण व्हावी, हृदयाला पाझर फोडणारी असावी, रोखठोक, तर्ककठोर, खंबीर बाण्याची, आक्रमक, दिलदार खटकेबाज ग्रामीण, नागरी असावी लागते.

रेडिओवरील भाषणाचा प्रारंभ चांगल्या भाषेने झाल्यास श्रोता लक्ष देवून ऐकतो सर्वसामान्य श्रोता त्याला मिळणाऱ्या सोईबद्दल लक्षपूर्वक ऐकत असतो. उदा. "महागाई भत्यामध्ये भरीव वाढ" या शिर्षकाखाली भाषण करणाऱ्याचा श्रोता हा नोकरवर्गच असणार आणि शेतकऱ्यांना मोफत वीज, मोफत कर्ज पुरवठा अशा विषयाची भाषणे त्या-त्या क्षेत्रातील लोक लक्षपूर्वक ऐकत असतात. त्यावेळी भाषाचा वापर त्या-त्या क्षेत्रानुसार करावा लागतो. रेडिओवरील भाषा अतिशय सोपी असावी. त्यात अवजड कृत्रिम अलंकारिक वाक्यरचना असू नये. लेखात खालीलप्रमाणे, वरीलप्रमाणे, मागीलप्रमाणे असे संकेत चालू शकतात. रेडिओवरील भाषणात ते चालत नाहीत. कारण रेडिओ हे डोळ्याऐवजी कानातून मनात उतरत असते. लिखित मजकुरात 'व' सारखे उभयान्वयी अव्यय चालू शकते, परंतु रेडिओवर 'आणि' त्याचाच वापर करणे गरजेचे आहे.

आज रेडिओवरील बातम्या, विविध प्रकारचे निवेदन, जाहिरात यासाठी वापरली जाणारी भाषा ही श्रोत्यांना खिळवून ठेवणारी असते. उदा. आज रात्री ठिक 9.30 वाजता बातमीपत्रामध्ये आपण 'अमिताभ बच्चन' यांच्याशी केलेली मुलाखत ऐकणार आहोत तरी श्रोते हो ऐकायला विसरु नका 'भेट एका सहस्रकाशी' अशा नावाने त्या कार्यक्रमाची जाहिरात केली जाते. रेडिओवरील जाहिरातीत भाषा आणि तिचा उपयोग ही एक कलाच आहे. शेतकऱ्यासाठी उपयुक्त उत्पादनाची जाहिरात असेल तर उदा. 'फिनोलेक्सन आणलं पाणी शेत पीकली सोन्यावाणी 'फिनोलेक्स पाईप' यातील भाषा ही शेतकऱ्यांना समजणारी लययुक्त आहे म्हणजेच भाषा श्रवणीय आहे.

आज रेडिओओवर विविध प्रकारचे कार्यक्रम संपन्न होत आहेत. आज प्रसारमाध्यमांच्यामध्ये चढाओढी लागलेल्या आहेत तेव्हा रेडिओमध्ये टमाटा, मिर्ची, असे प्रकार निर्माण करून आणि आधुनिक बोलीचा वापर करून उदा. चल सटक यार sss अशा भाषाउच्चारानी ही आधुनिक स्टेशने प्रसिध्दीस आली म्हणजे काळानुसार बदलणे हे तत्व रेडिओने उचलायला सुरुवात केली म्हणून रेडिओ केवळ श्राव्य माध्यम असूनही केवळ योग्य वेळी योग्य भाषा उच्चारामुळे आपले अस्तित्व टिकवून आहे असे म्हणावे लागते.

दूरदर्शन

दूरदर्शन हे रेडिओ प्रमाणे प्रसार माध्यम आहे. दूरदर्शनचा विकास ही "तिसरी क्रांती" - प्रसारमाध्यमांची भूमिका या निबंधात स.मा.गर्गे मानता आणि ते खरे ही आहे कारण दूरदर्शन हे प्रसारमाध्यम लोकशिक्षण आणि प्रबोधनाचे कार्य करते. ज्यांना शिक्षणाचा लाभ घेता आला नाही. आणि अनेक लोक दऱ्याखोऱ्यात राहातात म्हणजेच शहर दूर जीवन त्यांचे झाले अशा लोकांच्या घरामध्ये दूरदर्शन पोहचले अशा लोकांचा विस्तार होत गेला आहे हे प्रसारमाध्यम गावच्या चावडीपासून माजघरापर्यंत जाऊन पोहचले आहे. जगाची माहिती, देशाच्या विविध विकास योजना, शेती, समाज, शिक्षण, अर्थ, करमणूक, माहिती - तंत्रज्ञान, सण, उत्सव, उपग्रह, पर्यावरण, निसर्ग, लोककला, राजकारण, नक्षलवाद, अशा अनेक गोष्टींची माहिती घराघरापर्यंत पोहचविण्याचे काम करू लागले आहे. शहरी आणि ग्रामीण डोंगरीभागातील लोकांना आपापले प्रश्न, समस्या मांडण्याची सोय झाली आहे.

आधुनिक प्रसारमाध्यमांच्या क्षेत्रात भारताने झपाट्याने विस्तार केला आहे. त्यामुळे शेती, उद्योगधंदे, शिक्षण, सहकार, आरोग्य, वाहतूक इ. क्षेत्रामध्ये नवनवे प्रयोग होत आहेत. जे नवे तंत्रज्ञान उपयोगात आणले जात आहे त्यांचे प्रत्यक्ष दर्शन घडण्याची फार मोठी सुवर्णसंधी नागरिकांना मिळालेली आहे. दूरदर्शन हे दृक-श्राव्य माध्यम आहे. या माध्यमाद्वारे करमणूक, मुलाखत, चर्चा, नाटक, रूपक, संगीताचे कार्यक्रम, बातम्या, पूर, दुष्काळ, युध्द, बॉम्ब स्फोट, सण, उत्सव, मनोरंजनाचे कार्यक्रम, कथाकथन, बाहुल्यांचे खेळ, परिकथा, कार्टून किंवा ॲनिमेशन, जाहिराती, मालिका अशा कार्यक्रमाच्यावेळी दूरदर्शनवर निवेदन करणाऱ्या निवेदकाची, बातमीदाराची आणि संबंधीत कार्यक्रमाची भाषा ही त्या त्या प्रदेशानुसार असते. उदा. महाराष्ट्रामध्ये 'मराठी' 'हिंदी' भाषा प्रामुख्याने चालतात. महाराष्ट्र आणि मराठीचा विचार करता महाराष्ट्रातील जनता अशिक्षित, अडाणी, ग्रामीण, गावढळ, कमी शिकलेली, उच्च शिक्षित, मध्यमवर्गीय अशा विविधतेने नटलेले आहे. या सर्वांचा विचार करून दूरदर्शनच्या कार्यक्रमांमध्ये भाषेचा वापर केला पाहिजे. ती भाषा संस्कृत प्रचूर असून चालत नाही. उदा. त्याचे प्रारब्ध मोठे होते, किंवा अमूक एक मला गोष्ट दग्गोचर होत आहे. अशी संस्कृत प्रचूर भाषा वापरू नये अलंकारिक भाषेचा वापर शक्यतो टाळला पाहिजे. सर्वसामान्यापासून उच्चभ्रू पर्यंत चालणारी सर्वसमावेशक अशी भाषा वापरायला हवी. या भाषेबरोबर ती व्यक्ती तो प्रसंग दिसत असतो. भाषा बोलणारी व्यक्ती दिसत असते त्यामुळे नेमक्या भाषेचा वापर करून एखादा प्रसंग, घटना प्रेक्षकांना दाखविता आली पाहिजे.

भाषेची स्पष्टता महत्त्वाची आहे. उदा. मेडिक्स साबणाची जाहिरात दूरदर्शनवर होत आहे. भाषा मराठी आहे. आणि निवेदक सांगतो. मेडिक्स साबण पूर्ण आयुर्वेदिक आहे. हा अशुध्द खोबरेल तेलापासून बनविलेला आहे. असेच उद्गार या जाहिरातीमधून कळत होते. त्यांना असे सांगायचे होते की 'हा शुध्द खोबरेल तेलापासून बनविला आहे' येथे भाषेचा, शब्दांचा उच्चार नीट झालेला नाही. अनेक जाहिराती मध्ये भाषेचा

वापरं भडक, भपकेबाजपंगाचा अतिवापर आणि अतिशयोक्ती दिसून येते म्हणून भाषेचा वापर करताना ती भाषा लोकांच्या जिह्वाळ्याची झाली पाहिजे. जनमानसापर्यंत जाऊन पोहचली पाहिजे.

प्रेक्षकांशी थेट संवाद साधणाऱ्या भाषेला अतिशय महत्त्व असते. आपला दर्शक जसा हश्यातून आपला संदेश घेत असतो तसाच विषय समजावून घेणार किंवा कथानक आस्वादणार, तसाच तो बोलले जाणारे निवेदन व संवाद म्हणजे भाषाही 'ऐकणार' आहे. म्हणजेच जो एका वेळी बघणे व ऐकणे अशा दोन क्रिया करणार आहे. साहजिकच त्याचे अवधान असे दुहेरी किंबहुना 'दुभागलेले' असणार आहे. अशा वेळी कानावर पडणारी भाषा क्लिष्ट व बोजड किंवा संवाद अकारण अलंकारिक असतील तर दर्शकांच्या आकलनावर ताण पडेल. तो ऐकणे सोडून देईल म्हणजेच या माध्यमाचे किमान तीस टक्के तरी सामर्थ्य नाहीसे होईल म्हणून संहिता-लेखकाने पाळावयाचे पहिले पथ्य म्हणजे भाषा साधी, प्रवाही आणि आवश्यक तेथे 'बोली' स्वरूपाची असायला हवी.

बोली भाषा म्हणजे वेगवेगळ्या प्रांतांतल्या बोली नव्हेत, तर आपण एकमेकांशी बोलताना वापरतो तशी अनौपचारिक बोली. दूरदर्शनच्या माध्यमातून होणारा संवाद हा थेट हवा. म्हणजेच पडद्यावर दिसणार. निवेदक 'बोलतो' आहे असे वाटायला हवे' तरच माझे लक्ष तो 'काय' सांगतो आहे याकडे जाणार. नाटकातील पात्रे, सूत्र-संचालक, बातमीदार, जाहिरात करणारी व्यक्ती यांनी साध्या व अनौपचारिक भाषेत बोलले पाहिजे. दूरदर्शनवरील हा निवेदक सर्वांना दिसत असतो. त्यावेळी तो प्रत्यक्ष आपल्याशी बोलतो आहे असेच वाटले पाहिजे उदा. आज दूरदर्शनमाध्यमामध्ये इतकी प्रगती झाली आहे की एखादया व्यक्तीला पुरस्कार, पारितोषिक, निवड झाली की संवादक थेट त्याच्या घरांपर्यंत पोहचतो आणि 'थेट संवाद' साधला जातो. त्यावेळी ती व्यक्ती आणि श्रोते यांच्यामधील दुवा हा निवेदक असतो म्हणून निवेदनाची भाषा साधी, सोपी अलंकारीक नसलेली असायला हवी.

दूरदर्शनवरील भाषेची वापर हा निवेदन, बातम्या, मुलाखत, थेट संवाद, गटचर्चा, संवाद, कथाकथन, महाचर्चा, विविध सामाजिक, राजकीय सांस्कृतिक सामाजिक आर्थिक, परकीय, परराष्ट्रीय स्वरूपाचे कार्यक्रम सादर होत असतात या सर्वांसाठी जी भाषा वापरली जाते त्या भाषेपासून माणूस जोडता आला पाहिजे. उदा. बातमी विभाग घेतला तर दूरदर्शन श्री प्रदीप भिडे बातम्या देताना आवाजातील चढ-उतार स्पष्ट आणि खणखणीत आवाज, योग्य बोलण्याचा ताळमेळ यामुळे दूरदर्शन वरील 9.30 च्या बातम्या कोणताही मराठी श्रोता टाळू शकणार नाही म्हणून आपण हया भाषेची निवड करतो त्या भाषेची योग्य दक्षता घेतली पाहिजे.

रेडिओ आणि दूरदर्शनचा विचार करता दोन्ही प्रसारमाध्यांच्या कार्यक्रम प्रसारणाच्या वेळा निश्चित झालेल्या असल्यामुळे वेळेचे बंधन पाळून आणि श्रोते यांचा कल पाहून भाषेतील शब्दांचा, वाक्यांची निवड करून योग्य, नेमक्या, साध्या, सोप्या भाषेची निवड करावी लागते. वरील दोन्ही माध्यमांशिवाय 'दूरध्वनी' हे तिसरे प्रसार माध्यम आहे. आज 'भ्रमणध्वनी' या माध्यमाने लोकांना इतके आपलेसे करून टाकले आहे की, प्रत्येक घरांमध्ये हे माध्यम आहे. या माध्यमामध्ये काम करणारे निवेदक हे ग्राहकांना आकर्षून घेत आहे. या माध्यमामुळे आज जगभरातील लोकांशी संपर्क साधता येतो आणि क्षणात एखादया चांगल्या अथवा वाईट गोष्टीचा प्रसार करता येतो म्हणून भ्रमणध्वनीला या प्रसारमाध्य क्षेत्रातील चौथी क्रांती मानायला हरकत नाही. त्यामुळे या माध्यमाला भाषेच्या बाबतीत दूरदर्शनचे सर्वच नियम व अर्थ लागू पडतात आज या माध्यमावर दूरदर्शनचे सर्वच नियम कार्यक्रम, रेडिओचे सर्वच कार्यक्रम पहायला व ऐकायला मिळता म्हणून या साधनाचा स्वतंत्र विचार येथे करण्यात आला नसून वरील प्रकारांची पुढील आवृत्ती मानून येथे वरील दोन्ही माध्यामांच्या भाषांचा वापर करायला हवा.

निष्कर्ष:-

रेडिओ दूरदर्शन आणि टेलीफोन, भ्रमणध्वनी ही प्रसार माध्यम माणसांची अविभाज्य अंगे बनली आहेत. रेडिओचा वापर करणारी आजही बरीच मंडळी आहेत तर दूरदर्शन आणि फोन हे माध्यम कुटूंबातील व्यक्तीसारखे बनले आहे. या तिन्ही माध्यमांसाठी होणाऱ्या भाषेचा वापर हा अत्यंत महत्वाचा आहे. हे यातून समजते. जाहिराती भाषा वेगळी, मालिकांची भाषा वेगळी, निवेदकाची वेगळी बातमीदाराची भाषा वेगळी, मुलाखत, चर्चा महासंवाद, महाचर्चा खेळाचे वर्णन, कार्यक्रमाचे सूत्र संचालन, पूर, आपली यांचे वर्णन, विविध विभागाची भाषा वेगवेगळी आहे. असे वाटत असले तरे भाषेत थोडा फार फरक करून तीच भाषा सर्वत्र वापरली जाते हे दिसून येते. त्या-त्या ठिकाणी शब्दांचे नियोजन, वाक्यांची मांडणी, भाषेची निवड यामुळे प्रेक्षक, श्रोते, ग्राहक अधिकाधिक आकर्षित होतात हे ही दिसून येते. त्यामुळे आधुनिक माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात दृक्-श्राव्य माध्यमांमध्ये जनतेशी संवाद, संप्रेषण साधण्यासाठी भाषेचे महत्त्व अधिक आहे. भाषाच नसती तर जगभरातील लोकांशी क्षणात संवाद साधता आला नसता. जगाच्या कानाकोपऱ्या घटना, नैसर्गिक बदल, एखादी आपत्ती याबद्दलची माहिती भाषांमुळे आणि या प्रसारमाध्यमांमुळे क्षणात लोकांपर्यंत पोहचविता येते म्हणून आजच्या या प्रसारमाध्यमांसाठी भाषांमुळे जगजवळ आले आहे असे म्हणता येईल.

प्रा.कदम संभाजी धोंडीराम

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी,

ता.पलूस जि.सांगली,

9673408443

एक नयी सुबह

हिन्दी त्रैमासिक

साहित्य, संस्कृति एवं प्णतिशील विचारों की संवाहिका



डॉ. अमरसिंह वधान

प्रोफेसर एमरिटस

जन्म-तिथि : 14 जुलाई, 1947, अमृतसर (पंजाब)
 मातृभाषा : पंजाबी
 भाषाओं का ज्ञान : संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, अंग्रेजी, जर्मन
 शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी), एम. ए. (अंग्रेजी), एम. ए. (राजनीति)
 पी-एच.डी., डी.लिट्., डी.यू., डी.एल. (डी.ओ.एल.) पी.जी.डी.सी.टी., सी.सी.जी.
 40 वर्ष (राष्ट्रीयकृत सिडिकेट बैंक, महाविद्यालय एवं अतुभव विश्वविद्यालय स्तर पर)

- ❖ वाइस-चान्सेलर एवं निदेशक (शोध विभाग), आईनोक्स अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, लंदन, केन्द्र सतारा (महाराष्ट्र)
- ❖ पूर्व प्रो.-वाइस-चान्सेलर, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भगलपुर (बिहार)
- ❖ निदेशक, उच्चतर शिक्षा एवं शोध केन्द्र, चण्डीगढ़
- ❖ सदस्य, सलाहकार शोध मंडल, ए.जी.आई., यू.एस.ए.।
- ❖ सदस्य, शोध अध्ययन मंडल, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
- ❖ सदस्य, अध्ययन मंडल, एम.ओ.पी. वैष्णव महिला महाविद्यालय, चेन्नई (तमिलनाडु)
- ❖ देश के अनेक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों का नियमित अतिथि प्रवक्ता
- ❖ पी-एच.डी. (समकालीन हिन्दी कहानी)
- ❖ डी.लिट्. (झबहार विज्ञान)
- ❖ लघु शोध प्रबंध- 'निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में कलु और शिल्प'
- ❖ शोध एवं मूल्यांकनपरक आलेख-165
- ❖ मौलिक ग्रंथ-22
- ❖ संपादित ग्रंथ-27
- ❖ अमृतित ग्रंथ (अंग्रेजी से हिन्दी)-04
- ❖ अमृतित ग्रंथ (पंजाबी से हिन्दी)-16
- ❖ एम.फिल. शोधार्थी-12
- ❖ पी-एच.डी. शोधार्थी-15
- ❖ डी.लिट्. शोधार्थी-02
- ❖ 10 ग्रंथ

60 (राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- सन्तोषसाहेब Chitabe Mahavidyalaya
 3150, सैक्टर-24-डी, चण्डीगढ़-160003) शोधार्थी Tal Palus Dist Sandu
 मो. 99876301085. ई-मेल : asivadhan@gmail.com

Printed By : PRATIBHA PRAKASHAN 9955658474



डॉ. अमर सिंह वधान विशेषांक
(जन्मदिन 14 जुलाई 1947 पर)

2018



अंक : 39
जुलाई-सितम्बर, 2019
ISSN-2349-3070

अनुक्रम

हिन्दी त्रैमासिक
साहित्य, संस्कृति एवं प्रगतिशील विचारों की संवाहिका

प्रधान संरक्षक :
भगवती चरण भारती
चलभाष : 9473005600
संरक्षक :

डॉ० कै० एन० गुप्ता शिवशंकर सिंह
चलभाष : 9572609798 चलभाष : 9939845039
रमण शाण्डिल्य विमल कुमार 'परिमल'
चलभाष : 8582016202 चलभाष : 7033130777
अवध बिहारी शरण 'हितेन्द्र'-8969327393

सम्पादक :
डॉ. दशरथ प्रजापति
चलभाष : 8409040348/7979967131
Email : dasharathprajapati4@gmail.com

सम्पादक मण्डल :
प्रो. उमाशंकर सिंह, मो.-9934098691
नरेन्द्र किशोर सिन्हा, मो.-8969358434
डॉ. प्रमोद 'प्रियदर्शी', मो.-9939057784
अरुण माया, मो.-9572999880
बच्च्या प्रसाद विहल, मो.-9470011000

प्रबंध सम्पादक :
प्रो. जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. कल्याणी शाही
डॉ. किशोरी शर्मा, विष्णु प्रभाकर
अर्थसचिव सह विज्ञापन प्रभारी :
सुधीर कुमार (अधिवक्ता)
चलभाष : 9430867202

सम्पादकीय कार्यालय :
1. द्वारा भुवनेश्वर साह, कैलाशपुरी, वार्ड सं.-10,
बलहापट्टी, हुमरा कोर्ट, सीतामढ़ी-843301 (बिहार)
कार्यालय :
2. मधुकुंज, विवेकानंद नगर, गणेश पेद्रोल पम्प के
निकट, सीतामढ़ी (बिहार) फिन : 843302
सहयोग राशि : 35/-

यह पत्रिका पूर्णतः अव्यावसायिक है। इसके सभी पद-धारक
अवैतनिक हैं। इस पत्रिका से संबंधित सारे मामले सीतामढ़ी
व्यावहार न्यायालय के अंतर्गत आते हैं।

| | |
|-----------------------------|-----|
| सम्पादकीय | - 2 |
| प्रतिक्रियाएँ | - 4 |
| कार्यकारिणी सदस्यों की सूची | - 6 |

भाग-एक : व्यक्तित्व सुषमा

| | |
|--|------|
| एक हिरण्यगर्भ साहित्यिक व्यक्तित्व / आचार्य डॉ. चन्द्रभूषण मिश्र | - 7 |
| पंजाब माटी के मानवतावादी साहित्यकार / डॉ. श्रीहरि वाणी | - 10 |
| साहित्य निर्माता से बढ़कर साहित्यकार निर्माता / प्रो. मिथिलेश कुमारी | - 12 |
| साहित्य तपस्वी एवं मानव प्रेमी / प्रौमिला वर्मा | - 15 |
| एक कर्मयोगी की साहित्य साधना / प्रो. गीता ए० जगड़ | - 17 |
| साधना और प्रतिभा का अद्भुत समन्वय / डॉ. गीता डोगरा | - 20 |
| हिन्दी साहित्य के पीर डॉ. अमरसिंह वधान / डॉ. विनोद कु. सिन्हा | - 22 |
| एक विरल व्यक्तित्व / प्रो. नसीम बानू | - 23 |
| जिन्हें शब्दों की शिरोरेखा में नहीं बाँधा जा सकता / डॉ. रजनी सिंह | - 25 |
| संघर्ष चेतना संपन्न साहित्यकार / डॉ. नीना वर्मा | - 27 |
| निर्भीक पत्रकारिता के प्रबल समर्थक / डॉ. प्रमीला शुक्ल 'किरण' | - 29 |

भाग-दो : कृतित्व मूल्यांकन

| | |
|---|------|
| 'प्रकाश पुंज गुरु नानक देव'-एक मूल्यांकन / प्रो. मंजू रानी सिंह | - 31 |
| डॉ. वधान का साहित्यिक उद्घोष / प्रो. सुशील कु. पाण्डेय साहित्येन्दु | - 34 |
| डॉ. अमरसिंह वधान का वैश्विक चिंतन / प्रो. विजय कुमार 'वेदालंकार' | - 39 |
| डॉ. अमरसिंह वधान की साहित्य साधना / डॉ. मंगल प्रसाद | - 42 |
| डॉ. वधान की आलोचना दृष्टि / डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय | - 45 |
| भारतीयता के अन्वेषक / डॉ. विजय महादेव गाडे | - 48 |
| बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. वधान / डॉ. सत्या उपाध्याय | - 51 |
| एक यशस्वी साहित्यकार / डॉ. नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य' | - 53 |
| संपादन कला के मर्मज्ञ डॉ. अमरसिंह वधान / डॉ. अर्चना आर्य | - 55 |
| कहीं खत्म नहीं होती सृजनधर्मिता / डॉ. अंजु दुआ जैमिनी | - 58 |
| कुराल शब्द शिल्पी की साहित्य साधना / डॉ. धीरजभाई वणकर | - 60 |

खंड-तीन : संस्मरणात्मक झलक

| | |
|--|------|
| साधारणता में आश्चर्यमयी असाधारणता / डॉ. अनु सूद | - 62 |
| एक अडिग पुरुष एवं सच्चा साहित्यकार / गुरमीत कौर सैनी | - 63 |
| डॉ. वधान : शालीनता का अन्यतम नाम / डॉ. एच.बालमुब्रहमण्यम | - 65 |
| एक अविस्मरणीय इंसान / प्रो. मारिया जलातेवा | - 68 |
| आत्मकथ्य-अमर सिंह वधान | - 70 |



भारतीयता के अन्वेषक डॉ. विजय महादेव गाडे (महाराष्ट्र)

सम्माननीय चिन्तक प्रो. वधान जी को हमने कई रूपों में देखा, सुना और पढ़ा भी है। यहाँ पढ़ने की बात सबसे बड़ी है, क्योंकि अक्सर इनकी रचनाओं से ही हमें इनका तआरूप मिला है। वधान जी एक आलोचक, अनुवादक, चिन्तक, सम्पादक और लेखक के रूप में हमारे सामने आए हैं। अपने जीवन में उन्होंने जो कुछ अर्जित किया है वह न केवल तारीफ़ेकाबिल है, बल्कि रशकेकाबिल भी है, इतना ही हम इनके संदर्भ में कह सकते हैं। इनका रचना संसार काफी विशाल है और इन सबका परामर्श एक ही आलेख में लेना बहुत ही मुश्किल ही नहीं, बल्कि नामुमकिन भी है यह प्रतीत होता है। इनके नाम पर 23 मौलिक ग्रंथ, 27 संपादित कृतियाँ और 20 अनुदित कृतियाँ हैं, जो अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं और आप भविष्य में और क्या-क्या करने वाले हैं, इसका उत्तर तो शायद भविष्य काल के गर्भ में छिपा हुआ है।

'संवेदना के धरातल' कृति उनके चिंतन के अनेक आयामों को स्पष्ट करती है। इस रचना में उन्होंने 'भारत की आत्मा' की बात कह दी है। सही मायने में भारत की आत्मा क्या है? उसका वजूद किसमें है? इसका अस्तित्व अब भी विशेषतः उत्तर सदी की झंझा में भी महफूज क्यों है? ऐसे अनेक सवाल उपस्थित हो सकते हैं। भारत की आत्मा की खोज अर्थात् भारतीयत्व की खोज है ऐसा हम मानते हैं। भारतीयत्व वह विचारधारा है, जिसमें अनेकता के बावजूद एकता दिखाई देती है। अक्सर यह दिखाई देता है कि अनेकता में एकता के बिंदुओं को खोजना मुश्किल है किन्तु भारतीय साहित्य की विविध भाषाओं में हम इन्हें आसानी से खोज सकते हैं। भारतीयत्व में अनेक रंग, स्वरूप और स्वरों के साथ अनेक विश्वदृष्टियाँ समाहित हैं। इसमें हमें अनेक दर्शन भी मिलते हैं जो ऊपरी तौर पर एक-दूसरे के विरोधी भी हैं। किन्तु अंत में सब एक ही मुकाम पर आकर पहुँचते हैं। वही भारतीयत्व की एकता का प्रतीक है। निजी जीवन में हम हिन्दुत्व, इस्लाम या ईसाईयत के पक्षधर हो सकते हैं, लेकिन सार्वजनिक जीवन में हम सभी भारतीय ही हैं।

इस संदर्भ में हम कह सकते हैं कि हमारे देश में संत,

महात्मा या रचनाकार इसलिए लोकप्रिय हैं, रहते हैं क्योंकि वे सही अर्थ में भारतीयता की अवधारणा को न केवल समझ गये थे, अपितु इन्होंने इसे जिया भी था। एक मात्र राजनीति का उदाहरण देकर हम कह सकते हैं कि लोकमान्य तिलक हो या महात्मा गाँधी दोनों इसलिए लोकप्रिय थे, क्योंकि उन्होंने भारतीय अवधारणा को, भारत की आत्मा को केवल जाना ही नहीं था बल्कि अनुभूत भी किया था। साहित्य के संदर्भ में अनायास ही तुलसीदास और रवींद्रनाथ का हम नाम ले सकते हैं।

बहुत बार यही द्वन्द्व दिखा देता है कि व्यष्टि और समष्टि में किसका हित सर्वोपरि है। व्यष्टि का विकास अंत में समष्टि विकास तक पहुँचता है यह बात भी सर्वमान्य है। भारतीयता के अनेक पहलू हैं जैसे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति आदि। इसमें और भी बिंदु हो सकते हैं क्योंकि भारतीयता का दायरा ही इतना विशाल है।

भारतीयता की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि भारतीयता मानव को यही संदेश देती है कि तुम मानव हो, तुम भारतीय हो और भारतीय होने के नाते तुम्हें मानवता का दामन हर हालत में कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए। भारत का इतिहास लड़ाई और रक्तपात का इतिहास है, इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन वह दौर खत्म होने के बाद फिर मिल-जुलकर रहने की आकांक्षा इस देश में कायम रही, क्योंकि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह भारतीय संस्कृति का आदिकाल से नारा रहा है।

इसी संदर्भ में डॉ. वधान लिखते हैं—“पश्चिमी वैचारिकता हमें अपनी पहचान नहीं दे सकती। हमें अपनी पहचान राम, महावीर, बुद्ध, गुरु नानक, रविदास, तुकाराम, नामदेव, गुरु गोविंद सिंह, रामकृष्ण परमहंस आदि महापुरुषों के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में ही मिलेगी। यदि भौतिकता-आध्यात्मिकता एवं पूर्व-पश्चिम का सद्समन्वय इक्कीसवीं सदी में हो जाता है तो विश्व मानवता की यह एक बड़ी फ़तह होगी। भारत ने तो यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि उसकी निजी स्वतंत्र चेतना है, जो जीवन संबंधी समस्याओं को अपने ही प्रकाश में सुलझाने के उद्देश्य से गंभीर रूप से विचार करती आई है।” वधान जी

एक नयी सुबह 2018 • पृष्ठ-48

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

संस्थान की प्रकाशित नवीनतम अध्यात्म कक्षा

पंजीयन संख्या / RNI No : GUJHN/2017/70792
खंड - 3, अंक - 3, आपाठ - भाद्रपद, 2076 / जुलाई - सितंबर, 2019

ISSN : 2582-0900

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

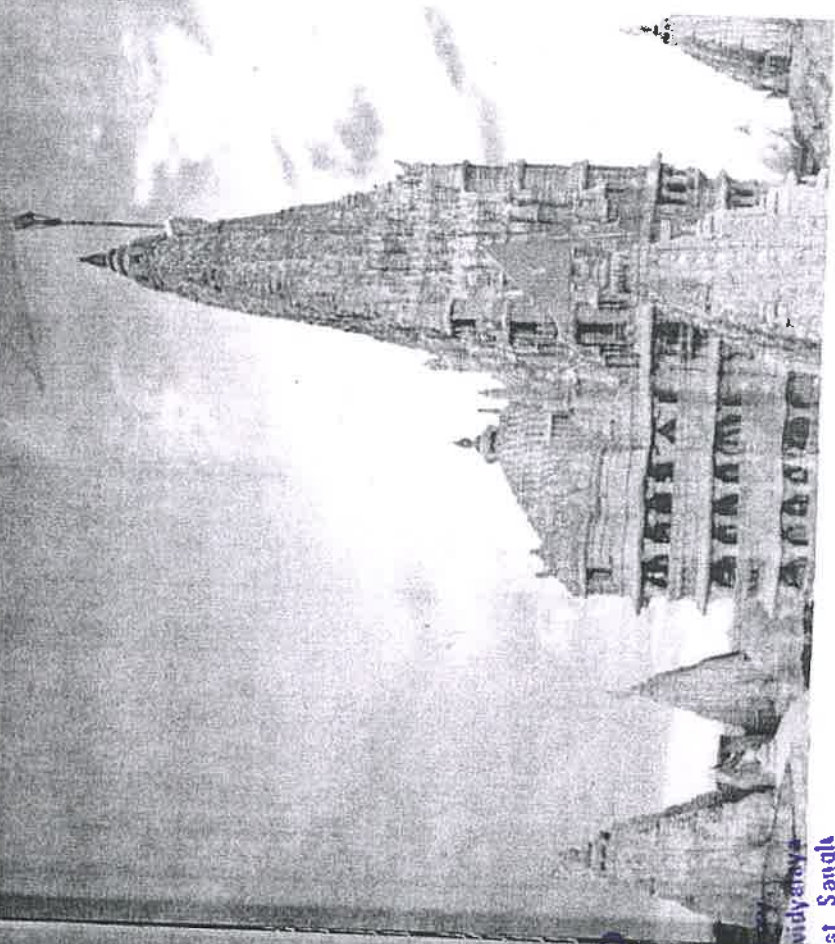
18-19



सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आसप के लिये डॉ. सुनील कुमार
 क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय संस्थान, अहमदाबाद केंद्र, बालभवन, शास्त्री चरित्र堂, बापुनगर, अहमदाबाद (गुजरात) - 380024 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित एवं प्रकाशित तथा पाठित आंकड़े
 प्रिन्टर्स - 18-19. जयश्री कॉम्प्लेक्स, बापुनगर अहमदाबाद - 380025 से मुद्रित।
 संपर्क - डॉ. सुनील कुमार

ATTESTED

D. P. KHARAD
 Lecturer in History
 Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
 Bhitawadi Tal Palus Dist Sangli



पद्मभूषण डॉ. मोटूरी सत्यनारायण



2 फरवरी 1902 - 6 मार्च 1995

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडू ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी पद्मभूषण श्री मोटूरी सत्यनारायण जी, भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा हर वर्ष भारतीय मूल के विद्वानों को, विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

संरक्षक
डॉ. कमल किशोर गोयनका
 एम.ए., पी-एच.डी.
 उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
 ई-मेल : kkgoyanka@gmail.com

परामर्श मंडल
डॉ. रजना अरगडे
 पूर्व-प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
 डीन, कला संकाय गुजरात विश्वविद्यालय,
 अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)
 ई-मेल : arghada_51@yahoo.co.in

डॉ. दयाराकर
 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
 सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर,
 आणंद-388 120 (गुजरात)
 ई-मेल : tripalididayashankar1@yahoo.com

डॉ. आलोक गुप्त
 प्रोफेसर एवं डीन, भाषा-साहित्य एवं
 संस्कृति संस्थान तथा छात्र कल्याण
 गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,
 गांधीनगर-382 030 (गुजरात)
 ई-मेल : dralokgupta@gmail.com

डॉ. प्रमोद शर्मा
 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
 राष्ट्रीय संत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय,
 नागपुर-440 033 (महाराष्ट्र)
 ई-मेल : prof.pramods@gmail.com

डॉ. जसवंतभाई डी. पंड्या
 डीन, कला संकाय
 गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद-380 014. (गुजरात)
 ई-मेल : jdpandya1958@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
डॉ. स्वर्ण अनिल
 एम.ए., पी-एच.डी.
 केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
 ई-मेल : swarnanilks16@gmail.com

कला एवं परिकल्पना
डॉ. विजय एम. डोरे



समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका
 खंड-3, अंक-3, आषाढ-भाद्रपद, 2076/जुलाई-सितंबर, 2019

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
 एम.ए., पी-एच.डी.
 निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
 ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक - डॉ. सुनील कुमार
 एम.ए., पी-एच.डी.
 क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.सं. अहमदाबाद केंद्र
 ई-मेल : dskmeerrui@gmail.com

उप-संपादक - डॉ. मनोज पांडेय
 एम.ए., पी-एच.डी.
 सहायक प्रोफेसर, रा.सं.तु.म.वि.वि., नागपुर
 ई-मेल : mkprtinuu@gmail.com

संपादक मंडल
डॉ. उषा उपाध्याय
 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गुजराती विभाग
 महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
 गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद-14 (गुजरात)
 ई-मेल : usthapadhyay2004@yahoo.co.in

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
 मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई-98 (महाराष्ट्र)
 ई-मेल : drkrupadhyay@gmail.com

डॉ. सदानंद काशीनाथ भोसले
 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
 सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
 पुणे-411 007 (महाराष्ट्र)
 ई-मेल : skbhossale3131@gmail.com

डॉ. राम गोपाल सिंह
 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
 महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
 गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
 ई-मेल : ramgopalsingh1913@gmail.com

डॉ. भूषण भावे
 एसोसिएट प्रोफेसर, कोंकणी विभाग
 पी.ई.एल.आर.एस.एन. आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज,
 फर्ग्युडो पोंडा, गोवा-403 401
 ई-मेल : bhushanbhavegoa@gmail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान
 अहमदाबाद केंद्र
 (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

1. दाहू, दयाल ग्रंथावली : सं. परशुराम चतुर्वेदी, साच को अंग, 150
2. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, चानक कौ अंग-6
3. प्रवीण सागर : संपादक - गणपति शंकर शास्त्री, लहर 67/12
4. गुजरात के संतकवियों में सामाजिक संवादिता : सं. गोवर्धन शर्मा, पृ. 46, 47
5. वही, पृ. 46, 47
6. वही, पृ. 70
7. वही, पृ. 71
8. वही, पृ. 99

9. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, क्रम जड़ अंग-5
10. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, क्रम जड़ अंग-6
11. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, राम परीक्षा अंग-12
12. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, ज्ञान कौ अंग-7
13. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, अधम अंग-15
14. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, अधम अंग-121
15. अखा ना छप्पा : भीक्षु अखण्डानंद - छप्पा-181
16. वही, छप्पा-244
17. वही, छप्पा-245
18. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, अथ सहज अंग-12
19. अखा ना छप्पा : भीक्षु अखण्डानंद - छप्पा-420
20. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, सर्वांग अंग-12
21. अखा ना छप्पा : भीक्षु अखण्डानंद - छप्पा-122
22. वही, छप्पा-488
23. वही, छप्पा-121
24. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, साखी-18
25. अक्षयसः : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, लालन को अंग-19



ATTESTED

D. P. KHARAD

Lecturer in History,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilewadi Tal Polus Dist Sangli

नामें सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति

डॉ. विजय महादेव गाड़े

“मन मेरी सुई, तन मेरा धागा
खेचर की के चरण पर नामा सिंपी लगागा।”

संत नामदेव ने अपने व्यक्तित्व का रूपक लेकर अपनी अधिव्यक्तिक की है और अपना परिचय इन शब्दों के माध्यम से दिया है।

संत नामदेव परभणी जिले के नरसीवामनी गाँव में 1270 ई. में पैदा हुए। उनके पिता का नाम दामाशेठ और माता का नाम जोनाबाई था। ये जाति के सिंपी (दरजी) थे और संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे। नामदेव अपने समय में महाराष्ट्र तथा उत्तर हिंदुस्तान में इतने प्रतिष्ठित हो चुके थे कि कबीर ने उनका स्मरण बड़ी इज्जत और सम्मान के साथ किया है। कबीर की पंक्ति देखिए-

“जागे सुक, उधव, अकूर। हणवत जागे लै लै लंगूर।
संक्व जागे चरन सेव। कलि जागे नामा, जैदेव ॥”

संत नामदेव ने उत्तरी भारत में संतमत का पथप्रदर्शन किया। पुस्तिम आक्रमण के बाद सारे भारत में जो धार्मिक और सांस्कृतिक महासंघर्ष हुआ उसमें भागवत धर्म का झंडा पहराने वाले पहले संत नामदेव हैं। महाराष्ट्र में संतों के द्वारा जो भक्ति का जागरण हुआ उसकी लहर पंजाब तक पहुँचाने वाले संत नामदेव हैं। आगे चलकर मीरा, कमल, रामानंद, पीपा, कबीर, रविदास, नानक आदि संतों का आविर्भाव हुआ। इन सभी संतों ने अपनी-अपनी रचनाओं में नामदेव का अभिमान पूर्वक उल्लेख किया है।

महाराष्ट्र के श्रेष्ठ नाथपंथी हिंदी कवि नामदेव भागवत संप्रदाय में प्रमुख कवि माने जाते हैं। नामदेव केवल जनकवि नहीं थे बल्कि जनप्रिय कवि भी थे। वे केवल महाराष्ट्र में पैदा हुए थे इसलिए उन्हें मराठी या महाराष्ट्रीय कवि मानना निश्चित ही अनुचित है क्योंकि वे संपूर्ण भारतवर्ष के कवि थे इसलिए उनकी अमिट छाप आज भी पूरे भारतवर्ष पर है। लेकिन अफसोस इस बात का है आज भी नामदेव को उचित एवं वाजिब सम्मान नहीं मिल रहा, जिसके वे असल में हकदार हैं।

केवल मराठी भाषा में नहीं बल्कि हिंदी भाषा में भी संतमत का प्रवर्तन नामदेव ने किया था किंतु पता नहीं क्यों समीक्षक एवं आलोचक इन्हें दरकिनारा करते रहे। डॉ. मौरी ने लिखा है- “नामदेव और कबीर के परवर्ती संतों ने बड़ी ही श्रद्धा से दोनों का नाम लिया है, पर प्रायः नामदेव का नाम कबीर के पहले मिलता है।”

कोई भी संत अथवा भक्त कवि क्यों गाते हैं? गोस्वामी जी की भाषा में कहें तो ‘स्वांतः सुखाय’ भगवन्नाम संकीर्तन करने के लिए गाते हैं। स्वयं भक्ति का आचरण कर औरों को सच्ची राह पर लाने के लिए क्योंकि ‘काव्यप्रकाश’ रचयिता ने काव्य के जो उद्देश्य बताए हैं उनमें से यश और अर्थ के प्रति वे उदासीन रहते हैं। उनका उद्देश्य केवल यही रहता है- शिवैतशक्ति और सद्गुणपरिवर्ति ही उन्हें प्रेरणा देती है। हमारे मत से संत नामदेव भी इसी धारा के कवि हैं।

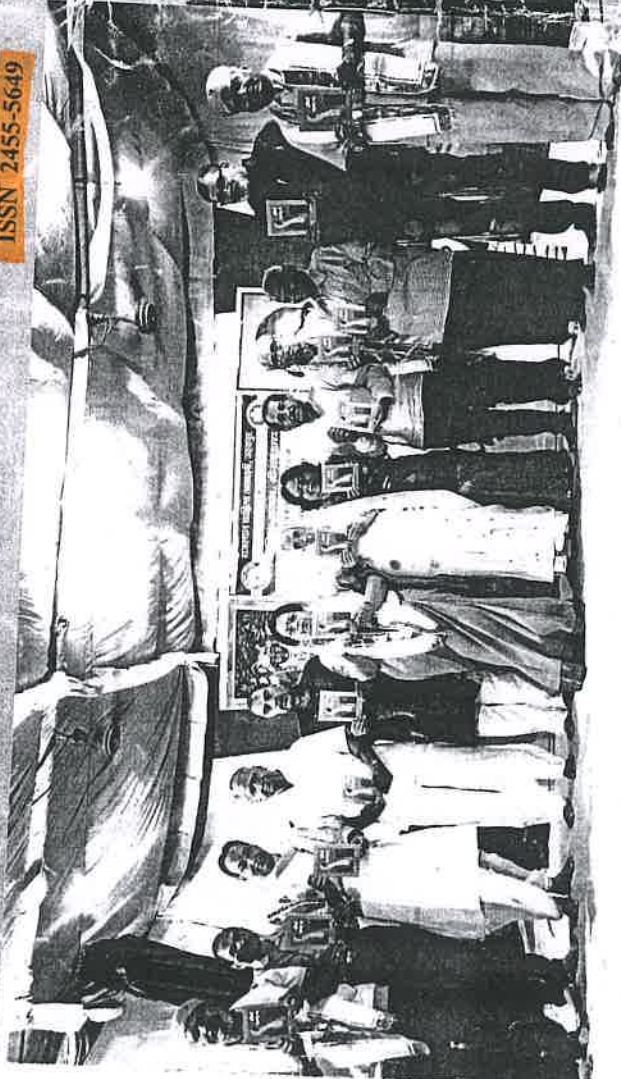
भा.स.पं. : 63856/94
पो.पं.सं. : UPBJN-67/2019-21
ISSN 2455-5649

2018-19

ब्राह्मण

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

मई 2019, वर्ष 24, अंक 05



भीलवाड़ा (राजस्थान) में आयोजित विमोचन तथा सम्मान के अवसर पर लिया गया चित्र।

पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक, प्रकाशक अथवा मुद्रक का कोई दायित्व नहीं है।
सभी विचारों का साथ क्षेत्र जनपद च्यायालय बिजनौर रहना।
कहानी/कविता प्रतियोगिता के सम्बन्ध में समिति का निर्णय अंतिम होगा।

संपादक-राम कन्दे गले का पता:

समादरणीय कर्तिल वर्मा
पत्नि. श्री प्रदीप कुमार वर्मा
भारतीय स्टेट बैंक कृषि विकास
के सामने इशरगढ़ रोड
बाई 461861 मो. 9787558231

प्राप्तकर्ता यदि ना मिले तो कृपया पत्रिका
निम्न पते पर वापिस करें।
हितेश कुमार शर्मा
सम्पादक- ब्राह्मण अंतर्राष्ट्रीय समाचार
गणपति भवन, सिविल लाइन, बिजनौर
पिन-246701 (उ.प्र.) भारत

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli



हितेश कुमार शर्मा द्वारा लिखित काव्य पुस्तिका 'जय भारत जय भारती' का विमोचन दिनांक 06-04-19 को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के महानिदेशक डॉ. लोकेश शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर समस्त पुरजनों व पत्रिकों के साथ हितेश कुमार शर्मा उपस्थित हुए। विशेष रूप से श्री मनोहर लाल अग्रवाल (पूर्व गवर्नर-रोटरी, अंतर्राष्ट्रीय) ने उपस्थित होकर अपनी शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

प्रधान सम्पादक एवं स्वत्वाधिकारी
हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन, सिविल लाइन, बिजनौर-246701 (उ.प्र.) भारत

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

संरक्षक

श्री मनोहर लाल अग्रवाल, पूर्व गर्वनर रोटी अंतर्राष्ट्रीय मण्डल 3010

विशिष्ट सहयोगी

वीरबाला शर्मा रुड़की (उत्तराखण्ड)

डॉ० इन्दु बाला पाराशर, बिजनौर

योगेश कुमार शर्मा, रुड़की

सम्पादक मण्डल

डॉ० हितेश कुमार शर्मा प्रधान सम्पादक

श्रीमती उषा शर्मा सहयोगी सम्पादक

डॉ० श्री बुद्धि प्रकाश शर्मा- पूर्व आचार्य वर्षमान कालेज बिजनौर

श्री जागेश कुमार, प्रबन्ध सम्पादक

गणपति काम्प्लैक्स, सिविल लाइन्स, बिजनौर 246701 (उ.प्र.) भारत

दूरभाष : 01342-262085, चलयण : 9319935979

Email: kumar1936hitesh@gmail.com

कम्प्यूटर सैटिंग

bablu9012216659@gmail.com

राकेश सैनी (बब्लू)

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक हितेश कुमार शर्मा द्वारा आशुतोष प्रिन्टर्स के सहयोग से मुद्रित करणकर गणपति भवन, सिविल लाइन्स, बिजनौर से प्रकाशित किया।

प्रकाशन की तिथि : प्रत्येक मास की 30 तारीख।

वितरण की तिथि : प्रत्येक मास के प्रथम व द्वितीय सप्ताह के अन्दर

सहयोग राशि- वार्षिक रुपये 350/-; एक प्रति रुपये 30/-; इससे अधिक स्वेच्छानुसार

प्रकाशक

हरिगण प्रकाशन, गणपति काम्प्लैक्स, सिविल लाइन्स, बिजनौर 246701 (उ.प्र.) भारत

4

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय - हितेश कुमार शर्मा पृष्ठ-6
2. बुढ़ापे भगवें, दीर्घ जीवन पायें -पी.एस.पाण्डेय पृष्ठ-10
3. जग होरी, ब्रज होरा -सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु' पृष्ठ-13
4. मानव की उत्पत्ति कब और कैसे हुई?-इन्द्र देव गुलाटी पृष्ठ-15
5. कशमकश-देवराज काला पृष्ठ-16
6. एक सच यह भी-डॉ. बुद्धि प्रकाश शर्मा, पृष्ठ-17
7. आत्मवाकियों के मद्दगारे होशियारआ रहे मंत्री लिए रण की तलवार-सी.के.शर्मा, पृष्ठ-18
8. स्वाधीनता - डॉ. सुरेश उजाला पृष्ठ-22
9. "लड़के वाले"-देवेन्द्र कुमार मिश्रा, पृष्ठ-24
10. मुसलमानों की मनोवृत्ति-डॉ. किशोरी लाल व्यास, पृष्ठ-25
11. शहीदों के नाम-मयंक किशोर शुक्ल मयंक पृष्ठ-28
12. धरती का बढ़ता रहा बुझार तो आएगा महाप्रलय! पृष्ठ-29
13. निया- सुधा अग्रवाल पृष्ठ-32
14. ब्राह्मण कौन?-स्वामी गोपाल आनन्द बाबा पृष्ठ-33
15. ये 10 भविष्यवाणियाँ अब सत्य होती दिख रही हैं! पृष्ठ-35
16. बदला -श्रीमती शोभा रानी तिवारी पृष्ठ-36
17. जीएसटी:सर्व-सर्व में व्यापारी का स्टॉक जवा करने के अधिकार-एस के गुप्ता पृष्ठ-37
18. वैश्वी वैभवा ब्राह्मण समाज एकता द्वारा जागरूकता बैठक पृष्ठ-40
19. भाषा संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह-गौरी शंकर वैश्य विनम पृष्ठ-41
20. समकालीन समस्याओं का संश्लेषक रस्तावेज-लैट आओ गौरैया-डॉ. विजय महादेव गाडे पृष्ठ-43
21. पाखण्डी इत्सान-डॉ. रागेशरण मिश्र 'मराल' पृष्ठ-48
22. जाति-व्यवस्था में भारत का भविष्य पृष्ठ-49
23. नमन कर लिया -हितेश कुमार शर्मा पृष्ठ-52
24. राष्ट्रीय साहित्य एवं पुस्तक का 17 वाँ महामह्य अनुष्ठान- कविता गहवार पृष्ठ-53
25. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नव संवासेरा भूयार् भुयो मंडलवायक-मोहन लाल मगों पृष्ठ-54
26. घोषणा फार्म - हितेश कुमार शर्मा पृष्ठ-55
27. गीता का कर्म योग -चं. निरि मोहन गुरु, पृष्ठ-56
28. जनप्रतिनिधि इतने जल्दी अमीर कैसे हो जाते हैं...?-ललित गर्ग पृष्ठ-58
29. लो ब्वाड प्रेशर की है समस्या तो अपनाएँ यह अचूक पुस्तक-मिताली जैन पृष्ठ-62
30. राहुल जी! स्वतः संज्ञान लो-सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु' पृष्ठ-63
31. किन्हें धर्म शिक्षा की जरूरत है?-डा. लक्ष्मीनारायण मिश्र, पृष्ठ-64
32. बुढ़ापे जीने के मूलमंत्र-मधुकर चैत्र पृष्ठ-65

बिज्ञापन

1. जैन ट्रेडर्स संजीव कुमार जैन-पृष्ठ-9
2. खन्ना मोटर्स एण्ड डीजल इन्जिनियर्स-पृष्ठ-27
3. तिरुपति ट्रेडर्स-गुलजारी लाल मारवाड़ी-पृष्ठ-57

प्रमाणपत्र हिन्दी शब्दकोश पदक वितरित किए गए जिसमें अनेक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के साथ अनेक शिक्षकों ने भाग लिया। इसके पश्चात् हिन्दी गरीमा पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखकों को सम्मानित किया गया जिसमें डॉ. श्रावणी भट्टाचार्य पूजा पराशर गौरी शंकर वैश्य विनाय साधु शरण वर्मा डॉ. अखिलेश निगम डॉ. सुरेश प्रकाश शुक्ल आदि सम्मिलित थे।

सभागार में डॉ. स्नेहलता, उषा बाजपेयी, निर्मला सिंह, रमा सिंह, भुरेंद्र स्वरूप बिसारिया, अनिल कुमार मिश्र, वीरेंद्र कुमार सक्सेना, राम प्रकाश शुक्ल, कुलदीप सक्सेना, मृत्युञ्जय गुप्त, श्रीमती शोभा अग्रवाल, माया आनन्द, आदि मनीषी साहित्यकारों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। संचालन डॉ. उषा सिन्हा और रजेश प्रकाश शर्मा ने संयुक्त रूप से किया। सम्मान सचिव रजेश प्रकाश शर्मा के आभार प्रदर्शन एवं सुस्वादु जलपान से हुआ।

-गौरी शंकर वैश्य विन्म
117, आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022 मो. 9956087585

प्राची साहित्य एवं अवधी शोध संस्थान पवनपुरी आलमबाग लखनऊ में आज २४.०३.२०१९ समारोह का आयोजन हुआ।

गोष्ठी अध्यक्ष राम कुँआँ सिंह, मुख्य अतिथि सच्चिदानंद तिवारी शराम विशिष्ट अतिथि डा. श्याम गुप्त

आयोजक व गोष्ठी संचालक डॉ. सुरेश प्रकाश शुक्ल

हरि अग्रवाल हरि की वाणी वंदना से आरंभ हुई इस काव्य गोष्ठी में जिन अन्य कविर्मनीषियों ने अपनी अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया उनके नाम इस प्रकार हैं, सर्वश्री गिरीश मिश्र, संजय समर्थ, डॉ. अखिलेश सिंह, महेश पाण्डेय महेश, डॉ. वेद प्रकाश ओझा, वेद कृष्ण कुमार अक्स्थी, श्याम तेज नारायण श्रीवास्तव, रही मुरली मनोहर कपूर निर्दोष, इंद्र मोहन श्रीवास्तव, ईयूस राम प्रकाश शुक्ल प्रकाश, इन्द्र वीर सिंह इन्द्र, प्रशांत त्रिपाठी, एस पी तिवारी पुष्प, प्रदीप गुप्ता, अरविन्द रस्तोगी, साहित्यकार राम लखन यादव, पवन विवेक गुप्त, आकाश अंचल तथा कवयित्री श्रीमति प्रतिभा गुप्ता।

42

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangh

समकालीन समस्याओं का सशक्त दस्तावेज-लौट आओ गौरैया!
सुश्री. कीर्ति प्रदीप वर्मा का काव्य संकलन 'लौट आओ गौरैया' प्राप्त हुआ। विवेच्य रचनाकार के आत्मकथ्य के साथ कई अन्य अभिप्राय इस कृति में संलग्न हैं। इसे पढ़कर मन को असीम प्रसन्नता अनुभूत हुई। हालाँकि इनकी रचनाओं का काव्यशिल्प्य भविष्य में और भी प्राप्त हो जाएगा।

इस कृति का आरंभ परंपरागत ढंग से सरस्वती वंदना से हुआ है। विवेच्य रचनाकार ने सब जनों का जीवन संबन्धने की माँ सरस्वती से प्रार्थना की है। वर्तमान युग अर्थ युग ही है जिसकारण आज काव्य सम्मेलन प्रायोजित हो रहे हैं और सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने हेतु थोड़ी कविताओं का काव्यपाठ किया जाता है जो आम बात है। इन सब के कारण कविता का गला घोट जा रहा है इसलिए कवयित्री कविता को जनता के दरबार में ले जाना चाहती है। कीर्ति जी का यह डर बिलोबजह नहीं है क्योंकि-

“भाषा मर्यादा न खो दे, शब्द कही निर्वस्त्र न हो
चंद चुटकुले चंद लतीफे मंचवीर के अस्त्र न हो।”
माता नर्मदा के किनारे पर रहने के कारण उन्हें नर्मदा जी से लगाव है और यही

कारण है कि वह माता नर्मदा को पालनहारी कहती है और माता का स्तवन करती है। 'भारत माता' कविता में कवयित्री ने भारत के विभाजन का दर्द उठाया है और अपनी वेदना को शब्द बद्ध किया है। नारी को इस प्रकार सक्षम बनना चाहिए कि उसे किसी राम या कृष्ण की प्रतीक्षा करने की जरूरत ही न हो क्योंकि इसी कारण उसका अस्तित्व दुनिया में अंत तक कायम रहेगा। मौन रहकर अपने अस्तित्व को मत खोने दीजिए बल्कि हुंकार देकर अपने अस्तित्व की जानकारी दो।

प्रदूषण का सारे वातावरण पर असर परिलक्षित होता है। जीवन का एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जिसमें प्रदूषण की पहुँच नहीं है। प्रदूषण के कारण न केवल मनुष्य अपितु सृष्टि के सारे व्यापार प्रभावित हुए हैं। पंछी और पशु भी इससे प्रभावित हुए बगैर नहीं रहते और यही कारण है कि अब पहले की तरह पंछी चहचहाते हुए नजर नहीं आते। इस संकलन का शीर्षक भी इसी समस्या को मद्देनजर रखकर अपनी

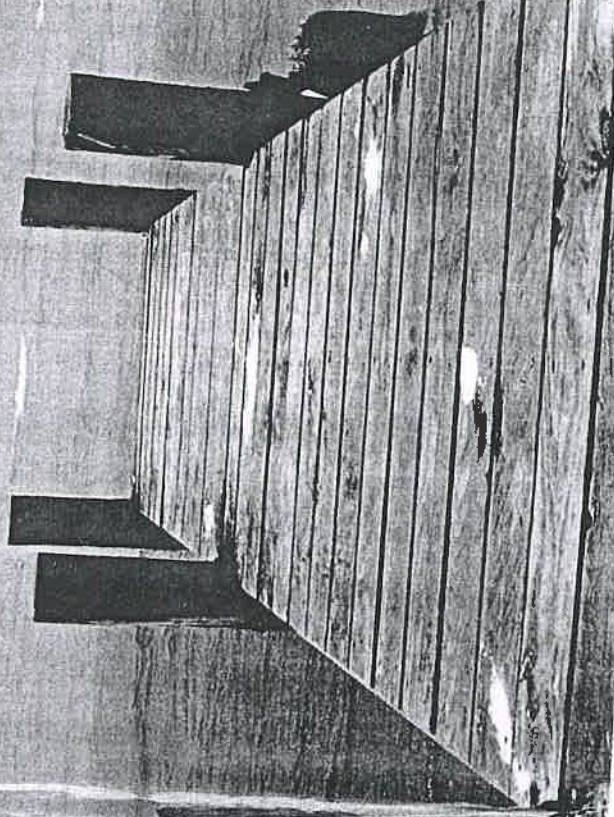
43

164

समकालीन विमर्श धारा

प्रो. संजय एन. मादार

18-19



समकालीन विमर्श धारा

प्रो. संजय एन. मादार



प्रो. संजय एन. मादार

₹ 800

ISBN 978-81-940366-9-2



9 788194 036692

SHARDA PUBLICATIONS

A-934 Dayapur Delhi-110080

E-mail: shardapublication12@gmail.com

ATTESTED

D. P. KHARADE

Lecturer in History,

Babasaheb Chitkala Mahavidyalaya

समकालीन विमर्श धारा

प्रो. संजय एल. मादार

विभागाध्यक्ष

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,

(विश्वविद्यालय विभाग)

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, कर्नाटक

डी.सी. कंपौंड धारवाड़ - 580 001

शारदा पब्लिकेशन

दिल्ली

21. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में नारी चेतना स्त्री विमर्श और आत्मालोचन
जिगर कुमार ललित कुमार दवे 176
22. नरेंद्र कोहिली के 'अभिज्ञान' उपन्यास में राजनीतिक चेतना
डॉ. साहिराबानू बी. बोरगल 183
23. डॉ. प्रभा खेतान के कथा साहित्य का समाजभाषिक अध्ययन
डॉ. लता एस. पाटील 189
24. पीली आँधी : मारवाड़ी समाज की जीवट दस्तावेज
डॉ. षीबा शरत एस. 192
25. द्रोणवीर कोहली के उपन्यास 'चौखट' में बदलते सांस्कृतिक मूल्य
सजिता जे. 196
26. रांगेय राघव का उपन्यास 'कब तक पुकाँरू' : स्त्री शक्ति का परिचायक
डॉ. पूर्णिमा बनर्जी 207
27. भारतीय अर्थव्यवस्था एवं श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास
डॉ. एम. लेखा 213
28. वर्तमान कथा साहित्य में हाशिएकृत तृतीय प्रकृति समुदाय की विसंगतियाँ
डॉ. शबाना हबीब 218

नाटक-खंड

29. 'हयवदन' (कन्नड-गिरीश कर्नाड)
डॉ. विजय महादेव गाडे 227
30. वसंत एकांकी में चित्रित स्त्री मन का पाठ
नरेश कुमार 241
31. समकालीन राजनीतिक व्यंग्य नाटक प्रवृत्तियाँ
अनिता डी. किनी 246
32. 'नेपथ्य राग' का स्त्री-संघर्ष
राखी क्लेमन्ट 250

आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम

- जनवादी कविता
- भूमंडलीकरण की कविता

संपादक : डॉ. अनिल पाटील
प्रा. सुधाकर इंडी

आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम

संपादक : डॉ. अनिल पाटील
प्रा. सुधाकर इंडी

ABS

संपादक परिचय



डॉ. अनिल पाटील

एम.एससी., पीएच.डी.

श्रीमती आक्कलताई रामगोंडा पाटील कन्या
महाविद्यालय, इचलकरंजी, जिला- कोल्हापुर
(महाराष्ट्र)

अध्यापन अनुभव : 31 वर्ष



प्रा. सुधाकर इंडी

एम.ए. (हिंदी), नेट/सेट, एम.ए. (संस्कृत)

श्रीमती आक्कलताई रामगोंडा पाटील कन्या
महाविद्यालय, इचलकरंजी, जिला- कोल्हापुर
(महाराष्ट्र)

अध्यापन अनुभव : 10 वर्ष

ABS

ए.बी.एस. पब्लिकेशन

आशानगर, सारनाथ, वाराणसी-221 007

Ph. : (+91) 9450540654, 8669132434

E-mail : abspublication@gmail.com

Facebook / AbsPublication

ISBN : 978-83-86077-99-9



9 789386 077899 >

₹1200/-

D. P. KHARADE

Lecturer in History.

Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Chitambar, Tal. Debra, Dist. Sarda

आधुनिक हिन्दी कविता के विविध आयाम

संपादक

डॉ० अनिल पाटील

प्रा० सुधाकर इंडी

ए. बी. एस. पब्लिकेशन

वाराणसी-221 007

| | | |
|-----|--|-----|
| 240 | 65. प्रगतिशीलता के सन्दर्भ में शमशेर का काव्य सौन्दर्य आयुषी राय | 317 |
| 244 | 66. समकालीन कवि नरेश मेहता सविता बळीराम राठोड | 325 |
| 250 | 67. नागार्जुन की कविता में जनवादी चेतना प्रा. बी. के. सारंग | 329 |
| 254 | 68. दुष्यंत कुमार की गजलों में जनवादी विचार माधुरी सचिन सोनुले | 333 |
| 258 | 69. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविताओं में मानवी चेतना सुश्री. अर्चना वसंत. तराळ | 337 |
| 262 | 70. हिंदी कविता में दलित स्त्री श्रम की उपेक्षा का चित्रण श्यामराव पुंडलिक तुपसाखरे | 341 |
| 266 | 71. नागार्जुन की कविता में जनवादी चेतना (‘प्यासी पथराई आंखे’ काव्य-संग्रह के विशेष संदर्भ में) सुश्री. अंजलि उबाळे | 346 |
| 271 | 72. आदिवासी कविताओं में अभिव्यक्त विद्रोह रामेश्वर महादेव वाढेकर | 352 |
| 275 | 73. साठोत्तरी कविता में अभिव्यक्त दलित चेतना विकास सुर्यकांत वाघमारे | 356 |
| 280 | 74. जनवादी कविता (साठोत्तरी युग) सुनीता रा. हुन्नरगी | 361 |

भूमंडलीकरण की कविता

| | | |
|-----|--|-----|
| 284 | 1. हिन्दी कविता में भूमंडलीकरण का यथार्थ प्रा. रमेश आण्णाप्पा आंदोजी | 367 |
| 289 | 2. अनामिका की कविताओं पर भूमंडलीकरण का प्रभाव डॉ. सुनील बापू बनसोडे | 375 |
| 295 | 3. भूमंडलीकरण और समकालीन हिन्दी कविता डॉ० शीला भास्कर | 381 |
| 299 | 4. भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में केदारनाथ सिंह की कविताएँ (‘सृष्टि पर पहरा’ काव्य-संग्रह के विशेष संदर्भ में) डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले | 384 |
| 305 | 5. इक्कीसवीं सदी की कविता – वैश्विक विमर्श के नए स्वर डॉ. विजय महादेव गाडे | 391 |
| 309 | 6. भूमंडलीकरण और हिंदी कविता प्रा. डॉ. विनोद श्रीराम जाधव | 396 |
| 313 | | |

शमकंथा कॅ विवेधा पारिप्रेक्ष्य

डॉ. महेंद्र पाल सिंह

जन्म : 4 जुलाई 1971 ग्राम- नगला लोकी, हसीना जगमोहनपुर, जनपद अलीगढ़, उ.प्र.

शिक्षा : एम.ए., पी. एच.डी. (हिन्दी)

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़।

अभिरुचि : अध्ययन, अध्यापन सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में सक्रिय सहभागिता

प्रकाशन : राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं, जर्नल एवं किताबों में अनवरत शोध पत्रों का प्रकाशन

: 60 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठीयों, सेमिनारों व कार्यशालाओं में प्रतिभागिता।

: अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं एवं जर्नल की आजीवन व वार्षिक सदस्यता।

सम्प्रति : वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, सेठ पी सी बागला स्नातकोत्तर महाविद्यालय हाथरस, उ.प्र.।

ई-मेल : drmpsingh887@gmail.com

दूरभाष : 09410211124



शमकंथा

कॅ

विविधा पारिप्रेक्ष्य



साहित्य संचय

100 8001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करणें हैं समय से संचाल

www.sahityasanchay.com

e-mail : sahityasanchay@gmail.com

Mob. : 9871418244, 9136175560

ATTESTED

D. P. GHOSADI
Lecturer in History,
Babashob Chitla Mahavidyalaya
Bhitarwadi Tal Palus Dist Sanchi

संपादक
डॉ. महेंद्र पाल सिंह

रामकथा के विविध परिप्रेक्ष्य

संपादक
डॉ. महेन्द्र पाल सिंह



साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

अनुक्रम

| | |
|--|----|
| संपादकीय | |
| 1. रामकथा : प्रदेय और वैशिष्ट्य | 3 |
| डॉ. महेन्द्र पाल सिंह | 9 |
| 2. रामायण एवं पुरातत्त्व | |
| रामसेवक राम भगत | 16 |
| 3. रामायणकालीन अर्थनीति | |
| डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप | 24 |
| 4. दृश्य कला में रामायण | |
| राज ख्यालिया | 35 |
| 5. रामायण काल में राजतंत्र और शासन | |
| विजय कुमारी | 50 |
| 6. नाट्य परम्परा में रामकथा का स्वरूप | |
| श्रेया चित्रांशी | 55 |
| 7. रामायण में सामाजिक-व्यवस्था | |
| डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे | 58 |
| 8. रामकथा का समय निर्धारण | |
| डॉ. विजय महादेव गाडे | 64 |
| 9. रामकथा के विविध आयाम | |
| अश्विनी राय 'अरुण' | 71 |
| 10. भारत के कला इतिहास में कैद रामायण के कुछ अनछुये पहलू | |
| क्षमा द्विवेदी | 78 |
| 11. आनंद रामायण में राम | |
| सुमन देवी | 82 |
| 12. मर्यादा पुरुषोत्तम - इमेज के घेरे में फँसे श्रीरामचन्द्र | |
| डॉ. सुमा एस. | 90 |
| 13. वाल्मीकिकृत रामायण में वृक्ष और वनस्पति | |
| प्रियंका देवी | 94 |



डॉ. विजय महादेव गाडे

न : 28 मई, 1968, साखरवाडी ता. फलटण, जिला- सातारा (महाराष्ट्र)
 क्षा : एम. ए., बी. एड., एल.एल. बी., सेट, एम. फिल., पी-एच. डी.
 व्यापन : 20 वर्ष
 ति : सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
 बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, फिलवडी, जिला सांगली (महाराष्ट्र)
 प्र आलेख : हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोधपरक एवं आलोचनात्मक 100 आलेख
 पत्रता क्षेत्र : हिंदी साहित्य, आधुनिक तुलनात्मक साहित्य, पत्रकारिता, सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया, शोध, अनुवाद, प्राचीन भारतीय साहित्य
 रचित रचनाएँ : नीरज का प्रेमकाव्य : एक अनुशीलन, खत्म नहीं होती कभी कविता, वैश्वीकता के परिप्रेक्ष्य में संचार माध्यम, साहित्य और संस्कृति, हिंदी साहित्य नेट/सेट के परिप्रेक्ष्य में, नीरज का काव्य शिल्प, शोध का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष, मीडिया, साहित्यिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, मीडिया से बाजार तक, भारतीय साहित्य, मीडिया : समसामयिक परिप्रेक्ष्य में, पं. गिरिमोहन गुरु का काव्य एक अनुशीलन
 जनक मणि मालिका छंद (मराठी अनुवाद) 2018 मूल कवि- पं. गिरिमोहन गुरु' नगर श्री' ग्लोबल बेस्ट टीचर 2014, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक्सलन्स इन एजुकेशन 2016, कवि कुलगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर सारस्वत सम्मान 2016, धान पाती सम्मान 2017, स्टार इंडिया आयडॉल अवार्ड 2017, शोध श्री 2018, बसवर्ल पुरस्कार 2018, ज्ञानरत्न 2018, डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान 2018, मानपत्र-सोशल मीडिया - महामित्र 2018 - महाराष्ट्र शासन, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम लाईफ टाईम एचिवमेंट नेशनल अवार्ड 2018, अनुवाद श्री 2018
 प्रकाशय : उपन्यास की संवादधर्मिता
 भास : एक 1, रघुवीर सदैनिका, 100 फुटी रोड, अपोजिट चेतना पेट्रोल पंप, सांगली-416416
 क्र. : 09860271909, 08862049248, मेल - vijaygade2010@gmail.com

ATTESTED

रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स

कानपुर-208 021 P. KHARADE

फ़ोन : 07379494578

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Kharade, Tal. Palus Dist. Sangli



18-19

भारतीय की हिन्दी रचनाएँ

भारतीय की हिन्दी रचनाएँ

डॉ. विजय महादेव गाडे

डॉ. विजय महादेव गाडे



डॉ. विजय महादेव गाड़े

- जन्म : 28 मई, 1968, साखरवाडी ता. फलटण, जिला- सातारा (महाराष्ट्र)
- शिक्षा : एम. ए., बी. एड., एल-एल. बी., सेट, एम. फिल., पी-एच. डी.
- अध्यापन : 20 वर्ष
- संप्रति : सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
- शोध आलेख : बाबासाहेब विठ्ठल महाविद्यालय, भिलवडी, जिला सांगली (महाराष्ट्र)
- विशेषज्ञता क्षेत्र : हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोधपरक एवं आलोचनात्मक 100 आलेख हिंदी साहित्य, आधुनिक तुलनात्मक साहित्य, पत्रकारिता, सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया, शोध, अनुवाद, प्राचीन भारतीय साहित्य
- प्रकाशित रचनाएँ : नीरज का प्रेमकाव्य : एक अनुशीलन, खत्म नहीं होती कभी कविता, वैरबीकता के परिप्रेक्ष्य में संचार माध्यम, साहित्य और संस्कृति, हिंदी साहित्य नेट/सेट के परिप्रेक्ष्य में, नीरज का काव्य शिल्प, शोध का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष, मीडिया, साहित्यिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में, मीडिया से बाजार तक, भारतीय साहित्य, मीडिया : समसामयिक परिप्रेक्ष्य में, पं. गिरिमोहन गुरु का काव्य एक अनुशीलन
- अनुवाद : जनक मणि मालिका छंद (मराठी अनुवाद) 2018 मूल कवि- पं. गिरिमोहन गुरु 'नगर श्री' खोबल वेस्ट टीचर 2014, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक्सलस इन एजुकेशन 2016, कावि कुलगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर सरस्वत सम्मान 2016, धान पाती सम्मान 2017, स्टार इंडिया आयडॉल अवार्ड 2017, शोध श्री 2018, बसवराज पुरस्कार 2018, ज्ञानरत्न 2018, डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान 2018, मानपत्र-सोशल मीडिया - महामित्र 2018 - महाराष्ट्र शासन, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम लाईफटाईम एचिवमेंट नेशनल अवार्ड 2018, अनुवाद श्री 2018
- शीघ्र प्रकाश्य : उपन्यास की संवादधर्मिता
- आवास : एफ 1, रघुवीर सदनिका, 100 फूटी रोड, अपोजिट चेतना पेट्रोल पंप, सांगली-416416
- संपर्क : 09860271909, 09862049248, मेल - vijaygade2010@gmail.com

रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स

कानपुर-208 02 HARADI

मो. : 07379494578 History.

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya



विता की संवादधर्मिता

कविता की संवादधर्मिता

डॉ. विजय महादेव गाड़े

डॉ. विजय महादेव गाड़े

संस्थान से प्रकाशित नवीनतम अध्ययन कोश



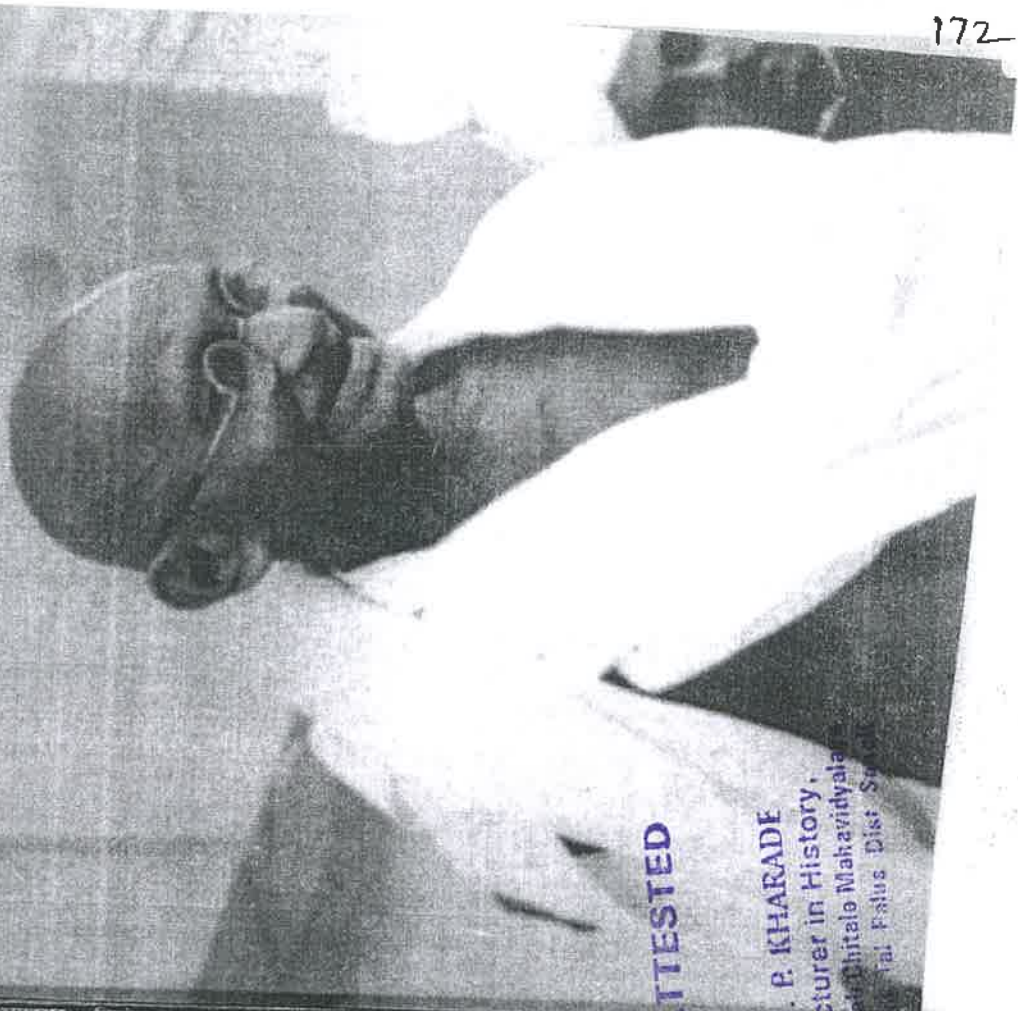
सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आपारा के लिये डॉ. सुनील कुमार
 क्षेत्रीय निवेशक, केंद्रीय संस्थान, अहमदाबाद केंद्र, वालभवन, शास्त्री सेडिक्स, वाणनगर,
 अहमदाबाद (गुजरात)- 380024 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित एवं प्रकाशित तथा फाटिवार ऑफसेट
 भित्ति - 18-19, जयश्री कॉम्प्लेक्स, वाणनगर अहमदाबाद - 380025 से मुद्रित।
 संपादक - डॉ. सुनील कुमार

पंजीयन संख्या / RNI No : GUJHN/2017/70792
 खंड -3, अंक -4, आश्विन - मार्गशीर्ष, 2076 / अक्टूबर - दिसंबर, 2019
 ISSN : 2582-0907

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

18-19



ATTENDED

D. P. KHARADE
 Lecturer in History,
 Chitelo Mahavidyalaya,
 Tal. Falus Dist. Sur

समन्वय पश्चिम

Baba
 Rhu

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका
खंड-3, अंक-4, आश्विन-मार्गशीर्ष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019



2 फरवरी 1902 - 6 मार्च 1995

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडू ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी पद्मभूषण श्री मोटूरी सत्यनारायण जी; भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा हर वर्ष भारतीय मूल के विद्वानों को, विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

डॉ. कमल किशोर गोयनका

एम.ए., पी-एच.डी.
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : kkgoyanka@gmail.com

डॉ. रजनी अरगडे

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कला संकाय गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)
ई-मेल : argada_51@yahoo.co.in

डॉ. दयाशंकर

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, कलसविद्यानगर,
आणंद-388 120 (गुजरात)
ई-मेल : tripathidayashankar1@yahoo.com

डॉ. आलोक गुप्त

कुलसचिव, प्रोफेसर एवं डीन, भाषा-साहित्य एवं
संस्कृति संस्थान तथा छात्र कल्याण
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर-382 030 (गुजरात)
ई-मेल : dralokgupta@gmail.com

डॉ. प्रमोद शर्मा

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राष्ट्रीय संत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय,
नागपुर-440 033 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : prof.pramods@gmail.com

डॉ. जसवंतभाई डी. पंड्या

डीन, कला संकाय
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014. (गुजरात)
ई-मेल : jdpandya1958@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार

डॉ. स्वर्ण अहिल

एम.ए., पी-एच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swaranamilkhs16@gmail.com

कला एवं फोटोकल्पना

डॉ. विजय एम. डोरे

प्रधान संपादक

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

एम.ए., पी-एच.डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक - डॉ. सुनील कुमार

एम.ए., पी-एच.डी.
शेखरीय निदेशक, के.हि.सं. अहमदाबाद केंद्र
ई-मेल : dskmeenu@gmail.com

उप-संपादक - डॉ. मनोज पांडेय

एम.ए., पी-एच.डी.
सहायक प्रोफेसर, रा.सं.तु.म.वि.वि., नागपुर
ई-मेल : mkprtmnu@gmail.com

संपादक मंडल

डॉ. उषा उपाध्याय

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गुजराती विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14 (गुजरात)
ई-मेल : ushaupadhyay2004@yahoo.co.in

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय, मुम्बई-98 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : drkrupadhyay@gmail.com

डॉ. सदानंद काशीनाथ भोसले

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे-411 007 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : skbhosal3131@gmail.com

डॉ. राम गोपाल सिंह

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : ramgopalsingh1913@gmail.com

डॉ. भूषण भावे

एसोसिएट प्रोफेसर, कोंकणी विभाग
पी.ई.एल.आर.एस.एन. आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज,
फर्मागुडी पोंडा, गोवा-403 401
ई-मेल : bhushanbhavosa@gmail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान

अहमदाबाद केंद्र

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)



असहयोग आंदोलन और गांधी

डॉ. विजय महादेव गाडे

गांधी एक महात्मा थे। लेकिन इस महात्मा के पीछे हमारे जैसा एक साधारण आदमी छिपा था। आप और हमारे जैसा। आलेख के शीर्षक से ही पता चलता है कि यह आंदोलन असहयोग के संबंधित था। गांधी की 150वीं जन्मतिथि के अवसर पर गांधी को सम्झने का एक विनम्र प्रयास हम कर रहे हैं। महाभारत के स्वर्गरोहण पर्व में जो धर्मराज की अवस्था थी, लगभग वही अवस्था गांधी को उनके अंतिम दिनों हुई थी। वेदव्यास महाभारत में कहते हैं कि 'मैं हाथ उठाकर कह रहा हूँ लेकिन मेरी बात कोई भी नहीं सुनता।' गांधी के लगभग वही हालात थे। सफलता के नहीं अपितु निष्पल जीवन के उसी कालखण्ड में वे जा पहुँचे थे। उनके सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह जैसे सपनों की माला टूटकर बिखर रही थी। उनके स्वर्णों के एक-एक शिखर उनकी आँखों के सामने ध्वस्त हो रहे थे। अंत में बापू धर्मांधता के शिकार हुए और ईसा मसीह तथा सुकरात की पंक्ति में जाकर बैठ गए।

प्रस्तुत आलेख असहयोग आंदोलन से संबंधित है। इस आंदोलन की पृष्ठभूमि जानने के लिए हमें इतिहास में और पीछे जाना होगा ताकि इस आंदोलन की मूलिका स्पष्ट हो सके। इस आंदोलन की प्रमुख विशेषता यह भी है कि गांधी के नेतृत्व में चलाया जाने वाला यह प्रथम जन आंदोलन था। इस आंदोलन का व्यापक जनआधार था। शहरी, ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में भी इसे व्यापक समर्थन मिला। 1914-1918 के प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और बिना जाँच के किसी को भी करावास हो सकता था। सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में बनी इस समिति ने यह कानून बनाया था। लिहाजा इसे रॉलेट एक्ट के नाम से पहचाना जाता था। इसके जवाब में गांधी ने देश भर में रॉलेट एक्ट के खिलाफ आंदोलन छेड़ा। इस एक्ट का पंजाब में विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ।

असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में दिसंबर 1920 को पारित हुआ। जो भारतीय उपनिवेशवाद को खत्म करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे पाठशालाओं, महाविद्यालयों और अदालतों में न जाए तथा कर न चुकाएँ। संक्षेप में सभी को अंग्रेज सरकार के साथ, सभी ऐच्छिक संबंधों के परित्याग का पालन करने को कहा गया।

असहयोग आंदोलन का प्रमुख तत्व था 'बहिष्कार', जिस पर कई विचार रखे गए हैं- बहिष्कार शब्द का अर्थ है- बहिष्कार आमतौर पर नैति, सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक कारणों के लिए विरोध की अभिव्यक्ति के रूप में किसी व्यक्ति, संगठन या देश के उपयोग के स्वीच्छिक और जानबूझकर रोकथाम का कार्य है। बहिष्कार का उद्देश्य किसी आपत्तिजनक व्यवहार को कुछ आर्थिक नुकसान करके या नैतिक आक्रोश करके मजबूरन बदलने की कोशिश है। जहाँ एक समान अत्यास किसी राष्ट्रीय सरकार के द्वारा कानूनीत किया जाता है तो उसे प्रतिबंध के रूप में जाना जाता है।

14 आश्विन-मार्गशीर्ष, 2076 / अक्टूबर-दिसंबर, 2019 रामनव्यय पश्चिम

D. P. KHARADE
Lecturer in History

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Ahiwadi Tal Palga Dist Sangli

इस आंदोलन में समाज के लगभग सभी वर्ग एवं तबके शामिल हुए थे। छात्रों ने स्कूल एवं कॉलेज छोड़ दिए। पं. मोतीलाल नेहरू, बेरिस्टर दास, बेरिस्टर वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालचारी आदि मशहूर वकीलों ने अपनी वकालत और उससे होने वाली कमाई को छोड़ दिया। कई लोगों ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। यह आंदोलन सारे हिन्दुस्तान में फैल गया। सरकार ने कई लोगों को जेल में ठूस दिया। बेरिस्टर दास, नेहरू पिता-पुत्र, अबुल कलाम आजाद, लाला लजपतराय आदि अनेक नेताओं ने अनेक सभाओं में लोगों को संबोधित किया। इससे देश में एक नई चेतना का निर्माण हुआ। इनमें से अधिकांश नेतागण जेल में पहुँचाए गए और हजारों लोगों को वहीं से रास्ता दिखाया गया।

1 अप्रैल, 1920 के दिन गांधी ने असहयोग आंदोलन का विधिवत् उद्घाटन किया। हिन्दुस्तान के इतिहास में एक नये पर्व का आरंभ हुआ था। गांधी ने वायसरॉय के नाम एक पत्र लिखकर भेजा। एक तरह से वह एक नोटीस ही थी। इस पत्र का स्वरूप थोड़ी-सी विनती, थोड़ा-सा इशारा और ताकदीद जैसा था। इस ब्रिटिश सरकार के बारे में गांधी के मन में अब कोई भी आस्था या प्रेम नहीं बचा है, यह शुरुआत में गांधी कहते हैं। इसीलिए 'अब सरकार के साथ कोई भी सहयोग नहीं होगा।' हमारी दृष्टि में लोकमान्य तिलक की प्रतियोगी सहकारिता थी उससे गांधी बहुत दूर जा चुके थे यह कथन गलत नहीं है। अर्थात् एक ओर लोकमान्य तिलक की प्रशंसा करते हुए उनके तत्त्वों से दूर जाने की शुरुआत यहीं से हुई यह सुनिश्चित है। लेकिन गांधी के इस निर्णय का प्रभाव बहुत दूर तक होने वाला था यह बात बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रथम विश्वयुद्ध में फलतः हासिल करने के बाद अंग्रेजों ने स्वराज्य के संदर्भ में भारतीयों के साथ जो बादाखिलाफी की थी उसके प्रति हर भारतीय के मन में गुस्सा था। इसी विश्वासघात के कारण आम भारतीय क्रोधित हुआ था। इसे जड़ मिला गई खिलाफत आंदोलन की। ब्रिटिशों ने तुर्कस्थान के खलीफा के अधिकार खत्म किए और तुर्कस्थान का भी विभाजन किया इसलिए खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन एक साथ शुरू हुए। आगे कमाल पाशा ने खलीफा को वेदखल कर दिया और खिलाफत आंदोलन इसी वजह से खत्म हुआ यह बात अलग है और हमारे आलेख का केंद्र बिंदु असहयोग आंदोलन है इसीलिए हमें इसकी ओर अधिक गंभीरता से देखने की जरूरत है ऐसा हम मानते हैं। गांधी 'यंग इंडिया' नामक पत्रिका के संपादक थे। 1 जुलाई 1920 के दिन उन्होंने इस संदर्भ में अपने विचारों का मसौदा इन शब्दों में स्पष्ट किया -

असहयोग अगर आवश्यकता ही है तो इस समिति ने इन बातों को मद्दे नजर रखते हुए यह निर्धारित किया है -

- सम्मान की सभी उपधियाँ और सम्मान ओहदे सरकार को वापस की जाएँगी।
- सरकारी कर्ज और व्यवहार में शामिल नहीं होता।
- सभी वकील इसमें शामिल होंगे और वकालत नहीं करेंगे। दिवानी मुकदमों में निजी लवादों के माध्यम से सुझाए जाएँगे।
- अभिभावकों के द्वारा सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया जाएगा।
- नूतन सुधारों के अंतर्गत होनेवाली कार्टिसल (विधिमंडल) का बहिष्कार।

रामनव्यय पश्चिम आश्विन-मार्गशीर्ष, 2076 / अक्टूबर-दिसंबर, 2019

कवर 2 का विशेष भण

जिनमें 75 उनकी मौलिक पुस्तकें हैं और अन्य सम्पादित। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं : 'अंगद की नियति', 'छितवन की छह', 'कदम्ब की फुली डाल', 'आँगन का पंछी और बनजारा मन', 'कटीले तारों के आर-पार', 'कौन तू फुलवा बीनानिहारी', 'गाँव का मन', 'तुम चन्दन हम पानी', 'मैंने सिल पहुँचाई', 'वसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', 'तमाल के झरोके से', 'शफाली झर रही है', 'लागू रंग हरी', 'साहित्य की चेतना', 'परम्परा बंधन नहीं', 'अस्मिता के लिए', 'निज मुख मुकुट', 'साहित्य का प्रयोजन', 'महाभारत का काव्यार्थ', 'संचारिणी', 'भारतीयता की पहचान', 'नैस्वतंत्र और चुनौती', 'भारतीय परम्परा', 'भावपुरुष श्रीकृष्ण', 'जीवन अलम्ब्य है जीवन सौभाग्य है', 'देश, धर्म और साहित्य', 'सोऽहम्', 'भ्रमरानन्द के पत्र (हास्य-व्यंग्य)', 'पानी की पकार' (कविता-संग्रह), 'भारतीय दर्शन की पीठिका', 'भाषा और सम्प्रेषण', 'हिन्दू धर्म : जीवन में सनातन की खोज', 'श्रुति विज्ञान', 'हिन्दी की शब्द सम्पदा', 'देव की दीपशिखा', 'नदी, नारी और संस्कृति', 'फागुन डूड़ रे दिना', 'श्रीशैष की याद आची', 'भारतीय चिन्तनधारा', 'साहित्य का खुला आकाश', 'यात्राओं की यात्रा', 'बूँद मिली सागर में', 'सहृदय', 'उत्तर गीत गोविन्द' (कविता), 'तन्त्र-कला और आस्वाद', 'सपने कहाँ गये', 'राधा माधव रंग रंजी', 'हिन्दी साहित्य का पुनरावलोकन', 'अध्यापन : अनीति वृष्टि', 'हल्दी दूब और दधि अच्छत', 'लोक और लोक का स्वर', 'व्यक्ति-व्यंजना', 'जयदा के नन्दन', 'गिर रहा है आज पानी', 'हिन्दी और हम', और 'थोड़ी-सी जगह है'।

सृजनात्मक स्तर पर मिश्रजी ने शोध, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, पत्र-लेखन, सम्पादन, कविता आदि क्षेत्रों को अपना महत्वपूर्ण अवदान दिया। मगर व्यापक प्रतिष्ठा उन्हें निबन्धकार के रूप में मिली।

भारतीय एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अप्रतिम उदाहरण हैं मिश्रजी के आत्मव्यंजक निबन्ध। इनमें भारतीयता के विरुद्ध पड़नवाले विचारों से उनकी बराबर टक्कर होती रही। मगर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के आग्रही अन्य साहित्यकारों से मिश्रजी बिल्कुल अलग थे।

मिश्रजी के निबन्धों के लोकपक्ष, प्रकृतिप्रेम, सौन्दर्यबोध और विश्व-दृष्टि ने जहाँ लुभाया वहीं शास्त्रीय अध्ययन के विविध आयामों में भी उनके ज्ञान और चिन्तन की शक्ति का सबने लोहा मारा। 'क्रिटिकल टैकनीक ऑफ पाणिनि', 'श्रुति विज्ञान', 'भारतीय भाषा दर्शन की पीठिका', जैसी पुस्तकों ने उनके शास्त्रीय चिन्तन की गहराई बतायी। प्राचीन और नवीन के बीच सेतु बनाने हुए, भारतीय रचनात्मकता के अनेक पड़ावों से गुजरते हुए उन्होंने पाश्चात्य चिन्तन को परखा।

चिन्तन, मनन और सृजन की भूमिकाओं में भाषा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में मिश्रजी का अवदान ऐतिहासिक महत्व का है :*

"हिन्दी के निर्माता" पुस्तक से साभार

| | |
|--|---------------------|
| पत्र-व्यवहार का पता :- | सेवा में, श्री |
| प्रेषक: प्रधान संपादक विवरण पत्रिका (मासिक) हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001. दूरभाषा : 23201956, 23201965 E-Mail : hps1935@gmail.com | PRINTED BOOK |
| स्वामित्व-हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, संपादक, मुद्रक, प्रकाशक : एम.प्रभु, हिंदी लेजर ग्राफिक्स प्रिंटर्स से मुद्रित। | |

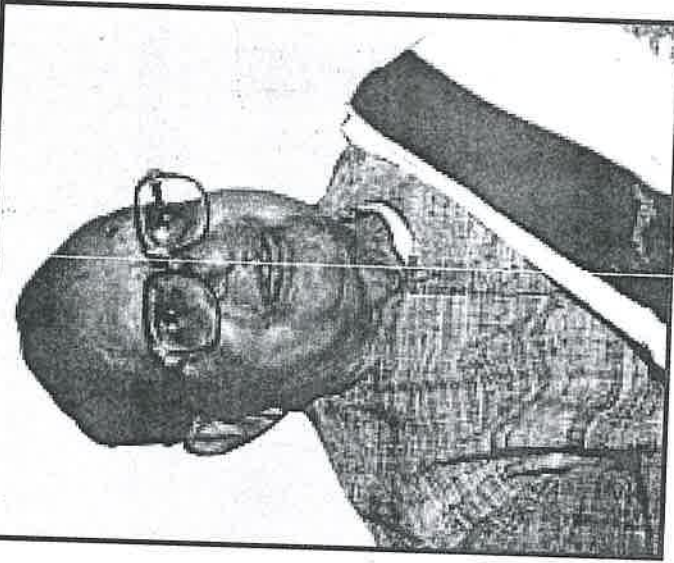
सभा का अमृत वर्ष 2011 से

जनवरी-2018

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा- विभाग) भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित।



विवरण पत्रिका



18-19

पं. विद्यानिवास मिश्र

जातीय स्मृति के आलोक

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History

मृत्यु : फरवरी 2005



Banasahab Chitkole Mahavidyalaya
Bhawadi Tal Palus Dist. Solapur

जनवरी - 2018

वर्ष-42

मासिक मुख-पत्र

अंक-6

विषय-क्रम

| क्र.नं. | लेख का नाम | लेखक | पृ.सं. |
|---------|---|------------------------|--------|
| 1. | संपादकीय | : डॉ. टी.जे. रेखा रानी | 4 |
| 2. | भक्ति की अवधारणा | : डॉ. विजय महादेव गाडे | 5 |
| 3. | ठाकुर की दृष्टि में जन सामान्य की शिक्षा | : नकिरेकंठि नागराजू | 9 |
| 4. | भारतीय संस्कृति में पश्चिमी सभ्यता का हस्तक्षेप | : डॉ. एम. श्रीरामुलु | 11 |
| 5. | सभा को प्राप्त पत्रिकाएँ | : | 13 |
| 6. | आधुनिक उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ | : डॉ. वि. गोविंद | 14 |
| 7. | सूरदास कविकर्म के विधान पक्ष | : डॉ. अदिनारायण बादावत | 16 |
| 8. | राष्ट्रभाषा (कविता) | : मीना खोंड | 17 |
| 9. | बालश्रीरिखी : व्यक्तित्व और कृतित्व | : चेल्लकेशव रेड्डी | 18 |
| 10. | छापावादी काव्य में सौंदर्य चेतना | : डॉ. प्रमोद पडवळ | 22 |
| 11. | दोहे (कविता) | : महेन्द्र जैन | 24 |
| 12. | भारतीय स्त्री की अनकही यात्रा | : लक्ष्मि सुजाता | 25 |
| 13. | पं. विद्यानिवास मिश्र : जातीय स्मृति के आलोक | : | कवर 2 |
| 14. | वर्ष 2018 के लिए स्वीकृत अवकाश सूची | : | कवर 3 |

○○○

डॉ. चंद्रदेव भगवंतराव कवडे
अध्यक्ष, संपादक-मंडल

एम. प्रभु जी
प्रधान संपादक

संपादक-मंडल

1. प्रो. सुरेश पुरी : सदस्य
2. डॉ. श्रीरामुलु : सदस्य
3. डॉ. नारायण चाकळे : सदस्य
4. डॉ. वसीकुरहमान फ़ारुकी : सदस्य
5. डॉ. सी.हेच. चंद्रव्या : सदस्य
6. प्रो. शुभदा वांजपे : सदस्य



डॉ. टी.जे. रेखा रानी
सहयोगी संपादक

| | |
|---------------------|-----------|
| एक प्रति मूल्य | -18=00, |
| वार्षिक चंदा | -200=00, |
| संस्थागत. (वार्षिक) | -250=00, |
| आजीवन सदस्यता | -1100=00, |

पत्रिका संबंधी किसी भी तरह के विचार
के लिए न्यायधिक क्षेत्र इंदराबाद होगा।

'विवरण-पत्रिका' में प्रकाशित लेखकों की रचनाओं एवं विचारों से संपादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों के निजी विचार, लेख में प्रहित तत्व, विश्लेषण एवं दायित्व हैं।

‘भक्ति की अवधारणा’

- डॉ. विजय महादेव गाडे

प्राचीन समय से मानव इस सृष्टि की ओर कुतूहल एवं जिज्ञासा की भावना से देखता आ रहा है। इस संपूर्ण सृष्टि का रचयिता कौन होगा? उसका स्वरूप कैसा होगा? इसके बारे में सोचते हुए मानव ने अपनी ईश्वरीय खोज यात्रा की शुरुआत की और इन सवालियों को ढूँढते-ढूँढते रहस्यवाद का जन्म हुआ। मानव का इस सृष्टि के सृजनकर्ता के बारे में सोचना ही रहस्यवाद का आरंभ है।

सृष्टि के आदि मानव ने जब अपनी आँखें खोलकर देखा तो उसे अनंत रमणीय प्रकृति का साक्षात्कार हुआ। धरती, आकाश, मेघ, सागर, पवन, वर्षा, नदियाँ, सूर्य, चंद्रमा, सितारे यह सब देखकर उसे निश्चित ही आश्चर्य प्रतीत हुआ होगा। उससे कहीं अधिक आश्चर्य उसे तब हुआ होगा कि यह सब सृष्टि का व्यापार विशिष्ट बंधन से व्याप्त है। किस्ने यह सारा प्रबंध किया और इसी कारण उसने कुतूहल और जिज्ञासा की भावना से उनके हल ढूँढना उसने आरंभ किया होगा। यहीं से रहस्य और रहस्यवाद की भावना का उदय हुआ होगा।

रहस्यवाद का स्वरूप एवं विवेचन :-

‘रहस्य’ इस शब्द के निम्नलिखित शब्द शब्दकोश में प्रयुक्त किए जाते हैं—A Secret, Mystery, Secrecy आदि।¹

रहस्यवाद के लिए अंग्रेजी में एक और शब्द है—Mysticism जिसकी परिभाषा इस प्रकार है।

"Teaching & belief that knowledge of God & of real truth may be obtained through meditation or spiritual insight independently of the mind & the sense. It also means a theory postulating the possibility of direct & intuitive acquisition of ineffable knowledge & power. It is only a temper or a mood. It has no doctrine or a systematic philosophy of life."²

अर्थात् ईश्वर के बारे में ज्ञान, विश्वास और सीख तथा सत्य की खोज ध्यान साधना के माध्यम से मन और

संवेदना में जागृत कराना। यह केवल मन की अनुभूति का विषय है। इसकी कोई निश्चित शास्त्रीय परिभाषा नहीं दी जा सकती।

आगे उसका स्पष्टीकरण इस तरह से दिया गया है—

"A mystic understand a words of divine reality behind & within this world. He thinks that this external universe always speaks through his sense, to his soul. He believes that he supreme soul or God is on & the same & that it animates Man as well as Nature. He thus works out identify of Being between Man, Nature & God. He sees, "one undivided changeless life in all lives, one inseperable in the superate." All things in this visible world are different, manisfestations of the one divine Life.

A mystic is anti-rational & unscientific. He reaches the truth not by reason but by intuition. He also believes that the Human soul is eternal. The body dies & decays but the soul lives on."³

अर्थात् गूढवादियों के अनुसार मानव उस ईश्वरी सत्ता के बारे में सदैव सोचता रहता है। यह सोचने की भावना किसी शास्त्रीय सिद्धांत के नियमों के अनुसार नहीं होती बल्कि यह अनुभूति की बात है जहाँ आत्मा उस दिव्य, ईश्वर के प्रति अपना संबंध स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहती है। मानव, प्रकृति और ईश्वर के मध्य स्थापित भाव गूढवाद है। जो केवल प्रतिभा के सहारे हम जान सकते हैं। अंत में आत्मा शाश्वत और अमर होती है केवल शरीर का नाश होता है यह पंक्ति हमें भगवद्गीता के उन पंक्तियों का स्मरण दिलाती है, जिसमें श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं—

“वासंसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि

18-19

81

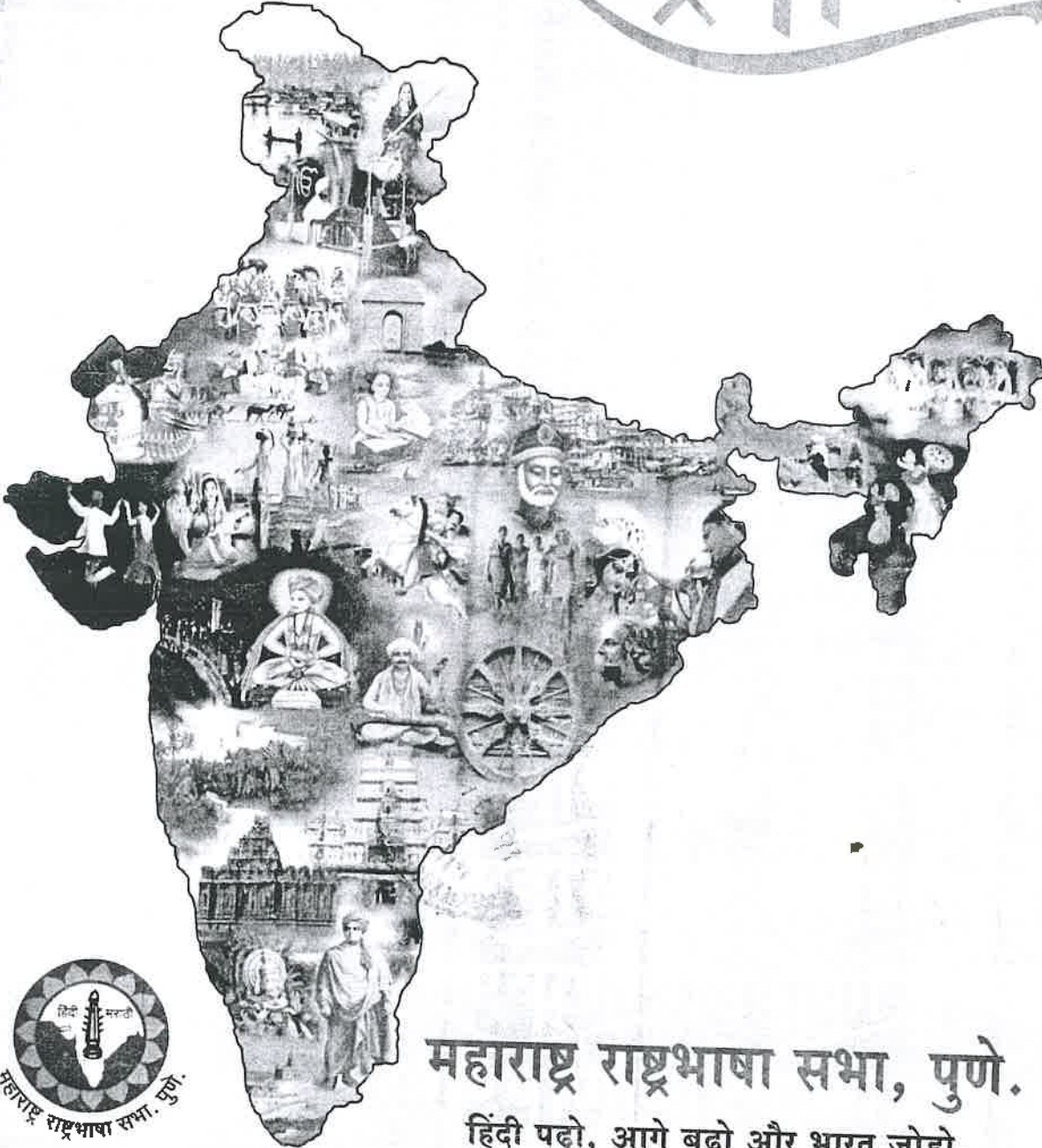
ISSN 2319-6785

वर्ष 30 (अंक 5)

दिसंबर 2018 - जनवरी 2019

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी



महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे.

हिंदी पढ़ो, आगे बढ़ो और भारत जोड़ो.

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Chilowadi Tal Palus Dist Solapur

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली की आर्थिक सहायता से प्रकाशित राष्ट्रीय स्तर की हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

ISSN 2319-6785 Rashtravani



द्वैमासिक
राष्ट्रवाणी

हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

वर्ष 30 (अंक 5)

दिसंबर 2018 - जनवरी 2019



-: संपादक मंडल :-

पूर्व अध्यक्ष - प्राचार्य सु. मो. शाह

कार्याध्यक्ष - डॉ. वीणा मनचंदा

-: सहायक :-

डॉ. नीला बोर्वणकर

डॉ. ऋचा शर्मा

डॉ. निशा ठवळे



राष्ट्रवाणी सदस्यता शुल्क :-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' के नाम से भेजिए।

प्रति अंक : रु. 50/-

पंचवार्षिक : रु. 1000/-

द्वैवार्षिक : रु. 500/-

दस वर्ष के लिए : रु. 1500/-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट भेजने का पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे -

राष्ट्रभाषा भवन, 387 नारायण पेठ, पुणे - 411030

दूरभाष : 020 - 24458947 / 24454268

संलग्न पत्र में शुल्क का प्रकार,

अपना पूरा नाम और पिनकोड सहित पूरा पता, दूरभाष क्रमांक लिखिए।

प्रबंधक :- सौ. वंदना ठकार, सौ. सुनेत्रा गोंदकर

प्रकाशक, मुद्रक :- शे. आ. जगताप, सचिव,

मुद्रणस्थान :- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, मुद्रणालय

387, नारायण पेठ, पुणे - 411030



राष्ट्रवाणी साहित्यिक-समीक्षात्मक पत्रिका है। यह जरूरी नहीं कि लेखकों के विचारों से संपादक सहमत हो। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का स्वामित्व-अधिकार पत्रिका का है।

अनुक्रमणिका

दिसंबर -2018 : जनवरी - 2019

1. अपनी ओर से - शिक्षण महर्षि चिपळूणकर - प्रा. सु. मो. शाह 2
2. सुनीता जैन के उपन्यासों में लोक संस्कृति - डॉ. इंद्रदेव सिंह 6
3. गुप्त जी के काव्य में नारी विषयक धारणा - डॉ. पूनम बोर्से 10
4. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र - डॉ. विनायक कुरणे 15
5. कुमारी महिलाओं की दास्तान - 'कुमारिकाएँ' उपन्यास - डॉ. बेबी खिलारे 19
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में जनवादी चेतना - डॉ. रामकृष्ण बदने 22
7. महादेवी और इंदिरा संत के काव्य में 'आँसू' - डॉ. अंजली चौधरी 26
8. उपन्यासकार 'अज्ञेय'- 'शेखर: एक जीवनी' के विशेष... - डॉ. विजय गाडे 29
9. रामचरित मानस में सूक्तियों का सौंदर्य - डॉ. तेजपाल चौधरी 33
10. गीत से नवगीत की ओर - एक विमर्श - श्री ब्रजेश श्रीवास्तव 38
11. दिनकर के साहित्य में नारी विमर्श - डॉ. संजय गडपायले 43
12. हिंदी प्रश्नों के चक्रव्यूह में - श्री दर्शन सिंह रावत 46

* * * *

उपन्यासकार 'अज्ञेय'-'शेखर:एक जीवनी' के विशेष संदर्भ में

डॉ. विजय महादेव गाडे,

हिंदी विभागाध्यक्ष, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, जि. सांगली (महाराष्ट्र)

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। 'सच्चिदानंद' मुख्यतः बहिर्मुखी व्यक्तित्व हैं, जब कि कवि 'अज्ञेय' अंतर्मुखी कलाकार हैं। उनके जीवन का उनके साहित्य से विशेष संबंध है। वस्तुतः अज्ञेय का व्यक्तित्व उनके रचनाओं की मूल शक्ति है और शायद सीमा भी!

बीसवीं सदी की कविता को पूर्णरूपेण आधुनिक बनाने का श्रेय अज्ञेय को दिया जाता है। केवल कविता ही नहीं अपितु आधुनिक साहित्य की हर एक विधा को अज्ञेय ने आधुनिकता प्रदान की है। अपने आप में एक समर्थ कलाकार होने के साथ-साथ वे हिंदी के साहित्य संदर्भ में एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व भी हैं। अज्ञेय ने विविध कोटि के बहुत से ग्रंथों की रचना की है और साहित्य का संपादन भी किया है। कविता, कहानी, निबंध, यात्रा वृत्तांत, संपादित ग्रंथ, समीक्षा, आलोचना, नाटक, अंग्रेजी कविता और उपन्यास यही सारी बातें इसी तथ्य को उजागर करती हैं। अज्ञेय का रचना संसार काफी विशाल एवं विराट है जो अपनी असीमता का परिचय दिलाता है।

उपन्यासकार अज्ञेय का सफर 'शेखर एक जीवनी' (1941) से आरंभ होकर 'नदी के द्वीप' (1961) के माध्यम से 'अपने-अपने अजनबी' (1961) तक जाकर पहुँचता है। अज्ञेय के ये तीन बहुचर्चित उपन्यास बीस वर्षों के अंतराल में प्रकाशित

हुए हैं। इन उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता है व्यक्तिवाद की प्रबलता जिसे अज्ञेय ने यहाँ इनके माध्यम से चित्रित किया है। व्यक्तिवाद की प्रबलता को सर्वप्रथम प्रसाद ने उद्घाटित किया था।

संसार के लगभग सभी वैज्ञानिक भूख, भय को आदिम प्रेरणाएँ मानते हैं। लेकिन इसके साथ-साथ एक और भी आदिम प्रेरणा मानव ही में नहीं अपितु जानवरों में भी होती है और वह है 'अहं' अर्थात् अहंभाव जो अज्ञेय के इन तीनों उपन्यासों में हमें दिखाई देता है। 'भूख' दो प्रकार की होती है - पेट की और वासना की। स्वयं अज्ञेय ने 'चिंता' की भूमिका में लिखा भी है - "चिरंतन पुरुष और चिरंतन स्त्री का अनिवार्यतः एक गतिशील संबंध है और इन दोनों की परस्पर अवस्थिति एक कर्षण की अवस्था है, वह शक्ति आकर्षण का रूप ले ले अथवा विकर्षण का! किंतु कोई न कोई आंतरिक खिंचाव बना ही रहता है!"

यह कथन गलत नहीं होगा कि - विद्रोह और क्रांति 'शेखर : एक जीवनी' के मुख्य स्वर हैं। 'शेखर : एक जीवनी' असाधारण स्थिति में एक असाधारण चरित्र का असाधारण संवेदन है। उसका विद्रोह अन्याय और रूढ़ियों के विरुद्ध है जो मनोवैज्ञानिक भित्ति पर प्रतिष्ठित है। शेखर की वेदना से यही अनुभूत होता है कि वेदनाग्रस्त व्यक्ति द्रष्टा और

ATTESTED

D. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal. Dist. Sangli

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नौ दशक ध्येय पथ



संपादक
प्रो. संजय द्विवेदी



ESTED

S. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नौ दशक
ध्येय पथ

संपादक
प्रो. संजय द्विवेदी

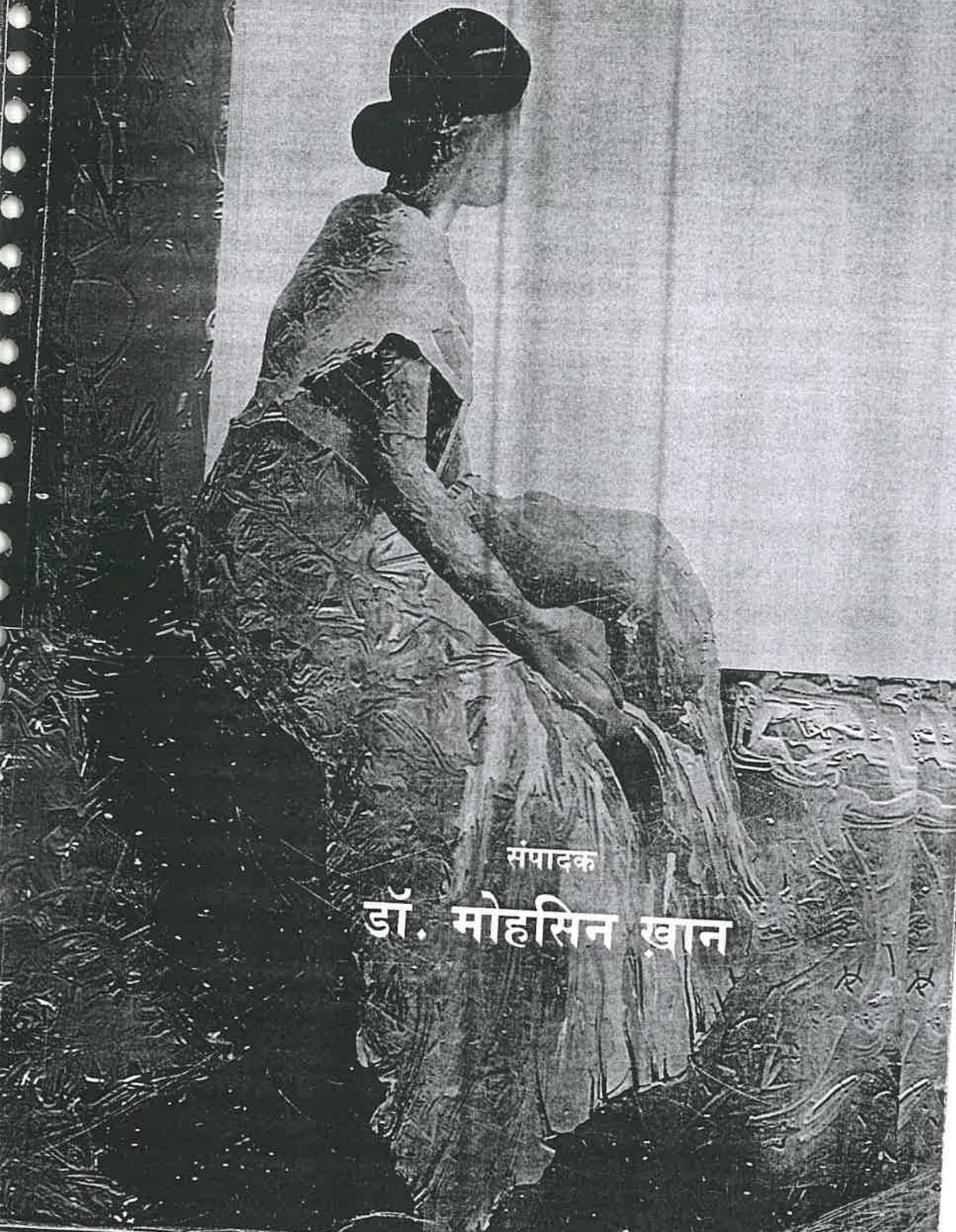
यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली-110032

अनुक्रम

| | | |
|--|---------------------------|-----|
| दिमाग से नहीं, दिल से समझिये संघ को | --संजय द्विवेदी | 11 |
| स्वतंत्रता संग्राम एवं संघ | | |
| 1. जंग-ए-आजादी में भी खास भूमिका | -बलदेव भाई शर्मा | 17 |
| 2. स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ | -डॉ. मनोज चतुर्वेदी | 22 |
| 3. स्वतंत्रता आंदोलन और संघ | -राजन्द्र नाथ तिवारी | 31 |
| इतिहास विकास एवं भावयात्रा | | |
| 4. रचना और सृजन की अविराम यात्रा | -कै.एन. गोविंदाचार्य | 37 |
| 5. समरस समाज की रचना के लिए समर्पित | -प्रॉ. श्रीकांत सिंह | 46 |
| 6. आलोचक भी करते हैं प्रशंसा | -डॉ. विजय महादेव गाड़े | 55 |
| 7. व्यक्ति-निर्माण का अनुष्ठान | -प्रॉ. अरुणकुमार भगत | 62 |
| 8. 'राष्ट्र-सर्वोपरि' भाव का संचारक | -डॉ. सुभद्रा राठौर | 69 |
| 9. भारतबोध की अविराम यात्रा | -डॉ. सौरभ मालवीय | 73 |
| 10. राष्ट्रीय परिदृश्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ | -देवेश खंडेलवाल | 80 |
| 11. सामाजिक शक्ति का रहस्य | -लखेश्वर चंद्रवंशी 'लखेश' | 86 |
| 12. परंपरा को युगानुकूल बनाने की यात्रा | -दिवाकर दुबे | 90 |
| 13. हिंदुत्व और राष्ट्रत्व | -डॉ. विश्वास चौहान | 94 |
| 14. संघ में आये बिना संघ को समझना मुश्किल | -हितेश शंकर | 99 |
| सामाजिक योगदान | | |
| 15. समाज के संवर्द्धन में सजग संगठन | -रमेश नैयर | 102 |
| 16. जागरूकता की पाठशाला | -डॉ. धनंजय चोपड़ा | 107 |
| 17. वैचारिक तिमिर को भेदती शक्ति | -डॉ. मत्स्येन्द्र प्रभाकर | 110 |
| 18. सामाजिक समरसता का ध्वजवाहक | -प्रॉ. अविनाश वाजपेयी | 114 |
| 19. सहभाग और समरसता का भाव | डॉ. पवन सिंह मलिक | 120 |
| 20. आधुनिक नवजागरण काल में संघ की भूमिका | -केशव पटेल | 125 |

खंड-खंड अग्नि

भाव, संवेदना और शिल्प



संपादक

डॉ. मोहसिन खान

ATTESTED

D. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

खंड-खंड अग्नि

भाव, संवेदना और शिल्प

संपादक

डॉ. मोहसिन खान

आलेख प्रकाशन, दिल्ली



आलेख प्रकाशन, दिल्ली

10. मंचन, निर्देशन और अनुभव 139
-प्रवीण पंडित
11. समकालीन संवेदनाएँ 153
-डॉ. विजय महादेव गाडे
12. स्त्री अस्मिता पर टाँके गये सवाल 171
-डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी
13. नारी चेतना के स्वर 183
-कु. मोहिनी कश्यप
14. एक सामाजिक मिथक 190
-बलजिंदर कौर
15. रंगमंचीयता 206
-कु. उपमा शर्मा
16. खंड-खंड अग्नि से उपजे प्रश्न : 212
दिविक रमेश का पक्ष
17. मंचन रपट 217
-गीता पंडित

ATTESTED

ATTESTED

संस्थान प्रकाशन

संस्थान से प्रकाशित नवीनतम अध्येता कोश



मुद्रक रमरक प्रिंटर्स तथा प्रकाशक डॉ. अनंता गणुली, क्षेत्रीय निदेशक द्वारा सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पथ में
 40 APHB, OU रोड, विद्यानगर, हैदराबाद - 500044 से मुद्रण स्थल से मुद्रित तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, 2-2-125, डी.डी.
 कालोनी, विद्यानगर, हैदराबाद 500007 (तेलंगाना) प्रकाशन स्थल से प्रकाशित, संपादक - डॉ. अनंता गणुली

ATTESTED

D. P. KHARADI
 Lecturer in History,
 Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
 Ghilavali Tal Palus Dist. Sangli

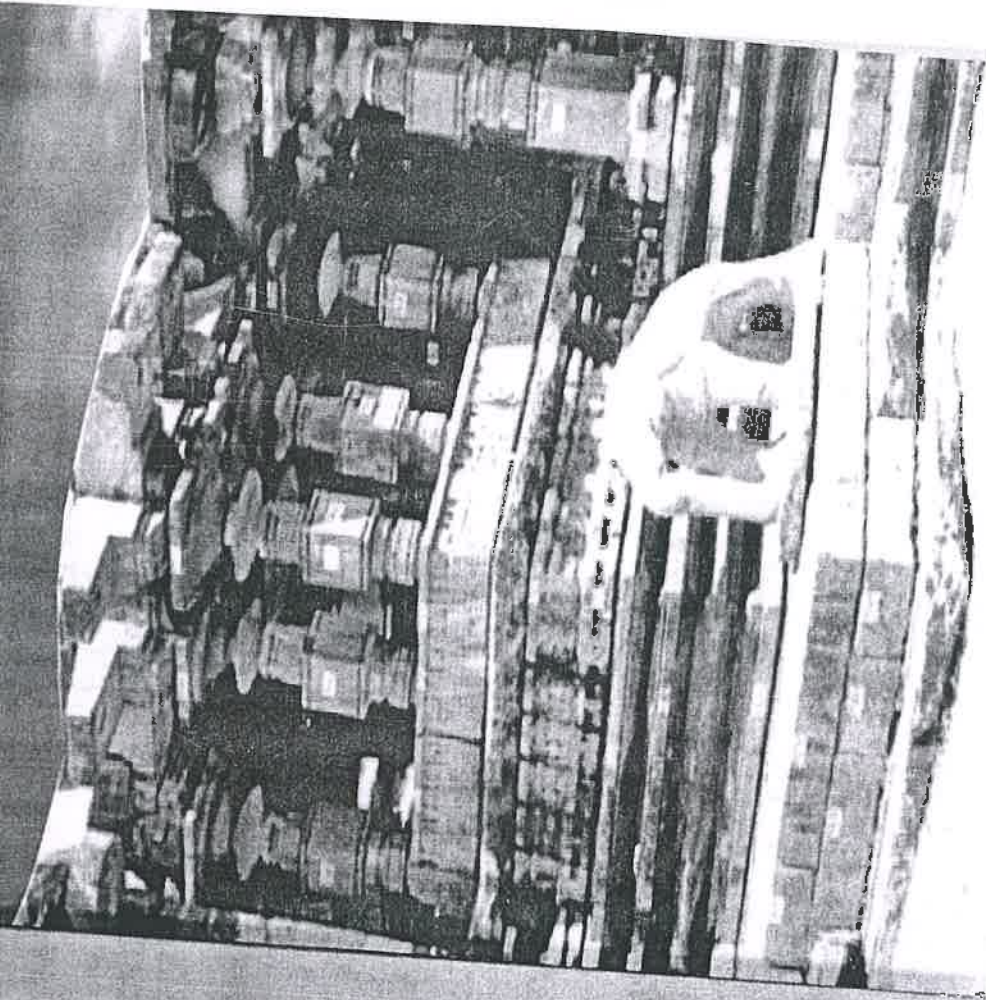
पंजीयन संख्या/RNI No.: TELHIN/2016/70799
 खंड-3, अंक-2, चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019

ISSN : 2456-9445

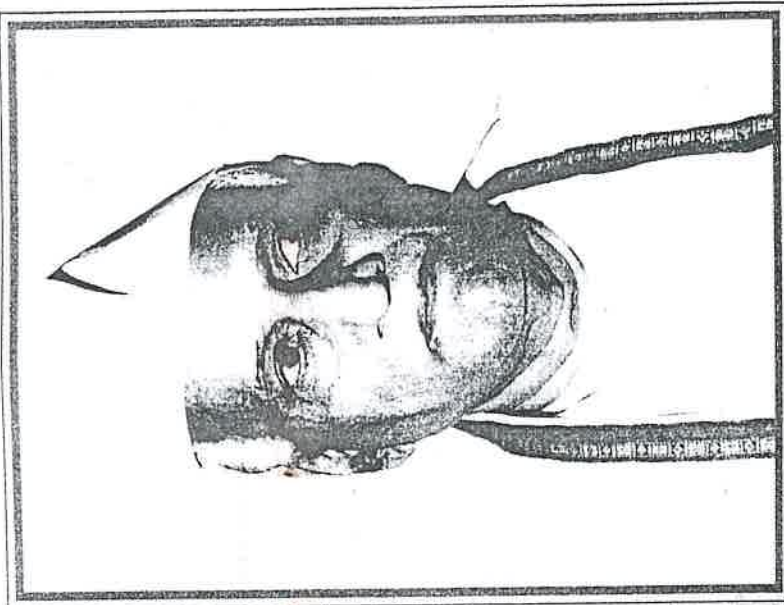
18-19

सप्तगव्यय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका



पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण



(2 फरवरी, 1902 - 6 मार्च, 1995)

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडु ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेबी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष भारतीय मूल के दो विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

पंजीयन संख्या/RNI No.: TELHIN/2016/70799

ISSN : 2456-9445

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-3 अंक-2
वैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अश्लेष-जुल, 2019

परामर्श मंडल
प्रो. गोपीनाथन
एम.ए., पी.एच.डी.
पूर्व कुलपति, य.ग.अ.हिंदी वि.वि., वाराणसी
ई-मेल : govindpanicker@gmail.com

संरक्षक
डॉ. कमल किशोर गोरनका
एम.ए., पी.एच.डी.
एपायम्स, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : kkgorankar@gmail.com

प्रो. टी.आर.भट्ट
एम.ए., पी.एच.डी.
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
कनॉटक वि.वि., वाराणसी
ई-मेल : tihattar@gmail.com

प्रधान संपादक
प्रो. नन्दकिशोर यादव
एम.ए., पी.एच.डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान
ई-मेल : ntpandey65@gmail.com

प्रो. एम.ज्ञानम
एम.ए., पी.एच.डी.
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.स., भैरूर
ई-मेल : gandhigunan@yahoo.co.in

संपादक
डॉ. अनीता गांगुली
एम.ए., पी.एच.डी.
क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.स., हैदराबाद केंद्र
ई-मेल : anitaganguly1954@gmail.com

प्रो. एम.वेंकटेश्वर
एम.ए., पी.एच.डी.
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं भारत अध्ययन विभाग, इण्डू हैदराबाद
ई-मेल : manmar.venkateshwar@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
डॉ. स्वर्ण अनिल
एम.ए., पी.एच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान
ई-मेल : swarnanikhs18@gmail.com

प्रो. आई.एम.मंद्रशेखर रेड्डी
एम.ए., पी.एच.डी.
पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्रचार्य, श्री केंकटेश्वर वि.वि., हिल्सवति
ई-मेल : imreddy.1964@gmail.com

सहयोग
डॉ. एस.राधा
एम.ए., पी.एच.डी.
कला एवं परिकल्पना
डॉ. विजय एम.ढारे
एम.ए., पी.एच.डी.



केंद्रीय हिंदी संस्थान

हैदराबाद केंद्र

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

विश्वनाथ सत्यनारायण साहित्याचार्य थे, साहित्य की हर विधा का शास्त्रीय पक्ष निरूपित करने में वे सिद्धहस्त थे। साहित्य और संस्कृति संतंधी उनके विचार साहित्य के अर्थशास्त्रों के लिए विंन की नवीन दिशाएँ उद्घाटित करता है। इतिहास के संतंध में विश्वनाथ का अभिमत विचारणीय है। उनके अनुसार, इतिहास केवल राजाओं की गाथाएँ ही नहीं होती बल्कि वह मानव जीवन में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सौंदर्य बोध को विकसित करने के निमित्त रचित साहित्य है। गृहलकाय ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रणता के रूप में विश्वनाथ को महारत हासिल थी। मगध राजवंश के इतिहास पर आधारित बारह उपन्यासों की शृंखला 'पुराण वेरा ग्रंथमाला', 'नेपाला राजवंश चरिता' नामक छह उपन्यासों की ग्रंथमाला नेपाल के राजवंश से संबंधित कथावस्तु पर आधारित है जिसमें लेखक ने चारवाक दर्शन से प्रभावित सामाजिक जीवन और मूल्यों को प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार 'काशीर राजवंश चरिता' में काशीर के राजघराने पर आधारित कथावस्तु को छह खंडों की उपन्यास शृंखला में विश्वनाथ सत्यनारायण ने रचा है। उपर्युक्त तीनों औपन्यासिक शृंखलाएँ कवि-सम्राट के वैविध्यपूर्ण रचना कोशल को निरूपित करती हैं। इस युगांतकारी सर्जक की लेखनी से 30 काव्य, 20 नाटक, 10 समालोचनाएँ, 35 कहानियाँ, 70 निबंध, 50 रेडियो नाटक, 10 अंग्रेजी निबंध, 10 रचनाएँ संस्कृत में, सौ से अधिक भूमिकाएँ, संस्कृत से तेलुगु में प्रचुर मात्रा में अनूदित ग्रंथों का प्रणयन हुआ। इनके प्रमुख उपन्यास हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, मलयालम, उर्दू और संस्कृत में अनुवादित और लोकप्रिय हुए। उन्होंने अध्यापन के क्षेत्र में भी खूब ख्याति अर्जित की। वे उच्च कोटि के साहित्याचार्य थे। उन्होंने कशीमनगर गवर्नमेंट कॉलेज, कशीमनगर (वर्तमान तेलंगाना राज्य में स्थित) के प्राचार्य के रूप में 1959 से 1961 तक अपनी बहुमूल्य सेवाएँ दीं।

विश्वनाथ सत्यनारायण को सन् 1970 में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 1971 में उनकी कालजयी रचना 'रामायण कल्पवृक्षमु' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 18 अक्टूबर, 1976 को गुंटूर (आंध्र प्रदेश) में तेलुगु साहित्य के कीर्ति स्तंभ कवि-सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण का निधन हो गया।

संदर्भ सूची :

1. विश्वनाथ सत्यनारायण, रामायण कल्पवृक्षमु (तेलुगु रचना)

ATTESTED

D. P. KHARADÉ
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Patas Dist Sangli

सुब्रह्मण्य भारती की कहानियाँ

डॉ. विजय महादेव गाडे

महाकवि भारती एक तमिल कवि थे। उनको 'महाकवि भरतियार' के नाम से भी जाना जाता है। उनकी कविताओं में राष्ट्रभावित कूट-कूट कर मरी हुई है। यह एक कवि होने के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल सेनानी, समाज सुधारक, पत्रकार तथा उत्तर भारत व दक्षिण भारत के मध्य एकता के सेतु समान थे।

भारती जी का जन्म भारत के दक्षिण प्रांत तमिलनाडु के एक गाँव एट्टयपुरम में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में ही हुई। "मेघावी छात्र होने के नाते वहाँ के राजा ने उन्हें 'भारती' की उपाधि दी।" जब वे किशोरावस्था में ही थे तभी उनके माता-पिता का निधन हो गया। उन्होंने सन् 1897 में अपनी चचेरी बहन चेल्लमल के साथ विवाह किया। वे बाहरी दुनिया को देखने के बड़े उत्सुक थे। विवाह के बाद सन् 1898 में वे उच्च शिक्षा के लिए बनारस चले गए। अगले चार वर्ष उनके जीवन में खोज के वर्ष थे।

बनारस प्रवास की अवधि में उनका हिंदु आध्यात्म व राष्ट्रप्रेम से साक्षात्कार हुआ। सन् 1900 तक वे भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में पूरी तरह जुड़ चुके थे और उन्होंने पूरे भारत में होने वाली कांग्रेस की सभाओं में भाग लेना आरंभ कर दिया था। भगिनी निवेदिता, अरविंद और वंदे मातरम के गीत ने भारती के भीतर आजादी की भावना को और पल्लवित किया। कांग्रेस के उग्रवादी तबके के करीब होने के कारण पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहती थी।

भारती 1908 में पंडिचेरी गए, जहाँ दस वर्ष बनवासी की तरह बितारे। इसी दौरान उन्होंने कविता और गद्य के जरिए आजादी की बात कही। 'साप्ताहिक इंडिया' के द्वारा आजादी की प्राप्ति, जाति भेद को समाप्त करने और राष्ट्रीय जीवन में नारी शक्ति की पहचान के लिए वे जुटे रहे। आजादी के आंदोलन में 20 नवंबर, 1918 को वे जेल गए।

'स्वदेश गीतांगल' (स्वदेश गीत : 1908) तथा 'जन्मभूमि' (1909) उनके देशभक्तिपूर्ण काव्य माने जाते हैं, जिनमें राष्ट्रप्रेम और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति लालकार के भाव मौजूद हैं। आजादी की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए तीन चीजों को वे मुख्य मानते थे- बच्चों के लिए मदरसे, कल-कारखानों के लिए औजार और अखबार छापने के लिए कागज। एक कविता में भारती ने 'भारत का जाप करो' की सलाह दी है।

"तुम स्वयं ज्योति हो माँ, शौर्य स्वरूपिणी हो तुम माँ,
दुःख और कपट की संहारिका हो माँ।"²

18 41



संत परम्परा की खोज

डॉ. कमलेश सिंह नेगी



ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

संत परम्परा की खोज

सम्पादक
डॉ. कमलेश सिंह नेगी

१९९९

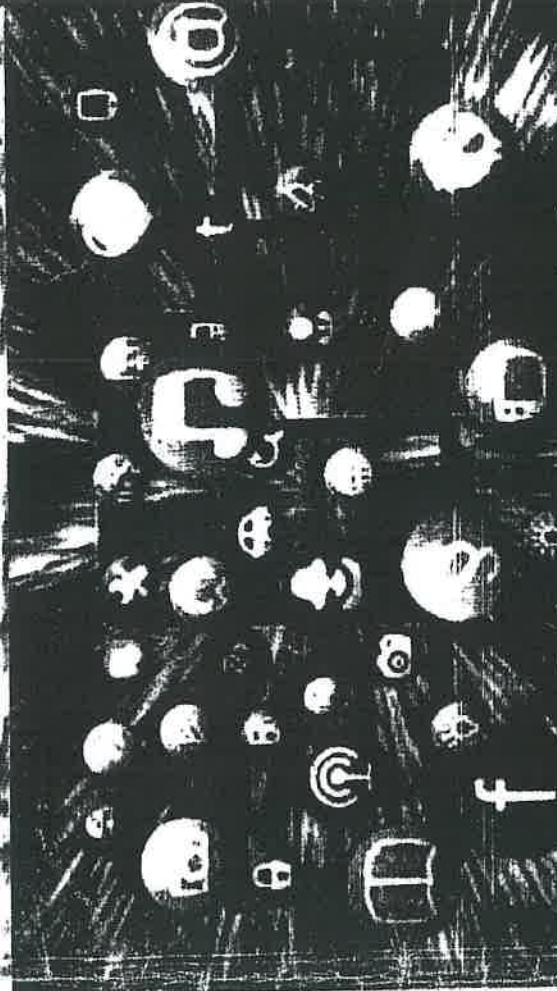
१९९९

आराधना ब्रदर्स
कानपुर

अनुक्रमणिका

- | | | |
|----|--|----|
| 1. | संत रविदास की जीवन यात्रा – डॉ. कमलेश सिंह नेगी | 15 |
| 2. | वैज्ञानिक समाज की स्थापना और संत काव्यधारा – डॉ. अशोक कुमार चौहान | 23 |
| 3. | संत काव्यधारा की प्रेरक शक्तियाँ, वैचारिकता एवं प्रासंगिकता – नेहा | 31 |
| 4. | 'सरबत दा भला' – गुरु नानकदेव – डॉ. विजय महादेव गाडे | 40 |
| 5. | संत काव्यधारा में प्रमुख कवियों की नारी विषयक धारणा – डॉ. मिथलेश गर्ग | 54 |
| 6. | संत कबीरदास का समसामयिक विमर्श – अजय कुमार | 62 |
| 7. | समाज सुधारक संतों के शिरोमणि कबीर – डॉ. श्यामा सिंह | 69 |
| 8. | "सूफी शाह अली हसन" "एक तारुफ" – डॉ. फरज़ाना रिज़वी | 75 |

सोशल मीडिया - समसामयिक परिप्रेक्ष्यमें

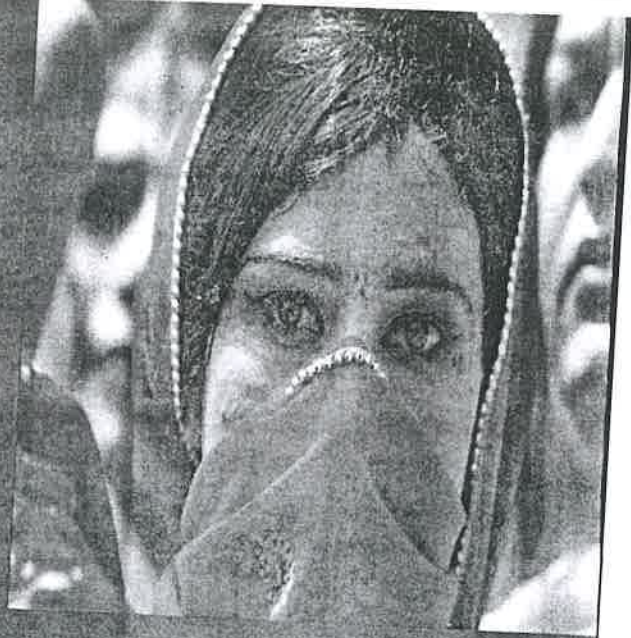


डॉ० विजय महादेव गाडे

18-19

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitalo Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli



21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक

डॉ. एस. वाय. होनगेकर, डॉ. आरिफ़ महात

सह संपादक : विश्वनाथ सुतार



ESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya,
Phulgaon, Maharashtra

21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

डॉ. एस. वाय. होनगेकर
संपादक

डॉ. आरिफ़ महात
सह संपादक

विश्वनाथ सुतार

ए. बी. एस. पब्लिकेशन
वाराणसी-221 007

3. इतिहास और समय की दस्तक : कितने पाकिस्तान
डॉ. रशिद तहसीलदार 376-382
4. भाषिक राजनीति का साहित्यिक पाठ
सतीशकुमार पडोळकर 383-388

6. विविध

1. केदारनाथ सिंह की कविता में - चित्रण-
डॉ. नाजिम शेख 389-393
2. 21 वी सदी के उपन्यास में नारी विमर्श
डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे 394-402
3. मेघना का निर्णय कहानी संग्रह में
मिथिलेश्वर के नव विचार
डॉ. अशोक बळी कांबळे 403-406
4. वैश्वीकता के संदर्भ में भाषा का बिंब
डॉ. विजय महादेव गाडे 407-412
5. 21वीं शती का विमर्श जगत और डॉ. मधु
संधु की कहानियाँ
डॉ. दीप्ति 413-420
6. नमामि ग्रामम उपन्यास में चित्रित ग्रामीण संवेदना
प्रा. आर. बी. भुयेकर 421-424

18-19
डॉ. निर्मल वालिया
अभिनन्दन ग्रन्थ




संपादक
डॉ. अमरसिंह वधान
प्रोफेसर एमरिटस, डी.लिट.

डॉ. निर्मल वालिया अभिनन्दन ग्रन्थ

संपादक : डॉ. अमरसिंह वधान
प्रोफेसर एमरिटस, डी.लिट.

ATTESTED


P. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

हम कोई तर्क-ए-वक्त नहीं
जो लौटकर नहीं आयेगे।
वक्त के ही साथ
अपने निशां छोड़ जायेगे ॥



किताब घर

24/4855, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002



9788170169987

अनुक्रम

पहला खंड

काव्य-कृतियाँ : विश्लेषण एवं मूल्यांकन

'कसक' (2004)

| | | |
|--|--------------------------|----|
| मेरी नज़र में डॉ. निर्मल वालिया | : डॉ. अमरसिंह वधान | 23 |
| 'कसक' में कसक की कसक | : प्रोफेसर शकुंतला कालरा | 28 |
| 'कसक' यादों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति | : डॉ. सत्या उपाध्याय | 41 |
| 'कसक' : आत्मगत पीड़ा का समष्टिगत विस्तार | : इंदिरा किसलय | 51 |
| 'कसक' : नारी संवेदना का सच | : डॉ. श्रीहरि वाणी | 54 |

'पावस के गीत' (2006)

| | | |
|--|---------------------------------------|----|
| जीवन-दर्शन का मधुर काव्य—'पावस के गीत' | : डॉ. सुशील कुमार पांडेय 'साहित्येदु' | 60 |
| 'पावस के गीत' : प्रेम, भक्ति और प्रकृति का सौम्य सामंजस्य | : डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी | 68 |
| नई संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति : | | |
| 'ठहरा हुआ आसमान' | : डॉ. प्रणव भारती | 76 |
| अनुभूति की कोख से जन्मी कविताएँ | : प्रोफेसर चंपा श्रीवास्तव | 79 |
| निर्मल वालिया की शायरी में शाश्वत तत्त्व | : डॉ. नसीम बानू | 84 |
| डॉ. निर्मल वालिया की स्त्रीवादी कविता | : डॉ. अमरसिंह वधान | 89 |

'दीप राग' (2010)

| | | |
|----------------------------|--------------------|----|
| 'दीप राग' में प्रतीक विधान | : डॉ. धीरजभाई वणकर | 96 |
|----------------------------|--------------------|----|

'बंदगी' (2008)

| | | |
|--|---------------------------|-----|
| 'बंदगी' : अनुभूत बोध की पराकाष्ठा | : प्रोफेसर मंजु रानी सिंह | 103 |
| ✓ 'बंदगी' : फर्श से अर्श तक की अंतर्यात्रा | : डॉ. विजय महादेव गाडे | 109 |
| 'बंदगी' : जिस्म से रूह तक का सफ़र | : डॉ. अंजु दुआ जैमिनी | 124 |

'बसेरा' (2008)

| | | |
|-----------------------------------|---|-----|
| 'बसेरा' आध्यात्मिक विमर्श की पंते | : शास्त्रोपासक आचार्य डॉ. चंद्रभूषण मिश्र | 129 |
|-----------------------------------|---|-----|

‘नासूर’ : समसामयिक माहौल का जिंदा कोलाज

डॉ. विजय महादेव गाडे

रचनाकार डॉ. निर्मल वालिया ने अपनी रचना ‘नासूर’ में अनेक विषयों पर अपनी बात रखते हुए मर्म को छूने का प्रयास किया है। अतः यह रचना सिर्फ क़ाबिलेगौर ही नहीं, बल्कि क़ाबिलेतारीफ़ भी है, इसलिए रचनाकार को बधाई। कुल 37 कविताओं का यह काव्य संकलन वर्तमान का जीता-जागता कोलाज ही है। इस काव्य संकलन का समर्पण पृष्ठ ही रचनाकार की संवेदनाओं को स्पष्ट करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की घटनाओं से डॉ. निर्मल जी त्रस्त हैं, अतः उनकी इस चिंता को उन्होंने अपने चिंतन के द्वारा शब्दों के माध्यम से स्पष्ट किया है।

शब्द के बारे में हम जितना सोचेंगे उतना ही अर्थ गहराई से हमारे सामने प्रस्तुत हो जाएगा। शब्द का अर्थ जब अपने पिंड से बाहर निकलकर ब्रह्मांड में पहुँच अपने चरम पर आसीन होता है तो वह ‘शब्द ब्रह्म’ की संज्ञा प्राप्त करता है। आदि कवि बाबा गोरखनाथ ने कहा भी है—

‘सबदहिं ताला, सबदहिं कूँची, सबदहिं जगाया

सबदहिं सबद सूँ परचा हुआ, सबदहिं सबद समाया।’

रचनाकार के इस मत से हर कोई सहमत ही होगा—

‘बिखरे नहीं पढ़े रहा चौराहों पर अपाहिज/किया है इन्हीं से मैंने साहित्य को समृद्ध।’

भविष्य में भी ये शब्द आज़ाद हिंदुस्तान की रखवाली करेंगे, यह एहसास रचनाकार को है और इसलिए वे लिखती हैं—

‘दुश्मन के दुर्ग को ध्वस्त करते रहते इसके बोल

शब्द है यह जय हिंद जय भारत अनमोला।’

इस देश की आज़ादी के लिए देशभक्तों ने बलिदान किया, किंतु आज़ादी के बाद भी शहादत की परम्परा इस देश में आज भी विद्यमान है, जो सही अर्थ में एक शर्म की बात है, यह हमें प्रतीत होता है। सीमा पर रखवाली करने वाले सैनिकों के संदर्भ में यह बात शत-प्रतिशत सही भी है। लेकिन किसी राजनेता के संदर्भ में अगर शहीद शब्द प्रयुक्त होता है तो यह ठीक प्रतीत नहीं होता। आजकल किसी को भी शहीद का दर्जा दिया जाता है और उसे देशभक्त सिद्ध करने के लिए किसी भी शगूफे का आसरा लिया जाता है, जो निःसंदेह ग़लत है ऐसा हम मानते हैं। शहीद अपने लिये कुछ भी नहीं माँगता, किंतु किसी राजनेता की झूठी शहादत का सहारा लेकर अगर वोट माँगे जाते हैं तो उसे हम क्या कहें? हम यहाँ किसी का भी नामोल्लेख करना उचित नहीं समझते, किंतु वर्तमान की इस हालत पर हमें सोचना ज़रूरी है। क्योंकि

2018-19

मुराड

७९

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII

Issue - I

Marathi Part - II

January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

❧ CONTENTS OF MARATHI PART - II ❧

| अ.क्र. | लेख आणि लेखकाचे नाव | पृष्ठ क्र. |
|--------|--|------------|
| १ | सांगली जिल्ह्यातील दारिद्र्याचा अभ्यास प्रा. डॉ. के. पी. वाघमारे | १-७ |
| २ | बहुविधतेमध्ये एकता निर्माण करणारी भारतीय संस्कृती प्रा. कदम संभाजी धोंडीराम | ८-११ |
| ३ | मुस्लिम संत कवितेतील संस्कृती डॉ. सुकुमार दादू आळवे | १२-१४ |
| ४ | कोकणातील, राजापूर शहर आणि तालुका परिसरातील पर्यटन स्थळांची ओळख प्रा. नितीन तुकाराम जाधव | १५-२२ |
| ५ | बहुसंस्कृती वाद व पर्यटन व्यवसाय - एक अभ्यास प्रा. पी. आर. फराकटे | २३-२८ |
| ६ | बहुलसंस्कृतीवाद आणि कुटूंबसंस्थेचे बदलते स्वरूप प्रा. पांडुरंग सखाराम सारंग | २९-३२ |
| ७ | मराठी नाटकातील आशयाच्या वर्गीकरणाने बहुसंस्कृतीवादाचा प्रभाव श्री सुनिल पांडुरंग पालकर | ३३-३६ |
| ८ | जागतिकीरण आणि हरितक्रांतीचे अर्थशास्त्रातील अलिकडील प्रवाह प्रा. आर. एस. माने | ३७-४२ |
| ९ | बहुसंस्कृतीवाद आणि राष्ट्रवाद प्रिया गणपत पोवार | ४३-४८ |
| १० | नागरिकत्व आणि बहुलसंस्कृतीवाद प्रा. एस. एस. संघराज | ४९-५० |
| ११ | यशवंतराव चव्हाण यांची कृषी औद्योगिक समाजरचना आणि राजकारण प्रा. व्ही. एस. पानस्कर | ५१-५७ |
| १२ | बहुसंस्कृतिकतावाद आणि मराठी भाषा सहा. प्रा. भीमराव जोतिबा शिंदे | ५८-६३ |
| १३ | माहिती संप्रेषण एक बहुभाषिक प्रक्रिया प्रा. तानाजी हरी सातपुते | ६४-६६ |

२. बहुविधतेमध्ये एकता निर्माण करणारी भारतीय संस्कृती

प्रा. कदम संभाजी घोंडीराम

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली.

भारतीय संस्कृती ही जगात सर्वश्रेष्ठ संस्कृती असे सर्वसाधारणपणे मानले जाते. ही संस्कृती अचानकपणे निर्माण होत नसते. मानवाच्या निर्मितीपासून मुख्यत्वे मानवी वर्तनापासून ज्या अनेक चांगल्या गोष्टी होत गेल्या आहेत. ती मानवाची संस्कृती आहे. मानवाची प्रत्येक कृती म्हणजे संस्कृती आहे. आणि त्या प्रत्येक कृतीमागे संस्कृती लपली आहे. संस्कृती ही सर्व समावेशक आहे. संस्कृतीमध्ये ज्ञान, कला, श्रद्धा, मनोरंजनाची साधने, भाषा, तत्त्वज्ञान, धर्म, नीतीमुल्ये, कायदा, विचारप्रणाली, राजकीय मतप्रणाली, चालीरीती, रुढी, परंपरा, सवयी, विधी, संस्कार, आचार-विचार, सामुदायिक सणवार, उत्सव, सामुदायिक विवेक, वर्तनपद्धती, संस्था, नीती, सदाचार, शास्त्र, संगीत, अशा विविध गोष्टी संस्कृतीमध्ये येतात. म्हणून ही संस्कृती श्रेष्ठ आहे.

प्रकृती-विकृती आणि संस्कृती या तीन गोष्टी वेगवेगळ्या आहेत. प्रकृती म्हणजे निसर्ग, विकृती म्हणजे निसर्गात होणारा बदल, आणि संस्कृती म्हणजे प्रकृती आणि विकृतीमध्ये केला जाणारा बदल होय. संस्कृती ही मानवाने स्वतःच्या जगण्यासाठी निवडलेला सोईस्कर आणि सोपा मार्ग म्हणावयास हरकत नसावी. भारत वर्षापासून संस्कृतीची निर्मिती झाली आहे असे मानले जाते. संस्कृती ही अचानकपणे निर्माण होत नसते. तिचा प्रवास हा अखंडपणे चालू असतो. जगातील अनेक संस्कृतीपैकी भारतीय संस्कृती ही एक वेगळी आहे. कारण या संस्कृतीमध्ये संघर्षपेक्षा सर्वांना एकत्र घेवून जाण्याची, सर्वांना एकत्र सामावून घेण्याची मोठी शक्ती आहे. भारतीय संस्कृतीचे चार विभागात विभाजन करता येते.

- १) भारताचा प्राचीन वाङ्मयीन व साहित्यिक वारसा .
- २) भारतीय धर्म व तत्त्वज्ञान.
- ३) भारतीय कला, स्थापत्य आणि मूर्तीविज्ञान.
- ४) भारतीय दैनंदिन जीवन

या वरील चार असून विभाग असून संस्कृती ही मानवाने आपले जीवन जगण्याची जी नियमावली बनविली आहे. तिलाच संस्कृती म्हणावे. कारण या संस्कृतीमधून लोकजीवन, समाज व्यवस्था, राजकीय स्थिती, संस्कृतीमध्ये ज्ञान, कला, श्रद्धा, मनोरंजनाची साधने, भाषा, तत्त्वज्ञान, धर्म, नीतीमुल्ये, कायदा, विचारप्रणाली, राजकीय मतप्रणाली, चालीरीती, रुढी, परंपरा, सवयी, विधी, संस्कार, आचार-विचार, सामुदायिक सणवार, उत्सव, सामुदायिक विवेक, वर्तनपद्धती, संस्था, नीती, सदाचार, शास्त्र, संगीत या सर्वांचे प्रतिबिंब पडलेले असते. या संस्कृतीचा निर्माता त्या-त्या संस्कृतीमधील सामाजिक, आर्थिक व्यवहारासंबंधीचे प्रतीत होणारे संकेत किंवा संकेतानुसार होणारे आचरण तसेच त्यामागील प्रक्रियात्मक साखळी धार्मिक श्रद्धा, आचार आणि धर्म संघटना, लोकंरंजनाची साधने याबाबत विचार केला जातो. भारतीय संस्कृती ज्ञानावर आधारलेली म्हणजेच ही संस्कृती

बुद्धिप्रधान संस्कृती आहे.ती उदार विचारसरणीवर आधारलेली असून या संस्कृतीमध्ये गरजेनुसार बदल होत गेले आहेत. म्हणूनच संस्कृतीचे दोन भाग पडतात.

१) शाश्वत तत्त्वांचा भाग

२) अशाश्वत तत्त्वांचा भाग

या जगात सर्वत्र दोन गोष्टी दिसून येतात. आपले शरीर बदलत असते, परंतु आंतरिक आत्मा तोच असतो. समाजातील व्यक्ती जन्मतात मरतात, तरीही समाज चिरंतन आहे. नदीच्या प्रवाहातील जलबिंदू सारखे बदलत असतात.परंतु प्रवाह कायम असतो.

भारतीय संस्कृती ही यम आणि नियमावर आधारलेली आहे.यम म्हणजे धर्मातील त्रिकालबाधित भाग सत्य, अहिंसा, संयम, दया, प्रेम, परोपकार,ब्रह्मश्चर्य या गोष्टींचा समावेश यम होतो.तर संध्या स्नान करणे, खाणे पिणे, जानवे घालणे,गंध लावणे, हजामत करणे.या गोष्टी नियमात येतात. म्हणजेचमानवी जीवून जगत असताना आपल्यावर जी बंधने घालून घेतो ती म्हणजे 'यम' होय.य ह्या बंधनात राहून दैनंदिन जीवनात मानवी जीवनास ज्या क्रिया कराव्या लागतात ते नियम होय.यालाच आपण नीती आणि सदाचार असेही म्हणू शकतो. इंग्लंडमधिल थोर साहित्यिक बर्दास रसेल यांनी नीती ही दोन प्रकारची आहे असे म्हटले आहे. एक ऋण नीती व दुसरी धन नीती, ऋण नीती समाजाच्या हिताचे काम करित असते समाजाच्या सामाजिक, आर्थिक बाबतीत विचार करतात. तर धन नीतीवाला उपासक समाजासाठी चांगले शिक्षण मिळवे, स्त्रियांची सुधारणा होण्यासाठी प्रयत्न करावे, समाजातील अन्याय दूर करण्यासाठी सातत्याने प्रयत्न करत असतो.तो दलितांच्यासाठी कार्य करतो. प्रसंगी स्वतःचे सर्वस्वी बहाल करण्यास तयार राहतो.

भारतीय संस्कृतीमध्ये साधू संन्याशी,संत, तंत, पंत, योगी स्त्री पुरुष स्त्रीयांना फार महत्त्व आहे.यामध्ये भक्तीहे सर्वांचे साधन होते. त्यामध्ये काही साधू संन्याशी, योगी यांच्या भक्तीमध्ये श्रद्धेइतकीच अंधश्रद्धा भरलेली होती.यांच्याकडून अनेक प्रकारचे ज्ञान मिळत होते. भारतीय संस्कृतीत गुरुला फार महत्त्व होते. कारण सर्व जगाला ज्ञान देणारा गुरुच असतो. भारतीय संस्कृती ही ज्ञानावर आणि अनुभवावर आधारलेली आहे. या भारतीय संस्कृतीचा पाया ज्ञानावर आणि अनुभवावर रचला गेला आहे.म्हणून ज्ञान हा भारतीय संस्कृतीचा आधार आहे.ज्ञान हे अनंत आहे.ते न संपणारे आहे. म्हणूनच भारतीय संस्कृती श्रेष्ठ असल्याचे दिसून येते. भारतीय संस्कृती ही ज्ञानावर आणि अनुभवावर आधारलेली असल्यामुळे तिच्यामध्ये ऐक्याची भावना दिसून येते. या भारतीय संस्कृतीवर अनेक आक्रमणे झाली व होत आहेत. अनेक जाती धर्माचा शिरकावझाला आहे. वरिष्ठी भारतीय संस्कृतीत भेदभाव नाहीत.तर अभेदात अभेद व भेदात अभेदता हे भारतीय संस्कृतीचे वैशिष्ट्य आहे.संतांनी संन्यास धर्माची शिकवण दिली.तसेच संस्कृत भाषेचे ज्ञान लोकभाषेत आणण्याचे महान कार्य त्यांनी केले आहे.माणसाला ज्ञानाशिवायच जगताच येत नाही. सूर्याची किरणे सर्वांनाच हवी असतात. त्याप्रमाणे ज्ञानाचीही किरणे सृष्टितील सर्वच जीवमात्रास हवी असतात. ज्ञान ही काही लोकांची मक्तेदारी ,कठनदारी असणे समाजावर अन्याय होय. म्हणून या अन्यायाविरुद्ध अनेक संतांनी बंड केले आहे. संत बुक्करयम म्हणतात.की,अरे घोक्यांनो पाठीवर भार वाहून अर्थ कळत नाही.

वेदांचातो अर्थ आम्हांसीच ठावा

येरांनी वाहवा भार माथा ॥

वेदांचा भार वाहणारे स्वतःकडेच ज्ञानाचा ठेवा असल्याचा अविर्भाव करत होते. त्यांना योग्य उत्तर देण्याचा प्रयत्न तुकाराम महाशयानी केला आहे. भारतीय संस्कृतीचा सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ म्हणून गीता ग्रंथाकडे निर्देश केला जातो. भारतीय समाजाची उन्नती करणारे सारे शास्त्रच जणू त्यात सामावले आहे.

आर्ता जिज्ञासुर्थीर्था ज्ञानी व भारतर्षभ ।

आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी व ज्ञानी

अशा प्रकारे भारतीय श्रेष्ठ मानल्या गेलेल्या ग्रंथाचे चार प्रकारचे भक्त आहेत. आर्तता—म्हणजे केवळ ओरड करणारे किंवा दुःखाचे गुणगाण करणारे, दुःख सांगणारे होय. हे भक्त देवाजवळ 'मन कण रे निर्मळ' ह्यासाठी न येता त्याच्यावर स्वतः उपाय शोधतात्याचा उपाय देवानेच करावा असे आणि सर्व जगाचे दुःख हे आपलेच दुःख आहे. जगाच्या, समाजाच्या दुःखाने तो आर्त भक्त दुःखी होतो. या आर्ततेतूनच उदार जिज्ञासा उत्पन्न होते. दुःख तर आयुष्यभर आपली पाठ सोडणार नाही. मग हे दुःख का येते? याची कारण मीमांसा हा विज्ञान भक्त करतो. समाजामध्ये विविधप्रकारची रोगसई पसरते उदा. प्लेग का येतो? हे पहाण्यासाठी तो लेंसची लस स्वतःच्या सरीसृच टोकून वेतो आणि जिज्ञासेपोटी रोगाचे निदान शोधतो. अर्थार्थी म्हणजे कल्याण भारतीय संस्कृती लोकांचे कल्याण होण्यासाठी उपाय शोधत असते. आणि शेवटी ज्ञान ही मानवाच्या कित्तासुद्धा मूळ असणारी, त्याच्या जीवनाचा मार्ग दाखविणारी गोष्ट आहे. अशा चार मार्गाने भक्ती केल्यास मानवाचे जीवन सफल आणि सुखी होते. भारतीय संस्कृतीने सांगितले आहे. आपला देश मोठा असून या देशात बहुविध धर्म, पंथ, संस्कृतीचे, भाषा बोलणारे लोक असून ते बहूविध प्रांतात राहतात. पण सर्वांची राष्ट्रीय भावना मात्र एकच आहे. अनेक जाती, धर्म, पंथ संघ असून त्यांच्यामध्ये जातीय तणाव आहे. वेगळे घडतात, पण तरीही सर्वांमध्ये सामंजस्य सहकार्य बहुभाव व प्रेम आहे. राष्ट्रीय ऐक्य आहे. हिंदुच्या यात्रा—जत्रा, सणवार, जयंत्या, उत्सवांस जर मुस्लिम, शीख, ख्रिश्चन, जर शुभेच्छा देत असतील तर, आणि हिंदुशिवाय जे इतर धर्म आहेत त्यांच्या सण, उत्सवास हिंदूजर शुभेच्छा देत असतील तर सामाजिक ऐक्य आहे असेच म्हणावे लागते. म्हणून बहुविधतेमध्ये एकता हे भारतीय संस्कृतीचे वैशिष्ट्य आहे. दुसरी गोष्ट म्हणजे वैचारिक, सामाजिक, धार्मिकवाद या सर्व जातीधर्मांमध्ये जरूर असतील पण मनात एकी मात्र नक्कीच आहे. समान भाषा, समान धर्म, समान इतिहास, समान देश हे राष्ट्रसंकल्पनेचे घटक आहेत. आणि हे भारतीय संस्कृतीमध्ये आहेत. एकात्मकता ही मुलाधार संकल्पना आहे. एकात्मकतेशिवाय राष्ट्राची उभारणी अशक्य आहे. पायाला टोचले तर डोक्यात अश्रू उभे राहतात. पूलगांवा येथे सैन्यावर झालेल्या हल्ल्यानंतर संपूर्ण भारतभर दुःख, निषेध मोर्चे काढाले. ते कोणत्या एका विशिष्ट जातीधर्माचे नव्हते. तर ते संपूर्ण अखिल भारतीय मानव समाजाचे होते. हे दुःख संपूर्ण अखिल भारतीय मानवाने व्यक्त केले आहे. म्हणजेच राष्ट्रीय एकात्मकतेचा मुलाधार आणि संपत्ती मानव आहे. समाजातील सर्वच अबाल—वृद्ध, स्त्री—पुरुष हे समान आहेत त्यांना समान संधी ही आहेत. ग्रामीण, शहरी, आदिवासी, स्त्रियांना समान सहजीवनाचा या संस्कृतीने अधिकार बहाल केला आहे.

भारतात संत, पंत, तंत, थोर समाज सेवक, राष्ट्रीय पुरुष सर्व सजीव निर्जिव वस्तू, वेगवेगळे कलाकार, शास्त्रज्ञ, संस्कृतीमधून लोकजीवन, समाज व्यवस्था, राजकीय स्थिती, संस्कृतीमध्ये ज्ञान, कला, श्रद्धा, मनोरंजनाची साधने, भाषा, तत्त्वज्ञान, धर्म, नीतीमुल्ये, कायदा, विचारप्रणाली, राजकीय मतप्रणाली, चालीरीती,

रुढी, परंपरा, सवयी, विधी, संस्कार, आचार-विचार, सामुदायिक सणवार, उत्सव, सामुदायिक विवेक, वर्तनपद्धती, संस्था, नीती, सदाचार, शास्त्र, संगीत या सर्वांचे संरक्षण व त्यांना अभय देण्याचे काम ही संस्कृती करत आहे म्हणजेच बहुविध. संस्कृतीची रूपे आहेत. या सर्वांना या संस्कृतीमध्ये मानाचे स्थान आहे. एखाद्या पशूची नखळी म्हणून हत्या केली जाते, पण तो पशू याच. संस्कृतीमध्ये पूजनिय असतो, भारतीय लोक संस्कृती, लोक देवते, देवदेवता, विविध संस्कृती, आणि यामध्ये केल्या जाणाऱ्या उपासना, विधी या वेगवेगळ्या असल्या तरी एकमेकांना सहकार्य करतात. हे भारतीय संस्कृतीचे वैशिष्ट्य आहे. त्यामुळे भारतीय संस्कृतीचे स्वरूप सर्व संग्राहक आणि विकसनशील आहे. भारतीय संस्कृती कोण एकाची मीरासदारी नाही. ती केवळ निषादांची, द्रविडांची किंवा आर्यांचीही नाही जे भारतात आले राहिले, येथील आचार विचारचा स्विकार करून भारतवर्षी झाले त्या सर्वांची ही संस्कृती आहे. या भारतात हिंदू संस्कृतीचा प्रभाव जरी असला तरी मुस्लिम, शीख, बौद्ध, ख्रिश्चन, आदिवासी संस्कृतीचे लोक आहेत. काही ईश्वरवादी आहेत. तर काही अनिश्वरवादी आहेत. द्वैती अद्वैती आहेत. अवैदिक आहेत. या सर्वांच्या उपास्य देवता भिन्न असल्या तरी आचार विचार, पद्धती, तत्त्वज्ञानही भिन्न आहे पण तरीही एकता आहे. इथे नृत्य, नाट्य, कथा, मिथके, रुढी, परंपरा, रीती रिवाज, वेगवेगळे असूनही एकलपतेचे, एकात्मकतेचे दर्शन होते.

भारतीय संस्कृतीचा विचार करता असे दिसून येते की, इथे विविध जाती, धर्म, पंथ, पोषाख, आहार, विहार वेगवेगळे असूनही एकात्मकतेचे दर्शन होते म्हणूनच भारतीय संस्कृतीमध्ये बहुविधतेत एकता दिसून येते.

संदर्भ

१. कर्णिक मधु मनीषा : सांस्कृतिक महा गष्ट १९६० ते २०१०, भाग-१, मुंबई (संपा) महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, प्रथमावृत्ती २०११.
२. भोसले द. ता. : लोकजीवन आणि लोकसंस्कृती, मुंबई महाराष्ट्र राज्य (संपा) साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, प्रथमावृत्ती २००५.
३. सूर्यवंशी जी. एस. : धर्म निरपेक्षता आणि राष्ट्रीय एकात्मकता, औदुंबर प्रयत्न प्रकाशन १९८९.
४. साने गुरुजी : भारतीय संस्कृती, कोल्हापूर, रिया पब्लिकेशन्स, प्रथमावृत्ती २०१२.
५. रेगे मे.पु. : हिंदु धार्मिक परंपरा आणि सामाजिक परिवर्तन, वाई सर्वधर्म अध्ययन केंद्र, प्राज्ञपाठशाला मंडळ २००२.
६. डॉ. भट श्रीपाद : संस्कृतीपरिचय पुणे श्री बालमुकुंद लोहिया संस्कृत आणि भारतीयविद्या अध्ययन केंद्र, टिळक महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ. २००८

2018-19

43

**One-Day
Interdisciplinary National Conference
on
Language Skills and Personality Development
15th Dec. 2018**



Organizer

**Marathi Department,
The Kagal Education Society Sanchalit,**

D. R. Mane College, Kagal -

NAAC Reaccredited B Grade(CGPA 2.6T)

Website:- www.drmanecollege.edu.in

Email :- drm60.cl@unishivaji.ac.in

Ph.02325 244176



| Sr. No. | Author Name / नाव | Research Paper / शोधनिबंध | Page No. |
|---------|--------------------------|--|------------|
| ३४ | डॉ. सविता व्हटकर | नृत्याभिनयाचे नवरस | ११९ ते १२२ |
| ३५ | डॉ. आनंद वारके | वक्तृत्व सादरीकरण | १२३ ते १२५ |
| ३६ | विजयालक्ष्मी देवगोजी | पत्रलेखन : परंपरा आणि विशेष | १२६ ते १२८ |
| ३७ | डॉ. अतुल चौरे | भाषिक कौशल्य आणि बदलत्या प्रसारमाध्यमातील रोजगाराच्या संधी | १२९ ते १३३ |
| ३८ | डॉ. अजित कांबळे | पटकथा: स्वरूप व लेखन | १३४ ते १३८ |
| ३९ | स्वाती मगदूम | मराठी ब्लॉगविश्व | १३९ ते १४१ |
| ४० | डॉ. सुवर्णा पाटील | व्यक्तिमत्त्व विकास आणि देहबोली | १४२ ते १४३ |
| ४१ | डॉ. गुंडोपंत पाटील | बातमी मागची बातमी : एक नाट्यात्म | १४४ ते १४७ |
| ४२ | प्रा. लता ऐवाळे | कविता सादरीकरण : एक कला | १४८ ते १५० |
| ४३ | डॉ. निधी पटवर्धन | सूत्रसंचालन : एक प्रभावी संभाषण कौशल्य | १५१ ते १५२ |
| ४४ | प्रा. नीता कदम | बातमीमागील बातमी | १५३ ते १५५ |
| ४५ | डॉ. शिवाजी होडगे | व्यक्तिमत्त्व आणि देहबोली | १५६ ते १५८ |
| ४६ | प्रा. संभाजी कदम | व्यक्तिमत्त्व विकास व देहबोली | १५९ ते १६१ |
| ४७ | डॉ. मानसी जगदाळे | संभाषण कौशल्य : स्वरूप आणि महत्त्व | १६२ ते १६३ |
| ४८ | प्रा. मनिषा नायकवडी | व्यक्तिमत्त्व आणि देहबोली | १६४ ते १६८ |
| ४९ | प्रा. प्रवीणसिंह शिलेदार | वक्तृत्व कला आणि सादरीकरण | १६९ ते १७१ |
| ५० | प्रा. शशिकांत चव्हाण | भाषेच्या संवर्धनाची मनोभूमिका तयार करणे | १७२ ते १७३ |
| ५१ | प्रा. आशालता खोत | लेखन कौशल्य व मुलाखत लेखन | १७४ ते १७७ |
| ५२ | डॉ. बाळासाहेब चव्हाण | संवाद कौशल्य आणि व्यक्तिमत्त्व विकास | १७८ ते १८२ |
| ५३ | संगिता मोहिते | कथाकथन | १८३ ते १८७ |
| ५४ | प्रा. विजयकुमार रेंदाळकर | दूरदर्शनचा संस्कृती व व्यक्तिमत्त्व विकासावर प्रभाव-परिणाम | १८८ ते १९१ |
| ५५ | डॉ. कांचन नलवडे | भाषिक कौशल्ये व रोजगाराच्या संधी | १९२ ते १९४ |
| ५६ | शिवाजी देसाई | भाषिक कौशल्ये आणि रोजगाराच्या संधी | १९५ ते १९७ |
| ५७ | डॉ. हेमंत कुंभार | कादंबरी आणि चित्रपटाची भाषा | १९८ ते २०० |
| ५८ | प्रा. विजया पवार | व्यक्तिमत्त्वाची ओळख - संभाषण कौशल्य | २०१ ते २०५ |
| ५९ | संदीप मुंगारे | व्यक्तिमत्त्व आणि देहबोली | २०६ ते २०८ |
| ६० | ज्योती गरबडे | पत्रलेखन | २०९ ते २११ |
| ६१ | लक्ष्मण साठे | व्यक्तिमत्त्व विकासाकारिता देहबोली | २१२ ते २१४ |
| ६२ | श्रीरंग तराळ | सूत्रसंचालन | २१५ ते २१८ |
| ६३ | प्रा. रेखा पसाले | बातमीलेखन स्वरूप | २१९ ते २२१ |
| ६४ | लोहिता रेडेकर | जाहिरात लेखन | २२२ ते २२४ |
| ६५ | सुशांत उपाध्ये | ब्लॉगलेखन | २२५ ते २२६ |
| ६६ | मतीन शेख | कुस्ती निवेदन : एक भाषिक कौशल्य | २२७ ते २२९ |
| ६७ | अजितकुमार पाटील | व्यक्तिमत्त्व आणि देहबोली | २३० ते २३२ |

व्यक्तिमत्वविकास व देहबोली

प्रा. संभाजी धोंडीराम कदम
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली.

ज्याला देहबोली समजण्याची कला अवगत आहे. अशा व्यक्तिला भेटणे म्हणजे तुमचे मन वाचायला मिळण्याइतके विलक्षण आहे. स्पर्श, काळजी घेण्याची प्रवृत्ती, हात बांधून उभे राहणे, डोक्याने वेध घेणे या सर्व प्रत्यक्ष जोडणाऱ्या कृती आहेत. या खूणांची तीव्रता आणि वारंवारता जाणून घेतल्यास त्या बघणाऱ्या माणसाला समोरच्या व्यक्तीस आपल्याशी संबंध ठेवण्याची इच्छा नाही हे समजू शकते.

आपले डोळे असंख्य प्रकारच्या भावना व्यक्त करू शकतात उदा. इच्छा, उत्कंठा, राग अथवा अविच्छा.

नजरेची भाषा, 'नजर' म्हणजे आपल्या डोळ्यांनी दुसऱ्या व्यक्तिस पाहणे. त्याचाला काही वेळा 'टक' लावणे असाही म्हणतो. या नजरेने पहाण्याचे अनेक प्रकार आहेत, डोळे वाटारणे, डोळा मारणे. (डोळ्याची उघड झाप करणे, नजरेस नजर भिडविणे, नजर जमीनीकडे लावणे काही वेळा भूवाया उडविण्याचे प्रकार दिसून येतात. माणसांनी मधून मधून टक लावून बघणे. (३० सेकंदांमध्ये पाच सेकंद) इ. धमकीदायक अथवा विचित्र वाटते आणि म्हणून ते लगेच दुसरीकडे बघतात. जर ती अथवा तो तुमच्याकडे स्थिर नजरेने बघत असतील तर त्या व्यक्तिला एकमेकांशी संबंध वाढवायचे असतात.

जर नजरेची ओळख झाली आणि स्वागत केले गेले तर पुढचे मार्ग खुले होतात आणि नजर दृढ केली जाते. एखादी व्यक्ती तुमच्या जेव्हा उभ्या असते आणि तिचा खांद्या खालचा भाग थोडा पुढे ढकलल्यासारखा वाटतो. इतर खुमश माणसांच्या दोन्ही खिशांमध्ये हात घालून उभे राहणे आणि ती जर मुलगी असेल तर अवखळपणे कपाळावरचे केस मारणे, जर आपण एकमेकांकडे फार काळ बघत असाल आणि एकमेकांच्या जवळ सरकत असाल तर ती निश्चितपणे प्रणवाची (वेगळी भावना) इच्छा दर्शवते.

देहभाषा समजून घेण्यास शिकणे ही महत्त्वाची गोष्ट आहे आणि ती आपल्या वेगळेपणात भर टाकते. कारण त्यामुळे तुमचे संबंध निश्चितपणे दृढ होण्यास मदत होते जेव्हा मानव जन्मास येतो तेव्हापासून त्याच्या हालचाली सुरू असतात. ध्वनी बरोबर त्याच्या देहबोलीचा म्हणजेच हावभावांच्या जोलीचा विकास होत असतो. लहान मूल आपल्या आईकडे पाहून असते किंवा अन्य त्याच्या हालचाली उदा. पाय हलविणे, हात हलविणे इ. अनेक हालचाली चालू असतात त्यातून त्या मुलाला हे सूचवायचे असते की माझ्याकडे लक्ष द्यावे. देहबोली अर्थात बाँडी लॉवेज हा शब्द आजकाल अतिवापराने अगदी परवलीचा शब्द बनला आहे. देहबोलीला व्याकरण, संभाषण कौशल्य. व्यक्तिमत्व विकास : एखाद्या माणसाच्या आकांक्षा, कल्पना, ध्येये, मूल्ये, मनोधर्म व स्वभावविशेष या संबंधीचा सुसंघटीत आकृतीबंध म्हणजे व्यक्तिमत्व होय.

मानवाच्या दैनंदिन जीवनामध्ये सामाजिक आंतरक्रियामध्ये इतरांवर पडलेली व्यक्तीची पहिली छाप अतिशय महत्त्वाची असते. म्हणजेच क्रमशः खालील छाप श्रिंखला खालील छाप असते. पुढच्या व्यक्तीवर पाडलेली छाप (चांगल्या व वाईट अर्थाने) महत्त्वाची असते. त्यावर त्या व्यक्तीचे व्यक्तिमत्व उठून दिसत असते. काही माणसं अंतरंगी वाईट प्रवृत्तीची असून बाह्यरूपी इतरांवर फार मोठा प्रभाव पाडण्यात यशस्वी होतात म्हणजेच ती माणसं खोटं नाट बोलून समोरच्या व्यक्तीवर आपल्या व्यक्तिमत्त्वाचा ठसा उमठवत असतात आणि अशा लोकांना भूलणारी व्यक्ती असतात. म्हणतात ना काय भूललियाशी वरलीया रंगा! सध्याचे जग हे भूलभूलैयाचे आहे. एखाद्या प्रियकराने प्रियेशीला भूलवावे त्याप्रमाणे आहे.

आपले बाह्यरूप इतके चांगले, स्वच्छ, पारदर्शी हवे की जेणेकरून आपले बाह्यरूप म्हणजेच व्यक्तिमत्व ह्या व्यक्तिमत्त्वाची छाप इतरांवर पडली पाहिजे. म्हणजेच आपले बोलणे, चालणे, आपल्या हालचाली आणि आपले हावभाव होय. व्यक्तिमत्व विकास म्हणजे आपल्या शारीरिक हालचाली, लकबी, बोलणे, चालणे होय. व्यक्तिमत्व विकास आपोआप घडत नाही. त्यासाठी आपण स्वतः ते विकसीत केले पाहिजेत. व्यक्तिमत्व विकासात स्व-ओळख महत्त्वाची असते आपल्यामधील गुण, अवगुण स्वतःलाच ओळखता यावयास हवे. तरच आपण इतरांशी समजावून घेऊ शकतो. जर आपला दृष्टीकोन विधायक नसेल सतत आपण इतरांकडे संशयीदृष्टीने पहात असू आणि आपल्या मनामध्ये दुसऱ्या व्यक्तिबद्दल वाईट भाव असतील तर आपण कधीच त्यांना चांगले म्हणणार नाही. तुकाराम महाराजांच्या मते सुख पहाता जवापाडे दुःख डोंगराएवढे असे आपण समजतो. तुकाराम महाराजांनी असे मानले नाही. आपण आज ना उद्या आपला

विकास होणार आहे यावर विश्वास ठेवला पाहिजे. कारण आशावादच मानवाला प्रगतीपथावर नेवून पोहचवित असतो. आशावादी माणसाने दुसऱ्याकडून कितीही त्रास झाला तरी सदैव आनंदी असायला हवे.

आत्मविश्वास ही यशाची पहिली पायरी आहे. प्रत्येकाने स्वतःला ओळखायला शिकले पाहिजे. आत्मविश्वासाने आपणास हव्या त्या गोष्टी करू शकतो शिवाय आपल्याला स्वतःबद्दलची खात्री वाटून स्वतःची क्षमताही ओळखता येते. या परिश्रमासोबत कष्ट करावयाची तयारी असावी लागते. ज्याच्याकडे परिश्रम करावयाची तयारी नाही तो जीवनात कधीच यशस्वी होणार नाही म्हणून जीवनात येणारी प्रत्येक आव्हाने स्विकारून आणि भरपूर परिश्रम करून प्रत्येक व्यक्तीने आपले व्यक्तिमत्त्व सुधारावयास हवे.

व्यक्तिमत्त्वाचा विकास घडवित असताना माणसाच्या मनावर असणाऱ्या ताण-तणावाचे व्यवस्थापन सर्वात महत्त्वाचे आहे. त्यामध्ये कायम सकारात्मक दृष्टिकोन, ध्येयनिष्ठा, प्रयत्नाची पराकाष्ठा आणि स्वतःमधील सत्यपणा यामुळे व्यक्तिमत्त्व विकास होतो. निरोगी, क्रीयाशील प्रगल्भ, सृजनशील व विकसनशील व्यक्तिमत्त्व बनविणे म्हणजे व्यक्तिमत्त्व विकास होय.

व्यक्तिमत्त्वाचा होण्यासाठी व्यक्तीकडे अनेक कौशल्याची गरज असते त्यामध्ये भाषिक कौशल्यांची गरज अधिक महत्त्वाची आहे. यामध्ये श्रवणे, वाचन, लेखन व भाषण ही चार प्रकारची कौशल्ये प्रत्येक व्यक्तीकडे असावयास हवी तरच त्याच्या व्यक्तिमत्त्वाचा विकास झपाट्याने होईल. याबरोबरच भाषण कौशल्य जेवढे महत्त्वाचे तेवढे हावभावही महत्त्वाचे मानवाचा विकास मुळ हावभावातून झाला आहे. प्रथम हावभावांची भाषा म्हणजेच मूक भाषेचा अर्थात देहबोलीचा विकास सर्वात पहिला मानावयास हवा. देहबोली ही शारीरिक हालचाली, वेगळेपणे हावभाव यातून सिद्ध होत असते. म्हणून देहबोलीला एकेकाळी जास्त महत्त्व होते ते महत्त्व आज कमी झाले असले तरी संपूर्णपणे संपलेले नाही हे वास्तव आहे.

देहबोली/मूकभाषा

देह म्हणजे शरीर या शरीराच्या केवळ हालचालीवरून भाषा तयार होते. त्या भाषेला मूक भाषा किंवा देहबोली असे म्हटले जाते. मूकभाषा म्हणजे तोंडातून ब्र ही न काढता आपण काही गोष्टीस मूकपणाने संमती देतो त्यालाच मूकभाषा असे म्हणतात पशूपक्षांची भाषा, प्रेमीकांची हावभावांची भाषा ही मूकभाषाच असते. व्यक्तीच्या मनातील विचार दुसऱ्या व्यक्तीपर्यंत पोहचविण्याचे माध्यम म्हणजे भाषा होय. भाषेचे दळण-वळण व विचारांचे आदान-प्रदान म्हणजे भाषा हाव.भाषेमध्ये प्रत्यक्ष बोलणे असते. या भाषेशिवाय ही हावभावातून आपल्या मनातील भावना दुसऱ्याला सहजपणे आणि स्पष्टपणे कळतात त्याला हावभावांची भाषा असे म्हटले जाते. उदा. अंगठा दाखविणे, पाठ दाखविणे, दात विचरणे इ. क्रिया होत. हावभावेखील संकेतबद्ध असतात. उदा. डोके उजवीकडून डावीकडे व डावीकडून उजविकडे हलविणे म्हणजे नकार देणे व हेच डोके हळू हळू उजवीकडून थोडे खालीवर करीत डावीकडे वळविण्याने होकार कळतो.

शरीराच्या प्रत्येक भागातून व अवयवांतून आणि त्यांच्या हालचालीतून हावभाव निर्माण होत असतो आणि त्यातूनच मूकभाषेची, हावभावांच्या भाषेची निर्मिती होत असते.

देहबोली : देहबोली हे व्यक्तीच्या भावनिक अंतरंगाचे बाह्य प्रतिबिंब आहे. व्यक्तीची भावनिक अवस्था तिच्या देहबोलीतून व्यक्त होते. त्या त्या प्रत्येक क्षणी त्या व्यक्तीला काय वाटत हे त्याच्या प्रत्येक कृतीतून आणि हावभावातून जाणून घेणे ही एक महत्त्वाची किल्ली आहे. म्हणजेच व्यक्तीची भावनिक अवस्था जाणून घेण्याची देहबोली ही किल्ली आहे. म्हणजेच व्यक्तीची भावनिक अवस्था जाणून घेण्याची देहबोली ही गुरुकिल्ली आहे. यामुळे एखादी व्यक्ती एखाद्या भावनिक अवस्थेत काय बोलत आहे ते ऐकणंआणि कोणत्याही परिस्थितीमध्ये ती बोलत आहे हे लक्षात घेणे दोन्हीही महत्त्वाच आहे. यामुळेच वस्तुस्थिती आणि वास्तव व अद्भुतता यातील फरक कळावयास वेळ लागत नाही.

देहबोली मानवाच्या उत्क्रांतीपासून विकसित झाली आहे उदा. सद्यःस्थितीमध्ये माकडांच्या हालचाली हे याचे उत्कृष्ट उदा. आहे. देहबोलीचा कृतीशील अभ्यास १९६० पासून सुरू झाला. चार्लस डार्विनचा उत्क्रांतीवाद आणि देहबोलीचा शैक्षणिकदृष्ट्या अभ्यासाचे ध्येय डार्विनचे आहे त्याने १८७२ मध्ये माणूस आणि प्राण्यांमधील अभिव्यक्ती (The expression off the emotitation in man and animals) या विषयावरच पुस्तक प्रकाशित केलं आहे.

देहबोली संशोधनाचा उद्गाता अल्बर्ट मेंहॅरबियन १९५० याने संशोधन केले. इंग्रजीमध्ये (इवू डरपर्सॅरसरा) असे म्हटले जाते. मराठी मध्ये देहबोली म्हटले जाते. मानवाच्या जन्मावेळी त्याला ध्वनीचे वरदान मिळाले आहे. या ध्वनीच्या माध्यमातून मानवाने व्यवहार सौकर्याचे साधन म्हणून भाषेची निर्मिती केली आहे. पण ध्वनीशिवाय एक मार्ग पूर्वीपासून अस्तित्वात आहे ती म्हणजे. देहबोली अथवा हावभावांची भाषा.शरीरातील प्रत्येक अवयवांचा हालचालीतून संदेशाची निर्मिती होते हे संदेश म्हणजेच संदेशाची भाषा होय.

चेहऱ्यावरील हावभाव : समोरच्या माणसाचा चेहरा वाचता आला पाहिजे असे म्हटले जाते. म्हणजेच समोरच्या माणसाच्या चेहऱ्यावरील भावभावना समजून घेतल्या पाहिजेत. त्याच्या डोळ्यांच्या हालचाली, खानाखाणू, पापण्यांची उघडझाप, डोळे वटारणे, बुबळे फिरविणे, डोळा मारणे इ. चेहऱ्यावरील ओठांच्या हालचाली, दात विचकणे, जिभ तोंडातून बाहेर काढणे, तोंडाचा चंबू करणे, चेहरा वेडावाकडा करणे, नाक मुरडणे, नाकावर बोट ठेवणे, भुवयांची हालचाल, ओठांच्या हालचाली इ. गोष्टींमुळे चेहऱ्यावरील भावभावना समोरच्या व्यक्तिला काय म्हणावयाचे आहे हे सांगून जातात म्हणून चेहऱ्यावरील भाव हे देहबोलीचे अत्यंत महत्त्वाचे साधन आहे.

हातांच्या हालचाली : हातांच्या हालचाली अनेक प्रकारच्या आहेत केला इशारा जाता जाता हे सर्वांना माहित आहे. आनंद, दुःख, राग, द्वेष व्यक्त करण्यासाठी, निरोप देणे, आनंद व्यक्त करण्यासाठी टाळ्या वाजविणे दुःख किंवा राग व्यक्त करण्यासाठी मूठ आपटणे इ. हातांच्या क्रीया करून संदेश निर्मिती करता येते. व्याख्यान, भाषण, नृत्य करत असताना हातांच्या हालचाली महत्त्वाच्या आहेत. तीन माकडांच्या हातांच्या गोष्टी सर्वांना माहित आहेत. हाताचा पंजा, तळवा आणि प्रामुख्याने हातांच्या बोटापासून अनेक संदेश देता येतात हे संदेश म्हणजेच देहबोली होय.

मान व डोके : आजपर्यंत जेवढे भाषेतून संदेश दिले गेले तेवढेच संदेश देहबोलीतून सुद्धा देता येतात याबद्दल अॅलन व बार्बरा पीज यांनी त्यांच्या देहबोलीविषयी सर्व काही या ग्रंथातून स्पष्ट केले आहे. शरीरातील सर्वच अवयव बोलके असतात माणसावर कुठल्याही कठीण परिस्थितीत शरीराचे अवयव हे अडथळ्याप्रमाणे माणसाचे रक्षण करतात. कितीही परिस्थिती बिकट असली तरी त्या परिस्थितीपासून स्वतःला वाचविण्यासाठी स्वतःचे हातपाय हलविणे ही स्वभाविक प्रक्रिया आहे. मान व डोक्याच्या हालचालीतून अनेक होकारार्थी व नकारार्थी संदेश मिळत असतात. नृत्य प्रकारामध्ये देहबोली पहावयास मिळते. कथक नृत्य, दशावतारी सोंग, नाटक इत्यादी प्रकारामध्ये देह बोलीला अत्यंत महत्त्वाचे स्थान आहे. कथक व दशावतारी खेळामध्ये मानेच्या हालचाली महत्त्वाच्या असतात.

पायांच्या हालचाली : पायांच्या प्रत्येक कृतीतून वेगवेगळे संदेश मिळत असतात म्हणून देहबोलीमध्ये पायांच्या हालचालींना विशेष महत्त्व आहे. उजवा किंवा डावा पाय वर उचलून जमिनीवर आपटणे म्हणजे नकार, तिरस्कार व्यक्त करणे होय, पायावर पाय घासणे, दोन्ही पायांना तिढा घालणे अशा अनेक प्रकारांनी पायांच्या हालचालीतून संदेश देता येतात.

दैनंदिन जीवनामध्ये मानव झोपेतून उठल्यापासून रात्री परत झोपेपर्यंत अनेक हालचाली करत असतो. अनेक कृती करत असतो त्या प्रत्येक कृतीतून वेगवेगळे संदेश लोकांपर्यंत पोहचत असतात. मानव दररोज १३ महत्त्वाच्या हालचाली करत असतो त्यामध्ये मान डोलावणे, डोके हलवणे, खांदे उडविणे, कपडे झटकणे, पाय पसरणे, हात पसरणे, डोळे हलविणे, शरीराचा कोन करणे, चष्मा डोक्यावर ठेवणे, शरीराच्या कोणत्यातरी भाषास सतत स्पर्श करणे, डोळ्यांची उघडझाप करणे, केसांवर हात फिरविणे अशा अनेक गोष्टीतून संदेश निर्माण केले जातात आणि त्या संदेशाचे रूपांतर हावभावांच्या भाषेत म्हणजेच देहबोलीत केले जाते.

सारांश :

देहबोली, मूळभाषा, हावभावांची भाषा म्हणजेच ध्वनी शिवाय तयार झालेली केवळ चिन्हात्मक आणि संदेशात्मक हावभावांची भाषा म्हणजे देहबोली होय. अनेक ठिकाणी या देहबोलीचा उपयोग केला जातो. गुप्त संदेश देण्यासाठी अत्यंत उपयुक्त अशी भाषा आहे. या भाषेचा उपयोग मानव बोलीभाषेप्रमाणे दैनंदिन जीवनात करत आहे. गुन्हेगारांचा शोध त्या गुन्हेगारांच्या चेहऱ्यावरील हावभावातूनच कळतो म्हणून ज्याला समोरच्या व्यक्तिके हालचाली कळतात तोच जीवनाच्या यशोशिखरावर सहज पोहचतो.

संदर्भ :

१. अॅलन व बार्बरा पीज, देहबोलीविषयी सर्व काही, भोपाळ, मंजुल पब्लि. अनुवाद: पेठे रोहिणी, शिंग हाऊस, द्वितीयावृत्ती, २०१६.
२. <http://www.drrogya.com>
३. श्री. गजेंद्रगडकर श्री. न. भाषा आणि भाषाशास्त्र, पुणे व्हीनस प्रकाशन द्वितीयावृत्ती, १९७९.



CONCENTRATION OF GOSAVI COMMUNITY IN MAHARASHTRA STATE

Dr. Mrs. N. S. Gaikwad.

Head,

Department of Economics,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawdi (M.S.)

ABSTRACT:

The present research paper is based on the concentration of Gosavi community in Maharashtra. The Gosavi population spread over all in Maharashtra, but their distribution is uneven. They have no sustainable income source, therefore they spared for the searching of job. Present study is based on the data received from Socio-Economic Survey of BARTI. Bhatia's Location quotient methods have been apply for the present investigation. 2011 Census data is considered for the calculation of concentration value. The distribution and concentration affected socio-economic-cultural condition of the region and source of occupational platform. The high concentration is observed in Greater Mumbai district; whereas, Mumbai sub-urban and Kolhapur districts having moderate concentration and remaining districts comprises low concentration of Gosavi NT population in Maharashtra. .

Keywords: Gosavi, socio-economic status, concentration, Pattern, Distribution.

INTRODUCTION:

Tribes, living in different parts of India, are the distinct segment of our society. They are generally found in forest and hilly region which are inaccessible and where the poor interaction takes place. They have their own way of life which is quite different from the so-called advanced societies. They fight and adjust themselves with the surrounding environment for their livelihood. Each tribal group is distinct from the other in their socio- economic practices and ethnic affinity. A large number of tribal communities in India itself are 'an index of their ethnic diversity' (Ahmad,1999). Each tribal group has its own ecosystem,



ECONOMIC STUDY OF PROFITABILITY OF RAISIN PRODUCERS IN SANGLI DISTRICT

Mrs. Dr. N. S. Gaikwad

Associate Professor & Head,

Dept. of Economics,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi,

Tal.-Palus, Dist.-Sangli.

ABSTRACT:

Indian economy is partly dependent upon agriculture. Commercial crops like grapes, pomegranates, cashews, bananas, apples, orange, almond etc. are supported to Indian economy. Raisin or Kishmish or Manuka are made from grapes. Sangli raisin market is famous in India due to higher raisin production. In the present paper, an attempt has been made to study the net return and profitability of raisin production in Sangli district. Primary data have collected through structured questionnaire. There are 2320 grape producers in Sangli district out of them 50 per cent of table, 48.3 per cent is raisin and 1.7 per cent wine grape producer. A sample size of 560 raisin producer have used and the respondents were randomly selected. For the comparison, net return and profitability analysis approach is used. Net returns from small firm, medium firms and large firms are Rs336521, Rs 458189 and Rs 660885 respectively. The profitability of raisin production in study area is 66.64 per cent. The highest profitability is seen in case of large firm i.e. 95.25 per cent, followed by medium firms (64.40 per cent) and small firms (43.18 per cent). Major constraints faced by processing firm were marketing and price fluctuation. This study suggests that government should take necessary action to guard the investors of grape processing industry. The main aim of the present paper is to study of net return and profitability in the Sangli District.

Key Words: Raisin, Cost of production, Net profit and Profitability etc.

INTRODUCTION:

Raisin is one of the most important dried products obtained by drying of grapes (Sawhney et al, 2009). Raisin is the second most important product of the grapevine, wine being the first (Shanmugavelue, 1989). Raisin is of a great economic importance for many countries (Pangave, 2002). It is widely produced in different parts of the world. India is an important raisin producer of in the



AN ECONOMICAL STUDY OF IMPACT OF GLOBALISATION ON INTERNATIONAL TRADE

Mrs. Dr. N. S. Gaikwad

*Associate Professor & Head,
Dept. of Economics,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi,
Tal.-Palus, Dist.-Sangli.*

ABSTRACT:

In globalisation era, the restrictions of international trade are reduced. The impact of that an international trade is open to do the marketing of goods any ware in the world. Anybody licences holder can sell their goods in the world market, even though the farmers are also send their products in the world market by procedure. Considering this fact the researcher have to economic study of international trade, i.e. the silent features, importance of international trade and import-export pattern have been considered in the present investigation. Government reports, related books, magazines, current bulletins are used for preparation of the paper. International trade is beneficial for all the trading partners static gains from trade are the increase in well-being of the countries entries into trade with each other.

INTRODUCTION:

International trade is the result of geographical specialization and division of labour, Generally Speaking. The underlying reason of both the domestic and international trade is the same i.e. differences in the availability of resources. Within an economy, the resource endowments of the citizens differ. As a result each individual specializes in the production which he can produce most efficiently with his resources. He then exchanges his output with the outputs of other producers. In the same way countries differ in terms of their resource endowments e.g. quantity and quality of land and labour, climatic conditions, capital and technology, since no country is self sufficient in all the resources, each country tends to specialize in the production of those goods which can be

The Proceeding Book of UGC Sponsored National Conference on

Human Rights Education and Indian Scenario

मानव अधिकार शिक्षण आणि भारतातील सद्यस्थिती

36

18/19



NAAC- 'B' (2.67)



ज्ञान-विज्ञान-विमुक्तये



■ Chief Editor ■

Dr. M. Y. Cholekar-Bachulkar

Principal,

Shri Vijaysinha Yadav Arts & Science College, Peth Vadgaon

■ Editors ■

Dr. Prashant P. Yadav

Coordinator - NCHREIS

Dr. Sachin J. Pawar

Secretary - NCHREIS

Shri. Vijaysinha Yadav Arts and Science College,

Peth Vadgaon, Tal: Hatkanangale, Dist: Kolhapur- 416 112 (MS)

Ph. No. (0230) 2471599, www.vympv.ac.in

अनुक्रमणिका

| | | |
|----|--|-----|
| 41 | बालकांच्या मोफत व सक्तीचा शिक्षणाचा अधिकार २०१०: तत्पुढी, अंमलबजावणीतील समस्या व त्यावरील उपाययोजनांचा अभ्यास" सौ. वर्षा मस्के डॉ. सुर्यकांत मस्के | 237 |
| 42 | मानवी हक्क आणि भारतीय स्त्री संतोष व्युनाथ कोळी | 242 |
| 43 | मानवी हक्क व बालहक्क संरक्षण डॉ. लंबे पी. के. | 245 |
| 44 | "मानवी हक्काचे शिक्षणाच्या माध्यमातून विकास" प्रा. श्रीमती सलीमाबेगम अमीनसो मुजावर, प्रा. डॉ. संभाजी भास्करी भोसले, डॉ. प्रमोद शहाजी पांडव, | 247 |
| 45 | "मानवी हक्क आणि प्राथमिक स्तरावर शिक्षण हक्क प्रा. जी. व्ही. हरपडे | 252 |
| 46 | भारतातील शिक्षणाचा मुलभूत हक्क याबाबतची धोरणे व सद्यस्थिती प्रा. दत्तात्रय आण्णा होनमाने. | 255 |
| 47 | मानवी हक्काच्या संदर्भात शिक्षण व शिक्षकाची भूमिका डॉ. ज्ञानदेव ए. ए. श्रीमती. ज्ञानदेव रेणुका संतोष | 261 |
| 48 | भारतीय राज्यघटना आणि मानव अधिकार प्रा. मच्छिंद्रनाथ भास्करी मुशंबशी | 264 |
| 49 | शेतकऱ्यांचे जीण आणि त्यांच्या हक्काचे दर्शन (इंद्रजित भालेराव यांच्या 'आम्ही काबाडाचे धनी' कथाकाव्याच्या अनुषंगाने) प्रा. डॉ. मालती रवींद्र पाटील | 268 |
| 50 | इतिहास अध्यापनातून मानवी हक्क शिक्षण प्रा. डॉ. नवनाथ ज्ञानदेव इंदलकर | 273 |
| 51 | राज्य घटनेतील मानवी हक्क कायद्याचे स्थान आणि मानवी हक्क शिक्षणाची गरज डॉ. लता शिवाजी पाटील श्रीमती भारती तुकाराम साकेकर | 277 |
| 52 | "भारतीय संविधान आणि मानवी हक्क" प्रा. श्रीमती खान जेवा बरकतुल्ला प्रा. श्रीमती. पांडरे रेखा पुंडलिक | 280 |
| 53 | "स्त्रियांचे मानवी हक्क व कायद्याची भूमिका" प्रा. ए. ए. घाडके | 285 |
| 54 | मानवी हक्क शिक्षण-संकल्पना, गरज आणि महत्त्व श्रीमती उज्वला रघुनाथ बंडगर डॉ. पाटील एम. ए. | 291 |
| 55 | मानवीहक्क व वृद्धकल्याण संजय राजाराम माने | 293 |
| 56 | महात्मा फुले यांच्या साहित्यातील मानवी हक्क प्रा. विनायक रा. राऊत | 298 |
| 57 | मानवी हक्क आणि शिक्षण प्राचार्य डॉ. वाद्यमोडे गणपती रामहरी | 302 |
| 58 | मुस्लिमांच्या कवितेतील मानवी हक्कांचे दर्शन डॉ. राजेशान शोभेदिवान | 304 |
| 59 | जल प्रदूषण व मानवी हक्क एक अभ्यास श्री. अजितकुमार भिगराव पाटील | 310 |
| 60 | मुलींच्या समस्या आणि मानवी हक्क प्रा. डॉ. सौ. एन. एस. गायकनाड | 317 |
| 62 | भारतीय राज्यघटना आणि महिलांचे अधिकार प्रा. अंगद नरसिंग पाटील | 321 |

मुलींच्या समस्या आणि मानवी हक्क

प्रा. डॉ. सौ. एन.एस. गायकवाड

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय भिलवडी ता.पलूस, जि. सांगली पिन ४१६३०३

मोबाईल नंबर : ९८८१०९११६१

प्रस्तावना :-

प्रत्येक मानवाला जन्माबरोबरच हक्क प्राप्त झालेले असतात. व्यक्तीच्या व्यक्तीमत्वाच्या विकासासाठी त्याला सन्मानाने जीवन जगण्यासाठी मानवी हक्क आवश्यक असतात कोणत्याही वंशनाशियाय कोणत्याही परिस्थितीत हक्क लागू होतात आणि ज्यांची कोणत्याही अधिकाराशी तुलना करता येत नाही. त्याला मानवी हक्क असे म्हणतात. या मानवी हक्कांच्या जाहीरनाम्यात सर्व माणसे जन्मतः स्वतंत्र असतात सर्वांना समान दर्जा असतो. धर्म, जात, वंश, भाषा, रंग, लिंग, शिक्षण, जन्मठिकाण राजकीय, सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थिती अशा अनेक कारणावरून व्यक्ती व्यक्तीमध्ये कोणत्याही प्रकारचा भेदभाव न करता सर्वांना समान हक्क मिळावेत सामाजिक न्याय प्रस्तावित व्हावा. याविषयी मानवी हक्कांचा जाहीरनाम्यात महत्त्व दिले आहे. मानवी हक्काची संकल्पना मानवाच्या नैसर्गिक हक्कातून किंवा अधिकारातून निर्माण झालेली आहे. मानवी हक्क म्हणजे व्यक्तीचे असे अधिकार जे त्याला त्याच्या जन्माबरोबर प्राप्त झालेले असतात. त्याचे कोणत्याही राज्यांकडून किंवा राजसत्तेकडून उल्लंघन होऊ शकत नाही. तसेच ते कोणत्याही कायद्याशिवाय उपयोगात येऊ शकतात हे व्यक्तीच्या व्यक्तीमत्वाच्या विकासासाठी त्याला सन्मानाने जीवन जगण्यासाठी मानवी हक्क आवश्यक असतात जे हक्क लागू होतात. आणि ज्यांची कोणत्याही अधिकाराशी तुलना करता येत नाही. त्याला 'मानवी हक्क' असे म्हणतात. या हक्कामुळे मनुष्याला मानवी प्रतिष्ठा आणि सामाजिक कल्याण सुनिश्चित होते या मानवी हक्काला १० डिसेंबर १९४८ ला एक वैशिष्ट्य रूप प्राप्त करून सार्वभौम मानवी हक्काची घोषणा करण्यात आली. मानवी हक्काची सनद म्हणजे एक महत्वाचा आंतरराष्ट्रीय दस्तऐवज आहे. १९४९ साली संयुक्त राष्ट्रसंघाची (युनोची) स्थापना झाली त्यानंतर मानवी हक्काचा विचार सुरु झाला युनोने १० डिसेंबर १९४८ रोजी 'मानवी हक्काचा जाहीरनामा' मंजूर केला ती आठवण जोपासण्यासाठी जगभर १० डिसेंबर हा दिवस 'जागतिक मानवी हक्क दिन' म्हणून साजरा केला जातो.

अभ्यासाचे महत्त्व :-

प्राचीन काळापासून स्त्रीला समाजात गुलामगिरीची वागणूक मिळत होती स्त्रीची धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक अशा सर्वांचे क्षेत्रात गुलामगिरी हेतुपूर्वक जतन केली जात होती पूर्वी सामाजिक मान प्रतिष्ठेचा बाबतीतील उच्चनीचता अशा विषयमतेच्या विविध प्रकारची रचना समाजात होती. त्यासाठी स्त्रीयांनी अनेक सामाजिक, आर्थिक व राजकीय लढे दिले आहेत. संघर्ष केले आहेत. स्त्री पुरुषाला समानतेची हप्पी देणारा संविधानाचा १४ वा अनुच्छेद सर्वात

महत्वाचा आहे. त्यामुळे प्रत्येक भारतीय व्यक्तीला कायद्यापुढे समानता आणि संरक्षण मिळाले आहे.

अभ्यासाची उद्दिष्ट्ये :-

१) मुलींना विचार प्रगट करण्याचा हक्क आहे. याचा अभ्यास करणे.



International Conference

On

**"Advanced and Innovative Practices in
Commerce & Management, Science & Technology,
Humanities, Languages and Their Role in
Achieving the Exponential Growth"**



Date : 16th February 2019

Organised by

Shri Narayanrao Babasaheb Education Society's

SHRI VENKATESH MAHAVIDYALAYA, ICHALKARANJI

In collaboration with

**SHIVAJI UNIVERSITY Commerce and Management
TEACHERS ASSOCIATION (SUCOMATA)**

and

**BVDU's INSTITUTE OF Management and
ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT, (IMED) Pune**

Editorial Board

Chairman : Prin. Dr. Vijay Annaso Mane

Editor-in-chief : Dr. Naushad Makbool Mujawar

Co-editor : Mrs. Sunita Hansraj Ambawade

VOLUME

4

Web : www.venkateshcollege.com
Mail Id : mshrivenkatesh@yahoo.com

| | | | |
|----|---|---|--------------|
| 41 | Dr. Abid Yunus Salati | Essentials To Be In Pursuit Of Service Excellence | 1107 to 1110 |
| 42 | Dr. Dattatraya T. Chavare | A Study Of Performance Evaluation Of Kisan Veer Satara Co-Operative Sugar Factory, Bhuinj | 1111 to 1116 |
| 43 | Chavan Vaibhavi Vijay | An Effective Risk Management of Project Risks: A Standard Framework And Methodology To Be Practiced in Practice | 1117 to 1124 |
| 44 | Mr. Sambhuji S. Sawant | कोल्हापूर जिल्ह्यातील कुक्कुटपालन व्यवसायातील समस्यांचा अभ्यास | 1125 to 1130 |
| 45 | प्रा. डॉ. अरूण योगेश्वर जाधव | शेतीचे वाढतेव्यापारीकरण आरोग्याला घातक | 1131 to 1134 |
| 46 | प्रा. शाहुराज व्यंकटराव गायकवाड | सार्वजनिक आय-व्यय आणि डॉ.आंबेडकर | 1135 to 1138 |
| 47 | प्रा. मडावी ए. बी. | शिक्षण क्षेत्रातील आव्हाने-एकक्षेत्रियअभ्यास | 1139 to 1146 |
| 48 | प्रा.शोभा संभोजी | ग्रामीण स्त्री उद्योजकांची समस्या व उपायोजना | 1147 to 1149 |
| 49 | प्रा.दत्तात्रय देविदास शिंदे | कोल्हापूर जिल्ह्यातील कंजारघाट जमातीमधील सामाजिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास | 1150 to 1159 |
| 50 | Dr. Khot Madhuri Rajaram | वारणा बालवाद्यवृंदाची सांस्कृतिक वाटचाल | 1160 to 1161 |
| 51 | प्रा. डॉ. सी. एन. एस. गायकवाड | हवामान बदलाचे कृषिक्षेत्रावरील परिणाम | 1162 to 1163 |
| 52 | Dr. Shital Bhagwan Newase | Area, Production And Productivity Of Groundnut In India | 1164 to 1170 |
| 53 | Mr. Appasaheb P. Sutar & Dr. Meena B. Poidar | Level Of Agricultural Development In Sangli District : Application of Development Index (1991-2011) | 1171 to 79 |
| 54 | D.T. Hujare, Prof. R.S. Kadam, Dr. D.V. Suryawanshi & Dr.V.S.Moon | Spatio-Temporal Patterns Of Sex Ratio In Kolhapur District Of Maharashtra State | 1180 to 1183 |
| 55 | Dr. G. J. Fagare & Mr. Charudatta D. Gunde | A Study Of Welfare Facilities And Labour Satisfaction With Special Reference To Engineering Industry In Sangli, Miraj, Kupwad Corporation | 1184 to 1188 |
| 56 | Mr. Onkar Dattatray Kulkarni | Class Consciousness In John Braine's Room At The Top | 1189 to 1190 |
| 57 | Dr. Anna K. Patil & Dr. Amit A. Shete | Evaluation Of Overdues Position Of Selected Non-viable PACS in Drought -Prone Areas of Sangli District | 1191 to 1200 |

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)

Volume - 8 | Issue - 7 | April - 2019

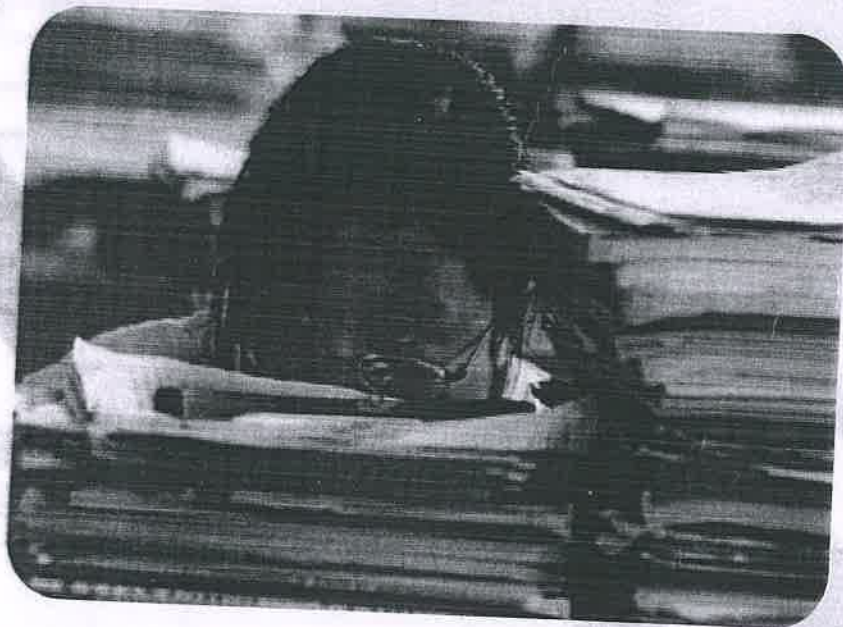
REVIEW OF RESEARCH

International Online Multidisciplinary Journal



10
2018-19

ACADEMIC STRESS AND ADJUSTMENT OF XII STANDARD STUDENTS



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal., Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

dg

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal. Palus Dist. Sangli.

ABSTRACT: Stress is simply the body's non-specific response to any demand made on it. Stress is not by definition synonymous with nervous tension or anxiety. Stress provides the means...



Page No :-47

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

International Online Multidisciplinary Journal

STATEWIDE RESEARCH

ISSN: 2278-3490

All research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed refereed by members of the Editorial Board. Papers will include investigation in universities, research in government and industry with research interest in the general subject.

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok Yakkaldevi

Iran



Bijan Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Kamani Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



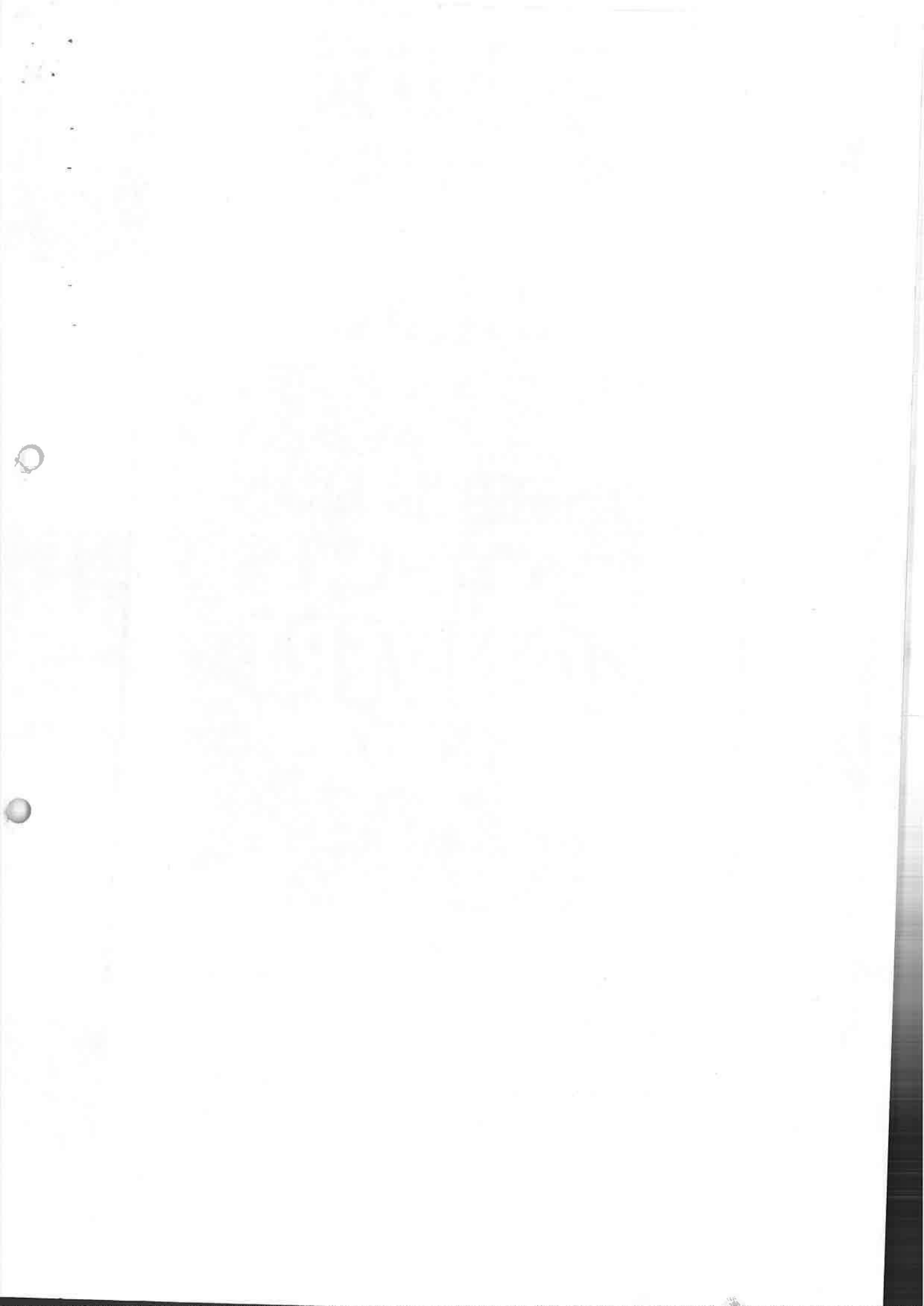
Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- * MENDALEY
- * GOOGLE SCHOLAR
- * CITULIKE
- * ENDNOTE
- * ZOTERO
- * DRJI

Content

| Sr. No. | Title and Name of The Author (S) | Page No. |
|---------|--|----------|
| 1 | Globalization and Changing Human Values in The Select Short Stories of Manoj Das Dr. Snehal Ratnakar Hegishte | 1 |
| 2 | Modernisation of Muslim Students in Relation to Some Background Factors Dr. Bimlesh Narain Mishra | 5 |
| 3 | Impact of Resource Based View on Organizational Competitive Advantage Prof. Sushant E. Revankar | 11 |
| 4 | Tamil Translation of Team Effectiveness Scale among Local Workers of Tamilnadu Priyanga K. and Nancy M. | 19 |
| 5 | A Scrutiny of Caste Stigma in Rabindranath Tagore's <i>Chandalika</i> Dr. I. Rufus Sathish Kumar | 25 |
| 6 | The Analysis of Mutual Fund's Performance Dr. Manisha Khaladkar and Mr. Harshad K. Binsale | 29 |
| 7 | Multi Dimensional Approach of Attacking Poverty in India - Some Illustrations Dr. R. Sambasivam and Dr. S. Jayakumar | 39 |
| 8 | Academic Stress and Adjustment of XII Standard Students Dr. Shrikant Bhanudas Chavan | 47 |
| 9 | An Assessment of Bale Oromo Indigenous Environmental Ethics and Practice: Case of Harena Buluk and Dinsho Woreda, Ethiopia Ketema Tafa and Dr. Irshad Ahmad | 63 |
| 10 | Effect of Self Confidence on Sports Performance among Sports Players Mr. Milindkumar Sullad and Dr. H. S. Jange | 69 |





Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631(UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: **Dr. Shrikant Bhanudas Chavan.** Topic:- **Academic Stress And Adjustment Of XII Standard Students.** College : **Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).** The research paper is original & innovative it is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of **April 2019.**



Authorised Signature

Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
E-mail: ayisri2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

LBP
Laxmi Book
Publication's

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, *Yakkaldevi*
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli, Maharashtra, India

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief



REVIEW OF RESEARCH



IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

ISSN: 2249-894X

VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

ACADEMIC STRESS AND ADJUSTMENT OF XII STANDARD STUDENTS

Dr. Shrikant Bhanudas Chavan
Head, Dept. of Psychology,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).



ABSTRACT :

Stress is simply the body's non-specific response to any demand made on it. Stress is not by definition synonymous with nervous tension or anxiety. Stress provides the means to express talents and energies and pursue happiness; it can also cause exhaustion and illness, either physical or psychological, heart attacks and accidents. The important thing to remember about stress is that certain forms are normal and essential. As the body responds to various forms of physical or psychological stress, certain predictable changes occur. These include increased heart rate, blood pressure and secretions of stimulatory hormones. These responses to stress will occur whether the stress is positive or negative in nature. It is known as the 'flight or fight' mechanism.

Claude Bernard (1878) emphasized that an animal's life depends on the milieu interior that is, "on extracellular fluids, which provides the physico-chemical conditions for the correct functioning of cells".

Cannon (1935) identified the sympathetic nervous system as an important orchestrator of responses to challenges. He emphasized the role of epinephrine secreted from the adrenal glands, "since it is carried everywhere in the body by the blood and has the same effect on the internal organs as the sympathetic impulses".

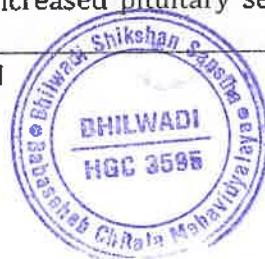
Various researches have been conducted to investigate the effect of academic stress on academic achievement of College students. (Hatcher et. al.1991; Hammer et. al. 1998; Trocquet et. al. 2000; Calderon et. al. 2001; Kelly et. al. 2001; Quayle et. al. 2005; Watering and Rijt, 2006). There are two types of stress, eustress and distress. Eustress is an important and motivating factor and is considered normal and necessary for students' progress activity. It is not only our thoughts and feelings but also our behavioural mode as well. Distress causes negative phenomenon and discomfort, and can have serious effects on students which can lead to physical illness and psychological disorders. (Mcvicar A. et. al. 2003).

Gillihan, (2005) pointed out that if student fails to cope effectively with academic stress, then psychological and emotional problems may occur. If the stress becomes chronic, then students, coping process collapses. According to Pfeiffer, (2001) severe to chronic academic stress can influence students' preparation and concentration of study and subsequently academic performance.

KEYWORDS : academic stress, College students

INTRODUCTION

Stress produces both biological and psychological consequences. The effect of stress both biological and psychological is described by a model developed by Hans Selye. The model, General Adaptation Syndrome (GAS) has three stages (Selye 1976). The first stage, the alarm - occurs when an individual becomes aware of the existence of stressors. In the alarm stage, number of physiological and biochemical reaction arise, such as increased pituitary secretions, respiration, heart rate and blood



turning on 'the juices' and preparing to define it. It is the 'flight or fight' response in action. According to *Levine and Ursin (1991)* "Stress is a part of an adaptive biological system, where a state is created when a central processor registers an informational discrepancy". According to *Steinberg and Ritzmann, (1990)* stress can be defined as an under load or overload of matter, energy or information input to, or output from, a living system.

Sources of Stress:

Vulnerability of different sources of stress may be determined by an individual's personality characteristics, past experience and cultural background and so on.

Environmental Stress:

Living or working in an uncomfortable physical environment may be stress inducing. Excessive noise, heat, lack of ventilation, crowd an environment with strong smell and bright light.

Through environmental factors may not induce stress directly, they may increase vulnerability to stress. Organic solvents like carbon monoxide, carbon disulphide, pesticides, adversely affect individual's physical and psychological functioning. It is found that stress induced by exposure to carbon monoxide leads to symptoms like und irritability usual fatigue, lack of energy and mood irritability.

Change - Induced Stress:

As early as 1967 *Holmes and Rahe* identified 43 life events (later revised to 63) inducing major stress. Most of the events were found to demand readjustment to life because of change. They arrived that the weightage of stress for each event depending upon the severity and duration that change demands.

The main reason for changed induced stress is the fear of the unknown. The best coping strategy is to move from known to unknown.

Personality Related Stress:

The personality characteristics of an individual to a large extent are responsible for appraising a situation as stressful or otherwise.

An individual self - esteem with its need for power, locus of control and value system play a key role in cognition mediation of appraisal of the situation.

Interpersonal Issues Causing Stress:

There are several interpersonal situations causing stress. It can be observed that more often than not, the extreme negative stress reaction have origin in interpersonal issues. In close interpersonal relationships deep emotions are involved.

Stress Caused By System Issues:

'System' refers to any organization, family, school, clubs and other social enterprises in which an individual functions. An average individual distributes his / her time between these systems. Life becomes tough, if any of these places, is excessively stress inducing. The stress related to 'system' has highly relevant in Indian society in the context of changing demands in the family of workplace.

Types of Stress:

The Major Types of Stress Can Be classified into four different categories.

Eustress:

Eustress can also apply to creative endeavors when a person needs to have some extra energy / creativity, Eustress kicks in to bring them the inspiration they need.

Impaired Task Performance:

Every person in the world is facing some or other kind of stress. We cannot do our work properly with full force and energy. There are many obstacles in the way. We cannot concentrate or remember thing when actually we want, we cannot create something new, lose confidence and we even cannot do daily routine duties properly.

Description of Cognitive Functioning:

Stress affects higher abilities of human being quickly. Many research found that human abilities such as remembrance, cognitive, comprehension can be affected by stress.

Kaynan (1987) studied how a person reacts in stressed and stress free situation.

- A. Obstruction in remembrance process results increase in oblivion.
- B. Acute stress develops restfulness, confusion, disorder.
- C. Lack of emotion.
- D. Passivity or inactiveness.
- E. Loss of flexibility in thought and roughness in behaviour.
- F. Person becomes undirected.

Burnout:

Stress related work causes human body, mind, feelings upset. Negativity about self efficiency / capacity, fatigue / tiredness, weariness, loss of power, unenthusiasm such symptoms can be seen. Negativity about self, doubts about ability and confidence so a person become negative. Such negativity results people don't attempt.

Post Traumatic Stress Disorder:

Stress in personal and social life causes disorder and confusion in life. Such trauma wormwood longs last in brain that cans results into disorder. Hurtful impact never be forgotten such life changing incidents can disturb human mentality i.e. rape, terrorist attack and accident. When person experiences such trauma. Impact of such trauma is deep inside. Consequences of such experience are as follow:

- A. Experience trauma in sleep and sudden waking from sleep.
- B. Such experience can coagulate mind.
- C. Emotion coldness.
- D. Loneliness.
- E. Stiffness in behavior.
- F. Obstruction in social relationship.
- G. Over anxiety, feeling of being culprit.
- H. Addiction of drugs.
- I. Prone to suicide.
- J. Melancholia.

As time passes few symptoms get less but it is not possible to forget particular experience.

Psychological Problem and Disorder:

Psychologist thinks that age - old stress creates psychological problems and mental disorder. For example: setback in educational development improvement from rape is not easy. Few get alcoholic, some other get drug addict, acute frustration, broken mind, stress, mental disorder such mental deficiencies are created because of stress.

Physical Illness:

Symptoms of much physical illness are found in psychological development. Person causes of such physical illness can be in the mind. Medicine has a little effect on such diseases. Psychiatrists find causes of such illness deep in mind.

with challenges in life. In the academic life this term can be considered with lack of ability to complete the course work, lack of easily understanding the curriculum or syllabus and inability to adjust in to academic environment. Personal inadequacy is most responsible source of academic stress. Some students are unable to complete the course requirements within a stipulated period as well as some students do not tolerate the excessive overload of assignments and project work. Hence, such students may face academic stress due to personal inadequacy.

Interactions with Peers and Teachers:

In the present situation there is a rat race among the students to score good marks and to get selected in the campus interview. As a result of this, many students try to create some problems with each other. Even some incidents of ragging take place in peers. Ultimately, it results into heavy academic stress. Taunting and teasing (Ragging) by peers is the common source of academic stress among college students. (Wenz, Gross, Untch and Widaman, 1997; Struthers Perry and Mence, 2000). Michie, Glachan and Bray, (2001) found that students who believed that they were judged by peers experienced higher level of academic stress. Another common problem among peers originates from the unhealthy and excessive competition. A problem with roommates is another factor contributing to stress and it affects the academic performance. (Kamarudin. Et. al.2009).

Teachers are always aware about to complete the curriculum well in time. Similarly, students are always aware about to complete their projects, home assignments and practical. Due to this there are constant interpersonal relations between the students and their teachers. In the Indian education system, there is 10+2 system and up to this level there is one class teacher who controls the class and provides personal guidance or direction for every student. When these students enter in senior colleges where they are no more closely monitored, they are likely to experience stress in the initial stage.

Fear of Examination:

Among the stressors, test or examination anxiety or fear is the main sources of academic stress and most students seem to be more emotionally vulnerable to examinations (Fisher,1994). Research on fear of failure in examination originates from the work of McClelland, Atkinson, Clark and Lowell (1953) and Atkinson (1957) on the achievement motives. These theorists suggest that there is an inherent need to avoid failure of examination. According to Heckhausen, (1991) fear of failure in examination is a set of experience such as emotional, cognitive and behavioural that is associated with failure in achievement situations. Research conducted by Conroy, Willow and Metzler, (2002) had shown that fear of failure is an avoidance based motive and that is linked with stress.

The stress level of high achieving students is relatively high because of their fear of losing their rank and facing the disapproval of parents and friends (Hariharan and Rath, 2008). Some students have fear about their future; they don't have assurance of getting a job on the basis of what type of education they are taking. Hence some kind of stress level arises in the whole academic year.

Inadequate Facilities at College:

Today's academic environment is quite different with respect to the sources of stress, such as the tight schedule of lectures and practical, the continuous evaluation such as weekly test, assignment, project work, semester paper etc. Continuous flow of information leaves a minimal opportunity to relax and refresh. In this way today's academic environment causes severe stress among students.

Many studies underscore the roll of college environment as a source of stress for students. (Dyrbye et al. 2009; Supe. A. N.1998). It is very essential to all the academic institutions that they should maintain well-balanced academic environment, committed for providing better learning with the focus on the students' personal needs. Different academic institutions have different infrastructures. Some colleges provide all the facilities to students and faculty, hence students become happy and they enjoy their academic life. On the contrary most colleges do not provide sufficient facilities for the students. Administrative staff is a great source of stress for students. If clerical staff is unsupportive, always

terms of success or failure. It only shows how individuals or a group or groups of people cope under changing circumstances and what factors influence this adjustment. Let us now consider some salient features of adjustment as an interaction between a person and his environment.

Continuous Process:

The process of adjustment is continuous process. It starts at one's birth. A person as well as his environment is constantly changing as also are his needs in accordance with the demands of the changing external environment, consequently, the process or terms of an individual's adjustment can be expected to change from situation to situation. According to *Arkoff* (1968), there is nothing like satisfactory or complete adjustment which can be achieved once and for all time. It is something that is constantly achieved and re-achieved by us.

Two - Way Process:

Adjustment is a two - way process and involves not only the process of fitting oneself into available circumstances but also the process of changing the circumstances to fit one's needs.

Area of Adjustment:

Adjustment is the case of an individual should consist of personal as well as environmental components. These two aspects of adjustment can be further subdivided into smaller aspects of personal and environmental factors. Adjustment, although seems to be a universal characteristic or quality may have different aspects and dimensions.

Through the numerous efforts at measuring adjustment through inventories and other techniques, these aspects have been identified and various tests have been conducted to assess their dimensions. For example: *Bell* (1958) has taken five areas in his adjustment inventory namely, home, health, social, emotional and occupational.

Arkoff (1968) in his book: adjustment and mental health has enumerated the family, school or college, vocation and marriage as the important areas of adjustment.

Joshi (1964) and *Pandey* in their research study covering school and college students, have given 11 areas or dimensions of an individual's adjustment:

1. Health and physical development.
2. Finance, living condition and employment.
3. Social and recreational activities.
4. Courtship, sex and marriage.
5. Social psychological relations.
6. Personal psychological relations.
7. Moral and religious.
8. Home and family.
9. Future - vocational and educational.
10. Adjustment to school and college work.
11. Curriculum and teaching.

In this way, adjustment of person is based on the harmony between his personal characteristics and the demands of the environmental of which he is a part. Personal and environmental factors work side by side in bringing about this harmony.

Academic Adjustment:

According to *Friedlander*, (2007) "Academic adjustment means how well students deal with educational demands". These demands include satisfaction with college environment, active involvement in various activities and successful completion of coursework. *Baker and Siryk*, (1984) explain academic or college adjustment as students positive attitude towards their academic work and positive evaluation of their efforts and the quality of their academic environment.

Emotional adjustment is very necessary to all kind of development. College life is a full of experimentation and makes a foundation for an excellent achievement. During this period some students may experience some kind of emotional disturbance. Who have high academic stress may suffer lots of emotional problems, such as tension, confusion, depression, anxiety, anger and fatigue etc. Such students may possible give up college life or their academic performance could be badly affected. Some students behave with moody and childish pattern in college. They are avoided by classmates and inversely it may result in other emotional problems, such as low self - confidence and isolation etc. These problems lead to intake of alcohol or drugs in some students.

A satisfactory state of emotional adjustment may exit when psychological and physical drives and urges are satisfied and such state helps to enjoy to college life.

Home Adjustment:

The home adjustment is very important to all students, otherwise it may cause to maladjustment in rest of all types of adjustment. Home adjustment is a process of maintaining the healthy relationships with all the family members. In the Indian culture, minimum one or two siblings live in every family. A healthy relationship between siblings provides energy and motivation for every student. If these relations disturbed, then mental and emotional life of students becomes maladjusted and inversely it affects the overall performance of college students. Age is another key component responsible for maladjustment of students. Adolescence period or college life is a period of negative mentality. Negative attitudes towards parents, especially father and conflict with them affects the adjustment in adolescent period. Expectations and restrictions imposed by the parents may also disturb the home adjustment of students. Some students have to perform small duties at home, such as taking care of brothers and sisters, duties regarding older people and other relatives as well as duties regarding the farming and other traditional family business. If anybody fails to maintain balance between these family responsibilities and college life, family as well as college adjustment may collapse.

Characteristics Of A Well - Adjusted Person:

A well adjusted person is supposed to possess the following characteristics:

1. Awareness of his own strength and limitations: A well adjusted person knows his own strengths and weaknesses. He tries to make capital out of his assets in some areas by accepting his limitations in others.
2. Respecting himself and others: The dislike for one - self is a typical symptom of maladjustment. An adjusted individual has respect for himself as well as for others.
3. An adequate level of aspiration: His level of aspiration is neither too low nor too high in terms of his own strengths and abilities. He does not try to reach for the stars and also does repent over selecting an easier course for his advancement.
4. Satisfaction of basic needs: His basic organic, emotional and social needs are fully satisfied. He does not suffer from emotional cravings and social isolation. He feels reasonably secure and maintains his self - esteem.
5. Absence of a critical: He appreciates the goodness in objects, persons or activities. He does not try to look for weakness and faults. His observation is scientific rather than critical. He likes people, admires their good qualities, and wins their affection.
6. Flexibilities in behaviour: He is not rigid in his attitude or way of life. He can easily accommodate or adapt himself to changed circumstances by making necessary changes in his behaviour.
7. The capacity to deal with adverse circumstances: He is not easily discouraged by adverse circumstances and has the will and the courage to resist and fight odds. He has an inherent drive to master his environment rather than to passively accept it.
8. A realistic perception of the world: He holds a realistic vision and is not given to flights of fancy. He always plans, thinks and acts pragmatically.
9. A feeling of ease with his surrounding: A well adjusted individual feels satisfied with his surroundings. He fits in well in his home, family, neighbourhood and other social surroundings.

Items on the scale were written in Marathi which is a regional language. Rough draft was then sending to three experts to assess these items. After expert assessment some items were reworded and instead of seven sources items were classified into five sources namely:

- (1) Personal inadequacy.
- (2) Interactions with peers and teachers.
- (3) Fear of examination.
- (4) Inadequate facilities at college.
- (5) Parent expectations and SES.

Dimension or source no 2 and 3 as well as 6 and 7 are grouped together. The scale was then given to 100 students studying Arts, Science, Commerce, Engineering; Medical, Law, M.S.W., B.Ed., Polytechnic, Architect, B.C.A., to give their responses. The response format for the ASSCS is likert type scale ranging from strongly agree (5) to strongly disagree (1).

Items were scored in such a way that higher score indicated extreme academic stress and vice versa. The item analysis and factor analysis were performed to find out the internal consistency among the items and to generate to create the factors. After this analysis 19 items were dropped out, because these items had less than 0.30 correlations. Thus the remaining 66 items were retained in the final form of the scale.

Table 1
ITEM ANALYSIS FOR ASSCS

| Sr. No. | Scale | No of Items | Cronbach's Alpha | Item Retain |
|---------|------------------------------------|-------------|------------------|-------------|
| 1 | Personal Inadequacy | 22 | 0.85 | 16 |
| 2 | Interaction with peers and Teacher | 20 | 0.80 | 17 |
| 3 | Fear of Examination | 16 | 0.84 | 11 |
| 4 | Inadequate Facilities at College | 13 | 0.81 | 09 |
| 5 | Parental Expectations and SES | 14 | 0.84 | 13 |
| | Total Item | 85 | ----- | 66 |

Table 1 depicts the clear picture of item analysis. Twenty two items were generated for first dimension personal inadequacy. But only 16 items are retained in the final form. The 06 items were excluded from the scale because these items having a correlated item total correlation was less than 0.30. 'Corrected item total correlation' is the correlation between the score on the item and the scores on the test as a whole multiplied by the standard deviation of that items (Brace Nicola and Collogues, 2003) The Cronbach's alpha for personal inadequacy is 0.85, as most acceptable value for a research instrument. A good test alpha is greater than 0.70.

Second dimension is 'Interaction with peers and teachers' and originally 20 items were pulled for it. But three items were excluded from the scale and retained only 17 items. Cronbach's alpha for this dimension is 0.80. Third component of academic stress scale is 'Fear of Examination'. Sixteen items were generated but only 11 items were retained and alpha is 0.84. Next dimension is 'Inadequate Facilities at College' which was retained with 9 items out of 13 and alpha value is 0.81. Last factor on the scale is 'Parental Expectations and SES' also having a Cronbach's alpha value is 0.84 which is also quite high. This dimension retains with 13 items out of 14.

TABLE 4
RELIABILITY OF TEST ELEMENTS

| Sub - Tests | Rational Equivalence (N 2529) | Test Retest (N 122) |
|-------------|----------------------------------|------------------------|
| Element A | 0.62 | 0.81 |
| Element B | 0.69 | 0.79 |
| Element C | 0.73 | 0.76 |
| Element D | 0.84 | 0.86 |
| Element E | 0.57 | 0.72 |

VALIDITY:

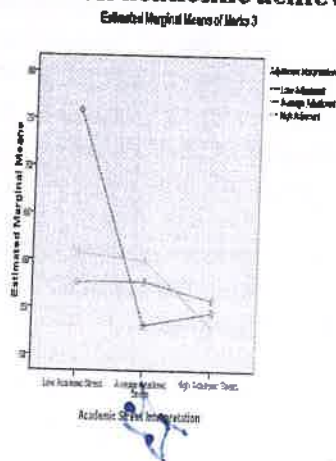
1. This inventory has been correlated with Dr. H.S Asthana's adjustment inventory and it has given a validity coefficient of 0.80 on a representative sample of 150 students.
2. The inventory has been validated against the criterion of teacher's estimate on adjustment each of their pupil. Two hostels, one was of boys and the other was of girls were selected for this purpose and three teachers, who lived in each hostel with the students, had known them closely for at least a year. The criterion was obtained in the shape of marks obtained out of hundred, awarded by the three teachers in a meeting after a mutual discussion. The coefficient of correlation between the teacher's marks and the scores obtained on this inventory are reported in Table 4.

TABLE 5
VALIDATION ON INVENTORY AGAINST THE CRITERION TEACHER'S ESTIMATE

| | N | R | Significance |
|-------|----|------|----------------------------|
| Boys | 55 | 0.63 | Significance at 0.01 level |
| Girls | 37 | 0.71 | Significance at 0.01 level |

3. Inventory's power to discriminate poor adjustment from good adjustment has been determined. The students reported by two or more teachers as having superior adjustment, 69% obtained grade A (Excellent Adjustment) or B (Good Adjustment) on the SD - unit norms of the inventory. Similarly, the students reported having inferior adjustment, 71% obtained grades D (Unsatisfactory Adjustment) or E (Very Unsatisfactory Adjustment) on the SD unit norms of the inventory.
4. A cross - validation study on a representative sample of 254 cases shows a close agreement in mean score, standard deviation, and norms on SD unit between the standardization sample and cross - validation sample.

Figure 1 The interaction effect of academic stress and adjustment on academic achievement.



2018-19

8

Review of Research



International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 8 | Issue - 5 | FEBRUARY - 2019

5.7631(UIF) 2249-894X

STRESS AND ANXIETY MANAGEMENT



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Shrikant Bhanudas Chavan

dg

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal., Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

ABSTRACT:- The rate of worry among kids and youth has been depicted. Petruzello (2011). Stress has turned into a consistently expanding and applicable issue in youngsters Taylor (2005). The etiology, determination and treatment of youth stretch are all around tended to in the writing APA...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Review of Research (ROR) Journal is an Online International Multidisciplinary Research Journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the Editorial Board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok
Yakkaldevi

Iran



Bijan
Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



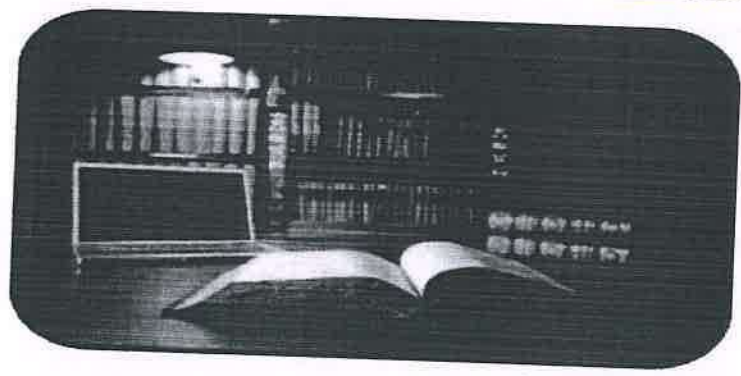
Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- MENDALEY
- GOOGLE SCHOLAR
- CITULIKE
- ENDNOTE
- ZOTERO
- DRJI

3

International Online Multidisciplinary Journal
Review of Research
Save Tree. Save Paper. Save World
ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue - 5, Feb-2019



| Sr. No | Title And Name Of The Author (S) | Page No |
|--------|---|---------|
| 1 | STRESS AND ANXIETY MANAGEMENT Dr. Shrikant Bhanudas Chavan | 1 |
| 2 | DEPOLYMERIZATION OF PET WASTE USING GREEN METHODS Vijendra Batra | 6 |
| 3 | SPIRITUAL INTELLIGENCE: A VALUABLE PREDICTOR OF COMPETENCE OF RESEARCHERS Nidhi Sahu and Dr. Jyotsna Joshi | 10 |
| 4 | ATTITUDE OF B.ED. STUDENTS OF MATHEMATICS ABOUT LEARNING DESIGN Samiul Biswas | 16 |
| 5 | HAEMATOLOGICAL CHANGES IN A HILL STREAM FISH GARRA GOTYLA GOTYLA (GRAY) INFECTED WITH TRYPANOSOMA J.V.S. Rauthan , Neelam Nautiyal and Shepali Chalotra | 24 |

BOOK PUBLISH at **U.S.A.**



THESIS DISSERTATION PROJECT CONVERT INTO BOOK



LAXMI

BOOK PUBLICATION, Solapur

Ph.: 0217-2372010/+91-9595-359-435

Emil.: ayisrj2011@gmail.com

Webdite.: lbp.world



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631 (UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of
Dr./Shri./Smt.: **Shrikant Bhanudas Chavan** Topic:- **Stress and Anxiety Management**
College:- Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal.- Palus
Dist. Sangli (Maharashtra). The research paper is original & innovative it is done
double blind peer reviewed. Your article is published in the month of **February 2019**.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
e-Mail: ayisfj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief



STRESS AND ANXIETY MANAGEMENT

Dr. Shrikant Bhanudas Chavan
Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

ABSTRACT :

The rate of worry among kids and youth has been depicted . Petruzello (2011). Stress has turned into a consistently expanding and applicable issue in youngsters Taylor (2005). The etiology, determination and treatment of youth stretch are all around tended to in the writing APA (2007). Notwithstanding, the job of activity in stress the board, albeit naturally observed as possibly positive, is less all around characterized for the pediatric populace. Information accessible in the grown-up populace, with respect to the advantages of activity in decreasing pressure, appear to be increasingly conclusive Petruzello (2011).



Exercise may fill in as a successful sedative. Concentrates in grown-ups demonstrate that 30 min of oxygen consuming activity lessens muscle pressure by as much as completes a portion of 400 mg of meprobamate Dishman (2006). The unwinding impacts were controlled by emotional self-reports, through electroencephalogram changes and in the decrease of fringe profound ligament reflexes. The component by which physical movement decreases muscle pressure is felt to be by means of a focal, corticospinal impact Dishman (2006).

The pressure decrease initiated by exercise goes on for 4 to 6 h in grown-ups. The dimension and power of activity might be imperative. A few examinations propose that just energetic, supported exercise lead to strain decrease; different investigations recommend that moderate exercise is useful just when it happens over an all-inclusive period and all the time. An equivalent decrease of psychosocial push happens with both oxygen consuming and anaerobic exercises Crews (2008). Case reports in grown-ups have shown that ordinary physical movement might be useful in the treatment of fits of anxiety and fears Morgan (2011)

KEYWORDS : stress, physical activity, Intelligence.

INTRODUCTION:

It was seen that 30 min of development preparing for 10 weeks diminished uneasiness in sound four-year-olds Brown (2012). Mental testing and educators' reports were utilized to screen members' reactions to action. Physically fit understudies were appeared to deal with pressure superior to unfit subjects Roth (2005). Comparative outcomes were discovered when young ladies matured 11 to 17 years were considered Brown (2012).

Aggressive physical action may prompt an expansion in stress and tension; nonetheless, this expansion is believed to be transient and mellow, as long as the competitor isn't compelled exorbitantly by guardians, instructors or mentors. Singular games, for example, tumbling, artful dance, ice skating and

wrestling create more worry than do group activities, at the same time, in general, the pressure reaction to focused games isn't more terrible than that of band rivalries and scholastic worry, for instance Simon (2009). Athletic challenge may wind up ruinous when the challenge ends up connected to self-esteem, individual honesty and the ideals of the players. People who might be at an additional hazard for creating worry because of athletic challenge are those with low dimensions of confidence and low execution desires Scanlan (2008).

DEPRESSION

Dejection among Canadian kids matured 12 to 17 years is normal. The rate, tragically, is on an upward pattern Statistics Canada. 2008).

The component by which physical movement may lessen the impacts of sadness is theoretical, best case scenario. Mental capacity is affected emphatically by blood dimensions of synapses, for example, noradrenaline, serotonin and dopamine. Sorrow has been related with a consumption of synapses, for example, serotonin. Physical exercise builds the dimensions of focal sensory system synapses.

In human investigations, coursing thoughtful amines increment two to multiple times over resting levels after 30 min of fiery exercise. Expanded creation of endogenous mind sedatives, known as endorphins, can deliver a morphine-like impact. The impact of these endogenous sedatives has been appeared a few investigations to be reversible by the organization of naloxone, an opiate opponent Morgan (2005).

Rowland (2010) endeavored to clarify how standard physical action may diminish melancholy is the 'Time-Out' hypothesis. As per this hypothesis, help of melancholy outcomes from exercise diverting and occupying the subject's consideration far from natural stressors.

The self-importance hypothesis, which isn't all around tried, recommends that when an individual takes an interest in physical movement, that cooperation is portrayed by society as 'great'; in this way, practice gives a feeling of self-restraint, control and capability. It might likewise give the subject a feeling of self-essentialness through the experience of achieving objectives and defeating hindrances.

Concentrates in more established young people will in general help the advantages of physical action in treating juvenile dejection Rape (2007). Sharp (2005) expressed enhancement in dejection scores was likewise appeared oxygen consuming activity programs were utilized in understudies.

ADHD AND LEARNING DISORDERS

A set number of studies have tended with the impacts of physical movement on explicit variations from the norm in subjective and conduct dysfunctions in youngsters and youth.

Dark colored (2012) expressed that a customary running system more than 10 to 22 weeks has been appeared to diminish the requirement for stimulant prescription in kids with ADHD. The hypothesis behind this perception holds that expanded engine movement coming about because of physical effort substitutes for the stimulant impacts of prescription. There is, in any case, vulnerability with regards to the term of advantages got from physical action.

MacMohan (2007) expressed from his examination done on kids with learning inabilities, albeit restricted, demonstrates that a program of customary vigorous effort over an all-encompassing time of 20 weeks prompts an expansion in physical wellness and an enhancement in confidence. In any case, there was no watched distinction in scholastic execution.

AUTISTIC STATES

At the point when five-to six-year-old youngsters with chemical imbalance were occupied with vigorous exercises for 5 to 8 min all the time, they demonstrated a decrease in self-invigorating conduct contrasted and kids in a control assemble playing discreetly. Comparable investigations in youngsters with chemical imbalance likewise demonstrated a decline in self-stimulatory conduct following physical action, yet there was no enhancement in social capacity Watlers (1980).

SELF-ESTEEM

Sonstroem (2004) and Whitehead (1995) portrayed that albeit great confidence is vital in all youngsters, large kids are at specific hazard for having poor confidence and being rejected by friends. Various examinations have pointed out the way that it is hard to explicitly connect increments in physical action with enhanced confidence. Most investigations recommend that activity programs are identified with upgrades in the confidence scores of members.

Hypothesis regarding why expanded physical action might be related with enhanced confidence incorporates the accompanying:

- achieving objectives;
- becoming progressively able;
- achieving dominance;
- having expanded social allure;
- developing self-safeguarding systems; and
- developing social support.

Gruber (2006) expressed that past meta-examination thinks about done in primary school-matured youngsters bolster the idea that physical action and a sound self-idea are connected. In a portion of these investigations, the relationship was progressively conspicuous when vigorous exercises were utilized.

INTELLIGENCE

Kirkendall (2006) detailed that no investigation has ever shown the hindrance of scholarly exhibitions from increments in physical action. In any case, the greater part of studies demonstrate that physical movement does not build essential knowledge, but rather may enhance scholarly execution. Shepard (1969) expressed that investigations of youngsters with mental hindrance that took a gander at the job of physical movement in enhancing insight demonstrated that there was no gain in knowledge scores and no enhancement in scholastic exhibitions. Be that as it may, Maloney (1980) an enhanced self-perception was seen in youngsters with mental debilitations when they partook in standard physical movement.

CHARACTER DEVELOPMENT

Athletic challenge does not seem to advance character improvement; rather, there are a few examinations that propose that people with athletic experience have poorer frames of mind toward reasonable play Stuart (1980). Socially alluring practices, for example, invitingness, liberality and collaboration are conflicting with physical exercises that stress winning. Be that as it may, physical action may have the potential for self-improvement in characteristics including industriousness, more profound independence, responsibility and inspiration, and may build creativity Weiss(1995). This is most likely more genuine for noncompetitive physical exercises than group rivalry.

Future examinations researching the connection between physical action and psychological wellness are required for increasingly complete ends. Albeit a few information recommend that there are profits by physical action, including diminished uneasiness, discouragement and adolescent wrongdoing, and enhanced focus, scholarly evaluations and confidence, further examinations are required to reach increasingly unmistakable inferences. Current information, generally, give off an impression of being insufficient. In the interim, starter information bolster a proclamation progressed by the old Greeks: *Mens sana in corpore sano* – a solid personality in a sound body.

The relation of physical activity and exercise to mental health.

Mental disorders are of major public health significance. It has been claimed that vigorous physical activity has positive effects on mental health in both clinical and nonclinical populations. This paper reviews the evidence for this claim and provides recommendations for future studies. The strongest evidence suggests that physical activity and exercise probably alleviate some symptoms associated with mild to

moderate depression. The evidence also suggests that physical activity and exercise might provide a beneficial adjunct for alcoholism and substance abuse programs; improve self-image, social skills, and cognitive functioning; reduce the symptoms of anxiety; and alter aspects of coronary-prone (Type A) behavior and physiological response to stressors. The effects of physical activity and exercise on mental disorders, such as schizophrenia, and other aspects of mental health are not known. Negative psychological effects from exercise have also been reported. Recommendations for further research on the effects of physical activity and exercise on mental health are made.

HYPOTHESIS

1. The hypothesis "There is no effect of physical training on anxiety and stress of secondary student" is rejected.
2. The hypothesis "There is no effect of physical training on depression and regression of secondary students" is rejected.

CONCLUSIONS

There is significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of boys of experimental group. It infers that due to physical exercises there is a reduction in anxiety level of boys. There is significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of girls of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is a reduction in anxiety level of girls. There is significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is a reduction in anxiety level of students (boys & girls).

There is no significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of boys of control group. There is no significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of girls of control group. There is no significant difference between anxiety scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of control group.

There is no significant difference between anxiety scores of control and experimental group during pre-test situation of students (boys & girls). It further infers that both the groups are homogeneous. There is no significant difference between anxiety scores of control and experimental group during Post-test situation of students (boys & girls). It highlights the effectivity of physical exercises on controlling anxiety of students (boys & girls).

There is no significant difference between Stress scores of control and experimental group during pre-test situation of students (boys & girls). It further infers that both the groups are homogeneous. There is no significant difference between Stress scores of control and experimental group during Post-test situation of students (boys & girls). It highlights the effectivity of physical exercises on controlling Stress of students (boys & girls).

REFERENCES:

1. Atkinson, J. W. & Litwin, G. H. (1960). Achievement motive and test anxiety conceived as motive to approach success and motive to avoid failure. *Journal of Abnormal and Social Psychology*, 60, 52-63.
2. Bartley, C. A., et al. (2013). "Meta-analysis: aerobic exercise for the treatment of anxiety disorders." *Prog Neuropsychopharmacol Biol Psychiatry* 45: 34-39.
3. Biddle, L., & North, P. (1999). Impact of Physical Exercise in relief of anxiety and depression, *Journal of Health*, 23. 2(3), 33-39.
4. Mandler, G. & Sarason, S.B. (1952) A study of anxiety and learning. *J. Abnorm. Soc. Psychol.* 47, 166-173.
5. Petruzello SJ, Landers DM, Hatfield BD, Kubitz KA, Salazar W. A meta-analysis of the anxiety-reducing effects of acute and chronic exercise. *Sports Med.* 2011;11:143-82.
6. Piedmont,-Ralph-L. (1995) : Another Look at Fear of Success, Fear of Failure, and Test Anxiety: A Motivational Analysis Using the Five-Factor Model. 1995, *Sex-Roles*; v32 n3-4 p139-58 Feb 1995

7. Raphelson, A.C. & Moulton, R.W. (1958) The relationship between imaginative and direct verbal measures of test anxiety under two conditions of uncertainty. *J. Personality* 26, 556-567.
8. Salmon, P (2001). Effects of Physical exercise on Anxiety, Depression, and Sensitivity to Stress through Unifying Theory *Clinical Psychology Reviews*, 21(1), 33-61.
9. Taylor, J.A. (1953) A personality scale of manifest anxiety. *J. Abnorm. & Social Psychol.* 48, 285-290.
10. Wilson VE, Berger BG, Bird EI. Effects of running and of an exercise class on anxiety. *Percept Mot Skills.* 1981 Oct;53(2):472-474.



dg

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

18-19 3-34



The Influence of Sex and Residence on Academic Stress of College Students

¹Chavan Shrikant B.
¹Associate Professor
Babasaheb Chitale College, Bhiwadi.

Principal,
Babasaheb Chitale College,
Bhiwadi, Tal. Pardi, Dist. Solapur,
Maharashtra

Abstract: The study aimed at to find out the influence of sex and residence independently on academic stress of college students. It was hypothesized that the sex and residence would not influence the academic stress of college students. To test the hypothesis the independent two group design was used in the study. Three hundred college students were randomly selected and Academic Stress Scale for College Students developed by Dr Vikas Kamble was administered on them. The obtained data was analyzed through student t test. Results revealed that the sex of students influence the academic stress but the residence of students was not affecting the stress.

Keywords: Academic Stress, Sex and Residence

1. Introduction: Stress is a complex and subjective phenomenon. What may be easy for one, may be stressful for another. It depends on individual temperament or his experience and environmental conditions. Stress is an undivided part of everyone's life and is generated by rapidly changing situations that a person must face. The term stress refers to an internal condition (created by load), which results from frustrating or unsatisfying conditions.

Lazarus (1984) suggested that stress should be treated as an organizing concept for understanding a wide range of phenomena of great importance in human and animal adaptation and stress is not a variable but a rubric consisting of many variables and processes. Cannon (1932) has described the physiology of stress response. The autonomic nervous system has two systems that are sympathetic and parasympathetic. These two systems are active respectively in condition of stress and when a person is calm and relaxed. Moreover, according to him, under stressful conditions, the physiological response begins with an individual's perception of stress. With this, the autonomic nervous system activates the sympathetic nervous system which enables the body to mobilize its resources to face the emergency situation.

Stress produces both biological and psychological consequences. Often the most immediate reaction to stress is a biological one, such as increase in hormones, heart rate, blood pressure and sweating etc. On a psychological level, high level of uncomfortableness, irritation, anxiety and depression etc. may arise. The effect of stress both biological and psychological is best described by a model developed by Hans Selye. The model, General Adaptation Syndrome (GAS) has three stages (Selye, 1976). The first stage, the alarm, occurs when an individual becomes aware of the existence of stressors. In the alarm stage, number of physiological and biochemical reactions arise, such as increased pituitary secretions, respiration, heart rate and blood pressure. If the stressors don't exist, the second stage of GAS occurs: during which people prepare themselves to fight the stressors. Finally, if an individual is not able to resist a stressor, the exhaustion stage is reached. During the exhaustion stage, a person's ability to adapt to the stressor declines and severe physical illness arises.

Defining stress is a very vast and complex matter. It is a subject of critical and analytical debate among investigators. Beyond this debate, consensus has been made on definition of stress, which is centered on the theme of disequilibrium between individual and environment.

One of the most common definition is given by Richard Lazarus and Susan Folkman, (1984) "Stress arises when individuals perceive that they cannot adequately cope with the demands being made on them or with threats to their wellbeing." It is important to note that the definition implies that it is not the actual situation which causes the stress, but the beliefs and thoughts which are held about the situation (Palmer and Puri, 2006). For example, suppose one student has been given a heavy home assignment, but he believes that he can complete this course work within stipulated period, he may not feel stress. But suppose again the same assignment is given to another student and he perceives that he won't be able to complete it, he can experience the stress.

The term 'stress' has been derived from the Latin word 'stringer' which means to draw tight. The term was used to refer the hardship, strain and adversity (Wikibooks).

According to Humphery, (1992) stress can be considered as any factor, acting internally or externally, that makes it difficult to adapt and that induces increased effort on the part of the person to maintain a step of equilibrium both internally and with the external environment. This definition indicates the failure of efforts of an individual while maintaining adjustment with the external stimulus. Ivancevich and Matteson, (1993) pioneer scientists of occupational stress also gave such kind of definition. "Stress is an adaptive response, mediated by individual differences or a psychological process that is a consequence of any external action, situation or event that places excessive psychological and physical demands upon a person."

Some authors have defined the term stress by giving stress on biochemical processes in human being. According to Bowman, (Wikibooks 2012) stress is the body's automatic response to any physical or mental demands placed upon it. When pressures are threatening, the body rushes to supply protection by turning on 'the juices' and preparing to define it. It is the 'flight or fight' response in action. According to Levine & Ursin, (1991) "Stress is a part of an adaptive biological system, where a state is created when a central processor registers an informational discrepancy." According to Steinberg and Ritzmann, (1990) stress can be defined as an underload or overload of matter, energy or information input to, or output from, a living system.

The term academic stress has been researched by various investigators. If review of literature on academic stress is taken into consideration, it seems that this is not enough old concept.

According to DeDeyn Rachel, (2008) "Academic stress is defined as a mental and emotional pressure or tension that occurs due to the demands of college life."

If the pressure is prolonged and perceived as unmanageable, this experience causes to mental and emotional imbalance among students, which affects health and academic achievement.

Table 2 Indicating the Comparison of Academic Stress and Its Sources on residence

| Sources of Academic Stress | Area of students Residence | N | Mean | Std. Dev | df | 't' | Sig. |
|--------------------------------------|----------------------------|-----|--------|----------|-----|------|------|
| Personal Inadequacy | Rural Students | 100 | 50.55 | 13.81 | 198 | 1.08 | NS |
| | Urban Students | 100 | 48.50 | 12.78 | | | |
| Interactions with peers and teachers | Rural Students | 100 | 53.21 | 13.14 | 198 | 0.72 | NS |
| | Urban Students | 100 | 51.87 | 12.83 | | | |
| Fear of examination | Rural Students | 100 | 35.96 | 09.87 | 198 | 0.45 | NS |
| | Urban Students | 100 | 35.33 | 09.82 | | | |
| Inadequate facilities at college | Rural Students | 100 | 28.46 | 08.56 | 198 | 0.03 | NS |
| | Urban Students | 100 | 28.50 | 08.28 | | | |
| Parents expectations and SES | Rural Students | 100 | 38.47 | 13.00 | 198 | 0.80 | NS |
| | Urban Students | 100 | 37.00 | 12.82 | | | |
| Total Academic Stress | Rural Students | 100 | 206.66 | 50.79 | 198 | 0.77 | NS |
| | Urban Students | 100 | 201.21 | 48.32 | | | |

In the present study, it was proposed to study the influence of residential locality of college students on academic stress. It can be noticed from table 2 that the college students representing rural areas have obtained a mean score of academic stress 206.66 with SD 50.79 whereas the students belonging to urban areas have earned the mean academic stress of 201.21 with SD 48.32. The difference between the means is found to be very less. The 't' value 1.34 is statistically not significant. Hence, the null hypothesis 'Area of residence will not significantly influence the academic stress of college students' is accepted. It is further noticed from table 10 that the difference between the means on subcomponents of academic stress scale are also found to be very less. The calculated 't' value for these differences are statistically not significant. The second hypothesis was, the area of residence of college students will not significantly affect the academic stress. The data from this study supports this hypothesis. The college students representing rural and urban backgrounds did not differ in academic stress and its sources. The globalization and modernization process dispel threshold between urban and rural. The present research findings are opposite to the findings of few previous researches was conducted by Sulaiman, T. et al., (2009); Asri, (2002) and Shah Muhammad, (1993).

VI. Conclusions: The following conclusions were drawn from the study

1. The level of academic stress among college students due to personal inadequacy is significantly differ among male and female students.
2. The level of academic stress among college students due to interactions with peers and teachers is significantly differ among male and female students.
3. The level of academic stress among college students due to inadequate facilities at college is significantly differ among male and female students.
4. The level of academic stress among college students due to parental expectations is significantly differ among male and female students.
5. The level of academic stress among urban and rural students is not differ.

REFERENCE

- Alzaeem Ali Yousif, Syed Azhar, Syed Sulaiman, Syed Wasif Gillani. (2010). Assessment of the validity and reliability for a newly developed stress in academic life scale (SALS) for pharmacy undergraduates. *International Journal of Collaborative Research on Internal Medicine and Public Health*. Vol. 2, No. 7, pp. 239-256.
- Asri Mohamad. (2002). Hubungan sokongan dengan tekanan di kalangan remaja. Satu kajian remaja Bandar dan luar Bandar daerah kemaman, Terengganu, latihan ilmiah yang tidak diterbitkan. Serdan UPM.
- Calaguas Glenn M. (2011). Curriculum and sex specific differences in academic stress arising from perceived expectations. *International Journal of Human and Social Sciences*. 69(1). 63-66.
- Cannon, W. B. (1932). *The Wisdom of the Body*. New York. Norton.
- Castillo Linda G. and Misra Ranjita. (2004). Academic stress among college students comparison of American and international students. *International Journal of Stress Management*. Vol. 11, No. 2. 132-148.
- DeDeyn Rachel. (2008). A comparison of academic stress among Australian and international students. *UW-L Journal of Undergraduate Research XI*.
- Eun-Jun, B. (2009). The effects of gender, academic concerns, and social support on stress for international student. *Unpublished Ph.D. thesis, University of Missouri Columbia*.
- Gadzella, B. M., Baloglu, M. (2001). Confirmatory factor analysis and internal consistency of the student stress inventory. *Journal of Instructional Psychology*.
- Humphrey, D. N., Manion, W. P. (1992). Properties of tire chips for light weight fill grouting, soil improvement and geosynthetics. *In: Proceedings of the conference sponsored by the Geotechnical engineering Division of the American Society of Civil Engineers 2, New Orleans, Louisiana*. pp. 1344-1355.
- Ivancevich, J. M., Matteson, M. T. (1993). *Organizational Behavior and Management*. 3rd Ed. Irwin, Homewood, 111. pp. 244.
- Kumar Sajjan, Jejurkar Krupa. (2005). Study of stress level in occupational therapy students during their academic curriculum. *The Indian Journal of Occupational Therapy*. Vol. XXXVII. No. 1. 11-14.
- Lazarus, R. S., and Folkman, S. (1984). *Stress appraisal and coping*. New York : springer.
- Levine, S.; Ursin, H. (1991). What is stress ? In Brown, M. r. Rivier, C., Koob, G. (Eds.), *Stress. Neurobiology and Neuroendocrinology*. Marcel Decker, New York. pp. 3-21.
- Matud, M. P. (2004). Gender differences in stress and coping styles. *Personality and Individual Differences*. 37(7). 1401-1415.

18-19

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII

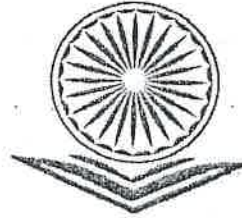
Issue - I

Marathi Part - II

January - March - 2019

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF MARATHI PART - II

| अ. क्र. | लेख आणि लेखकाचे नाव | पृष्ठ क्र. |
|---------|---|------------|
| १५ | म. जोतिराव फुले यांचे वाङ्मयीन योगदान प्रा. डॉ. शोभा रोकडे | ७३-७७ |
| १६ | मानवी हक्क आणि महिला विकास प्रा. श्याम व्हि. चवतीकर | ७८-८० |
| १७ | भारतातील संसदिय शासनासमोरील आव्हाने डॉ. माया एस. वाटाणे | ८१-८४ |
| १८ | भारतीय शेतकऱ्यापूढील शेतसाऱ्याचा प्रश्न प्रा. डॉ. एन. बी. मठपती | ८५-८८ |
| १९ | परिवार व समाज के मार्गदर्शक वृध्दजनों की समस्या और भारत की आंतरिक चुनौतिया डॉ. शारदा आय. महाजन | ८९-९३ |
| २० | गौरी देशपांडेचे व्यक्तिस्वातंत्र्याबद्दल विचार डॉ. पूजा मनोज सावजी | ९४-९८ |
| २१ | भारतीय लोकशाहीसमोरील आव्हाने आणि सुशासन डॉ. ज्ञानेश्वर यावले | ९९-१०३ |
| २२ | अमरावती जिल्ह्यातील साक्षरतेचे तुलनात्मक विश्लेषण - एक भौगोलिक अध्ययन (२००१-२०११) प्रा. शशिकांत पी. दुपारे | १०४-१०६ |
| २३ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे समाजवादाविषयीचे विचार प्रा. चांगदेव केशवराव भाजीखाये | १०७-१११ |
| २४ | बोदलकसा मध्यम जलसिंचन प्रकल्प संक्षिप्त अध्ययन प्रा. आर. झेड. गौतम | ११२-११४ |
| २५ | नागपूरमधील महिलांमधील रोजगारासंबंधीची जागरूकता डॉ. अनिता जिवतोडे टेकाडे | ११५-११६ |
| २६ | बहु आयामी व्यक्तीमत्व डॉ. जे. पी. नाईक प्रा डॉ. विनोदकर व्ही. एस. | ११७-१२० |
| २७ | समाजसुधारक महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे यांचे कार्य एक अभ्यास प्रा. झरेकर रमेश सोनू | १२१-१२६ |

२६. बहु आयामी व्यक्तीमत्व डॉ. जे. पी. नाईक

प्रा डॉ. विनोदकर व्ही. एस.

रा. माळवाडी, चव्हाण प्लॉट, जि. सांगली, ता. पलूस.

आपल्या देशात अनेक थोर विचारवंत, समाज सुधारक, शिक्षणतज्ञ, स्वातंत्र्य सैनिक, संशोधक, वैज्ञानिक होवून गेले आहेत. शिक्षण क्षेत्राचा विचार केल्यास, महात्मा फुले, महात्मा गांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटील, डॉ. बापूजी साळुंखे या सारख्या भारतीय रत्नानी समाजातील लोकांना दिशा दिली, गती दिली, अंधारात खितपत पडलेल्या समाजाचा प्रकाश दिला.

५ सप्टेंबर म्हटले की गर्वांना आर्डावतो तो म्हणजे भारताचे सुपुत्र माजी राष्ट्रपती डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णनन ज्यांना आपण थोर शिक्षणतज्ञ म्हणता त्यांचा जन्म दिवस. पण याच तारखेला आपणखीन एका बहुआयामी व्यक्तीमत्वाचा जन्म झालेला आहे. त्याचे कार्य गूढा आणखी एवढे आहे. ज्यांची किती सातासमुद्राच्या पलीकडे जावून पोहचली आहे. पण आजकालच्या तरुण पिढीला त्यांच्या बदल फारशी माहिती नाही. परंतु मित्र हो हिरा किती ही अंधारात लपविला तरी ही तो चकमक्या शिवाय राहत नाही.

डॉ. जे. पी. नाईक या प्रतिभा गंगत्र व्यक्तीचा जन्म ५ सप्टेंबर १९०७ रोजी बहिरेवाडी ता. आजरा, जि. कोल्हापूर येथील छोटीया गावात (गाणीण) झाला. १९०७ म्हणजे स्वातंत्र्यपूर्वकाळ यावेळी या गावाची स्थिती कशी असेल आपण कल्पना करू शकतो.

आतिशय शिकत व पतितवून परिश्रमीवर मात करत. त्यांनी ज्ञानाची, अनुभवाची, कार्यकर्तृत्वाची उत्तम उंची गाठली. ते एक उत्तम शिक्षणी, उत्तम स्वातंत्र्य सैनिक, उत्तम समाज सुधारक, शिक्षणतज्ञ, उत्तम शैक्षणिक संस्थापक, अनेक शिक्षणीांचा निर्माता, उत्तम संशोधक, उत्तम वैद्य, उत्तम प्रशासक, लेखक, समाजवादी, मानवतावादी, निष्ठावंत, प्रामाणिक, सामर्थ्यभरक व्यक्तीमत्त्व म्हणजे डॉ. जे. पी. नाईक.

१) शोध लेखाचा उद्देश

- १) डॉ. जे. पी. नाईक यांच्या कार्ये, कर्तृत्वाचा आढावा घेणे.
- २) डॉ. जे. पी. नाईक यांचे कार्ये, कर्तृत्व सर्वांच्या पर्यंत पोहचविणे.
- ३) ५ सप्टेंबर शिक्षक दिन साजरा करताना जे. पी. नाईक यांचे ही स्मरण व्हावे.

२) गृहितके

- १) डॉ. जे. पी. नाईक यांचे कार्ये, कर्तृत्व सर्वांच्या पर्यंत पोहचलेले नाही.
- २) डॉ. जे. पी. नाईक यांचे विचार तरुण, सुशिक्षित वर्गाला नेहमी मार्गदर्शक ठरतील.

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

११७



बेकारी कमी व्हावी, लोकांचे जीवनमान, राहणीमान सुधारावे यासाठी ते सदैव प्रयत्नशील राहिले. त्यांनी शिक्षणाच्या सार्वत्रीकरणाला, स्त्रीयांच्या शिक्षणाला खूप महत्व दिले. शिक्षकांकडे ५ गुण असावी लागतात १) ज्ञाननिष्ठा २) विद्यार्थीनिष्ठा ३) समाजनिष्ठा

४) व्यवसायनिष्ठा ५) राष्ट्रनिष्ठा हे सर्व गुण जे. पी. नाईक यांच्याकडे होते. १९३० पासून त्यांनी स्वःताला शैक्षणिक कार्यात वाहून घेतले. त्यांनी अनेक शिक्षण संस्था प्रतिकूल परिस्थित स्थापन केल्या. त्यांनी राष्ट्रीय शिक्षण व प्रशिक्षण संस्था काढली. शाळा किंवा महाविद्यालये ही अध्यापकांच्या उपजीवीकेची केंद्रे न बनता ती समाजाच्या विकासाची व विद्यार्थ्यांची संस्कार केंद्रे बनली पाहिजेत, मुख्य शिक्षणातून पुनर्रचना व पुनर्रचनेतून शिक्षण असा प्रवास झाला पाहिजे असे त्यांचे मत होते. शिक्षणातून समाज विकास हा त्यांचा ध्यास होता. कर्नाटकातील धारवाड येथे काही शिक्षण संस्था स्थापन केल्या आहेत. त्यांचे शैक्षणिक कार्य व तळमळ पाहून त्यांची केंद्रीय शिक्षण मंत्रालयात निवड झाली होती. त्यांच्या पाकळी पत्रात १) ग्राम्या पगार घेवून प्रामाणिक सेवा केली. ते शिक्षण क्षेत्रात १) राज्य माध्यमिक शिक्षण मंडळाचे सदस्य २) प्रौढ शिक्षण मंडळाचे सदस्य ३) शिक्षण सल्लागार ४) संशोधक ५) ग्रंथलेखक ६) NCERT या संस्थेची स्थापना केली. त्यांनी भारतातील आधुनिक शिक्षणाचा इतिहास हे पुस्तक लिहिलेले आहे. त्यांनी नेहमी अर्थव्यवस्था व शिक्षणव्यवस्था यांमध्ये योग्य घालण्याचा प्रयत्न केला. जे. पी. चे शैक्षणिक कार्य आपल्या देशापूरते मर्यादीत नाही. ते आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील शिक्षण तज्ञ होते. कारण जगामध्ये १०० शिक्षणतज्ञांचे नाव आदराने घेतले जाते. यामध्ये जे. पी. नाईक यांचा समावेश आहे. ही मानमानाची गोष्ट आहे. सध्या गारगोटी जि. कोल्हापूर येथे मौनी विद्यापीठ कार्यरत आहे. यांचे सर्व श्रेय जे. पी. नाईक यांचा आहे.

६) पोस्मरीयांचा केवारी

१९३२ ला वेळ बेल्वारीच्या तरुणातून मुक्त झाल्यानंतर त्यांनी बाबा आमटे यांच्या प्रमाणे रोग्यांच्या सेवेला वाहून घेतले. त्यांनी कर्नाटकातील उणीवदेरीगरी नावाच्या छोट्या खेडे गावात राहावयास गेले व छोटा दवाखाना थाटला. त्या गावात गिरगरता, दुग्ध, विषमता, रोमराई खूप होती. जे. पी. नाईक यांची स्वताची परिस्थिती बेताची असताना समाजसेवेची तळमळ असल्याने गार दुग्ध, छाटीशी बॅग, दाढीचे साहित्य, अंग टेकण्यासाठी बिछाना घेवून घराबाहेर पडले. निरक्षर व रोगग्रस्त गावात त्यांनी लवचारेगार मोफत उपचार केले. गावाला १००% रोगमुक्त केले.

उणीवदेरीगरी या गावातील निरक्षर लोकांना एकत्रित करून पौढशिक्षण सुरु केले. गावातील तरुणांना उद्योग व शिक्षण या शिषगी प्रबोधन करून रोजगार, उद्योग, शिक्षण यासाठी प्रेरणा दिली. सर्व श्रमीकांना एकत्रित करून त्यांच्यात सोदाशक्ती विमोचन केली. त्या गावात एक मोठी टेकडी होती. टेकडीला वळसा घालून दोन-तीन कि.मी. अंतर चालत जायून झालारफत, शाळा, कॉलेजना नावे लागत होते. त्यामुळे लोकांचा वेळ जास्त जात होता. हे लक्षात घेवून जे. पी. नी गावातील लोकांना एकत्रित करून उणीवदेरीगरी गावाच्या मोठी टेकडी फोडून काढली व रस्ता तयार केला. त्यामुळे

स्थापना दि. १३ मे २००८
नों. क्र. सहा. / २४२९१/को. / ११/००/०८



शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर
विद्वत्प्रमाणित, यु.जी.सी. मान्यताप्राप्त त्रैमासिक
(Peer Reviewed Referred Research Journal)

ISSN No. 2319-6025

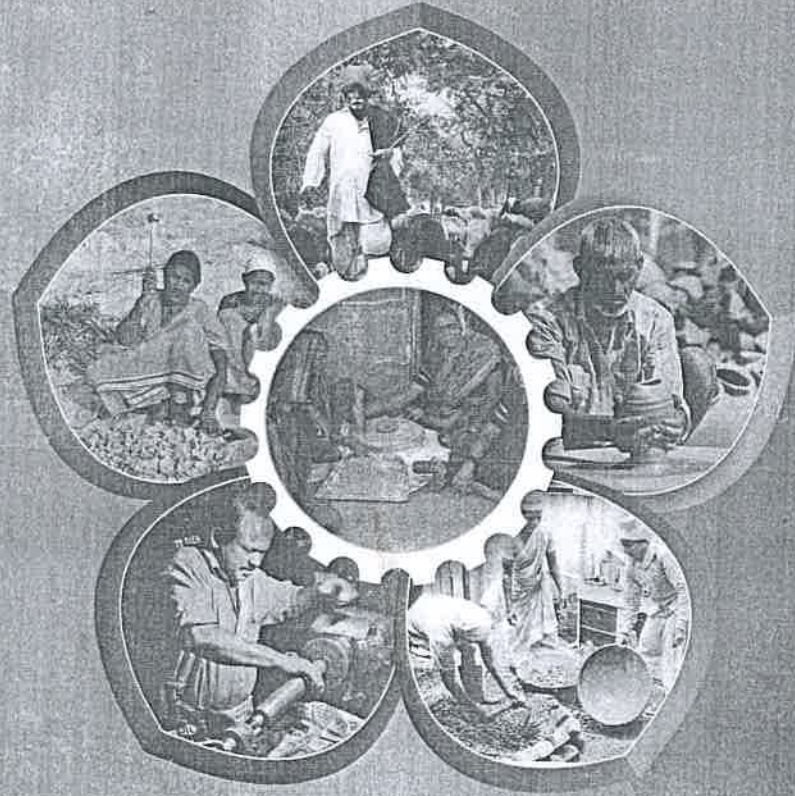
शिविम संशोधन पत्रिका

वर्ष-आठवे : अंक सतरा-अठरा । जानेवारी ते जून २०१९

श्रमसंस्कृती आणि साहित्य

18-19

दिनांक ९ आणि १० फेब्रुवारी, २०१९



कुणी न राहो दुर्बल अज्ञ । म्हणुनी हा शिक्षण यज्ञ ॥
माजी आमदार श्री. बाबासाहेब पाटील सरुडकर शिक्षण संस्थेचे

श्री शिव-शाहू महाविद्यालय, सरुड

वा. शाहूवाडी, जि. कोल्हापूर

नेक तृतीय मूल्यांकन : B ग्रेड (CGPA- 2.41)

संस्था पदाधिकारी



श्री. बाळासाहेब इंदुलकर
उपाध्यक्ष



डॉ. भानुदास गाडवे
तज्ज्ञ सचालक

चर्चासत्र संयोजन समिती



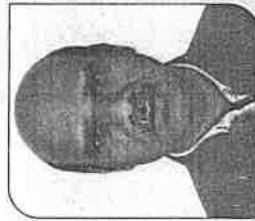
डॉ. जी. एच. आळतेकर
प्रभारी प्राचार्य



प्रा. डॉ. शिवकुमार सोनाळकर
मराठी विभागप्रमुख आणि समन्वयक



प्रा. माणिक मोरे
हिंदी विभाग



डॉ. गणपतराव पाटील
इंग्रजी विभाग



प्रा. शिवाजीराव पाटील
सामाजिकशास्त्र विभाग



प्रा. लक्ष्मण आरसो



प्रा. प्रकाश नाईक



प्रा. अनंत पाटील



शिवाम संशोधन पत्रिका
न.प.टी.
शिवाम संशोधन पत्रिका
न.प.टी.

शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघाचे विद्वत्प्रमाणित त्रैमासिक

शिविम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed Referred Research Journal)

ISSN No. 2319-6025

(विद्यापीठ अनुदान आयोग नवी दिल्ली, मान्यता अ. क्र. ६४१७५)

वर्ष-आठवे : अंक सतरा-अठरा

जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च, एप्रिल-मे-जून २०१९

श्रमसंस्कृती आणि साहित्य

संपादक

डॉ. शिवकुमार सोनाळकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. नीला जोशी

संपादक मंडळ

डॉ. नंदकुमार मोरे, डॉ. गोमटेश्वर पाटील, डॉ. तातोबा बढामे, डॉ. विनेश वाघुबरे

संपादन सहाय्य

प्रा. प्रकाश नाईक, प्रा. रघुनाथ मुडळे

सल्लागार समिती

डॉ. राजन गवस, डॉ. प्रकाश कुंभार, डॉ. डी. ए. देसाई, डॉ. अनिल गवळी

प्रकाशक

अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर

अनुराज, ७/ब, सूर्यवंशी कॉलनी, सांगेरुची वसाहत, कोल्हापूर ४१६ ०१९

मुद्रक

भारती मुद्रणालय

८३२ ई वॉर्ड, शाहूपुरी ४ थी गल्ली, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५४३२९

मूल्य : रु. ३००/-

ISSN No. 2319-6025

शिविम संशोधन पत्रिका । १

आता चांगलाच यश आला. मराठी भाषा, साहित्य, संस्कृती यांचे संवर्धन आणि
करणारी महाराष्ट्रात अग्रेसर असलेली ही संस्था आहे.

आजच्या काळात साहित्याची विविध अंगाने चर्चा होताना दिसते. आपल्या
सामाजिक जीवनात पूर्वीपासून आजपर्यंत श्रम करणाऱ्या लोकांची संख्याही विलक्षण आहे.
श्रमसंस्कृती हा समाजजीवनाचा एक अविभाज्य भाग आहे. श्रमसंस्कृती शब्द तसा व्यापक
आहे. श्रम आणि संस्कृती या दोन संकल्पना त्यात येतात. 'श्रम म्हणजे प्रत्यक्ष अथवा
अप्रत्यक्ष मोबदल्याच्या अपेक्षेने केलेली शारीरिक किंवा बौद्धिक स्वरूपाची कृती'. श्रम
करणाऱ्या व्यक्ती म्हणजे श्रमिक. श्रमाचा संस्कार हा संस्कृतीचाच एक भाग आहे. 'श्रम
करणाऱ्या लोकांचे जगणे, दुखणे, खुपणे, त्यांचे भावविश्व, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजकीय,
धार्मिक पर्यावरणासहीत अंतर्भूत होते त्याला 'श्रमसंस्कृती' असे म्हणतो. शेतकरी, शेतमजूर,
बलुतेदार, दलित, पारंपरिक व्यावसायिक, कारागीर, फिरस्ते, पोटासाठी श्रम करणारे कलावंत,
अल्पसंख्यांक लोक, स्त्रिया हे परंपरागत चालत आलेले श्रमिक आहेत.

औद्योगिक क्रांतीनंतर कामगार, गिरणीकामगार, विडीकामगार, हमाल, भंगी, रेल्वे,
रिक्षा, टॅक्सी ड्रायव्हर, गॅरजमधील मॅकेनिक, वेटर, रोजगार हमीवरील कामगार, बांधकाम
क्षेत्रातील लोक, घरगडी, डबेवाले लोक, धुणीभांडी, स्वयंपाक करणाऱ्या स्त्रिया यांचाही
श्रमिक वर्गात उल्लेख करता येईल. २१ व्या शतकात विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या विश्वामध्ये
पोटासाठी वेगवेगळे व्यवसाय, उद्योग, लघुउद्योग, नोकरी करणारे लोक, बौद्धिक कष्ट
करणारे लोक, कारकून, कंपन्यांमध्ये काम करणारे लोक यांचा समावेश होतो. या सर्वच
स्तरातील श्रमिक लोकांची संस्कृती, जीवनपद्धती, जीवनसंघर्ष साहित्यामध्ये चित्रित झालेला
आहे. पण श्रमसंस्कृतीच्या अंगाने त्याकडे पाहणे गरजेचे आहे. जात्यावरील ओवी आणि
मोटेवरील गाणी अशा मौखिक परंपरेपासून ते एकविसाव्या शतकातील कापीट दुनियेच्या
लोकांच्या श्रमसंस्कृतीचे दर्शन साहित्यामध्ये विविधांगाने आल्याचे दिसते. श्रमसंस्कृतीच्या
अंगाने ते कसे झालेले आहे, हे पाहणे अत्यंत महत्त्वाचे आहे.

या चर्चासत्रासाठी एकूण १३२ शोधनिबंध आले. शोधकांनी संस्कृती आणि साहित्य
या विषयावर सखोल मांडणी केली ती टाळावी म्हणून निबंधात काटछाट करावी लागली;
पण आपणा सर्वांच्या प्रयत्नातून हा अधिवेशन विशेषांक उत्तम झाला आहे. आपणा
सर्वांच्या पसंतीस उतरेलच. या विशेषांकासाठी संस्थेचे अध्यक्ष मा. बाबासाहेब पाटील,
गोकुळच्या संचालिका सौ. अनुराधा पाटील, शाहूवाडी-पन्हाळ्याचे आमदार सत्यजित
पाटील, श्री. युवराज पाटील, संस्थेचे उपाध्यक्ष श्री. बाळासाहेब इंदुलकर, तज्ज्ञ संचालक
डॉ. बी. आर. गाडवे, प्रभारी प्राचार्य डॉ. जी. एच. आळतेकर, समन्वय समितीतील आणि
महाविद्यालयातील सर्व प्राध्यापक यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले. तसेच शिविमच्या
डॉ. नीला जोशी, डॉ. नंदकुमार मोरे, डॉ. गोमटेश पाटील, डॉ. दिनेश चाधुबरे, डॉ. प्रकाश
दुकळे, डॉ. संजय पाटील, डॉ. एकनाथ आळवेकर, डॉ. मांतेश हिरेमट, प्रा. प्रकाश नाईक,
प्रा. रघुनाथ मुडळे यांच्या प्रयत्नातून हा अंक समृद्ध झाला. तसेच भारती मुद्रणालयाचे
निहाल शिपूकर आणि त्यांचे सर्व कर्मचारी यांचेही मनःपूर्वक आभार !

डॉ. शिवकुमार सोनाळकर
संपादक

अंतरंग

| | |
|---|---|
| अध्यक्षीय मनोगत... | |
| श्रमसंस्कृती, साहित्य आणि बांधिलकी | डॉ. शिवाजी विष्णू पाटील ८ |
| ग्रामीण कष्टकरी स्त्रीचे चित्रण | डॉ. अनिल गवळी १३ |
| श्रमसंस्कृती आणि गोमंतकीय मराठी साहित्य | एकनाथ पाटील १८ |
| श्रमसंस्कृती आणि कोकणी साहित्य | डॉ. विद्या प्रभुदेसाई २७ |
| सीमाभागातील श्रमसंस्कृती आणि साहित्य | डॉ. महेश स. बाबधनकर ३३ |
| श्रमसंस्कृती आणि ग्रामीण साहित्य | डॉ. शिवाजीराव पाटील ४२ |
| श्रमसंस्कृती आणि भटकाविमुक्त्यांचे साहित्य | डॉ. यशवंत चव्हाण ४८ |
| श्रमसंस्कृती आणि स्त्रीवादी साहित्य | डॉ. बाळासाहेब संतू चव्हाण ५३ |
| श्रमसंस्कृती आणि दलित साहित्य | डॉ. लता पांडुरंग मोरे ६६ |
| श्रमसंस्कृती आणि आदिवासी साहित्य | डॉ. चंद्रकांत शंकर कांबळे ७० |
| श्रमसंस्कृती आणि ग्रामीण कष्टकरी स्त्री | प्रा. डॉ. दीपककुमार वळवी ७७ |
| श्रमसंस्कृती आणि महानगरीय कविता | डॉ. मानसी जगदाळे ८१ |
| मधुजपादक श्रमजीवी | तेजस चव्हाण ८७ |
| भारतीय श्रमसंस्कृती आणि मराठी श्रमगीत परंपरा | श्री. दत्ता मोरसे ९३ |
| नोकरी, व्यवसाय, करिअर करणारी स्त्री | प्रा. अनंता कस्तुरे ९७ |
| महादेव मोरे : श्रमिक साहित्याचा आधारस्तंभ | प्रा. डॉ. शिवकुमार सोनाळकर १०७ |
| खोत व दौंड यांच्या कादंबरीतील शेतकरी | प्रा. डॉ. रमेश पोळ ११२ |
| महादेव मोरेंच्या साहित्यातील विडी कामगार | डॉ. एकनाथ आळवेकर ११६ |
| मराठी स्त्रीगीते आणि श्रमसंस्कृती | प्रा. डॉ. संजय दशरथ पाटील १२० |
| 'कुळंबीण' : शेतकरी स्त्रीच्या श्रमाचे चित्रण | डॉ. नीला जोशी १२३ |
| जागतिकीकरण आणि मराठी कादंबरीतील श्रमिक | डॉ. आनंद वारके १२७ |
| महात्मा बसवणांचा श्रमसिद्धांत : 'कायकडे कैलासा' | डॉ. प्रकाश दुकळे १३० |
| मराठी नाटकातील श्रमजीवीचे चित्रण | डॉ. मांतेश हिरेमट १३३ |
| म. फुले यांच्या साहित्यामधील श्रमिकांचे चित्रण | प्रा. डॉ. दत्ता पाटील १३७ |
| नारायण सुर्वे यांच्या कवितेतील कामगारविवेक जाणिवे | डॉ. अरुण शिंदे १४३ |
| नारायण सुर्वेच्या कवितेतील कामगार | डॉ. शिवालिंग मेनकुदळे १४६ |
| | प्रा. डॉ. शिवाजी महादेव होडगे १५१ |

डॉ. अशोक सदाशिव तवर १५३

प्रा. डॉ. सौ. कांचन नलावडे १६०

डॉ. सुरेश बाळकृष्ण शिंदे १६६

डॉ. तानाजी ज्ञानदेव पाटील १७०

प्रा. सुभाष वाघमारे १७३

डॉ. सुवर्णा नामदेव पाटील १७७

डॉ. आनंद शामराव बळ्हाळ १८१

डॉ. प्रशांत बाबासो गायकवाड १८५

डॉ. अशोक शेळार १९०

प्रा. डॉ. नितीश पांडुरंग सावंत १९३

प्रा. डी. जे. दामो १९६

डॉ. धनंजय होनमने १९९

डॉ. भरत जाधव २०२

डॉ. हणमंत रामचंद्र पोळ २०५

डॉ. महेश गायकवाड २०८

डॉ. सविता अशोक व्हटकर २११

प्रा. विनायक राऊत २१४

प्रा. डॉ. सुजय बाबूराव पाटील २१७

प्रा. राजश्री बिसुने २२०

डॉ. विनोद राठोड २२३

सौ. शीतल सचिन गोडें-पाटील २२६

डॉ. अशोक नामदेव शिंदे २२९

डॉ. सज्जोराव पद्माकर २३२

प्रा. संतोषकुमार इफळ्यापूरकर २३५

प्रा. विठ्ठल नामदेव रोटे २३८

डॉ. सुभाष गणपती जाधव २४१

प्रा. सुलोचना रमेश दंभराव २४४

डॉ. माधव मास्ती भोसले २४७

प्रा. भीमराव खंडू वानोळे २५०

प्रा. डॉ. आर. डी. कांबळे २५३

आत्मकथनातून आलेले श्रमिकांचे चित्रण

महानगरीय कादंबरीतील श्रमिक

नारायण सुर्वे यांच्या कवितेतील 'श्रमिक स्त्री'

चंद्रगडी बोली आणि श्रमसंस्कृती

कविता श्रमाची : श्रमसंस्कृतीची गाथा

आदिवासी जमातियों की श्रमसंस्कृती

हिंदी साहित्य में श्रमजीवी नारी का आर्थिक शोषण

हिंदी कविता में चित्रित आम आदमी की स्थिति

नेदर कोहली के पौराणिक उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण संस्कृति

The portrayal of working class in the

plays of Shakespeare

महात्मा फुले आणि श्रमिक शेतकरी

अण्णा भाऊ साठे यांची कादंबरी आणि श्रमसंस्कृती

संतमेळा आणि श्रमसंस्कृती

छ. शाहू महाराज आणि श्रमिक शेतकरी

धग, पाचोळा, गोतावळा मधील श्रमसंस्कृती

लोकांगीतातील श्रमिक स्त्री

श्रमसंस्कृती आणि मराठी कवितेतील कष्टकरी स्त्री चित्रण

ऊसतोड कामगारांचे चित्रण करणारी मराठवाडी कविता

श्रमसंस्कृती आणि मराठी साहित्य

प्रवासवर्णनातील श्रमसंस्कृती

धनगरांची श्रमसंस्कृती आणि साहित्य

श्रमप्रतिष्ठेला पुण्यगारी आदिवासी कविता - 'आदोर'

स्त्रीगीतांमधील श्रमजीवनाचे चित्रण

श्रम, श्रमिक आणि लेखाकचे आकलन

ग्रामीण कादंबरीतील कष्टकरी स्त्रीचे चित्रण

'भंगार' : भटक्या गोसावी समाजाची श्रमसंस्कृती

तनमाजोरी आणि श्रमिकांचे शोषण

श्रमसंस्कृती : परंपरा आणि स्वरूप

व्यंकटेश माडगूळकरांच्या कथेतील दलित श्रमिक

प्रा. डॉ. चंदना अनिल लोखंडे २५६

प्रा. सुकुमार दादू आंबळे २५९

प्रा. सौ. विजया प्रशांत पवार २६३

प्रा. गुंडराव कांबळे २६६

डॉ. रचना सचिन माने २६९

गणेश दुंदा गभाले २७३

प्रा. माधुरी पाटील, प्रा. शिवाजी पाटील २७७

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील २८०

प्रा. यणिक मोरे, डॉ. कृष्णात पाटील २८३

Mr. Dinkar Nangare 285

प्रा. निलेश घोले, डॉ. जी. एच. आळोकर . २८८

डॉ. बी. आर. गाडवे, प्रा. प्रकाश नाईक २९१

प्रा. खुनाथ आण्णा मुडळे २९४

प्रा. ज्योती बाजीराव थोरात २९७

संगीता साईशंकाश आरळी ३००

डु. रोहिणी गजानन रळेकर ३०३

प्रा. कु. लक्ष्मी पवार ३०७

सौ. विजयालक्ष्मी विजय देवगोजी ३१०

श्री. दत्तात्रय शामराव मिठारी ३१३

प्रा. वैशाली श्रीकांत गुंजेकर ३१६

अभिषेक दादसाहेब श्रीराम ३१९

श्री. खुनाथ चंद्र गवळी ३२२

लता ऐवळे, नाईकबा गिड्डे ३२५

प्रा. नीता निवास कदम ३२८

शीतल शिवाजीराव धुमाळ ३३१

प्रा. प्रदीप गोविंदराव राठोड ३३४

डु. साजिदा सद्दार आरवाडे ३३७

प्रा. पुरुषोत्तम गुणवंतराव पडाले ३४०

प्रा. सुनिता जाधव, डु. सुनिता कांबळे ३४३

होत नाही. रात्रपाळीचा त्रास खूप. या कामगारांची घरे खूप लहान. त्यामुळे दिवसा झोपायला जागाच नसते. मग ही माणसं कुठं ओट्यावर, कुठं बागेत झोप काढतात. पावसाळ्यात रात्रपाळीचा जास्तच त्रास होतो. कारण झोपण्यासाठी जागाच मिळत नाही. या यंत्रमागाची ठिकाणं कोंडट जागेत. कोणत्याही प्रकारची हवा येत नाही. या कामासाठी हवा देखील उपयोगाची नसते. वारा आला तर काम होत नाही. त्यामुळे ना पंखे ना हवेशीर ठिकाण. त्यामुळं या कामगारांना कायमच कोंडट वातावरणात काम करावं लागतं. धाण्यांची गुंज श्वसनातून कामगारांच्या छातीत जाते आणि त्यांना टी.बी.सारखा रोग होतो. एका पाहणीमध्ये इचलकंजी मधील ३५ % कामगारांना टी.बी. ची लागण झाली आहे. यंत्रावर काम करताना अपघातही फार होतात. त्यात कामगारांना नुकसान भरपाई ही मिळत नाही. या व्यवसायात स्त्रिया, लहान मुलंही काम करतात. यंत्रमागाचे नवीनच जग आपल्यापुढे उभे राहते.

हमालांचे विश्व

अनिल अवचट यांनी पुणे स्टेशनमध्ये रेल्वेतून येणाऱ्या मालाची चढ उतार करणाऱ्या हमालांचे विश्व आपल्यासमोर 'कोण माणसं....कोण जनावरं' या लेखातून 'माणसं' या पुस्तकामधून उभे केले आहे. गूळ, मिरची, सिमेंट, धान्य असे वेगवेगळी वाहतूक त्या प्रत्येक वाहतुकीचे वेगवेगळे तोटे. गुळाच्या ढेपा वाहताना त्या हातावरून वाहाव्या लागतात. गुळाची ढेप निसटली तर ती हमालांच्या पायावरच पडते. हात आणि पाठ यांची वाटच लागते. धान्य, मिरची, सिमेंट यांच्या वाहतुकीमध्ये तर त्याहून अधिक गंभीर अवस्था. हा माल ज्या गोदामांमध्ये ठेवला जातो, ती कोंडट, अंधारी आणि खाचखळ्यांची जमीन असणारी. धूळ तर इतकी की दिवसादेखील पुढचा माणूस दिसत नाही. सिमेंट, चुन्याच्या वाहतुकीने तर अंगाची आग आग होते. तीच अवस्था मिरची वाहतुकीमध्ये. त्यामुळे त्यांच्या अंगामध्ये कायमच उष्णता. त्या उष्णतेचा त्रास यांच्या पत्नींही होतो. काही बायकांनी याच कारणाने आपल्या नवऱ्यांना सोडले आहे. या हमालीमुळे अनेकांना कायमस्वरूपी अपंगत्व आलेले आहे. ही वाहतूक करून यांचे हात लाकडासारखे झालेले असतात. आणि अवचट हा अनुभव व्यक्त करताना म्हणतात, 'मी त्या तरुणाचा हात हातात घेतला. बोटे चाचपून पाहिले. त्यांत मांसल, लुसलुशीत काहीच उरले नव्हते हातात लाकूड धारल्यासारखे वाटले. त्याचा हातांचा तो स्पर्श मनावर चरा उठवून गेला. आपल्या जीवनात आपण फुलाच्या पाकळीवरून, लहान मुलांच्या कोवळ्या गालावरून, स्त्रीच्या ओठावरून हळुवार, अलगद हात फिरवतो या तरुण हमालांच्या लाकडी हातांना ही अलगद हळुवाराता कशी अनुभवता येणार.' ६ हमालांच्या जीवनातील हे जनावरांसारखे श्रम आपल्यासमोर अवचटांनी मांडले आहेत.

अंधेतरगरी निपाणी

तंबाखू, विडी व्यवसायामधील महाराष्ट्र, कर्नाटकमधील प्रमुख शहर म्हणजे निपाणी. हजारो स्त्री, पुरुष या व्यवसायामध्ये काम करतात. येथे काम करणाऱ्यांमध्ये घरी विड्या वळून आणून देणारे स्त्री-पुरुष आणि प्रत्यक्ष तंबाखुवर प्रक्रिया करणाऱ्या कारखान्यामध्ये काम करणारे कामगार या दोन प्रकारे श्रमजीवन येथे आहे. दिवस उजाडल्यापासून रात्री मावळपर्यंत हे विड्या वळण्याचे काम चालते. तंबाखूच्या गोदामामध्ये यापेक्षा परिस्थिती भयानक. या गोदामामध्ये हवा येण्याची कोणतीही व्यवस्था नाही. तंबाखूची धूळच धूळ.

त्या धुळीने एक प्रकारची नशा या स्त्री-पुरुष कामगारांमध्ये निर्मित होते. सकाळी आठपासून रात्री दीड-दोनपर्यंत हे काम चालते. यामध्ये स्त्री कामगारांचे प्रमाण खूप जास्त. या स्त्रिया कामावर वेळेत जाण्यासाठी वाटेने चालता चालताच जेवत असतात. या स्त्रियांचे लैंगिक शोषण तेथील कारखानदार, तेथील मुकादम करतात. हे शोषण पराकोटीचे आहे. त्यामुळे येथील एक म्हातारी स्त्री कामगार म्हणते, "बाबा ही निपाणी नाही, ही अंधेतरगरी आहे अंधेतरगरी" ७ या विडी कामगार आणि तंबाखू कामगारांना एवढं काम करूनही दोनवेळच्या जेवण्याइतकं पैसे मिळत नाहीत. या कामगारांचे इतके शोषण होण्यास कारण की या कारखानदारांची या निपाणीवरील सर्वच क्षेत्रांमध्ये असणारी सत्ता. या विडी आणि तंबाखू कामगारांच्या दैन्यवस्थेचे चित्रण अनिल अवचट येथे करताना दिसतात.

निष्कर्ष

- १) वेस्था, हमाल, डोअरक्कीपर, हळद कामगार, यंत्र कामगार, तंबाखू कामगार अशा अनेक समाजातील उपेक्षित लोकांचे चित्रण अनिल अवचट यांनी केले आहे. त्यांचे प्रश्न, त्यांचे शोषण करणारी व्यवस्था येथे मांडली आहे.
- २) प्रत्यक्ष त्या त्या ठिकाणी भेट देऊन या समस्यांचे चित्रण अवचटांनी केले आहे. अशा प्रकारे लेखन करणारे अनिल अवचट हे अपवादात्मक लेखक आहे.
- ३) त्या त्या प्रश्नाचे स्वरूप वाचकासमोर मांडण्यासाठी लेखक अनिल अवचट यांनी साध्या सरळ भाषेचा वापर केला आहे. त्या त्या व्यवसायातील विशिष्ट शब्दही जसेच्या तसे अनिल अवचट आपल्या लेखामध्ये उपयोजित करताना दिसतात.
- ४) अनिल अवचट यांनी या लेखांसाठी रिपोर्टाज लेखन असा शब्दप्रयोग केला आहे. अशा प्रकारचे लेखन करणारे अनिल अवचट हे एक वेगळे लेखक आहेत.

समारोप

अनिल अवचट यांनी आपल्या वैचारिक स्वरूपाच्या लेखनामध्ये समाजातील वेगवेगळ्या घटकांचे प्रश्न आपल्यासमोर मांडले आहे. त्या-त्या प्रश्नांच्या मुळापर्यंत जाऊन त्या त्या समस्यांचा शोध घेण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला आहे. त्यामुळे त्यांचे हे वैचारिक लेखन बरकरचे न होता त्या समस्या खोलवर जाऊन मांडतानाचे दिसते. हे सर्व लेखन श्रमजीवी लोकांवर आहे. त्यामुळे समाजातील श्रमव्यवस्थेचे चित्रण अनिल अवचट त्यांच्या लेखनामध्ये येते. त्याचे वेगळेपणही आपल्याला दिसून येते.

संदर्भ

- १) अवचट अनिल, धागे आडवे उभे, मॅजेस्टिक प्रकाशन, मुंबई, सप्टेंबर १९८६, पृ. ६
- २) तत्रैव पृ. १६.
- ३) तत्रैव पृ. १४.
- ४) तत्रैव पृ. ४६, ४७.
- ५) तत्रैव पृ. ६०, ६१.
- ६) अवचट अनिल, माणसं!, मौज प्रकाशन गृह, मुंबई, सहावी आवृत्ती १९९९, पृ. ४२.
- ७) तत्रैव पृ. १७७.

20-24



शिवाजी विद्यापीठ भसठी शिक्षक संघाचे विद्वत्प्रमाणित त्रमासिक

शिविम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed Referrred Research Journal) ISSN No. 2319-6025

(विद्यापीठ अनुदान आयोग नवी दिल्ली मान्यता अ. क्र. ६४१७५)

वर्ष दहावे : अंक पंचवीस - सव्वीसावा

जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च, एप्रिल-मे-जून २०२१



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार' -

शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित

पद्मभूषण डॉ. वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, तासगाव

• Accredited B++ with CGPA 2.76 by NAAC • ISO मानकान 9001:2015 •

ता. तासगाव, जि. सांगली



लोकसंस्कृतीची आविष्कार रूपे



दस्त टूल्स

वेदना भवंतु ऑड कमिशन एजंट

रिक्त सोसायटी, गाळा नं.७, मार्केट यार्ड,
तल्गांव (जि. सांगली).

फोन : ०२३४६- दु. २४२४३३

नि-२४०४३३, फॅक्टरी : २५०४३३

प्रोग्र. वैभव वि. पाटील. मो. ९४२२०४०४३३

दस्त सिमेंट ग्रांडपट्स ऑड फॅब्रिकेट्स

२२/२३ इण्डियन इस्टेट, वृत्तमाळ, तासगांव (जि. सांगली)
फोन : (०२३४६) फॅक्टरी २५०४३३, दु. २४२४३३, नि. २४०४३३



भरुदेक सिमेंटचे अशीर्वात विद्वान. तंत्र
एव नानवत कामांचे टोपलेन घेतिले सिमेंट मिळते.

सिमेंट पाईप, नेटाक टॅन्क्स व पाण्याचे हौद

हॅड्रॉलिक प्रेसवर तयार केलेले सिमेंट ब्लॉक्स (विद्या)

रॉलिंग शर्ट्स व सर्व प्रकारचे फॅब्रिकेशन कामासाठी

प्रोग्र. सुवसज ह. गोरड मो. ९४२२६१३६३३

Vinod S. P
Mo. 9422580305

UNIQUE BIOLOGICAL & CHEMICALS

AUTHORISED DEALER
IN REMI INSTRUMENTS

DEALERS IN

All Kinds of Biological Chemical,
Glassware Instrument and Equipment,
Borosil, J-Sil Emkay, Elico, Ketan
Equiptronics, Whatman, Visual Chart etc.



671, 'E' Vasant Ratan Appt; 3rd Lane, Shahupuri, Kolhapur - 416 004
Ph: (0) 0231- 2661216 (R)937095, E-mail : Vinodunique@yahoo.com



लोकसंस्कृतीची
आविष्कार मग

शिवाजी विद्यापीठ सराठी शिक्षक संघाची विद्वत्समाजित त्रैमासिक

शिविम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed Refereed Research Journal) ISSN No. 2319-6025
(विद्यापीठ अनुदान अयोग नवी दिल्ली मन्वता अ. क्र. ६४९७५)

वर्ष दहावे : अंक पंचवीस व सव्वीसावा
जानेवारी-फेब्रुवारी-मार्च, एप्रिल-मे-जून २०२१

लोकसंस्कृतीची आविष्कार रूपे

● संपादक ●

प्रा. (डॉ.) शिवकुमार सोनाळकर

अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ सराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर

● अतिथी संपादक ●

डॉ. मिलिंद हुजरे

प्राचार्य, परमभूषण डॉ. वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, तासगाव, जि. सांगली

डॉ. तातोबा बदामे

डॉ. शहाजी पाटील

● कार्यकारी संपादक ●

डॉ. नीला जोशी

● संपादक मंडळ ●

डॉ. गणेशकुमार मोरे डॉ. गोमटेश्वर पाटील डॉ. तातोबा बदामे डॉ. दिनेश वाघुबारे

● सहाय्यार समिती ●

डॉ. राजन गवस डॉ. प्रकाश कुंभार डॉ. डी. ए. देसाई डॉ. अनिल गवळी

● प्रकाशक ●

अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ सराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर
अनुराज, ७/ब सूर्यवंशी कॉलनी, सानेगुरूजी वसाहत, कोल्हापूर - ४१५ ०११

मुद्रक

देशमाने ऑफसेट,
औद्योगिक वसाहत, पलूस, (जि. सांगली) ४१६ ३१०, मो. ९९००७००७५८
मूल्य: ₹ ३००

ही संपादन पत्रिका प्रकाशक डॉ. शिवकुमार सोनाळकर, यांनी शिवाजी विद्यापीठ सराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर यासाठी वेगवेगळे ऑफसेट, ओद्योगिक वसाहत, पलूस येथे छापून अनुराज, ७/ब सूर्यवंशी कॉलनी, सानेगुरूजी वसाहत, कोल्हापूर - ४१५ ०११ येथे प्रकाशित केले. या पत्रिकेत प्रकट झालेल्या मतांशी संपादक, प्रकाशक, सहाय्यार व मुद्रक संयुक्त अस्तित्वात असत नाही.

र्तनाची प्रभावी साधने बनली आहेत. याची व्याप्ती वाढवणे

ने समाजविघातक रूढी परंपरेला फाटा देणाऱ्या घटना आज जानेवारी, २०२१ रोजी मकरसंक्रांत या सणादिवशी देऊन बीड जिल्ह्यातील चुंबळी या गावात एका शिक्षक विधवांसाठी 'हळदीकुंकू' समारंभाचे आयोजन केले. हे र्वर्तन क्रांतिकारी आणि मानवतेचा पुरस्कार करणारे आहे. क्षणप्रसार आणि औद्योगिकीकरण चालू आहे. विज्ञान चित्रपट, विविध चॅनल्स इत्यादी मनोरंजनाची साधने आणि ग मशीन, शेतात आधुनिक यंत्रणा आली आहे. त्यामुळे । आणि लोककला दुर्मीळ होत आहेत, काळाच्या ओघात आहे, तरीही बारसे, लग्न, विधी, जत्रा इत्यादी प्रसंगाने कला यांची गरज भासते. वर्षभरातील सण-समारंभाच्या वृद्ध लोककलावंतांकडून हे लोकसाहित्य व लोककला मेळतात. हे लक्षात ठेवले पाहिजे की, वैज्ञानिक क्षेत्रातील वे लागते, पण लोकसंस्कृती आणि लोकसाहित्याच्या ळात जावे लागते. म्हणून अशा लोकसंस्कृतीचे, स म्हणून संकलन संशोधन व जतन करावे. परंतु अंधश्रद्धा, स्त्री-पुरुषभेद व वर्ण-जातीव्यवस्थेचा पुरस्कार करणाऱ्या साहित्याचे व लोककलांचे उदात्तीकरण करू नये. तर ा, स्त्री - पुरुष समानता, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता । पुरस्कार करणाऱ्या भारतीय संविधानाचा पुरस्कार करावा. नानवादी संस्कृती निर्माण व्हावी आणि या संविधानवादी नोकसंस्कृती आणि लोकसाहित्य निर्माण होईल असा मी या ठिकाणी थांबतो. धन्यवाद!

आविष्कार रूपे

ISSN No. 2319-6025

अंतरंग

| | | |
|--|----------------------------------|----|
| स्वागताध्यक्षांचे मनोगत | | १ |
| संपादकीय | | ३ |
| अध्यक्षीय मनोगत... | डॉ. रघुनाथ अण्णा केंगार | ५ |
| स्त्रियांचे जीवन समृद्ध करणारी लोकगीते | साजिदा सरदार आरवाडे | १९ |
| आजत तालुक्यातील लोककलांचे स्वरूप | डॉ. आनंद शामराव बल्लाळ | २१ |
| आदिवासी लोकगीतांतून व्यक्त होणारे नातेसंबंध | डॉ. कृष्णा भवारी | २४ |
| लावणीचे बदलते स्वरूप | डॉ. जयकुमार चंदनशिखे | २७ |
| गजीनृत्याचे प्रयोगवगजीनृत्याचे बदलते स्वरूप | प्रगती पाटील | २९ |
| मराठी नाटकातून आविष्कृत होणारी लोकसंस्कृती | स्मिता कोंडिबा कालभूषण | ३१ |
| 'मोहना-बटाव': एक दृष्टीक्षेप | डॉ. पांडुरंग ऐवळे | ३४ |
| महाराष्ट्रातील आदिवासींची लोकनृत्ये: भवाडा आणि दंडार | कु. प्रियांका अमोक कुंभार | ३८ |
| मराठी लोकसाहित्यातून परिष्कृत झालेले महाराष्ट्रीय जनजीवन | डॉ. गणपत काशिबा हराळे | ४० |
| दुर्मिळ होत चाललेल्या प्रायोगरूप लोककला: | डॉ. प्रियांका कुंभार | ४२ |
| दिवटा, बहुरूपी आणि पिंगळा | | |
| स्त्रीगीतांतील विडुल | डॉ. मानसी लाटकर | ४५ |
| मराठी ख्रिस्ती कीर्तनकारांची परंपरा | प्रा. अविनाश भोरे | ४९ |
| तमाशातील गणगौळण, लावणी आणि बतावणी | डॉ. संपतराव पालेंकर | ५४ |
| ISSN No. 2319-6025 | लोकसंस्कृतीची आविष्कार रूपे । ११ | |

| | | |
|---|---------------------------|-----|
| मराठी दळणगतीतील सामाजिक-नैतिक मूल्याविष्कार | डॉ. यादव सूर्यवंशी | ४०९ |
| पोतराजांचे विधिनाट्य आणि पोतराजाची गीते | डॉ. शरद गायकवाड | ४१३ |
| संत एकनाथांच्या भाखांतून व्यक्त झालेली लोक संस्कृती | डॉ. आनंद चारके | ४१७ |
| अदिवासी भिड्डांच्या बोलीभाषिक लोककथा | डॉ. दीपककुमार वळवी | ४२० |
| लोकसंस्कृतीचा प्रयोगरूप आविष्कार: गांधळ | भाणिक नामदेव बनकर | ४२४ |
| लोकसाहित्य - संकल्पना, स्वरूप व व्याप्ती एक दृष्टिक्षेप | सुवर्णा रामचंद्र शिंगाडे | ४२८ |
| लोकसाहित्या प्रयोग आविष्कार : तमाशा | डॉ. चंद्रकांत शंकर कांबळे | ४३१ |
| लोकसंस्कृतीतील स्त्रियांची समृद्ध लोकगीतगंगा | दादासाहेब ईश्वर गायकवाड | ४३५ |
| लोकसाहित्याचे संशोधन : स्वरूप व व्याप्ती | डॉ. डी. आर. गायकवाड | ४३९ |
| लोक नाट्य तमाशा : लोकल ते ग्लोबल | गुंडोपंत पाटील | ४४३ |
| तमाशा कलावंतांचे सामाजिक जीवन आणि संस्कृती | डॉ. सुनील चंदनशिवे | ४४८ |
| लोकसंस्कृतीचे उपासक-वाच्या-मुळा | डॉ. प्रशांत गायकवाड | ४५१ |
| तमाशाचे बदलते स्वरूप | डॉ. नितीश पांडुरंग सावंत | ४५५ |
| लोकसाहित्य एक कला प्रकार : उखाणा | डॉ. शर्मिला घाटगे | ४५९ |
| लोककथेची निवेदन तंत्रे | डॉ. सुरेश बा. शिंदे | ४६२ |

प्रस्तावना :

कथा सांगणे व ऐकणे हा माणसाचा मूलभूत स्वभाव आहे. त्यामुळे माणसाइतकीच कथाही प्राचीन आहे. लोककथेची परंपरा समृद्ध आहे. लोककथेचा विचार करताना तिच्या संस्कारक्षमतेचाही विचार आपल्याला करावा लागतो. लहानपणी आईने सांगितलेली चिरुकाऊची गोष्ट, आजी-आजोबांनी सांगितलेल्या राजाराण्यांच्या गोष्टी, प्राण्यांच्या गोष्टी आपले विचारविश्व व कल्पना विश्व संपन्न करीत असतात. लहानपणापासून कथांची घेतलेली साथ आयुष्यभर आपल्याला सोबत करत असते. **दैवत कथा :**

मानवी इतिहासामध्ये दैवतकथा आद्य मानल्या जातात. जगातील सर्व मानवी जीवनामध्ये याची वेगवेगळी रूपे पहायला मिळतात. या कथांच्या निवेदनात अद्भुतरचना हा घटक मुख्यतः दिसून येतो. निसर्गाच्या रूपांमुळे स्तिमित झालेले मानवी मन व त्याच्या रूपाची कारणमीमांसा या कथांमध्ये दिसते. कालानुक्रम पाळत केलेल्या कथांमध्ये निवेदनाकडे आकर्षित करण्यासाठी अद्भुततेचा वापर दिसतो.

'बाणाबाईसाठी मेंढपाळ झाला देव मल्हारी' या दैवतकथेत कालानुक्रम पाळत मल्हारी मार्लेड आणि बानूच्या प्रेमाची कहाणी निवेदन केली आहे. निवेदनामध्ये मेंढर मारून पुन्हा जिवंत करण्याच्या अद्भूत घटनेचा वापर निवेदनात केला आहे. सुखात्म्य शेवट या कथेच्या निवेदनामध्ये दिसतो. मल्हारी यादैवतेचे देवत्व लोकमानसावर ठसावे असा प्रयत्न कथेच्या निवेदनामध्ये केला आहे. 'झाली पद्मिनी पाताळची राणी' या दैवत कथेमध्ये शंकर भक्त निलमणीची कथा येते. या कथेच्या निवेदनामध्ये अद्भूततेचा वापर अधिकप्रमाणात करण्यात आला. पण त्याला वास्तवाची जोड देण्यात आली आहे. याही कथेचा शेवट सुखान्त करण्यात आला आहे. 'अहिल्येच्या भाळी होणे आले शिळा' या कथेमध्ये रामायणातीलकथा येते. 'एकदा काय झालं' अशी पारंपरिक सुरुवात या कथेच्या निवेदनात येते. कालानुक्रम पाळत निवेदन केलेल्या या कथेतही अद्भूततेचा पगडा आहे. शाप आणि उःशाप यांचा निवेदनात केलेला वापर दैवत कथेला आधोरेखित करतो. सर्वच लोककथांमध्ये सुखान्त शेवट असतो तसा याही कथेत आहे.

अद्भुतता, कालानुक्रम निवेदन, सुखान्त शेवट, दैवत्व ठसवणारी भाषाशैली अशी काही निवेदन तंत्रे दैवत कथेच्या निवेदनात दिसून येतात.

अद्भुतकथा किंवा परीकथा -

रंजकतेच्या दृष्टीने निवेदन केलेल्या परीकथा असा परीकथांचा उल्लेख करावयास हवा. या कथांच्या केंद्रस्थानी मात्र नायक किंवा नायिका आहेत. या कथांच्या निवेदनातही अद्भुतता दिसते.

'श्रावण साखळी' या अद्भूत कथेमध्ये वास्तवकथानकाला अद्भुततेची जोड दिली आहे. निवेदनात ऐसपेसपणा आहे. सद्प्रवृत्ती आणि अपप्रवृत्ती यांच्या संघर्षामध्ये

सद्प्रवृत्तीचा विजय रेखाटण्यासाठी निवेदनामध्ये अद्भुततेची जोड देण्यात आली आहे. अद्भुततेसाठी अमानवी पात्रांचा वापरही निवेदनात करण्यात आला आहे. 'गालेलं झाड अन् बोलतलं पाखरू' या संपूर्ण कथेवर अद्भुततेची छाया गडदपणे पडलेली आहे. या कथेतही सद्प्रवृत्ती आणि अपप्रवृत्ती यांचा संघर्ष येतो. सद्प्रवृत्तीचा विजय आणि सुखान्त शेवट याचसाठी आशयसूत्राला अद्भुततेची जोड दिली आहे.

'कथा निळावंतीची' या अद्भूत नायिकाप्रधान कथेत एकाच प्रवृत्तीचे आशयसूत्र येते. प्राण्यांची आणि पक्षांची भाषा समजणारी नायिका त्यातून आपला उत्कर्ष साधते. सुखान्त शेवट हे याही कथेचे निवेदनाचे वैशिष्ट्य आहे. या कथांच्या निवेदनाबद्दल इंदुमती शेवडे म्हणतात, 'नायक वा नायिकांवर येणारी संकटे, चमत्कार, त्यांचा अद्भूत पराक्रम, त्यातून अतिमानवी शक्तीच्या साहाय्याने सुटका व शेवट सुखान्त केलेला असतो. या कथेत दोघेही कधीच मरत नाही. म्हणून क्रापने या कथांना कृत्रिम करून नाट्याची (चशश्रैवीरार) उपमा दिली आहे. यात सुष्ट व दुष्ट व्यक्तीमधील वा शक्तीमधील संघर्ष, दुष्टांचा निःपात व सुष्टांचा अंतिम विजय हे नीतीत अप्रत्यक्षपणे गोवलेले असते.'^२ मौखिक परंपरेमध्ये नीतिप्रधानतेची प्राधान्यता दिसते, ती अद्भूत कथांमध्येही दिसून येते. अद्भुतरम्यता व सुष्ट-दुष्टांच्या संघर्षातून नीतिबोधच या कथांना करावयाचा होता.

प्राणीकथा

मौखिक कथांमधील सर्वांत लोकप्रिय कथांचा प्रकार म्हणून प्राणीकथांचा उल्लेख केला, तर तो चुकीचा ठरणार नाही. मानवी भावभावनांचा आरोप प्राण्यांवर करीत या कथांचे निवेदन केलेले असते. यातील प्राण्यांच्या संवादानाही महत्त्व असते. येथेही नीतिबोधाचाच उद्देश कथांच्या निर्मितीमार्गे असतो. या चातुर्यकथांचा आहेत.

'कोल्ह्याने केली चतुराई तर बगळा खातो मलई' ही कथा मानवाच्या स्वभावातील खोडसाळवृत्तीवर प्रकाश टाकते. या कथांचा आकार छोटखानी असल्यामुळे कालानुक्रम निवेदनात पाळलेला असतो. संवादाना कथेच्या निवेदनात महत्त्व आहे.

'बेडूक आणि कासव' या कथेत निवेदनात संवादाना महत्त्व आहे. मानवाला वास्तवतेची जाणीव करून देणाऱ्या या कथेत वास्तव घटनांचा वापर निवेदनात केलेला आहे.

'उंदीर आणि सिंह' या प्रसिद्ध कथेत संवाद आणि चित्रमय भाषेच्या माध्यमातून कथेची उभारणी केलेली आहे. नीतीमूल्याची शिकवण देणाऱ्या या कथेत वास्तववादी घटनांतून कथेची उभारणी केलेली आहे.

पंचतंत्र ही प्राणीकथा व नीतिकथा यांचा आद्यग्रंथ होय. या कथांच्या निवेदनाचा उद्देश बोधच आहे. पण हा बोध मनोरंजनाच्या माध्यमातून केला जातो.

इतर मौखिक कथा :

18-19

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
6.039(IJIF)

Printing Area[®]
International Research Journal

Jan., 2019
Issue-49, Vol-01

01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

Jan., 2019, Issue-49, Vol-01

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)

“Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.”



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

Editorial Board & Advisory Committee

- 1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
- 2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
- 3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arabia)
- 4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
- 5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
- 6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
- 7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
- 8) Jubraj Khamari (Orissa)
- 9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
- 10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
- 11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
- 12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
- 13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
- 14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
- 15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
- 16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
- 17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
- 18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
- 19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
- 20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
- 21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
- 22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
- 23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
- 24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
- 25) Dr.Seema Sharma (Indor)
- 26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
- 27) Dr. Yallowad Rajkumar (Parli v.)
- 28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
- 29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
- 30) Dr Watankar Jayshree
- 31) Dr. Saini Abhilasha
- 32) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
- 33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
- 34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
- 35)Dr. Pandey Piyush (Delhi)
- 36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
- 37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
- 38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
- 39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
- 40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
- 41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
- 42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
- 43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
- 44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
- 45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
- 46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja)



Indexed



Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Note : The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publication is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

<http://www.printingarea.blogspot.com>

Printing Area : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal

Index

| | |
|--|----|
| 01) PROBLEMS AND PROSPECT OF FLORICULTURE IN ASSAM: A case study of Hajo ... Dr. Bhanu Hazarika, Guwahati | 10 |
| 02) INFORMATION USE BEHAVIOUR OF FACULTY MEMBERS OF ENGINEERING ... Ramesh Jabnoor, BIDAR, Karnataka State | 14 |
| 03) The need of Pygmalion method application in teaching learning process of... Dr. Dilip Kumar Jha, Lakhimpur, Assam | 16 |
| 04) Banda Bahadur's Fall : An Unconditional Surrender or a Negotiated Settle... Dr. SUPREET KAUR, Amritsar | 19 |
| 05) English Language Curriculum in Karnataka: A Case Study of UG Programme... Arunkumar P. Lokare & Dr. M. G. Hegde, Kumta – North Kanara | 24 |
| 06) Import of Crude oil and its effects in India Dr. Manoj Kumar, Badaun | 29 |
| 07) FUZZY SUBRINGS AND FUZZY IDEALS OF RINGS Mukul Buragohain, Digboi | 33 |
| 08) CRITICAL EVALUATION OF AFFECTIVE AND NORMATIVE COMMITMENT OF PHYSI... Dr. Satya Bhushan Nagar, Udaipur (Raj) | 36 |
| 09) Indian English literature and Spirituality Dr. Rashmi Nagwanshi, Chhindwara | 45 |
| 10) B. R. Ambedkar: A Great Nationalist Haresh Narayan Pandey, Gaya, Bihar | 46 |
| 11) PHOTOABSORPTION AND PHOTOLUMINESCENCE STUDIES ON LOW DENSITY ... SHRUTI PATEL, JABALPUR (M.P) | 52 |
| 12) A Study on Role of SHG's towards Women Empowerment (With reference to... Mr. Shashidhar S. & Mr. Satish T., Mysore | 55 |

| | |
|--|----|
| 13) IMPACT OF CASHLESS ECONOMY ON COMMON MAN IN INDIA Dr. Rajesh G. Umbarkar, Nanded | 60 |
| 14) Social Changes Among The Rural People Through MGNREGA; A Geographi... Vikash Ranjan, Chapra, Bihar | 64 |
| 15) Comparative Study of Motor Fitness components among football and ... Mrs. Meera Yadav, Sonebhadra, U.P. (India) | 68 |
| 16) Scope of Intervention in International Law Dr. Priyanka Samant, Bhilwara | 72 |
| 17) सामाजिक प्रतिष्ठे व लग्न सोहळ्यातील अवाढव्य खर्च डॉ. ज्ञानेश्वर अंकुशराव देशमुख | 77 |
| 18) लोककल्याणकारी राजा - राजर्षी शाहू महाराज प्रा. बोकारे स्वाती पंढरीनाथ, वसमत, जि. हिंगोली | 78 |
| 19) दलित साहित्याचे स्वरूप: नकार आणि विद्रोह डॉ. गौतम ढवळे, जि. लातूर | 80 |
| 20) स्वयंसहाय्यता बचत समूहांचा ग्रामीण आर्थिक विकासाचा घटक सामाजिक स्थितीवरील प्रभावाचा अभ्यास ... अनंत शत्रुघ्न गावंडे & डॉ. आर. एम. भिसे, अमरावती | 82 |
| 21) बखरीतील पौराणिक उपमा-दृष्टांत डॉ. सुरेश बा. शिंदे, जि. सांगली | 86 |
| 22) नादिरशाह विषयक मराठा धोरण प्रा. डॉ. एस. पी. चव्हाण, खामगांव | 91 |
| 23) वर्धा जिल्ह्यातील अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या विकासात नाबार्डचे योगदान प्रा. गजानन शिवहरी जाने, जि. वर्धा | 93 |
| 24) राजमाता अहिल्यादेवी होळकर : एक उत्कृष्ट प्रशासक प्रा. डॉ. दत्ताजी हुलप्पा मेहत्रे, मुदखेड जि. नांदेड | 96 |
| 25) जागतिक लोकसंख्यावाढीचा मानसशास्त्रीय अभ्यास प्रा. रविंद्र जि. मोरे, शिरपूर जि. धुळे | 99 |

istry of Rural Development. Government of India) Rajendranagar. Hyderabad.

Centre for Development Research and Action. (२००३). Micro Finance and Empowerment of Scheduled Caste Women: An Impact Study of SHGs in Uttar Pradesh and Uttaranchal. BL Centre for Development Research and Action. Vikas Nagar. Lucknow.

काटोले, रविद्र. (२००६). महिला बचत गट. पुणे : महावीर प्रीट. गोडवा प्रकाशन.

मुखर्जी, रविद्रनाथ. (२००५). सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी. दिल्ली : विवेक प्रकाशन.

नागर, कौलाशनाथ. (१९९६). सांख्यिकी के मूलतत्व. मेरठ : मीनाक्षी प्रकाशन.

शर्मा, आर. ए. (२०१३). अनुसंधान के मूलतत्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ : आर लाल बुक डिपो.

शुक्ल एस. एन., सहाय शिवपूजन. (२००४). सांख्यिकी के सिद्धांत. आगरा : साहित्य भवन पब्लिकेशन.



बखरीतील पौराणिक उपमा-दृष्टांत

डॉ. सुरेश बा. शिंदे

विभाग प्रमुख,

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, जि. सांगली

प्रस्तावना :-

प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास पाहता आपल्याला असे दिसून येते की या कालखंडात पद्यरूपातच मराठी साहित्य अवतरले. त्याकाळात पाठांतर करून साहित्य लक्षात ठेवण्याची परंपरा होती. त्यामुळे पद्यरूपात हे साहित्य निर्माण झाले. या कालखंडामध्ये महानुभाव संप्रदायातील चरित्र ग्रंथ, एकनाथांची काही स्फुट प्रकरणे, फादर स्टीफन्सच्या 'क्रिस्तपुराण' ची प्रस्तावना असे काही अपवादात्मक साहित्य गद्यामध्ये निर्माण झालेले दिसते. या पद्याच्या प्रभावाच्या पार्श्वभूमीवर गद्यामध्ये अवतरलेले बखर वाङ्मय आपले वेगळेपण सिद्ध करते. 'महिकावतीची बखर' या बखरीचा अपवाद वगळता इतर सर्व बखरी गद्य स्वरूपामध्ये निर्माण झालेल्या दिसतात. सतराव्या शतकाच्या उत्तरार्धात शिवाजी महाराजांचे राज्य स्थापन झाले आणि मराठी भाषेला राजभाषेचे स्वरूप प्राप्त झाले. याकाळात पद्यातून जसे पराक्रमाचे पोवाडे गायले जाऊ लागले त्याचप्रमाणे हाच पराक्रम गद्यामधूनही चित्रित होऊ लागला. आणि बखर वाङ्मय निर्माण झाले. प्राचीन मराठी वाङ्मयाच्या इतिहासामध्ये बखर गद्याचे महत्त्व अनन्यसाधारण आहे. बखरीकडे ऐतिहासिक दृष्टिकोणातून ज्याप्रमाणे पाहिले जाते त्याचा अभ्यास केला जातो, त्याचप्रमाणे वाङ्मयीन दृष्टिकोणातून त्याची चिकित्सा केली गेली आहे. कारण बखरी या वाङ्मयीन गुणांनी युक्त आहेत. बखरीचे स्वरूप :

'बखर' या अरबी शब्दाचा विपर्यास होऊन बखर शब्दाची निर्मिती झाली आहे असे इतिहासाचार्य राजवाडे यांनी म्हंटले आहे. मुसलमान राजवटीमध्ये घडणाऱ्या घडामोडींच्या आधारावर तवारिखा लिहिण्याची पद्धत होती

त्यावरून मराठ्यांनीही बखरी लिहिल्या असे राजवाडे म्हणतात. बखरीचे राजकीय स्वरूपाचे ऐतिहासिक लेखन असे स्वरूप आहे. मराठ्यांच्या इतिहासातील निरनिराळ्या घटना-प्रसंगावर जवळ जवळ २०० ते २५० बखरी लिहिल्या गेल्या आहेत. बखरीच्या रचनेवरून व त्याच्या स्वरूपावरून बखरीचे वेगवेगळे प्रकार पडतात. समकालीन, उत्तरकालीन, सांप्रदायिक, पौराणिक असे प्रकार पडतात. त्याचप्रमाणे चरित्रात्मक, प्रसंगात्मक, आत्मचरित्रात्मक, घराण्याचा इतिहास असेही बखरीचे प्रकार पडतात, समकालीन बखरींना ऐतिहासिक दृष्टिने महत्त्व असते. कारण त्या बखरींमध्ये ऐतिहासिक प्रामाण्य असते. अर्थात कागदपत्र व ऐतिहासिक पुराव्याच्या साहाय्याने लिहिलेल्या उत्तरकालीन बखरींमध्येही ऐतिहासिक प्रामाण्य अधिक असते.

मराठी बखरींच्या स्वरूपाचा विचार करता बखरींचे लेखन हे इतिहासाच्या शास्त्रीय भूमिकेने झालेले नाही. त्याचप्रमाणे ते वाङ्मयीन भूमिकेनेही झाले नाही. बखरींचे लेखन हे हेतुपुरस्सर झाल्याचे दिसून येते. तरीही मराठी बखरींमध्ये वाङ्मयीन गुण आढळतात. बखरकाराची भूमिका याला कारणीभूत ठरते. स्वकीयांसंबंधी अभिमानाची भावना बहुतेक बखरकारांमध्ये आढळते. व्यक्ती, कुटुंब व राष्ट्रीय अभिमानातून तो वर्णन विषयाशी एकरूप होतो. त्यातूनच त्याच्या लेखनामध्ये जिवंतपणा येतो आणि बखरीमध्ये वाङ्मयीन गुण निर्माण होतात. बखरकारास आर्थिक व मानसिक स्वास्थ्य होते. त्यामुळेच बखरी चे स्वरूप दीर्घ असे राहिले आहे. 'बखर लेखन किंवा बखररचना या शब्दप्रयोगा ऐवजी 'बखर सजविणे' असा प्रयोग वापरीत. उदारणार्थ, रघुनाथ यादव पाणिपतच्या बखरीच्या शेवटी यथामतीने बखर सजवून सेवेशी पाठवली आहे असे म्हणतो. बखर सजविणे या शब्दप्रयोगात लेखनाचा हेतू स्पष्ट होतो. त्यातूनच सौंदर्य प्रमाणबद्धता प्रकट होते. स्वाभाविकपणे त्यामध्ये वाङ्मयीन गुण येतात.

बखर लेखकांची नावे पाहता आपल्या लक्षात येते की, यातील बहुतेक बखरकार दप्तरीकारकून होते. त्याचप्रमाणे ते श्रद्धालूही होते. त्यांचा रामायण-महाभारतादी पुराणग्रंथांचे श्रवण पठण होते. त्यामुळे बखरीमध्ये अनेक पौराणिक संदर्भ व दाखले येतात. काही बखरींच्याद्वारे या पौराणिक संदर्भ दाखल्यांचा विचार करू.

शिव-छत्रपतींच्या चरित्र (सभासदाची बखर)

कृष्णाजी अनंत सभासद याने रचलेले शिवाजी महाराजांचे चरित्र म्हणजेच ही बखर होय. याला सभासदाची बखरही म्हणतात. शिवछत्रपतींपासून रामाराम महाराजांच्या अखेरीपर्यंत कृष्णाजी अनंत दरबारी सभासद होते. त्यामुळे एका समकालीन व्यक्तीने लिहिलेली बखर म्हणून ऐतिहासिक प्रामाण्याच्या दृष्टिने या बखरीचे महत्त्व अधिक आहे. या वर्णन विषयातील अनेक घटनांचा साक्षीदार बखरकार होता तरीही अनेक पौराणिक दाखले, उपमा व संदर्भ या बखरीमध्ये येतात.

अफजल खानाचा वध शिवाजी महाराजांनी केला त्याचे वर्णन करताना बखरकार म्हणतो 'मागे कौरवांच्या क्षय पांडवीं केला, असा वीरावीरांस झगडा जाहाला.... अफजलखान सामान्य नव्हे केवळ दुर्योधनच जातीने होता. आंगाचा, बळाचाही तैसाच आणि दृष्टबुद्धीने तैसाच. त्यास एकले भीमाने मारिला. त्याचप्रमाणे केले शिवाजी राजाही भीमच त्यानीच अफजल मारिला हे कर्म मनुष्याचे नव्हे अवतारीच होता तरीच हे कर्म केले' १

येथे शिवाजी महाराजांची तुलना भीमाबरोबर केली आहे. तर अफजलखानाची तुलना दुर्योधनाबरोबर केली आहे. खरेतर शिवाजीमहाराज भीमासारखे बदलंड नसूनही आणि सभासदाने प्रत्यक्ष शिवाजी महाराजांना पाहूनही सभासद अतिशयोक्ती पूर्ण वर्णन करतो. कारण यामध्ये त्याला शिवाजी महाराजांच्या युक्ती आणि शक्तीचे मोठेपण सिद्ध करायचे आहे.

सालेरीच्या वेङ्गाच्या लढाईच्या वेळी सरदारांची नावे देऊन सूर्यराव काकडे या सरदाराचा पराक्रम आणि त्याचा मृत्यू वर्णन करताना सभासद म्हणतो, 'सूर्यराव काकडे पंचहजारी मोठ्या लष्करी धारकरी, याणे युद्धथोर केले ते समयी जंबूटियाचा गोळा लागून पडला. सूर्यराव म्हणजे सामान्य योद्धा नव्हे. भारती जैसाकर्ण योद्धा' २

शिवाजी महाराजांचा राज्याभिषेक करण्यासाठी काशीवरून गागाभटआले याची तुलना ब्रम्हदेवाशी करताना सभासद म्हणतो, 'भट गोसावी थोर पंडित, चारवेद साहाशाखे, योगाभ्याससंपन्न, ज्योतिषी, मांत्रिक, सर्व विद्येने निपुणे कलयुगींचा ब्रम्हदेव'. ३

विद्वान म्हणून प्रसिद्ध असणाऱ्या गागाभटाची तुलना थेट ब्रम्हदेवाशी सभासद करतो. तर शिवाजी महाराजांचा राज्याभिषेकासाठी तयारी बाबत सभासद लिहितो, 'पूर्वी

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)

Volume - 8 | Issue - 7 | April - 2019

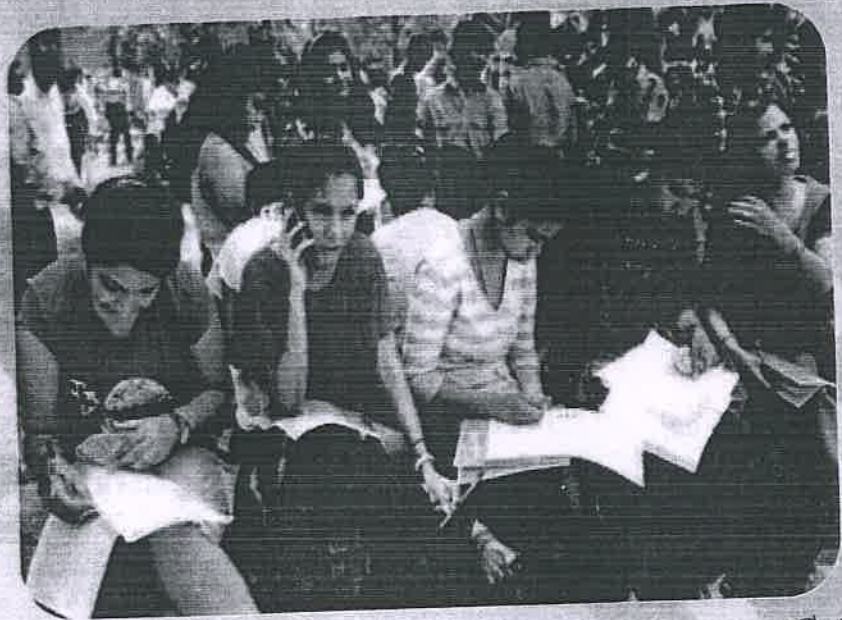
REVIEW OF RESEARCH



International Online Multidisciplinary Journal

2018-19

ACADEMIC ACHIEVEMENT AND PERSONALITY OF XII STANDARD STUDENTS



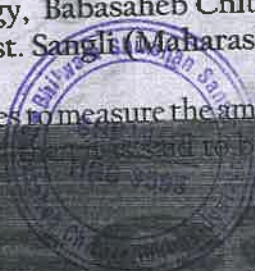
Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

dg

ABSTRACT: When one tries to measure the amount of success of a person in a specific field or area of accomplishment, there is a need to be his or her behavior in that field may be in school situation.



Page No : 71

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Review of Research (ROR) Journal is an Online International Multidisciplinary Research Journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the Editorial Board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok
Yakkaldevi

Iran



Bijan
Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Kamani
Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



Sanjeev Kumar Mishra

Associated and Indexed, India

- ♦ MENDALEY
- ♦ GOOGLE SCHOLAR
- ♦ CITULIKE
- ♦ ENDNOTE
- ♦ ZOTERO
- ♦ DRJI



ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue -7, April -2019

Content

| Sr. No. | Title and Name of The Author (S) | Page No. |
|---------|--|----------|
| 1 | Thiruvottur Temple Administration as Gleaned From Inscriptions A Historical Study N. Meenakshi and Dr. V. Thirumurugan | 1 |
| 2 | जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन सत्यप्रकाश तिवारी , डॉ. रतन कुमार भारद्वाज | 5 |
| 3 | The Origin of Non - Alignment Movement - A Study Dr. P. Thangamuthu | 15 |
| 4 | Impact of Quit India Movement on Rayalaseema - A Review C. Baba Fakardhin | 21 |
| 5 | Impact of Foreign Institutional investors and Domestic Institutional Investors on Indian Stock Market Dr. Annesha Saha and Dr. Sujit Deb | 27 |
| 6 | Anita Desai's <i>Bye-Bye Blackbird</i>: A Crest of Cross-Cultural Conflict Dr. B. Srinivasulu | 33 |
| 7 | Feministic Consciousness: A Scrutiny of Hemingway's <i>To Have And Have Not</i> Dr. I. Rufus Sathish Kumar | 37 |
| 8 | Role of Employees in an Organization M. V.Ravishankar and Dr. M. Nazer | 43 |
| 9 | Public Administration and Liberalisation, Privatisation and Globalisation (LPG) Dr. M. Ramana Reddy | 45 |

BOOK PUBLISH

@

U.S.A.

THESIS

DISSERTATION

PROJECTS

CONVERT

INTO

BOOK



Contact Us

LBP Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur.

Email: ayisrj2011@gmail.com,

apiguide2014@gmail.com

Ph.: 0217-2372010 / +91-9595359435

Web : <http://www.lbp.world>



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631 (UIF)

Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of
Dr./Shri./Smt.: **Dr. Shrikant Bhanudas Chavan**. Topic:- **Academic Achievement
And Personality Of XII Standard Students**. College : **Head, Dept. of Psychology,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli
(Maharashtra)**. The research paper is original & innovative it is done double blind
peer reviewed. Your article is published in the month of **April 2019**.

LBPL
Laxmi Book
Publication's

Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra In **Babasaheb Chitale Mahavidyalaya**

Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435 **Bhilawadi, Tal. Palus, Dist.**

E-mail: ayisrj2011@gmail.com

Website: www.lbp.world

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

Bhilawadi, Tal. Palus, Dist.

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief

Authorised Signature





ACADEMIC ACHIEVEMENT AND PERSONALITY OF XII STANDARD STUDENTS



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan
Head, Dept. of Psychology,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

ABSTRACT :

When one tries to measure the amount of success of a person in a specific field or area of accomplishment, then it is said to be his or her achievement – this may be in a school situation, or in a bank, or in a company or in a factory or in any sort of academy.

Academic achievement has become an important index of student's caliber in today's competitive world. Academic achievement is the ultimate product of an educational process. Everyday tries to increase this index. It has become an important goal for students, parents, teachers and even institutions.

The study of personality is at once one of the most fascinating and one of the most difficult problems of psychology. One approach to the person has been primarily analytical. We tried to study the various forms thinking that human of behaviour like perceiving, learning, imagining and beings show and the principles that govern such behaviour. We may now attempt to understand what the person is as a whole. A study of the total human behaviour is called the study of personality and since such a study covers the whole field of psychology, the term psychology of personality has lately become almost synonymous with the entire field of psychology. Personality is not just one form of behaviour that human beings show, like learning, attending or perceiving; it is rather the totality of all these forms of behaviour that manifest themselves in a person.

KEYWORDS : Academic achievement, psychology of personality.

INTRODUCTION

Academic achievement is related to the acquisition of principles and generalizations, and the capacity to perform efficiently, certain manipulation of objects, symbols and ideas (Narayan Rao, 1991). Academic achievement is generally measured on the basis of examination scores or by standardized test scores. There is no unanimity on which method is greatest or how it is best tested. Majority of researchers use the examination scores as an indicator of academic achievement.

Shapiro, (2000) defines academic achievement as an assessment of performance in or college.

According to Good, (1993) "Academic achievement means knowledge attained or skills developed in the school subjects, usually designed by test scores or by marks assigned by teachers or by both".

Academic achievement is defined by Crow and Crow, (1969) "As the extent to which a learner is profiting from instructions in a given area of learning i.e. achievement is related by the extent to which skill and knowledge has been imparted to him".

George and Ravindran, (2005) pointed out that academic achievement is the product of variety of factors, such as intelligence, level of aspiration, study habits, teaching methods, peer group relations, coping resources, academic stress, adjustment, motivations etc.

It is said that academic achievement of pupil measures level of understanding, depth acquired about curriculum or knowledge in a specific subject. Academic achievement is an important tool or useful technique to assess the level of quality of the student which is earned in the whole academic year.



organized in special ways for each individual. The same elements constituting a person are differently structured in different persons.

FACTORS INFLUENCING PERSONALITY:

Personality is something that we partially inherit from our parents and partially it is product of the environment in which we are brought up. These factors can be categorized under two headings:

- (i) Hereditary factors.
- (ii) Environmental factors.

(I) Hereditary Factors:

Heredity includes all those factors that we inherit from our parents. Such factors are innate, that is, they are present in the individual before the time of birth or at the time of birth and determine the path of development of our personality. Hereditary factors that contribute to personality development do so as a result of interactions with the specific social environments in which people live. Hereditary factors include the following:

- (a) Physique and physical health
- (b) Endocrine system
- (c) Nervous system.

(A) Physique and Physical Health:

Physical structure we mean height, colour, constitution, composition of body. A person with good physical structure and constitution enjoys good health. Traits of physical structure are largely received in inheritance. Our physical make up affect our mental or psychological traits and ultimately our behaviour.

Very often we notice that individuals with good physical structure and beauty are centre of attraction of others. Their parents, neighbours, teachers and peers develop favorable attitudes towards them. These children develop traits of self confidence, responsibility, sociability, punctuality and sometimes feeling of superiority as well, while children not gifted with good physical structure and physical beauty are looked down upon by others. Consequently they develop feelings of inferiority, emotional instability. They become shy and introvert.

(B) Endocrine System:

Our glandular system affects our personality and behaviour a great deal. It is well known that the many glands in our system regulated varied types of activities that are going on within our bodily system. When we are very active but there are also times when we are depressed without any apparent reason. Actually the reason for this lies in constant chemical changes taking place in our body. These changes are a result of functioning of glands.

Glands are two types: (1) Endocrine glands (2) Exocrine glands. The more important one is the endocrine glands. While secretions of exocrine glands go out of our body, the endocrinal secretions are released directly to our blood system. Following are some of main endocrine glands:

- (i) Pituitary gland
- (ii) Adrenal gland
- (iii) Thyroid gland
- (iv) Pancreas gland
- (v) Sex gland.

(I) Pituitary Gland:

Is located in the brain below the hypothalamus. Anterior part of the pituitary secretes a hormone called somatotropin or growth hormone. Excessive secretion of this hormone in early childhood makes a person giant. Pituitary gland is called the master glands.

(II) Adrenal Gland:

- (i) Social factors
- (ii) Cultural factors
- (iii) Economic factors.

(i) Social factors:

Human beings are social animals. We are born and brought up in the society. Therefore social conditions, social institutions – family, school, marriage, religion, peer groups and neighbourhood as well as various other social groups will all affect the development of personality. Some of the important social factors are:

Parents:

Parents are the first persons who inter into interaction with the child. Different parents treat their child differently. Some are very permissive and indulgent in that they just ignore the mistake and try to do everything for the child not letting him fend for himself. Children of such parents become callous, demanding and explorative in interpersonal relations besides they lack in self – confidence. Whereas parents who are strictly disciplinarian make their children submissive, shy and emotionally unstable.

Home Environment:

The kind of environment in a family exists affects our personality a great deal. Families which enjoy strong emotional tie among siblings and parents are supportive and encouraging to their children. Children from such families are self – confident, proactive and emotional stable.

Birth Order:

Birth order also affects the way personality is shaped. *Adler* in his study told that first born children are often seclusive and introvert while the youngest or last born have feelings of inferiority, lack of confidence and self – reliance. Single child have the trait of dependency and self – centeredness. They are exploitative and demanding. Middle order children have self – confidence, ego – strength need for achievement.

School:

School affects personality in two ways:

- (i) It affects development of personality traits.
- (ii) It leads to self – confidence.

Teacher's personality, classroom environment, discipline system and academic achievement all factors influence the child. Children learn social traits of cooperation, adjustment and sharing. They develop realistic self – concept. Academic achievement and co – curricular activities at school result in high ego strength.

Neighbourhood:

The kind of neighbourhood one lives in has a decided impact upon ones personality. The characteristics of neighbourhoods are that they are more objectives than the parents; treat the child as a person and therefore they are both less approving and less critical and with different emphasis in child behavior.

Social Acceptance:

Social acceptance means receiving approval and praise from significant others. People who receive greater social acceptance have qualities of leadership, self – confidence and feeling of superiority while those who receive less social acceptance often are introvert, low self – esteem and lack of social adjustment.

(ii) Cultural Factors:

Culture is a broad term and includes in it all the customs, traditions, folks, fashions, fads and mores. We are part of one or other culture. Therefore cultural effects on personality are bound to take place.

Child rearing practices – Different cultures have different child rearing practices. In cultures where physical punishment is heavily relied upon for bringing up children, treat of hostility, aggressiveness,

because of the traits in his personality. One criticism of trait models of personality as a whole is that they lead professionals in clinical psychology and lay - people alike to accept classifications, or worse offer advice, based on superficial analysis of one's profile.

The most common models of traits incorporate five broad dimensions or factors. These are:

- a) Extraversion.
- b) Neuroticism.
- c) Agreeableness.
- d) Conscientiousness.
- e) Openness to experience.

Gordon Allport, Raymond Cattell, John L. Holland, Carl Jung and Lewis Goldberg are some of the major proponents of this study.

(ii) Psychodynamic Theories:

Psychodynamic theories explain human behaviour in terms of interaction between the various components of personality. *Sigmund Freud* was the founder of this school. *Freud* drew on the physics of his day to coin the term psychodynamics: based on the popular ideas of conversion of heat into mechanical energy and vice versa, he proposed the conversion of psychic energy into behaviour. He broke the human personality down to three significant components: the ego, superego and id. According to *Freud*, personality is shaped by the interactions of these three components.

(iii) Behaviourist Theories:

Behaviourists explain personality in terms of reactions to external stimuli. This school of thought was initiated by *B. F. Skinner*. According to these theories, people's behaviour is formed by processes such as operant conditioning.

(iv) Cognitive and Social - Cognitive Theories:

In cognitivism behaviour is explained as guided by cognitions about the world, and especially those about other people. *Albert Bandura*, a social learning theorist suggested that the forces of memory and emotions worked in conjunction with environmental influences.

(v) Humanistic Theories:

In humanistic psychology it is emphasized that people have free will and that play an active role in determining, how they behave. Accordingly, humanistic psychology focuses on subjective experiences of persons instead of factors that determine behaviour. *Abraham Maslow* and *Carl Rogers* were proponents of this view.

(vi) Other Theories:

There are many other views on personality psychology, one of them *George Kelly's* personal construct theory. Other important contributors to the field *Anna Freud, Erik Erikson, Otto Rank, Alfred Adler, Karen Horney, Jean Piaget, Rollo May, Viktor Frankl, Medard Boss, Ludwig Binswanger, Snygg and Combs, Hans Eysenck and Erich Fromm*.

PERSONALITY ASSESSMENT:

Assessment of personality refers to the measurement of personal characteristics of an individual. It involves information gathering through interviews etc. and administering of psychological test to understand the typical characteristics. Assessment is an end result of gathering information.

Assessment is based on the assumption that each individual differs from another in regard to the personality traits. Even if they possess the same traits their behaviour will vary in terms of their experiences to different situations and thus a personality assessment will make this very clear as to what actually contributes to this difference and what are typical of a particular person's personality.

A distinctive feature of personality assessment is the scientific approach to personality assessment. That is how the human characteristics are described quantitatively and qualitatively. The assessment also

Interview techniques are the most widely used in the personality assessment. Interview involves recording of reactions to the questions asked by the interviewee in a face to face situation. Interviews are two types. (a) Structured interview (b) Unstructured interview.

(a) Structured Interview:

At that type of interview the questions asked by the interviewer are predecided. Even the order of presentation of questions, their language and the manner in which they are to be put to the subject are decided a prior. Biggest advantage of structured interview is that it allows comparative study of personality of different individuals since all of them are asked the same questions and in the same manner. However this merit of structured interview turns into demerit when intensive drilling and analysis of personality is required.

(b) Unstructured Interview:

In this interview allows interviewer to ask questions as he thinks fit depending on how the interview progresses. Language of questions, their manner and the manner of asking questions all depend on the understanding of the interviewer. Unstructured interviews are mostly used for clinical purposes to diagnose the problems or abnormality in the personality of the individual as these are free of the constraints of structured interviews.

METHODOLOGY:

Interpretation of the Primary Factors:

Predictions of scores on various criteria, and assignment of individuals to various diagnostic clinical groups, can be carried out actuarially, by computation from standard scores, using methods discussed in detail in the Handbook and elsewhere. Where no correlations with criteria are known, knowledge of the psychological nature of the factors must guide initial prediction until empirical studies can be done in a particular situation. Moreover, even where correlational, actuarial evidence about a certain criterion is available, it is desirable to add psychological judgment to immediate statistical computations to allow for changes of personality with learning, maturation, etc., or for anticipated changes in life situation.

The definitions and interpretations of the factors, as given below, are shorted, non - technical and of course, less exact than the more intensive discussions available in the Handbook and elsewhere. Furthermore, the large number of profiles given in the Handbook for well - defined occupational and clinical groups provides the psychologist with additional insights into the meaning and operation of the factors.

Table 1 Effect of Academic stress and Adjustment on Academic Achievement and Personality of XII Standard Students.

| Source of Variance | Sum of Squares | df | Mean Square | F | Sig. |
|------------------------------|----------------|-----|-------------|--------|------|
| Academic Stress | 8755.818 | 2 | 4377.909 | 55.405 | 0.01 |
| Adjustment | 1416.991 | 2 | 708.496 | 8.966 | 0.01 |
| Academic Stress X Adjustment | 9489.276 | 4 | 2372.319 | 30.023 | 0.01 |
| Error | 34846.360 | 441 | 79.017 | | |
| Total | 54508.444 | 449 | | | |

Table 1 indicating the results of two-way ANOVA in which academic stress and adjustment are independent variables while academic achievement is dependent variable. Academic stress and adjustment both variables have three levels of each viz. high, average and low. It is seen that the effect of academic stress on academic achievement is significant ($F(2, 441) = 55.405 P < 0.01$). Moreover, the effect of adjustment on academic achievement is also significant ($F(2, 441) = 8.966 P < 0.01$). The interaction effect of academic stress and adjustment on academic achievement is also significant ($F(4, 441) = 30.023 P < 0.01$). In the present study it is found that the academic achievement of 12th standard students is greatly influenced by academic stress and their adjustment problems.

4. To search the effect of academic stress and adjustment on 'Undisciplined self - conflict / controlled' personality trait of XII standard students.
5. To study the sex differences on academic achievement of XII standard students.
6. To find out the sex differences on 'Reserved / outgoing' personality trait of XII standard students.
7. To search the effect of the sex differences on 'Affected by sense / emotionally stable' personality trait of XII standard students.
8. To investigate the influence of the sex differences on 'Humble / assertive' personality trait of XII standard students.
9. To explore the impact of the sex differences on 'Shy / venturesome' personality trait of XII standard students.
10. To study the sex differences on 'Tough - minded / tender - minded' personality trait of XII standard students.
11. To search the effect of the sex differences on 'Practical / imaginative' personality trait of XII standard students.
12. To find out the sex differences on 'Conservative / experimenting' personality trait of XII standard students.
13. To investigate the influence of the sex differences on 'Undisciplined self - conflict / controlled' personality trait of XII standard students.
14. To search the habitant differences on academic achievement of XII standard students.
15. To find out the habitant differences on 'Reserved / outgoing' personality trait of XII standard students.

HYPOTHESIS OF THE STUDY:

1. Male and female students will not significantly differ on 'Reserved / outgoing' personality trait.
2. Male and female students will not significantly differ on 'Affected by sense / emotionally stable' personality trait.
3. Male and female students will not significantly differ on 'Humble / assertive' personality trait.
4. Male and female students will not significantly differ on 'Shy / venturesome' personality trait.
5. Male and female students will not significantly differ on 'Tough - minded / tender - minded' personality trait.
6. Male and female students will not significantly differ on 'Practical / imaginative' personality trait.
7. Male and female students will not significantly differ on 'Conservative / experimenting' personality trait.
8. Male and female students will not significantly differ on 'Undisciplined self - conflict / controlled' personality trait.
9. Urban and rural students will not significantly differ on academic achievement.
10. Urban and rural students will not significantly differ on 'Reserved / outgoing' personality trait.

CONCLUSIONS:

1. Male and female students significantly differ on 'Practical / imaginative' personality trait.
2. Male and female students are not significantly differ on 'Conservative / experimenting' personality trait.
3. Male and female students are not significantly differ on 'Undisciplined self - conflict / controlled' personality trait.
4. Urban and rural students are not significantly differ on academic achievement.
5. Urban and rural students significantly differ on 'Reserved / outgoing' personality trait.
6. Urban and rural students significantly differ on 'Affected by sense / emotionally stable' personality trait.
7. Urban and rural students significantly differ on 'Humble / assertive' personality trait.
8. Urban and rural students significantly differ on 'Shy / venturesome' personality trait.
9. Urban and rural students are not significantly differ on 'Tough - minded / tender - minded' personality trait.
10. Urban and rural students significantly differ on 'Practical / imaginative' personality trait.

REFERENCES:

1. Dr. Arvind Kumar Tripathi, "personality dimensions in sports performance", *International journal of physical education "health and sports science"* ISSN 2279 - 0306, vol - 02, Issue - 1, March 2013.

3.3.2.1

2018-19

**Interdisciplinary International Conference
contemporary Issues & Challenges in Social
Sciences & Languages
22nd Sept.2018**

Organizer

**Department of Political Science,
Shri Sahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur**

Special Issue published By



**Aayushi International Interdisciplinary
Research Journal (AIIRJ)**

ISSN 2349-638x

Peer Review and Indexed Journal

Impact Factor 4.574

Website www.aiirjournal.com

Email :- aiirjpramod@gmail.com

| Sr.No. | Author Name | Research Paper / Article Name | Page No. |
|--------|---|---|----------|
| 1. | Mr. A. A. Shirke | Significance of E-resources in Research | 1 To 3 |
| 2. | Dr. A. M. Pradhan | 'Pyatm' India's Largest Payment Gateway | 4To 5 |
| 3. | Prof. A.M. More Dr.J.J.Magdum | Contemporary Issuesand Challengesin English Proficiency of Engineering Students | 5 To 8 |
| 4 | Dr. Amardeep D. Jadhav | Issues And Challenges Before Commerce Education In India | 8To 13 |
| 5 | Mr. Amit Arvind Gurav | Li - Fi : The New Way of Connectivity | 14 To 16 |
| 6. | Dr. Smt. Anagha V. Pathak | Poverty in India | 17To 19 |
| 7. | Dr. Anil D. Patil | Rural Banking: A Critique form Administrative Point of View | 20To 21 |
| 8. | Shri. Anil Balaso Balugade | A Comparative Study Of Emotional Intelligence Between Rural And Urban Male College Students | 22 To 25 |
| 9. | Dr. Anurath Chandre | Demonetisation And Its Impact On Rural Indian Economy | 26To 28 |
| 10 | Dr. Arun Hange, | Tourism in India: Opportunities and Challenges | 29To 31 |
| 11 | Mr. Arun Pentawar | Comparative Politics and Its Evolution | 32 To 33 |
| 12. | Dr. Mrs. Arundhati D. Patil | Population Growth- An Obstacle For Development Of Maharashtra | 32 To 36 |
| 13 | Avinash A. Patil | A study of Retention Strategies for the Teachers in Professional Educational Institutions in India: | 37 To 39 |
| 14 | Dr.B.S.Puntambekar | Social and Economical Justice : Concept and interrelation | 40To 41 |
| 15 | B.S. Jadhav | The Coming Crisis in the Foundation of Sociological Theories | 42To 44 |
| 16 | Assist. Prof. - Boyewar Yadav Baburao | Human Rights and Social justice | 45 To 46 |
| 17 | Chandrakant K. Chavan | Corruption and Betrayal in Henrik Ibsen's An Enemy of The people. | 47 To 48 |
| 18 | Chandrakant R. ChoukimathShankreppa B Kumbhar | Digital India And Its Impact Challenges On E-Commerce Strategies | 49To 52 |
| 19 | Mr. D. B. Shinde | National Digital Library: A Free Access Platform | 53 To 55 |
| 20 | Mrs. D. S. Bamane. | Library And Social Media | 56To 58 |

Challenges and Changing Role of Librarians In Ict

Dr. V.V. Kharade
Librarian.

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilwadi. (M.S.) India.

Abstract:

This article is based on a Challenges and Changing Role of Librarians in ICT Environment. ICT is in library with respect to current digital Era. Library and information services are being transformed by technology and they have to adapt to these changes to meet their users changing needs and growing Expectations. This paper explains the concept of ICT. Role of librarian will be considered to provide various electronic services to his users to selecting searching and retrieval of electronic information through web documents. Due to the recent development of ICT environment, publishing electronic collection, changing information seeking behavior of users, it is need of today's librarian to change his traditional role by adopting latest technology.

Keywords: Librarians Role, ICT Environment, ICT based services.

Introduction:

The library and information centre is a part of any educational institution, which is the hub of the teaching, and learning activities where students, teacher and researchers get their required information according to their need. In the libraries users have to spend much more time for searching a small piece of information and for that they have to depend mainly on the library professionals or library staff. But in the age of information communication technology, computers are being used for day-to-day house keeping activities in the library, which saves the time of the end users, and library professionals also and at the same time avoid duplication of work and make the library service smooth and effective

The role of librarian is absolutely crucial in the new digital environment, where there are great quantities of information but finding the quality in the huge haystack in a difficult task. ICT plays a vital role in transformation of libraries in to digital form. "If Librarian and library staff change their mentality then every library can create healthy environment for their users in digital Era." (Rao & Babu, 2001) to manage the digital library effectively the information manager should have the knowledge in the field of computer and networking, content manager and information analysis, internet surfing technique, digital resources, websites and organization of data, etc. (Satija MP, 2003)

Definitions of ICT:

The term Information and communication technologies (ICTs) is defined as " a diverse set of technological tools and resources used to communicate and create, disseminate, store and manage information. (Blurton, 1999)

The web definitions of ICT

Particular in the use of electronic computer software to convert, store, protect, process, transmit and retrieve information from anywhere, anytime.

Use of ICT in Libraries:

It can be used in libraries and information centers for the development of new information services and computerization of library services. ICT is useful for--

- On line information
- Remote access to users
- Provision of web access to OPAC
- Provision of quality information.
- Improving of co-operation in sharing of resources.
- Saving the space using the electronic storage.
- Improving productivity and efficiency of library services effectively.
- Speedy and easy access to information.

Challenges in ICT Environment:

- Preservation of digital information.
- Challenge to upgrade current technical architectures.
- Data security.
- Collection Development in Digital Era



Shri Shahu Chhatrapati Shikshan Sanstha's

SHRI SHAHAJI CHHATRAPATI MAHAVIDYALAYA

Dasara Chowk, Kolhapur - 416 002 (M.S.)

Re-accredited by NAAC with Grade 'B' (C.G.P.A. 2.61)

Affiliated to : Shivaji University, Kolhapur-416 004 (M.S.)

One-day Interdisciplinary International Conference on

Contemporary Issues and Challenges in Social Sciences and Languages

Saturday, 22nd September, 2018

Organised by

Department of Political Science

Certificate

This is to certify that Mr./Miss/Ms./Dr. V. V. Kharade (Librarian)

of Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilwadi has participated

and presented a paper entitled Challenges and Changing Role of Librarians In ICT in the One-day Interdisciplinary International Conference on "Contemporary Issues and Challenges in Social Sciences and Languages" organised on Saturday, 22nd September, 2018 by Department of Political Science, Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur.

(Signature)

Principal,

(Signature)
Dr. V. S. Debnath
Asst. Co-ordinator

(Signature)
Dr. R. D. Mandanikar
Co-ordinator

(Signature)
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya - Kolhapur
Dr. R. K. Shanedivan
Principal



आधुनिक शेतीचे आरोग्यावर होणारे परिणाम

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,

भिलवडी, जि. सांगली

मोबाईल नं. ८५५२८४११३३

प्रास्ताविक :

शेतीला मानवी जीवनात खूप महत्वाचे स्थान आहे. संपूर्ण जगातील सजिव सृष्टीच्या जगविणारी एक मूलभूत यंत्रणा म्हणजे शेती होय. अर्थशास्त्रात फक्त शेतजमिन म्हणजे शेती नव्हे. तर ज्या गोष्टी मानवाने निर्माण केलेल्या नाहीत. निमर्गताच ज्या गोष्टी अस्तित्वात आहेत किंवा जे जे नैसर्गिक आहे. त्या सर्व घटकांचा समावेश शेतीमध्ये होतो. उदा. हवामान, तापमान, पर्जन्यमान, पशू, पक्षी, प्राणी, वनस्पतीख भूगर्भातील खनिज संपत्ती, जल, जंगल इ.

मानवाने अनेक महत्वाचे शोध लावले आहेत. उदा. अग्नीचा, चाकाचा, पैशाचा व शेतीचा शोध. यामध्ये शेतीला खूप महत्त्व आहे. कारण स्वताला जगण्यासाठी व दुसऱ्याला जगविण्यासाठी शेती महत्वाची आहे. शेती म्हणजे सर्व विकासांचा केंद्र बिंदू आहे. शेतीचा आणि आरोग्याचा खूप जवळचा सहसंबंध आहे.

१.१ संशोधनाची उद्दिष्ट :

- १) शेती आणि आरोग्य यांच्यातील सहसंबंधाचा वस्तुनिष्ठ पध्दतीने अभ्यास करणे.
- २) आधुनिक शेतीमुळे मानवाच्या आरोग्यावर व इतर सजीव घटकावर होणाऱ्या परिणामांचा अभ्यास करणे.
- ३) मानवाने विकासाच्या गोंडस नावाखाली शेतजमिनीवर केलेल्या आघातांचा अभ्यास करणे.

१.२ संशोधनाची गृहितके :

- १) आधुनिक शेतीमुळे मानवाला सकस व पौष्टीक आहार मिळत नसल्याने जीवन थोक्यात आले आहे.
- २) आधुनिक शेती, शेतजमिनीच्या उपजत व नैसर्गिक गुणाला मारक ठरत आहे.

१.३ संशोधन पध्दतीचा वापर :

वरील विषयाचा शोध निबंध लिहिताना प्राथमिक व दुय्यम सामुग्रीचा वापर केलेला आहे.

१.४ शेतजमिनीचे महत्त्व :

अन्न, वस्त्र, निवारा या मानवाच्या मूलभूत गरजा भागविण्यामध्ये शेतीचा महत्वाचा वाटा आहे. शेती म्हणजे वाढावा किंवा अधिक्य आहे. "मूठभर धान्य पेरून खंडीभर धान्य घेण्याची व्यवस्था फक्त शेतीतच आहे" शेती फक्त मानवाला अन्न मिळवून देत नाही. शेती १) अन्न धान्य २) कच्चा माल ३) रोजगार ४) व्यक्तीगत व राष्ट्रीय उत्पन्न ५) समतोल पर्यावरण ६) सजीवाना अन्न व निवारा व औषधी वनस्पती देण्याचे कार्य करत असते.

विज्ञान व तंत्रज्ञानाच्या प्रगतीमुळे, वाढती लोकसंख्या, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण व वहानुकीच्या सोयीमुळे लागवडी खालील शेतजमिनीचे प्रमाण कमी होवून राष्ट्रीय उत्पन्नात शेती क्षेत्राचा वाटा कमी होत आहे. उद्योग व सेवा क्षेत्राच्या प्रगतीमुळे शेतीचे प्रमाण घटत आहे. पण शेतीचे महत्त्व मात्र टिकून आहे.

१.५ शेतीचे आरोग्य व मानवाचे आरोग्य यातील सहसंबंध :

शेतीचे व मानवी आरोग्याचे खूप जवळचे संबंध आहे. ज्या प्रमाणे मानवाचे आरोग्य व्यवस्थित आहे किंवा नाही हे तपासण्यासाठी रक्ताची चाचणी घेवून उपचार करावे लागतात. त्याप्रमाणे शेतीचे आरोग्य तपासण्यासाठी माती परीक्षण करून उपाय योजना कराव्या लागतात. त्या प्रमाणे मानवाच्या निरोगी शरीरात माणसाचे निरोगी मन राहत असते त्याप्रमाणे कसदार, सुपीक जमिनीत पौष्टीक व सकस अन्नधान्ये व फळे येत असतात. कसदार व सुपीक जमिनीत एकूण १६ अन्नद्रव्ये (घटक) असतात. जमिनीचा सामू ६.५ ते ७.५ च्या दरम्यान असल्यास पीकाना लागणारी सर्व अन्नद्रव्ये अशा जमिनीत उपलब्ध असतात. अन्नद्रव्ये, कडधान्ये, फळे, कंदमुळे मानवाला व

प्राण्यांना जीवनसत्वे देत असतात. प्राणी, वनस्पती, मेघ, प्रथिने, कर्बोदके, स्निग्धपदार्थ देवून मानवाची कार्यक्षमता वाढवित असतात.

अर्थशास्त्रात मानवाची कार्यक्षमता वाढली की → उत्पादन वाढते → कच्चा माल वाढतो → उद्योगधंदे वाढतात → रोजगार वाढतो → उत्पन्न → बचत → भांडवल → गुंतवणूक → राहणीमान यामध्ये वाढ होते म्हणून शेतीच्या कार्यक्षमतेवर मानवाची क्षमता व प्रगती अवलंबून आहे.

१.६ आधुनिक शेतीत वापरल्या जाणाऱ्या शेती आदानांचा घातक परिणाम :

शेतीचा विकास हा शेतीतील पंचसूत्री वर अवलंबू असतो उदा. १) हवा २) पाणी ३) भांडवल ४) खते ५) किटकनाशके. शेतीत वापरल्या जाणाऱ्या साधनसामुग्रीला शेतीतील आदाने असे म्हणतात. कोणत्या ही गोष्टीला एक मर्यादा असते. एखाद्या गोष्टीचे अति झाल्यास त्याचे माती होते. भारतात १९६७-६८ ला आधुनिकतेच्या वापरामुळे हरितक्रांती घडून आली व १९७७ ला भारत अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण झाला. पण प्रसिध्द अर्थतज कार्ल मार्क्सच्या म्हणण्यानुसार "विकासातच विनाशाची बीजे रुजलेली असतात." याची प्रचिती प्रत्येक क्षेत्रात येत आहे. उदा. पूर्वी आधुनिक शेतीची गोडवे गाणारा समाज सध्या विषमुक्त शेती करा किंवा सेंद्रियशेती करा असा प्रचार व प्रसार करू लागला आहे.

ज्या प्रमाणे बुद्धीबळाच्या खेळात राजा चेकमेट होतो. त्याप्रमाणे सध्याची शेती मानवनिर्मित सर्व प्रकारच्या प्रदूषणाच्या विळख्यात चेकमेट झाली आहे. उदा. हवा, जमिन, जल, अन्न, प्रदूषणामुळे संपूर्ण मानवी जीवन धोक्यात आले आहे. सध्या रासायनिक खते पाणी व किटकनाशकांचा अतिवापरामुळे शेतीचा सामू (कस) बिघडलेला आहे. उदा. शेतजमिनीचा सामू हा ६.५ ते ७.५ इतका असेल तर जमिनीचा पोत चांगला असतो. सर्व अन्नद्रव्ये त्यामध्ये असतात. पण दुर्दैवाने शेती आदानांच्या गैर व अतिवापरामुळे ८ पेक्षा अधिक दिसून येतो. त्यामुळे जमिन निकृष्ट म्हणून अन्नधान्ये व फळे निकृष्ट तयार होतात. त्यामुळे पौष्टिक आहार मिळत नाही. उदा. पूर्वी कोथंबीर पेंडीचा चांगला वास घरात दखळत होता. पण सध्या पेंडी नाका जवळ धरली नदी वास येत नाही. असे प्रत्येक शेतमाला बद्दल १००% हेच विधान आहे. आरोग्याच्या दृष्टीने विचार केल्यास शरीराला सूज येणे आणि बाळसं येणे यात फरक आहे. आज आधुनिक शेतीमुळे शरीराला सूज आली आहे. कारण सध्या प्रत्येक मानवाला अन्न, धान्ये व फळ बाबतीत दुधाची तहान ताकावर भागवावे लागत आहे. कारण रासायनिक खते व औषधे यांच्या अतिवापरामुळे मानवाला सकस पौष्टिक आहार मिळत नाही. उलट नवनविन रोगाला सामोरे जावे लागत आहे. रासायनिक खतांच्या व किटकनाशकांच्या अतिवापरामुळे शेत जमिन सुपीक करणाऱ्या जीवजंतू नाश पावत आहेत. उदा. जमिनीत व जमिनीवर सुमारे ६००००० जातीचे कृमी, किटक वावरत असतात. ही किटक शेतीतील अन्न द्रव्ये वाढविण्यास उत्पादन वाढविण्यात मदत करत असतात. उदा. गांडूळाला शेंकऱ्याचा मित्र म्हणतात. हा मित्र रासायनिक खतामुळे व किटकनाशक औषधामुळे नाश पावत आहे.

जमिनीत सर्वसाधारणपणे ४५% खनिजे २५% पाणी २५% हवा आणि ५% सेंद्रिय द्रव्याचे प्रमाण असते. भूपृष्ठावरील मृदा तयार होण्यासाठी हजारो वर्षे लागतात. निसर्गताच जमिनीत कृमी, किटक, शैवाळ, जीवाणू, बुरशी हे घटक असतात. हे घटक जमिनीची सुपीकता वाढवित असतात. परंतु दुर्दैवाने शहरीकरण, औद्योगिकीकरण यामुळे लागवडी खालील जमिनीचे प्रमाण कमी होत आहे. भौतिक सुख व प्रगतीच्या नावाखाली शेतीची अधोगती होवू लागली आहे. सध्या उपलब्ध शेतजमिन सुध्दा मानवनिर्मित प्रदूषणाच्या विळख्यात सापडली आहे.

१.७ विकासातून विनाशाकडे होत असलेली वाटचाल :

शेती निसर्गता मानवाला पर्यावरणात उत्तम समतोल राखून ऑक्सिजनचा पुरवठा करत असते. पण मानवाच्या अति प्रगती व हव्यासामुळे शेतजमिनीचे अक्षरशः चाळण झाली आहे. उदा. जलद शहरीकरण व औद्योगिकीकरणामुळे, वाढत्या लोकसंख्येमुळे, औद्योगिक कचरा, विषारी सांडपाणी, किटकनाशक द्रव्ये, रासायनिक खतातील विषारी घटक प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष शेतजमिनीवर सोडत असल्याने जमिनीतील मातीचे गुणधर्म बदलत आहेत. परिणामता अन्नधान्ये, भाजीपाला यांच्यात पौष्टिक जीवन सत्त्वाचा अभाव असल्यामुळे मानवाच्या शरीराला व प्राण्याच्या शरीराला आवश्यक तेवढ्या प्रमाणात जीवनसत्वे मिळत नाहीत म्हणून मानवाची प्रतिकारकशक्ती कमी होत

आहे. जमिन प्रदूषणामुळे विविध रोग मानवाला होत आहेत. उदा. शिरोळ तालुक्यात १००% शेती बागायत आहे. त्यामुळे अधिक उत्पन्नाच्या हव्यासापोटी ऊस या नगदी पिकाचे प्रमाण अधिक आहे. तसेच भाजी पाल्याच्या पिकांचे ही प्रमाण बऱ्यापैकी घेतले जाते. पण रासायनिक खतांच्या व किटकनाशकांच्या अतिवापरामुळे भाजीपाला, दुध, मांस यामध्ये किटकनाशकांचा अंश अधिक असल्याने अनेक लोकांना कॅन्सर सारख्या रोगाला बळी पडावे लागले आहे. सध्या शिरोळ तालुका हा अधिक कॅन्सरमुक्त लोकांचा तालुका म्हणून ओळखला जातो. याचे मुख्य कारण म्हणजे जलप्रदूषण, जमिन प्रदूषण व अन्न प्रदूषण हे आहे.

अन्न हे पूर्णव्रत समजले जाते. शाकाहारी जेवणात टोमटो, भाजीपाला, फळभाज्या, फळे, दूध, तूप, कडधान्ये, यांचा समावेश होतो. शाकाहार म्हणजे शुध्द सात्विक आहार समजला जातो. पण हे खरोखर शुध्द आहे का? याचे उत्तर नाही असे दयावे लागते. कारण या आहारावर आधुनिकतेचा प्रतिकूल परिणाम झालेला आहे. कारण प्रत्येक घटकात किटकनाशकांचा अंश दिसून येत आहे. National Accreditation Board of Testing and Calibration Laboratories Report हे ने हे सिध्द केले आहे. उदा. पुणे व मुंबई येथील काही शहरातील भाजीपाल्याचे नमुने तपासले आहेत. त्यापैकी कारली, वांगी, सिमला मिरची, कोबी, फलावर, टोमटो, काकडी यामध्ये मोठ्या प्रमाणावर किटक नाशके सापडली आहेत. त्यामुळे लोकांना पोटाचे आजार, हर्मोन मधील बदल, मेंदूची कार्यक्षमता कमी होणे, थॉयराईड, लिक्वर व किडनीवर सूज येणे, स्त्रीयांच्या गर्भाशयावर परिणाम होणे, कॅन्सर, रोग प्रतिकार शक्तीची कमतरता, अंग सूजने, अन्न ब्रेचव लागणे, घसा कोरडा पडणे, त्वचा रोग, अंगाला खाज सुटणे, अंधत्व येणे, मुल जन्मास येताना विकलांग येणे, स्त्री पुरषाच्या गुणसुत्रात बदल होणे, अतिसार होणे अशा असंख्या रोगाला मानवाला सामोरे जावे लागत आहे.

उदा. सध्या मध्यस्थ, दलाल, व्यापारी शेतकऱ्याकडून कच्चा माल स्वस्त घेतात व केमिकलमध्ये बुडवून झटपट मार्केटिंग करून पैसा मिळवितात. त्यामुळे लोकांचे आरोग्य धोक्यात आले आहे.

केळी कार्बाईड किंवा इथरेल या केमिकलमध्ये बुडवून कृत्रिमरित्या पिकवून विकतात. लोक पिवळी धमक केळी खातात व कॅन्सरला बळी पडतात. लोक तसेच सफरचंद चकचकीत दिसावे म्हणून त्याला मेन लावतात, संत्री, मोसंबीला मेन लावतात. लोक ते खातात परिणामता थकवा, मळमळ, जडत्व इ. रोगाला बळी पडतात. गाईं म्हैशीला जास्त दूध दयावे म्हणून ऑक्सीटॉनिक नावाचे औषध देतात. त्या दूधाचे सेवन करणे घातक आहे. हे पेरु या संस्थेने सर्व्हेक्षणानून सिध्द केले आहे. थोडक्यात आधुनिक शेती मानवाच्या आरोग्याला घातक ठरत आहे हे नक्की.

१.८ उपाय :

- १) रासायनिक खते व औषधे वापराने प्रमाण कमी करून सेंद्रिय व हिरवळी खतांचा अधिक वापर करावा.
- २) अन्न व प्रशासन विभाग सक्रीय होवून गैरव्यवहार करणाऱ्यावर कडक कारवाई केली पाहिजे.
- ३) शेतकऱ्यांनी माती व पाणी परिक्षण करून घेणे आवश्यक आहे.
- ४) सुशिक्षित, प्रशिक्षित तरुणाची शेतीकडे नाईलाजाने नव्हेतर स्वेच्छेने शेतीकडे बळावे.

संदर्भसूची

- १) डॉ. सौ. व श्री. किशोर पवार, नलिनी पवार "प्रदूषणातून पर्यावरणकडे", नचिकेत प्रकाशन नागपूर, प्रथम आवृत्ती
- २) महात्मा फुले कृषी विद्यापीठ राहुरी, "कृषीदर्शनी" २०१३
- ३) डॉ. जयसिंगराव पवार "विज्ञान तंत्रज्ञान व प्रगती", फडके प्रकाशन, कोल्हापूर
- ४) प्रताप चिपळूनकर "जमिनीची सुपीकता", सकाळ प्रकाशन
- ५) दैनिक लोकमत "लक्ष्मण वाघ" यांचा लेख, (सकलित अभ्यास)
- ६) कृषी सेवा केंद्र विक्रेत्याशी प्रत्यक्ष चर्चा



dg

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.



Tararani Vidyapeeth's

KAMALA COLLEGE, KOLHAPUR

College with Potential for Excellence

NAAC Reaccredited 'A' Grade (3.12 CGPA)



ONE DAY MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL SEMINAR ON PLIGHT OF INDIAN FARMERS : ISSUES AND CHALLENGES

भारतीय शेतकऱ्यांच्या व्यथा वेदना, दशा : समस्या व आव्हाने

Saturday 16th February, 2019

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Shri./Smt. प्रा. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर
of बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय has participated as a registered
delegate for the One Day International Seminar on "Plight of Indian Farmers : Issues and Challenges "

organized by Kamala College, Kolhapur (Maharashtra, INDIA) on 16th February, 2019.

He/She submitted and presented a paper entitled आधुनिक शेतीचे आरोध्यावर
ठेणारे परिणाम.



Dr. Shri. Sujoy Patil
Coordinator

Dr. Smt. Neeta Bhumar Principal, Dr. Smt. T. B. Mudekar

Convener Chitale Mahavidyalaya Principal
Bhilavadi, Tal. Palus, Dist. Sangli

(Handwritten signatures and initials)

19-20

देवाना भद्रा सुमतिर्जयन्ताम्॥ व्र० १/२६/२



Impact Factor
3.311

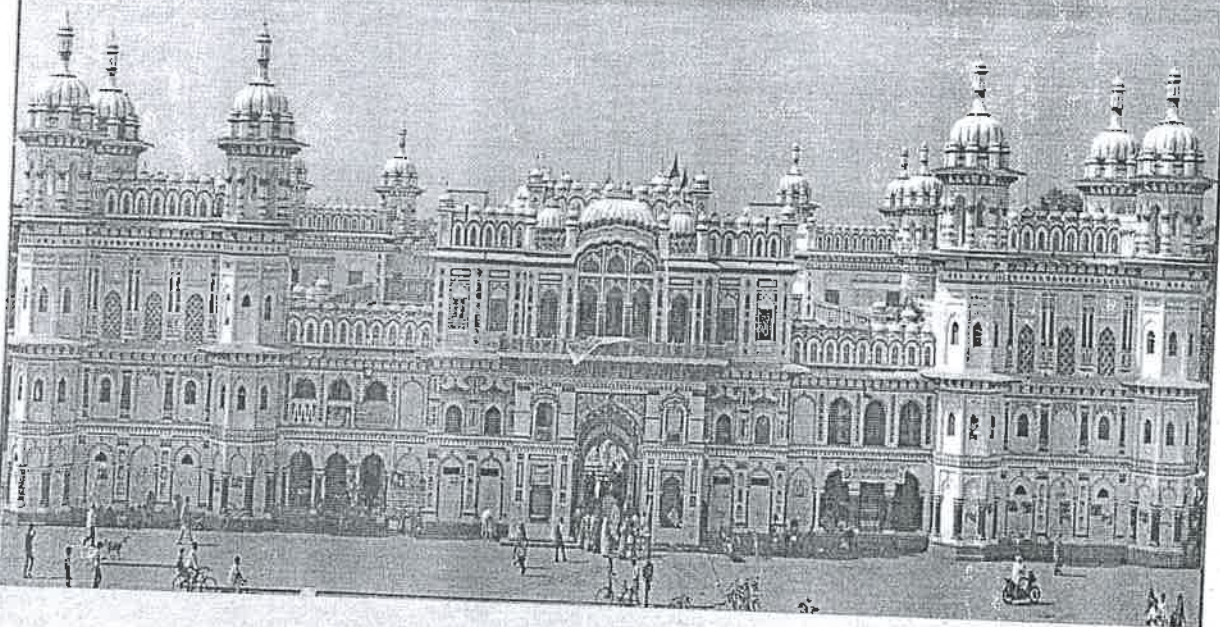


ISSN : 2395-7115

नेपाल विशेषांक

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



Editor

Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhiliawadi Tal Palas Dist Sonbh

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY
(MARCH, JUNE, SEPTEMBER AND DECEMBER) RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
कमरा नं. 175, लघु सचिवालय,
भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

उपकार्यालय :

सहदेव शास्त्री
शिवपुरी, नरवाना रोड,
जीन्द (हरियाणा)
मो. 09416253826

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.grngo.org

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

- Disclaimer:**
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
 2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
 3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
 4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

| क्र. | विवरण | लेखक | पृष्ठ सं. |
|------|--|-------------------------|-----------|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट | 8-9 |
| 2. | PURSUIT OF HAPPINESS IN CHETAN BHAGAT'S FIVE POINT SOMEONE | DR. PREETI SHADANGI | 10-14 |
| 3. | मध्यकालीन संत काव्य में सामाजिक समरसता | शालीन साह | 15-17 |
| 4. | राम चरित मानस में बुद्धि के प्रकार : एक शैक्षिक अध्ययन | डॉ० प्रमिला जोशी | 18-26 |
| 5. | महाकवि कालिदास की रचना : मेघदूत का कलात्मक विश्लेषण | डॉ. संयुक्ता थोरात | 27-28 |
| 6. | विरल अनुभवों की सूक्ष्म ज्यामिति का काव्य संसार | डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा | 29-33 |
| 7. | हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना | डॉ०. रवि दहिया | 34-37 |
| 8. | आज के परिवेश में कविता की भूमिका | डॉ. अंजलि शर्मा | 38-43 |
| 9. | 'आधुनिक भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य-प्रभाव' | 44-46 | |
| 10. | शान्ति क्षेत्र के रूप में नेपाल | डॉ. विनीता पाण्डेय | 47-50 |
| 11. | भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संचेतना | डॉ. कुसुम कुंज मालाकार | 51-54 |
| 12. | पर्यावरण और पर्यावरण शिक्षा का महत्त्व | प्रियंका देवी | 55-58 |
| 13. | बीहड़ से कलागढ़ तक का सफर तय करती 'शिरा' | क्षमा द्विवेदी | 59-60 |
| 14. | PURSUIT OF HAPPINESS IN CHETAN BHAGAT'S FIVE POINT SOMEON | 9340745694 | 61-66 |
| 15. | सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य में स्त्री निर्मिति | जागृति | 67-69 |
| 16. | गांधी के सिद्धांत एवं गांधी पर बनी फिल्में | नम्रता पाण्डेय | 70-73 |
| 17. | प्रवासी महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में चित्रित भारतीय नारी | डॉ. नसरिन जान | 74-76 |
| 18. | रामायण के नारी पात्र, स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में | 77-80 | |
| 19. | डॉ० ऋता शुक्ल के कथा-साहित्य में ग्राम्य-जीवन की अभिव्यक्ति | अंजू कुमारी | 81-84 |
| 20. | वैश्विक दृष्टि से सामाजिक उत्थान में साहित्य का योगदान | डॉ. प्रवीण देशमुख | 85-89 |
| 21. | नारी का प्रेमचन्द के साहित्य में बदलता स्वरूप | प्रियंका गुप्ता | 90-92 |
| 22. | संस्कृत वाष्पय में सामाजिक चित्रण | आयुषि | 93-96 |
| 23. | वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्व | डॉ० ज्योति रानी जायसवाल | 97-101 |
| 24. | हिन्दी साहित्य का सिनेमा एवं पत्रकारिता से अन्तर्सम्बन्ध | डॉ. सत्यनारायण | 102-105 |



मन का के ठिकाणा : समसामयिक स्पंदन

“लिख सकूँ कुछ ऐसा जो दिल को छू जाए, मेरे हर शब्द से मुहब्बत की खुशबु आए।”

सुश्री डॉ. सुलक्षणा अहलावत द्वारा लिखित और प्रकाशित काव्यकृति ‘मन का के ठिकाणा’ प्राप्त हुई और इसे पढ़कर जो कुछ प्रतीत हुआ उस पर अपनी बात रखना लाजमी हो जाता है। जैसा कि रचनाकार ने अपनी ‘मन की बात’ में यह खुलासा भी किया है कि यह उनकी प्रथम काव्यकृति है इसलिए हम इन्हें सर्वप्रथम बधाई देते हैं और उम्मीद करते हैं भविष्य में आप के हाथों से ऐसी रचनाओं का निर्माण हो और इन्हें पढ़ने का हमें अवसर प्राप्त हो। हरियाणवी की भाषा में लिखित यह कृति हरियाणवी संस्कृति की सुगंध लेकर हमारे सामने खुल जाती है और यह संकलन भविष्य में और भी लोकप्रिय होगा इन्हीं शुभकामनाओं के साथ हम आगे चलते हैं।

विवेच्य काव्यकृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समसामयिक परिवेश का स्पंदन हर स्थान पर हमें महसूस होता है। समसामयिक परिवेश में मानवी मन को विशेषतः संवेदनशील मन को अस्वस्थ करने की क्षमता रखने वाला यह काव्य संकलन है। दुर्भाग्य से आज समाज में यह अवधारणा पनप रही है कि जो साहित्य मनोरंजन करता है वही साहित्य है लेकिन इस अवधारणा को पूर्णरूपेण ध्वस्त करने वाला यह संकलन है। जीवन के सभी क्षेत्रों में आज उदासी छाई हुई है जिसे साहित्य का क्षेत्र भी अपवाद नहीं है और वर्तमान काव्य सम्मेलनों का तो केवल मनोरंजन के लिए ही आयोजन किया जाता है यही आशंका मन को सताती है जिसे यह काव्य संकलन अपवाद है।

अपने समय का सत्य कहने के लिए रचनाकार के पास जो उर्जा और हिम्मत होनी चाहिए वह इनके पास निःसंदेह है यह कहने में हमें जरा सी भी दुविधा नहीं है। रचनाकार ने बड़े ब्रेबाक ढंग से अपनी बात को यहाँ स्पष्ट किया है। संस्कृति के स्थान पर अपसंस्कृति, सम्यता के स्थान पर फूहड़पन जो नजर आता है उसे डॉ. सुलक्षणा ने स्पष्ट किया है। यहाँ प्रसिद्ध मराठी कवि एवं रचनाकार संत ज्ञानेश्वर की कुछ पंक्तियाँ हमें याद आ रही हैं—

“वाचे बरवे कवित्व/कवित्व बरवे रसिकत्व/ रसिकत्व बरवे परतत्व/स्पर्शु जैसा”

अर्थात् – बोलने से कविता अच्छी है, कविता से रसिकता अर्थात् उसे समझने की क्षमता पाना अच्छा है और परतत्व अर्थात् शब्दों से परे जाकर उस परमात्मा तक पहुँच कर उसे स्पर्श करना सबसे बड़ी बात है। इस काव्य कृति में हमें यह बात कई जगह पर नजर आ रही है।

कुल 83 कविताओं का यह संकलन अपने आप में एक महत् उपलब्धि है ऐसा हम मानते हैं। पारंपारिक ढंग से प्रथम कविता भगवान की स्तुति से शुरू हो जाती है। हालांकि इसे हम मंगलाचरण नहीं कहेंगे लेकिन कवयित्री ने पुरानी परिपाटी का निर्वाह जरूर किया है—

“सुलक्षणा कर रही है अर्ज हाथ जोड़ कै प्रभु /इब तो आ जाओ बैकुंठ छौड के प्रभु।”

दुनिया बदल गई और सांस्कृतिक मानदण्ड भी बदल गए और इसका मात्र संकेत देते हुए कवयित्री सोचती है कि यह खोटा वक्त आया है और इन्सान कितना बदल गया है—

“के खान पान के पहरावा बदल गई इन की चाल ढाल/बीर बानियों कैसी हुई इनकी अदा नजाकत बोल चाल/
आचार विचार बदल गए ख्याल कोय कोय समझदार पाया रै।”

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Saqub

19-20

308



ISSN: 2395-7115

Impact Factor
3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL



सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अतिथि सम्पादिका :

डॉ. शबाना हबीब

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Chilawadi Tal Pales Dist Sonah

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
कमरा नं. 175, लघु सचिवालय,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

उपकार्यालय :

सहदेव शास्त्री
शिवपुरी, नरवाना रोड़,
जीन्द (हरियाणा)
मो. 09416253826

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.grngo.org
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

- Disclaimer :**
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
 2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
 3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
 4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

हिन्दी साहित्य को मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान October 2020, Vol. 12, Iss. 7(II) (4)



अमीर खुसरो की हिन्दवी कविता

“खुसरो दरिया प्रेम का, उलटी वा की धार।

जो उतर सो डूब गया, जो डूबा हुआ पार।।”

अबुल हसन अमीर खुसरू चौदहवीं सदी के एक प्रमुख शायर, गायक एवं संगीतज्ञ थे। खुसरों को हिन्दुस्तानी खड़ी बोली का पहला लोकप्रिय कवि माना जाता है। वे अपनी पहेलियाँ, और ढकोसला तथा सखुना के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने सर्वप्रथम अपनी भाषा को हिन्दवी कहते हुए सम्बोधित किया है। हिन्दवी के साथ वे फारसी के भी शायर थे। उन्हें दिल्ली के सुलतानों का आश्रय मिला था। यद्यपि इनके ग्रंथों की सूची काफी लम्बी है जिनकी प्रामाणिकता पर संदेह है। खुसरों अरबी, फारसी, तुर्की और हिन्दी आदि भाषाओं के विद्वान थे और संस्कृत का भी कुछ ज्ञान रखते थे। उन्होंने कविता की 99 पुस्तकें लिखी थीं जिनमें कई लक्ष शेर थे किन्तु अब उनकी केवल 22 रचनाएँ ही प्राप्त होती हैं जिनकी फेहरिस्त इस प्रकार है –

मसनवी किरानुरस्सादैन, मसनवी मतलउल अनवार, मसनवी शीरी व खुसरू, मसनवी लैला मजनूँ, मसनवी आईनैइस्कंदरी (सिकंदर नामा), मसनवी इश्तबिहिशत, मसनवी खिजनामा, मसनवी नुह सिपहर, मसनवी तुगलकनामा, तारीखे अलाई, इशाए खुसरू, एजाजे खुसरबी, अफजलुलुफवायद, राहतुलमुर्जी, खलिकबारी, जवाहिरुलुबह, मुकालः किस्सा चहार दरवेश, दीवान तुहुपतुस्सग, दीवान वस्तुलइयात, दीवान गर्तुल्लकमाल, दीवान बकीयः नकीयः आदि।

किशोर अवस्था से खुसरों ने कविता लिखना शुरू किया और बीस वर्ष की आयु में ही वे प्रसिद्ध कवि के रूप में सर्वपरिचित हो गए। खुसरों ने अपनी सम्पूर्ण जिन्दगी राज दरबार में ही व्यतीत की लेकिन राजदरबार में रहकर भी वे कवि, कलाकार, संगीतज्ञ और सैनिक ही रहे। भारतीय संगीत में कव्वाली और सितार उनकी देन माना जाता है। इन्होंने गीत की तर्ज पर फारसी में और अरबी गजल के शब्दों को मिलाकर पहेलियाँ और दोहे लिखे।

खुसरों के वक्त सर्वसामान्य काव्य रचना ब्रजी में हुआ करती थी। बोलचाल की भाषा में खड़ी बोली का व्यवहार होता था। इसी बोलचाल की भाषा में उन्होंने अपनी काव्य रचना की। खुसरों के नाम पर जो रचनाएँ मिलती हैं उसका स्वरूप काफी आधुनिक प्रतीत होता है जिसके कारण इनकी भाषा के सन्दर्भ में भ्रातियाँ पैदा होती हैं। लेकिन इसका समाधान केवल इतना ही दिया जा सकता है कि खुसरों की कविता जनसाधारण की जुबाँ पर चढ़ी थी और पीढ़ी-दर-पीढ़ी यहीं हुआ और कुछ सदियों के बाद में इनका संकलन किया होगा लिहाजा इनकी भाषा आधुनिक प्रतीत होती है।

उर्दू वाले उर्दू की प्राचीनता और उद्भव की खोज करते हुए खुसरों तक पहुँचे हैं और गलत अवधारणा को मानते हुए उन्होंने उर्दू का आरम्भ खुसरों पूर्व माना है और खड़ी बोली का आरम्भ ब्रजभाषा से निर्धारित किया है। खुसरों की कई रचनाएँ ऐसी हैं जिसमें हिन्दी और फारसी दोनों भाषाओं का व्यवहार एकही छंद में अलग-अलग एक साथ किया गया है –

“जे हाल मिसकी मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाए बतियाँ,

किताबे हिजाँ न दारम ए जो न लेहु काहे लगाए छतियाँ।

शबान हिजाँ दराज चूँ जुल्फ व रोजे वसलत चूँ उम्र कोताह,

सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अंधेरी रतियाँ।

देवानां कथा सुमतिर्विजृम्भिताम् ॥ क्र० १/८६/२



Impact Factor
3.811

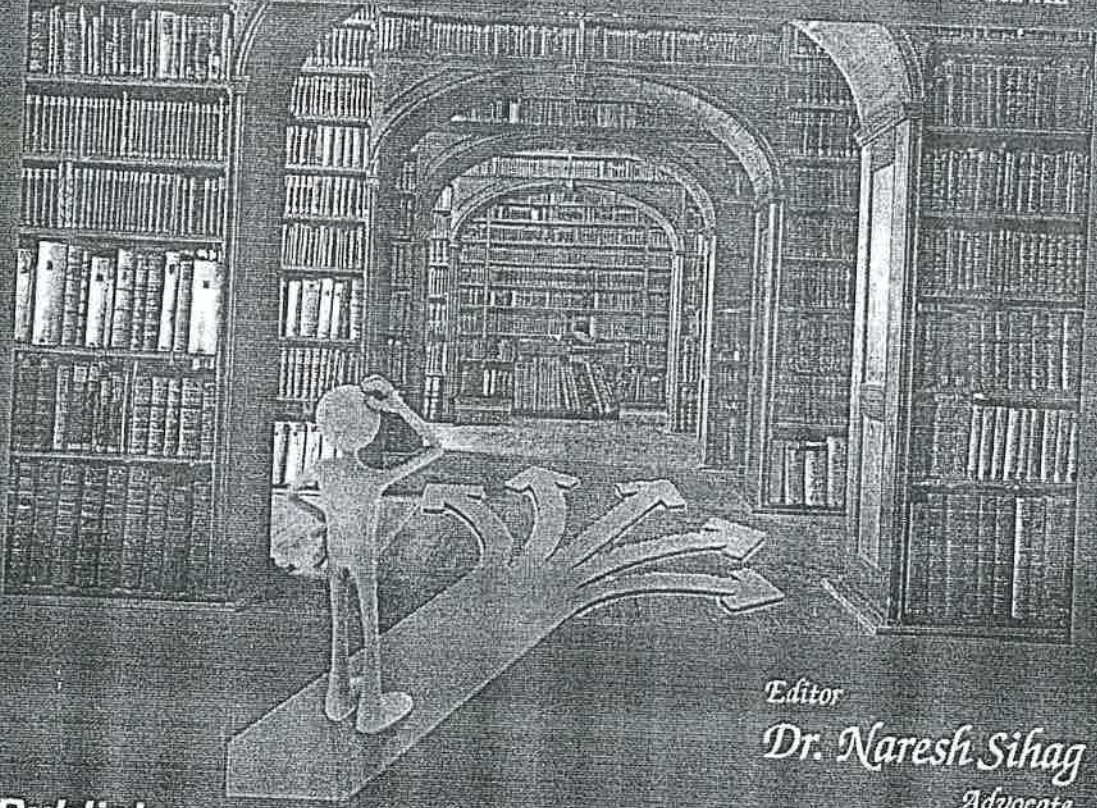


ISSN : 2395-7115

शोध विशेषांक
अप्रैल २०२०

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



Editor
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY
(MARCH, JUNE, SEPTEMBER AND DECEMBER) RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
कमरा नं. 175, लघु सचिवालय,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

उपकार्यालय :

सहदेव शास्त्री
शिवपुरी, नरवाना रोड,
जीन्द (हरियाणा)
मो. 09416253826

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.grngo.org
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

- Disclaimer :**
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
 2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
 3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
 4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

शोध विशेषांक

अप्रैल 2020

(3)

| | | | |
|-----|--|-----------------------------|----------------|
| 37. | शोध का स्वरूप एवं महत्व | पूजा | 158-161 |
| 38. | शोध :- अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार | सुनील कुमार शर्मा | 162-165 |
| 39. | शोध सामग्री संकलन के प्रमुख स्रोत | डॉ० मृत्युंजय कोईरी | 166-167 |
| 40. | समाज विज्ञान विषय में शोध कार्य के दौरान आने वाली समस्याएं और समाधान | शिवकरण निमल | 168-171 |
| 41. | शोधार्थी एवं शोध निर्देशक : मूल अर्हताएँ | चैतराम यादव | 172-175 |
| 42. | शोध का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार | डॉ. मोनिका बाबेल | 176-178 |
| 43. | शोध का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार | गुरमीत सिंह, | |
| 44. | क्रियात्मक अनुसंधान | डॉ. विनोद कुमार | 179-183 |
| 45. | शोध -अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार | डॉ. नरेश कुमार | 184-195 |
| 46. | अनुसंधान एवं सामाजिक अनुसंधान | डॉ. अनिता एस. कपूर | 196-198 |
| 47. | शोध-अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं शोध के सोपान | डॉ० ललित चंद्र जोशी | 199-204 |
| 48. | साहित्य में शोध की अनिवार्यता | रमेश चन्द्र सैनी | 205-209 |
| 49. | हिंदी- अनुसंधान का इतिहास | डॉ. अशोक कुमार | 210-212 |
| 50. | Social Survey and Social Research | पवन भारती | 213-216 |
| 51. | शोध विमर्श | Dr. Om Prakash Manjhi | 217-221 |
| 52. | शोध/अनुसंधान में नैतिकता | डॉ. बाबू लाल सैनी | 222-237 |
| 53. | शोध, विमर्श | मनोज कुमार जायसवाल | 238-241 |
| 54. | शोध के विविध आयाम : महाभारतकालीन शिक्षा के सन्दर्भ में | डॉ. कुसुम कुंज मालाकार | 242-244 |
| 55. | सामाजिक शोध : अर्थ, उद्देश्य एवं चरण | आशा सिंह | 245-247 |
| 56. | शोध कार्य में गुणवत्ता हेतु सुधार की आवश्यकता, कारण एवं व्यवधान राष्ट्रीय विकास के सन्दर्भ में - दृष्टिकोण - I | डॉ० लवलीन कौर | 248-255 |
| 57. | शोध कार्य में गुणवत्ता हेतु सुधार की आवश्यकता एवं व्यवधान राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में-दृष्टिकोण-II | डॉ. राजपाल | 256-262 |
| 58. | शोधकार्य में शोध निर्देशक की भूमिका | डॉ. राजपाल | 263-267 |
| 59. | अन्तरानुशासनिक अध्ययन का औचित्य | मनीश कुमार कुर्रे | 268-272 |
| 60. | शोध/अनुसंधान अर्थ, परिभाषा, महत्व एवं प्रकार | पियूष कुमार | 273-274 |
| 61. | शोध का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार | ज्योति कुशवाहा | 275-278 |
| 62. | शोध प्रविधि तथा क्षेत्रीय तकनीक : विविध आयाम | प्रो. प्रीति मिश्रा | 279-285 |
| 63. | शोध का अर्थ परिभाषा एवं प्रकार : एक आलोचना | डॉ. स्वर्णिम घोष | 286-289 |
| 64. | साहित्यिक शोध और आलोचना | श्रीमती जोनटि दुबरा | 290-294 |
| 65. | ऐतिहासिक अनुसंधान विधि | डॉ. मुकेश चंद | 295-298 |
| 66. | पाठकों का ऑनलाइन विश्व | अनिता कंवर | 299-302 |
| 67. | अनुसंधान और पुस्तकालय - कौशल | डॉ. विजय महादेव गाडे | 303-309 |
| 68. | शोध के गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण | आरती जैन | 310-313 |
| 69. | शिक्षा में शोध का महत्व | प्रो. डॉ. रेखा सोनी | 314-326 |
| 70. | DATA ANALYSIS: PURPOSE AND TECHNIQUES | डॉ. पुष्पांजलि अग्रवाल | 327-329 |
| | | Dr. Sanjay K. Rastogi | 330-332 |

ISSN 2250-1495

इतिहास पारिवार

साहित्य परिवार आप के घर, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का दर्पण है। इसमें आप जिस रूप में होंगे, उसी रूप में दिखाई पड़ेंगे। एक बार दर्पण के सामने होकर देखिये। दर्पण सच को सच ही बतायेगा और आप जल्दी से स्वयं को सावधान करने में जुट जायेंगे। दर्पण बार बार देखिये, पढ़िये अपने आप को, और अगल-बगल भी झाँकिये। आप की छाप अगल - बगल वालों पर पड़ सकती है। आप को पढ़ते हुए देखकर वे भी पढ़ने लगेंगे। आप इसे अपने हाथ में लीजिये। यह पत्रिका आप की है। आप द्वारा सुधी पाठकों तक सदा पहुँचती रहे इसी आशा के साथ।

संपादक

डॉ. सूर्यदीन यादव

Book-Post
Printed Matter

सम्पादकीय पता :-

डॉ. सूर्यदीन यादव
३, पुनीत कोलोनी,
पवन चक्री रोड,
नडियाब - ३८७००१
जिला-खेडा (गुजरात)
फ़ोन. ९१२७५८४६२५

प्रति

श्रीमान/श्रीमती

डॉ. सूर्यदीन यादव

डॉ. सूर्यदीन यादव

डॉ. सूर्यदीन यादव

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History, J. K. University

Babasahab Chitale Mahavidyalaya

Kharadi, Dist. Solapur

अभिप्रेत (गुजरात) से मुद्रित

अर्पण सिन्धरी,

सम्पादक : डॉ. सूर्यदीन यादव

वर्ष- 15, अंक 34 जनवरी 2020

NSL/ISSN/INF/2011 ISSN 2250-1495

गुजरात एवं उत्तर प्रदेश से एक साथ प्रकाशित हो रही साहित्य कला एवं संस्कृति-धरोतना की एडमोसॉपिक पत्रिका

संस्थापक : रघुनंदन, जयलाल यादव

प्रधान संपादक : डॉ० सूर्यवीन, रघुनाथ यादव

उत्तर प्रदेश ← संपादक मंडल → गुजरात

विशिष्ट दाता : डॉ० राजकुमार यादव (पंजाब)

डॉ० शकेश कुमार सिंह (आगरा)

परामर्शक :

श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव (मुलतानपुर)

डॉ० रामप्रसाद प्रजापति (मुलतानपुर)

डॉ० सुरेन्द्र प्रताप सिंह (अमेठी)

सहसंपादक :

डॉ० अरुण कुमार आर्य (मुसाफिरखाना)

डॉ० सलमनाथ यादव (जवतपुर)एडवोकेट

प्रबंधक : 800417068

सरिता सूर्यवीन यादव

ग्राम पूरंगाराम राजपुर, थाना कुड़वार

पो० राजपुर, जिला मुलतानपुर (8090)



SP सरिता प्रकाशक

श्री बलवीर सिंह यादव (दिल्ली (सि० दाता)
श्री अमर बहादुर सिंह (गुरुत) (सि० दाता)

परामर्शक :

डॉ० चन्द्रकांत महेश (अहमदाबाद)

डॉ० दयाराम त्रिपाठी (विद्यानगर)

डॉ० शशिकांत सोनवले (महाराष्ट्र)

डॉ० चन्द्रकांत कोठे (8090)

सहसंपादक :

डॉ० ओम प्रकाश यादव (बड़ौदा)

डॉ० सुधा श्रीवास्तव (अहमदाबाद)

खतस्थापक : 9429071766 (WhatsApp)

सुरीला सूर्येन्द्र कुमार यादव

2. आदित्य पार्क,

कर्म नगरी के पास, पीज रोड

नडियाद 347002 (गुजरात)

कार्यालय : 9427584625 (संपादक)

3. पुनीत कालोनी, पवन चककी रोड

नडियाद जिला खेड़ा (गुजरात)-387002

नवनिवास : सी/4 धनलक्ष्मी पीज रोड नडियाद-2 (गुजरात) 8780596935

(WhatsApp No. 8780596935) (M) 9427584625/800417068, Email : spsahityaparivar@gmail.com

साहित्य-परिवार के सभी पद, दाता, सहयोगी, रचनाकार अवैतनिक एवं अस्थायी हैं। पत्रिका से सम्बन्धी कोई भी विवाद नडियाद, गुजरात कोर्ट में ही सुलझाये जायेंगे। इस अंक का मूल्य 100 रुपये मात्र है। साहित्य-परिवार की वार्षिक सदस्यता दान शुल्क 300/- रुपये मात्र है। आजीवन दान 3000/- रुपये, विशिष्ट दान : स्वच्छ अमर्यादित। सर्वाधिकार-संपादक के पास।

स्थायी निवास- ग्राम पूरंगाराम (राजपुर) पी० राजपुर (कुड़वार) जिला मुलतानपुर (8090) 228001

स्त्री विमर्श के सशक्त पक्षधर- डॉ० सूर्यदीन यादव

डॉ० विजय महादेव गाडे
एसोसिएट प्रोफेसर शोध-निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय, मिलवडी जि.-सांगली (महाराष्ट्र)

डॉ० सूर्यदीन यादव हिन्दी साहित्य के सशक्त कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार हैं। उत्तर-प्रदेश से आकर गुजरात में बस गए हैं और गुर्जर भूमि को हिन्दी का माहौल देकर उन्होंने साहित्य सृजन किया है। डॉ० ललिता यादव और श्रीमती माधुरी घोष द्वारा सम्पादित उनका कहानी संकलन 'सूर्यदीन यादव स्त्री पक्षधरता की कहानियाँ' हमें प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम इन सम्पादकों को हम साधुवाद देते हैं कि इन्होंने एक से बढ़कर एक सुन्दर कहानियों का चयन कर सुन्दर एवं सशक्त संकलन प्रस्तुत किया है। इस कहानी संकलन में कुल 25 कहानियाँ हैं जो नारी की प्रतिमा को रूपायित तथा रेखांकित करती हैं। इस संकलन की ओर एक विशेषता है कि इसमें नारी समर्थन के सुर निश्चित ही उमरे हैं लेकिन पुरूष जाति को गुनाहगार की तरह कटघरे में रचनाकार ने खड़ा नहीं किया। यहाँ विद्रोह है लेकिन यह विद्रोह ध्वंस नहीं करता।

'ऊसर जमीन' कहानी में रघुपत दादा सँवरकी को उसके परिवार के जुल्मोसितम से आजाद कराते हैं और बेटी का दर्जा देकर अपने घर में पनाह देते हैं। सँवरकी तो पहले तैयार नहीं होती कि उसके कारण रघुपत दादा कहीं आलोचना का शिकार न हो जाएँ, लेकिन कुछ दिनों के बाद वह घर छोड़कर चली जाती है। दादा को बाद में सँवरकी का खत मिलता है कि उसने कोई और रास्ता अख्तियार किया है और अब वह मौं बनने वाली है। उसके खत से रघुपत को एक नई प्रेरणा मिलती है और वह अपने खेती के काम में जुट जाते हैं। क्योंकि उनके हिस्से की जमीन भी ऊसर थी। इसलिए इस कहानी का शीर्षक भी बहुत सार्थक एवं प्रतीकात्मक है।

'वह रात' इस कहानी की नायिका चंदा की आपबीती है। ससुराल से पहली बार वह वापस लौटी है और अपनी सखी कामिनी से उसकी बातचीत चल रही है। देहातों में जीवन किस तरह का होता है, इसका चित्रण इस कहानी में हुआ है। चंदा जिसकी शादी किसी श्याम से हुई है, जिसे उसने देखा तक नहीं है और अपनी सास से वह अपने पति का परिचय प्राप्त करती है। देहात में पति-पत्नी एक दूसरे के साथ बात तक नहीं करते लेकिन यह चंदा बड़ी-साहसी है। वह सास के द्वारा अपने पति को देखती है और रात में पति-पत्नी के बीच गहरी आत्मीयता हो जाती है। उस रात में जो कुछ भी

हुआ उसका विवरण इस कहानी में मिलता है और अन्त में उस रात की तरह यह रात भी सखी के साथ हुए यात्रात्माप में खत्म हो-जाती है। चंदा भी ऐसी युवती है जो बेहिक अपने पति के साथ अपना तादात्म्य प्राप्त करती है और यह कहानी एक नई नारी की तस्वीर को प्रस्तुत करती है।

'ईख की कहानी' पति-पत्नी के रिश्ते को रेखांकित करती है। जमीन-जायदाद के कारण परिवार में झगड़े तो होते ही रहते हैं जिसे हम सब जानते हैं। इस कहानी की नायिका देसुई भी अपने पति के साथ अपने हक के लिए खुद लड़ती, झगड़ती है। उसका पति अपने परिवारवालों के खिलाफ अधिक नहीं बोल पाता लिहाजा वह अपने हाथ में सूत्र लेती है और अपने पति को उसकी जायदाद दिलावा देती है और इसी कारण उसका भविष्य सुनहरा हो जाता है। देसुई ईख की प्रजाति भी है और नायिका का नाम भी है इसलिए यह कहानी भी बड़ी सार्थक एवं प्रतीकात्मक है।

'बिना बाप का बच्चा' यह कहानी बड़ी ही सशक्त ढंग से लिखी गई रचना है। इस कहानी की नायिका नईकी विधावा है। उसके मन में यही आकांक्षा है कि बुढ़ापे के लिए पुत्र का सहारा चाहिए। अपने सास-ससुर की सेवा करते हुए वह अपनी जिन्दगी काट रही है, लेकिन पुत्र की चाहत उसकी पीछा नहीं छोड़ती। सास-ससुर उसकी आलोचना करते हैं लेकिन वह लाचार, विवश और बेयस है। किसी छद्मर नामक आदमी के साथ वह शारीरिक संबंध बनाती है और उसे संतान प्राप्ति हो जाती है। देखते-देखते यह बात सरेआम हो जाती है और पंचायत बुलाकर नईकी से पूछा जाता है कि उसके बच्चे का बाप कौन है? छद्मर इस बात से इन्कार करता है कि वह उस बच्चे का बाप नहीं है। इसलिए नईकी वहाँ से निकल भागती है। वह गाँव के सभी मर्दों की आलोचना करती है लेकिन उसका देवर दहबगिया आने आकर उसे सहारा देते हुए कहता है कि 'नईकी इस गाँव से नहीं जाएगी और इस बच्चे का पिता मैं हूँ' कहते हुए बच्चे को उठा लेता है। इस कहानी का अन्त बड़े ही मार्मिक शब्दों में हुआ है- 'पति और बाप होने का दावा करने वाले मरदों तुम्हें औरतों के एहसानों के आगे झुकना चाहिए'।

'परदेसी की एक रात' कहानी भी पति-पत्नी के रिश्तों को एक नया आयाम देती है। भोला और चंदा की यह कहानी है। भोला गाँव से कहीं सुदूर शहर में रहकर नौकरी करता है और शिक्षा ले रहा है। अपने वेतन पर अपना गुजारा बड़ी मुश्किल से करता है, लिहाजा वह घर में कुछ पैसे भेज नहीं पाता और इसी बात को लेकर चंदा के सास, ससुर, जेठ और जेठानी सभी उसे ताने मारते हैं। एक दिन भोला गाँव आता है तो चंदा उसे अपनी आपबीती सुनाती है। भोला बहुत दुःखी होता है लेकिन हालात के आगे वह

संस्थान प्रकाशन

संस्थान से प्रकाशित प्रवीनलभ अध्येता कौश



ATTESTED

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के लिये डॉ. सुनील कुमार
क्षेत्रीय निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र, वालभवन, शास्त्री स्टेडियम, बापूनगर,
अहमदाबाद (गुजरात)- 380024 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पाठिदार आपसमें
प्रिन्सर्स - 18 - 19. जयश्री कॉम्प्लेक्स, बापूनगर अहमदाबाद - 380025 से मुद्रित ।

संपादक - डॉ सुनील कुमार

पंजीयन संख्या / RNI No : GUJHIN / 2017 / 70792

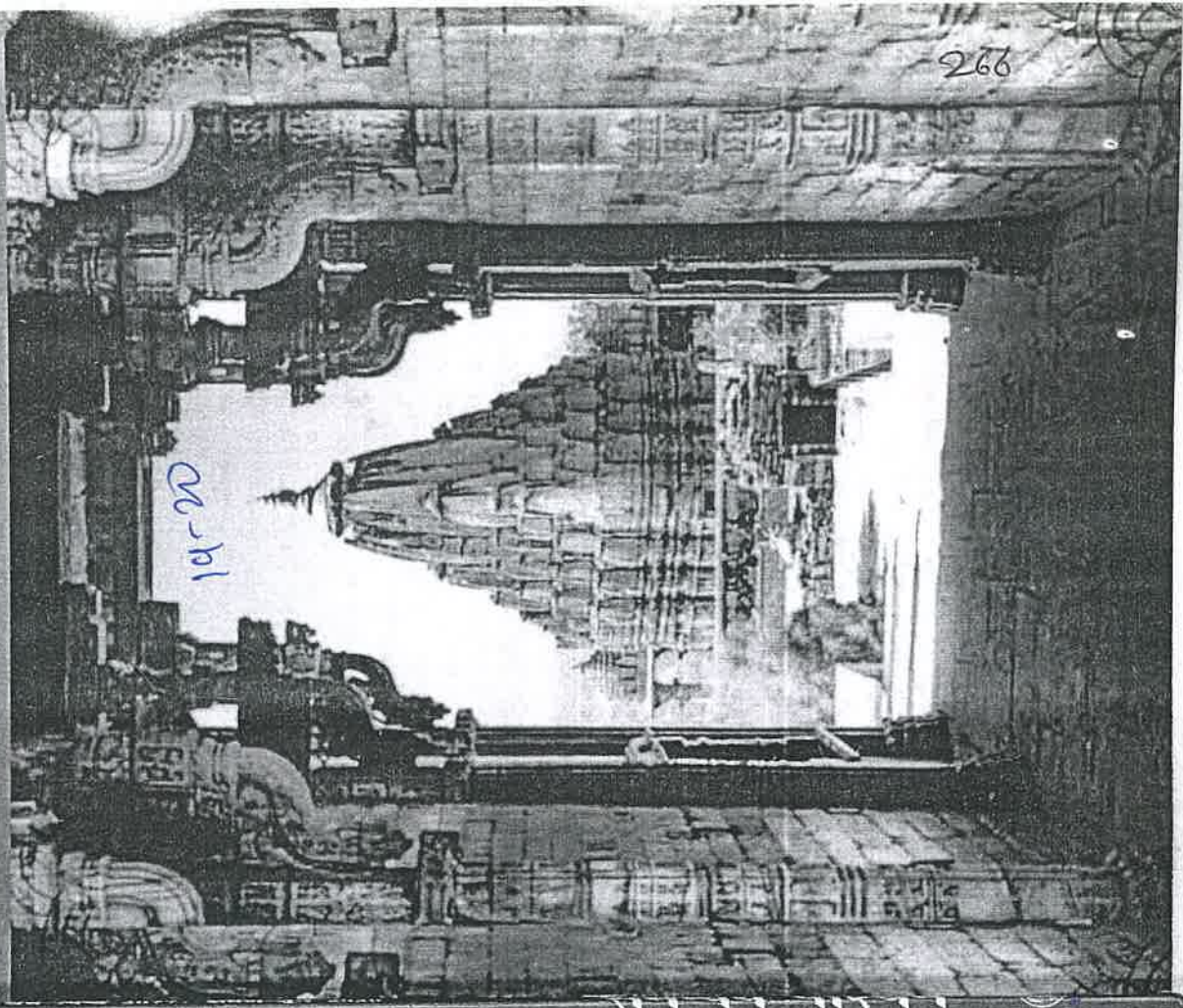
UGC - CARE Listed

ISSN : 2582-4937

खंड - 4, अंक - 2, चैत्र-शुक्ल 2077 / अप्रैल-जून 2020

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका



14-20

पश्चिम भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-समन्वय पश्चिम

खंड-4, अंक-2, चैत्र-ज्येष्ठ, 2077/अप्रैल-जून, 2020

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शास्त्री स्टैडियम, बाल भवन, बापुनगर, अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल : 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत : प्रति अंक रु. 40.00 वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250.00
(डाक व्यय प्रति अंक रु. 35.00 तथा वार्षिक रु. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10.00 वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक : पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कॉपीिंग : भानु ग्राफिक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

अनुक्रम

भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज

संपादकीय

प्रधान संपादक की कलम से...

आलेख

1. गुजराती उपन्यासों पर गांधी दर्शन का प्रभाव 10
2. गांधी जी और भारतीय समाज 16
3. महात्मा गांधी की दृष्टि में हिंदुस्तानी 22
4. गांधी, पथराव और प्रवर्धित : 'बेनीमाधो तिवारी' 28
5. 'अक्षर रिस्त' : एक विशेष आत्मकथा 33
6. गोपंतकीय मंदिरों का स्थलांतरण 41
7. मैं खानाबदोश रहूँ अकेला! 47
8. गांधीवाद और हिंदी काव्य 58
9. 'ग्रामगीता' मनुष्यता उद्धार का सूत्र 63
10. गांधीजी का राष्ट्रभाषा हिंदी संबंधी चिंतन 68
11. गांधीजी की विश्वव्यापी मान्यता 73
12. समर्थ रामदास रचित 'भगोबोध' और मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन 79
13. हिंदी और कोंकणी भाषा एवं साहित्य पारस्परिक संबंध 86
14. धूप के षडयंत्र के विरुद्ध मानवीय संघर्ष का नवीन नगराक मुंजले 92
15. श्रीराम त्रिपाठी और उनकी 'पूछ' कहानी 97
16. गांधीजी और खी उत्थान के प्रयत्न 100
17. संस्कृत नाट्य परंपरा और श्री मूलशंकर गणिकलाल वक्रिक की तीन संस्कृत नाट्य कृतियाँ (गुजरात के संदर्भ में) 106
18. गांधीजी और एकादशी व्रत प्रसंग 112
19. हिंदी भाषा पर ग्रामीण मराठी की बोलियों का प्रभाव 120
20. विविध क्षेत्रों में सरदार पटेल की भूमिका 127
21. गांधीजी और राष्ट्रभाषा हिंदी 133
22. गुजराती लोक संस्कृति में गरबा 141
23. वर्तमान समय में वल्लभभाई की प्रसंगिकता 147
24. लेखक सूची 150

डॉ. नंद किशोर पाण्डेय 04

डॉ. अनुज प्रताप सिंह 10

डॉ. अनिल मिश्रा 16

डॉ. मनोहर भंडारे 22

डॉ. ललिता यादव 28

डॉ. रमा प्र. नवले 33

डॉ. भूषण भावे 41

डॉ. विजय महारदेव गाडे 47

डॉ. सदानंद भोसले 58

दीनानाथ मुल्लीधर पाटील 63

डॉ. धीरज वणकर 68

डॉ. समीर प्रजापति 73

डॉ. सुनील डहाळे 79

डॉ. उर्मिला पोरवाल 86

डॉ. सतीश पांडेय 92

संगीता यादव 97

डॉ. अनु मेहता 100

डॉ. ज्योत्सना शर्मा 106

डॉ. पूर्वा शर्मा 112

श्रुति शशिकान्त चण्टे 120

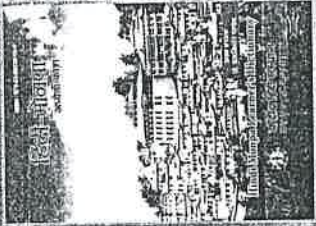
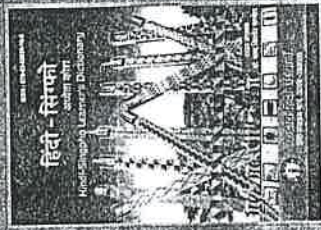
डॉ. आशा रानी 127

डॉ. विवेक कुमार सिंह 133

पुष्पि पटेल 141

डॉ. विजय एम. डोरे 147

डॉ. बीना बुदकी 150



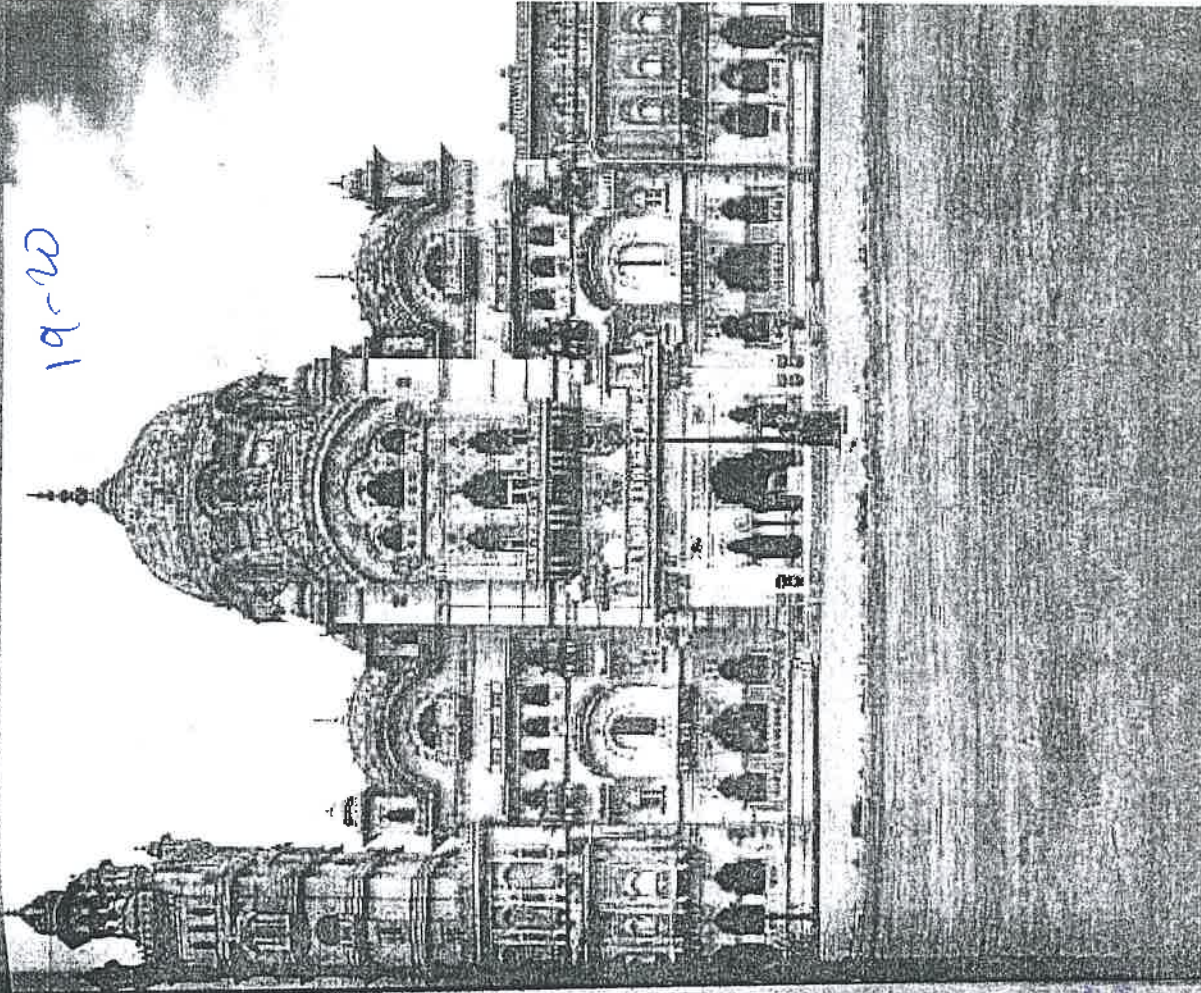
ATTESTED

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के लिये डॉ. सुनील कुमार P KHARADI
 क्षेत्रीय निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र, बालभवन, शास्त्री स्टेडियम, वापुसनागर, अहमदाबाद
 अहमदाबाद (गुजरात)- 380024 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पाठिका **Dr. Pankaj Chitale, Maharashtra**
 मिर्च - 18-19, जयश्री कॉम्प्लेक्स, वापुसनागर अहमदाबाद - 380025 को सुनिश्चित कर ताई प्रकाशित किया गया है।
 संपादक - डॉ. सुनील कुमार

समावृत्त पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रिय पत्रिका

19-20



खंड-4, अंक-3, आषाढ-भाद्रपद, 2077/जुलाई-सितंबर, 2020

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शास्त्री स्टैडियम, बाल भवन, बापूनगर,
अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल : 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत : प्रति अंक रु. 40.00 वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250.00
(डॉक व्यय प्रति अंक रु. 35.00 तथा
वार्षिक रु. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10.00 वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक : पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कंपोजिंग : भानु ग्राफिक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना
आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति
आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

संपादकीय

आलेख

✓ 1. कहे तुका !

2. गुजराती दलित कहानी
3. हिंदी की गांधीवादी काव्यधारा
4. लोकधर्मी साहित्यकार इब्रेचंद मेघाणी
5. विंदा कर्दोकर का बहुआयामी काव्य-संसार
6. मालती जोशी की कहानियों में जीवन-यथार्थ :
एक अनुरीक्षण
7. हिंदी साहित्य और युगपुरुष गांधी
8. गीरा के हिंदी-गुजराती पदों का तुलनात्मक अध्ययन
9. राष्ट्रभाषा तथा लिपि का सकल और महात्मा गांधी
10. महात्मा गांधी का भाषा-चिंतन

11. भूकंप का प्रत्यक्षीकरण : 'छावनी'
12. महात्मा गांधी और हिंदी साहित्य
13. नामदेव हसाळ का काव्य : विद्रोह एवं आशावाद
14. प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में गांधी-दर्शन रंगभूमि
उपन्यास का अध्ययन
15. फक्कड़ फक्कीर गांधी
16. अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी : महात्मा गांधी जो
17. सत्य और अहिंसा की प्रतिमूर्ति : महात्मा गांधी जी
18. महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा का प्रश्न
19. मराठी नाटकों में मील का पत्थर 'नटसम्राट'
कदम
20. सहजता और समानता के कवि : संत तुकाराम
21. समरसता और समन्वय के सार्थक गुजराती साहित्यकार 'धूमकेतु'
प्रा. शाहदादेवी राजपूत
22. गुजराती वेदांगी कवि अखो भगत और उनकी जीवन दृष्टि
23. लेखक सूची

डॉ. सुनील कुमार 04

डॉ. विजय महादेव गाडे 06

डॉ. धनंजय चौहान 11

डॉ. प्रियंका कुमारी 19

डॉ. अनु मेहता 27

ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह 32

डॉ. चित्रा वि. एस. 39

डॉ. शृंखला 46

डॉ. जशवंत पंड्या 53

डॉ. सत्यवीर सिंह 63

प्रा. दशरथ काशीनाथ

खेमनर 71

डॉ. भानुबहन वसावा 77

डॉ. सुनील कुमार 84

डॉ. सदानंद भोसले 92

सुविद्य कुमार

भारवाडकर 100

डॉ. पार्वती जे. गोसाई 108

डॉ. संगीता चौहान 113

डॉ. देव्यानी महिडा 117

डॉ. वंदना श्रीवास्तव 121

डॉ. लक्ष्मण माधवराव

कदम 126

डॉ. विमलेन्दु तीर्थकर 133

प्रा. शाहदादेवी राजपूत 140

डॉ. करुणामा गवली 146

150

19-20

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम् ॥ ऋ० १/८६/२



9 772395 711007

Impact Factor
3.811



ISSN: 2395-7115

JULY 2020

Vol. 12, Issue 1

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL



नव विमर्शः
इकीसवीं सदी

॥ ऋग्वेद ॥

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

प्रधान सम्पादकः

विनोद कुमार

सम्पादकः

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अ. सम्पादकः

संदीप सिंह

एवं-सम्पादकः

मुकेश कुमार त्रिषि वर्मा



Publisher: Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

D. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sandh.

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

कमरा नं. 175, लघु सचिवालय,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : nksihag202@gmail.com

मो. 09466532152

उपकार्यालय :

सहदेव शास्त्री

शिवपुरी, नरवाना रोड़,

जीन्द (हरियाणा)

मो. 09416253826

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.gmgo.org

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

- Disclaimer :**
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
 2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
 3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
 4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

| क्र. | लेख का नाम | लेखक | पृ. सं. |
|------|---|--|---------|
| 1. | सम्पादकीय | विनोद कुमार | 9-9 |
| 2. | हिंदी कथा साहित्य में विकलांग विमर्श | उर्मिला कुमारी | 10-12 |
| 3. | 21वीं सदी में किन्नर विमर्श | अन्नपूर्णा सिंह, डॉ. आरती दुबे | 13-16 |
| 4. | पर्यावरण विमर्श | कोमल चंद कुशवाहा | 17-19 |
| 5. | पर्यावरण विमर्श | अरुण कुमार सिंह | 20-22 |
| 6. | बाजार विमर्श का स्वरूप | डॉ. बी. संतोषी कुमारी | 23-25 |
| 7. | तुलसीदास की समन्वय की भावना | दीपक सिंह | 26-28 |
| 8. | वर्तमान समय (कोविड-19) में मीडिया की भूमिका पर विमर्श | डॉ० कृष्ण भगवान दुबे | 29-30 |
| 9. | 'गिलिगड्ड' वृद्धावस्था विमर्श पर केन्द्रित हिन्दी उपन्यास | डॉ० पायल लिहारे | 31-34 |
| 10. | महिला साक्षरता की दिशाएँ | डॉ.(श्रीमती)मंजुलता कश्यप | 35-40 |
| 11. | नागार्जुन कृत 'बलचनमा' उपन्यास में किसान की राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता | डॉ. मौह, रहीश अली खॉं | 41-43 |
| 12. | पर्यटन की अवधारणा : एक विमर्श | राहुल पालीवाल | 44-47 |
| 13. | नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री-विमर्श | डॉ. रजनी जैन, सर्वजीत सिंह यादव | 48-51 |
| 14. | सशक्तिकरण के संदर्भ में पंचायती राज | प्रो. रामसेवक राम भगत, डॉ. डी.एस. मरावी | 52-58 |
| 15. | समकालीन स्त्री कथाकारों के साहित्य में स्त्री विमर्श | डॉ. सम्पतलाल रेगर | 59-63 |
| 16. | वेद विमर्श | प्रेम सागर | 64-66 |
| 17. | वृद्धजनों की दशा एवं दिशा विमर्श : गृह विज्ञान का योगदान | डॉ. सरोज बाला श्याम विश्वा | 67-70 |
| 18. | आखिरी छलांग में अभिव्यक्त किसान जीवन | शाहीन बेगम महमद गौस | 71-73 |
| 19. | किन्नर विमर्श | संतोष कुमारी | 74-77 |
| 20. | किन्नर विमर्श | Professor Saroj Sharma | 78-80 |
| 21. | किसान विमर्श | डॉ. बाबू लाल सैनी | 81-84 |
| 22. | विमर्शात्मक उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में 'बबूल':दलित जीवन की अभिव्यक्ति | डॉ. रवि प्रकाश मिश्र | 85-88 |
| 23. | पुरुष विमर्श | डॉ. विजय महादेव गाडे | 89-92 |
| 24. | दलित आत्मकथाओं की भाषा : 'जूठन' के विशेष सन्दर्भ में | वंदना. एस | 93-95 |
| 25. | महाभारत में पर्यावरण और पंचमहाभूतों के सजीवात्मक वर्णन के परिप्रेक्ष्य में | डॉ. गोविन्द कुमार धारीवाल | 96-98 |
| 26. | वृद्ध विमर्श | डॉ० सुनील कुमार शर्मा | 99-102 |
| 27. | किन्नरों की कही - अनकही अनहद नाद (कहानी 'किन्नर' 'पन्ना बा' और 'नियति' के विशेष संदर्भ में) | ग्रीष्मा एलिजबथ के.ए | 103-106 |

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी
04 अप्रैल 1889-30 जनवरी 1968



स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कवि, लेखक एवं पत्रकार

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुबाला के गहनों में गुंथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं संगमरों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इतलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली !
इस पथ पर देना तुम फेक !
मातृ-भूमि पर शीश चकाने,
तिस पथ जावें वीर अनेक ।

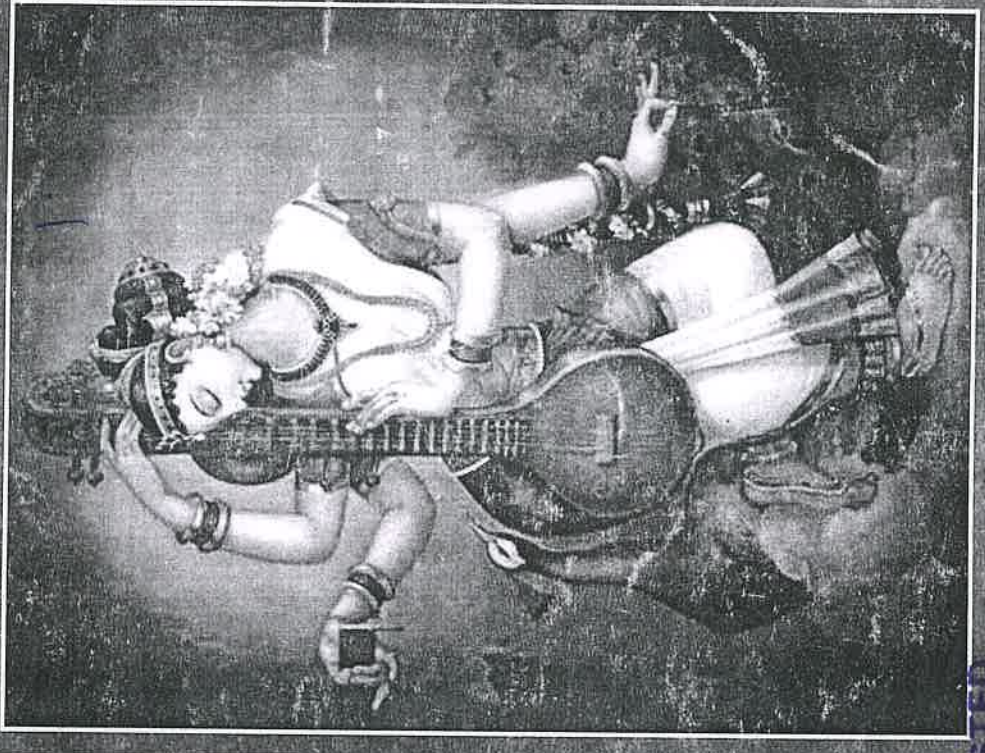
जन्म-जन्म की निष्ठा पर चढ़ कर स्वतंत्रता के परवानों का प्रयाण गीत बनी यह कवि
माखनलाल चतुर्वेदी के कारवास के दौरान 18 फरवरी 1922 को बिलासपुर जेल में लि-

ISSN : 2393-9352



साहित्य सरस्वती

अप्रैल-जून 2020 वर्ष - सात अंक 26



ATTESIED

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय, आगरा (म.प्र.)
D. P. KHARADE

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं याचनालय ट्रस्ट,
और मूर्ति, सागर (म.प्र.)

फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।
- सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।
- रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।

रचनाकारों से निवेदन

- कृपया इस त्रैमासिक पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ प्रेषित करें।
- रचनाएँ छोटी हों। लेख एवं कहानियाँ 7-8 पृष्ठों से अधिक न हों।
- रचनाएँ सुस्पष्ट हों, टंकित हों।
- पुस्तक-समीक्षा स्वयं करावा कर प्रेषित करें।
- रचनाएँ इस पते पर प्रेषित करें-

डॉ. सुरेश आचार्य

37, अन्नपूर्णा विद्यापुरम, मकरोनिया,

सागर (म.प्र.) पिन कोड - 470004

मो. : 09826221961

Email: shreesuryam@gmail.com

आवरण

असपर अहमद, सागर

Mob. 9926438999

asrarart@gmail.com

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण

अनुजा बुक्स

1/10206, गली नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क

शाहदरा, दिल्ली-110032

समादकीय

आवत ही हरसै नहीं

गोस्वामी तुलसीदास ने कभी लिखा था-

आवत ही हरसै नहीं, नैनन नहीं सनेह।

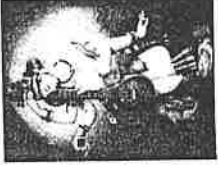
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह॥

अर्थात् आपके आने पर जो खुश नहीं होता। जिसकी आँखों में प्रेम दिखाई नहीं देता। उसके घर चाहे सोना बरसता हो मगर तुलसीदास के अनुसार वहाँ कतई नहीं जाना चाहिए। सो बरोबर है। सड़ियाल आदमी के यहाँ धन बढ़ता है तो उसकी अकड़ भी बढ़ती है। समुद्र तो मर्यादा में रहता है मगर छोटे-छोटे नाले जरा सी वर्षा में इतराने लगते हैं। छुद्र नदी भरि चलि उतराई। जस थोरे धन खल बौराई। आदमी लाचारी में, और कोई रास्ता न मिलने पर भले खल के पास चला जाए। पर अब ऐसा विकट टटा खड़ा हुआ है कि भाई-भाई को देखकर भागता है और बहिनें एक-दूसरे को दूरई की राम-राम कर रही हैं। भैया जान है तो जहान है। रूपैया, माल, मकान, गाड़ी, चौड़ों का जलवा तभी तक है जब तक जान है।

कई सज्जन धूठ बोलने से बचे। इधर आप उनके घर तशरीफ ले गए, उधर वे मन में बोले-इसे भी अभी आकर मरना था। मगर दुनियादारी के चलते उजागर बोलते थे-आइए, आइए। धन्यभाग आप पधारें तो हम तो धन्य हो गए। इन बेचारे सज्जनों की भी जान छूटी। बाबू भैया यह जलवा है कोरोना बीमारी का। यह अल्लाह मियाँ का हस्टर है जो आदमी की होशियारी पर चला है। यह कुदस्त की वह करवट है जो हुशियारों की अबल चरपट कर देती है। जो जितना चतुर है उस पर उतना वजन। दुनिया का सबसे खतरनाक प्राणी भी मनुष्य ही है। सबसे भला प्राणी भी मनुष्य ही है। अल्लाह मियाँ ने परिन्दे-चरिन्दे और दरिन्दे बनाए। वे आदमी के इलाके में कोई हस्तक्षेप नहीं करते। उधर चीन में आदमी सबको हजम करने पर उतारू है। साँप से मँढक और मुर्ग से चमगादड़ तक उसके भोज्य पदार्थ हैं। इसी चमगादड़ के जूस से कोरोना के विषाणु पैदा किए गए यानी वुहान-लेब का आधार मीट-मार्केट है। मनुष्य खुद को अगर खुदा नहीं समझता तो खुदा से कम भी नहीं समझता। अल्लाह मियाँ ने उसे दो पैर देकर जमीन पर चलने के लिए बनाया, मगर बन्दे ने पहिया बना लिया। पहियेदार गाड़ियों पर डट्टा वह सरपट दौड़ने लगा। किसी भी जानवर से ज्यादा तेज। उसने दरिन्दों के नख-दन्त से जोरदार तलवार-बन्दूकें बनाईं। अल्लाह ने उसे जमीन पर रहने के लिए बनाया। मगर बन्दे ने हवाई जहाज, हेलिकॉप्टर बनाकर पंखों का इंजाम किया और अच्छे-अच्छे परवाज उसके सामने नाक राड़ते रह गए। अल्लाह ने पानी में रहने मछली, मगर, कछुवे और अन्य जल जन्तु बनाए। आदमी ने नावें, स्टीमर और पनडुबियाँ बनाकर पानी के ऊपर और भीतर भी घूमना शुरू किया। उसने रॉकेट बनाए, चंद्रमा पर चढ़ दौड़ा और अब मंगल मिशन चल रहा है। अंतरिक्ष में विस्फोट करने की वैज्ञानिक योजनाएँ चल रही हैं। लखो-लुआब यह कि चाहे आप अल्लाह मियाँ ही क्यों न हों। अगर आप बाप हैं तो आपके बिगड़ल बेटे जंरूर होंगे जो आपकी नाक में दम किए रहेंगे। बाप जितने बड़े होंगे। उनके बेटे भी उतने ज्यादा बिगड़ल होंगे। यों कुछ बेटे भले भी होते हैं मगर भलों की कौन पछूता है। काली खोपड़ी वाला जानवर सबसे खतरनाक, सबसे निर्मम और सर्वाधिक अविश्वसनीय होता है। इतिहास, पुराण, संस्कृति और साहित्य में ऐसे अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं। कंस ने अपने पिता उग्रसेन को जेल में डाला तो आलमगीर जिन्दा पीर औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को भीतर कर दिया। भीतर यानी बाहर निकलना बन्द। सीधी कैद। सो बरोबर है।

ये बड़ों की बातें हैं। बड़े दुनिया बिगाड़ने पर तुले रहते हैं। उन्हें हिंस, मारकाट, युद्ध और झगड़े प्रिय लगते हैं। मनुष्यता की परिभाषाएँ बदल रही हैं। हथियार बदल रहे हैं। सारी दुनिया जिस कोरोना वायरस की महामारी

साहित्य सरस्वती



हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - सात, अंक - छब्बीस, अप्रैल-जून 2020

संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

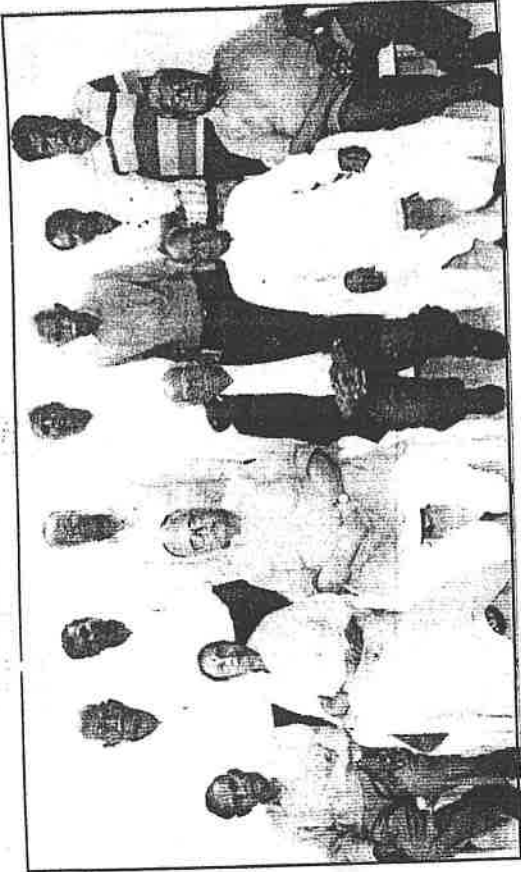


व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुक्देव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

262



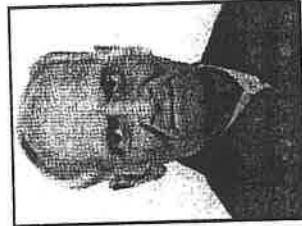
सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट सागर के पदाधिकारी गण

बैठे हुए (बाएं से दाएं) - श्री जी.एल. छलसाल (सह सचिव), डॉ. श्रीमती मीना पिम्पलापुरे, श्री लक्ष्मीनारायण यादव, पूर्व सांसद सदस्य (लोकसभा) एवं न्यासी, श्री के.के. सिलाकारी, एडवोकेट (अध्यक्ष)

पं. शुक्देव प्रसाद तिवारी (सचिव) एवं डॉ. सुरेश आचार्य (न्यासी)

पीछे खड़े हुए (बाएं से दाएं) - श्री प्रभाकर राव भागवत, श्री जवाहरलाल चौरसिया, श्री जगदीश माहेश्वरी, श्री रामचन्द्र केशरवानी (न्यासी), श्री डी. एन. चौबे (कार्यालय प्रभारी), श्री राजू चौबे एवं श्री गुड्डा सेनी

साहित्य सरस्वती परिवार
परमपिता परमात्मा से
प्रार्थना करता है कि हमारा
भारत देश और पूरा विश्व
कोरोना मुक्त हो ।
स्वस्थ हो । सुखी हो



अध्यक्ष

के.के. सिलाकारी (एड.)



सचिव

पं. शुक्देव प्रसाद तिवारी

आलेख

ग़ज़ल का दूसरा किनारा : डॉ. विजय महादेव गाडे

नवगीत, दोहा, मुक्तक और ग़ज़ल विधा के सशक्त हस्ताक्षर पं. निरसोहन गुरु 'नगर श्री' की रचना 'ग़ज़ल का दूसरा किनारा' प्राप्त हुई। 2003 सन् में प्रकाशित यह रचना अपनी अहमियत रखती है। वैसे 'ग़ज़ल के छिलके' पर हमने पहले ही लिखा था, यह रचना इसकी पूर्ववर्ती रचना है। इस रचना में कुल 55 ग़ज़लें शामिल हैं। मंगलाचरण भी ग़ज़ल में ही लिखा हुआ है जिसके माध्यम से गुरु ने माता सरस्वती की आराधना की है। मंगलाचरण में कवि लिखते हैं-

काम कीचड़ आँख में न आ सके
ज्ञान का काजल लगादे शारदे।
मौह का कानन दुखी न कर सके
राम का सा मन बना दे शारदे।। (पृ. 5)

वैसे ग़ज़ल, उसका आगाज, उसके तत्त्व इस पर अब तक इतना लिखा जा चुका है कि इसे बार-बार दोहराना अच्छा नहीं लगता। केवल एक ही बात बताकर हम आगे जाना चाहते हैं। मूलरूपेण अरबी-फारसी की यह विधा दसखनी भाषा के द्वारा हिन्दुस्तान में अवतरित हुई और अब यह विधा सारे भारतीय भाषाओं की विधा बन चुकी है। पहला ग़ज़लगी कौन है इस पर भी विवाद चलता है और भविष्य में भी चलता रहेगा। कोई कबीर, कोई शमशेर और कोई अमीर खुसरो को पहला ग़ज़लगी मानना है। हमने यहाँ अमीर खुसरो का जिक्र इसलिए किया कि बहुत सारे समीक्षक खुसरो को नहीं अपितु कबीर को पहला ग़ज़लगी मानते हैं और इस रचना का उदाहरण देते हैं-

सम्पर्क- F-1 सुधीर-सदनिक, 100 फुड रोड, अपॉबिट चेतना पेड्रोल पम्प, सौगती-416416, महावाष्ट. 9860271909

अप्रैल-जून 2020

D. P. K. KARADE

Attested

Lecturer in History,

Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya,

Bhilwadri Tal. plus Dist Sangli

जो भी बनता है परीने का लहू
तौदवालों के काम आता है। (पृ. 6)

'तौदवाला' शब्द से धूमिल के 'तीसरे आदमी' की याद आ जाती है।

मनुष्य के अरमान कभी खत्म नहीं होते या बहुत काम अरमान कामयाब होते हैं। उसकी प्यास सबैव प्यासी ही रहती है और वह असफलता के जाल में भटकने के लिए लचार एवं विवश हो जाता है-

एक असफलता के जाल में भटकती चीखती
कामया हर एक प्यासी देखकर लिखना पड़ा।
अभावों की आँधियों में शरथशती करपती
जिन्दगी जलती दिया सी देखकर लिखना पड़ा। (पृ. 6)

साहित्य के सामने सबसे बड़ी समस्या है पाठकगुण्यता की। एक ओर बहुत सारी किताबें प्रकाशित होती हैं लेकिन पढ़ने वाले नदारद हैं और दूसरी ओर पाठकों की यह शिकायत है कि अच्छी पुस्तकें बाजार में उपलब्ध नहीं हैं और इस कारण इस चक्रव्यूह से निकलना अब आसान नहीं है। एक ओर कई प्रकाशक ऐसे भी हैं कि जो लेखक से पैसा लेकर उसकी किताबें छापते हैं और खुद मालामाल हो जाते हैं। लेकिन संभो प्रकाशक ऐसे नहीं होते जिसे खुद हमने अनुभव किया है। इसलिए ग़ज़लगी का दावा ग़लत प्रतीत नहीं होता-

गीत विज्ञापन दरों में छप रहे हैं
इस तरह साहित्य में हम खप रहे हैं।
किसी दिन तो करेगी सम्मान दुनिया
उसी दिन के लिए माला जप रहे हैं। (पृ. 7)

आम आदमी की ओर कोई भी नहीं देखता और न उसकी पूछताछ की जाती है। समाज का 'ख़ास' वर्ग 'आम' आदमी की ओर कहीं ध्यान दे पाता है जिससे कुपित होकर कवि लिखता है-

कभी डमरू तो कभी मुरली रहे है
एक ऊहापोह में हम जी रहे है।
वही महफिल में हमें नीचा दिखाती
जो हमारे लिए श्री या जी रहे है। (पृ. 8)

इस सर्वसाधारण आदमी के अनेक चित्र विवेच्य रचनाकार ने अपनी ग़ज़लों में खोचे हैं-
मार महँगई की ख़ाकर सपने
दुकड़े-दुकड़े दिखाई देते हैं।
मेरे मत से पूछ एक जैसे ही
सब के दुखड़े दिखाई देते हैं। (पृ. 8)

अदब का दायरा विस्तृत होता हुआ दिखाई देता है इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन वर्तमान साहित्यिक दायरा गुट बाजी से त्रस्त है। किसी एक तथाकथित प्रसिद्ध समीक्षक को पकड़कर उसका दामन थामकर, साम, दाम, दंड, भेद आदि में से किसी एक नीति का उपयोग करते हुए उसकी शक्ति की जाती है और वह आपके रतौरत फर्श से अर्श पर लेकर जाता है। वैसे यह बात कड़वी या कटु प्रतीत होगी परन्तु यही वर्तमान सच्चाई है जिसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता और उस रचनामध्यम समीक्षक की मदद से बहुत रचनाकार अब खुद को राहनशाह मानते हैं परन्तु सच्चाई अलग ही होती है-

कहने को ही स्वच्छन्द है मेरे शहर के लोग
गुट बन्दियों में बन्द हैं मेरे शहर के लोग।
सरगमियों में डूबे हैं साहित्य की जब से
कुछ छन्द कुछ छल छन्द हैं मेरे शहर के लोग।
लघु और गुरु का इन्हें अन्तर नहीं पता
इस दर्जा अक्ल मन्द हैं मेरे शहर के लोग। (पृ. 9)

कभी हमारा देश कृषि प्रधान था, अब वह कुसीप्रधान देश हुआ है। राजनीति ने जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को ग्रस लिया है। राजनीति की

19-20

दूर और नज़दीक से

डॉ. अमरसिंह वधान



संपादिका
डॉ. सुनीता शर्मा

दूर और नज़दीक से

संपादिका
डॉ. सुनीता शर्मा

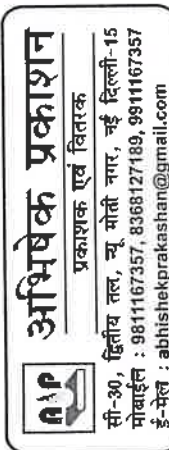


नाम : डॉ. अमरसिंह वधान, प्रोफेसर एमएडिस्, डी.लिट्
जन्म : 14 जुलाई 1947 (अमृतसर, पंजाब)
मातृभाषा : पंजाबी
शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति), पी-एच.डी., डी.लिट्, डी.
यू., डी.एल., पी.जी.डी.सी.टी., सी.सी.जी.
अध्ययन अनुभव : 40 वर्ष
शोध कार्य : पी-एच.डी. (समकालीन हिन्दी कहानी), डी.लिट् (ब्यवहार
विज्ञान) लघु शोध प्रबंध (निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में वस्तु और
शिल्प)

प्रकाशित मौलिक ग्रंथ : 21
प्रकाशित संपादित ग्रंथ : 24
प्रकाशित अनुवित ग्रंथ : 20
शोध निबंध (सह-निबंधक) : 15 पी-एच.डी., 12 एम. फिल., 4 डी.
लिट् डॉ. वधान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 5 एम. फिल., 7 पी-एच.
डी. शोध प्रबंध प्रस्तुत, 10 आलोचना पुस्तकें एवं 4 पत्रिका विशेषक
प्रकाशित

विशिष्ट सम्मान एवं पुरस्कार : पाँच दर्जन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार
संप्रति : वाइस-चांसलर, आइडोक्स इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी लंदन, केन्द्र-
सतरा (महाराष्ट्र)

संपर्क : 3150, सेक्टर 24-डी, चण्डीगढ़-160023
फ़ोन : 09876301085
ई-मेल : aswadhan@gmail.com



ISBN : 978-81-8390-296-0



9 788183 902960

मूल्य : ₹ 1000/-

ATTESTED

D. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Rhitawadi Tal Palus Dist Sangli

दूर और नज़दीक से
डॉ. अमरसिंह वधान

संपादक

डॉ. सुनीता शर्मा



अभिषेक प्रकाशन

दिल्ली

भारत

(x)

पृ.सं.

| |
|-----------------------------|
| भाग-दो कृतित्व मूल्यांकन |
|-----------------------------|

| | | |
|---|--|------------|
| 'प्रकाश पुंज गुरु नानक देव'-एक मूल्यांकन : | | |
| | प्रो. मंजु रानी सिंह | 67 |
| 'प्रकाश पुंज गुरु नानक देव' : एक चरित महल : | | |
| | शास्त्रोपासक आचार्य डॉ. चन्द्रभूषण मिश्र | 74 |
| गुरु नानक वाणी का अद्भुत तात्त्विक विवेचन : | | |
| | डॉ. कृष्णलाल विश्नोई | 84 |
| तुलनात्मक साहित्य और शोध का अनुपम ग्रंथ : | | |
| | डॉ. शकुंतला कालरा | 92 |
| 'अनुभूति और विचार' कृति के बहाने : | | |
| | डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी | 99 |
| डॉ. वधान का साहित्यिक उद्घोष : | | |
| | प्रो. सुशील कुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु' | 106 |
| डॉ. अमरसिंह वधान का वैश्विक चिंतन | | |
| | प्रो. विजय कुमार वेदालंकार | 117 |
| डॉ. अमरसिंह वधान की साहित्य साधना : | डॉ. मंगल प्रसाद | 124 |
| डॉ. वधान की आलांचना दृष्टि : | डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय | 131 |
| भारतीयता के अन्वेषक : | डॉ. विजय महादेव गाडे | 137 |
| बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. वधान : | डॉ. सत्या उपाध्याय | 144 |
| एक यशस्वी साहित्यकार : | डॉ. नगेन्द्र कुमार मेहता 'भव्य' | 149 |
| संपादन कला के मर्मज्ञ डॉ. अमरसिंह वधान : | | |
| | डॉ. अर्चना आर्य | 153 |
| कहीं खत्म नहीं होती सृजनधर्मिता : | डॉ. अंजु दुआ जैमिनी | 160 |



- नाम : सुमनलता सक्सेना
 विरासत : पिता उर्दू के महारू शायर शाम मोहन लाल 'जिगर बरेलवी'
 जन्म तिथि : 19 जून 1936, उत्तर प्रदेश
 शिक्षा : मेरठ कॉलेज मेरठ से अंग्रेजी में एम.ए., बी.ए. में अंग्रेजी-हिन्दी व चित्रकला, उर्दू की भी सामान्य जानकारी।
 लेखन : 14 वर्ष की आयु से आरम्भ, शुरू में कई कविताओं का लेख आदि का प्रकाशन। 2009 में एक पुस्तक (कविता एवं गजल संग्रह) 'चाँद कवनार का पेड़ और तुम' प्रकाशित जो आम पाठकों एवं लेखकों, बुद्धिजीवियों के भी द्वारा बहुत पसंद की गई। उर्दू में गजल जो हिन्दी लिपि में कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। 'हंस' आदि में लेख। दूसरी पुस्तक हिन्दी में 'सात रंग का इन्द्रधनुष' शीर्षक से वर्ष 2014 सितम्बर में प्रकाशित, यह भी पाठक, लेखक बहुत पसंद कर रहे हैं। लेखन अभी भी चल रहा है। तीसरी पुस्तक 'संकलित कहानियाँ' शीर्षक से 2019 में प्रकाशित। 'आजकल' में कवितायें, 'नया ज्ञानोदय' में गजल, 'साहित्य अमृत' में कहानी प्रकाशित।
 सम्प्रति : स्वतंत्र लेखनी।
 सम्पर्क पता : 01 नं. बर्च कोर्ट, निखाना कॉन्ट्री, साउथ सिटी-2 गुरुग्राम-122015, हरियाणा।

गिना प्रकाशन
 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरि.)
 मो. 9466532152, 8708822674
 Email : ginapkt22@gmail.com

मूल्य : 50/-

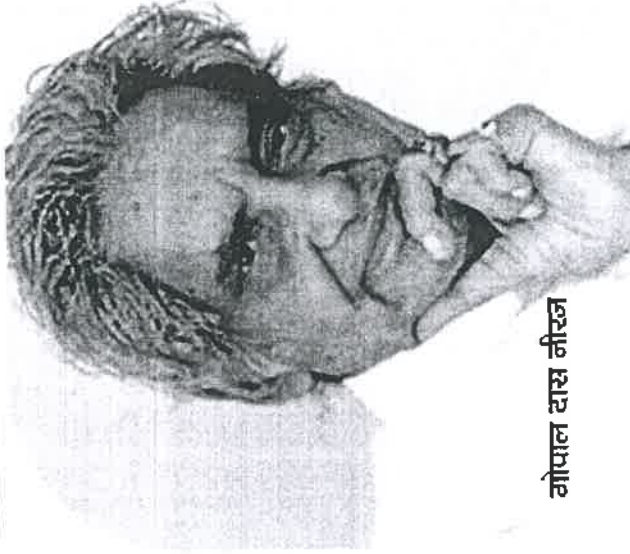


Impact Factor
3.478

ISSN : 2395-7115

अंतर्राष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

बोहल शोध मञ्जूषा



अतिथि सम्पादिका :
सुमनलता सक्सेना
84 वर्षीय नीरज जी की प्रथम शिष्या

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

मोपाल दास नीरज

नीरज एक अनोखा व्यक्तित्व
विशेषांक

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी रजि.
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)



ATTESTED
 D. P. KHARADE
 Lecturer in History,
 Chitale Mahavidyalaya
 Dist Sangli,
 Tal Pains

ISSN - 2395-7115



मूल्य : 50/-

स्व. चौ. गुगनराम सिंहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीता देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

JANUARY 2019

ISSN : 2395-7115

| | |
|-------|--|
| पृष्ठ | |
| 6-7 | |
| 8-11 | |
| 12-15 | |
| 16-21 | |
| 22-25 | |
| 26-28 | |
| 29-31 | |
| 32-36 | |
| 37-39 | |
| 40-41 | |
| 42-45 | |
| 46-47 | |
| 50-51 | |
| 52-55 | |
| 56-57 | |
| 58-61 | |
| 62-66 | |

प्रेरणा :
चौ. एम. सिंहाग

प्रधान सम्पादक :
डॉ. रामफल दलाल

अतिथि सम्पादिका :
श्रीमती सुमनलता स्वसेना
(84 वर्षीय नीरज जी की प्रथम विधवा)

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिंहाग एडवोकेट

सह सम्पादिका :
डॉ. सुरीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बसोवाल
विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :
समुद्र सिंह



प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुरना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-12021 (हरियाणा)

बोहल शोध मञ्जूषा

नीरज एक अनोखा व्यक्तिगत विशेषांक

जनवरी 2019 (2)

पृष्ठ 2

193



विश्वभर का आयना - नीरज की पाती

गोपालदास सर्वेका 'नीरज' यह नाम किसी भी परिवय का आब मोहताज नहीं है। नीरज आज हमारे बीच में है।
है लेकिन यह सच्चाई स्वीकार करने के लिए अब भी मन तैयार नहीं है क्योंकि खुद कभी नीरज ने ही कहा था -
"मेरा हर शेर है अखर मेरी जिन्दगी तस्वीर
देखने वालों ने देखा है हर लपज में मुझे।"

नीरज के नाम पर तीस से अधिक काव्यसंकलन हैं। उनके साहित्य पर शोध करते समय हमने इन सय पर
कम-अधिक मात्रा में अनुसंधान किया था किन्तु इनकी विवेच्य रचना 'नीरज की पाती' ने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया,
लिहाजा इस संकलन पर लेखन करते समय हमें प्रसन्नता महसूस हो रही है। मूलतः इस काव्य संकलन की आत्मा भी
उनका मानवतावाद है। नीरज की पाती सन 1958 में प्रकाशित काव्यकृति है लेकिन इससे पूर्व सन 1956 में उनकी और
एक रचना 'सिख-लिख भगत पाती' प्रकाशित हुई थी। इसी काव्यसंकलन की रचनाएँ बाद में 'नीरज की पाती' में भी
हमने नजर आती हैं।

इस काव्यकृति के प्रारंभ में लगभग 24 पंक्तियों 'दो शब्द' भी है जिसके पहले अनुच्छेद में नीरज ने लिखा है -
"प्रस्तुत संग्रह की पातियाँ सय समय पर भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं और वे पर्याप्त लोकप्रिय भी
हुई हैं इसलिए यहाँ इनके शिष्य में लंबी चौड़ी सूचिका देने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती। इस संग्रह के आरंभ
की कुछ पातियों में हिन्दी के लिए सर्वथा नवीन मने उर्दू के एक छंद का प्रयोग किया है। इस छंद का बजन हिन्दी के
प्रचलित छंदों के समत मात्राओं पर आधारित न होकर लय (मिटर) पर निर्भर रहता है। इसलिए संग्रह उर्दू छंद योजना
से सर्वथा अतिमूल्य पाठकों को इस में दोष दिखाई दे किन्तु ऐसी बात नहीं है।" प्रारंभ में नीरज अपना परिचय इस प्रकार
देते हैं। -

"कौमोती से यह सियाही, यह धुओं यह काजल
उम सय बपनी इहें गीत बनाने में कटी
कौन साख़ मेरी औरों की नमी का मतलब
जिन्दगी कै थी, पर भित्त बंधाने में कटी।"

इन पंक्तियों पर निश्चित ही 'साहिर' तुषियानवी का प्रभाव दिखाई देता है -
"आह ! वे गारे हलाकत ये दिए का महशस
उम अपनी इन्ही तरीक मकानों में कटी।"

उम अपनी इन्ही तरीक मकानों में कटी।
जिन्दगी फिरसे-बहिस की पुरानी तकसीर
इक हकीकत थी मगर बंद फरसानों में कटी।"

इस संकलन की प्रथम पाठी में नीरज अपनी प्रियतमा को संबोधित करते हुए लिखते हैं -
"इसलिए आज तुझे आखिरी खत और लिख दूँ
आज मैं बग के दरिया में उतर जाऊँगा
गोरी-गोहरे-सी तेरी सन्दरी बौहों की कसम
लौट आख तो तुझे चौंद नया लाऊँगा।"

कवि गालिब की छंद पर आग के दरिया में उतर जाने की बात करना है लेकिन उसके ईद-गिद-गिद को परिवेश
है उसे यह मूल नहीं पाता इसलिए समाज के वंचित लोगों की वेदना उनकी पाती से अनायास उभर आती है -

बोहल शोध मंजूषा
नीरज एक अनोखा व्यक्तित्व विशेषांक
जनवरी 2019 (46)

विश्वभर का आयना - नीरज की पाती
संदर्भ सूची
1. वाचस्पति गोशीला, भारतीय दर्शन, 1983, इलाहाबाद : लोक भारतीय प्रकाशन पृ. 17
2. नीरज, चर्च दिया है, 1986, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 115
3. नीरज, कारवा गुजर गया, 1985, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 65
4. वही पृ. 42
5. नीरज, चर्च दिया है, 1986, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 148
6. नीरज, प्राणगीत, 1986, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 5
7. नीरज, प्राणगीत सूचिका से, 1985, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 8
8. नीरज, प्राणगीत, 1986, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 11
9. नीरज, दो गीत, 1988, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 29
10. नीरज, चर्च दिया है, 1986, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 4
11. नीरज, प्राणगीत, 1985, दिल्ली : आत्मराम एण्ड संस, पृ. 6

-चरमजीत कौर शोधाधी
भाषा विज्ञान और पंजाबी, कोशकरी विभा,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)
फोन नं. 94781-64105

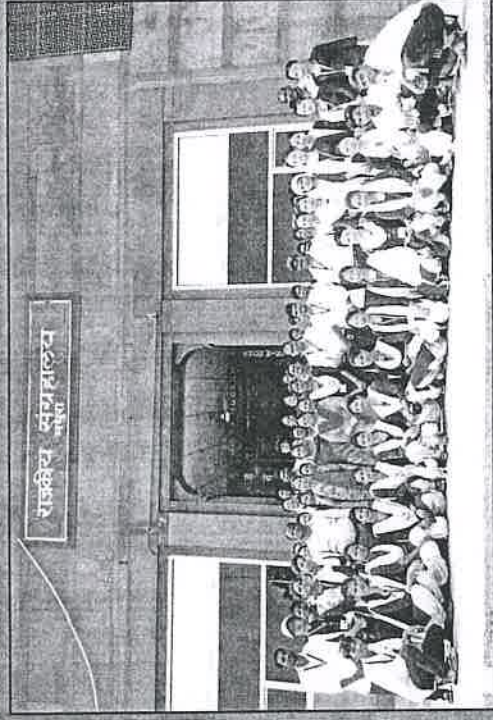
ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhifawadi Tal Palus Dist Sangli

बोहल शोध मंजूषा
नीरज एक अनोखा व्यक्तित्व विशेषांक
जनवरी 2019 (46)

शैक्षिक उन्मील

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका
खंड-3, अंक-1; कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसम्बर, 2019



मुद्रक र पीटर्स प्रेस तथा प्रकाशक प्रो. बीना राधा, अध्यक्षक शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद, दिल्ली
आपका लेखक प्रो. मुदुण स्वामी, 20/08 अनुसंधान, कानपुर, उत्तर प्रदेश-202004 से मुद्रित तथा प्रकाशन स्व. केंद्रीय हिंदी संस्थान,
दिल्ली संस्थान मार्ग, आगरा-282005 (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित; समादक-प्रो. बीना राधा

U. P. KHARADE
Lecturer in History

Sabhasab Chitale Mahavidyalaya
Chilawadi Tal Patas Dist Satna



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

महामना मदन मोहन मालवीय

जन्म : 25 दिसंबर, 1861

निधन : 12 नवंबर, 1946

- सच्चा तप यह है कि अपने भाइयों के ताप से तप जाय, सच्चा यज्ञ यह है कि जिसमें अपने स्वार्थ की आहुति दी जाए, सच्चा दान यह है कि परमार्थ किया जाए और सच्ची सेवा यह कि उसके दुखी जीवों की सहायता की जाए। परमात्मा सबके हृदय में व्याप्त है। हम जितने प्राणियों को प्रसन्न कर सकेंगे उतने ही गुना हम ईश्वर को प्रसन्न करेंगे। यह सच्चा धर्म देश भक्ति द्वारा प्राप्त है।
- देश भक्ति का संचार हमारे हृदय से स्वार्थ को निकाल कर फेंक देगा। हम आदरदर्शी, स्वार्थी और खुशामदियों की तरह ऐसे काम कदापि न करेंगे जिनसे देश वासियों को हानि पहुँचे बल्कि असंख्य कष्ट उठते हुए वही करेंगे जिससे देश का भला हो, निर्धन धनवान बनें, निर्बल बलवान हों और मूर्ख भी बुद्धिमान हो जायें। प्रत्येक प्रकार के सामाजिक दुःख मिटें, दुर्भिक्ष आदि विपत्तियां दूर होकर लाखों बिलबिलाती हुई आत्माओं को सुख पहुँचे। देश भक्ति द्वारा इतने धर्मों का संपादन होता हुआ देखकर भी यदि कोई धर्म के आगे देश भक्ति को कुछ नहीं समझता तो उस पुरुष को जान लीजिए कि वह धर्म के तत्व को नहीं पहचानता। वह धर्म-धर्म गा रहा है किन्तु यह नहीं समझता कि धर्म क्या वस्तु है?

मोहन दास कर्मचंद गांधी

जन्म : 2 अक्टूबर, 1869

निधन : 30 जनवरी, 1948

- मनुष्य के लिए जितनी आवश्यकता हवा, पानी और अन्न की है उतनी ही कसरत की भी है।
- जिस प्रकार खुराक हमारे हड्डी मांस के लिए और मन के लिए भी जरूरी है उसी प्रकार कसरत भी शरीर और मन के लिए आवश्यक है।
- यदि शरीर को व्यायाम न मिले तो वह बीमार होगा और मन को भी व्यायाम न मिले तो वह शिथिल हो जाएगा।
- हमारे फकीर और संत बहुत तन्दुरुस्त होते हैं। इसके अन्तर्गत कारणों में एक कारण यह भी है कि वे गाड़ी, घोड़े, वाहनों आदि का उपयोग नहीं करते। वे अपनी सारी मुसाफिरी पैदल ही करते हैं।
- जो व्यायाम मन और शरीर-दोनों को साथ ही साथ और धीरे-धीरे सुशिक्षित बनाते चलते हैं वे ही सच्चे व्यायाम हैं। उन्हें करने वाला मनुष्य ही स्वस्थ रह सकता है और यह मनुष्य केवल किसान ही हो सकता है।

पंजीयन संख्या/RNI No.—UP/HIN/2017/74904

ISSN - 2581-687X

शैक्षिक उन्मेष

शिक्षा अगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका
खंड-3, अंक-1, कार्तिक-पौष, 2076/असहृदय-विचार, 2019

प्रधान संपादक

प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : nkpaudye65@gmail.com

संपादक-प्रो. बीना शर्मा

अध्यापक शिक्षा विभाग
ई-मेल : dr.beenasharma@gmail.com

रह संपादक-चंद्रकांत कोठे
सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ई-मेल : kothec2009@gmail.com

संपादक मंडल

प्रो. कैलाश चन्द्र बरिष्ठ
अधिवक्ता-शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशनल
इंस्टीट्यूट, आगरा

ई-मेल : kevalishikha@gmail.com

प्रो. कल्पवृक्ष पांडेय

पूर्व अध्यक्ष एवं डीन (शिक्षा संकाय)
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
ई-मेल : p.kalpashikha@gmail.com

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर

नेट (शिक्षा), पी-एच. डी., अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
म.ग.अ. वि. वि. वार्ड
ई-मेल : gopalhakur1@gmail.com

प्रो. हरिशंकर

विभागाध्यक्ष, दूरस्थ शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : shankaruk30@gmail.com

प्रो. अरविंद झा

डीन, स्कूल ऑफ एजुकेशन
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
ई-मेल : drarbindjha1@gmail.com

संरक्षक

डॉ. कमल किशोर गोयनका
उपप्राध्यापक, केंद्रीय हिंदी विभाग, नंदल, आगरा
ई-मेल : kkgoyanka@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. मधुरेश्वर पारीक

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
ई-मेल : m.pareek1955@gmail.com

प्रो. आर. पी. पाठक

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
श्री लाल महदुर पाल्की राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

ई-मेल : pathakrahman@gmail.com

प्रो. अरविंद कुमार पांडेय

डीन, फेकल्टी ऑफ एजुकेशन
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
ई-मेल : arvindkumarpankaj62@gmail.com

डॉ. अशोक सिंघाना

प्रारम्भ-श्री अमर्षेण स्वातंत्र्योत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
सी.टी.ई., जयपुर

ई-मेल : siddhantshok@gmail.com

डॉ. नीरा नरंग

एसोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ई-मेल : niranang261@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार- डॉ. स्वर्ण अनिल

केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swarnanil16@gmail.com



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अध्यापक शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक - अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संपादकीय कार्यालय - अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा - 282005
फोन/फैक्स - 0562-2530684
ई-मेल : departmentofteacheredu0@gmail.com

सदस्यता शुल्क -
व्यक्तिगत - प्रति अंक ₹ 40/-, वार्षिक - ₹ 150/-
संस्थागत - वार्षिक शुल्क ₹ 250/-
(डक व्यय प्रति अंक ₹ 35/- तथा वार्षिक
₹ 100/- अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10, वार्षिक \$ 40

कला एवं परिकल्पना - डॉ. विजय एम. डोरे

मुद्रक -
दि प्रिंट्स होम, 20/108, यमुना किनारा, बेलनगंज
आगरा-282004

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत
होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक
की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व - सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

शैक्षिक उन्मेष कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019 | 2

अनुक्रम

| क्र.सं. | आलेख का शीर्षक | लेखक का नाम | पृ.सं. |
|---------|----------------|-------------|--------|
|---------|----------------|-------------|--------|

- प्रधान संपादक की कलम से..... प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय 5-14
- 1. गाँधी का शिक्षा-दर्शन और विनोद कुमार पाल, 15-28
आदर्श नागरिक-निर्माण गोपाल कृष्ण ठाकुर
- ✓ 2. जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन विजय महादेव गाडे 29-35
- 3. पं. मदन मोहन मालवीय मुदित राठोड 36-48
- 4. भारतीय शिक्षा व्यवस्था और गंगा कोइरी 49-56
सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
- 5. भारत का नव निर्माण और ममता सिंह 57-63
स्वामी विवेकानन्द
- 6. जिददु कृष्णमूर्ति विकास बैनीवाल 64-72
- 7. गिजुभाई का शैक्षिक चिंतन इस्पाक अली 73-79
- 8. प्रमुख भारतीय शिक्षाशास्त्री सरिता सुराणा 80-89
- 9. महामना मालवीय जी के शिक्षा रमेश तिवारी 90-98
संबंधी विचार
- 10. काका कालेलकर की शिक्षा पद्धति रेखा 99-105
- 11. भारतीय शिक्षा के प्रणेता : स्वामी दिग्विजय शर्मा 106-117
दयानन्द सरस्वती
- 12. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा चंद्रकांत कोटे, 118-128
संबंधी विचार किरमिरे सुधाकर

शैक्षिक उन्मेष

कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019 | 3

जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन

—विजय महादेव गाडे

भारत में शिक्षाविदों की कमी नहीं है। इन शिक्षाशास्त्रियों में एक नाम है जे. कृष्णमूर्ति। बीसवीं शती के एक चिंतक, विचारक एवं शिक्षाशास्त्री के रूप में कृष्णमूर्ति का नाम सम्मान सहित लिया जाता है। उनके नाम के साथ एक रहस्य और गूढ़मन जुड़ा हुआ है और जब तक हम कृष्णमूर्ति के नज़दीक नहीं जाते उनकी बातें हमारी समझ में नहीं आती। शिओसाफिकल सोसायटी के संस्कार लेकर कृष्णमूर्ति ने सन् 1929 से अपने जीवन का सफर नए सिरे से शुरू किया। अपना खुद का दर्शन विकसित करते हुए वे जग के समक्ष एक दार्शनिक रूप में प्रस्तुत हुए। कृष्णमूर्ति एक ऐसे दार्शनिक हैं, जिन्होंने आत्मज्ञान पर अधिक बल दिया है।

सन् 1912 में कृष्णमूर्ति ने शिक्षणशास्त्र के सदस्य में अपनी पहली रचना लिखी उस समय उनकी उम्र थी महज 19 साल और पुस्तक का नाम था—'एजुकेशन एज सर्विस'। इस रचना में उन्होंने सर्वप्रथम शिक्षा पर अपने विचार रखे हैं। वे लिखते हैं— 'बचपन में पाठशाला में पढ़ते समय मैंने जो अनुभव प्राप्त किए, उनकी स्मृतियों पर आधारित यह रचना है। शिक्षा प्रणालियों में जो सही है उस पर मैं कुछ नहीं कहता लेकिन जो अयोग्य या अनुचित है उस पर मैं अपनी बात रखना चाहता हूँ। शिक्षा है जो मानव जाति के बीच बंधुता को बढ़ावा दे न कि अलगपन। जाति, धर्म, वंश जैसे भेद निर्माण न हो। मेरी परंपरा ही सही है इस गलतफहमी में कोई भी न रहे। अपना देश प्रेम या राष्ट्रवाद हमें और देशों के प्रति द्वेष जगाला है यह शिक्षा नहीं है। राष्ट्रप्रेम की अपाली सीढ़ी विश्वप्रेम है।'। इस कथन से यही स्पष्ट होता है कि 19 वर्ष की आयु में उनके विचार कितने गहन एवं गंभीर थे।

उपरोक्त रचना के अलावा कृष्णमूर्ति ने और बारह पुस्तकें शिक्षा को लेकर लिखी हैं जिनके रचना-द पर्यज ऑफ 'एजुकेशन' (1930), 'एजुकेशन एंड सिनिफिकंस ऑफ लाईफ' (1953), 'ऑन लॉनिंग' (1958), 'दिस सेंटर ऑफ कल्चर' (1964), 'टैक्स टू अमरिकन स्टूडेंट्स' (1970), 'यू आर द वर्ल्ड' (1972), 'कृष्णमूर्ति ऑन एजुकेशन' (1974), 'लाईफ अहेड' (1975), 'विगिनरिज ऑफ लॉनिंग' (1974), 'लेटर्स टू द स्कूल्स भाग 1' (1981), 'लेटर्स टू द स्कूल्स भाग 2' (1985), 'थिंग ऑफ द माईंड डेप्लॉयज विथ जे. कृष्णमूर्ति' (1988) आदि। इन सभी रचनाओं के माध्यम से कृष्णमूर्ति ने अपने शिक्षा विषयक चिंतन को प्रस्तुत किया है। 1925 से

शैक्षिक उन्मेष

कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019 | 29

10. सिंह, राम जी (2010), गांधी और भावी विश्वव्यवस्था, नई दिल्ली, कॉमनवैलथ पब्लिशर्स, पृष्ठ 6
11. तिवारी, वि.प्र. (2009), कर्मयोगी महात्मा, महात्मा गांधी सहस्राब्दी का महानायक, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, पृष्ठ 16
12. पुनियाजी, राम (2008), गांधी की हत्या : दूसरी बार, नई दिल्ली, साहित्य उपक्रम, पृष्ठ 1
13. नायर, सुशीला (2006), बापू की कारावास कहानी, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, पृष्ठ 303
14. रत्नू, के.के. (2002), गांधी दर्शन : नई सदी के बदलते संदर्भ, जयपुर, बुक एनक्लेव, पृष्ठ 4
15. कुमार, जैनेन्द्र (1996), अकाल पुरुष : गांधी, नई दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 63
16. देवकी नंदन (1978), गांधी चरित, वाराणसी, श्रीकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 319

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitelo Mahavidyalaya
Chitawade Tal. Palas. Dist. Sangli

शैक्षिक उन्मेष

28 | कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019

19-20

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्॥ ऋ० 9/८६/२



ISSN : 2395-7115

APRIL-JUNE 2019

Vol. 9, Issue 2

Impact Factor
3.478

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY REFEREED RESEARCH JOURNAL



ATTESTED

Editor

Dr. Naresh Sihag
Advocate

D. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babashah Chitab Mazandiyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021



Vol 9 Issue 2

बोहल शोध मंजूषा परिवार

—: मानद संरक्षक :-

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरुनानक वि.वि. अमृतसर

—: विषय विशेषज्ञ समिति :-

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा धारवाड़

डॉ. रश्मि बजाज
अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
वैश्य (पी.जी.) महाविद्यालय, भिवानी

डॉ. काकानि श्रीकृष्ण
आचार्य, नागार्जुन वि.वि.
नागार्जुन नगर, आ.प्रदेश

डॉ. जयभगवान शर्मा
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
हरियाणा सरकार

—: परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति :-

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व जि.शि.अधिकारी, च. दादरी

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

श्री जयलाल स्वामी
गोपी (भिवानी)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. रजनी बाला
हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. बिमलेश ए. तेवतिया
प्राचार्य, एस.जी. पटेल आर्ट्स एण्ड पी.के. देसाई
कॉमर्स कॉलेज निझर, तापी, गुजरात

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली, उ.प्र.

डॉ. रामप्रवेश रजक
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.केरल

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. अशोक कुमार मंगलेश
निदेशक, भारतीय अनुवाद परिषद
चरखी दादरी (हरियाणा)

डॉ. मोनिका शर्मा
हिन्दी महाविद्यालय,
हैदराबाद।

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.
सम्पूर्ण बोहल शोध मंत्रजूषा परिवार अवैतनिक है।

डॉ. आशा जी.
सरकारी महिला कॉलेज
तिरुवन्तपुरम (केरल)

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोल्हापुर (महाराष्ट्र)

| | | |
|--|---------------------------------------|--------------------|
| 24. HUMAN RIGHTS AND NGOs WITH SPECIAL REFERENCE TO WOMEN | Jyotsna Rathore | 93-96 |
| 25. E-Governance initiatives in Maharashtra (India) : Importance and Problems | Ashok Kumar Dr. O.P. Bohara | 97-102 |
| 26. Feminist Criticism of Social Values: A Case Study of Gender Politics in the 'Bluebeard' Tale | Parmod kumar | 102-104 |
| 27. Mansamangal in Rarh Region of West Bengal | Barnali Dhibar | 105-107 |
| 28. हमारे देश में किसानों की स्थिति | डॉ. लता एस. पाटील | 108-109 |
| 29. भ्रमरगीत एक पुनःपाठ | डॉ. बाबू के विश्वनाथ | 110-112 |
| 30. धार्मिकशिक्षायाः महत्त्वस्य प्राचीनार्वाचीनविचाराः | Jayanta Nuniya | 113-120 |
| 31. ईजी. आशा शर्मा की बाल कविताओं में मनोरंजन एवं शिक्षा | संजय कुमार डॉ. विजय हिंदूराव पाटील | 121-124 |
| 32. 'हवन' : सुषम बेदी की कलम से | डॉ. देव्यानी महिड़ा | 125-126 |
| 33. 'प्रियप्रवास' में माता यशोदा का स्वरूप | सुमन रानी | |
| 34. अमरकांत की उपन्यास में धार्मिक समस्याएँ | प्रो. मन्जुनाथ एन. अंबिग | 127-130 |
| 35. 'जमुनी' में ग्रामीण जीवन का चित्रण. | पी. गायत्री | 131-132 |
| 36. फणीश्वरनाथ रेणु कृत 'मैला आँचल' में वर्णित सामाजिक चेतना | बी. कल्पना | 133-138 |
| 37. नई पीढ़ी और भारतीय संस्कृति | रीना अग्रवाल | 139-140 |
| 38. इक्कीसवीं सदी के उपन्यास और आदिवासी स्त्रियों की स्थिति | संजिता एम.बी. सुमन | 141-146 147-150 |
| 39. प्रो. राधे मोहन राय एक कालजयी रचनाकार | डॉ. विजय महादेव गाडे | 151-153 |

सम

काल

में दि

लेक

विभि

यूर्ज

जो

की

है।

बढ़

को

सब

होग

ता

सि

यह



Web. : www.grngo.org
Impact Factor : 3.478

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April-June 2019 Page No. : 151- 153

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

प्रो. राधे मोहन राय एक कालजयी रचनाकार!

“कवि वही जो अकथनीय कहें, और सारी मुखरता के बीच मौन रहे!”

हमारे सन्मित्र डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट की रचना ‘राधे मोहन राय की साहित्य साधना’ प्राप्त हुई। कुल 138 पृष्ठों की यह रचना गीना प्रकाशन, भिवानी से सन 2018 में प्रकाशित हुई है। इस रचना के माध्यम से डॉ. नरेश सिहाग ने राधे मोहन राय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर रोशनी डालने का एक सफल प्रयास किया है जो निःसंदेह प्रशंसनीय है। रचनाकार ने इस कृति को 9 विभागों में विभाजित किया है।

प्रो. राधे मोहन राय तीन पीढ़ी और तीन भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को संक्षेप में समेटने का प्रयास रचनाकार ने किया है। लिहाजा सर्वप्रथम वे हमारी बधाई के काबिल है। पेशे से एडवोकेट होने के कारण इनके लेखन में काफी संक्षिप्तता है और इसलिए यह रचना विवेच्य रचनाकार राय के सन्दर्भ में बहुत कुछ कहती है। इस रचना की भूमिका डॉ. कैलाशचंद्र शर्मा ‘शंकी’ ने लिखी है जो इस पुस्तक का परिचय देती है। राधे मोहन राय के साहित्य पर डॉ. नरेश सिहाग ने प्रथम एम. फिल. और बाद में पीएच. डी. की उपाधी प्राप्त की है। इसलिए प्रो. राय की लेखन का दायरा कहाँ तक है इसकी इन्हें अच्छी जानकारी है। ‘मन की बात’ लिखकर डॉ. नरेश ने अपना मंतव्य प्रस्तुत किया है। प्रो. राय का रचना फलक अत्यंत विस्तृत है और वह हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में फैला हुआ है। 38 से अधिक रचनाएँ इनके नाम पर दर्ज हैं जिसे हर कोई देख सकता है। अन्त में डॉ. सिहाग ने अपनी वेदना को वाणी देते हुए कहा है कि ‘प्रो. राय के साहित्य को वह स्थान नहीं मिल पाया जो मिलना चाहिए था।’

राधे मोहन राय ने कविता, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, समालोचना, संस्मरण, आध्यात्म, आत्मकथा, गजलें, नज्म और रूबाइयों भी लिखी हैं जिनका परिचय उनके व्यक्तित्व के द्वारा मिलता है। अनुवाद और सम्पादन के क्षेत्र में भी प्रो. राय ने अपना जौहर आजमाए हैं इसका भी हमें पता चलता है। करीब दो दर्जन पुरस्कारों से सम्मानित वह व्यक्तित्व आज भी हाशिए पर क्यों हैं? यह सवाल हमें भी बेचैन कर गया लिहाजा इस साहित्यिक पर लिखना हम अपनी फर्ज समझते हैं। यहाँ सर्वप्रथम हम एक बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि विवेच्य रचनाकार प्रो. राय और उनपर लेखन करने वाले डॉ. नरेश सिहाग दोनों पर हम अपने विचार रखनेवाले हैं। अगर इसमें कहीं असहमति भी दिखाई दे तो यह अपने-अपने दृष्टिकोण पर निर्भर है। इससे रचनाकार और समीक्षक की अहमियत कम नहीं होती।

बचपन से ही प्रो. राय को साहित्यिक विरासत मिली थी। घर में उर्दू-हिन्दी के रचनाकारों का आना जाना रहता था इसलिए इनका बचपन इसी माहोल में बीत गया। पिता और दादा उर्दू के विख्यात एवं प्रसिद्ध रचनाकार रहे इसलिए इन्हें लेखकीय परिवेश की पहचान बहुत जल्द मिली।

बरेली और मेरठ में इनका पूर्वजीवन बीत गया इसलिए उस माटी के संस्कार उन्हें मिले। इन दिनों में मंचीय कविता का काफी प्रभाव था। एक से बढ़कर एक कवियों को उन्होंने सुना और वे लिखने के लिए प्रेरित हुए किन्तु उनका लक्ष्य और उनकी मंजिल कोई और ही थी इसलिए प्रो. राय ने लिखा है—

“आकाश को छू भर लेना, लक्ष्य रहा मेरा!”

सन 1966 के बाद प्रो. राय ने लेखन से किनारा किया और वे अपनी सारस्वत साधना में लीन रहे।

प्रो. राय की साहित्य साधना की ओर जब हम देखते हैं तो एक ही बात सामने आती है और वह है ‘पर्सोना’ की अहमियत। पर्सोना आदमी के जीवन को निश्चित स्थान प्रदान करता है। उन्होंने लेखन से किनारा तो किया लेकिन इस

नूतनवाग्धारा
संकल्पक्रम
विक्रमनिरतः सिद्धि

ISSN 0976-092X

साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ (Peer Reviewed) पत्रिका

19-20

नूतनवाग्धारा नूतनवाग्धारा

अंक - 37, वर्ष : 12 (मार्च, 2019)

यह अंक.....
पूर्वोत्तर भारत से...

नूतनवाग्धारा

आग, जो शीतल करे, किंतु ठंडी न हो !!!

संपादक : डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

अतिथि संपादक : डॉ. अलखनिरंजन सहाय

APRIL 2019

Lecturer in History,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli



नूतनवाग्धारा, अंक : 37, वर्ष : 12 (मार्च, 2019)

(जनवरी 2008 से निरंतर प्रकाशित)

अनुक्रम

आवरण पृष्ठ : सामयिकी

द्वितीय आवरण पृष्ठ : अतीत का वर्तमान ✨ तृतीय आवरण पृष्ठ ; वर्तमान का भविष्य

(सामार-गूगल चित्र, फेसबुक, भारतीय भाषा अभियान)

संपादकीय : आग, जो शीतल करे, किंतु ठंडी न हो

शोधगमन

1. हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर भारत (मणिपुर के विशेष संदर्भ में) / डॉ. यशवंत सिंह / 11
2. भारतीय बहुलता के परिप्रेक्ष्य में पूर्वोत्तर की भाषाएँ / प्रो. हितेंद्र कुमार मिश्र / 15
- ✓ 3. मणिपुरी साहित्य : एक परिचय / डॉ. विजय महादेव गाडे / 19
4. खामति जनजाति की रामायण- 'लिक-चाउ-लामाड' में राम : एक अध्ययन / डॉ. मालविका शर्मा / 21
5. जनजातीय समाज एवं संस्कृति के आईने में 'खड' उपन्यास / डॉ. मिलन रानी जमातिया / 25
6. उत्तर भारत में प्रेरित संत थॉमस का प्रभाव / डॉ. रमा गुप्ता / 30
7. गोरिया गीतों की विशेषताएँ / डॉ. जय कौशल / 34
8. असम के लोकगीत / रिणु बॅरा / 39
9. पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विशेषता / युगल किशोर यादव / 42
10. कोंकबरक कविताओं में प्रकृति-चित्रण / डॉ. अंजना जमातिया / 44
11. भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक समन्वय और श्रीमंत शंकरदेव / डॉ. प्रदीप कुमार भारती / 48
12. समकालीन कोंकबरक कविताओं की विशेषताएँ / अनुराधा देबबर्मा / 50
13. असम के जनजातीय लोक-विश्वास में पशु-पक्षी / प्रशान्त लस्कर / 55
14. गालो दर्शन : सृष्टि के सार-तत्वों का अध्ययन / डॉ. तादाम रूती / 58
15. अहिंदी भाषी क्षेत्र असम में हिंदी साहित्य का रचनात्मक परिदृश्य / डॉ. सौम्य रंजन दास / 61
16. अरुणाचलप्रदेश के गालो समाज में स्त्री का अस्तित्व / मोर्जूम लोयी / 65
17. असम में वैष्णव भक्ति के प्रसार में शंकरदेव तथा अन्य कवियों का योगदान / दुलुमनि तालुकदार / 68
18. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी-विश्व और भारतीय संस्कृति / डॉ. प्रतिभा जी. येनेकर / 71
19. 'गिलिगडु' में चित्रित वृद्धों की समस्या / सुजिता पी. / 74
20. 'दावानल' में चित्रित पारिस्थितिकी संकट / फ़सीला एम. / 77

लोकरंग

1. नेपाली लोककथा- दो ईबी (दादी) / भवाड पेमा / 57

वार्तालाप

1. एक बातचीत, डॉ. रमानाथ त्रिपाठी के साथ... / डॉ. राहुल मिश्र / 80
2. वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. अतुल देबबर्मा का साक्षात्कार / डॉ. मिलन रानी जमातिया एवं डॉ. जय कौशल / 84

मणिपुरी साहित्य : एक परिचय

डॉ. विजय महादेव गाडे*

मणिपुरी भाषा को 'मैतीलोन' भी कहा जाता है। ग्रियर्सन ने इस भाषा को चीनी-तिब्बती परिवार के तिब्बती-बर्मी उप-परिवार की 'कूकि-चीन' शाखा में प्रमुख साहित्यिक भाषा माना है, तथा इसके समृद्ध साहित्य के आधार पर इस शाखा का नाम 'मैती-चिन' घोषित किया है। ग्रियर्सन का वर्गीकरण विवादास्पद है, किंतु मीतै भाषा रूढ़ हो गई है और हमारे मतानुसार इसमें शोध की आवश्यकता है। मीतै भाषा और लिपि तीसरी शती से प्रचलित रही है, इसलिए इस भाषा का आरंभ ईसा की तीसरी शताब्दी से माना जाता है। किंतु इस कालखंड का बहुत सा साहित्य अनुपलब्ध है। एक कथा के अनुसार आदिगुरु सिदबा ने सृष्टि-निर्माण के बाद अपने पुत्र सनाम-ही और पाखड्बा को मीतै भाषा और लिपि में शिक्षा दी थी। अतः मणिपुरी भाषा की व्युत्पत्ति सृष्टि के आदिकाल से मानी जाती है, किंतु यह दूसरा मत भी विवादास्पद है। 'मीतै मयेक' लिपि का प्रचलन 18वीं शताब्दी तक रहा और उसके स्थान पर बांग्ला-असमी लिपि को स्वीकृत किया गया।

मणिपुरी में प्राक्-ऐतिहासिक काल से साहित्य रचना हो रही है। प्राचीन मणिपुरी आज की मणिपुरी से सर्वथा भिन्न है। मध्यकालीन मणिपुरी का एक रूप संस्कृतनिष्ठ है, तो दूसरा विशुद्ध मणिपुरी माना जाता है। 1470 ई. में मणिपुर में विष्णु पूजा आरंभ हुई, जिसके कारण वैष्णव साहित्य का प्रचार एवं प्रसार हुआ। इसके फलस्वरूप संस्कृतनिष्ठ शैली में साहित्य सृजन होने लगा।

प्राचीन एवं मध्ययुगीन मणिपुरी साहित्य में लोकसाहित्य ही प्रधान साहित्य रहा है। लोकगीत, आख्यान काव्य, लोककथाओं की बहुतायत इस कालखंड में दिखाई देती है। 10वीं सदी की 'तुमित' काव्यधारा बहुत प्रसिद्ध है। सन् 663 में लांगोन कुरुबा नामक कवि हुए, जिनकी रचना 'चकपारोल' प्रसिद्ध है, जिसमें सृष्टि-निर्माण का वर्णन मिलता है। उससे भी पहले 33ई. में 'लाइसराफम' रचना का निर्माण हुआ, जिसमें पाखड्बा के राजदरबार का वर्णन किया गया है। 'नूमित काप्पा' नामक और एक रचना है, जिसका विवरण 'ततेडलोन' नामक ग्रंथ में उपलब्ध है। दूसरी भक्तिपरक रचना 'सनाल मोक' है, जो चंद्र देवता को संबोधित की गई है। 'खोइजल मोक' नामक रचना का विवरण 'लोइयुंबा सिन्योम', नामक ग्रंथ में मिलता है। नौका प्रतियोगिता का वर्णन करने वाली रचना 'हिजन हिराओ' सातवीं शती की मानी जाती है। 'लोइयुंबा सिन्योम', 'लोइना सिललेन' आदि रचनाओं का लेखन मंडिगोल नामक व्यक्ति ने किया था। इन्हें मणिपुर का पुराण कहा जाता है। मणिपुरी गद्य-साहित्य में 'शिवबु फडनबा लाइरिक' अर्थात् शिवजी से मिलन की

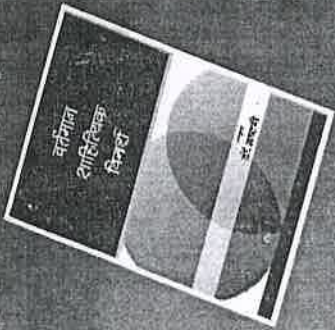
कथा है, जो आठवीं शताब्दी में लिखी गई तीसरी शताब्दी में लिखी गई रचना 'पोइरैतोन खूनथोकपा' महत्वपूर्ण गद्य-रचना है।

बारहवीं शती से लोकगाथाओं का फिर से प्रचलन होने लगा। 'मोहराड साइयोन या सायोन' में सात अवतारों की कहानियाँ हैं, जिन्हें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चित्रित किया गया है। इस रचना में 'खंबा-भोइवी' नामक अवतार की कथा-दुखांत है, किंतु इस पर मणिपुरी साहित्य में अनेक रचनाकारों ने लेखन करके इस कथा को प्रतिष्ठा दिलाई है। महाकवि हिजाम ने इसी कथा पर महाकाव्य लिखा है। निशान सिंह ने इस पर हिंदी में नाटक लिखा है। बारहवीं शती की दो उल्लेखनीय रचनाएँ हैं, 'अहोडलन' और 'निडथोलोल' जो लोकसाहित्य के अंतर्गत आती हैं, जिसमें शौर्य और वीरता का वर्णन है। 17वीं शताब्दी की रचना 'लैरोन' काव्यसंकलन है, जिसमें 50 कविताएँ हैं। 'मोईराड सायोन' काव्यसंकलन, 'पाओसा' लोकगाथा और 'पोब्यिरोन' 'सेकनिठ' 'पुदिल' आदि गद्य-रचनाएँ भी इस कालखंड से आज तक प्रचलित हैं।

इस साहित्यधारा में ऐतिहासिक एवं वंशावली गद्य-ग्रंथों की रचनाएँ भी हैं, जिनमें 'चैथरोल कुबांबा', 'चिडथोरोल लंबुबा', 'मोइराड निडथोएल लंबुआ', 'खुमन कडलैरोन', 'लुवाडलोन', 'अडोमलोन', 'चैडले' आदि रचनाएँ हैं, जिनमें मणिपुरी राजवंशों का चरित्र-चित्रण हुआ है।

मणिपुरी साहित्य की अवरुद्ध धारा बीसवीं सदी में प्रवर्धित हुई। ईस्वी सन् 1891 में अंग्रेजों के साथ मणिपुरी जनता का सशस्त्र

वर्तमान
साहित्यिक
विमर्श



डॉ. महजबी

शिक्षा : पी.एच-डी. (हिंदी) 2015, जामिया
मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
: एम.फिल. (हिंदी) 2005, जामिया
मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
: एम.ए. (हिंदी) 2002, दिल्ली

विश्वविद्यालय।

: एम.ए. (एजुकेशन) 2019, जामिया

मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली।

: बी.एड. 2007, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली 25

: बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी 2000, दिल्ली विश्व विद्यालय।

प्रकाशित रचनाएं : शोध दिशा, शोध समवाय, समकालीन साहित्य और अन्य पुस्तकों
एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेख और समीक्षाएं।

संप्रति : पोस्ट ग्रेजुएट टीचर हिंदी, जामिया गल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली। **ATTESTED**

मोबाइल : 9810899135

: mahjabijmi86@gmail.com

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संघटे

www.sahityasanchay.com
e-mail : sahtiyasanchay@gmail.com
Phone : 9871418244, 9136175560



19-20

वर्तमान
साहित्यिक
विमर्श

संपादक
डॉ. महजबी

D. P. KHARADE

Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Raibad Dist. Sangli

ISBN : 978-93-88011-04-5



9 789388 101194 5

212

वर्तमान साहित्यिक विमर्श

संपादक
डॉ. महजबी



साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

14. पाँच आँगनों वाला घर : आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर 79
डॉ. विजय महादेव गाडे
15. खुशहाल व स्वस्थ जीवन के लिए योग 85
राजेन्द्र कुमार
16. दलित सामाजिक जीवन : सूरजपाल चौहान की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में 88
नीतू कुमारी
17. हिंदी की कहानियों में पुरुष-विमर्श 94
डॉ. लावणे विजय भास्कर
18. समकालीन कविता में चित्रित पारिवारिक-विमर्श 99
डॉ. दयाराम
19. साहित्य के संदर्भ में आदिवासी-विमर्श 105
सरिता
20. 21 वीं सदी में राजस्थान के आदिवासी जिलों में मतदान व्यवहार, चुनाव विमर्श, शिक्षा पद्धति: (राजस्थान विधानसभा आम चुनाव 2018 के संदर्भ में एक विश्लेषण) 110
शिवकरण निर्मल
21. प्रवासी साहित्य में मौजूद स्त्री की कहानी 117
डॉ. सीमा सिंह
22. प्रवासी साहित्य और विमर्श के संदर्भ में उभरते मूलभूत प्रश्न 123
राजपाल
23. सिनेमा और दलित स्त्री 140
मुकेश कुमार मिरोठा
24. वृद्ध-विमर्श 149
कुलदीप
25. मीडिया और आधी आबादी 156
डॉ. अमित कुमार सिंह कुशवाहा
26. 21वीं सदी में राजस्थान के दक्षिणांचल के आदिवासियों में प्रचलित मौताणा प्रथा एक विमर्श 164
डॉ. मनोज दाधीच
27. लम्बी कविता में दलित-विमर्श 170
डॉ. रजनी बाला

ATTESTED

डॉ. मिथिलेश अवस्थी सृष्टि एवं दृष्टि



संपादक मंडल

डॉ. मिथिलेश अवस्थी सृष्टि एवं दृष्टि • संपादक मंडल



19-20



डॉ. मिथिलेश अवस्थी
सृष्टि एवं दृष्टि

संपादक मंडल

ATTESTED

D. B. KHARADE
Lecturer in History,
Bhamburda Chitwan Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Patus Dist. Sangli

ISBN : 978-93-86248-94-7



9 789386 248947 >
₹ 695/-

विद्या प्रकाशन
'सी' 449 गुलमी
कानपुर-208 022



E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
Website : www.vidyaprakashan.knpur.com

डॉ. मिथिलेश अवस्थी सृष्टि एवं दृष्टि

संपादक मण्डल

संजय तिवारी

(निवासी संपादक, दैनिक नवभारत, नागपुर)

डॉ. हरिशंकर द्विवेदी (होशंगाबाद)

डॉ. हेरराम पाठक (डिगबोई, असम)

डॉ. अशोक धुलधुले (नासिक)

डॉ. विजय गाडे (सांगली)

डॉ. सुमेध नागदेवे (नागपुर)

डॉ. बसंत त्रिपाठी (प्रयागराज)

डॉ. अशोक सभ्रवाल (चण्डीगढ़)

डॉ. ईश्वर पवार (शिरूर)

डॉ. अनिल दुबे (वर्धा)

श्रीमती दीप्ति अवस्थी (नागपुर)

 **विद्या प्रकाशन**
सी, 449, गुजैनी, कानपुर - 22

डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि

अनुक्रमणिका

| | | |
|--|--|--------|
| 01 अशेष आशीर्वाद... | डॉ. पद्मचंद्र जैन, अमरावती | 11-12 |
| 02 मिथिलेश जी के साथ व्यतीत हुए अविस्मरणीय क्षण | डॉ. सतीशराज पुष्करणा, पटना | 13-21 |
| 03 अंतरंग-क्षण | डॉ. एच.एस. द्विवेदी, होशंगाबाद | 22-23 |
| 04 मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे दादा जैसा मित्र मिला..... | डॉ. अशोक सभ्रवाल, चण्डीगढ़ | 24-27 |
| 05 मिथिलेश अवस्थी : विनम्र प्रखरता की मूर्ति | डॉ. बसंत त्रिपाठी, प्रयागराज | 28-32 |
| 06 भाग्य बदलने वाला प्रोफेसर | संजय तिवारी, नागपुर | 33-40 |
| 07 बीस बरस का साथी : मिथिलेश अवस्थी | डॉ. हरेराम पाठक डिगबोई (असम) | 41-44 |
| 08 साहित्य-मनीषी डॉ. मिथिलेश अवस्थी: व्यक्तित्व और कृतित्व | डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, पटना | 45-50 |
| 09 बड़े भाई - मिथिलेश! | डॉ. विजय महादेव गाडे, सांगली | 51-56 |
| 10 डॉ. मिथिलेश अवस्थी : व्यक्ति और सृजनकार | प्रो. डॉ. अशोक धुलधुले, नासिक | 57-61 |
| 11 चिन्तन के क्षणों के यात्री : डॉ. मिथिलेश अवस्थी | डॉ. मीनाक्षी जोशी, भंडारा | 62-65 |
| 12 मित्रता की ज़मी के शम्स | डॉ. ईश्वर पवार, शिरूर | 66-69 |
| 13 विद्या विनयेन शोभते | डॉ. ऋचा शर्मा, अहमदनगर | 70-71 |
| 14 संवेदनाओं से लबालब भरा कविमन | प्रा. सूर्यकांत चव्हाण, लातूर | 72-74 |
| 15 जो अच्छा है, वह सबका है | डॉ. आभा सिंह, नागपुर | 75-78 |
| 16 'सर' से कब 'बड़े भाई' बन गए, पता ही न चला... | उषा अग्रवाल, नागपुर | 79-81 |
| 17 शिक्षाविद्, सृजनशील, ज्ञानयोगी डॉ. मिथिलेश अवस्थी | डॉ. सुदेश मीरा-ब्रह्मीराम भोवते नागपुर | 82-101 |

education has the potential to
stability of universalization
and democratization of education by maintaining the
standard of education, providing Education relevant to
the needs of the country at reasonable costs and making
optimum use of the media.

Our endeavour is:

1. to provide an alternative non-formal channel for higher education.
2. to reduce the pressure on the conventional university system by supplementing it.
3. to provide a means for continuing and life-long education so as to enrich the lives of people.
4. to bring higher education within the reach of those who have had no access to it.
5. to democratize higher education by providing access to large segments of the population- particularly the disadvantaged groups such as those living in remote and rural areas, including working people, women and other adults who wish to acquire and upgrade their knowledge and skills through studies in various fields.
6. to help those who wish to improve their educational qualifications and are interested in undertaking advanced studies of their interest, without being required to join as full time students.

ATTESTED

D. P. KHARADE

Lecturer in History,

**Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Shirwad, Tal. Palus Dist. Sangli**

Dr. V. D. Nandavadekar

Registrar

Shivaji University, Kolhapur
Website : www.unshivaji.ac.in

Prof. (Dr.) M. A. Anuse

Director

CENTRE FOR DISTANCE EDUCATION
Telephone No. : 2693771, 2693871,
2694171, 2694771

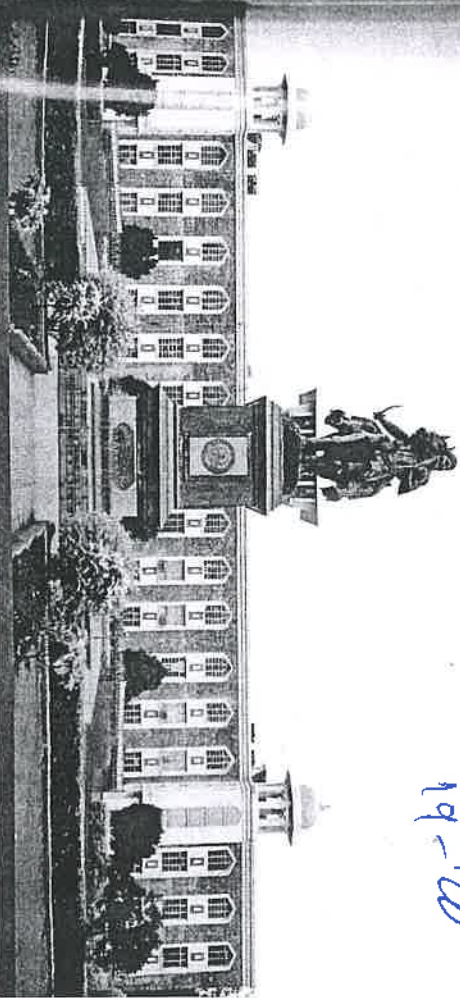
ISBN : 978-93-89327-45-8



शिवजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापूर, महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

19-20



एम. ए. भाग - 2 : हिंदी

सत्र -3 बीजपत्र- 12

कचेतर साहित्य - I

सत्र -4 बीजपत्र- 16

कचेतर साहित्य - II

(शैक्षिक वर्ष 2019-20 से)



शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

सत्र-3 बीजपत्र-12

कथेतर साहित्य - I

सत्र-4 बीजपत्र-16

कथेतर साहित्य - II

(शैक्षिक वर्ष 2019-20 से)

एम. ए. भाग-2 हिंदी

दूरशिक्षण केंद्र
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

“कथेतर साहित्य”

इकाई लेखक

- ★ डॉ. व्ही. एम. गाडे - बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी
- ★ डॉ. नितीन धवडे - मुधोजी महाविद्यालय, फलटण
- ★ प्रा. निलेश स. डामसे - मालती वसंतदादा पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपूर
- ★ डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरत - आदर्श कॉलेज, विटा
- ★ प्रा. एन. बी. एकिले - हिंदी विभाग, शिवराज महाविद्यालय, गडहिंग्लज
- ★ प्रा. यु. आर. आळतेकर - प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय, देऊर
- ★ डॉ. एस. बी. बनसोडे - जयसिंगपूर कॉलेज, जयसिंगपूर

■ सम्पादक ■

डॉ. बबन सातपुते
मिरज महाविद्यालय, मिरज

डॉ. आर. पी. भोसले
कला, वाणिज्य महाविद्यालय,
पुसेगांव

इकाई-1

भारतीयता की पहचान (निबंध संग्रह)

- विद्यानिवास मिश्र

अनुक्रम

- 1.1 उद्देश्य
- 1.2 प्रस्तावना
- 1.3 विषय-विवेचन
 - 1.3.1 निबंध विधा का महत्त्व
 - 1.3.2 निबंधकार विद्यानिवास मिश्र का परिचय
 - 1.3.3 'भारतीयता की पहचान' निबंध संकलन का परिचय
 - 1.3.3.1 भारत के लोक और शास्त्र : निबंध का आशय
 - 1.3.3.2 भारत में मनुष्य और उसका परिवेश : निबंध का आशय
 - 1.3.3.3 भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता : निबंध का आशय
 - 1.3.3.4 विज्ञान और साहित्य : भारतीय परिदृश्य- निबंध का आशय
 - 1.3.3.5 भारतीय सनातन मूल्य : वसुधैव कुटुम्बकम्- निबंध का आशय
 - 1.3.3.6 भारतीय एकता के सूत्रधार : निबंध का आशय
 - 1.3.3.7 भारतीय वाचिक परंपरा : निबंध का आशय
- 1.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न
- 1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
- 1.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
- 1.7 सारांश
- 1.8 स्वाध्याय
- 1.9 क्षेत्रीय कार्य
- 1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

ATTESTED

D. P. KHARADI

Lecturer in History,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

A Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
SJIF Impact Factor : 6.21
Vol. VIII Special Issue - I, March 2019

REFLECTION OF EDUCATION IN LITERATURE

साहित्यातील शिक्षणाचे प्रतिबिंब

■ EDITORIAL BOARD ■

Prin. (Dr.) Arjun Rajage
Rajarshi Shahu Arts &
Commerce College,
Rukadi

Mr. Shankar Dalavi
Department of Hindi
Rajarshi Shahu Arts &
Commerce College, Rukadi

Dr. Girish More
Department of Marathi,
Rajarshi Shahu Arts &
Commerce College, Rukadi

Dr. S.B. Biradar
Department of English,
SVM College, Ilkal
(Karnataka)

Dr. Uttam Patil
Department of English,
Rajarshi Shahu Arts &
Commerce College, Rukadi

Dr. Sabiha S. Soyad
Department of Urdu,
Night College of Arts and
Science, Ichalkaranji

RAJARSHI SHAHU ARTS AND COMMERCE COLLEGE, RUKADI

Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur 416 118

E-mail: rajshahurkd@yahoo.com, Website: www.rajshasuruk.in

SJIF Impact Factor 6.21 Peer Reviewed Journal

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

| Sr. No. | Title | Author | Page No. |
|------------------------|--|---|----------|
| 42 | The Reflection of Education in George Orwell's <i>Animal Farm</i> | Dr. Arun Jadhav | 121 |
| 43 | Reflection of Education and the Changing Image of Woman in Indian Women Writers | Mrs. Sunita J. Velhal | 124 |
| 44 | Denial of Space And Marginalization of Woman Reflected in Mahesh Dattani's <i>Tara</i> | Dr. Dilawar Yusuf Jamadar | 127 |
| 45 | Reflection of Education in Chetan Bhagat's <i>Five Point Someone</i> | Dr. Mrs. Patil Manik Shantinath | 129 |
| 46 | Literature is Education | Raghunath .D.Dhamakale | 131 |
| 47 | The Role of Education and Literature in Imparting Ethics in Society | Mrs. Yadav Shubhada Sachin | 134 |
| 48 | Women Reformation through Education in India | Dr. Vijay .B. Desai | 137 |
| 49 | The Instinct Of Education in Kishor Kale's "Against All Odds" | Mr. Kamble Rajiv Bhimrao | 140 |
| 50 | Conflict in Jhumpa Lahiri's <i>The Namesake</i> | Prof. Nilesh Uttamrao Hume Mr. Rajkiran Jotiram Biraje | 142 |
| MARATHI SECTION | | | |
| 51 | 'भेटलं मंग फिटलं पांग!': मधील समकालीन शिक्षण | प्रा. डॉ. शरद गायकवाड | 145 |
| 52 | तृतीयवर्तन आणि स्थानिकस्वराज्य नाटकांतील शैक्षणिक विचार | प्रा. डॉ. दत्ता पाटील | 149 |
| 53 | 'वननारवाडी व निष्पत्ती इत्या अंगण' मधील शिक्षक | डॉ. कांबळे अजित यल्लाप्पा | 153 |
| 54 | शिक्षणामुळे प्रभावित स्त्री सुधारणा आणि मराठी साहित्य | डॉ. वर्षा शिरीष फाटक | 155 |
| 55 | १९ व्या शतकातील समाजसुधारकांच्या लेखनातील स्त्री शिक्षणाचे महत्त्व आणि चित्रण | डॉ. नंदिनी गणपती काळे | 158 |
| 56 | मुक्ता साळवेचा धगधगता हुंकार | प्रा. डॉ. सुनिता श्रीपती कांबळे | 161 |
| 57 | 'नामशेष होणारा माणूस' आणि शिक्षण | प्रा. प्रकाश हुलेनवर | 164 |
| 58 | 'काहिली' या कादंबरीतील भ्रष्ट शिक्षणव्यवस्थेचे चित्रण | प्रणिता शिवाजी बंगलवार | 167 |
| 59 | शिक्षण व्यवस्थेतील जातीयता व धार्मिकता यांवर भाष्य करणारी 'काजळ्यादिशा' | प्राची जोशी | 170 |
| 60 | 'कोसला'तील विद्यार्थी शिक्षक संबंध | प्रो. प्रभाकर भिमराव कांबळे प्रा. प्रमोद गुणवंत चौधरी | 173 |
| 61 | महात्मा फुले यांचे साहित्य आणि शैक्षणिक कार्य | प्रा. डॉ. शिवाजीराव पाटील | 176 |
| 62 | शिक्षणामुळे प्रभावित स्त्रीसुधारणा आणि मराठी साहित्य | डॉ. एन. व्ही. शिंदे | 179 |
| 63 | रविंद्र शोभणे यांच्या पांढरे हत्ती कादंबरीतील शिक्षण व्यवस्थेचे वास्तव | प्रा. सी. एस. व्ही. मोहिते | 183 |
| 64 | वामन जाधव यांच्या कादंबरीतील शिक्षणाची दाहकता | प्रा. नवनाथ विश्वनाथ पाटोळे | 185 |
| 65 | वैदिककालीन शिक्षणपद्धती आणि आधुनिक शिक्षणात तिची उपयुक्तता | प्रा. रचना सौरभ शहा | 188 |
| 66 | मराठी मुस्लीम साहित्याचे स्वरूप | अंकुश भारत घुले स्वाती अरुण व्हनकडे | 191 |
| 67 | महाविद्यालयीन व उच्च शिक्षणाचे मराठी साहित्यातील प्रतिबिंब | प्राचार्य डॉ. प्रकाश पाटील | 194 |
| 68 | शिक्षण व्यवस्थेतील भ्रष्टाचार व शोषण | प्रा. कदम संभाजी धोंडीराम | 196 |
| 69 | शिक्षणामुळे मराठी साहित्यात उमटलेला आवाज (दलित, आदिवासी, मुस्लीम, भटके - विमुक्त) | प्रा. डॉ. सतीश मस्के | 199 |

शिक्षण व्यवस्थेतील भ्रष्टाचार व शोषण

प्रा.कदम संभाजी धोंडीराम
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी, जि.सांगली
मोबा. ९८९०६७६६२८

१५ ऑगस्ट १९४७ साली भारत देशाला स्वातंत्र्य मिळाले. स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर स्वराज्याचे सुराज्यात रूपांतर होईल, असे वाटत होते. आज ज्ञानाची गंगा खेडोपाड्यापर्यंत पोहोचल्यानंतर समाजात जागृतीचे नवे भान येऊन जीवनातील प्रश्न सहज सुटतील असे वाटत होते. पण शिक्षणाने सुशिक्षित झालेल्या पिढीला सुसंस्कार व मानवी मुल्यांचा दिवसेंदिवस-विसर पडत चालला आहे. शिक्षणातील भ्रष्टाचारामुळे मानवी जीवनातील प्रश्न अधिकच गंभीर बनत चालले आहेत. वर्तमानकाळ भयानक वाटू लागला आहे ही शिक्षणातील मक्तेदारीच समाजाला हानिकारक ठरत आहे. शिक्षण ही माणसाची मुलभूत गरज आहे. शिक्षण हे त्याला त्याच्या जन्मापासूनच मिळत असते. जन्माला आल्याबरोबर त्याची आई त्याला सर्व गोष्टी शिकवत असते. पुढे त्याचा जसजसा विकास होत जातो तसतसे ते मुल अनुकरणातून अनेक गोष्टी शिकत असते. शिक्षण ही मानसाच्या जन्मापासून मृत्यूपर्यंत अव्याहतपणे चालणारी प्रक्रिया आहे. ही प्रक्रिया शाळा कॉलेजापासून सुरु होऊन विद्यापीठापर्यंत स्थिरावते.

भारतात पुर्वापार शिक्षणव्यवस्था कार्यरत आहे. रामायण व महाभारतापासून शिक्षण व्यवस्था अस्तित्वात होती. त्यावेळी गुरुकुल पद्धतीचा अवलंब केला जात होता. त्यावेळीसुद्धा शिक्षणात भ्रष्टाचार होता. त्यावेळी मनुस्मृतीनुसार गरिबांना शिक्षण घेण्याचा अधिकार नव्हता. त्यावेळी विविध प्रकारचे शिक्षण देणारे आचार्य द्रोण शिक्षण देताना दुजाभाव करत असताना दिसतात. एकलव्यास तो गरीब असल्यामुळे त्यांनी शिक्षण दिले नाही. महाभारतातील अनैतिक संतती म्हणून ज्या कर्णाचा उल्लेख केला जातो त्या कर्ण. तो सारथी पुत्र आहे, म्हणून शिक्षण नाकारले हा इतिहासाचा पुरावा आहे. इथेच शिक्षणातील भ्रष्टाचार अधिक गडद होत गेल्याचे दिसून येते. आज मिळणारे शिक्षण हे इंग्रजांच्या कृपेने मिळाले आहे हे विसरता कामा नये. भारतात प्रथम शिक्षण हे सर्वाना मोफत व सक्तीचे केले. याच गोष्टीचा पाठपुरावा महात्मा जोतिराव फुले यांनी केल्यामुळे आणि श्री. भीडे यांनी फुलेंना आपला वाडा दिल्यामुळे वाड्यात अस्पृश्यांसाठी व मुलींसाठी शाळा सुरु केली. त्यामुळेच अस्पृश्य समाजात जन्मलेले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे जागतिक पातळीवरिल शिक्षण तज्ज्ञ बनू शकले आहेत. याच संकल्पनेला कोल्हापुर संस्थानाचे संस्थानाधिपती राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांनी आपल्या संस्थानामध्ये प्राथमिक शिक्षण मोफत व सक्तीचे केले आहे. यांचाच आदर्श कर्मवीर भाऊराव पाटील यांनी घेवून रयत शिक्षण संस्थेसारखा वटवुक्ष निर्माण केला, शिक्षणमहर्षी बापूजी साळुंखे यांनी स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेची निर्मिती केली. मामासाहेब जगदाळे यांनी बार्शीमध्ये शिवाजी शिक्षणसंस्थेची स्थापना केली, तर महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांनी आजच्या कर्वे संस्थेची स्थापना केली अलिकडे डॉ. डी.वाय.पाटील व डॉ. पतंगराव कदम यांनी शिक्षण संस्था स्थापन करून या शिक्षण महर्षींनी शिक्षणाची गंगा गोरगरिबांपर्यंत पोहचविण्याचे पवित्र कार्य केले त्याच काही संस्थातून भ्रष्टाचाराचा ऊत आल्याचे दिसून येते.

आज शिक्षणाचे खजगीकरण करून इंग्रजी माध्यामांना ऊत आला आहे. त्याच बरोबर, मेडिकल, इंजिनियर, विविध कोर्सेस, विविध प्रकारच्या अॅकॅडमी नावाच्या संस्था स्थापन करून त्यामध्ये प्रवेश घेण्यासाठी विद्यार्थ्यांकडून भरमसाठ पैसा घेतला जातो. तसेच या शिक्षण संस्थामध्ये आवश्यक शिक्षक भरतीसाठी लाखो रुपये देणी म्हणून घेतल्यामुळे शिक्षणाबद्दलची आपुलकी संपत चालल्याचे दिसून येत आहे. हा शिक्षण सम्राटांचा मनमानी कारभार तरुणाई बरबाद करत असल्याचे चित्र मराठी वाङ्मयामध्ये आले आहे. डॉ. वामन जाधव हे त्यापैकीच एक नाव आहे त्यांच्या अंधार (१९९८), आक्रोश (१९९९), नक्षत्र (२००९). हे तीन कथासंग्रह आणि सार्थक (२०००) ही कादंबरी व 'वॉन्टेड' ही कादंबरी असून 'वॉन्टेड' या कादंबरीतून ग्रामीण भागातील महाविद्यालयीन व्यवस्थेतील भ्रष्टाचार व अन्याय, अत्याचाराचे दर्शन घडविले आहे.

स्वातंत्र्यानंतर मिळालेल्या अधिकाराचा गैरवरपर करत अनेक धन दांडग्यांनी साखर कारखाने, शिक्षण संस्था स्थापन करून समजात शिक्षण देण्याच्या नावाखाली समाजाची लूट चालू केली आहे. या शिक्षण सम्राटांनी तर गोरगरिबांचे शिक्षणच हिरावून घेतले आहे. याला साथ भ्रष्ट राजकारणी लोकांची आहे. साखर सम्राट व शिक्षण सम्राटांचे लागेबांधे असल्याचे दिसून येते. बालवाडीपासून बी. ए. पदवी पर्यंतच्या शिक्षणतील भ्रष्टाचार वेगळा तर मेडिकल, इंजिनिअरिंग, आय. टी. क्षेत्र व इतर शैक्षणिक क्षेत्रातील भ्रष्टाचार वेगळाच आहे म्हणजेच शिक्षण हे कोणताही विद्यार्थी कोणत्याही संस्थेतून मोफत घेत नाही. आणि त्याला ते मिळतही नाही ही आजची परिस्थिती आहे. शिक्षण शुल्काचे दर हे प्रत्येक संस्थानिहाय वेगवेगळे ठरविले गेले असल्यामुळे जनतेची लूट करणारे हे माजलेले संस्था चालक मगूर, मस्तवाल, भ्रष्टाचारी, वासनांध व बेताल झाल्याचे मराठी साहित्यातून दिसून येते. अशाच काही कथा व कादंबरीतील लेखनातून शोधण्याचा प्रयत्न केला आहे.

डॉ. वामन जाधव यांच्या 'वॉन्टेड' या कादंबरीमध्ये भ्रष्टाचाराने बरबटलेल्या शिक्षण सम्राटांच्या भ्रष्ट कारभाराचे चित्रण या कादंबरीतून होते. या कादंबरीमध्ये शिवा हा अर्थशास्त्राचा तासिका तत्वावर काम करणारा प्राध्यापक करुणानगरच्या 'महात्मा फुले कला व वाणिज्य महाविद्यालयामध्ये नोकरी करीत असतो. आज ना उद्या नोकरीत कायम होईन आणि मनातील सर्व स्वप्न पूर्ण करता येईल हाच आशावाद समोर ठेवून तो प्रामाणिकपणे नोकरी करीत होता. या महाविद्यालयाचा प्राचार्य हा इथला बॉस आहे. रंगाने काळा, भोंड्या नाकाचा, जाड भिंगाचा चष्मा परिधान केलेला, त्याला पाहता क्षणी उरात धडकी भरावी अशा स्वभावाचा प्राचार्य हा संस्था सचिवाने मोजलेल्या शिवा प्रामाणिकपणे सहन करत असे. प्राचार्य कम शेतकरी जादा वाटत होता. शिवाला तो नियमबाह्य आपल्या घरातील व शेतातील काम करावयास लावत होता. म्हशीला रेडा दाखविणे, मेलेली शेळी सोलणे, धरातील सर्व बारीक सारीक काम करणे अशी कामे शिवा उद्याचे भवितव्य नजरे समोर ठेऊन करत होता. नोकरापेक्षाही हिन कामामुळे शिवासारख्या प्राध्यापकाचे अवमुल्यांकन होत होते याची पर्वा ना संस्थेला ना प्राचार्याला होती हे कृत्य म्हणजे शिक्षण व्यवस्थेला काळीमा फासण्याचा प्रकार होता.

या शिवाच्या संस्थेत त्याच्याबरोबर काम करणारे अनेक कर्मचारी काम चुकारपणा करतात पण ते संस्थेत चहाड्या करणारे प्राचार्यांशी हातमिळवणी करून सलगी करणारे आहेत. ते फक्त महिन्याच्या पगारावर डोळा ठेवून काम करत असतात. जातीयता, गटबाजी, व्यसनांधता, लफडेबाजी, कामचुकार करण्यात पटाईत असणारे हे सर्वजन होते. या सर्वांमध्ये शिवाची घुसमट होत होती. पण स्वभाने शांत असणारा शिवा फक्त पाहण्याचे काम करत होता. त्यामुळे त्याच्याकडे असणारी माणूसकीची वृत्ती दिसून येते. ही कादंबरी शिवाच्या भोवती फिरत असली तरी शिवासारख्या हजारो निराधार व निरापराध तरुणांचे उपेक्षित जीवन या कादंबरीमध्ये चित्रित झाल्याचे दिसून येते. शिवा हा इथल्या भ्रष्ट संस्कृतीचा बळी उरला आहे. म्हणून प्रयत्नवादी, ध्येयवादी शिवाची ही शोकांतिका असून इथल्या भ्रष्ट संस्कृतीचा विजय आहे.

दुबळ्या आणि नोकरीसाठी संस्था चालकाची लाचारी पत्करणाऱ्या प्राचार्यांच्या हाताशी धरून अमाप संपत्ती गोळा करणाऱ्या शिक्षण सम्राटांचे चित्र या कादंबरीतून पाहवयास मिळते. महाराष्ट्रातील ग्रामीण शैक्षणिक क्षेत्राच्या अधोगतीचे, शिक्षणसम्राटांच्या व्यक्तीमत्वातील गुंडगिरी, लबाडखोरी, धुर्तपणा, स्वार्थी हेतू या स्वभावातील विशेषांचे दर्शन होते. संस्था चालकांचे विद्यार्थी प्रवेशावेळी लाच, डोपेशन, कमिशन, देणग्या, भेटवस्तू, नोकरांच्या पगारामध्ये काटछाट या वृत्ती दिसून येतात. शिक्षण संस्थामध्ये शिक्षण चालकांशिवाय कोणत्याही नोकरास किंमत नसते. "बाजारातल्या भाजीच्या पेंढीला जी किंमत आहे, तेवढी किंमत महाविद्यालयाच्या प्राचार्य पदाला नाही" हे दिसून येते. आज बहुजन हिताय बहुजन सुखायचा नारा देणाऱ्या संस्थातून भ्रष्टाचाराला सुरुवात झाली-आहे. दर महिन्याच्या पगारातून काही टक्के रक्कम कपात करून घेणे आणि अशी रक्कम न देणाऱ्यास दर महिन्याला बदली करणे, बदली दुर्गम भागात करणे असे प्रकार होत असताना दिसतात. डॉ. वामन जाधव यांनी 'वॉन्टेड' कादंबरीतून मांडलेले वास्तव हे आजच्या काळातील वास्तव सत्य आहे.

निशिकांत गुरव यांनी त्यांच्या 'वाणिकडे' या कथासंग्रहातून भ्रष्ट, हरामखोर, साखर सम्राटांच्या शिक्षण क्षेत्रातील भ्रष्ट कारभाराचे चित्रण मांडले आहे. वाणिकडे या कथेचा नायक

आप्या चावरेला मॅट्रिक नंतरचे शिक्षण घरच्या अडचणीमुळे घेता येत नाही. एका कार्यालयात कनिष्ठ लेखनिक म्हणून काम करत असतो. पुढे संसार व नोकरीतून मिळालेल्या वेळी अभ्यास करून तो बी.ए. करतो. खात्यातर्गत तो वरिष्ठ पदाच्या परीक्षेस बसतो, पण त्याच्याकडे नोकरीचा फारसा अनुभव नसल्याचे कारण सांगून त्याला नापास केले जाते. पण त्याच्या नंतर नोकरीस रुजू झालेल्या रमेश गणगेला मात्र पास केले जाते त्याचे कौतुकही केले जाते. खरे तर त्या गणगेची गुणवत्ता व ऑफिसमध्ये कामाची प्रगती नसताना देखिल त्याला खात्यातर्गत वरिष्ठ पदाच्या परीक्षेत पास करून वरिष्ठ पद दिले जाते. 'वृद्ध' कथेत एक पदवीधर खडी फोडून शिक्षण पूर्ण करतो, आणि एका कंपनीत मुलाखत देतो. पण ती जागा तिथल्याच मॅनेजरच्या नातेवाईकाला दिल्याचे कळताच तो पदवीधर नाराज होतो. नोकरीसाठी शहरात भटकत असताना त्या शहरात जाळपोळ व लुटालुट चालू असते, तो ही त्यामध्ये सामील होतो. लुट करतो, जे हाताला लागेल ते तो घेऊन येतो. एक पदवीधर समोर आलेल्या प्रसंगाला सामोरा जातो. त्या दंगलीमध्ये लुटमार करताना तो यदाकदाचित सापडला असता, तर त्याच्या आयुष्य भराच्या मेहनतीवर पाणी फिरले असते. गावाकडे मोलमजुरी करून जगणाऱ्या आई वडिलांना काय वाटले असेल, विचारे याच्या आशेवरच जगत आहेत. इथे पदवीधर तरुणाची दाहक कथा व बेकारीतून आलेले वास्तव गुरव यांच्या कथांतून दिसून येते. तसेच सुशिक्षित तरुणांना शिक्षणातील भ्रष्टाचारामुळे आलेली बेकारीची अवस्था आणि त्यातच वाहत जाणारी तरुण पिढीचे चित्र दिसून येते. 'बगळे' याकथेतून सामान्य परिस्थितीत जगणाऱ्या तरुण पिढीचे सत्ता शोषण प्रतिकात्मक पद्धतीने मांडले आहे. या कथेतील शंकर सरवटे एम.ए.बी.ली.बी. होतो. त्याने आपले शिक्षण अर्न अँड लर्न स्किममधून पूर्ण केलेले आहे. तो एका साखर महाविद्यालयाच्या ग्रंथपालच्या जागेसाठी अर्ज करतो. तेथे त्याची मुलाखत होते. शंकरला हेडक्लार्क थांबावयास सांगतात, त्यामुळे त्याच्या आशा पल्लवीत होतात. तो आता पुढील जीवनाची स्वप्ने रंगवित असतो. इतक्यात त्या साखर कारखान्याचा चेअरमन येतात आणि त्या साखर कारखान्याचे इंजिनिअर त्यांचे नातेवाईक असतात, त्या इंजिनिअरच्या पत्नीला ती नोकरी दिली जाते की, जी मुलाखतीसाठी उपस्थितही नव्हती. शंकरच्या स्वप्नांचा आता चक्काचूर झालेला होता. ही व्यवस्था म्हणजे तरुण पिढीचे शोषण करणारी व्यवस्था, भ्रष्ट राजकारणी, सत्ताशोषक आणि शिक्षणाचा बट्याबोळ करणारी व्यवस्था असल्याचे दिसून येते. 'बदली' या कथेतून नोकरी असणारे पण शाळेऐवजी बाईवर प्रेमकरणारा आणि शाळेऐवजी बाईच्या घरी जावून झोपा काढणारा नायकवडी मास्तर दिसून येतो, तर दुसरीकडे शाळेतील मुलं आपल्या शेतावर घेवून जावून काम करावयास लावणारा पवार मास्तर दिसून येतो. जेव्हा वरिष्ठ अधिकारी शाळेस भेट देतात तेव्हा दोघेही शाळेत नसतात. त्यांच्या गैरकृत्याबद्दल साहेब कान उघडणी करतात- त्या दोघांची बदली करतात. पण या दोघांच्या मागे सत्ताधारी गटांचे पाठबळ असल्यामुळे त्या दोघांच्या बदल्या त्यांच्या गावाशेजारच्या शाळेत होतात. यावरून असे लक्षात येते की, सत्ता आणि संपत्तीच्या जोरावर अशक्य ते शक्य करता येते याचे दर्शन होते. यामुळे संपुर्ण शिक्षण व्यवस्थेची पाळेमुळे भ्रष्टाचारांनी बरबटलेली आहेत याचेही दर्शन होते. ज्ञानावरील निष्ठा संपत जावून कमकुवत आणि अनैतिक मार्गाचा अवलंब केलेले संस्था चालक नजरेसमोर येतात. या संस्था चालकांनी शिक्षण व्यवस्थेचा खेळ खंडोबा मांडला आहे, त्याचे दर्शनही या कथांतून दिसून येते.

वरील सर्व गोष्टींचा विचार काता असे लक्षात येते की, सर्वच शिक्षण संस्था ह्या व्यवहारिक पातळीवर जावून पोहचल्या आहेत. पैसा मिळविणे हे एकमेव ध्येय असून त्यासाठी नैतिक, अनैतिक मार्गाचाही ते अवलंब करायला तयार असल्याचे दिसून येते.



8.3.3

19-20

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
(Peer Reviewed and Indexed Journal)

Special Issue No : 49

Impact Factor : 5.707

ISSN : 2349-638X



International Conference

On

***"Advanced and Innovative Practices in
Commerce & Management, Science & Technology,
Humanities, Languages and Their Role in
Achieving the Exponential Growth"***



Date : 16th February 2019

Organised by

Shri Narayanrao Babasaheb Education Society's

SHRI VENKATESH MAHAVIDYALAYA, ICHALKARANJI

In collaboration with

**SHIVAJI UNIVERSITY Commerce and Management
TEACHERS ASSOCIATION (SUCOMATA)**

and

**BVDU'S INSTITUTE OF Management and
ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT, (IMED) Pune**

Editorial Board

Chairman : Prin. Dr. Vijay Annaso Mane
Editor-in-chief : Dr. Naushad Makbool Mujawar
Co-editor : Mrs. Sunita Hansraj Ambawade

dg

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi, Tal. Patas, Dist. Sangli



**VOLUME
5**

Web : www.venkateshcollege.com
Mail Id : mshrivenkatesh@yahoo.com

| Sl. No | Author Name | Title of Research Paper / Article | Page No. |
|--------|---|--|--------------|
| 1 | Dr.SureshJ.Farakte | Comparative study of basketball and handball on physical fitness of shuttle run test'' | 1201 to 1203 |
| 2 | Dhanraj R. Bikkad | Study of the Concept and Impact on Urbanization. | 1204 to 1208 |
| 3 | Pramod P. Kamble | Teachers QWL: An Effective Tool for Strengthening Higher Education | 1209 to 1215 |
| 4 | Mr. A. S. Patil | A Study of Supply Chain Management in Natutral Farming Product | 1216 to 1220 |
| 5 | Prof. POL S.N. | The Geographical Vision Of Chatrapati Shivaji Maharaj | 1221 to 1226 |
| 6 | Kumar S. Badiger | Rashtriya Swasthya Bima Yojana | 1227 to 1230 |
| 7 | Dr. SangitaKamat-Nadkarni | Strategic Entrepreneurship Development | 1231 to 1233 |
| 8 | BHAGWAT V. B. | Web Mining: Finding Data, Filtering Data, Correlate Data | 1234 to 1235 |
| 9 | Dr. H. G. Jambagi | Indian Health Sector: Some Issues | 1236 to 1240 |
| 10 | Dr. Mahesh R. Paul | Sports Marketing: Changing the Game | 1241 to 1243 |
| 11 | Smt. Leena B. Patil | Augmented Reality in Sports | 1244 to 1246 |
| 12 | Dr.K.Pradeep Kumar &Dr.Sonia Rajput &Ms.PriyaChougule | Worklife Balance among Women Employees in Service Sectors in Sangli | 1247 to 1249 |
| 13 | Dr. G. Haranath | A Study of Performance Analysis of Axis Long Term Equity Mutual Fundequity Linked Savings Scheme | 1250 to 1253 |
| 14 | Miss. Rupali S. Kamble | Importance of modern information technology In physical education | 1254 to 1256 |
| 15 | Mr. Ananda B. Vibhute | A Comparative Study Of Gst In India And Other Countries In The World | 1257 to 1259 |
| 16 | Dr.Mansingh S. Dabade | Human Capital: An Innovative Function Of Hrd With Special Reference To Sugar Factories. | 1260 to 1264 |
| 17 | Dr. Smt. Desai M.B. | Environmental Pollution And Its Impact On Health | 1265 to 1267 |

Editor:

Shri. N.B. Education Society's
Shri Venkatesh Mahavidyalaya,
Govindrao High School Campus,
Ichalkaranji- 416 115
District: Kolhapur
State: Maharashtra
INDIA

Publisher:

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
(Peer Reviewed and Indexed Journal)
ISSN: 2349-638x
Impact Factor: 5.707
website : www.aiirjournal.com

**Copyright
@ 2019:**

**All Copyrights Reserved with
Dr. Naushad M. Mujawar (Editor-in-Chief)**

No part of this journal shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD- DVD or Audio or Video Cassettes or Electronic or Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc. without prior permission.

Disclaimer:

Research papers published in this conference book are the intellectual contributions done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this Special Issue and the organizers of this conference are not responsible in any form.

**Editorial
Board:**

- 1) **Prin. Dr. Vijay Annaso Mane,**
M.Com., M.Phil., M.B.A., Ph.D.
- Chairman
- 2) **Dr. Naushad Makbool Mujawar,**
M.Com., LL.B., M.Phil., Ph.D.
- Editor-in-chief
- 3) **Assistant Prof. (Mrs.) Sunita Hansraj Ambawade,**
M.Com., B.Ed., SET, M.Phil., M.B.A.
- Co-editor

Sports Marketing : Changing the Game

Dr.MaheshRangraoPatil

Director of physical education, BadasahebChitaleMahavidyalaya,Bhilawadi

E-mail- maheshpatil1352@gmail.com

Introduction

Goals fast, s always are demand. There will always be a market for a striker who India is n fast, scores goals regularly and is strong. I've scored more than 100 goals and people know what they are buying."

-Ronaldo"

Major companies are ratcheting up their sports marketing efforts by spending billions in sponsoring upcoming global sports events and marquee athletes in a bid to boost sales and enhance their brand image. As a consequence, sports-marketing is emerging as a key element of integrated marketing plans, from global markets to local store marketing areas from incentive programs to loyalty rewards, and from business-to-business strategies and consumer-product marketing. Why do McDonald's Hanes, and Nike pay huge amounts of money to be associated with sports, and why do they choose observers, sports-marketing proves that "it not just a game anymore". Sports-marketing is a vast area to discuss and is constantly evolving and changing today.

Sports marketing is building a highly identified, passionate fan base such that fans, sponsors, media and government pay to promote and support the organization for the benefits of social exchange and personal, group and community identity within a cooperative competitive environment.

Sports Marketing

Fanatics

A central point of differentiation between sports marketing and traditional goods/services marketing (hereafter, GSN) is how we view individual purchasers. One typically refers to customers when the subject is goods and services. Sports teams and players have fans.

Dictionary. Com defines a customer as: "One that buys goods or services. A fan is isAn ardent devotee; an enthusiast. A fanatic is "a person marked or motivated by an extreme. Unreasoning enthusiasm, as for a cause."

Identification

Consumers are loyal to goods and services while fans identify with teams, organizations, and individuals. Loyalty is the repeat purchasing of a good or service by a consumer. A loyal customer is sensitive to differences in brands and prefers a brand or set of brands over others. Identification is when an individual reacts to events that occur to the team player as if the events happened to him or her.

Promotion & Media

Third, the manufacturer and/or retailer of goods and services pays for the development and placement of brand advertising and promotions. In contrast, sports teams, organizations, and individuals (players, drivers, and artists) receive indirect and direct financial support to advertise and promote themselves. Fans indirectly promote by buying and wearing or displaying licensed merchandise. Sponsors directly promote the team and individuals. Paying for the advertising and media to do so. For instance. AT & T initially paid the Dallas Stars to host the team website ([attwireless. Dallasstars.com](http://attwireless.Dallasstars.com)). Similarly, radio and TV broadcasts of broadcasts of sporting events are "brought to you by" the sponsors.

Scope of sports marketing in India

In India, sports marketing is relatively new and is yet to be recognized as an economic sector. This is because there has been very little comprehensive study done on the industry's size and the potential opportunities that are available. The sports sector includes various disciplines such as sports tourism, sports law, sports finance,

facilities and event management, sports medicine and sponsorships. According to a study done by KPMG, it is seen that the global sports industry contributes about 1 to 5 percent of a country's GDP.

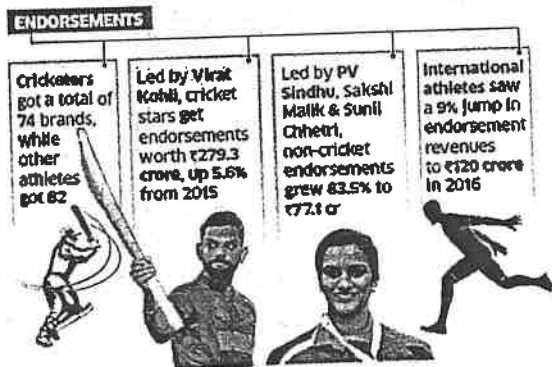
In the recent years, India has transformed from a cricket crazy nation to a multi-sport country. After the establishment of the Indian Premier League (IPL) in 2008, various sports have followed suit. Sporting leagues like Hockey India League, Pro Kabaddi League and Indian Super League (Football) have changed the face of Indian sports. With the emergence of these sporting leagues, the sports industry has grown from INR 43.7 billion in 2013 to INR 48 billion. With a rapid growth in economy, a middle class with disposable income and time for recreational activities, there is high potential for growth in Indian sports sector.

In multi-sport nations like United States of America, Australia, China, United Kingdom and

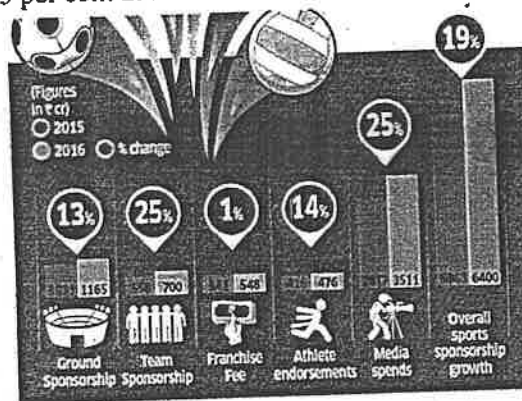
many others, sports marketing is already developed and that's the reason why they produce world-class athletes. In India, there is a lot of activity going around the sports arena. It creates a kind of zeal and determination among sportsmen which attracts more people to the sports, which is a positive development.

Rise of Sports Marketing In India

2016 -17 has seen a substantial 14.4% growth in sports endorsements. But the heartening thing here is that though Cricket continued its stronghold with 72 brands a strong 82 brand endorsements were bagged by other non-cricket athletes put together. Thanks to the success of PV Sindhu and Sakshi Malik in the Rio Olympics non-cricket endorsements' have become lucrative propositions and seen a visible growth of 83.5% in 2016-17. This means we are now ready for more sporting celebs as endorsers other than cricket.



Source: Sports sponsorship industry in India grew at 19.33 per cent in 2016 Economic times Mar 17, 2017



Source: Sports sponsorship industry in India grew at 19.33 per cent in 2016 Economic times Mar 17, 2017

Conclusion:

Effective sports marketing is primarily premised upon building fan identification. Customers can identify with a branded good or service, as when customers wear a particular clothing brand prominently displayed on their clothing.

The text is organized around a framework of understanding how buyers respond to the property (i.e., organization, team, athlete, artist) and its sponsors. Sports marketing practices are based on building a highly identified fan base for the property. While we focus primarily upon team sports.

Sponsorships are largely sold on the basis of relationships between representatives of the property and the sponsor, but also rely heavily on qualitative, strategic, and quantitative evaluations.

The business of sports is a multi-billion dollar industry. Today's global sports industry is

worth between \$480 and \$620 billion, according to a recent A.T. Kearney study of sports, teams, leagues and federations

References:-

1. Gruca, Thomas S. and Lopo L. Rego (2005), "Customer satisfactions, cash flow, and shareholder value," *Journal of marketing*, 69 (July)
2. Fsiher, Robert J. and kirk L. Wakefield (1998), "Factors leading to group identification: A field study of winners and losers," *psychology & marketing*, 15 January
3. PWC. (2011). *Changing the game. Outlook for the global sports markets to 2015*. Retrieved from <https://www.pwc.com/gx/en/hospitality-leisure/pdf/changing-the-game-outlook-for-the-global-sports-market-to-2015.pdf>
4. <https://www.linkedin.com/pulse/scope-sports-marketing-india-vineet-pinto>
5. <https://blog.sitm.ac.in/sports-marketing-in-india>



dg
Principal,
Babasaheb Chitav Mahavidyalaya
Dhilwadi, Tal. Pans, Dist. Sangli.

7
2019-20

Review of Research

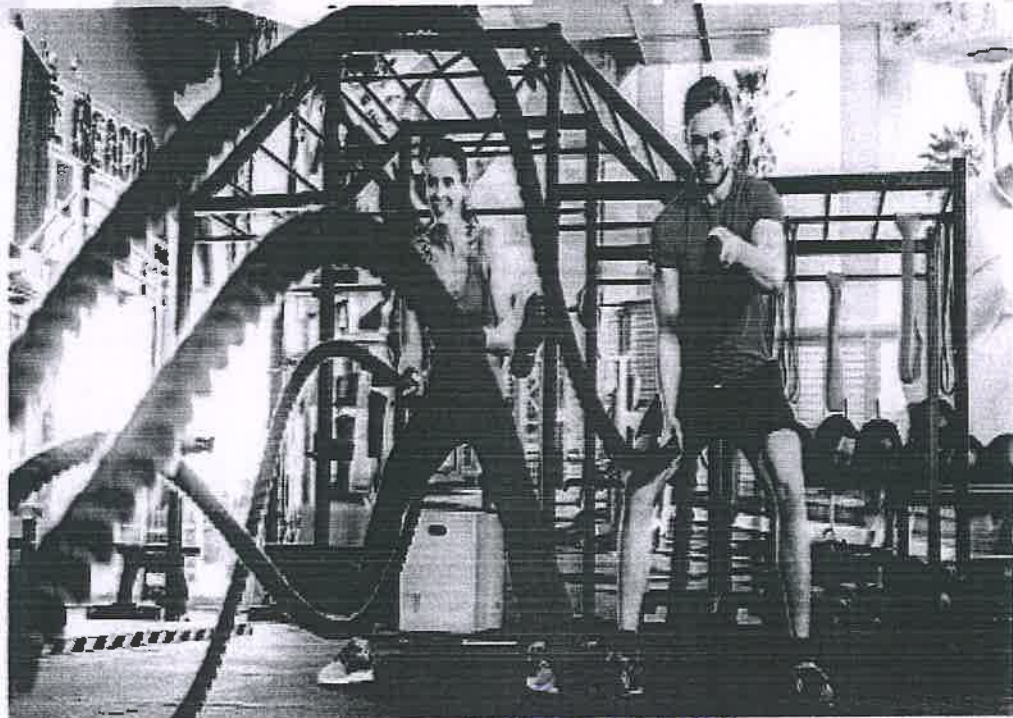


International Online Multidisciplinary Journal

Volume - 8 | Issue - 4 | January - 2019

5.7631(UIF) 2249-894X

PHYSICAL TRAINING



Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhitawadi Tal. Palus Dist. Sangli (Maharashtra)

Shrikant Bhanudas Chavan dg
Principal,

Bhitawadi Tal. Palus, Dist. Sangli

ABSTRACT:- The defense mechanisms are available but child has to be guided at what extent these ego-defense mechanisms have to be used and up to what extent. "Sound mind leaves in sound body" It indicates co-ordination between body and mind for achieving success whether is in any field...

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi



Review of Research (ROR) Journal is an Online International Multidisciplinary Research Journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the Editorial Board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

OUR CHIEF EDITORS

India



Ashok
Yakkaldevi

Iran



Bijan
Goodarzi

Bucharest



Ecaterina

Sri-lanka



Perera

Associate Editors



Dr. T. Manichander



Sanjeev Kumar Mishra

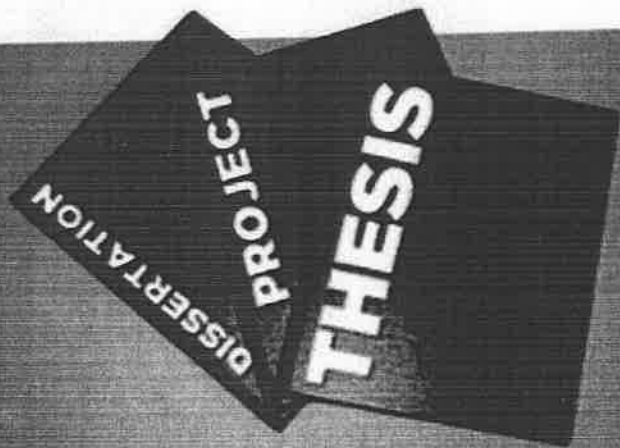
Associated and Indexed, India

- ♦ MENDALEY
- ♦ GOOGLE SCHOLAR
- ♦ CITULIKE
- ♦ ENDNOTE
- ♦ ZOTERO
- ♦ DRJI

Content

| Sr. No. | Title and Name of The Author (S) | Page No. |
|---------|---|----------|
| 1 | STRATEGIC HUMAN RESOURCE MANAGEMENT ON ORGANIZATIONAL PERFORMANCE Dr. Ashok S. Banne | 1 |
| 2 | PHYSICAL TRAINING Dr. Shrikant Bhanudas Chavan | 7 |
| 3 | हरदोई जनपद में प्रमुख विपणन वस्तुओं के आधार पर विपणन केन्द्रों का वर्गीकरण डॉ. अमित कनौजिया , अमित सचान | 13 |
| 4 | A STUDY ON THE CONCEPT OF GOOD: WITH REFERENCE TO ANCIENT GREEK PHILOSOPHERS Shantaraj Debbarma | 18 |
| 5 | A STUDY OF LEADERSHIP STYLES OF THE SCHOOL PRINCIPALS IN RELATION TO CERTAIN VARIABLES Kavita Sharma | 26 |
| 6 | SACRED SPACES: A SOCIOLOGICAL ANALYSIS OF SACRED GROVES OF KERALA, SOUTHERN INDIA Dr. Leela P. U. | 50 |
| 7 | FAMILY SUPPORT, ADHERENCE ON MEDICATION AND COPING STRATEGY INFLUENCING THE LIFE EXPECTANCY OF HIV+/AIDS PATIENTS Arvind Kumar | 36 |

BOOK PUBLISH at **U.S.A.**



**THESIS
DISSERTATION
PROJECT
CONVERT
INTO
BOOK**

LAXMI

BOOK PUBLICATION, Solapur

Ph.: 0217-2372010/+91-9595-359-435

Emil.: avisrj2011@gmail.com



Certificate of Publication

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2249-894X

Impact Factor : 5.7631(UIF)



Review of Research

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr./Shri./Smt.: **Shrikant Bhanudas Chavan** Topic:- **Physical Training**. College:-Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra). The research paper is original & innovative it is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of **January 2019**.



Laxmi Book Publication

258/34, Raviwar Peth, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
e-Mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.lbp.world

Authorised Signature

Ashok Yakkaldevi
Editor-in-Chief



PHYSICAL TRAINING

Dr. Shrikant Bhanudas Chavan

Head, Dept. of Psychology, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal.- Palus Dist. Sangli (Maharashtra).

ABSTRACT :

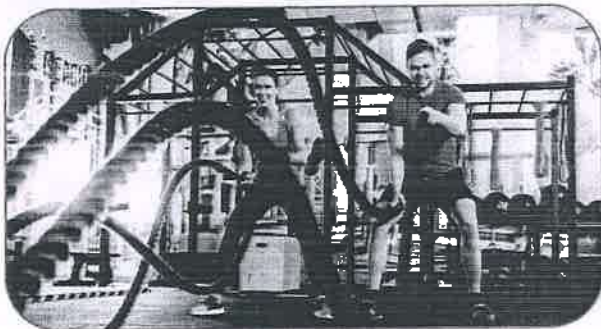
The defense mechanisms are available but child has to be guided at what extent these ego-defense mechanisms have to be used and up to what extent.

"Sound mind leaves in sound body" It indicates co-ordination between body and mind for achieving success whether is in any field. It indicates the importance of physical training. Certainly physical training provokes individual to control over negative psychological traits.

Exercise has been shown to protect against coronary heart disease, high blood pressure, diabetes, osteoporosis, and some cancers. Regular exercisers also benefit from leaner bodies, improved flexibility and stamina. While most people are aware of these physical health benefits, many are not familiar with the range of mental health benefits that can be derived from regular exercise.

KEYWORDS : physical health benefits, Sports, Health Benefits.

INTRODUCTION



Construction of Physical Training Module

Module of physical training for adolescents of was prepared on the basis of previous researches and with the help of trained instructors of the respective fields. Module 1 was related to Yoga and module 2 was related to Physical exercises. Modules were prepared with the help of yoga and physical experts the necessary changes were incorporated and finally two modules for training were prepared.

MODULE 2 – Physical Exercises

Students learn yoga and physical exercises by observing a demonstration given by the instructor while listening to instructions. In addition, the instructor spent time with each subject correcting then practice (e.g. repositioning their limbs) with verbal instructions. The detailed description of these modules are given below: Table 1 represents the outline of training module 2.

Table 1
Outline of Training Module 2

| Exercise | Schedule | Duration |
|--|-----------------------------|-----------------|
| Warm-up | Daily | 3 - 5 minutes |
| Running | Daily | 5 - 10 minutes |
| Cross Country | Daily | 5 - 10minutes |
| Pull ups, Push ups, Sit ups, Standing Broad Jump | One daily | 3 - 5 minutes |
| Kho-Kho, Kabaddi, Basket Ball | Daily but one game in a day | 25 - 30 minutes |

Module 2 included physical exercises (aerobic and anaerobic) to develop and maintain over all health (Appendix 3). It is said that frequent and regular physical exercise boost immune system and thus improve physical and mental health. It also increases energy and raise one's threshold for pain. In this module aerobic exercise like walking running and anaerobic exercise like push ups pull ups etc. were included to increase muscles strength. Module was formed in such a way that it became interesting for subjects. At initial level subject were given logic of these exercises through lecture to inculcate their interest in the training programme.

The details of these exercise are as follows.

Warm up

Small steps of jogging were initiated to warm-up the body. It is essential to tone the body for any type of physical exercise.

Running

The next best step of the warm-up is light running. It was done in groups of 10 adolescents each. This activity accelerates the oxygen intake in body and also increases the capacity of lungs and heart.

Cross Country

It was done in their respective school grounds. The distance was 4 kms. This activity also includes oxygen intake and increases the ability of muscles to take use of oxygen. In long term, oxygen is beneficial for the brain as it increases the oxygen flow to the brain.

Pull ups

This physical exercise increases arm and shoulder strength. A student should grasp the bar with his palms facing away from his body until his chin is over the bar and then lower it again to the starting position with his arms fully extended.

Sit ups

This physical exercise is done to increase abdominal strength and endurance. In this exercise the student lies flat on the back with knees bent and feet on the mat with the heels no more than 1 foot from the buttocks. The knee angle should not be less than 90 degrees. The fingers are interlocked and placed behind the neck he elbows touching the floor. The feet are held securely by a partner. The students then curls up to a sitting position and touches the elbows to the knees. This exercise is repeated as many times as possible in the time requirement.

Push ups

This physical exercise is done for strengthening capacity and power of arms and shoulders. It is done by laying down the student in the manner that his face is towards the ground then body is pushed upwards with the support of both hands, with both palms on the ground. Again student has to pull up his body upwards remaining his hand on the ground in the initial posture. It is repeated till student regrets to do it.

Standing Broad Jump

This physical exercise is done to increase the power. In this exercise the student stands behind a takeoff line with his feet several inches apart. Before jumping, the student dips at the knees and swings the arms -backward. He then jumps forward by simultaneously extending the knees and swinging the arms forward.

Sports

Three sports activities were executed namely, Kho- Kho, Kabaddi and Basket Ball. These sports activities were conducted to increase strength, power, running capacity, agility, flexibility and endurance. These games are considered important for physical and physiological parameters and inculcate feeling of co-operation, boosting morale and develop competition habits. These games were executed one in a day according to the wish of students. Module was prepared for 1 hour. Rest was given to subjects, whenever required.

Instructions: The separate instructions for test is given below:

Eight State Questionnaire (अष्ट परिस्थितियाँ पैनावली)

इस पुस्तिका में अधिकांश व्यक्तियों द्वारा किसी एक अथवा अन्य समय पर व्यक्त होने वाली मानसिक दशा एवं भावनाओं से सम्बन्धित कथन दिये गये हैं। इनमें कहीं "सही" अथवा "गलत" उत्तर जैसी कोई बात नहीं है। चूँकि हर व्यक्ति के विचार एक दूसरे से भिन्न होते हैं, इसलिये आपको इन कथनों के उत्तर केवल इस आधार पर देने हैं कि प्रैन पाने के बाद कथन या प्रश्न के संबंध में आप उस क्षण कैसा महसूस कर रहे हैं। आपके प्रश्नों के उत्तर आपकी भावनाओं के सामान्य रूप से महसूस होने वाले विचारों पर आधारित न होकर, कथन या प्रैन की तत्क्षण होने वाली प्रतिक्रिया के आधार पर होने चाहिये।

कृपया अपने उत्तर पत्र पर ही लिखें। प्रत्येक प्रैन के चार विकल्प यथा -ए एवं **cl** एवं **sal** दिये गये हैं। उनमें से एक विकल्प को चुनिये जो कि आपकी उस क्षण महसूस भावना को सबसे अच्छा प्रतिबिम्बित करता है। तत्पश्चात् चुने हुए इस उत्तर को आप विकल्प के सामने सही चिन्ह (✓) द्वारा निर्दिष्ट कीजिए। प्रत्येक प्रैन के लिए केवल एक ही विकल्प पर सही का चिन्ह अंकित करें। इस बात कब भली भाँति जाँच कर लीजिए कि प्रश्न पुस्तिका पर दिए गए कथन क्रमांक वही हों जो उत्तर-पत्र में आपके द्वारा लगाए गए सही चिन्ह वाले विकल्प के अक्षर का उत्तर क्रमांक है।

उदाहरण

(1) मैं प्रसन्नचित महसूस करता हूँ।

अत्यधिक

इ. प्रायः सत्य

ब. प्रायः असत्य

क. अधिकतर असत्य

इनमें से किसी एक उत्तर का चुनाव निश्चित ही आपको करना है। यदि इस समय आप सचमुच में ही प्रसन्नचित महसूस कर रहे हैं तो आप 'ए' का चुनाव करेंगे तथा उसी पर सही का चिन्ह (✓) अंकित करेंगे। यदि आप इस क्षण अत्यधिक अप्रसन्न महसूस कर रहे हैं तो आप 'क' विकल्प पर सही का चिन्ह (✓) लगाइये। विकल्प 'इ' एवं 'cl' के द्वारा चिन्हित उत्तर तो सामान्य प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता को ही व्यक्त करेगा। परन्तु 'cl' एवं 'sal' उत्तरों का उपयोग तब तक न कीजिए जब तक आप यह महसूस भली-भाँति न कर लें कि तत्क्षण भाव के आधार पर 'अथवा' 'DI' विकल्प को चुनने में आप असमर्थ हैं।

निम्न बातों का ध्यान रखिए :

1. अपने उत्तरों को सोचने में अत्यधिक समय न लगायें, इस क्षण आप उस कथन के संबंध में कैसा महसूस करते है, उसकें प्रथमतः महसूस होने वाले स्वाभाविक उत्तर को ही लिखें।
2. जाँच कर लें कि उत्तर पुस्तिका पर लिखें गए उत्तर क्रमांक वही हैं जो पत्र-पुस्तिका में कथन क्रमांक हैं।
3. प्रत्येक उत्तर पर प्रत्युत्तर दीजिए। चाहे आपकी दृष्टि में उस कथन का उत्तर आप पर प्रयुक्त नहीं होता हो। आपका उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखा जाएगा।
4. जो भी आपकी भावनाओं एवं विचारों में हैं, वही सत्य एवं ईमानदारी से प्रत्युत्तर रूप में लिखिए। कृपया किसी ऐसे उत्तर पर चिन्ह न लगाएँ जो सही बात कहने सा प्रतीत हो रहा है।
5. इस क्षण में जो आपकी मनःस्थिति है उसी के अनुसार ही उत्तर लिखिए।

Psychosocial aspects of physical activity (Peter Nieman, 2011)

HEALTH BENEFITS

The health benefits of regular physical activity have been studied and are well described in the literature. The psychosocial benefits of regular physical activity, which are considered to be as important as the health benefits, are less clear.

The current data regarding the impact of physical activity on children's psychosocial health confirm an associative, rather than a causal link in many studies. Definitive research is also made difficult by the Hawthorne effect. The Hawthorne effect refers to subjects who change their behaviour as a result of being part of a study.

A physical exercise is a bodily activity that develops and maintains physical fitness and overall health. It is often practiced to strengthen muscles and the cardiovascular system, and to have athletic skills. These physical exercises help in increasing the blood and oxygen flow to brain, creating new nerve cells and increasing chemicals in the brain that helps cognition.

Various studies have been conducted on effect of physical exercises on physical and psychological aspects of individuals. Such as Karp (1985), Murphy (1995), Selly (1998), Homme and Tosti (1998). Very few

literature is viewed regarding the effect of physical activities on psychological parameters of adolescents. Therefore, the present study is aimed to find out the differential impact of yoga and physical exercise on psychological variables namely anxiety, stress, depression, regression, fatigue, guilt, extraversion, arousal, intelligence and body image.

The systematic plan was made for the present study. As it is mentioned that the study design is prepost the subjects were selected in a manner that it fulfills the requirement of the design. First of listing of all the schools of Sangli District of Maharashtra is done and through randomization total 10 schools were selected after contacting personally a permission is taken for conducting the study. After getting the permission the total 300 subjects were contacted 25 subjects together at their respective schools. After they were seated comfortably and rapport building they were asked to fill the personal bio-data sheet ensuring them that all the information should be used for study purpose and also should be kept confidential. Then, the selected tests were conducted with a systematic manner and according to standardized test conduction procedures. The intervention programme of physical training is introduced for experimental group for a time of 3 months..

On the basis of results they were categorized according to necessity of prepost experimental design of the study.

Table 2 Detailed Plan of Study

| <ul style="list-style-type: none"> • Listing of Schools at Sangli District of Maharashtra • Selection of 10 Schools through randomization. • Permission From Selected schools • Distribution of subjects in two groups (Control and Experimental) • Rapport Establishment with Students at their respective institutes. • Conduction of study | | | |
|---|---|--|--------------------|
| Aspects of Study | Tests & Techniques Used | Mode of Instruction and Administration | Average time Taken |
| Pre Testing of Bot | i Groups (Control and Experimental) | | |
| Anxiety, Stress, Depression, Regression, Fatigue, Guilt Arousal, Extraversion | Eight State Questionnaire by Curran & Cattell adopted in Hindi by Malay Kapoor & Mahesh Bhargava | maximum 05 subjects at a time | 30 minutes |
| Physical Training I and 75 females) No Intervention till | ntervention of 3 months for Experimental Group (75 males and 3 months for Control Group (75 males and 75 females) | | |
| Anxiety, Stress, Depression, Regression, Fatigue, Guilt Arousal, Extraversion | Eight State Questionnaire by Curran & Cattell adopted in Hindi by Malay Kapoor & Mahesh Bhargava | maximum 05 subjects at a time | 30 minutes |
| <ul style="list-style-type: none"> • Data Collection according to the need of experimental design. • Scoring through Manuals & Scoring Keys of selected tests. • Data Analysis. | | | |

OBJECTIVES

1. To study the overall psyche of boys and girls studying in Xth grade.
2. To study the Anxiety and Stress level of selected subjects before and after imparting physical training.
3. To study the Depression and Regression level of selected subjects before and after imparting physical training.
4. To study the Fatigue and Guilt level of selected subjects before and after imparting physical training.
5. To study the Extraversion level and arousal state of selected subjects before and after imparting physical training.

HYPOTHESES

1. There is no effect of physical training on anxiety and stress of secondary students.
2. There is no effect of physical training on depression and regression of secondary students.
3. There is no effect of physical training on fatigue and guilt of secondary students.
4. There is no effect of physical training on extraversion and arousal of secondary students.

CONCLUSIONS

There is no significant difference between anxiety scores of control and experimental group during pre-test situation of students (boys & girls). It further infers that both the groups are homogeneous. There is no significant difference between anxiety scores of control and experimental group during Post-test situation of students (boys & girls). It highlights the effectivity of physical exercises on controlling anxiety of students (boys & girls).

There is significant difference between Depression scores of pre and post test situation of boys of experimental group. It infers that due to physical exercises there is a reduction in Depression level of boys. There is significant difference between Depression scores of pre and post test situation of girls of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is a reduction in Depression level of girls. There is no significant difference between Depression scores of control and experimental group during Post-test situation of students (boys & girls). It highlights the effectivity of physical exercises on controlling Depression of students (boys & girls).

There is no significant difference between Regression scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of control group. There is significant difference between extraversion scores of pre and post test situation of boys of experimental group. It further infers that due to physical exercises there is enhancement of extraversion level of boys. There is no significant difference between arousal scores of pre and post test situation of boys of control group. There is no significant difference between arousal scores of pre and post test situation of girls of control group. There is no significant difference between arousal scores of pre and post test situation of students (boys & girls) of control group.

REFERENCES:

1. Folkins CH, Sime WE. Physical fitness training and mental health. *Am Psychol*. 1981 Apr;36(4):373-389.
- Folkins CH. Effects of physical training on mood. *J Clin Psychol*. 1976 Apr;32(2):385-388.
2. Frankel A, Murphy J. Physical fitness and personality in alcoholism. Canonical analysis of measures before and after treatment. *Q J Stud Alcohol*. 1974 Dec;35(4 Pt A):1272-1278.
3. Gill, S. D. and H. McBurney (2013). "Does exercise reduce pain and improve physical function before hip or knee replacement surgery? A systematic review and meta-analysis of randomized controlled trials." *Arch Phys Med Rehabil* 94(1): 164-176.
4. Gokhan N, Binyildiz P, Gurses C, Arman A. Physical ability and mental development of 9-12 age
5. Haasova, M., et al. (2013). "The acute effects of physical activity on cigarette cravings: Systematic review and metaanalysis with individual participant data." *Addiction* 108(1): 26-37.

6. International Life Science Institute (1998) Improving Children's Health through Physical Activity: A New Opportunity, A Survey of Parents and Children about Physical Activity Patterns. http://www.ILSI/Health/PhysicalActivity_Survey.com
7. Josefsson, T., et al. (2013). "Physical exercise intervention in depressive disorders: Meta-analysis and systematic review." Scand J Med Sci Sports.
8. Kirkendall DR. Effects of physical activity on intellectual development and academic performance. In: Stull GA, Eckert HM, editors. Effects of Physical Activity in Children. Champaign: Human Kinetics; 2006. pp. 49-63.
9. Kohl, K., & McKenzie, J. (1996). Physical Exercise and Heart Stroke, Journal of Cardio-logical Dysfunctions, 3, 19.
10. Lobstein DD, Mosbacher BJ, Ismail AH. Depression as a powerful discriminator between physically active and sedentary middle-aged men. J Psychosom Res. 1983;27(1):69- 76.
11. MacMahon JR, Gross RT. Physical and psychological effects of aerobic exercise in boys with learning disabilities. Develop Behav Pediatr. 2007;8:274-7.
12. Naughton J, Bruhn JG, Lategola MT. Effects of physical training on physiologic and behavioral characteristics of cardiac patients. Arch Phys Med Rehabil. 1968 Mar;49(3):131-137. Frankel A, Murphy J. Physical fitness and personality in alcoholism. Canonical analysis of measures before and after treatment. Q J Stud Alcohol. 1974 Dec;35(4 Pt A):1272- 1278.



dg
Principal,
Bahasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

3.3.2-1

2019-20

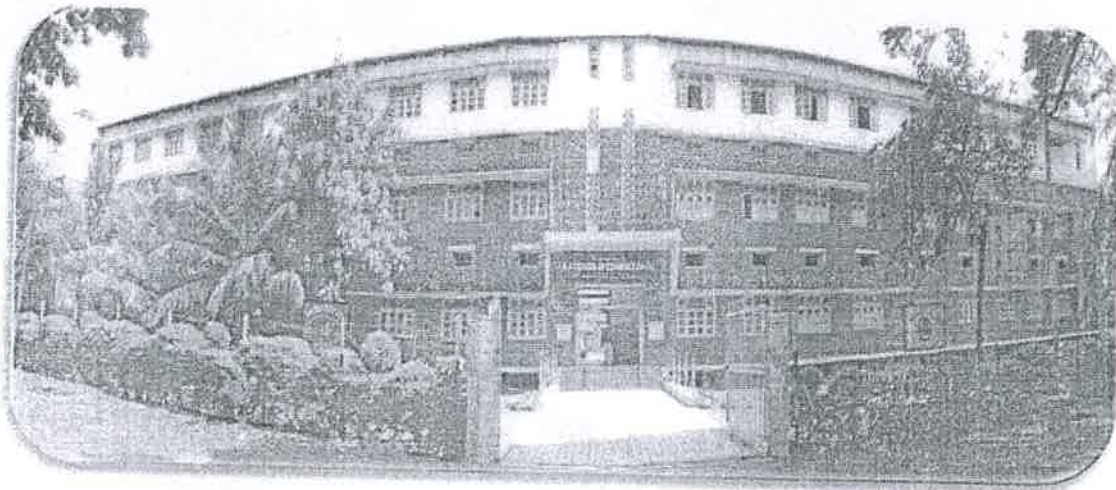


Latthe Education Society's

**GANPATRAO ARWADE COLLEGE OF
COMMERCE, SANGLI**

NACC Accredited "B" Grade

Rajnemi Campus, North Shivaji Nagar, Sangli.



**IQAC & A.P.M.C.Sangli Organized
One Day National Seminar**

On

**"Significance Of Mahatma Gandhi's
Principles In Present Context"**

Saturday, 19th January, 2019

| Sr.No. | Author Name | Title of Article / Research Paper | Page No. |
|--------|--|---|----------|
| 42. | सौ. योगिता सुनिल चौगुले | महात्मा गांधीजीचे नेतृत्वगुण | 122 |
| 43. | डॉ. डी. पी. खराडे डॉ. व्ही. व्ही. खराडे | ग्रामीण विकासाविषयी गांधीजीचे विचार | 126 |
| 44. | Mrs. Shilpa Rajendra Pachore | Economic Ideas of Mahathma Gandhi | 129 |
| 45. | Kore Manohar Appasaheb Dr. R.D. Jeur | Gandhiji's Views on Human Development | 132 |
| 46. | Mr. Rahul M. Chougule | Non - violence: The Weapon of Gandhi | 135 |
| 47. | Dr. Raju Kalmesh Sawant | A view of Gandhi's Philosophy and Politics | 137 |
| 48. | कु. कृतिका कृष्णात कांबळे | महात्मा गांधीजीचे श्रमविषयक विचार - एक अभ्यास | 140 |
| 49. | सौ. प्रतिभा अविनाश कुंभोजकर | गांधीजीच्या स्वप्नातील भारत | 143 |
| 50. | Mrs. Vidya Parshwanath Patil | Gandhi's idea on Political Philosophy | 147 |
| 51. | प्रा. संजय ओमासे | महात्मा गांधीजीच्या आर्थिक विचारांची समर्पकता | 149 |
| 52. | कु. माधुरी कुमार अलगुरे | गांधीजीचे सामाजिक विचार | 151 |
| 53. | Dr. Swarali Chandrakant Kulkarni | Gram Swarajya Concept of Mr. Gandhiji | 154 |
| 54. | Prof. Balvantrao K. Jadhav | महात्मा गांधीजीचे ग्रामस्वराज्य व ग्रामउदयोग संबंधी विचार | 157 |
| 55. | Mr. M. G. Patil | Gandhiji's Views on Swachh Bharat | 160 |
| 56. | प्रा. डॉ. जे. एस. इंगळे | महात्मा गांधींच्या विचारांचे महत्व | 163 |
| 57. | डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी-विचारधारा की प्रासंगिकता ('सत्य' और 'अहिंसा' तत्त्वों के विशेष संदर्भ में) | 166 |
| 58. | Mr. Shrikant S. Karanjkar | A Study of Recent Trends in Production and Operations Management | 169 |
| 59. | डॉ. श्रीमती. शोभा आबासाहेब मधाळे | महिलांचे सशक्तीकरणामाबत गांधीजीचे विचार | 173 |
| 60. | Ms. Jyoti Sanjay Yadav | Gandhi's Views on Women Empowerment | 177 |

ग्रामीण विकासाविषयी गांधीजींचे विचार

डॉ. डी. पी. खराडे
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी

डॉ. व्ही. व्ही. खराडे
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय,
भिलवडी.

गोषवारा :-

गांधीजींच्या मते आदर्श राज्याचे कार्यक्षेत्र समाजात शांतता, सुव्यवस्था व कायदा प्रस्थापित करणे एवढेच असावे. हे करत असतांना त्यात समाविष्ट असणाऱ्या व्यक्ती व समाजकार्याने प्रेरित असाव्यात असे गांधीजींचे मत होते.

गांधीजींनी लोकांना विधायक कार्याची व निःस्वार्थी समाज सेवेची शिक्षा दिली. विधायक कार्य करण्यास त्यांनी लोकांना प्रामुख्याने खेड्यांत पाठविले. खादी, ग्रामोद्योग, वस्त्र स्वावलंबन, शेती, अस्पृश्यता निवारण, हिंदु मुस्लीम ऐक्य, मुलौद्योग शिक्षण इत्यादी विविध प्रकारची विधायक कार्ये त्यांनी खेड्यात सुरु केली. ही कार्ये करणारे लोक निःस्वार्थी समाजहिताची तळमळ असणारे, निरहंकारी, विनम्र पण बुद्धीमान व संशोधक वृत्तीचे असे लोकशिक्षक होते. स्वातंत्र्यानंतर जो नवान्यायी, समताधिष्ठित, अहिंसक व पुरुषार्थी समाज बनवावयाचा होता त्यास आवश्यक अनुरूप व पोषक अशी लोकांची मनोभुमी त्यांना बनवायची होती. भांडणे व संघर्ष करणे, एकमेकांचा व्देष व हेवेदावे करणे या माणसांच्या नैसर्गिक विध्वंसक प्रवृत्तींचा नारा करून लोकांमध्ये परस्पर विश्वास आदर, प्रेम, सहकार्य यांसारख्या विधायक प्रवृत्ती वाढविण्यासाठी गांधीजींनी विधायक कार्याची योजना व शिकवण लोकांना दिली. यामागे गांधीजींनी भूमिका अशी होती की, विधायक कार्याने लोकांच्या मनात विधायकवृत्ती तयार झाल्या, समाज हितैशी, निःस्वार्थ सहकारी व समाज विकासाला अनुकूल अशा नैतिक वृत्ती निर्माण झाल्या म्हणजे मग राजकिय स्वातंत्र्याचे जी सत्ता लोकांच्या हाती आणावयाची होती ती लोकांच्या खऱ्याखऱ्या कल्याणसाठी वापरली जाईल व सर्वसामान्य माणूस सुखी व नितीमान बनू शकेल. आदर्श राज्याची आपली कल्पना व्यक्त करतांना गांधीजींनी रामराज्य हा शब्दप्रयोग केला.

अणुचा शोध घ्यावयाचा का परमात्म्याचा शोध घ्यावयाचा याचा विचार हा समाज करणार आहे. गांव हे मूळ घटक राहतील. तेथील नागरिक हा त्यांचे संयोजन करतील. त्याची प्रतिज्ञा प्रत्येकासाठी अन्न, पाणी, निवारा, शिक्षण आणि आरोग्य या पंचीकरणांचा प्रथम विचार होईल. हीच नियोजनाची नांदी सुरु होईल.

आजच्या या जागतिकीकरणाच्या आणि स्पर्धेच्या युगात जग हे एक वैश्विक खेडे बनले आहे त्या वैश्विक खेड्यामध्ये ज्यावेळेस गांधीजींच्या पंचीकरणांचा विकास होईल त्यावेळेस समाजात ज्ञान, क्षमता आणि कौशल्ये विकसित होतील. परिणामी मानव संसाधनाचा विकास होईल आणि पर्यायाने राष्ट्रध्दारास हातभार लागेल. असे झाल्यास भारताची सर्वाधिक लोकसंख्या ही देशास आपत्ती न ठरता उत्पत्ती ठरेल, उत्पादक ठरेल. देशाची प्रचंड लोकसंख्या ही देशाचे भांडवल होईल आणि देश प्रगतीकडे मार्गक्रमण करून विकसनशीलतेकडून विकसित राष्ट्रांच्या पंक्तीत वसेल, त्यावेळेस गांधीजींच्या ग्रामराज्याचे स्वप्न सत्यात उतरेल.

देशातील ग्रामीण भागात विधायक कार्याचे लोणी पोहोचेल आणि देशाला खरेखुरे स्वराज्य प्राप्त होईल. असे गांधीजींचे ठाम मत होतेच. खेड्यागावातील अर्धनग्न, अशिक्षित, अर्धपोटी जनतेला स्वयंशासनाची संधी ज्या दिवशी मिळेल आणि स्वतःच्या पायावर उभे राहून ग्रामिण भागातील जनता स्वतःचे पोषण करू लागेल. त्यादिवशी हा देश खरा स्वतंत्र झाला, असे मी मानीन. असे गांधीजी नेहमीच म्हणत.

महात्मा गांधींनी आदर्श राज्यांच्या निर्मितीसाठी अहिंसक समाजाची संकल्पना महत्वपूर्ण ठरविली आहे. अहिंसक समाज व आदर्श राज्यात राज्यसंस्था तसेच त्यांची सत्ता असण्याऐवजी स्वयंनिर्णयित त्याच प्रमाणे विकेंद्रीकरणावर आधारित असलेल्या समाजाची संकल्पना मांडली आहे. त्यांच्या या संकल्पनेलाच काहीर दिचारवंत ग्रामराज्य वा रामराज्य तर काही, "स्वयंपूर्ण खेडे" व्यवस्था म्हणतात.

गांधीजींच्या आदर्श राज्याचा आधार ग्राम किंवा खेडे हा आहे. देशाच्या उन्नतीसाठी गांधीजींनी खेडे हा घटक महत्त्वाचा मानला. त्यांच्या मते, अहिंसक समाजात विकेंद्रीकरण शक्य व्हावे यासाठी स्वयंपूर्ण स्वायत्त खेडे हा मुलभूत घटक असेल. प्रशासन आर्थिक नियोजन, नियम निर्मिती, न्यायदान हे सर्व खेडे या स्तरावरच होईल आणि खेड्यातील जीवनाची गुंफण व्यक्तींच्या जीवनाभोवती असेल.

गांधीजींच्या ग्रामराज्यात प्रत्येक गाव स्वःवलंबी असेल, सहकार हा त्याचा आधार असेल. ग्रामराज्यात राजकिय सत्तेचे व शक्तीचे विकेंद्रीकरण करण्यात येईल, त्यासाठी गावाचे प्रशासन पंचायतीकडे सोपविण्यात येईल. ग्रामपंचायतीकडे कायदे विषयक व शासनाविषयक सत्ता असेल. प्रत्येक ग्राम हे आपल्या प्राथमिक गरजा भागविण्यास समर्थ असेल. आपल्या सर्व गरजांच्या पूर्ततेची साधने ग्रामपंचायतीजवळ उपलब्ध असतील. अशी खेडी स्वयत्त असतील व जास्तीत-जास्त सत्ता ही ग्रामपंचायतीकडे असेल. अशा पंचायतीमार्फत सामाजिक, आर्थिक तसेच राजकिय प्रश्न सोडविण्याचा प्रयत्न केला जाईल. त्यासाठी गांधीजी खेड्यांना सामाजिक, आर्थिक तसेच राजकिय दृष्ट्या स्वयंपूर्ण बनवू पाहत होते. गांधीजींचा आदर्श व ग्राम समाज हा पिरॅमिडसारखा न रहाता गोलाकार असेल. व्यक्ती हा त्याचा केंद्रबिंदू असेल. प्रत्येक व्यक्ती स्वतःच स्वतःवर नियंत्रण ठेवील. तसेच प्रत्येकजण गावाच्या प्रशासनात भाग घेईल. गावातील लोक शांतीपूर्ण व गौरवशाली जीवन व्यतीत करतील. दुसऱ्याच्या विकासात अडथळे आणणार नाहीत. अशा

समाजात समानता असेल, व्यक्ती गावासाठी व गाव देशासाठी वलीदान करेल. अशा पध्दतीचे स्वयंपूर्ण व सुखी ग्रामराज्य अस्तित्वात आले, तर देशात मध्यवर्ती शासनाची, तसेच संपूर्ण समाज जर अहिंसामय व समतामय समाज बनला तर राज्याच्या दंडशक्तीची आवश्यकता आसणार नाही. असे गांधीजींचे मत होते.

खेडेगावातील लोकांनी परस्पर सहकार्याने सर्वांच्या गरजा भागवण्यात अशी परिस्थिती निर्माण झाली म्हणजे खेड्यांना आपल्या गरजा भागवण्यासाठी मोठय उद्योगांवर अवलंबून रहावे लागणार नाही. कुणी कुणाचे शोषण करू शकणार नाही. खरे स्वातंत्र्य आणि खरी समता यांचा उदय होईल. असा गांधीजींचा आशावाद होय. गांधीजींचे आदर्श राज्य हे लोकशाही रामराज्याचे संघराज्य असून ते स्वयंपूर्ण असावे म्हणून त्याची उभारणी पुढील धरकांवर आधारित असावी असे ते म्हणत.

१) समाज व्यवस्था :-

गांधीजींच्या ग्रामराज्यातील प्रत्येक व्यक्ती सारखीच तसेच समान असेल. अशा समाजात श्रेष्ठ-कनिष्ठ, उच्च-निच्य असा भेद असणार नाही. या समाजातील स्त्री-पुरुष, गरीब-श्रीमंत, स्पृष्ट अस्पृष्ट यांचा दर्जा समान असेल. समाजात स्वयंपूर्णता असेल पण त्याच बरोबर हा समाज निर्व्यसनीही असेल. गांधीजींच्या रामराज्यातील समाज हा पूर्णपणे नैतिक तसेच आध्यात्मिक अधिष्ठानावर आधारलेला असेल. त्याने नियमन हे राज्यसंस्थेमाफत न करता नैतिक नियमाद्वारे केले जाईल.

२) वर्णव्यवस्था :-

गांधीजींनी वर्णाश्रमाचा पुरस्कार केला असला तरी त्यात त्यांनी श्रमविभागणी व विशेधीकरणाला महत्व दिले होते. वर्णव्यवस्थेमुळे निर्माण होणारे श्रेष्ठ-कनिष्ठ, उच्च-नीच्य असे भेद त्यांना मान्य नव्हते. गांधीजींवर भारतीय संस्कृतीचा प्रभाव असल्याने त्यांना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र हे चार वर्ण मान्य होते. पण व्यक्तीचा वर्ण हा तिच्या जन्माने व वंशपरंपरेने न ठरता तिच्या कार्यानुसार व गुणांनुसार ठरवा, तसेच व्यक्तीचा सामाजिक दर्जा हा एकच असावा. प्रत्येकाच्या कामाचे वेतन व मुख्य सारखेच असावे. असे गांधीजी म्हणत. मात्र, असे असले तरी प्रत्येक व्यक्तीने आपल्या कुटुंबातील व्यवसाय करून त्यात कौशल्य प्राप्त करून राष्ट्रीय उत्पन्नात मोलाची भर घालावी. त्यासाठी सर्वांचा सामाजिक आर्थिक तसेच राजकीय क्षेत्रात सहभागाची समाज संधी देऊन सर्वांचा सर्वांगीण विकास घडवून आणावा, असेही गांधीजी म्हणत.

३) शारीरिक श्रमाला महत्व :-

गांधीजींच्या ग्रामराज्यात श्रमाला महत्वाचे स्थान असेल. प्रत्येकजण स्वतःचे अन्न मिळविण्याइतपत श्रम करेल. सर्वचजण काम करणार असल्यामुळे व्यवसायतही समानतेचे तत्व स्वीकारले जाईल. त्यामुळे सर्वांमध्ये समानता प्रस्थापित होईल.

४) शिक्षण व्यवस्था :-

गांधीजी शिक्षणाला चांगला माणूस बनविणारे, उद्योग देणारे व चरित्रसंपन्न बनविणारे साधन मानत होते. शिक्षण हे व्यक्तीचे शरीर बुध्दी व मन यांचा समतोल विकास साधणारे साधन असल्याने गांधीजींनी मूलभूत शिक्षणावर भर दिला होता. ग्रामराज्यात प्राथमिक शिक्षण मोफत, सक्तीचे व मातृभाषेतून वयाच्या ७ व्या वर्षापर्यंत देण्यात यावे, असे गांधीजी म्हणत. शिक्षणाचे समाजातील सामाजिक, आर्थिक, विषमता कमी होण्यास समदत होत असल्याने गांधीजींनी सार्वत्रीक शिक्षण, व्यक्तिस्वातंत्र्य व समाजविकास दृष्टीकोनात शिक्षणाचा संबंध जीवनाशी जोडला. गांधीजींनी शिक्षणात राष्ट्रभाषा, मातृभाषा, शिल्प शिक्षण (नई तालिम), स्त्री शिक्षण, प्रौढ शिक्षण, हरिजण शिक्षण, उच्च शिक्षण, धर्मिक शिक्षण, लैंगिक शिक्षण, शारीरिक शिक्षण अशा विविध दृष्टीकोनातून विचार करून लोकशिक्षणातून, बुध्दी व श्रम यांच्या समन्वयातून ग्रामीण भागातील लोकांच्या विकासावर लक्ष दिले आहे.

५) राज्याला विरोध करण्याचा अधिकार :-

गांधीजी आपल्या आदर्श राज्यात वा ग्रामराज्यात नागरिकांना राज्यास विरोध करण्याचा अधिकार देतात. गांधीजीयास नैतिक कर्तव्य मानतात.

६) ग्रामोद्योग -

कुटिरोद्योगांना प्राधान्य :- गांधीजींचा अवजड अद्योगधंदे, यंत्रयुग तसेच भांडवलशाहीला विरोध होता. भांडवलशाहीत श्रीमंत-गरीब, मालक-मजूर यांच्यात संघर्ष निर्माण होतो. त्यामुळे समाज स्वास्थ्य धोक्यात येते त्यासाठी त्यांनी शहरीकरणास, औद्योगिकीकरणास विरोध करून स्वदेशी, अपरिग्रह व संयम तसेच श्रीमंतांच्या हृदयपरिवर्तनावर भर दिला. गांधीजींनी ग्रामराज्य वा आदर्श राज्य, रामराज्य तसेच स्वयंपूर्ण खेड्यांची कल्पना प्रत्यक्षात आणण्यासाठी राजकीय सत्ता व शक्तीचे केंद्रीकरण करण्याबरोबर आर्थिक विकेंद्रीकरणाचे धोरण पुरस्कारले. उत्पादन साधनांच्या केंद्रीकरणातून समाजात आर्थिक विषमता निर्माण होऊन त्यातून भांडवलदार व मजूर असे वर्ग निर्माण होतात. म्हणून त्यांनी मोठया उद्योगाबरोबर त्यांच्या केंद्रीकरणास विरोध केला. त्याऐवजी लघुउद्योग तसेच कुटिरोद्योगांना प्राधान्य दिले. गांधीजींच्या मते, भारत हा शेतीप्रधान देश आहे. ग्रामीण भागात मोठया प्रमाणावर बेकारी आहे त्यावर उपाय म्हणून शेतकरी वे शेतमजुरांनी शेतीचा हंगाम संपल्यावर किमान कौशल्यावर हस्त व्यवसायावर आधारित ग्रामोद्योग व कुटिरोद्योग उभारून वस्तूचे उत्पादन करावे. त्यामुळे ग्रामीण भागातील लोकांचे दारिद्र्य व बेकारी तर नष्ट होईलच. पण ग्रामीण जनतेस आवश्यक असणाऱ्या जीवनावश्यक वस्तू वे सेवा गावातच उपलब्ध होतील आणि त्यांचे आर्थिक जीवन सुसध्य व स्वयंपूर्ण होईल. त्यासाठी गांधीजींनी कुटिरोद्योगात चरख्यावर सूतकताई, हातमागावर खादी कापड विणणे, गूळ तयार करणे, तेल घाणे चालविणे, शेती अवजारांची निर्मिती तसेच दुख्खी इत्यादी प्रकारचे व्यवसाय सुचविले आहेत. यामुळे ग्रामीण भागातील प्रत्येक व्यक्तीस काम मिळून ती स्वावलंबी होण्या बरोबर ग्रामही स्वयंपूर्ण बनेल. गांधीजी उद्योगांच्या व अर्थव्यवस्थेच्या केंद्रीकरणामुळे

19-20
3.3.3

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

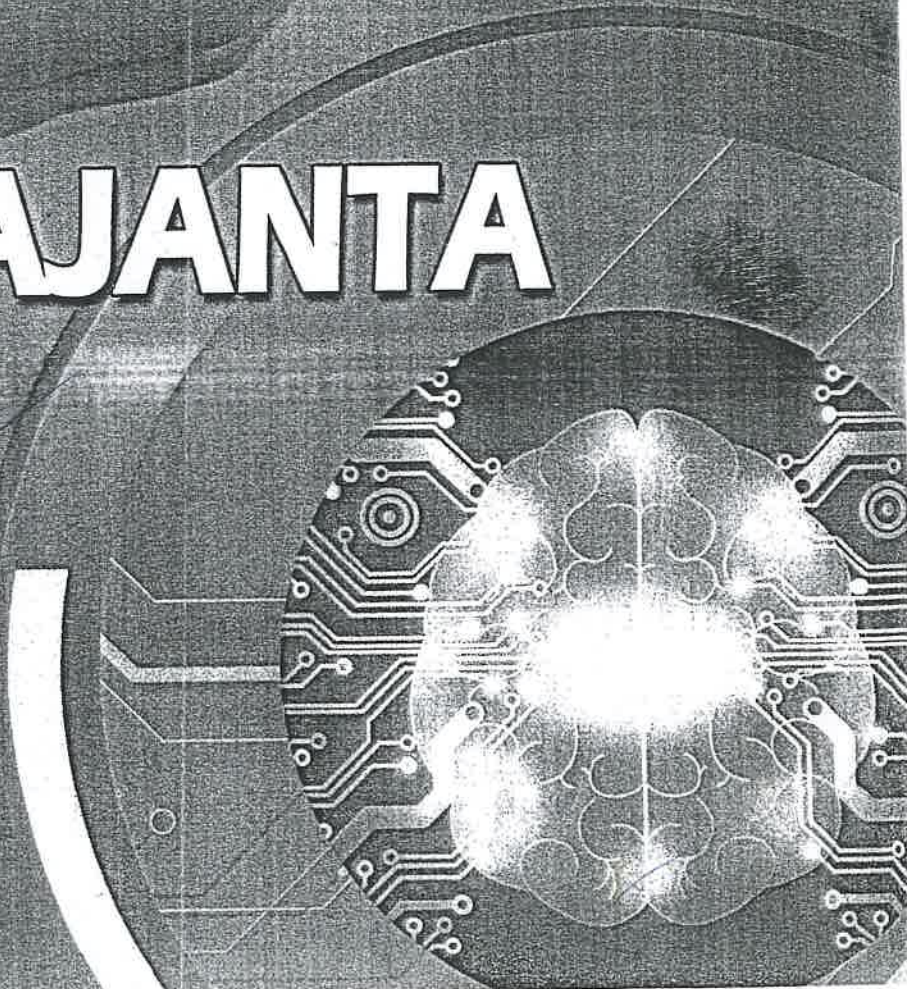


AJANTA

Volume 4, Issue 4
January-March-2020
English Part-II

Impact Factor/Indexing
2019-6.399
www.sjifactor.com

**Ajanta
Prakashan**



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX

Issue - I

January - March - 2020

English Part - II

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

www.sjfactor.com



❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

ds

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Dhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

∞ CONTENTS OF ENGLISH PART - II ∞

| S. No. | Title & Author | Page No. |
|--------|--|----------|
| 13 | Reflection of Human Values in Graham Green's <i>The Heart of the Matter</i> Dr. Shubhangi Baburao Shinde | 81-85 |
| 14 | Responsibility Versus Attraction: Psychoanalysis of Robert Frost's 'Stopping by Woods on a Snowy Evening' Dr. Ujwala Vijay Patil | 86-90 |
| 15 | Need of Human Values in Indian Society and Family Dr. V.A. Mane | 91-95 |
| ✓ 16 | Media Coverage of Women's Sports - Gender Inequality Mr. Mahesh Rangrao Patil | 96-100 |
| 17 | Literature and Human Values : A Dispersed Meditation on Andre Brink's <i>Philida</i> Madhav D. Pawar Dr. P. M. Patil | 101-105 |
| 18 | Human Values Reflected in Kazuo Ishiguro's Novels Megha Pradip Nikam | 106-109 |
| 19 | Reflection of Human Values in R. K. Narayan's <i>The Guide</i> Miss Shilpa Eknath Kamble Mr. Vinayak Dnyandeo Khot | 110-113 |
| 20 | A Study of Role and Challenges of Woman Empowerment through Self Help Groups Miss. Moshina Noormahanmad Mulani | 114-120 |
| 21 | Gender Equity and Human Values in India Miss. Nilakhe Amruta Shital | 121-125 |
| 22 | Reflection of Human Values in Culture and Environment Prof. A. D. Pachore Prof. P. B. Bhandare | 126-129 |
| ✓ 23 | Reflection of Human Sensibility in Mahesh Dattani's 'Bravely Fought the Queen' Mr. Rajendra Hanmant Bhandare | 130-134 |
| 24 | Evolution of Green Chemistry and its Impact on Human Values Shri. Rajesh Maruti Kharatmol | 135-141 |

19-20
3-3-3

VOLUME - IX, ISSUE - 1 - JANUARY - MARCH - 2020

- AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

16. Media Coverage of Women's Sports - Gender Inequality



Mr. Mahesh Rangrao Patil

Director of Physical Education, Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilwadi.

dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Solapur.

Introduction

Sport is one area where gender inequality is strongly evident. The problem is more socio-psychological than anything else. Today, as we stand at the start of a new millennium it is deplorable that men and women are treated so differently, especially in sport. Women make up 50% of the world's population but they are not given equal opportunities. Men are still considered the better sex and this is one of the reasons why the world is yet to produce a female Michael Schumacher, Tiger Woods, Mike Tyson or a Sachin Tendulkar.

We see the women golfers like Nonita Laal, tennis players like Sanya Mirza, Badminton players like Saina Nehwal, Aparna Popat, Weightlifter Karnam Malleshwari, Boxer Marycom and 20-20 World Cup runner women cricket team. It is a great struggle and requires great efforts to become so proficient and successful in any game.

Sport in India is yet to reach its peak. The Mughals ruled India for centuries, the Britishers for another one and a half-century. It was only after 1947, when we achieved independence that we started developing as a modern nation, with special rights to half of its citizens namely women. Indian women are still trying to establish their own identity. Women in India are still unable to take a stand for themselves. Even before taking part in 400 meter hurdles the girl has to pass so many more social hurdles. This project is an attempt to analyse the problems that a girl, who wants to shape her life as a sports woman.

Women and Sports

Women's participation in sport has a long history. It is a history marked by division and discrimination but also one filled with major accomplishments by female athletes and important advances for gender equality and the empowerment of women and girls.

The report of the National Commission for Youth (2004) has traced in detail the participation of women in sports before and after 1947. The first Indian women to participate in the Olympics was in 1952. In 1975, the Government of India instituted the National Sports

festival for women with a view to promote women's sports. The National festival is preceded by competitions at the local and the district level.

Media and Sport

Sports coverage is hugely powerful in shaping norms and stereotypes about gender. Media has the ability to challenge these norms, promoting a balanced coverage of men's and women's sports and a fair portrayal of sportspeople – irrespective of gender.

Nathalie Koivula writes about Gender Stereotyping in Televised Media Sport Coverage she says, 'Sports spectators usually experience sports through different mass media. To deepen our understanding of the cultural values embedded in sports and to explore current values and power structures regarding men and women, it is necessary to investigate the potential effect that mass media may have in influencing beliefs about gender-appropriate sport behavior. The present study examined samples of televised sports in Sweden during 1995/96 (1,470 minutes), with a follow-up examination in 1998 (528 minutes). The results indicated gender differences regarding both quantity and type of coverage. For example, less than 10% of the total examined sports news time covered female athletes, and less than 2% of the time was used to cover women athletes in sports categorized as masculine. It seems that televised media sports coverage continues to reinforce constructions of divisions along lines of gender and to reproduce traditional expectations regarding femininity and masculinity.'

A female player related an incident where a dog of a male Indian player received news coverage over the Indian women's team (cricket) in the sports section of a national newspaper. There was a passing mention of the Indian women's cricket team winning a championship whereas the dog hogged all the limelight.

Mary Jo Kane and Helen J Lenskyj (1997) did a study on media treatment of female athletes. Issues of gender and sexuality. They reported that over the last two decades, sports sociologists have convincingly demonstrated media representation of women's identities in sport link their athleticism to deeply held values regarding femininity and sexuality

(Duncan, 1990; Kane and Greendorfer (1994) Lenskyj (1986) both print and broadcast journalism these representations create the prevalent world view that female athletes are by definition, a less authentic (13) version of their male counterparts. This is because sport media images and stories provide us with endless symbols, myths and spectacles that equate male athleticism with strength, courage and competence while simultaneously equating female

athleticism with sexual appeal femininity and a so called limited physical (biological) capacity (Kane,1996).this stereotypic coverage constitutes a common sport culture in which men have power and women (by comparison) do not, in large measure because women.s athletic accomplishments are trivialized by the media (Duncan and Hasbrook, 1988).

Media Coverage of Women in Sport

Women have made a consistent and significant contribution to Indian sport at all levels, yet their achievements on the whole receive limited coverage by the mass media. The quality and quantity of the coverage of women's sport by the media is not an accurate reflection of the amount of sport played or watched by women. Media coverage is generally inadequate and selective. A high media profile is essential for attracting sponsorship, spectators and other sources of financial support.

Unbalanced Sports Coverage in the Indian Media

Sportstar ignored Indian female players.

In August 2003, female long jumper Anju Bobby George became the first Indian athlete ever to win a medal, a bronze, at the World Athletics Championships, with a leap of 6.70 metres. No Indian athlete, not even the greats like P. T. Usha and Milkha Singh, had won any medal in the world championships before Anju Bobby George.

Sania Mirza is the first female winner of a Grand Slam tennis title from India. Sania is world doubles rankings, and has many singles titles to her name. However, any reader of Sportstar would be left wondering who in the world is Sania Mirza?

Koneru Humpy won the world u-10 chess championship in Cannes (1997), the world u-12 title in Spain (1998), the world u-14 crown in Spain (2001) and world junior championship in Athens (2002). Koneru became Asia's youngest Woman International Master in 1999, and India's youngest Women's Grand Master in 2001. Doesn't Koneru Humpy, and through her India's unknown and unsung women chess players, deserve a cover story by Sportstar?

The Indian women's hockey team won the 2002 Commonwealth hockey gold in Manchester and the 2003 Afro-Asian Games hockey gold in Hyderabad. In both cases, the Indian team upset much stronger teams like England, South Africa, New Zealand and South Korea en route to the titles. Many of India's women hockey players are tribals from the Jharkhand-Sundergarh area of India, who came up the hard way in sports, and in life itself. Can't Sportstar do a human interest story on our tribal golden girls?

Analysis shows lack of women's sports coverage in media

In 1996, the Australian Sports Commission (ASC) carried out a survey of the media coverage of women's sport over a two-week period. Some of the results of this study are highlighted below.

Gender breakdown of sports media coverage, 1996

| | Women's | Mixed | Men's |
|------------|---------|-------|-------|
| Radio | 1.4% | 3.5% | 95.1% |
| Television | 2% | 41.8% | 56.2% |
| Newspaper | 10.7% | 10.2% | 79.1% |

(Source: Phillips 1997; mixed sports coverage reports on both male and female participants)

Now a day the media coverage of women's sports in India is very low as compare to men's sports.

Conclusion

Low media profile of women's sports affects women and sport in several ways, • The people are unaware of women's sporting events and women's achievements in sports .There are few widely known positive role models for women and girls and women and sports with a low media profile don't gain sponsors.

Now a day Media plays an important role. It is needed that Media gives a equal coverage of women's sports. Starts Pro-Kabbadi ,IPL Cricket for women .Sponsors come forward for women's sports.

References

1. Bharatiya Stree Shakiti, A study on gender issues in sport in India, National Commission for women ,New Delhi Jan-2005
2. Duncan, M.C. (1990). Sports photographs and sexual difference: Images of women and men in the 1984 and 1988 Olympic Games. *Sociology of Sport Journal*, 7, 22-43
3. Duncan, M.C., and Hasbrook, C.A.(1998). Denial of power in televised women.s sports. *Sociology of Sport Journal*, 5, 1-21.)
4. Kane, M.J. 7 Lenskyj, H. J. (1997). Media Treatment of female Athletes: Issues of Gender and Sexualities. *Mediasport: Cultural Sensibilities and Sport in the Media Age*, Lawrence Wenner (Ed.), 1997.

5. Kane, M.J. and Greendorfer, S. (1994). The media's role in accommodating and resisting stereotyped images of women in sport. In P. Creedon (Ed.), Women, media, and sport: Challenging gender values (pp. 28-44). Thousand Oaks, CA: Sage Publications.
6. Kane, M.J.(1996). Media coverage of the post Title IX female athlete: A feminist analysis of sport, gender, and power. Duke journal of GenderLaw and Policy, 3(1), 95-127.
7. Koivula Nathalie, Gender Stereotyping in Televised Media Sport Coverage.
8. Lenskyj, H. (1986). Out of Bounds: Women, sport and sexuality. Toronto: Women.s Press.
9. <http://bharatiyahockey.org/patrakaar>
10. http://www.dsr.nsw.gov.au/assets/pubs/industry/info_mediawomen.pdf
11. <https://en.unesco.org/themes/gender-equality-sports-media>



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Patne, Dist. Sangli.

19-20

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX

Issue - I

January - March - 2020

MARATHI PART - I

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF MARATHI PART - I

| अ. क्र. | लेख आणि लेखकाचे नाव | पृष्ठ क्र. |
|---------|---|------------|
| १ | न. म. जोशी यांच्या साहित्यातील मूल्यात्मकता प्रा. डॉ. सोमनाथ महादेव दडस | १-५ |
| २ | साने गुरुजींच्या 'श्यामची आई' या आत्मचरित्रात्मक लेखनातून प्रतिबिंबित होणाऱ्या जीवन मूल्यांचा अभ्यास प्रा. डॉ. नंदकुमार धनवडे | ६-९ |
| ३ | महाराष्ट्रातील थोर शिक्षणमहर्षींच्या कार्यामधून प्रतिबिंबित होणाऱ्या जीवनविषयक मूल्यांचा चिकित्सक अभ्यास प्रा. डॉ. अनिल तानाजी पाटील | १०-१३ |
| ४ | कर्मवीर अण्णांच्या 'कमवा आणि शिका' या योजनेतून विद्यार्थ्यांमध्ये संक्रमित होणाऱ्या मूल्यांचा चिकित्सक अभ्यास प्रा. डॉ. केशव रामभाऊ मोरे | १४-१६ |
| ५ | खेळाद्वारे मानवी मूल्यांचा विकास प्रा. ज्योती तानाजी गावडे | १७-२१ |
| ६ | जागतिकीकरणावर मानवी मूल्यांचा प्रभाव प्रा. मच्छिंद्रनाथ मारुती सूर्यवंशी | २२-२७ |
| ७ | जागतिकीकरण आणि मानवी मूल्ये प्रा. आर. एस. माने | २८-३१ |
| ८ | लिंग समानतेच्या दृष्टीने भारतीय युद्ध प्राविण्य स्त्रियांचा अभ्यास प्रा. रीना रामचंद्र कांबळे | ३२-३५ |
| ९ | स्वराज्य आचारसंहिता उत्तम मानवी मूल्ये संहिता प्रा. डॉ. काशिलिंग रघुनाथ गावडे | ३६-४१ |
| १० | भारतीय स्त्री आणि मानवी हक्क प्रा. कदम संभाजी धोंडीराम | ४२-४५ |
| ११ | महात्मा गांधी यांची मुलोधोगी शिक्षणपद्धती आणि वर्तमान स्थिती कु. श्रद्धा ज्ञानेश्वर धुमाळ | ४६-४९ |
| १२ | भारतीय समाजात मानवी मूल्यांचे महत्व प्रा. डॉ. विनोदकर व्ही. एस. | ५०-५३ |

१२. भारतीय समाजात मानवी मूल्याचे महत्व

प्रा. डॉ. विनोदकर व्ही. एस.

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली.

प्रस्तावना

मानवी जीवनात, आर्थिक, सामाजिक, राजकीय, सांस्कृतिक क्षेत्रात, देशाच्या विकासात मानवी मूल्याला महत्त्वाचे स्थान आहे. विशेषतः हुकूमशाही राजवटी पेक्षा लोकशाही शासन व्यवस्थेत मानवी मूल्याची जाणवत आणण्या पध्दतीने करण्याचा प्रयत्न केला जातो. पृथ्वीवरील सर्व प्राण्यात मनुष्य हा बुद्धीवान प्राणी आहे. मनुष्य आपल्या बुद्धीच्या सहाय्याने अश्मयुगातून आधुनिक म्हणजे ज्ञान, विज्ञान, तंत्रज्ञान युगात प्रवेश केलेला आहे. प्रसिद्ध विचारवादी, आशावादी व उदारमतवादी अर्थतज्ञ अँडम्स स्मिथ (1723.1790) यांनी आपल्या विचारत मानवी मूल्याला (मूल्याला) अधिक महत्व दिले आहे. त्यांच्यामते सर्व संपत्तीचा व सर्व विकासाचा केंद्र बिंदू मानवच आहे. त्याचे प्रतीक प्रामाण्य, त्याग, बलिदान यामुळे समाजात मानवी मूल्याचे महत्व अधिक आहे. मूल्य म्हणजे सजावट, श्रम, काळ, व्यक्तीचे, वस्तूचे महत्व, किंमत किंवा उपयोगिता होय. अर्थशास्त्रात वस्तूची किंमत वाढली की पैशाचे मूल्य कमी होते व वस्तूची किंमत कमी झाली की पैशाचे मूल्य वाढते हे सत्य आहे. पण मानवी मूल्य हे त्याच्या अज्ञान, विचारसरणी, कार्यक्षमतेवर अवलंबून असते. उदा. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, छत्रपती शाहू महाराज, महत्त्वाचे मानवी मूल्य असलेले फुले, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, आपणा भाऊ साठे, विविध कर्तृत्वान महिला, यांचे मानवी मूल्य समाजासाठी व देशासाठी केलेल्या कार्याचे मूल्य शब्दात व पैशात मापन करता येत नाही. हे मानवी मूल्य विद्यालयाची उंची फूट पटीने मांजल्यासारखे होईल.

1.1 संशोधन अभ्यासाची उद्दिष्टे

1. मानवी मूल्याचा आढावा घेणे.
2. आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रातील विकासामध्ये मानवी मूल्याच्या योगदानाचा अभ्यास करणे.
3. मानवी मूल्याचे महत्व समाजा पर्यंत पोहचविणे.

1.2 संशोधन अभ्यासाची गृहीतके

1. हुकूमशाही, भांडवलशाही, ध्वस्तपेक्षा, लोकशाही व समाजवाद विचारसरणी मध्ये मानवी मूल्याचा जाणवत अधिक केली जाते.
2. राजकारण, भागवाद, सगळवाद यामुळे काही प्रमाणात मानवी मूल्याची हेळसांड होत आहे.

1.3 संशोधन अभ्यास पध्दती

मानवी मूल्याचे महत्व याची मांडणी करताना दुय्यम साधन सामुग्रीचा अधिक वापर केला आहे. वर्तमानपत्रातील विविध लेख, संदर्भ, पुस्तके, इंटरनेट इ. माहितीच्या आधारे वस्तूनिष्ठ पध्दतीने लेखन करण्यात येत केलेला आहे.

MARATHI PART - I



Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

1.4 मूल्याचे विविध प्रकार

मूल्याचे अनेक प्रकार पडतात उदा. नैसर्गिकमूल्य, बाजारमूल्य, अंतर्गतमूल्य, वाहयमूल्य, नैतिकमूल्य, उपयोगितामूल्य, श्रममूल्य, जीवनमूल्य, विनिमयमूल्य, साधनमूल्य, साध्यमूल्य, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिकमूल्य, भौतिक मूल्य, राजकियमूल्य, न्यायमूल्य, व्यावसायिक मूल्य, सौंदर्यमूल्य इ.

या सर्वमूल्य निर्मितीचा सूत्रधार मानव आहे. ज्या प्रमाणे मृत्यू हा प्रत्येकाला अटळ आहे. त्याप्रमाणे समाजात परिवर्तन, बदल सध्या अटळ आहेत. कारण अश्रम व मध्ययुगात ज्या गोष्टी मानवाला स्वप्नात पाहण्यास मिळत नव्हत्या त्या गोष्टी आज उघड्या डोळ्याने रस्त्यावर पहात आहे. मानवी मूल्य हे व्यक्तीच्या ज्ञान, अनुभव, विचार, कृती, प्रमाणिकपणा, चारित्र्य, परोपकारवृत्ती, संस्कार, संस्कृती, नन्नता, सहनशिलता, आवाज, भाषाशैली या सर्व गोष्टींवर अवलंबून आहे.

1.5 असामान्य व्यक्तीच्या कार्याचे सामाजिक मूल्य

सर्व प्रकारच्या मूल्य निर्मितीचा खरा पाया मानवाचे श्रम आहेत. मानवाने बुद्धीच्या सहाय्याने 'दुनिया झुकती है झुकाने वाला चाहिए' या तत्वाने संपूर्ण जगात विविध क्षेत्रात क्रांतीकारक बदल घडवून आणले आहेत. ज्ञान, भाषा, कर्म, तत्त्व, न्याय, प्रेम, सहानुभूती काही वेळेला संघर्ष करून मानवाने मानवाचे कल्याण केले आहे. उदा. 1776 साली अमेरिकेतील प्रथम राष्ट्र हे ३ हुकूमशाही प्रवृत्तीला आळा घालून अजब विचारवंत लोकां यांनी न्याय, स्वातंत्र्य, समता व लोकशाही यांचे मूल्य समाजाला दिले. माणूस हा जन्मतःच स्वतंत्र असतो. हे निसर्गवादी तत्व समाजासमोर मांडले. त्यामुळे समाजात जादकावृत्तीने समाजाला अंधारातून प्रकाशाकडे घेऊन गले.

अमेरिकेचा माजी राष्ट्राध्यक्ष अब्राहम लिंकन यांनी अमेरिकेतील मुलाकरी उध्वत मोडून काढली व लोकांसाठी लोकशाही निर्माण केली. लोकांचेच, लोकांच्यासाठी लोकांनी चालविलेले राज्य म्हणजे लोकशाही हे लोकांसाठीच समाजाला द्यायचे तत्त्व त्यांनी आपल्या मुलाच्या कल्याणासाठी प्रथमतः सामाजिक बांधिलकी, संस्कृत, लोकशाही, लोकशाही, जोपासण्यासाठी त्यांनी हेडमास्तरांना लिहिलेले प्रसंगिक, प्रेमळ, आपुलकीचे पत्र हे मानवी मूल्य समाजासमोर होते हे विसरता येणार नाही.

उर्दू वावासाहेब आंबेडकरांनी वाईट विचारांची होळी केल्यासाठी मनुस्मृती जाळली. अस्पृश्य लोकांच्यावर अंधार होणाऱ्या अन्याय, अत्याचाराला त्यांनी वाचा फोडली. अंधन करणाऱ्यांना चांगल्या धर्माची व कर्माची जाणीव करून दिली. सर्व भारतातील मानव जातीला न्याय, सुख, हक्क समाधान देण्यासाठी भारताचे संविधान लिहिले. आज देशातील प्रत्येक मानवाला आचार, विचार, भाषण, नेतृत्व व कर्तृत्व वाखाणण्याचे जे स्वातंत्र्य मिळाले आहे ते फक्त उर्दू वावासाहेबांच्या मुळेच हे आपल्याला विसरता येणार नाही. त्यांनी सर्व कार्य मानवी मूल्य जोपासण्यासाठी केले आहे. पण काही कर्मठ लोक अशा महान व्यक्तीच्या मूल्याला जाती धर्माच्या बंडात अडकवून ठेवण्याचा प्रयत्न करत आहेत. जो धर्म माणसाला माणसा प्रमाणे वागणूक देत नाही तो धर्म काय मानवाचा? म्हणून त्यांनी आशा धर्मावर वैचारिक हल्ला चढविला होता. माणूस जातीने नव्हे तर त्याच्या कर्माने तटा हात. हे नित्यमूल्य त्यांनी जगाला पटवून दिले.

महात्मा फुले यांनी भटशाहीच्या मक्तेदारीला हादरा दिला. सर्वसामान्य माणसालाही माणसा प्रमाणे जगता याच म्हणून शिक्षणाचा प्रचार व प्रसार केला व मानवी मूल्य जोपासले. 1868 मध्ये अशस्पृश लोकांना स्वताच्या चाड्यातील पाण्याचा हौद पिण्यासाठी खुला करून मानवतावादाचे मूल्य जोपासले होते.

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम यांनी शुन्यातून विश्व निर्माणे केले व आदर्शमूल्य समाजात रुजविली. त्यांनी साधी राहणी उच्चविचार, वक्तशीरपणा, प्रामाणिकपणा, वैज्ञानिकवृत्ती, राष्ट्रभक्ती, राष्ट्रीयएकात्मता, नम्रता, सहनशीलता, दूरदृष्टी ही मानवी मूल्ये जोपासली व समाजापुढे चांगला आदर्श निर्माण केला.

स्वामी विवेकानंद यांना युवकांचे प्रेरणास्थान/युवारंभ समजतात. त्यांच्यामध्ये विद्वत्ते बरोबर नम्रता होती. उदा. त्यांनी शिकारांच्या 1893 मधिल धर्म परिषदमध्ये 'माझ्या बंधुनो व भागिनिनो' या शब्दाचा उच्चार करून संपूर्ण जगाला झिकले होते. त्यांनी एकाच वेळी धर्ममूल्य, शब्दमूल्य, देशमूल्य जगाला पटवून दिली होती. तसेच मानववृद्धांनी वैध्व धर्मातील 22 तत्वांच्या (प्रतिज्ञेच्या) माध्यमातून मानवाला मानवी मूल्याची जाणीव करून दिली.

ज्यांनी आपले ज्ञान, अनुभव, समाजाच्या प्रगतीसाठी खर्च केले. त्यांनी अनेक मानवतावादाची मानवाला लोभ, मोह, मत्सर या पासून दूर राहून माणसाला माणसासारखे जगण्याचे आदर्शमूल्य समाजाला घालून दिली आहेत. तसेच महात्मा गांधी यांनी सत्य, अहिंसा यांना मानवी मूल्ये मानून (ब्रिटिश) शक्तीला झुकविले. थोडक्यात अनेक भारतीय रत्नांनी मानवी मूल्य जोपासण्याचे कार्य केले. त्यांच्या विचार व कृतींचे मूल्य अननोल आहेत. त्याची मूल्ये आपण आत्मसात केली पाहिजेत. त्याशिवाय आपला व देशाचा विकास होणार नाही.

1.8 सोशल मिडियामुळे मानवी मूल्याची होत असलेली हेळसांड

बदल हा समाजाचा स्थायी स्वभाव आहे. पण हा बदल आपल्याच संस्कार, संस्कृतीवर घालून घालून आहे. उदा. एकत्रकुटुंब पध्दतीतील संस्कार व विभक्त कुटुंब पध्दतीतील संस्कार यामध्ये खूप फरक पडलेला आहे. याला प्रसरण गॅप असे म्हणतात. विज्ञान तंत्रज्ञानमुळे माणूस माणसापासून दूरावला जात आहे. संवाद हरविला आहे. संस्कार व संस्कृती फाटत निघाली आहे. सत्य, अहिंसा, त्याग, बलिदान, परोपकार, निष्ठा, प्रामाणिकपणा व सहकार्य यांना कलाटणी मिळाली आहे. या ऐवजी जातीयवाद, प्रांतवाद, विषयवाद, धर्मवाद, राजकियवाद अशा वादामुळे सत्य व निष्ठा लोप पावत आहेत. विचार व कृतीत फरक जाणवतो आहे. भौतिकवाद, सुखवाद, भ्रष्टाचार, चंगळवाद, भोगवाद यामुळे चांगल्या विचार व कृतीला मूठमाती मिळत आहे. न्याय व समाज व्यवस्था राजकिय सत्ताधिषांच्या भुडीत बंद झाली आहे. प्रत्येकजन जनहित, देशहित पाहण्याऐवजी स्वहित, मक्तेदारी, सत्ता, पैसा, प्रतिष्ठा याकडे आकर्षित झाल्याने मानवी मूल्याची हेळसांड होत आहे. उदा. खून, मारामारी, बलत्कार, एकतर्फी प्रेम ही चांगल्या मूल्याची लक्षणे नाहीत. थोर पुरुषांची नावे पुढारी भाषणात चवी पुरते वापरतात. उदा. भारतीय मूल्य जोपासणारे त्यामुळे न्याय, स्वातंत्र्य, सभता, बंधुत्व ही मूल्ये लोप पावतील. त्यामुळे यामधून मानवी कल्याण कधीच साधले जाणार नाही. देशहितापेक्षा स्वहिताला अधिक महत्त्व येईल.

उदा. उत्तर कोरियाचा सनकी हुकूमशहा किम जोंग उन यांनी उत्तर कोरियात मनमानी कारभार करून मानवी मूल्ये पायदळी तुडवत आहे. त्याने व्यक्ती स्वातंत्र्यावर अनेक जाचक अटी, नियम, बंधने घातलेली आहेत म्हणजे त्याच्या देशातील स्त्रियांनी लाल लिपस्टिक ओढावर लावण्यास त्यांनी बंदी घातली आहे. त्या देशामध्ये कन्नड परिधान करणे सुध्दा त्याच्या मर्जीनुसार लोकांना करावे लागते. त्यांना एका उच्चपदस्य अधिकाऱ्याने केवळ सल्ला केलं नाही म्हणून त्याची मोठी ज्ञाडून हत्या केली होती. त्याच्या देशातील घराचे बांधकाम व कलर सुध्दा ते हुकूम देतील त्याप्रमाणे करावे लागते. हे सर्व मानवी मूल्याचे हेळसांड केल्या सारखी वाटत नाहीत का?

संदर्भ साधने

1. यशवंत पाटणे 'चैतन्यांचे चांदणे', संस्कृती प्रकाशन पुणे - आकृती जुलै 2017 पान 61
2. डॉ. यशवंत मनोहर 'डॉ. आंबेडकरांनी मनुस्मृती का जाळली' - प्रथम आवृत्ती 2005 पान 11
4. नेट का वापर
5. दै. वृत्तपत्रातील अग्रलेख
6. त्यांच्या आवातर वाचनातील संकलित माहिती



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Patas, Dist. Sangli.



Impact Factor - 7.675

ISSN - 2278-9308

B.Aadhar

Multidisciplinary International Research Journal

Peer-Reviewed Indexed

April - 2020

SPECIAL ISSUE - CCXXVII (227)

**Sciences, Social Sciences, Commerce,
Education, Language & Law**

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Dr.Dinesh W.Nichit
Editor :
Principal

Sant Gadge Maharaj Art's Comm,Sci Collage, Walgaon.Dist. Amravati.

Aadhar INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



INDEX

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|--|--|----------|
| 1 | महानुभाव पंथाच्या वाड्मयाची वाटचाल : एक दृष्टिक्षेप | डॉ. गणेश क. टाले | 1 |
| 2 | अन्न प्रक्रिया उद्योगाचे महत्व आणि समस्या | प्रा. डॉ. विनोदकर विजयकुमार सुरेंद्र | 6 |
| 3 | ग्राहक संरक्षण चळवळीचा सामाजिक आणि आर्थिक विकासातील सहभाग | शिल्पा सु. बांगडे / प्रा. डॉ. शालिनी के. पांडे | 10 |
| 4 | खाद्यपदार्थ संरक्षण करण्याच्या पध्दतीचा अभ्यास | प्रा. डॉ. विद्या एम. ठवकर | 13 |
| 5 | महिला सक्षमीकरणात स्वयंसहाय्यता महिला बचत गटाची भुमिका,' एक अध्ययन | प्रा. मुरलीधर रेवतकर | 18 |
| 6 | बौद्ध धम्म व पर्यावरण संवर्धन | प्रा. डॉ. राहुल वि. दखणे | 23 |
| 7 | भारतातील दारिद्र्य एक समस्या | प्रा. डॉ. गावडे एस. एम | 26 |
| 8 | स्त्री सक्षमीकरण आणि आर्थिक स्वातंत्र्य | डॉ. वासंती निचकवडे | 31 |
| 9 | संत गाडगे बाबांचे व्यक्तीमत्त्व आणि कीर्तन ही भारतीय लोकसंगीताला मोठी देण. | प्रा. शरद पुंडलीक गजीभिये | 34 |
| 10 | व्यक्तिमत्त्व और मनोवैज्ञानिक कल्याण में सम्बन्ध का अध्ययन | डॉ. दीपा बलखंडे | 39 |
| 11 | प्राचीन सिंधू संस्कृतीचा न्हास: प्रतिकूल पर्यावरण एक भौगोलिक अध्ययन | प्रा.संजीव विश्वनाथ भुयार | 44 |
| 12 | संगीत शिक्षा में वैज्ञानिक उपकरणों का योगदान | डॉ. प्रज्ञा मेश्राम | 50 |
| 13 | गोटूल (युवागृह) :- एक सामाजिक व शैक्षणिक संस्था | डॉ. प्रमोद ना. घ्यार | 53 |
| 14 | सामाजिक आणि सांस्कृतिक दृष्टिकोनातून 'उपमितिभवप्रपंचकथा' या काव्याचे विवेचन | डॉ. ओमकुमार टोम्पे | 56 |
| 15 | छोटानागपुर खंटकट्टी भूमि-व्यवस्था एक अवलोकन | प्रो. डॉ.अंजू शरण | 63 |
| 16 | ग्रामीण व शहरी भागातील विद्यार्थ्यांच्या (मुल व मुली) शैक्षणिक आकांक्षा स्तराचा तुलनात्मक अभ्यास | डॉ.गुणवंत सोनोने | 68 |
| 17 | हस्तक्षेपाच्या कार्यानीति - तार्किक भावनिक वर्तन 'उपचार पद्धती (REBT) | शिल्पा स. येळणे | 76 |
| 18 | The Development And Shaping Of Environmental Laws In India. | Mr. Nilesh V. Dhande | 80 |
| 19 | Women empowerment: problems and prospects Status Of Women Empowerment In India | Laxmi Subhash Parihar | 83 |



अन्न प्रक्रिया उद्योगाचे महत्व आणि समस्या

प्रा. डॉ. विनोदकर विजयकुमार सुरेंद्र

अर्थशास्त्र विभाग बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी

भारत हा कृषीप्रधान विकसनशिल देश आहे. शेती भारतीय अर्थ व समाज व्यवस्थेचा कणा आहे. शेती मानवाला फक्त अन्नधान्ये पुरवित नाही तर निवार, कच्चा माल, रोजगार, परकिय चलन, औषधी वनस्पती व उत्तम पर्यावरण पुरविण्याचे काम करत असते. सर्व विकास शेतीच्या विकासावर अवलंबून आहे. शेती व्यवसाय प्राथमिक क्षेत्रात येतो. यामध्ये शेती, पशुपालन, कुकूटपालन, मासेमारी, जंगल व्यवसाय, दूधव्यवसाय यांचा समावेश केला जातो.

शेती व्यवसाय हा निसर्गाच्या लहरीवर अवलंबून असल्याने शेतमाल हा हंगामी, अनिश्चित उत्पादन, अनिश्चित रोजगार, अनिश्चित उत्पन्न, तसेच शेतमाल विस्कळित, कच्चा, ओबड-धोबड, आकाराने, वजनाने मोठा व नाशवंत स्वरूपाचा असतो. औद्योगिक वस्तू प्रमाणे दिर्घकाळ टिकून राहणारा नसतो. तसेच शेतमाल दिर्घकाळ साठवून ठेवता येत नाही. कारण याला जागा, जमिन अधिक लागते, गोडावून मध्ये साखऱ्यांची पोती थप्पी लावून ठेवतो त्याप्रमाणे शेतमाल एकमेकावर दिर्घकाळ रचून ठेवता येत नाही.

शेतमाल खराब होवू नये यासाठी त्याच्यावर योग्यवेळी, योग्यपध्दतीने, ताबोडतोब प्रक्रिया करणे महत्वाचे असते. सध्या भारतात विविध प्रकारच्या शेतमालावर प्रक्रिया करणाऱ्या कारखान्यांची संख्या वाढत निघाली आहे.

१.१ षोष निबंधाची उद्दिष्टे :

- १) शेतमालावर प्रक्रिया करणाऱ्या विविध उद्योगांचा अभ्यास करणे.
- २) शेतमाल प्रक्रिया उद्योगांचा आर्थिक, सामाजिक, राजकिय विकासातील योगदानाचा

वस्तूनिष्ठ पध्दतीने अभ्यास करणे.

- ३) शेतमालाच्या उत्पादनावर प्रक्रिया करण्यापूर्वी व प्रक्रियेनंतरच्या किंमतीचा तुलनात्मक अभ्यास करणे.

१.२ षोषनिबंधाची गृहितके :

- १) १९९१ च्या खुल्या धोरणामुळे भारतात शेतमालावर प्रक्रिया करणाऱ्या उद्योग व्यवसाय करणाऱ्यांची संख्या वाढत आहे.
- २) प्रक्रिया उद्योग/व्यवसायामुळे लोकांचे जीवनमान, राहणीमान सुधारत आहे.
- ३) शेतमाल उत्पादन करणाऱ्या शेतकरी, शेतमजूर यांच्या तुलनेत प्रक्रिया करणाऱ्या उद्योजक व व्यवसायिक यांची आर्थिक परिस्थिती चांगली दिसून येते.

१.३ संषोधन पध्दतीचा वापर :

या प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये प्राथमिक व दुय्यम साधन सामुग्रीचा एकत्रित वापर केले आहे. प्राथमिक साधन सामुग्रीमध्ये परिसरातील बेकरी उत्पादक, छोटे व्यावसायिक उदा. भेळगाडा, ज्युस सेंटर, बेकरी दुकानदार, महिला बचत गटामार्फत चालणारे लोणचे, पापड या छोट्या व्यवसायाला भेट देवून निरीक्षण केले आहे. तसेच संदर्भपुस्तके, अहवाल व इंटरनेट मधील माहितीचा आधार घेतला आहे.

१.४ संकल्पनेचा अर्थ :

अन्न प्रक्रिया म्हणजे एखादया वस्तूवर, पदार्थावर प्रक्रियाकरून ती वस्तू किंवा पदार्थ खाण्यास अधिक उपयुक्त बनविणे, त्याच्यामुळे अधिक उपयोगिता निर्माण करणे होय.

१.५ अन्न प्रक्रियेची व्याप्ती, स्वरूप व महत्व :

अन्न प्रक्रियेचा खरा पाया शेतीक्षेत्रातून निघणारा कच्चा माल आहे. उदा. माणूस किती ही हुशार, कल्पक, धाडसी असला तरी तो हवे शिवाय जगू शकत नाही. त्याप्रमाणे निसर्गाचा आधार (शेती) घेतल्याशिवाय वस्तूवर प्रक्रिया करता येत नाही. उदा. अन्नधान्ये, कडधान्ये, गळीतधान्ये, ऊस, कापूस, विविध फळे, फुले, मसाले वनस्पती, दूध इ. म्हणून अन्ननिर्मिती व अन्नप्रक्रियेचा पाया निसर्ग आहे. शेतमालाचे महत्व/मूल्य त्याच्या श्रेणीनुसार बदलत असते. अर्थशास्त्रीय भाषेत वस्तूचे मूल्य म्हणजे वस्तूची फक्त पैशात व्यक्त केलेली किंमत नव्हे तर एखादया घटकाचे वस्तूचे मानवी जीवनातील महत्व होय. उदा. आपण हवेची किंमत (मूल्य) पैशात मोजू शकत नाही किंवा आईने आपल्या मुलासाठी बनविलेले पदार्थ किंवा सेवाचे मूल्य आपण पैशात व्यक्त करू शकत नाही.

काही वस्तूचे मूल्य किंवा किंमत त्या वस्तूच्या श्रेणीनुसार बदलत असते. उदा. एखादया माणसाला खूप भूक लागलेली आहे म्हणून घरातील गहू किंवा गव्हाचे पीठ खाऊ शकत नाही. त्या ऐवजी घरामध्ये पाव, बिस्किट, केक असेल तर थोडेफार खाऊन आपली भूक शमवू शकतो. याचा अर्थ अन्न प्रक्रियेला मानवी जीवनात व जेवणात सुध्दा खूप महत्व आहे. वस्तूचे मूल्य श्रेणीनुसार ठरते म्हणजे उदा. १) प्रथमश्रेणी - गहू → २) गव्हाचे पीठ → ३) फेडीव सांजा (रवा) → ४) पीठापासून बनविलेले विविध बेकरी पदार्थ इ. थोडक्यात एकाच वस्तूचे परिस्थितीनुसार व उपभोग पातळीनुसार त्याची किंमत (मूल्य/महत्व) वाढत जाते.

सध्या ज्ञान, विज्ञान व तंत्रज्ञान व नवनविन संशोधन यामुळे संपूर्ण जगाचा चेहराच बदलला आहे. प्रत्येक माणूस आधुनिकता व भौतिक सुख व चांगल्या राहणीमानाकडे वळलेला आहे. सध्या फास्ट फूड चा जमाना आलेला आहे. उदा. मोठमोठया उद्योगात अन्नप्रक्रिया करणाऱ्या उद्योजकाना जेवढे महत्व आहे त्या पेक्षा घरामध्ये, रस्त्यावर, बाजारपेठेत अन्नपदार्थावर प्रक्रिया करून व्यवसाय करणाऱ्यांना चांगले दिवस आले आहेत असे म्हणावे लागेल. उदा. बेकरीतील विविध अन्नपदार्थ व सजविलेला केक याला अधिक मागणी असते. भेळगाडावाला चिरमुरे, फरसाना, टोमॅटो, कोंथबीर, कांदा, चिंचकोळ, मिरची व अन्य वस्तू आपल्या स्टाईलने भांड्यात प्रक्रिया करून जोरात धंदा करतो. ज्यूस सेंटर, वडापावचा गाडा, फिजा, बर्गर, दाबेली, ढोकळा, चिरमुरे, पेंगदाणे, विविध बेकर्स हे सर्व प्रक्रिया करणारे व्यवसाय आहेत. म्हणजे "छोटा पॅक मोठा धमाका" होय.

घरामध्ये स्वयंपाक करणारी स्त्री सुध्दा स्वयंपाक करित असताना कळत न कळत पणे विविध वस्तूवर प्रक्रिया करून त्या पदार्थांमध्ये उपयोगिता/उपयुक्तता आणत असते. उदा. एखादा पदार्थ आपल्याला आवडल्यास आपण पुन्हा मागून घेतो. याचे श्रेय तिने बनविलेल्या पदार्थाच्या उपयोगिता (समाधान देणारे पदार्थ) मध्ये असते. उदा. दूध → दही → ताक → कढी ढोकळा → मट्टा → इ. या गोष्टी साध्या असल्या तरी प्रक्रिया महत्वाची आहे. आपल्याला मोठया उद्योगातील प्रक्रिया दिसून येतात. पण घरात घराबाहेर छोटया मोठया व्यक्तीकडून अन्नपदार्थावर होणाऱ्या प्रक्रिया लवकर दिसून येत नाहीत किंवा आपण त्याकडे लक्षपूर्वक दुर्लक्ष करत असतो.

१.६ अन्न प्रक्रियेतील क्रांती :

१८४४ मध्ये नॉर्मन बोरलॉग यांनी अमेरिकेतील मेक्सीको येथे जगातील पहिली हरित क्रांती घडवून आणली. तर भारतामध्ये १९६७/६८ मध्ये डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन यांनी हरित क्रांती घडवून आणली तेव्हा पासून यंत्र व तंत्रांच्या सहाय्याने अनेक क्षेत्रात शेती क्षेत्राच्या

संदर्भात अनेक क्रांत्या घडून आलेल्या आहेत. शेती क्षेत्रातील क्रांती ही विविध क्षेत्रातील उद्योग व्यवसायाला, व्यापार, वहातूक, दळणवळण, रोजगार, लोकांचे राहणीमान, जीवनमान, उत्पन्न, उत्पन्न, बचत, गुंतवणूक, राष्ट्रीय उत्पन्न या सर्व घटकांच्या विकासाला पोषक ठरलेली आहे. शेती क्षेत्रात क्रांती होणे याचा अर्थ कच्च्यामाल अधिक निर्माण होणे होय. बहुसंख्य प्रक्रिया उद्योग हे कच्च्यामालावर आधारित आहेत.

अमेरिकेतील एका गुलामाचा मुलगा जॉर्ज कार्कर प्रसिध्द कृषीतज्ञ (१८६०-१९४६) ध्येयवादी, श्रमवादी कार्कर यांनी त्यावेळी शोगदाण्यापासून १०५ व टोमॅटो पासून ११५ उपपदार्थ बनविता येतात हे सहप्रयोग सिध्द करून दाखविले होते. सध्या भारतात शेती क्षेत्रामध्ये हरित, धवल, निल, श्वेत, सुवर्ण, लाल, गुलाबी, पितकांती, सुवर्ण व इंद्रधनुष्यकांती इत्यादीमुळे प्रक्रिया उद्योगाला ही चालना मिळाली आहे.

तक्ता क्र. १

कृषी मालावर प्रक्रिया करून भारतात घडवून आणलेल्या विविध प्रकारच्या क्रांत्या

| अं. क्रं. | क्रांतीचे नांव | क्रांतीचे स्वरूप |
|-----------|----------------|---|
| १ | हरित क्रांती | अत्याधुनिक यंत्रांच्या व तंत्रांच्या सहाय्याने शेती उत्पादनात केलेली प्रगती |
| २ | धवल क्रांती | दूध उत्पादनात व दुग्धजन्य उत्पादनात घडवून आणलेली प्रगती |
| ३ | श्वेत क्रांती | कापूस उत्पादनात घडवून आणलेली प्रगती |
| ४ | निल क्रांती | मत्स्य उत्पादनात घडवून आणलेली प्रगती |
| ५ | पित क्रांती | तेल बियांच्या उत्पादनात घडवून आणलेली प्रगती |
| ६ | लाल क्रांती | मांस व टोमॅटो उत्पादनात घडवून आणलेली प्रगती |
| ७ | गुलाबी क्रांती | कांदे व सफरचंद उत्पादनात घडवून आणलेली प्रगती |
| ८ | सुवर्ण क्रांती | फलोत्पादन, ज्युट उत्पादन |

आधार - डॉ. एम. एन. शिंदे व डॉ. अनिल सत्रे

भारतीय अर्थव्यवस्था स्पर्धा परीक्षा उपयुक्त पुस्तक पान नं. १२

वरील क्रांतीमुळे प्राथमिक क्षेत्रातील कच्चा मालाच्या उत्पादनात प्रचंड वाढ झाली. शेतमाल हा हंगामी, नाशवंत, विस्कळीत, वनज, आकार व नैसर्गिक परिस्थिती निहाय उत्पादन असल्याने त्याच्यावर योग्यवेळी, योग्य पध्दतीने प्रक्रिया घडवून आणणे महत्वाचे असते.

सध्या प्रत्येक शेतमालावर उदा. अन्नधान्ये, तृणधान्ये, कडधान्ये, गळीतधान्ये, फळपीके, फूलपीके, मसाले पीके, नगदी पीके, फळभाज्याची पीके, प्राण्याचे मांस, दूध, औषधी वनस्पती अशा अनेक वस्तूवर व पदार्थावर प्रक्रिया करून वस्तू दिर्घकाळ टिकविण्याचा प्रयत्न करतात. वस्तूवर प्रक्रिया केल्यामुळे वस्तूचा दर्जा, आकार, रचना, टिकाऊपणा, सुंदर, आकर्षक, गुणवत्ता, रंग, चव यामध्ये प्रभावकारक बदल होतात. परिणामता वस्तूच्या मूल्यात देखील वाढ होते. यामुळे अर्थ व समाज विकासाला चालना मिळते. उदा. प्रक्रिया केल्यामुळे → मागणीत वाढ उत्पादनात वाढ → रोजगारात वाढ → उत्पन्नात वाढ → बचतीत वाढ → भांडवलगत वाढ → गुंतवणूकीत वाढ पुन्हा उत्पादनात वाढ होवून अर्थव्यवस्था तेजीकडे वाटचाल करते.

१.७ अन्न प्रक्रियेची उत्पादने :

अन्न प्रक्रिया उद्योगात भारत हा जगात ५ व्या क्रमांकावर आहे. भारत हा कृषी प्रधान देश असल्याने आज ही ६० टक्के लोकसंख्या कृषी व्यवसायात कार्यरत आहेत. उपलब्ध होणारा नाशवंत कृषी कच्चांमाल व उपलब्ध लोकसंख्या व श्रमीकांची संख्या लक्षात घेता. उपलब्ध लोकसंख्येच्या गरजा भागविने व लोकांच्या हाताला रोजगार देण्यासाठी शेतमाल्यावर प्रक्रिया होणे. आवश्यक आहे म्हणून महाराष्ट्रात मुख्यमंत्री कृषी व अन्न प्रक्रिया योजना व देशात प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना कार्यरत आहे. देशांत सरकार व खाजगी उद्योजक, कंपनी यांच्या मार्फत या उद्योगाला चालना मिळत आहे. उदा. पुण्यातील मिटकॉन ही संस्था अन्न प्रक्रियेसाठी अनेक कोर्सेस चालू केले आहेत.

भारतात दूधावर प्रक्रिया करून भुकटी, श्रीखंड, आम्रखंड, बासुंदी, लस्सी, ताक, वेगवेगळ्या प्रकारची मिठाई, चक्का इ. बनवितात. साखर उद्योगात खादय व अखादय अशी अनेक वस्तू बनवितात. गहू व सोयाबीन पासून वेगवेगळे बेकरी पदार्थ बनवितात. आंबा या पासून ज्यूस, आंबावडी, बर्फी, आम्ररस, शीत पेये, लोणचे, मुरांबा, आंबापोळी, गोळी इ. बनवितात. केळी व बटाटे या पासून वेपर्स, पापड, जेली, जॅम बनवितात. विविध फळा पासून बनविलेले रस जास्त काळ टिकविण्यासाठी सोडियम बेझोएट हे रासायनिक संरक्षक द्रव्ये टाकत असतात व जॅम, जेली, मुरांबे, लोणचे, बनवितात. यामध्ये आंबा, आवळा, बोर, सफरचंद, पपई, जांभूळ इ. वरील सर्व व्यवसायात असंख्य लोकांना रोजगार उपलब्ध झाला आहे.

१.८ अन्न प्रक्रिया उद्योगासमोरील समस्या :

या उद्योगासामोर अनेक समस्या आहेत उदा.

- १) कच्चांमाल (शेतमाल) हा निसर्गावर अवलंबून आहे. सध्या पर्यावरणात प्रतिकूल बदल होत आहेत. त्यामुळे वेळेवर कच्चांमाल उपलब्ध होत नाही.
- २) कामगारांच्या गती शिल्लतेचा अभाव.
- ३) शेतीचे उत्पादन शास्त्रशुध्दपणे घेतले जात नाही.
- ४) भांडवल, बीजपूरवठा, वित्तपूरवठा योग्यवेळी योग्य पध्दतीने उपलब्ध होत नाही.
- ५) शेतमाल काढणे व पोहचविण्यासाठी मजूरांची कमतरता.
- ६) कल्पक धाडसी, प्रशिक्षित, संयोजकांची कामतरता जाणवते.

संदर्भ सूची :

- १) स्थानिक बेकरी व्यवसायीक यांच्या बेकरीस प्रत्यक्ष भेट/चर्चा
- २) यशवंत चांदणे "चैतन्याचे चांदणे", संस्कृती प्रकाशन आवृत्ती १५ वी पान ३३
- ३) डॉ. एम. एम. शिंदे व डॉ. अनिल सत्रे "भारतीय अर्थव्यवस्था" MPSC/UPSC स्पर्धा परीक्षा पुस्तक, व्दीतीय आवृत्ती. पान नं १२
- ४) डॉ. जयसिंगराव पवार " विज्ञान तंत्रज्ञान व प्रगती", फडके प्रकाशन, पान नं १७०



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhiwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

Impact Factor-7.675 (SJIF)

ISSN-2278-9308

19/20

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2020

SPECIAL ISSUE-CCI

भारताच्या जडणघडणीत विचारवंतांचे योगदान



Chief Editor

Prof. Vinay S. Gawande

Director

Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor

Dr. Dhanraj W. Nigam

Principal

Sant Gadge Maharaj
Ares Comm. Sci College,
Walgaoon Dist. Amravati.

Executive Editor

Dr. Anil D. Vaidya
Associate Professor
Govt. College
of Education
Buldana Dist. Buldana



This Journal is indexed in:

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadhar-social.com

Aadhar PUBLICATIONS



| | | | |
|----|--|---|-----|
| 22 | भारतीय विचारवंतांचे भारताच्या जडणघडणीत रुसो | योगदान: जीन जॅकसीन प्रा.डॉ.सौ.मेघा शेखर मोहरील | 97 |
| 23 | राजर्षी शाहू महाराजांचे शिक्षणविषयकविचार व कार्य | प्रा. मोहन बाबुराव चव्हाण | 103 |
| 24 | स्त्री शिक्षणाबद्दल आंबेडकरांचे विचार | प्रभावती चं. चव्हाण | 110 |
| 25 | महात्मा जोतीबा फुले व डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य आणि त्यांचा प्रभाव | डॉ. माया प्र. शिरखेंडकर | 113 |
| 26 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे दलितांविषयी शैक्षणिक विचार | रश्मी अरुण महाजन | 119 |
| 27 | छत्रपती शिवाजी महाराजांचे वतनदाराबाबतचे धोरण | डॉ. घनश्याम सुबराव महाडीक | 121 |
| 28 | सामाजिक न्यायाचे शिल्पकार - डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर | प्रा.डॉ.माधव केरबा वाघमारे | 124 |
| 29 | राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांचे सामाजिक विचार | प्रा. डॉ. एन. एच. खोडे, | 127 |
| 30 | "प्लेटोची आदर्श राज्याची संकल्पना" | डॉ. प्रा. अश्विनी अविनाश खापरे, | 133 |
| 31 | भारताच्या विकासात डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान | डॉ.नागसेन नामदेव मेश्राम | 135 |
| 32 | भारतीय समाजात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांचे योगदान | प्रा. डॉ. श्रीराम खाडे | 139 |
| 33 | स्वामी विवेकानंद यांचे शैक्षणिक विकासातील योगदान | प्रा.डॉ.संजय भी.खडसे | 146 |
| 34 | जोतीराव फुलेंचे स्त्री शिक्षण विषयक विचार व कार्य | प्रा. सतीश कर्णाड | 151 |
| 35 | सामाजिकसेवा हीच ईश्वरसेवा : संत गाडगेबाबा | प्रा. डॉ. के.एल. देशपांडे | 156 |
| 36 | भारतीय विचारवंत आणि त्यांचे विचार | संदीप महदेवराव हाडोळे | 161 |
| 37 | महात्मा फुले यांचे सामाजिक व वैश्वीक विचार | प्रा.डॉ.अनिल बळीराम वानखडे | 166 |
| 38 | भारताच्या जडणघडणीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक योगदान | डॉ. देवेन्द्र एस. रंगाचार्य | 169 |
| 39 | स्वामी विवेकानंद - अलौकिक ज्ञानयोगी | डॉ. भावना विवेक पाटोळे | 172 |
| 40 | महात्मा फुले व डॉ. आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार | प्रा.डॉ. सुधाकर भुयार | 178 |
| 41 | राष्ट्रसंताच्या ग्रामगीतेतील महिला सक्षमीकरण संदर्भातील विचार आणि स्त्रीवाद | डॉ. अण्णा प्र. वैद्य | 181 |
| 42 | महात्मा ज्योतिबा फुलेंचा शिक्षण विषयक दृष्टिकोन | प्रा.मनोहर लक्ष्मणराव वंजारे | 185 |
| 43 | मानवतावादी क्रांतीवीर महात्मा फुले | प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर | 191 |

Page
No.

1

5

10

15

20

27

33

38

42

47

53

57

61

65

70

73

77

80

84

92

मानवतावादी क्रांतीवीर महात्मा फुले

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी ता. पल्लूम जि. सांगली पिन कोड ४१६३०३

महात्मा फुले, शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महात्मा गांधी यांसारखे भारतीय विचारवंतांची माहिती सांगणे म्हणजे हिमालय पर्वताची उंची फूट पड्डेने मोजल्या सारखी आहे. महात्मा फुले यांचा विचार केंद्र्यास ते एक उत्तम शेतकरी, ग्रामाणिक विद्यार्थी, शिक्षण प्रेमी, समाज सुधारक, उत्तम लेखक, विचारवंत, क्रांतीवीर, युग प्रवर्तक, अर्थतज्ञ, शिक्षणतज्ञ व मानवतावादी, द्रष्टे, महामानव होते.

१.१ शोध निबंधाची उद्दिष्टे :-

- १) महात्मा फुले यांच्या सर्व विषया स्पर्शी साहित्याचा आढावा घेणे.
- २) महात्मा फुले यांच्या लेखन साहित्याचा आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक बटकावार झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.
- ३) महात्मा फुले व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या समान विचारांचा आढावा घेणे.

१.२ संशोधनाची गृहितके :-

- १) महात्मा फुले व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या विचारांचा प्रभाव भारतीय समाजावर कायम आहे.
- २) महात्मा फुले हे सर्व विषयस्पर्शी, मानवतावादी, साहित्यिक होते.
- ३) महात्मा ही जनतेने दिलेली पदवी रास्त आहे.

१.३ संशोधन पध्दती :-

महात्मा फुले यांच्या महान कार्याचा आढावा घेण्यासाठी त्यांच्या साहित्याचा वस्तुनिष्ठ पध्दतीने अभ्यास करण्यासाठी दुय्यम साधन सामुग्रीचा अधिक वापर केला आहे. त्यांची लिहिलेले ग्रंथ तसेच इतरांनी त्यांच्या कार्याकरीता विषयी लिहिलेली पुस्तके, माहिती अग्रलेख, विविध वृत्तपत्रात आलेले लेख संकलित करून विचार मांडण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.

१.४ मानवतावादी विचारवंत :-

महात्मा फुले यांचा कालखंड विचारात घेतल्यास (१८२७ - १८९०) या कालखंडात भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था ब्रिटिशांच्या गुलामगिरीत अडकून पडलेली होती. अनेक कारणामुळे समाजात दुःख, दारिद्र्य, बेकारी, विषमता, अज्ञान, अंधश्रद्धा, जातीभेद, वर्णभेद, धर्मभेद, मकतेदारी, गुलामगिरी, फसवणूक, अडवणूक, अस्पृश्य व सर्वसामान्य लोकांकडे वगण्याचा संकुचित दृष्टीकोन अशा वातावरणामध्ये फुले यांनी समाजातील टांभिक, कर्मठ लोकांचा गेष पाहून समाजातील दुःखाला, विषमतेला, अन्यायाला वाचा फोडण्याचे केलेले कार्य खरोखर कौतुकार्ह्य आहे.

भगवान गौतम बुध्द यांच्या तत्वाप्रमाणे प्रज्ञा, शील व करुणा यामध्ये सुरेख संतुलन साधलेला महामानव म्हणजे महात्मा फुले होय. गौतम बुध्दाने मानसाच्या कार्यानुसार चार प्रकार पाडले होते. त्यातील एक प्रकार म्हणजे जो माणूस स्वःताच्या सुखाचा विचार न करता समाजाच्या कल्याणासाठी ही अडथळा न आणता स्वःता बरोबर समाजाची ही प्रगती बडवून आणतो तो उत्तम माणूस होय. फुले यांना त्यांच्या आयुष्यात समाजाकडून छळ, तिरस्कार, अपमान, दुःख व शिवाय काहीच मिळाले नाही. पण चंदना प्रमाणे स्वःता झिजून दुसऱ्याला मधुर

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi, Tal. Palas, Dist. Sangli.

192

देण्याचा प्रामाणिक प्रयत्न केला. धर्मभेद, जातीभेद, वर्णभेद हे इश्वराने निर्माण केले नसून समाजातील कर्मठ, संधीसाधू लोकांनी स्वःताच्या स्वार्थासाठी निर्माण केलेली व्यवस्था आहे असे त्यांचे स्पष्ट मत होते. कोणत्याही माणसाची जात महत्त्वाची नसून कर्तृत्व व विचलता महत्त्वाची असते. माणूस जातीने नव्हे तर त्याच्या कर्माने श्रेष्ठ ठरतो असे त्यांचे मत होते. समाजातील दुःख, दारिद्र्य, विषमता, गुलामगिरी, मक्तेदारी मोडून काढायची असेल तर शिक्षणाशिवाय पर्याय नाही. अज्ञान हेच सर्व विषमतेचे मूळ कारण आहे. अस्पृश लोकांचे दुःख त्यांना पहावन नव्हते म्हणून त्यांनी समाजातील व घरातील लोकांचा द्वेष पत्कारून १८४८ मध्ये पुण्यात कुलीची पहिली शाळा उघडली. १८५१ मध्ये दुसरी शाळा काढली. १८५५ मध्ये रात्रशाळा सुरू केली. १८८२ मध्ये हंटर आयोगा समोर शिक्षणा संदर्भात निवेदन देवून भारतातील शैक्षणिक विषमतेला व पूर्वग्रह दूषित शिक्षण देणाऱ्या कर्मठ लोकांच्या व्यवस्थेला वाचा फोडण्याचे महान कार्य केले. शिक्षण क्षेत्रातील आम्हण वर्गाची मक्तेदारी त्यांनी मोडून काढली. तत्कालीन परिस्थितीमध्ये अस्पृश लोकांची साक्षरता त्यांच्या अंगावर पडली तर पाप समजणारे ब्राम्हण प्रतिगामी व पूर्वग्रह दूषित मनोवृत्तीमुळे बहुजन समाजाला निष्ठेने, प्रामाणिकपणाने ज्ञानार्जन करणार नाहीत हे फुल्यांनी चांगले ओळखले होते म्हणून शिक्षक हा बहुजन समाजातला असावा (कुणबी, माळी, धनगर) असे त्यांचे मत होते.

१.५. फुले, शाहू, आवेंडकर यांच्या विचारातील साम्य :-

समाजातील काही माणसे जन्मतःच मोठी असतात. काही माणसावर मोठेपण लादले जाते. तर काही माणसे स्वःताच्या कर्तृत्वाने मोठी होतात. महात्मा फुले, छत्रपती शाहू महाराज व डॉ. बाबासाहेब आवेंडकर हे स्वःताच्या कष्टाने, त्यागाने, कार्यकर्तृत्वाने मोठी झालेले महामानव होते. फुले व आवेंडकर यांच्या जीवन चरित्राचा अभ्यास केल्यास स्वःता दुःख, यातना, निराश्रयता, अपमान, बहिष्कार या गोष्टीला सामोरे जावून समाजातील दुःख, दारिद्र्य, बेकारी, निराश्रयता, जातीभेद, गुलामगिरी, अन्याय याला वाचा फोडण्याचे कार्य यांनी केले आहे. या महान मानवसृष्टीकडून आपल्या विचारात शिक्षणाला अधिक महत्त्व दिले आहे. समाजातील जातीभेदाला मुदमाती देण्यासाठी बाबासाहेबांनी १९२७ ला महाड येथील चवदार नळ्याचे सत्याग्रह सुरू केला. १९२७ ला जाती व्यवस्थेला मान्यता देणाऱ्या मनुस्मृतीला जाळून टाकले. ब्रम्हा, विष्णू, शंकर, अगवान श्रीकृष्ण व राम यांना देव मानणाऱ्या अंधश्रध्दाळू समाजाला जागे करून नव्यस्थिती जनतसमोर मांडली. विशेष म्हणजे बाबासाहेबांच्या विचारावर महात्मा फुले यांच्या विचारांना व कृतीचा अधिक प्रभाव होता म्हणून त्यांनी गौतम बुध्द, संत कबीर व महात्मा फुले यांना आपले दैवत मानले.

महात्मा फुले यांनी सुद्धा १८६८ ला अस्पृश निवारणासाठी स्वःताच्या घरातील लोकांचा हाद अस्पृशाना मोकळा करून दिला होता. दोघे ही उत्तम लेखक. उत्तम समाज सुधारक, अस्पृश लोकांचे कैवरी, उत्तम विचारवंत, अर्थतज्ञ, कृषीप्रेमी, ग्रंथप्रेमी, विचाराप्रमाणे कृती करणारे, दृष्टे, मानवतावादी, समाजवादी होते. बाबासाहेबांनी मूकनायक, बहिष्कृत भारत जनता यांमध्ये लेखन करून समाज जागृतीचे कार्य केले. शाळा, कॉलेज काढून समाजाला प्रेरणा दिली. फुले यांनी सुद्धा सत्यशोधक समाजाची स्थापना करून सत्य उजेडात आणले. शेतकऱ्यांचे आसूड, गुलामगिरी, ब्राम्हणांचे कसब, सार्वजनिक सत्यधर्म, इशारा या सारख्या पुस्तकांच्या लेखनातून समाज परिवर्तन घडवून आणण्याचे कार्य केले. दोघांनी ही हिंदू धर्मातल्या वाईट गोष्टींवर हल्ला चढविला होता. जातीभेद ही देवाने निर्माण केलेली व्यवस्था नसून समाजातील संधीसाधू, स्वार्थी, कर्मठ लोकांनी स्वःताच्या सोयीसाठी निर्माण केलेली व्यवस्था आहे असे त्यांचे मत होते. दोघांचे ही विचार हे नैतिक मूल्यावर आधारीत होते.



थोडक्यात दोघांच्या विचारात शेती, शिक्षण, दारिद्र्य, विषमता जातीभेद, अज्ञान, अंधश्रद्धा, धर्मातील दधिकपणा, व्हेष, राजकारण, अर्थकारण, व्यवहार, निती, परिवर्तन, प्रबोधन या सर्व घटकांना स्पर्श झालेला आहे. दोघे ही समाजवादी विचारवंत होते. दोघांच्या ही आचार, विचार व कृतीचा पगडा मानवजातीवर आहे. दोघांचे ही वक्तृत्व, कवृत्व व नेतृत्व उत्तम होते.

१.६ विचार व कृतीत समन्वय साधनारा महात्मा :-

समाजात काही बोलबेवडे लोक असतात. पोटात एक व ओठावर एक अशा पध्दतीने भाषणवाजी करून पोटभरणारे भुरटे समाज सुधारक खूप पाहावयास मिळतात. पण महात्मा फुले हे बोलण्याप्रमाणे कृती करणारे निष्ठावंत सुधारक होते. त्यांनी स्वःताच्या घरावर नुळणीपत्र देवून समाजाचा उधार केला. उदा. त्यांना स्त्रीयांच्या बदल खूप आट्ट होता. स्त्रीयांवर होणाऱ्या अन्याया बदल त्यांना खूप गग होता. म्हणून स्त्रियांना समाजात सन्मानाने वागवायचे असेल तर त्यांना शिक्षण दिले पाहिजे. त्यांनी १८४८ ला, १८५१ ला व १८५५ ला मुलींच्यासाठी शाळा काढल्या. प्राथमिक शिक्षणापासून उच्चशिक्षणा पर्यंतची शिक्षणाची दारे खुली करून दिली. तसेच १) १८६० मध्ये त्यांनी विधवांचा पुर्नविवाह घडवून आणला २) १८६३ मध्ये बालहत्या प्रतिबंधक गृहाची स्थापना केली ३) १८६४ मध्ये पुण्यात सारस्वत जातील एक पुर्नविवाह घडवून आणला ४) ब्राम्हणाच्या विधवा काशीबाईच्या यशवंत नावाच्या मुलाला स्वःता दत्तक घेतले होते. ५) १८६८ ला अस्पृश लोकांना पाण्याचा हौद खुला केला. ६) भटशाहीचा खरा चेहरा त्यांनी जगायमोर आणला. ७) समाजातील मक्तेदारी व विषमतेला मूठ माती दिली.

वर्गल सर्व विचार व कृती समाजकंटकाना पटली नव्हती म्हणून फुले घरी-घरातील कळ केला. पण फुल्यांनी आपले कार्य सोडले नाही. शेवटी कर्मठ ब्राम्हणांनी उद्योगिका फुले यांना (१८५६) टार मासण्यासाठी मागकरी पाठवून दिले. पण त्यांनी त्यांच्या घरावर मासण्याची पौन्य मंडळी मारकरी मुद्दा घाल्याचे बाल्मीकी बनले होते.

अशा त्यांच्या महान कार्य कवृत्वामुळेच मुंबई १८८८ ला 'सर्व भारतात सर्वोच्च' म्हणून येवून एका जाहीर सभेत फुले यांना 'महात्मा' ही पदवी बहाल केली होती. ही पदवी योग्य व सस्त्व आहे. आज महात्मा फुले जरी शरीराने मृत असले तरी त्यांच्या विचारमुळे ते अजून ही जिवंत आहेत. कारण आयुष्य हे बऱ्यावर मोजायचे नसतं तर समाज त्या व्यक्तीचे बऱे किंवा आठवण किती वर्ष काढल रहातो तेवढे त्या व्यक्तीचे वय असतं.

१.७ अर्थ व समाज व्यवस्थेला गती देणारा महात्मा :-

महात्माच्या विचाराला अनेक पैलू आहेत. त्यापैकी एक आर्थिक पैलू आहे. समाजकारणाला अर्थ कारणाची जोड असावी लागते. त्यांच्या प्रत्येक वाक्यात व विचारात अर्थशास्त्र दडलेल आहे. ते अर्थशास्त्राचे अभ्यासक किंवा प्रत्यक्ष विद्यार्थी नसताना देखील त्यांच्या विचारामुळे अर्थशास्त्राला भरपूर स्पर्श झालेला आहे.

उदा. 'शेतकऱ्याचे आसूड' या पुस्तकात मांडलेले विचार होय.

“विद्ये विना मती गेली,

मती विना निती गेली

निती विना गती गेली

गती विना विता गेले

विता विना शुद्र खचले

इतके सर्व अनर्थ अविद्येने केले

यातील अविद्या म्हणजे अज्ञान, गती, वित्त खच्चीकरण हे शब्द अर्थशास्त्रातील महत्त्वाचे घटक आहेत. उदा. सगळ्या विपमतेचे मूळ अज्ञानात आहे. अज्ञानामुळे लोकांची कार्यक्षमता घटते गती शिलता घटते उत्पादन घटते नफा घटतो रोजगार घटतो उत्पन्न घटते → बचत घटते → भांडवल घटते → गुंतवणुक घटते → उद्योगधंदे घटतात रोजगार घटतो → भागणी कमी होते → मुन्हा उत्पादन कमी → अशी अर्थव्यवस्था भेजी कडून मदीकडे व पुन्हा तेजीकडे चक्राकार पध्दतीने फिरत असते. फुले यांनी समाजात कोणताही अनर्थ घडू भये याची काळजी घेतली होती म्हणून त्यांना अर्थतज्ञ म्हणतात.

संदर्भसूची :-

- १) व्ही. एन. स्वामी - "महाराष्ट्रातील व भारतातील थोर विचारवंत" - विद्याभारती प्रकाशन आवृत्ती २००५, पान ९३
- २) डॉ. रविंद्र ठाकूर - "महात्मा फुले याची चरित्रकहाणी महात्मा" - मेहता प्रकाशन, पुणे - प्रथम आवृत्ती १९९९
- ३) महात्मा फुले - "शेतकऱ्याचा असूड" - मेहता प्रकाशन पुणे - प्रथम आवृत्ती - मे २००४
- ४) संपादक डॉ. जे. एफ. पाटील - "आर्थिक विचारांचा इतिहास" - फडके प्रकाशन - प्रथम आवृत्ती २०१६ (संकलित माहितीचा आधार)
- ५) दैनिक वर्तमान पत्रात आलेले विविध प्रकाशित लेख.




Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Paus, Dist. Sangli.



शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर
विद्वत्प्रमाणित, यू.जी.सी. मान्यताप्राप्त त्रैमासिक
(Peer Reviewed Referred Research Journal)
ISSN No. 2319-6025

शिवम् संशोधन पत्रिका

वर्ष-नववे : जोडअंक-एकवीस आणि बावीस : जानेवारी ते जून २०२०

मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील विविध संप्रदाय

दिनांक १ व २ फेब्रुवारी, २०२०

2019-20



सद्गुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

(स्वायत्त महाविद्यालय)

ता. कराड जि. सातारा

राष्ट्रीय उच्चस्तर शिक्षा अभियान (रुसा)

शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर

कार्यकारिणी



प्रा.डॉ. शिवकुमार सोनाळकर
अध्यक्ष



डॉ. सुनिता सेंगडे
उपाध्यक्ष



महेशकारुण माल्णी
उपाध्यक्ष



प्रा.डॉ. रमेश पोल
उपाध्यक्ष



डॉ. प्रकाश दुकळे
सचिव



प्रा.डॉ. संजय पाटील
खजानीस



डॉ. नंदकुमार मोरे
सदस्य



प्राचार्य डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे
सदस्य



डॉ. गोपाल गावडे
सदस्य



डॉ. उज्ज्वला पाटील
सदस्य



डॉ. चंद्रकांत पोतदार
सदस्य



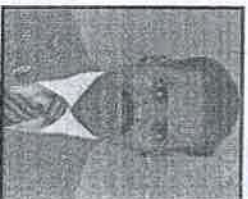
डॉ. सुरेश शिंदे
सदस्य



डॉ. हणमंत पोल
सदस्य



डॉ. धोंडीराम दमसे
सदस्य



डॉ. सुभाष जाधव
सदस्य

शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघाचे विद्वत्समाहित त्रैमासिक

शिवम संशोधन पत्रिका

(Peer Reviewed refereed Research Journal - ISSN No. 2319-6025)

(विद्यापीठ अनुदान अयोग नवी दिल्ली, मान्यता अ.क्र. ६४१७५५)

सद्गुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रसा)

वर्षे नववे : अंक एकवीस - बावीस

जानेवारी - फेब्रुवारी - मार्च - एप्रिल - मे - जून २०२०

मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील विविध संप्रदाय

संपादक

डॉ. शिवकुमार सोनाळकर

अतिथी संपादक

डॉ. मोहन राजमाने,

प्राचार्य, स.गा.म. कॉलेज, कराड

डॉ. रेखा दिवेकर

प्रा. डॉ. रमेश पोल

कार्यकारी संपादक

डॉ. नीला जोशी

संपादक मंडळ

डॉ. नंदकुमार मोरे,

डॉ. गोमेश्वर पाटील, डॉ. तालीबा बदामे,

डॉ. दिनेश बाबुंबरे

सल्लागार समिती

डॉ. राजन गवस,

डॉ. प्रकाश कुंभार, डॉ. डी. ए. देसाई,

डॉ. अनिल गवळी

प्रकाशक

अध्यक्ष, शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर

अनुराज, ७/ब, सूर्यवंशी कॉलनी, सामेगुळी वसाहत, कोल्हापूर ४१५०११

मुद्रक

श्रीधर मुद्रणालय, कराड

३३८, सोमवार पेठ, कराड ४१५११०

मोबा. ९८९०४९८४९७

मूल्य : ३००/-

ही संशोधन पत्रिका प्रकाशक डॉ. शिवकुमार सोनाळकर यांनी शिवाजी विद्यापीठ मराठी शिक्षक संघ, कोल्हापूर यासाठी श्रीधर मुद्रणालय, कराड येथे छापून अनुराज, ७/ब, सूर्यवंशी कॉलनी, सामेगुळी वसाहत, कोल्हापूर ४१५०११ येथे प्रकाशित केली. या पत्रिकेस प्रकट झालेल्या मराठी संपादक, प्रकाशक, सल्लागार व मुद्रक सहकार असतीलच असे नाही.

* अंतरंग *

- * मध्ययुगीन मराठा कालखंडातील सामाजिक परिस्थिती.
डॉ. अभय पाटील. १
- * मध्ययुगीन मराठी संग्रदायातील कवितेची निर्मिती आणि रूपविशेष
-डॉ. वासन सरार २
- * पुस्तिम संतांच्या काव्यरचनेतील गुरुमहान्त्य
प्रा. लता ऐवळे ८
- * मध्ययुगीन कालखंडातील भक्ती परंपरेचे स्वरूप
डॉ. प्रियांका कुंभार १२
- * मध्ययुगीन मराठी साहित्यातील नवविधा भक्ती
अमृता शिंदे १६
- * मध्ययुगीन संतवाङ्मय प्रवाह आणि क्रांतितांचे स्थान
डॉ. शीलाल गोर्डे-पाटील २०
- * मध्ययुगीन वाङ्मयातील मराठीचा भाषाभिमान
डॉ. प्रकाश टुकळे २४
- * मध्ययुगीन मराठी संग्रदायातील गुप्त बोलीचे स्वरूप
श्री. अनंता कस्तुरे २८
- * मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील मराठी संतांच्या हिंदी भाषेतील रचना - उद्देश व स्वरूप
डॉ. सुब्रय पाटील ३२
- * महानुभाव संग्रदायातील दुर्लक्षित शैली
डॉ. भरत जाधव ३६
- * महानुभावीय संग्रदाय : एक आढावा
डॉ. बबन गायकवाड, ४०
- * "मध्ययुगीन मराठीतील महानुभाव संग्रदायाचे वाङ्मयीन योगदान"
सुरेखा व्हसमने ४४
- * महानुभावांची मातृसंकल्पना
विश्रंती कांबळे ४८
- * महानुभावविवांचे तत्त्वज्ञान : बीब, देवता, प्रपंच आणि परमेश्वर
श्री. प्रविणसिंह शिलेदार ५१
- * महानुभाव पंथाचे तत्त्वज्ञान व आचारधर्म
डॉ. लता मोरे ५४
- * मध्ययुगीन मराठी वाङ्मयातील महानुभाव संग्रदाय
प्रा. संभाजी करम ५८
- * 'महानुभाव पंथ साहित्य सरिता'
सौ. शुभमी कुंभार ६२
- * 'महानुभाव संग्रदाय आणि वारकरी संग्रदाय यातील साम्यभेद'
प्रा.सौ. शैला माने ६६

- * महानुभाव तत्त्वज्ञानाची कालसापेक्षता
डॉ. सागर लटके ७०
- * महानुभाव संग्रदाय : आचार धर्म
डॉ. सिंधू आवळे ७६
- * महानुभाव संग्रदायाचे तत्त्वज्ञान
डॉ. कोमल कुंदरप ७८
- * महानुभावीय आचारधर्माची तत्कालीन गरज
प्रा. मोहन चव्हाण ८२
- * महानुभाव तत्त्वज्ञान आणि चक्रधर वचनपुत : सौंदर्यात्मक विचार
प्रा. गुंडोपंत पाटील ८५
- * महानुभाव साहित्य : मध्ययुगीन मराठीचा मानदंड
डॉ. गवसम पोटे ९०
- * महानुभाव संग्रदायाचा आचारधर्म
डॉ. नंदिनी काळे ९३
- * चक्रधरांची समता : मनुष्यत्वाचा गौरव करणारी
डॉ. प्रशांत गायकवाड ९७
- * महानुभाव पंथ व श्री चक्रधर स्वामींचे तत्त्वज्ञान
चयश्री बाबर १०१
- * श्री चक्रधर स्वामी यांचा उद्देश आणि राष्ट्रीय एकामता
प्रा. प्रेरणा चव्हाण १०४
- * चरित्रकार म्हाईभट्ट व चरित्रकार संत नामदेव : तुलनात्मक अभ्यास
डॉ. सुवर्णा पाटील १०७
- * महानुभाव संग्रदायातील महदंबेची भूमिका
डॉ. विनोद यादोड १११
- * आद्य मराठी कवयित्री महदंबा: व्यक्ती व साहित्य कृती
डॉ. शकुंतला पिसाळ ११५
- * मध्ययुगीन भक्ती साहित्य : भक्ती साहित्यातील महादाईसाचे योगदान
डॉ. सौ. नंदिनी रणढावे, प्रा. नेताजी सूर्यवंशी ११८
- * वारकरी संग्रदायाचे स्वरूप
डॉ. हणमंत पोळ १२१
- * भागवत धर्म : एक समाजप्रबोधनपर विचारधारा
डॉ. मानसी लाटकर, १२५
- * वारकरी संग्रदाय:स्वरूप आणि तत्त्वज्ञान
जयश्री शिंदे-गायकवाड १३०
- * वारकरी संग्रदायाचा जनसामान्यांतील प्रभाव
डॉ. प्रकाश हुलेनबर १३३
- * वारकरी संग्रदायाचा आचारधर्म
डॉ. प्राजक्ता निकम १३६

आनंदसंप्रदाय आणि त्यांचे वाङ्मय

प्रा.डॉ. बाळकृष्ण शिंदे
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी

मध्ययुगीन कालखंडामध्ये महाराष्ट्रामध्ये मराठी भाषिक प्रांतामध्ये अनेक भक्ती संप्रदाय निर्माण झाले. यामध्ये भागवत (वारकरी), नाथ, महानुभाव, दत्त, समर्थ असे काही संप्रदाय दीर्घकाळ जनसामान्यांमध्ये आपले स्थान टिकवून ठेऊ शकले. यातील काही संप्रदाय वैदिक परंपरेतील होते, तर काही संप्रदाय अवैदिक परंपरेतील होते. यांची दैवते वेगवेगळी होती. यांचे भिन्न भिन्न तत्त्वज्ञान होते. उदा. आनंद संप्रदाय, चैतन्य संप्रदाय, सिद्धेश्वर संप्रदाय, निरंजन संप्रदाय इ.. हे संप्रदाय विशिष्ट कालखंडामध्ये उदयाला आले आणि अल्पकाळ आपले अस्तित्व टिकवून काळाच्या ओघात लोप पावले. या संप्रदायांमध्ये आनंद संप्रदाय हा एक संप्रदाय तत्कालीन कालखंडामध्ये होऊन गेला. या संप्रदायामध्ये कृष्णदयार्णव व श्रीधर हे दोन महत्त्वाचे ग्रंथकार होऊन गेले. याशिवाय या संप्रदायातील सहजानंद, पूर्णानंद, निजानंद, रंगनाथस्वामी, शिवरामस्वामी असे काही कवी होऊन गेले. त्यांनीही काव्यरचना केली आहे.

आनंद संप्रदाय

आनंद संप्रदाय कलीयुगामध्ये उगम पावला असे सांगितले जाते. या संप्रदायाचे मूळ पुरुष सदानंद मानले जातात. सदानंद यांनी भगवान शंकरापासून ग्रेष्णा घेऊन दत्ताची भक्ती करण्यास सुरुवात केली. दत्ताचे दर्शन घेण्यासाठी कर्नाटकमधील बसवकल्याण या ठिकाणापर्यंत सदानंद आले. तेथे त्यांना दत्तात्रय प्रभुंनी दर्शन दिले व बोध केला असे सांगितले जाते. त्याच बसवकल्याणी या ठिकाणी सदानंदयांनी पीठाची स्थापना करून या संप्रदायाच्या कार्याला सुरुवात केली. म्हणून या संप्रदायाची स्थापना बसवकल्याणी येथे झाली असे सांगितले जाते.

जीवाचे स्वरूपच आनंद आहे असे हा संप्रदाय मानतो. जीवाची उपासना हा संप्रदाय करतो म्हणून याला आनंद संप्रदाय म्हणतात. हा संप्रदाय गुरुसेवा व गुरुपरंपरा याला महत्त्व देतो म्हणून, याला 'गुरुसंप्रदाय' असेही म्हणतात. मानवाने आनंदमय व्हावे. जीवाने मूळ स्वरूपाची म्हणजेच जीवाची उपासना करावी. कारण जीव आनंदरूप आहे असे या संप्रदायाचे तत्त्वज्ञान आहे. अज्ञाची, मनची, प्राणाची व शेतटी ब्रह्मस्वरूप आनंदची उपासना या संप्रदायामध्ये सांगितली आहे. या संप्रदायामध्ये गुरुला महत्त्व असल्याने 'गुरुपौर्णिमा' मोठ्या प्रमाणात साजरी केली जाते. या संप्रदायाची परंपरा विष्णू-विधी-अग्नी-दत्त-सदानंद-अमलानंद-गभीरानंद-ब्रह्मानंद-सहजानंद-पूर्णानंद-दत्तानंद-ब्रह्मानंद-श्रीधर-अग्नी सांगितली जाते. या संप्रदायाची दुसरी शाखा मध्यप्रदेशात झाली जवळील जालवण या ठिकाणी निर्माण झाली. नारायण महाराज यांनी ही शाखा निर्माण केली.

आनंद संप्रदायाचे आराध्य दैवत त्रिमूर्ती दत्त आहे. कारण या संप्रदायाचे मूळ पुरुष

सदानंद आणि नारायण महाराज यांना श्री दत्तांनी अनुग्रह दिला होता. बसवकल्याण आणि झाली जवळील जालवण ही दोन ठिकाण या संप्रदायाची तीर्थक्षेत्र आहेत. याठिकाणी दत्त जयंती, गुरुपौर्णिमा, आनंद मेळावा इ. उत्सव साजरे केले जातात. या संप्रदायाच्या प्रवर्तकांनी एक साधनमार्ग सांगितला आहे तो म्हणजे 'विहंगम मार्ग' होय. विहंगम मार्ग म्हणजे ज्ञान मार्ग. ज्याप्रमाणे पोपट फळ खावायचे असल्यास फांदीला न झोंबता थेट फळास झोंबतो. त्याप्रमाणे थेट ज्ञानग्रहण करणे या संप्रदायामध्ये सांगितले आहे. गुरुज्ञान, आत्मज्ञान, ध्यानसाधना, गुरुसेवा याला या संप्रदायामध्ये महत्त्व आहे. या संप्रदायामध्ये 'ईश्वर', 'जीव', 'जगत्' यांचे अद्वैत सांगितले आहे. अद्वैती तत्त्वज्ञानामध्ये वेद, उपनिषद आणि शंकराचार्य यांचे अद्वैत यांचा प्रभाव या संप्रदायाच्या तत्त्वज्ञानावर आहे. यादृष्टीने हा वैदिक परंपरामधील संप्रदाय आहे. या संप्रदायाचे तत्त्वज्ञान 'सप्तसागर', 'दत्तप्रबोध', 'स्वानंदबोध', 'गुरुगीता' इ. ग्रंथातून विशद केले आहे. ईश्वर हा सद्, चिद्, आणि आनंदस्वरूप असून तो निर्गुण निराकार परब्रह्म आहे असे हा संप्रदाय मानतो. या निर्गुण परब्रह्माचे प्रतिबिंब मायेमध्ये पडल्यामुळे तो ईश्वर या संज्ञेस प्राप्त झाला आहे. माया या भ्रमामुळे त्याच्या स्वरूपात द्वैत भासते. तोच जगाचे निमित्त व कारण आहे. जीव व ब्रह्मज्ञान झाल्यावर ईश्वराचे खरे स्वरूप समजते. ईश्वर हा विशुद्ध क्रियारहित आणि दैताद्वैतातील आहे. तो अनिर्वाच्य, स्वस्ववेध, नित्यमुक्त व बंधनविरहित आहे. ईश्वराच्या आराधनेने बद्ध जीवाला मुक्ती मिळू शकते. कारण ईश्वर ज्ञानस्वरूप आहे. 'जीव' हा ईश्वराच्याच अंशातला अंश आहे. जीव आणि ईश्वर यांच्यामध्ये अद्वैत आहे. जीवास माया, अज्ञान, आवरणपी दोष लागल्यामुळे जीवास भोग भोगावे लागतात. पण मुळत जीव 'ब्रह्मस्वरूप'च आहे. अज्ञानामुळे तो स्वतःला ईश्वराहून भिन्न समजतो. ईश्वर, जीव आणि जगत यांचे अद्वैत हा संप्रदाय मानतो.

आनंदसंप्रदायाचे वाङ्मयीन कार्य

आनंदसंप्रदायातील महत्त्वाचे दोन कवी कृष्णदयार्णव व श्रीधर हे होते. या दोघांना विशेष लोकप्रियता लाभली होती. कृष्णदयार्णव यांचा कालखंड इ.स. १६७४ ते १७४० हा मानला जातो. वैयक्तिक आयुष्यामध्ये हा कवी अनेक संकटांनी ग्रसला होता. अशा स्थितीत त्यांनी भागवताच्या दशमस्कंधावरील 'हरिवर्दा' हा भाष्य ग्रंथ लिहिला. हा ग्रंथ वाङ्मयाच्या इतिहासामध्ये आपले स्थान मिळवू शकला. या ग्रंथामुळेच कवीला आपली ओळख निर्माण करता आली. याग्रंथावरून कृष्णदयार्णव यांची विद्वता व बहुश्रुतता दिसून येते. संत एकनाथांच्या बाजूने आलेल्या आनंदसंप्रदाय शाखेतील कृष्णदयार्णव हा कवी होता. त्यांनी आदिनाथ दत्तात्रेय-जनार्दन-एकनाथ-चिदानंद-स्वानंद-गोविंद अशी गुरुपरंपरा सांगितली आहे.

श्रीधर हा आनंद संप्रदायामधील सर्वात लोकप्रिय कवी होय. श्रीधराचे आजोबा दत्तानंद आणि वडील ब्रह्मानंद आनंद संप्रदायातील महत्त्वाचे पुरुष होते. आपल्या वडिलांकडून आनंद संप्रदायाची दीक्षा श्रीधरना मिळाली होती. श्रीधराच्या 'हरिविजय' या पहिल्या ग्रंथामध्ये श्रीधराने आपण आनंद संप्रदायाचे अनुयायी आहे याचा उल्लेख केला आहे. श्रीधरानी विपुल प्रमाणात ग्रंथ लेखन केले आहे. आनंद संप्रदायाची ही शाखा वाङ्मयनिर्मितीच्या बाबतीत मोठी संपन्न आहे. श्रीधरांचे वडील ब्रह्मानंद यांनी 'आत्मप्रकाश' हा ग्रंथ लिहिला आहे. श्रीधरांचे मूळ गाव नागरे असले तरी त्यांचे संपूर्ण आयुष्य पंढरपूर येथे व्यतीत झाले.

आर.एन्.आय. फॉर इंडिया नवी दिल्ली
र.नं.- MAHMAR-36829-2010

ISSN : 2229-4929



अक्षर वाङ्मय

2019-20

०४ मार्च २०२०

: संपादक :

डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी

: कार्यकारी संपादक :

डॉ. भास्कर ताम्हनकर

: संपादक मंडळ :

डॉ. शशिकांत श्रंगारे

डॉ. शीतल गोर्डे-पाटील

: मार्गदर्शक :

श्री. सागर फडके

प्रकाशक : सौ. रेखाताई नानासाहेब सूर्यवंशी, प्रतीक प्रकाशन,
'प्रणव', रुक्मे नगर, थोडगा रोड, अहमदपूर-४१३५१५.

मुद्रक : कल्पना मल्टीटेक, ४६१/४ सदाशिव पेठ, पुणे-३०.

साहित्य व वर्गणी पाठविण्याचा पत्ता : डॉ. नानासाहेब सूर्यवंशी, 'प्रणव', रुक्मे नगर,
थोडगा रोड, अहमदपूर, जि. लातूर-४१३५१५, भ्रमणध्वनी : ९४२३६५५८४१,

ई-मेल : suryawanshinanasahab67@gmail.com

अक्षर जुळणी : शिवाजी ज्ञा. पांचाळ, लातूर, भ्रमणध्वनी : ९७६६२४०१२६,

ई-मेल : shivajipanchal8@gmail.com

स्वागत मूल्य : रू.१,०००/-

अक्षर वाङ्मयातील प्रकाशित मजकूराशी व लेखकांच्या मताशी प्रकाशक, संपादक आणि संपादक मंडळ सहमत असतीलच असे नाही.

— अंतरंग —

| अ.क्र. | संशोधन पत्रिकेचा विषय | लेखकाचे नाव | पान क्र. |
|--------|---|-----------------------------|----------|
| १. | 'झिम् पोरी झिम्' कादंबरीतील स्त्रीवादी जाणीवा | डॉ. प्रकाश दुकळे | १ |
| २. | मराठी नाटकांतील स्त्रीवादी विचार | डॉ. दत्ता पाटील | ५ |
| ३. | जागतिकीकरणाचा स्त्रीवादी साहित्यावर प्रभाव | डॉ. अनिल प्र.उबाळे | ११ |
| ४. | लोकसाहित्यातून उमटलेले स्त्री चित्रण | डॉ. दत्तात्रय मारुती कारंडे | १६ |
| ५. | सर्वोत्तम भूमिपुत्र : गौतम बुध्द या ग्रंथातील काही बौध्द स्त्रीव्यक्तिरेखा | डॉ. प्रशांत गायकवाड | २४ |
| ६. | लोकसाहित्यातून उमटलेले स्त्री-चित्रण | डॉ. रत्नप्रभा काशिनाथ पगारे | ३० |
| ७. | मुस्लीम कादंबरीकारांच्या कादंबऱ्यातील मुस्लिम स्त्रिया | डॉ. आर. के. शानेदिवान | ३५ |
| ८. | लोकसाहित्यातून उमटलेले स्त्री चित्रण | डॉ. कुंडलिक चिंधू पारधी | ४० |
| ९. | संत जनाबाईंच्या काव्यातून प्रकट होणारे स्त्रीमन | प्रा. बाळासाहेब संतू चव्हाण | ४४ |
| १०. | रेव्ह धर्माजी काळे यांच्या शाहिरीतील ख्रिस्ती स्त्रीचे चित्रण | प्रा. अविनाश भोरे | ४६ |
| ११. | भारतीय समाजातील स्त्री मानसिकता आणि मराठी साहित्यातील स्त्री मानसिकतेचे दर्शन यांचा चिकित्सक अभ्यास | डॉ. सुरेश बाळ कृष्ण शिंदे | ५० |
| १२. | थेरीगाथा पालि वाङ्मयातील एक स्त्रीवादी साहित्य | विजयकुमार झुंबरे | ५५ |
| १३. | भोंडल्याच्या गाण्यातील स्त्रियांचे सांसारिक जीवन | डॉ. माधुरी गोपाळ तानवडे | ६१ |
| १४. | स्त्री वेदनेचा हुंकार: रानआसवांचे तळे | प्रा. चिंतामण धिंदळे | ६७ |
| १५. | लोकसाहित्यातून उमटलेले स्त्री चित्रण | विलीना शशांक इनामदार | ७२ |
| १६. | कविता महाजन यांच्या 'ब्र' कादंबरीतील स्त्रीवाद | डॉ. जे. पी. चंदनशिवे | ७९ |
| १७. | स्त्रीवाद आणि मराठी साहित्य | डॉ. भारती रेवडकर | ८२ |

भारतीय समाजातील स्त्री मानसिकता आणि मराठी साहित्यातील स्त्री मानसिकतेचे दर्शन यांचा चिकित्सक अभ्यास

डॉ. सुरेश बाळकृष्ण शिंदे

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, जि.सांगली

प्रस्तावना :

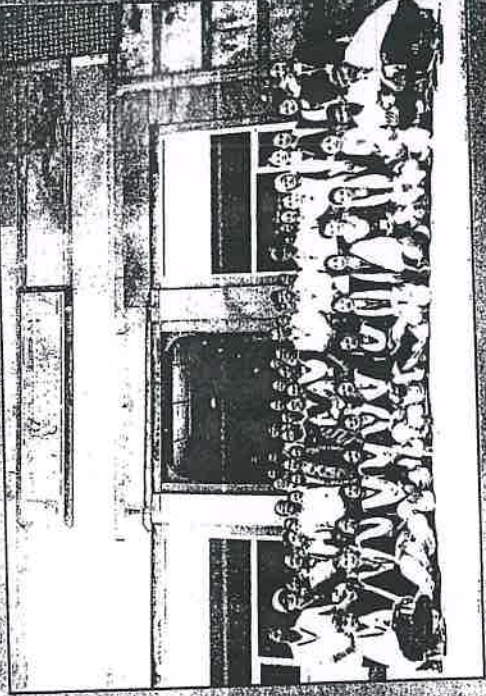
भारतीय समाज व्यवस्था जगातील प्राचीन परंपरेतील एक आहे. या समाजव्यवस्थेत काळानुसार बदल होत गेले. स्त्री या समाजव्यवस्थेतील महत्त्वाची घटक होय. या समाजव्यवस्थेत स्त्रीचे स्थान काळानुसार बदलत गेले. समाजव्यवस्थेत कुटुंब व्यवस्थेला महत्त्वाचे स्थान आहे. काही कालखंडामध्ये स्त्रीसत्ताक कुटुंबपद्धती अस्तित्वात आली तर काही कालखंडानंतर त्याच समाजात कुटुंबामध्ये स्त्रीला नगण्य स्थान मिळाले. समाजामध्येही स्त्रीला वेगवेगळे स्थान मिळाले. समाजव्यवस्थेत ती कधी देवी होती तर कधी शूद्र होती. आपल्या अस्तित्वाची जाणीव करून देण्यासाठी तिला संघर्षही करावा लागला, आपल्या हक्कासाठी लढा द्यावा लागला. भारतीय स्त्रीने आपल्या कुटुंबाला प्राधान्य दिलेले दिसते. प्राचीन काळापासून आपल्या कुटुंबातच ती रमताना दिसते. आजच्या काळातही थोड्याफार फरकाने हीच स्थिती भारतीय स्त्री मानसिकतेची दिसते.

भारतीय समाजातील स्त्री मानसिकता :

प्राचीन काळापासून भारतीय स्त्रीच्या मानसिकतेचा विचार करत असताना आपल्याला असे दिसून येते की स्त्री आपल्या कुटुंबाला, त्यातील सदस्यांना, नातेसंबंधाला महत्त्व देताना दिसते. आपल्या पतीसाठी, आपल्या मुलासाठी सर्वस्वाचा त्याग करताना ती दिसते. आपल्या कुटुंबाच्या व नात्यातील व्यक्तींसाठी ती व्रतवैकल्य, उपवास करताना दिसते. भारतीय स्त्री समोर मृत्यूच्या दाढेतून आपल्या पतीला परत आणणाऱ्या सावित्रीचा आदर्श आहे म्हणून ती या सावित्रीचा आदर्श घेऊन सात जन्मी हाच पती लाभो म्हणून वटसावित्रीचे व्रत करते. हीच स्त्री आपल्या भावाचे पाठबळ मिळावे म्हणून रक्षाबंधनाचे व्रत म्हणून भावाला राखी बांधते. आपला आपला भाऊ मानून नागपंचमी साजरी करते. म्हणजेच भारतीय स्त्री आपल्या नातेसंबंधाला खूप महत्त्व देताना दिसते. त्यासाठी ती व्रतवैकल्यही करते.

भारतीय समाजामध्ये कुटुंब व्यवस्थेला खूप महत्त्व आहे. भारतीय समाजव्यवस्थेने ज्या भक्कमपणे कुटुंबावर बांधली आहे, तितकी अपवादानेच जगामध्ये इतरत्र दिसेल. या कुटुंब व्यवस्थेचा मुख्य घटक स्त्रीच आहे. कारण कुटुंबातील अनेक कामांची जबाबदारी ती उचलत असते. भारतीय कुटुंबात भोजन घरीच बनवून खायची पद्धत आहे. ज्याला स्वयंपाक म्हणतात तो करण्याची जबाबदारी स्त्रीच उचलते. याशिवाय

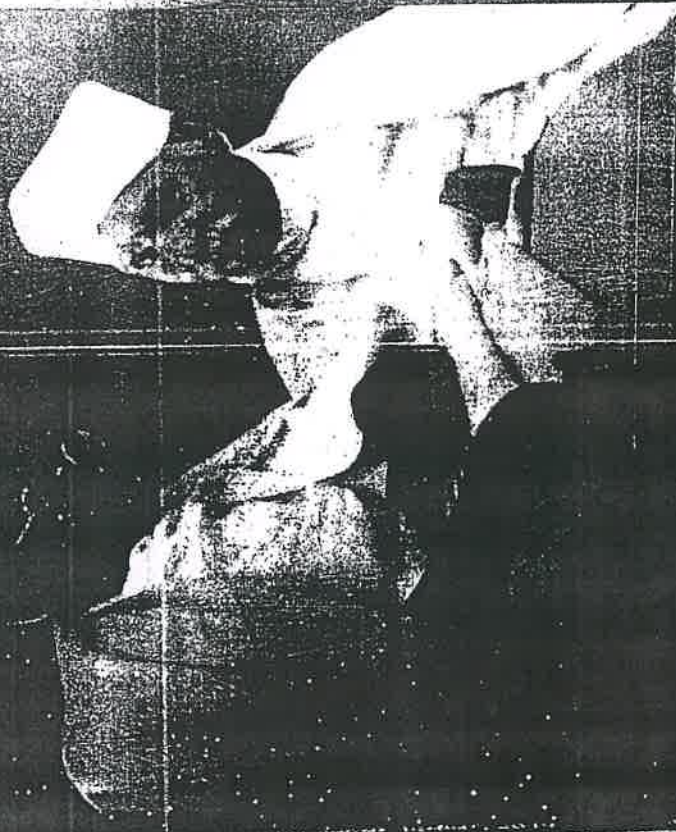
19-20



मुद्रक द. श्रीकंठ चवण तथा प्रकाशक प्रो. शीना शर्मा, अत्यापक शिवाजी विद्यालय, दयारा सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के पत्र में प्रकाशित अंक 20/108 जगन्नाथ विद्यालय, अजमेर, आगरा-202004 से मुद्रित तथा प्रकाशन स्थल केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी संस्थान आगरा, आगरा-202005 (आगरा शहर) से प्रकाशित. संपादक-प्रो. शीना शर्मा

श्रीद्विवक सज्जीव

शिक्षा जगत की शोध एवं विचार केंद्रित पत्रिका



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ATTESTED
Chitlate
Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitlate Mahavidyalaya
Rihlawadi

ATTESTED
Chitlate
Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitlate Mahavidyalaya
Rihlawadi

महामना मदन मोहन मालवीय

निधन : 12 नवंबर, 1946

जन्म : 25 दिसंबर, 1861

- सन्धा तप यह है कि अपने भाइयों के ताप से तपा जाय, सन्धा यज्ञ यह है कि जिसमें अपने स्वार्थ की आहुति दी जाए, सन्धा दान यह है कि परमार्थ किये जाए और सन्धी सेवा यह कि उसके दुखी जीवों की सहायता की जाए। परमात्मा सबके हृदय में व्याप्त है। हम जितने प्राणियों को प्रसन्न कर सकेंगे उतने ही गुण हम ईश्वर को प्रसन्न करेंगे। यह सन्धा धर्म देश भक्ति द्वारा प्राप्त है।
- देश भक्ति का संचार हमारे हृदय से स्वार्थ को निकाल कर फेंक देगा। हम अदूरदर्शी, स्वार्थी और खुशामदियों की तरह ऐसे काम कदापि न करेंगे जिनसे देश वासियों को हानि पहुँचे बल्कि आसंध्य कष्ट उठाते हुए वही करेंगे जिससे देश का भला हो, निर्धन धनवान बनें, निर्बल बलवान हो और मूर्ख भी बुद्धिमान हो जायें। प्रत्येक प्रकार के सामाजिक दुःख मिटे, दुर्भिक्ष आदि विपत्तियाँ दूर होकर साराष्ट्रों विलंबिताओं हुई आत्माओं को सुख पहुँचे। देश भक्ति द्वारा इतने धर्मों का संपादन होता हुआ देखकर भाँ यदि कोई धर्म के आगे देश भक्ति को कुछ नहीं समझता तो उस पुरुष को जान लीजिए कि वह धर्म के तत्व को नहीं पहचानता। वह धर्म-धर्म गं राहा है किन्तु यह नहीं समझता कि धर्म क्या वस्तु है?

मोहन दास कर्मचंद गांधी

निधन : 30 जनवरी, 1948

जन्म : 2 अक्टूबर, 1869

- मनुष्य के लिए जितनी आवश्यकता हवा, पानी और अन्न को है उतनी ही कसूरत की भी है।
- जिस प्रकार खुरक हमारे हड्डी मांस के लिए और मन के लिए भी जरूरी है उसी प्रकार कसूरत भी शरीर और मन के लिए आवश्यक है।
- यदि शरीर को व्यायाम न मिले तो वह बीमार होगा और मन को भी व्यायाम न मिले तो वह शिथिल हो जाएगा।
- हमारे फकीर और संत बहुत मनुस्त होते हैं। इसके अनेक कारणों में एक कारण यह भी है कि वे गाड़ी, घोड़े, बाहनों आदि का उपयोग नहीं करते। वे अपनी सारी मुसाफिरी पैदल ही करते हैं।
- जो व्यायाम मन और शरीर-दोनों को साथ ही साथ और धीरे-धीरे सुशिक्षित बनाते चलते हैं वे ही सच्चे व्यायाम हैं। उन्हें करने वाला मनुष्य ही स्वस्थ रह सकता है और यह मनुष्य केवल किसान ही हो सकता है।

पंजीयन संख्या/RNI No.—UPHDN/2017/4904

ISSN : 2581-687X

शैक्षिक उन्मेष

शिवा जगत की छोग एवं विचार केंद्र वत्रिक
उत्तर-3, अंक-1, कर्मिक-पीच, 2076/अमृत-सिंहार, 2019

प्रधान संपादक

प्रो. नन्दकिशोर पांडेय

निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : npanadey65@gmail.com

संपादक-प्रो. बीना शर्मा

अध्यक्ष शिक्षा विभाग

ई-मेल : dr.beesasharma@gmail.com

साह संपादक-चंद्रकान्त कौसे

सहायक प्रोफेसर, अमरावत शिक्षा विभाग,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ई-मेल : ksharma2009@gmail.com

संपादक मंडल

प्रो. कैलाश चंद्र बघीच

अभिधाता-शिक्षा संकाय, दयालकान्त पुरुषोत्तम
इंस्टीट्यूट, आगरा

ई-मेल : kvaishishah@gmail.com

प्रो. कल्पलता पांडेय

पूर्व अध्यक्ष एवं डीन (शिक्षा संकाय)
पठकनी गांधी कान्ठी विद्यापीठ, पारसकी

ई-मेल : p.jalpathak@gmail.com

डॉ. गोपाल कृष्ण खट्टर

चेत (शिक्षा), पी-एच. डी., अमरावत, शिक्षा विभाग
नगं.अं. वि. वि. वि. वि.

ई-मेल : gkhatkani@gmail.com

प्रो. सुरेशकर

विभागाध्यक्ष, दूरस्थ शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ई-मेल : shankarul20@gmail.com

प्रो. अराविंद झा

डीन, स्कूल ऑफ एजुकेशन
डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, उदुपलद

ई-मेल : aravindjha@gmail.com

संरक्षक

डॉ. अमरत किशोर गोबिलका

उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई-मेल : kishorsharma@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. यशुशंकर पारीक

प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, अमरावत
ई-मेल : yashu1952@gmail.com

प्रो. आर.पी. पाठक

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
श्री लाल महेश्वर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

ई-मेल : pathakoham@gmail.com

प्रो. अरविंद कुमार पांडेय

डीन, केंद्रीय ऑफ एजुकेशन
गजलम गांधी कान्ठी विद्यापीठ, वाराणसी

ई-मेल : arvindkumarpandey2@gmail.com

डॉ. अशोक सिद्धांत

प्राचार्य-श्री अशोक सनाकोत्तर शिक्षा प्रकल्पकाल,
सै.डी.ई., अमरावत

ई-मेल : ashokashah@gmail.com

डॉ. नीरा नारायण

रसायन विभाग, केंद्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ई-मेल : narayan611@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार- डॉ. स्वर्ण अमिता

केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swarnamita16@gmail.com



अध्यक्षक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शासक सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, अमरावत-282005

पंजीयन संख्या/RNI No.—UPPHIN/2017/4904 ISSN : 2581-687X

शिक्षा जगत में नवोन्मेष केंद्रित हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका

शैक्षिक उन्मेष

खंड-3, अंक-1; कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक - अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संपादकीय कार्यालय - अध्यापक शिक्षा विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान

हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा - 282005
फोन/फैक्स - 0562-2530684
ई-मेल : departmentofteacheredu0@gmail.com

सदस्यता शुल्क - व्यक्तिगत - प्रति अंक ₹ 40/-, वार्षिक - ₹ 150/-
संस्थागत - वार्षिक शुल्क ₹ 250/-
(ढाक व्यय प्रति अंक ₹ 35/- तथा वार्षिक
₹ 100/-अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10, वार्षिक \$ 40

कला एवं परिकल्पना - डॉ. विजय एम. डोरे

मुद्रक - दि प्रिंटर्स हेम, 20/108, यमुना किनारा, बेलगंज
आगरा-282004

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत
होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक
की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व - सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

शैक्षिक उन्मेष कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019 | 2

अनुक्रम

क्र.सं. आलेख का शीर्षक लेखक का नाम पृ. सं.

- प्रधान संपादक की कलम से..... प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय 5-14
- 1. गाँधी का शिक्षा-दर्शन और
आदर्श नागरिक-निर्माण विनोद कुमार पाल, 15-28
गोपाल कृष्ण ठाकुर
- 2. जे. कुष्णामूर्ति का शिक्षा दर्शन विजय महादेव गाडे 29-35
- 3. पं. मदन मोहन मालवीय मुदित राठौड़ 36-48
- 4. भारतीय शिक्षा व्यवस्था और
सर्वश्रेष्ठ रक्षाकृष्ण रंगा कोइरी 49-56
- 5. भारत का नव निर्माण और
स्वामी विवेकानंद भमता सिंह 57-63
- 6. जिददु कुष्णामूर्ति विकास बेनीवाल 64-72
- 7. गिजुभाई का शैक्षिक चिंतन इसपाक अली 73-79
- 8. प्रमुख भारतीय शिक्षाशास्त्री सरिता सुराणा 80-89
- 9. महामना मालवीय जी के शिक्षा
संबंधी विचार रमेश तिवारी 90-98
- 10. काका कालेलकर की शिक्षा पद्धति रेखा 99-105
- 11. भारतीय शिक्षा के प्रणेता : स्वामी
दयानंद सरस्वती दिग्विजय शर्मा 106-117
- 12. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा
संबंधी विचार चंद्रकांत कोठे, 118-128
किरमिरे सुधाकर

शैक्षिक उन्मेष

कार्तिक-पौष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019 | 3

10. सिंह, राम जी (2010), गांधी और भाषी विषयवस्तु, नई दिल्ली, कॉमनवेलथ पब्लिशर्स, पृष्ठ 6
11. तिवारी, वि.प्र. (2009), कर्मयोगी महात्मा, महात्मा गांधी सहस्राब्दी का महानायक, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, पृष्ठ 16
12. पुनियाजी, राम (2008), गांधी की हत्या : दूसरी बार, नई दिल्ली, साहित्य उपक्रम, पृष्ठ 1
13. नायर, सुशीला (2006), बापू की कारावास कहानी, नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, पृष्ठ 303
14. रत्न, के.के. (2002), गांधी दर्शन : नई सदी के बदलते संदर्भ, जयपुर, बुक एनक्लेव, पृष्ठ 4
15. कुमार, जैनेन्द्र (1996), अकाल पुरुष : गांधी, नई दिल्ली, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 63
16. देवकी नंदन (1978), गांधी चरित, वाराणसी, श्रीकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 319

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. of Psychology,

Asso. Professor,

Savassheb Chitabte Mahavidyalaya

Bhimawadi

जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन

—विजय महादेव भाडे

भारत में शिक्षाविदों की कमी नहीं है। इन शिक्षाशास्त्रियों में एक नाम है जे. कृष्णमूर्ति। बीसवीं शती के एक चिंतक, विचारक एवं शिक्षाशास्त्री के रूप में कृष्णमूर्ति का नाम सम्मान सहित लिया जाता है। उनके नाम के साथ एक रहस्य और गूढ़मय जुड़ा हुआ है और जब तक हम कृष्णमूर्ति के नजदीक नहीं जाते उनकी बातें हमारी समझ में नहीं आती। थियोसाफिकल सोसायटी के संस्कार लेकर कृष्णमूर्ति ने सन् 1929 से अपने जीवन का सफर नए सिरे से शुरू किया। अपना खुद का दर्शन विकसित करते हुए वे जग के समस्त एक दार्शनिक रूप में प्रस्तुत हुए। कृष्णमूर्ति एक ऐसे दार्शनिक हैं, जिन्होंने आत्मज्ञान पर अधिक बल दिया है।

सन् 1912 में कृष्णमूर्ति ने शिक्षणशास्त्र के संदर्भ में अपनी पहली रचना लिखी उस समय उनकी उम्र थी महज 19 साल और पुस्तक का नाम था—'एजुकेशन एज सर्विस' इस रचना में उन्होंने सर्वप्रथम शिक्षा पर अपने विचार रखे हैं। वे लिखते हैं— 'बचपन में पाठशाला में पढ़ते समय मैंने जो अनुभव प्राप्त किए, उनकी स्मृतियों पर आधारित यह रचना है। शिक्षा प्रणालियों में जो सही है उस पर मैं कुछ नहीं कहता लेकिन जो अयोग्य या अनुचित है उस पर मैं अपनी बात रखना चाहता हूँ। शिक्षा है जो मानव जाति के बीच संयुक्तता को बढ़ावा दे न कि अलगपन। जाति, धर्म, वंश जैसे भेद निर्माण न हो। मेरी परंपरा ही सही है इस गलतफहमी में कोई भी न रहे। अपना देश प्रेम या राष्ट्रवाद हमें और देशों के प्रति द्वेष जगाना है यह शिक्षा नहीं है। राष्ट्रप्रेम की अगली सीढ़ी विश्वप्रेम है।' इस कथन से यही स्पष्ट होता है कि 19 वर्ष की आयु में उनके विचार कितने गहन एवं गंभीर थे।

उपरोक्त रचना के अलावा कृष्णमूर्ति ने और बारह पुस्तकें शिक्षा को लेकर लिखी हैं जिनके रचना-द प्रपञ्च 'ऑफ एजुकेशन' (1930), 'एजुकेशन एंड सिनिफिकंस ऑफ टाईफ' (1953), 'ऑन लॉनिंग' (1958), 'धिस मॉडर ऑफ कल्चर' (1964), 'टॉक्स टू अमरिकन स्टूडेंट्स' (1970), 'यू आर द वर्ल्ड' (1972), 'कृष्णमूर्ति ऑन एजुकेशन' (1974), 'टाईफ अहेड' (1975), 'बिगिनिंग ऑफ लॉनिंग' (1974), 'लेटर्स टू द स्टूडेंट्स भाग 1' (1981), 'लेटर्स टू द स्टूडेंट्स भाग 2' (1985), 'थिंज ऑफ द माईंड ड्यूलॉगिज विथ जे. कृष्णमूर्ति' (1988) आदि। इन सभी रचनाओं के माध्यम से कृष्णमूर्ति ने अपने शिक्षा विषयक चिंतन को प्रस्तुत किया है। 1925 से

19-20

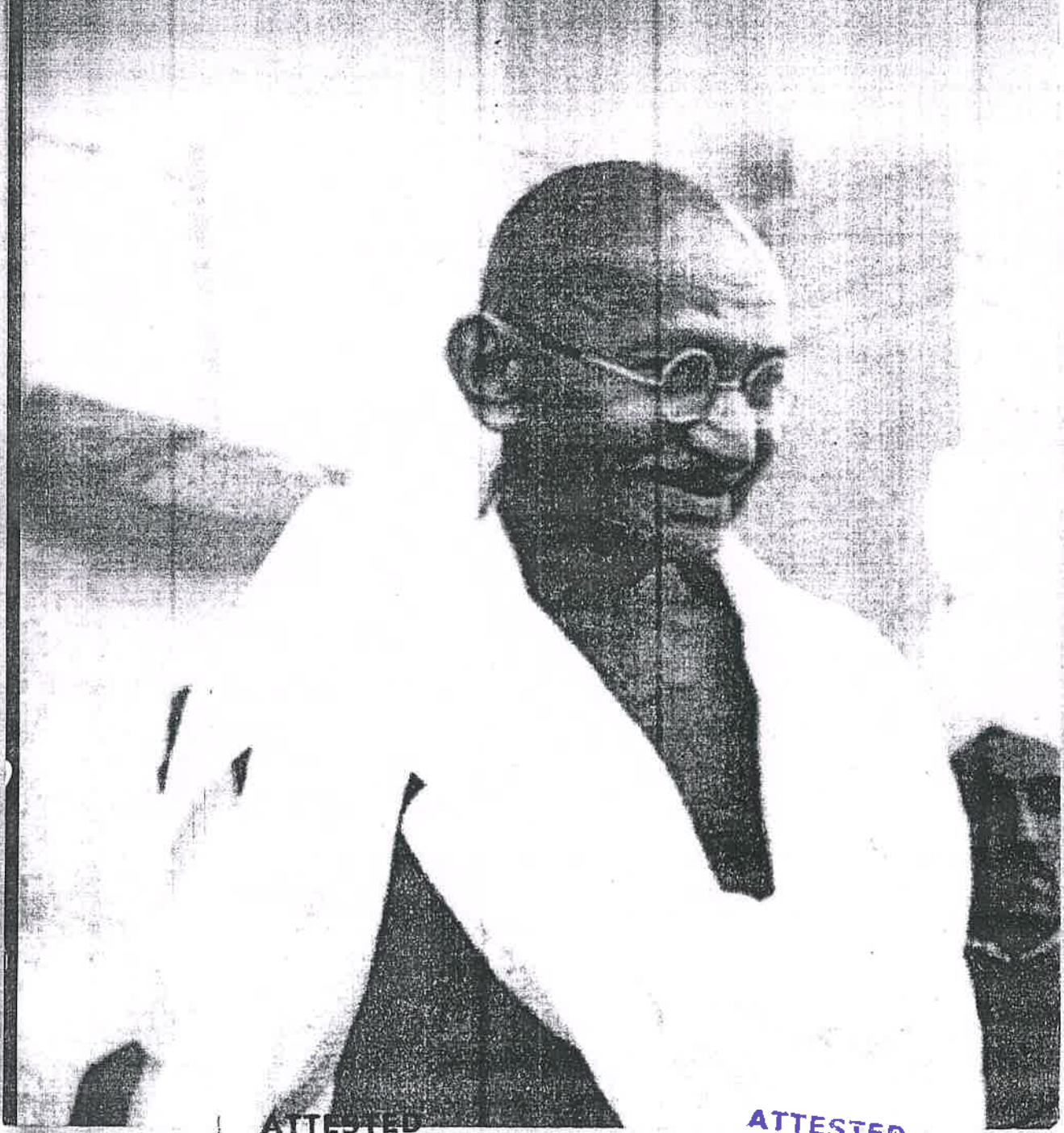
पंजीयन संख्या / RNI No. - GUJHTN / 2017 / 70792

ISSN 2452-1907

खंड - 3, अंक - 4, जासिन - मार्गशीर्ष, 2076 / अक्टूबर - दिसंबर, 2019

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित मासिक



ATTESTED

[Signature]

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Rhitewadi

ATTESTED

[Signature]

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Rhitewadi

पद्मश्री सत्यनारायण



2 फरवरी 1902 - 6 मार्च 1985

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डाडू ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी पद्मभूषण श्री मोट्टी सत्यनारायण जी, भारतीय सचिवालय सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा हर वर्ष भारतीय मूल के विद्वानों को, विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु भुवनेश्वर प्रदान किया जाता है।

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति कोरिडोर पत्रिका
खंड-3, अंक 4, अक्टूबर-मार्गशीर्ष, 2076/अक्टूबर-सितंबर, 2019

संस्थाक
डॉ. कमल किशोर गोयनका
एम.ए., पी.एच.डी.

उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : kkgoyenka@gmail.com

प्राचार्य मंडल

डॉ. रंजना अरगडे

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कला संकाय गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)
ई-मेल : arghada_51@yahoo.co.in

डॉ. स्वाशिकर

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर,
आणंद-388 120 (गुजरात)
ई-मेल : trpandharyashankar1@yahoo.com

डॉ. आलोक गुप्त

कुलसचिव, प्रोफेसर एवं डीन, भाषा-साहित्य एवं
संस्कृति संस्थान तथा धर्म कल्याण
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गोधागरा-382 030 (गुजरात)
ई-मेल : ahalokgupta@gmail.com

डॉ. प्रमोद शर्मा

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राष्ट्रीय संत तुकड़जी महाराज विश्वविद्यालय,
नागपुर-440 033 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : prof.prananath@gmail.com

डॉ. जसवंतभाई डॉ. पंड्या

डीन, कला संकाय
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014, (गुजरात)
ई-मेल : jpdandya1958@gmail.com

प्रकाशन संकाय

डॉ. स्वर्ण आनंद
एम.ए., पी.एच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swarnanandsh16@gmail.com

कला एवं परिकल्पना

डॉ. विजय एम. दावे
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : jnmgopalsingh1913@gmail.com

डॉ. भूषण भावे

एसोसिएट प्रोफेसर, कोकणी विभाग
पी.ई.एल.आर.एस्.एन. आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज,
फामगुंडी पीडा, गोवा-403 401
ई-मेल : bhushanbhavagov@gmail.com

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
एम.ए., पी.एच.डी.

निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आणंद
ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक - डॉ. सुनील कुमार
एम.ए., पी.एच.डी.

क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.सं. अहमदाबाद केंद्र
ई-मेल : dskhambhava@gmail.com

उप-संपादक - डॉ. मनोहर खंडेय
एम.ए., पी.एच.डी.

सहायक प्रोफेसर, एस.सं.तु.म.वि.वि., नागपुर
ई-मेल : mkprttanna@gmail.com

संपादक मंडल

डॉ. उषा उपाध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गुजराती विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14 (गुजरात)
ई-मेल : ushaupadhyay2004@yahoo.com

डॉ. करुणेशकर उपाध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई-98 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : drkrupadhyay@gmail.com

डॉ. सदानंद काशीनाथ खैरले
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे-411 007 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : sktphosale3131@gmail.com

डॉ. राम गोपाल सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : jnmgopalsingh1913@gmail.com

डॉ. भूषण भावे
एसोसिएट प्रोफेसर, कोकणी विभाग
पी.ई.एल.आर.एस्.एन. आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज,
फामगुंडी पीडा, गोवा-403 401
ई-मेल : bhushanbhavagov@gmail.com



केंद्रीय हिंदी संस्थान
अहमदाबाद केंद्र
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

पश्चिम भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-समन्वय पश्चिम

खंड-3, अंक-4, आश्विन-मार्गशीर्ष, 2076/अक्टूबर-दिसंबर, 2019

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक

: क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय

: क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शास्त्री स्टुडियम, बाला भवन, बापूनगर,
अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल : 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सदस्यता शुल्क

: व्यक्तिगत : प्रति अंक र. 40.00 वार्षिक र. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क र. 250.00
(डाक व्यय प्रति अंक र. 35.00 तथा
वार्षिक र. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10.00 वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक

: पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कॉपीरिंग

: भावू ग्राफिक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व

: सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

संपादकीय

प्रधान संपादक को करम से

प्रो. नंद किशोर षण्डेय 04

आलेख

| | |
|---|-----------------------------|
| 1. असहयोग आंदोलन और गांधी | डॉ. विजय महादेव गाडे 14 |
| 2. अस्पृश्यता आंदोलन : महात्मा गांधी | डॉ. गुलामचंद खैल 19 |
| 3. महात्मा गांधी का शिक्षादर्शन | डॉ. जयतीलाल 24 |
| 4. गांधी आदर्श और श्रेष्ठ परम्परागतता | नंदिनी हर्षदराय द्विवेदी 29 |
| 5. हिंदी नाटक में गांधी विचार दर्शन | डॉ. जयवंतभाई भंड्या 35 |
| 6. राष्ट्रभाषा हिंदी और गांधीजी की प्रासंगिकता | डॉ. दिग्विजय शर्मा 45 |
| 7. हिंदी साहित्य में गांधी : रत्नाव शर्मा की पारस्परिकता | डॉ. रघुनाथ पाण्डेय 53 |
| 8. हिंदी के प्रचार-प्रसार में गांधी की भूमिका | डॉ. डी. एन. प्रभकर 59 |
| 9. हिंदी साहित्य में गांधी | डॉ. मनोज पाण्डेय 62 |
| 10. महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के अनन्य उपासक | डॉ. धीरज चणकर 68 |
| 11. गांधीजी का भाषा चिंतन | डॉ. दीपक सिंह ऋडेजा 73 |
| 12. महात्मा गांधी का मानवतावादी चिंतन | अर्चना गायतोंडे 78 |
| 13. हिंदी कवियों द्वारा प्रस्तुत गांधी के सामाजिक विचार | प्रो. शारदादेवी उपगुप्त 83 |
| 14. सामाजिक त्याग और गांधी | प्रदीप कुमार सिंहर 89 |
| 15. गांधीजी का साव्यसत्ता आश्रम | डॉ. राम गोपाल सिंह 94 |
| 16. गांधीजी का सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह : एक अध्ययन | सोहिल शर्मा 99 |
| 17. हिंदू स्वराज में गांधीजी का अर्थशास्त्रीय चिंतन | डॉ. मोहन शर्मा 104 |
| 18. हिंदी साहित्य में गांधीवादी चेतना का प्रभाव | डॉ. अमित कुमार ओझा 113 |
| 19. बलात्कार पर गांधीजी के विचार आज आठ दशकों बाद भी उतने ही प्रासंगिक क्यों हैं ? | गायत्री अर्पा 121 |
| 20. दक्षिण अफ्रीका में मोहनदास गांधी | गोपाल शर्मा 125 |
| 21. महात्मा गांधी एवं जनसहचरिता | डॉ. बीरपाल सिंह ठेंगुआ 130 |
| 22. महात्मा सत्यनारायण की शिक्षा में महात्मा गांधी चिंतन | डॉ. नाना साहेब भोरे 134 |
| 23. विकास के चरण में गांधी | डॉ. रघुनाथ शर्मा 141 |
| 24. गांधी और मानवता | डॉ. स्नेहल सिंह 144 |
| 25. लेखक सूची | 150 |

असहयोग आंदोलन और गांधी

डॉ. विजय महादेव गाडे

गांधी एक महात्मा थे। लेकिन इस महात्मा के पीछे हमारे जैसा एक साधारण आदमी छिप था। अणु और हमारे जैसा। आलेख के शीर्षक से ही पता चलता है कि यह आंदोलन असहयोग के संबंधित था। गांधी की 150वां जन्मतिथि के अवसर पर गांधी को समझने का एक विनम्र प्रयास हम कर रहे हैं। महाभारत के स्वर्गीय पर्व में जो धर्मराज की अवस्था थी, लगभग वही अवस्था गांधी की उनके अंतिम दिनों हुई थी। वेदव्यास महाभारत में कहते हैं कि 'मैं हाथ ठढाकर कह रहा हूँ लेकिन मेरी बात कोई भी नहीं सुनता।' गांधी के लगभग वही हालात थे। समरता के नहीं अपितु निष्फल जीवन के उसी कालखण्ड में वे जा पहुँचे थे। उनके सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह जैसे सपनों की गांठ टूटकर बिखर रही थी। उनके स्वप्नों के एक-एक बिखर उनकी आँखों के सपने ध्वस्त हो रहे थे। अंत में बापू धर्मांधता के शिकार हुए और ईसा मसीह तथा सुकरात की पंक्ति में जाकर बैठ गए।

प्रस्तुत आलेख असहयोग आंदोलन से संबंधित है। इस आंदोलन की पृष्ठभूमि जानने के लिए हमें इतिहास में और पीछे जाना होगा ताकि इस आंदोलन की भूमिका स्पष्ट हो सके। इस आंदोलन की प्रमुख विशेषता यह भी है कि गांधी के नेतृत्व में चलाया जाने वाला यह प्रथम जन आंदोलन था। इस आंदोलन का व्यापक जनआधार था। शहरी, ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में भी इसे व्यापक समर्थन मिला। 1914-1918 के प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और विना जांच के किसी को भी कठवास हो सकता था। सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में बनी इस समिति ने यह कानून बनाया था। लिखावात इसे रॉलेट एक्ट के नाम से पहचाना जाता था। इसके जवाब में गांधी ने देश भर में रॉलेट एक्ट के खिलाफ आंदोलन छेड़ा। इस एक्ट का पंचाब में विशेष रूप से कड़ा विरोध हुआ।

असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में दिसंबर 1920 को पारित हुआ। जो भारतीय उपनिवेशवाद को खत्म करना चाहते थे उनसे आग्रह किया गया कि वे कट्टरशास्त्रियों, महाविद्यालयों और अदालतों में न जाए तथा कर न चुकाएँ। संक्षेप में सभी को अंग्रेज सरकार के साथ, सभी ऐच्छिक संबंधों के परित्याग का पालन करने को कहा गया।

असहयोग आंदोलन का प्रमुख तत्व था 'बहिष्कार', जिस पर कई विचार रखे गए हैं- बहिष्कार शब्द का अर्थ है- बहिष्कार आमतौर पर तैरि, सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय स्तरों के लिए विशेष की अभिव्यक्ति के रूप में किसी व्यक्ति, संगठन या देश के उपयोग के स्वीच्छिक और जानबूझकर रोकथाम का कार्य है। बहिष्कार का उद्देश्य किसी आपत्तिजनक व्यवहार को कुछ आर्थिक नुकसान करके या नैतिक आक्रोश करके मजबूर बदलने की दिशा में प्रेरित करना है। जहाँ एक समान अभ्यास किसी राष्ट्रीय सरकार के द्वारा कानूनीत किया जाता है उसे प्रतिबंध के रूप में जाना जाता है।

ATTESTED
(Signature)

Dr. V. Mahadev Gaikwad
Assoc. Professor,
G. B. Pant University of
Technology, Kanpur

Dr. V. Mahadev Gaikwad
Assoc. Professor,
G. B. Pant University of
Technology, Kanpur

इस आंदोलन में समाज के लगभग सभी वर्ग एवं तबके शामिल हुए थे। ब्रानों ने स्कूल एवं कलेज छोड़ दिए। पं. मोतीलाल नेहरू, बेरिस्टर दास, बेरिस्टर कल्लभशंकर पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालचारी आदि मशहूर कबीलों ने अपनी ककालत और उससे होने वाली कमाई को छोड़ दिया। कई लोगों ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। यह आंदोलन सारे हिन्दुस्तान में फैल गया। सरकार ने कई लोगों को जेल में टूस दिया। बेरिस्टर दास, नेहरू पिता-पुत्र, अबुल कलाम आजाद, लाला लजपतसिंह आदि अनेक नेताओं ने अनेक सभाओं में लोगों को संबोधित किया। इससे देश में एक नई चेतना का निर्माण हुआ। इनसे से अधिकांश नेतागण जेल में पहुँचाए गए और हजारों लोगों को वहीं से रास्ता दिखाया गया।

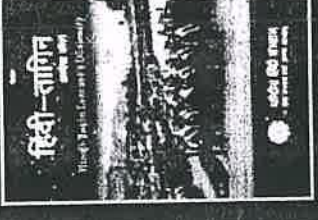
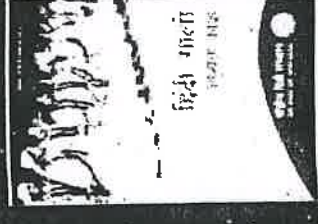
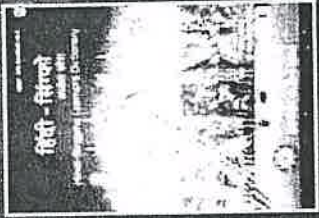
1 अगस्त, 1920 के दिन गांधी ने असहयोग आंदोलन का विधिवत् उद्घाटन किया। हिन्दुस्तान के इतिहास में एक नये पर्व का आरंभ हुआ था। गांधी ने बाणभद्र के नाम एक पत्र लिखकर भेजा। एक तरह से वह एक नोटिस ही थी। इस पत्र का स्वरूप थोड़ा-सा बिल्ली, थोड़ा-सा इशा और ताकीद जैसा था। इस ब्रिटिश सरकार के बारे में गांधी के मन में अब कोई भी आस्था या प्रेम नहीं बचा है, यह शुरुआत में गांधी कहते हैं। इसलिए 'अब सरकार के साथ कोई भी सहयोग नहीं होगा।' हमारी दृष्टि में लोकमान्य तिलक की प्रतियोगी सहकारिता थी उससे गांधी बहुत दूर जा चुके थे यह कथन गलत नहीं है। अर्थात् एक ओर लोकमान्य तिलक की प्रशंसा करते हुए उनके तत्वों से दूर जाने की शुरुआत वहीं से हुई यह सुनिश्चित है। लेकिन गांधी के इस निर्णय का प्रश्न बहुत दूर तक होने वाला था यह बात बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रथम विश्वयुद्ध में फलतः हासिल करने के बाद अंग्रेजों ने स्वराज्य के संदर्भ में भारतीयों के साथ जो बादाखिलाफी की थी उसके प्रति हर भारतीय के मन में गुस्सा था। इसी विश्वासघात के कारण आम भारतीय क्रोधित हुआ था। इसे जाड़ मिल गई खिलफत आंदोलन की। ब्रिटिशों ने तुर्कस्थान के खलीफा के अधिकार खत्म किए और तुर्कस्थान का भी विभाजन किया इसलिए खिलफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन एक साथ शुरू हुए। अगो कमाल पाशा ने खलीफा को बेदखल कर दिया और खिलफत आंदोलन इसी कब्र से खत्म हुआ यह बात अलग है और हमारे अलेख का केंद्र बिंदु असहयोग आंदोलन है इसलिए हमें इसकी ओर अधिक गंभीरता से देखने की जरूरत है ऐसा हम मानते हैं।

गांधी 'या इंडिया' नामक पत्रिका के संपादक थे। 1 जुलाई 1920 के दिन उन्होंने इस संदर्भ में अपने विचारों का मसौदा इन शब्दों में स्पष्ट किया -
असहयोग अगर आवश्यकता ही है तो इस समिति ने इन बातों को महं नकर रखते हुए यह निर्धारित किया है -

- सम्मान की सभी उपाधियाँ और सम्मान ओहदे सरकार को वापस की जाएँ।
- सरकारी कर्ज और व्यवहार में शामिल नहीं होगा।
- सभी कबील इसमें शामिल होंगे और ककालत नहीं करेंगे। दिवानी मुकदमें निनी तबारी के माध्यम से सुझाए जाएँ।
- अभिभावकों के द्वारा सरकारी स्कूलों का बहिष्कार किया जाएगा।
- नून सुधारों के अंतर्गत हेनवेवली काउंसिल (विधिर्मंडल) का बहिष्कार।

366



सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के लिये डॉ. सुनील कुमार क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय संस्थान, अहमदाबाद केंद्र, बालभवन, शांती स्टेडियम, बापूनगर, अहमदाबाद (गुजरात)- 380024 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित एवं प्रकाशित तथा पाठ्यपुस्तकें अहमदाबाद (गुजरात)- 380025 से मुद्रित।
 प्रिन्टर्स - 18-19, जयश्री कॉम्प्लेक्स, बापूनगर अहमदाबाद - 380025
 सम्पादक - डॉ. सुनील कुमार

पंजीन संख्या / RNI No: GUJHIN/2017/70792
 खंड - 3, अंक - 3, आषाढ - भाद्रपद, 2076 / जुलाई - सितंबर, 2019

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

19-20

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

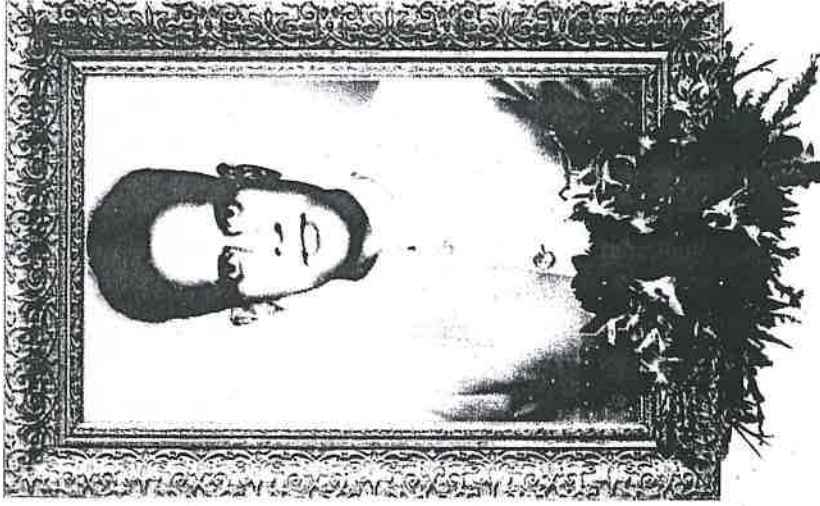
Dr. Shrikant B. Chavan
 Head Dept. of Psychology

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
 Asso. Professor,
 Dept. of Psychology,
 Chitale Mahavidyalay,
 Philawadi

पद्मभूषण डॉ. मोटूरी सत्यनारायण



2 फरवरी 1902 - 6 मार्च 1995

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडू ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी पद्मभूषण श्री मोटूरी सत्यनारायण जी; भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा हर वर्ष भारतीय मूल के विद्वानों को, विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

संरक्षक
डॉ. कमल किशोर गोयतका
एम.ए., पी.एच.डी.
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : kkgoyanka@gmail.com

प्रारक्षी मंडल
डॉ. रेजना आगडे
पूर्व-प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
डीन, कला संकय गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)
ई-मेल : argada_31@yahoo.co.in

डॉ. स्वाशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सत्याग्रह पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर,
आपंद-388 120 (गुजरात)
ई-मेल : tipathidayashankar11@yahoo.com

डॉ. आलोक गुप्त
प्रोफेसर एवं डीन, भाषा-साहित्य एवं
संस्कृति संस्थान तथा कला कल्याण
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गांधीनगर-382 030 (गुजरात)
ई-मेल : dralokgupta@gmail.com

डॉ. प्रमोद शर्मा
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
रवींद्र संत तुफोरोजी महाराज विश्वविद्यालय,
नागपुर-440 033 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : prof.pranods@gmail.com

डॉ. जसवंतभाई डी. पंडेबा
डीन, कला संकय
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014. (गुजरात)
ई-मेल : jdpandya1958@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
डॉ. स्वर्ण अनिल
एम.ए., पी.एच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swarnanil16@gmail.com

कला एवं परिकल्पना
डॉ. विजय एम. डोरे

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर याण्डेय
एम.ए., पी.एच.डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक - डॉ. सुनील कुमार
एम.ए., पी.एच.डी.
क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.सं. अहमदाबाद केंद्र
ई-मेल : dskneeraj@gmail.com

उप-संपादक - डॉ. मनोज पांडेय
एम.ए., पी.एच.डी.
सहायक प्रोफेसर, ए.सं.तु.म.वि., नागपुर
ई-मेल : mkpattana@gmail.com

संपादक मंडल
डॉ. उषा उपध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गुजराती विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14 (गुजरात)
ई-मेल : ushaupadhyay2004@yahoo.co.in

डॉ. करुणार्शंकर व्याध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई-98 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : drkrupadhyay@gmail.com

डॉ. सदानंद काशीनाथ भोसले
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे-411 007 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : skhbhosale3131@gmail.com

डॉ. राम गोपाल सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : rangopalsingh1913@gmail.com

डॉ. सुषण भावे
एसोसिएट प्रोफेसर, कोंकणी विभाग
पी.ई.एल.आर.एस.एन. आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज,
फर्मागुडी पोंडा, गोवा-403 401
ई-मेल : bhushambhavesga@gmail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान

अहमदाबाद केंद्र

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

| | | | |
|----------|--|--------------------------|-----|
| संपादकीय | प्रधान संपादक की कलम से | प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय | 04 |
| आलेख | | | |
| 1. | सीमावर्ती महाराष्ट्र में प्रचलित गोंडों में धार्मिक जीवन | डॉ. संदीप श्रीराम | 09 |
| 2. | गुजराती संत परंपरा में समरसता | डॉ. आशा रानी | 15 |
| 3. | भक्ति परंपरा और संत-कव्य | डॉ. बीना बुढकी | 18 |
| 4. | परंपरा एवं आधुनिकता के बीच लटकती सवित्री | डॉ. नाना सोहेब गोर | 24 |
| 5. | गुजरात के संतों की हिंदी वाणी में अपरिच्छेद | डॉ. दीपेंद्र सिंह जाडेजा | 29 |
| 6. | नामं सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति | डॉ. विजय महोदय गाडे | 35 |
| 7. | गुजरात का लोक साहित्य | डॉ. कोकिला पारेख | 41 |
| 8. | मराठी कविता के सशक्त हस्ताक्षर : पं. गुं. सिंदे | गिरीश काशिर | 46 |
| 9. | कुसुमाग्रज का धार्मिक सौंदर्य | प्रदीप कुमार सिंह | 52 |
| 10. | मानवीय अर्थवत्ता की तलाश : 'सोमतीर्थ' | डॉ. जगन्नाथ पंडित | 56 |
| 11. | कव्य संग्रह 'होसलों की उड़ान' | डॉ. अमितभाई पटेल | 65 |
| 12. | मध्यकालीन हिंदी साहित्य में श्रीकृष्ण प्रणामी संप्रदाय | डॉ. अनुज प्रताप सिंह | 70 |
| 13. | गुजराती कवियों का राम-गान | डॉ. पार्वती जे. गोसाई | 84 |
| 14. | 'धूपी तरे तीरे' उपन्यास में गुजराती एवं रजस्थानी अद्विवासी समाज एवं संस्कृति | मीना जी. बंगारा | 91 |
| 15. | कृष्ण के अनन्य भक्त नरसिंह मेहता | डॉ. धीरज वणकर | 98 |
| 16. | मराठी उपन्यास 'पाणिगार' में ग्रामजीवन का गिराव | डॉ. गोविंद बुरो | 104 |
| | सामाजिक परिदृश्य | डॉ. दर्मिला पोरखल | 110 |
| 17. | गुजराती साहित्य के विविध आयाम और यत्ना शैली | डॉ. समीर प्रजापति | 116 |
| 18. | जीवन एक नाटक : ग्रामीण जीवन का प्राग्भिक दस्तावेज | डॉ. गुलाबचंद पटेल | 122 |
| 19. | गुजराती साहित्यकार कन्हैयालाल मुंशी | डॉ. मोहसिन खान | 131 |
| 20. | हस्तामल 'हस्ती' और उनकी गुंजल | डॉ. एन. टी. गामीत | 141 |
| 21. | गुजराती कहानी संग्रह 'तपल' | | |
| 22. | लेखक सूची | | 150 |

पश्चिम भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-समन्वय पश्चिम

खंड-3, अंक-3, आधा-भाद्रपद, 2076/जुलाई-सितंबर, 2019

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक,

केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शास्त्री स्टोडियम, बाल भवन, बापूनगर,
अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल : 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सरस्यता शुल्क : व्यक्तिगत : प्रति अंक रु. 40.00 वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250.00
(डाक व्यय प्रति अंक रु. 35.00 तथा
वार्षिक रु. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10.00 वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक : पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कंपोजिंग : मानु ग्राफिक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

संदर्भ

1. दाहू दयाल ग्रंथावली : सं. परशुराम चतुर्वेदी, साच को अंग, 150
2. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, चानक कौ अंग-6
3. प्रवीण सागर : संपादक - गणपति शंकर शाली, लहर 6/7/12
4. गुजरात के संतकवियों में सामाजिक संवादिता : सं. गोवर्धन शर्मा, पृ. 46, 47
5. वही, पृ. 46, 47
6. वही, पृ. 70
7. वही, पृ. 71
8. वही, पृ. 99
9. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, क्रम जड़ अंग-5
10. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, क्रम जड़ अंग-6
11. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, राम परीक्षा अंग-12
12. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, ज्ञान कौ अंग-7
13. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, अधम अंग-15
14. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, अधम अंग-121
15. अखा ना छप्पा : भीक्षु अखण्डानंद - छप्पा-181
16. वही, छप्पा-244
17. वही, छप्पा-245
18. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, अथ सहज अंग-12
19. अखा ना छप्पा : भीक्षु अखण्डानंद - छप्पा-420
20. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, सर्वांग अंग-12
21. अखा ना छप्पा : भीक्षु अखण्डानंद - छप्पा-122
22. वही, छप्पा-488
23. वही, छप्पा-121
24. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, साखी-18
25. अक्षयरस : संपादक - कुंवरचंद्र प्रकाश सिंह, लालन को अंग-19



नामों सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति

डॉ. विजय महादेव गाड़े

"मन मों सुई, तन मेरा धाम

खेचर कौ के चरण पर नामा सिंपी लागी।"

संत नामदेव ने अपने व्यवसाय का रूपक लेकर अपनी अभिव्यक्ति की है और अपना परिचय इन शब्दों के माध्यम से दिया है।

संत नामदेव परभणी जिले के नरसोबासी गाँव में 1270 ई. में पैदा हुए। उनके पिता का नाम दामाशेट और माता का नाम जेनबाई था। ये जाति के सिंपी (रस्त्री) थे और संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे। नामदेव अपने समय में महाराष्ट्र तथा उत्तर हिंदुस्तान में इतने प्रतिष्ठित हो चुके थे कि कबीर ने उनका स्मरण बड़ी इज्जत और सम्मान के साथ किया है। कबीर की पंक्ति देखिए-

"जागे सुक, उधव, अकूर। हगवत जागे लै लै लंगूर।
संकव जागे चरन सेव। कति जागे नामा, जैदेव ॥"

संत नामदेव ने उत्तरी भारत में संतमत का पथप्रदर्शन किया। मुस्लिम आक्रमण के बाद सारे भारत में जो धार्मिक और सांस्कृतिक महासंघर्ष हुआ उसमें भागवत धर्म का झंडा फहराने वाले पहले संत नामदेव हैं। महाराष्ट्र में संतों के द्वारा जो शक्ति का जागरण हुआ उसकी सहर पंजाब तक पहुँचाने वाले संत नामदेव हैं। आगे चलकर मीरा, कमाल, रामानंद, पैपा, कबीर, रविदास, नानक आदि संतों का अविर्भाव हुआ। इन सभी संतों ने अपनी-अपनी त्वनाओं में नामदेव का अभिमान पूर्वक उल्लेख किया है।

महाराष्ट्र के श्रेष्ठ नाथपंथी हिंदी कवि नामदेव भागवत संप्रदाय में प्रमुख कवि माने जाते हैं। नामदेव केवल जनकवि नहीं थे बल्कि जनप्रिय कवि भी थे। वे केवल महाराष्ट्र में पैदा हुए थे इसलिए उन्हें मराठी या महाराष्ट्रीय कवि मानना निश्चित ही अनुचित है क्योंकि वे संपूर्ण भारतवर्ष के कवि थे इसलिए उनकी अमिट छाप आज भी पूरे भारतवर्ष पर है। लेकिन अफसोस इस बात का है आज भी नामदेव को उचित एवं वाणिज्य सम्मान नहीं मिल रहा, जिसके वे असल में हकदार हैं।

केवल मराठी भाषा में नहीं बल्कि हिंदी भाषा में भी संतमत का प्रवर्तन नामदेव ने किया था किंतु पता नहीं क्यों समीक्षक एवं अलोचक इन्हें दरकिनार करते रहे। डॉ. भीरी ने लिखा है- "नामदेव और कबीर के फरवर्ती संतों ने बड़ी ही श्रद्धा से दोनों का नाम लिया है, पर प्रायः नामदेव का नाम कबीर के पहले मिलता है।"

कई भी संत अथवा भक्त कवि क्यों जाते हैं? गोस्वामी जी की भाषा में कहें तो 'स्वातः सुखाय' भागवताम संकीर्तन करने के लिए जाते हैं। स्वयं शक्ति का आचरण कर औरों को सच्ची राह पर लाने के लिए क्योंकि 'काव्यप्रकाश' रचियता ने काव्य के जो उद्देश्य बताए हैं उनमें से यश और अर्थ के प्रति वे उदासीन रहते हैं। उनका उद्देश्य केवल सही रहता है- शिवस्वरूपिणी और सद्गुरुपत्निवृत्ति ही उन्हें प्रेरणा देती है। हमारे मत से संत नामदेव भी इसी धारा के कवि हैं।

ATTESTED

(Signature)

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. of Psychology,

Asso. Professor,

Bahasaheb Chitale's Mahavidyalaya

Rhivewadi



Impact Factor
3.478

ISSN : 2395-7115

अंतर्राष्ट्रीय बहुआयिक शोध पत्रिका

बोहल शोध मञ्जूषा

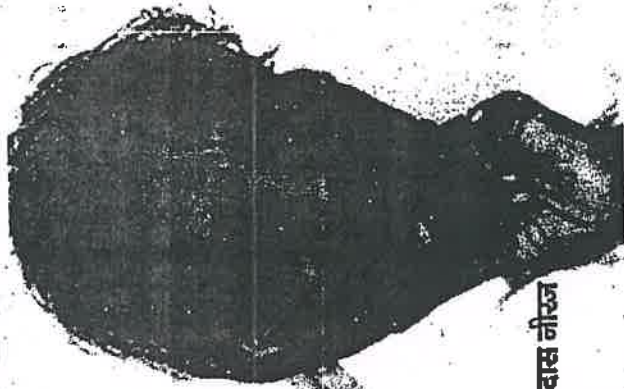
- नाम : सुमलता सक्सेना
 विरासत : पिता उर्दू के मशहूर शायर शाम मोहन लाल 'जिगर बरेलवी'
 जन्म तिथि : 19 जून 1936, उत्तर प्रदेश
 शिक्षा : मेरठ कॉलेज मेरठ से अंग्रेजी में एम.ए., बी.ए. में अंग्रेजी-हिन्दी व
 चित्रकला, उर्दू की भी सामान्य जानकारी।
 लेखन : 14 वर्ष की आयु से आरम्भ, शुरू में कई कविताओं का लेख आदि
 का प्रकाशन। 2009 में एक पुस्तक (कविता एवं गजल संग्रह)
 "बाँद कचनार का पेड़ और तुम" प्रकाशित जो आम पाठकों एवं
 लेखकों, बुद्धिजीवियों के भी द्वारा बहुत पसंद की गई। उर्दू में
 गजल जो हिन्दी लिपि में कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। 'हंस'
 आदि में लेख। दूसरी पुस्तक हिन्दी में 'सात रंग का इन्द्रधनुष'
 शीर्षक से वर्ष 2014 सितम्बर में प्रकाशित, वह भी पाठक, लेखक
 बहुत पसंद कर रहे हैं। लेखन अभी भी चल रहा है। तीसरी पुस्तक
 'सकलित कहानियाँ' शीर्षक से 2019 में प्रकाशित। 'आजकल'
 में कविताएँ, 'नया ज्ञानोदय' में गजल, 'साहित्य अमृत' में
 कहानी प्रकाशित।
 सम्प्रति : स्वतंत्र लेखनी।
 सम्पर्क पता : 01 नं. बर्च कोर्ट, निरवाना कॉन्ट्री, साख्य सिटी, महाराष्ट्र
 गुरुग्राम-122015, हरियाणा।

गिना प्रकाशन

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरि.)
 मो. 9466532152, 8708822674

Email : ginapack22@gmail.com

मूल्य : 50/-



डॉ. शंकर बस नीरज

Dr. Shrikant B. Chavan
Head-Dept. of Psychology,
Babasaheb Chavan
Mahavidyalaya,
Bhivani

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिंहा
एडवोकेट

नीरज एक अनोखा व्यक्तित्व
विशेषांक



प्रकाशक :

गुगनयम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी रजि
 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

स्व. डॉ. गुणराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के कुमारीवाद से प्रकाशित
JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

JANUARY 2019

ISSN : 2395-7115

पृष्ठ
6-7
8-11
12-15
16-21
22-25
26-28
29-31
32-36
37-39
40-41
42-45
46-47
50-51
53-55
54-55
59-60
61-62
63-64
65-66
67-68
69-70
71-72
73-74
75-76
77-78
79-80
81-82
83-84
85-86
87-88
89-90
91-92
93-94
95-96
97-98
99-100

प्रेरणा :
डॉ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :
डॉ. रामफल दलाल

अतिथि सम्पादिका :
श्रीमती सुमनलता सकसेना
(64 वर्षीय नीरज जी की प्रथम शिष्या)

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, श्रीगंगानगर

सह सम्पादक :
समुद्र सिंह



प्रकाशक :
गुणराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, शिवानी-170021 (हरियाणा)

नीरज एक अनोखा व्यक्तित्व विशेषांक
जनवरी 2019 (2)

बोहल शोध मञ्जूषा

Bhohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY
(MARCH, JUNE, SEPTEMBER AND DECEMBER) RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिन्हा एडवोकेट
कमरा नं. 175, नमु सचिवालय,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag02@gmail.com
फ़ोन : 0946653212

उपकार्यालय :
सहदेव शास्त्री
शिवपुरी, नखाना रोड,
जौन्द (हरियाणा)
फ़ोन : 09416253826

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohals@gmail.com
Facebook.com/bhohalshodhmanjusha
Website : www.gngo.org
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price : Yearly
Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer: 1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/TPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manjhan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

जौन्द शोध मंजूषा
नौरज एक अनौखा व्यक्तिगत विशोधक
जनवरी 2019 (6)

क्रम मंजूषा (नौरज विशेषांक)

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|---|------------------------|-------|
| 1. | कार्यों गुजर गया | प्रो. राधे मोहन राय | 6-7 |
| 2. | गोपालदास नौरज के काव्य में प्रेम के विविध रूप | सुरशील कुमार | 8-11 |
| 3. | गोपालदास नौरज जी के काव्य के विविध सौपान | सुरेन्द्र सिंह | 12-15 |
| 4. | 'सत्य और सौंदर्य के समर्पित सर्जक : गीतकार नौरज' | डॉ. शशिकांत सोमवणे | 16-21 |
| 5. | गोपालदास नौरज के गीत-काव्य में सौन्दर्य विधान | संदीप कौर | 22-25 |
| 6. | नौरज एक अनौखा व्यक्तित्व' काव्य में मानवतावाद | नीतू गुप्ता | 26-28 |
| 7. | 'नौरज' साहित्यकार के रूप में | प्रीती देवी | 29-31 |
| 8. | गोपालदास नौरज का जीवन और काव्य प्रसंगिकता | रमनदीप कौर | 32-36 |
| 9. | गोपालदास नौरज के काव्य में गीतात्मकता | हेम लता | 37-39 |
| 10. | सिनेमा जगत के ब्रह्मरत्न रत्न : गीतकार नौरज | सीमा देवी | 40-41 |
| 11. | गोपालदास नौरज के काव्य में दार्शनिकता | चरनजीत कौर | 42-45 |
| 12. | विश्वर का अध्या - नौरज की पाली | डॉ. विजय महादेव गाडे | 46-49 |
| 13. | जीवन नहीं मरा करता है' में नौरज जी का जीवन सन्देश | निशा सुरलोधरन | 50-52 |
| 14. | नेरी और से नौरज के लिये कुछ पंक्तियाँ... | राकेश कुमार श्रीवास्तव | 53-53 |
| 15. | गोपालदास नौरज के साहित्य में राजनीति विमर्श | सुशयन्त कुमार माली, | |
| 16. | नौरज की काव्य-साधना : एक दृष्टिकोण | सुशयन्त माली | 54-58 |
| 17. | प्रेम की अभिव्यक्ति का दूसरा नाम नौरज | गणेश ताराचंद खरे | 59-62 |
| 18. | नौरज का सिनेमा को योगदान | गोपाल शरण शर्मा | 63-65 |
| 19. | नौरज के काव्य में सौन्दर्यानुभूति | डॉ. दिलीप लक्की | 66-68 |
| 20. | डिन्दी सिनेमा और नौरज | डॉ. राहुल शुक्ला, | |
| 21. | गोपालदास नौरज जी के काव्य के विविध सौपान | अरुण कुमार | 69-73 |
| 22. | डिन्दी काव्य की शैली गोपालदास नौरज | डॉ. अनिला मिश्र | 74-78 |
| 23. | नौरज के काव्य में सामाजिक संवेदना | सुरेन्द्र सिंह | 79-82 |
| 24. | नौरज के काव्य में प्रकृति | डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी | 83-86 |
| | | डॉ. पंडित बल्ल | 87-89 |
| | | डॉ. दयाराम | 90-93 |

नौरज एक अनौखा व्यक्तित्व विशेषांक

जनवरी 2019 (6)



निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति जीवन में जितना अधिक दुःख सहता है वह उतना ही उदार स्वभाव का बन जाता है, वहीं कारण भी कि नीरज भी इस प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वह दुःख व्यक्ति को उदार दृष्टि से देखा था और शोषित लोगों के प्रति विशेष रूप से सहानुभूति रखता था। उन्होंने अपनी रचनाओं में मृजीपतियों और नीकरशाही के प्रति आक्रोश व्यक्त किया तथा आम जन को इसका विरोध करने के लिए तलकासा। वे चाहते थे कि धर्म, धन और भाषा का झगड़ा समाप्त हो तथा सभी को बराबर का अधिकार मिले। वैचारिक दृष्टि से नीरज भगवान बुद्ध, मांछी, अरविन्द और मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे। उसका प्रभाव पूर्ण रूप में उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित नीरज का दर्शन मानवता का दर्शन है। नीरज सम्पूर्ण समाज को एकलपता के भ्रम से देखना चाहते थे, यही कारण है कि वे अपने गीतों में मानवता का संदेश देते थे।

संदर्भ सूची

1. बावसाहि गोरीला, भारतीय दर्शन, 1983, इलाहाबाद : लोक भारतीय प्रकाशन पृ. 17
2. नीरज दर्द दिया है, 1986, दिल्ली : आत्माराम एण्ड संस. पृ. 115
3. नीरज, कारवां गुजर गया, 1985, दिल्ली : आत्माराम एण्ड संस. पृ. 55
4. वही पृ. 42
5. नीरज, दर्द दिया है, 1986, दिल्ली: आत्माराम एण्ड संस. पृ. 148
6. नीरज, प्राणगीत, 1986, दिल्ली: आत्माराम एण्ड संस. पृ. 5
7. नीरज, प्राणगीत भूमिका से, 1985, दिल्ली: आत्माराम एण्ड संस. पृ. 8
8. नीरज, दो गीत, 1988, दिल्ली : आत्माराम एण्ड संस. पृ. 11
9. नीरज, दर्द दिया है, 1986, दिल्ली : आत्माराम एण्ड संस. पृ. 29
10. नीरज, दर्द दिया है, 1986, दिल्ली: आत्माराम एण्ड संस. पृ. 4
11. नीरज, प्राणगीत, 1985, दिल्ली : आत्माराम एण्ड संस. पृ. 6

-धरतजीत और शोषार्थी
भाषा विज्ञान और पंजाबी कोशकारी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)
फोन नं. 94781-64105

ATTESTED

Mithras

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept of Psychology,

Asso. Professor,

Sabasaheb Ghatge Mahavidyalaya

Rhivawadi

विश्वभर का आयना - नीरज की पाती

गोपालदास सक्सेस 'नीरज' यह नाम किसी भी परिचय का अब मोहताब नहीं है। नीरज आज हमारे बीच में गंभी है लेकिन यह सच्चाई स्वीकार करने के लिए अब भी मन तैयार नहीं है क्योंकि खुद कभी नीरज ने ही कहा था -
" भैया हर रंग है अक्सर भरी खिन्चा तस्वीर
देखने वालों ने देखा है हर लफ्ज में मुझे!"

नीरज के नाम पर तीस से अधिक काव्यसंकलन हैं। उनके साहित्य पर शोध करते समय हमने इन सब पर कम-अधिक मात्रा में अनुसंधान किया था किन्तु इनकी विवेच्य रचना 'नीरज की पाती' ने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया, लिहाजा इस संकलन पर लेखन करते समय हमने प्रसन्नता महसूस हो रही है। मूलतः इस काव्य संकलन की आत्मा भी उनका मानवतावाद है। 'नीरज की पाती' सन 1958 में प्रकाशित काव्यकृति है लेकिन इससे पूर्व सन 1956 में उनकी और एक रचना 'लिख-लिख भगत पाती' प्रकाशित हुई थी। इसी कव्यसंकलन की रचनाएँ बाद में 'नीरज की पाती' में भी हमें नजर आती है।

इस काव्यकृति के प्रारंभ में लगभग 24 पंक्तियाँ 'दो शब्द' भी है जिसके पहले अनुच्छेद में नीरज ने लिखा है -
"प्रस्तुत संग्रह की पातियों समय समय पर भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है और वे पर्याप्त लोकप्रिय भी हुई है इसलिए यहाँ इनके विषय में लंबी चौड़ी भूमिका देने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती। इस संग्रह के आरंभ की कुछ पातियों में हिन्दी के लिए सर्वथा नवीन मंत्रे उद्गू के एक छंद का प्रयोग किया है। इस छंद का वजन हिन्दी के प्रचलित छंदों के समान मात्राओं पर आधारित न होकर लय (बहर) पर निर्भर रहता है। इसलिए शायद उद्गू छंद योजना से सर्वथा अनिम्नज्ञ पाठकों को इस में दोष दिखाई दे किन्तु ऐसी बात नहीं है।" प्रारंभ में नीरज अपना परिचय इस प्रकार देते हैं। -

"कौंपती लै यह सिवाही, यह धुआँ यह काजल
उम्र सब कभी इन्हें गीत बनाने में कटी
कौन समझ मेरी आँखों की नमी का भावलेख
विन्दगी दे थी, पर लिख देवाने में कटी।"

इन पंक्तियों पर निश्चित है साक्षि सुधियानवी का प्रभाव दिखाई देता है -

"आह ! वे गारे हलाकण ये विपु का महबूब
उम्र अपने इन्हीं तारीक मकानों में कटी
विन्दगी निदरले-बेहिस की पुरानी तकसीर
इक हकीकत थी मगर बंद फसानों में कटी।"

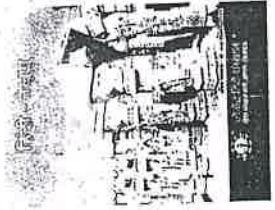
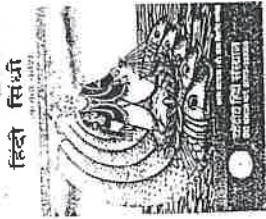
इस संकलन की प्रथम पातों में नीरज अपनी प्रियतमा को संबोधित करते हुए लिखते हैं -

" इसलिए आज तुझे आखिरी खत और लिख दूँ
आप में खम के दरिया में उतर जाऊँगा
गोरी-गोही-की तेरी सन्दली बौहों की कसम
लोट आऊ तो तुझे खौद नया साऊँगा।"

अधि गाविल की बर्ब पर आग के दरिया में उतर जाने की बात करता है लेकिन उसको ईद-निर्द जो परिवेश है उसे वह भूल नहीं पाता इसलिए समाज के शोषित लोगों को वेदना उनकी पाती से अनायास उभर आती है -

सरस्थान प्रकाशन

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



ATTESTED

(Signature)

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology.

पुस्तक कृपक विद्वत् तथा प्रकाशक डॉ. अनिता गुणुली, क्षेत्रीय निदेशक द्वारा संविद, क्षेत्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के फल में
अनुमोदित तथा प्रकाशित - 500044 से मुद्रण स्थल से मुद्रित तथा क्षेत्रीय हिंदी संस्थान, 2-2-12/5, डॉ. बी.
गुणुली, विद्यानगर, हैदराबाद - 500044 (तेलंगणा) प्रकाशन स्थल से प्रकाशित, संपादक डॉ. अनिता गुणुली।
कालोनी, विद्यानगर, हैदराबाद 500007 (तेलंगणा)

ATTESTED

(Signature)

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology.

Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

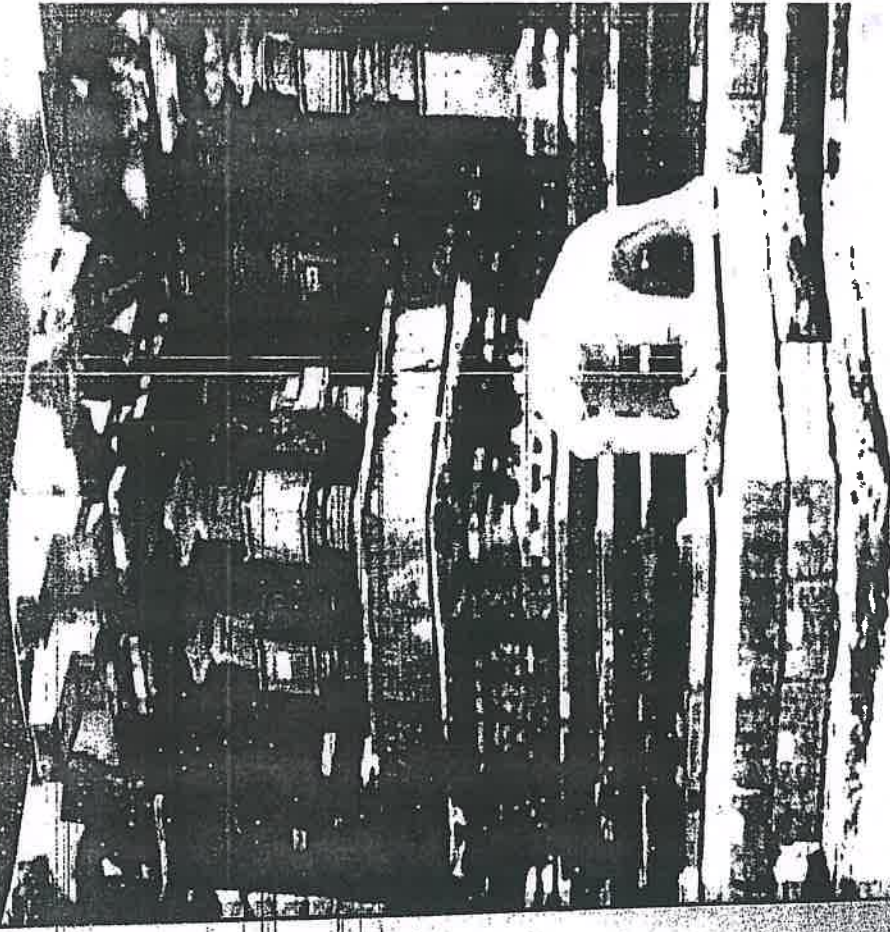
ISSN : 2456-9445

19-20

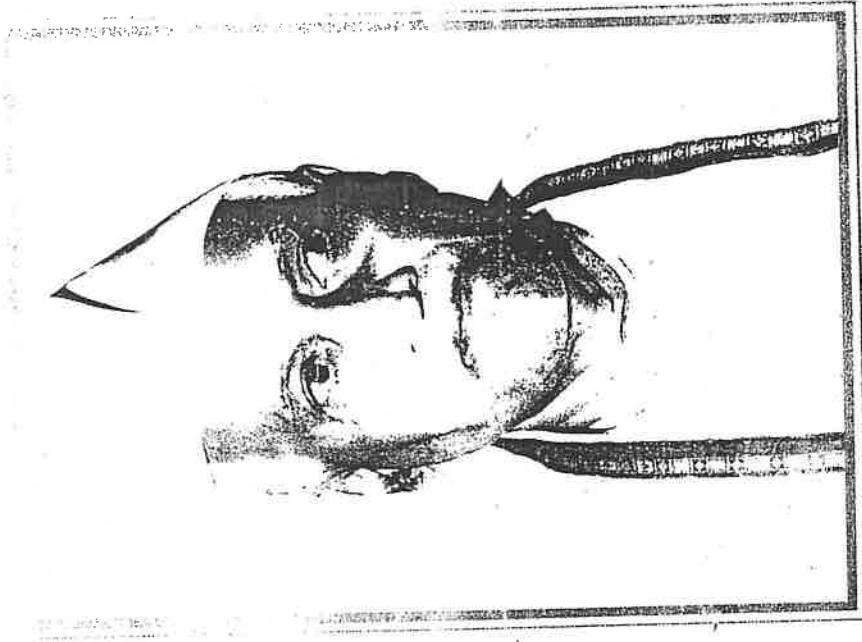
समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित परिचय

जोयन संख्या/RNI.No.: TEL.HIN/2016/70799
उ-3, अंक-2, चैत्र-स्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019



पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण



(2 फरवरी, 1902 - 6 मार्च, 1995)

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डणु ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष भारतीय मूल के दो विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

पंजीयन संख्या/RNI No.: TEL/HIN/2016/70799

ISSN : 2456-9445

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-3 अंक-2
चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अश्लेष-ज्यु, 2019

परवर्ती मंडल

प्रो. गोपीनाथन

एम.ए., पी.एच.डी.

पूर्व कुतूबि, म.उ.अ.हिंदी वि.वि., लर्वा

ई-मेल : gopinathnicker@gmail.com

संस्थाक

डॉ. कमल किशोर गोयनका

एम.ए., पी.एच.डी.

उपस्थक, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल

ई-मेल : kgoynanka@gmail.com

प्रो. टी.आर.भट्ट

एम.ए., पी.एच.डी.

पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,

कनॉटक वि.वि., धारवाड़

ई-मेल : tbrbhatt@gmail.com

प्रो. एम.ज्ञानम

एम.ए., पी.एच.डी.

पूर्व केंद्रीय निदेशक, के.हि.सं., भैरूर

ई-मेल : gnanajnanam@yahoo.co.in

प्रो. एम.वेंकटेश्वर

एम.ए., पी.एच.डी.

पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं भारत अध्ययन विभाग, इरवु, हैदराबाद

ई-मेल : manjar.venkateshwar@gmail.com

प्रो. आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

एम.ए., पी.एच.डी.

पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य, श्री कनॉटक वि.वि., तिरुची

ई-मेल : horeddy.1954@gmail.com

प्रधान संपादक

प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय

एम.ए., पी.एच.डी.

निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान

ई-मेल : nkpandey95@gmail.com

संपादक

डॉ. अनीता गांगुली

एम.ए., पी.एच.डी.

केंद्रीय निदेशक, के.हि.सं., हैदराबाद केंद्र

ई-मेल : anitaganguly1954@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार

डॉ. स्वर्ण अनिल

एम.ए., पी.एच.डी.

केंद्रीय हिंदी संस्थान

ई-मेल : swarnanish16@gmail.com

सहयोग

डॉ. एस. राधा

एम.ए., पी.एच.डी.

कला एवं परिकल्पना

डॉ. विजय एम. ठोरे

एम.ए., पी.एच.डी.



दक्षिण भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अद्वितीय एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-समन्वय दक्षिण

खंड-3 अंक-2, चैत्र-ज्येष्ठ, 2076/अप्रैल-जून, 2019

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
2-2-12/5, डी.डी.कॉलोनी,
हैदराबाद-500007 (तेलंगाना)
फोन/फैक्स - 040-27427208
मोबाइल - 09456010035
ई-मेल - khshyderabad@yahoo.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत प्रति अंक रु. 40.00, वार्षिक रु.150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250/-
(डाक व्यय प्रति अंक रु.35/- तथा
वार्षिक रु.100/- अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10, वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक : कर्षक आर्ट प्रिंटर्स, हैदराबाद

आवरण चित्र : हज्जार स्तंभ मंदिर (रुद्रेश्वर स्वामी मंदिर), बरंगल

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

संपादकीय : प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय 05
प्रधान संपादक की कल्पम से

आलेख

1. तमिल भाषा का इतिहास : प्रो.एस.ज्ञानम 11
2. आधुनिक तेलुगु साहित्य में कवि-सम्राट विश्वनाथ भट्टनायगय्य और 'रामायण कल्पवृक्षम्' : श्री.एम.के.एच.एन.ए. 21
3. सुबहपाथ्य भारती की कक्षावियाँ : डॉ.विजय प्रसन्नित गाडे 29
4. 'मानवता' को सार्थक करता कल्पन संघ की कविताएँ : डॉ.शशिकांत मिश्र 40
5. कबीर और तमिल संत रामलिंग स्वामी वल्लभार : एक तुलनात्मक अध्ययन : डॉ.एस.मलरविलि 44
6. भारतीय चित्रकला की दक्षिण शैली का उद्भव और विकास : डॉ.सुषमा जैन 50
7. तेलंगाना में गोर बोलों और बंजारा समुदाय विषयक हिंदी लेखन : एक मूल्यांकन : डॉ.वी.रामकोटी 56
8. चलन का साहित्य और उनका स्त्रीवाद : डॉ.कोमिशेट्टि मोहन 59
9. तेलंगाना के विरासत में आया हुआ बौद्ध धर्म : सय्यद तोहेर 67
10. हिंदी-तेलुगु पृथ्व महामनीषी : आचार्य भीमसेन 'निर्मल' : डॉ.श्विनीता कुब्जा 71
11. तेलंगाना के क्रांति-कानि सौंदर्य : कवि श्री जूकंठि जगन्नाथम : डॉ.टी.सी.वसंता 76

विश्वनाथ सत्यनारायण साहित्याचार्य थे, साहित्य की हर विधा का शास्त्रीय पक्ष निरूपित करने में वे सिद्धहस्त थे। साहित्य और संस्कृति संबंधी उनके विचार साहित्य के अध्येताओं के लिए चिंतन की नवीन दिशाएँ उद्घाटित करता है। इतिहास के संबंध में विश्वनाथ का अभिमत विचारणीय है। उनके अनुसार, इतिहास केवल राजाओं की गाथाएँ ही नहीं होती बल्कि वह मानव जीवन में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सौंदर्य बोध को विकसित करने के निमित्त रचित साहित्य है। बृहत्काय ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रणेता के रूप में विश्वनाथ को महारत हासिल थी। मगध राजवंश के इतिहास पर आधारित बारह उपन्यासों की श्रृंखला 'पुराणा वैश ग्रंथमाला', नेपाल राजवंश चरिता' नामक छह उपन्यासों की ग्रंथमाला नेपाल के राजवंश से संबंधित कथावस्तु पर आधारित है जिसमें लेखक ने चारवाक दर्शन से प्रभावित सामाजिक जीवन और मूल्यों को प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार 'काश्मीर राजवंश चरिता' में काश्मीर के राजघराने पर आधारित कथावस्तु को छह खंडों की उपन्यास श्रृंखला में विशनाथ सत्यनारायण ने रचा है। उपर्युक्त तीनों औपन्यासिक श्रृंखलाएँ कवि-सम्राट के वैविध्यपूर्ण रचना कौशल को निरूपित करती हैं। इस युगांतकारी सर्जक की लेखनी से 30 काव्य, 20 नाटक, 10 समालोचनाएँ, 35 कहानियाँ, 70 निबंध, 50 रेडियो नाटक, 10 अंग्रेजी निबंध, 10 रचनाएँ संस्कृत में, सौ से अधिक भूमिकाएँ, संस्कृत से तेलुगु में प्रचुर मात्रा में अनूदित ग्रंथों का प्रणयन हुआ। इनके प्रमुख उपन्यास हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, मलयालम, उर्दू और संस्कृत में अनुवादित और लोकप्रिय हुए। उन्होंने अध्यापन के क्षेत्र में भी खूब ख्याति अर्जित की। वे उच्च कोटि के साहित्याचार्य थे। उन्होंने करीमनगर गवर्नमेंट कॉलेज, करीमनगर (वर्तमान तेलंगाना राज्य में स्थित) के प्राचार्य के रूप में 1959 से 1961 तक अपनी बहुमूल्य सेवाएँ दीं।

विश्वनाथ सत्यनारायण को सन् 1970 में पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 1971 में उनकी कालजयी रचना 'रामायण कल्पवृक्षमु' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 18 अक्टूबर, 1976 को गुंटूर (आंध्र प्रदेश) में तेलुगु साहित्य के कीर्ति स्तंभ कवि-सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण का निधन हो गया। 0

संदर्भ सूची :

1. विश्वनाथ सत्यनारायण, रामायण कल्पवृक्षमु (तेलुगु रचना)

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. Psychology,

Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

Bhilai-3

सुब्रह्मण्य भारती की कहानियाँ

डॉ. विजय महादेव गाडे

महाकवि भारती एक तमिल कवि थे। उनको 'महाकवि भरतियार' के नाम से भी जाना जाता है। उनकी कविताओं में राष्ट्रभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई है। यह एक कभी होने के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल सेनानी, समाज सुधारक, पत्रकार तथा उत्तर भारत व दक्षिण भारत के मध्य एकता के सेतु समान थे।

भारती जी का जन्म भारत के दक्षिण प्रांत तमिलनाडु के एक गाँव एट्टयपुरम में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में ही हुई। 'मेधावी छात्र होने के भ्रते वहाँ के राजा ने उन्हें 'भारती' की उपाधि दी।' जब वे किशोरावस्था में ही थे तभी उनके माता-पिता का निधन हो गया। उन्होंने सन् 1897 में अपनी चचेरी बहन चेल्लमल के साथ विवाह किया। वे बाहरी दुनिया को देखने के बड़े उत्सुक थे। विवाह के बाद सन् 1898 में वे उच्च शिक्षा के लिए बनारस चले गए। अगले चार वर्ष उनके जीवन में खोज के वर्ष थे।

बनारस प्रवास की अवधि में उनका हिंदु आध्यात्म व राष्ट्रिय से साक्षात्कार हुआ। सन् 1900 तक वे भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में पूरी तरह जुड़ चुके थे और उन्होंने पूरे भारत में होने वाली कांग्रेस की सभाओं में भाग लेना आरंभ कर दिया था। भगिनी सिद्धिदा, अरविंद और वंदे मातरम के गीत ने भारती के भीतर आजादी की भावना को और पल्लवित किया। कांग्रेस के उग्रवादी तबके के करीब होने के कारण पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहती थी।

भारती 1908 में पॉडिचेरी गए, जहाँ दस वर्ष वनवस्ती की तरह बिताए। इसी दौरान उन्होंने कविता और गद्य के जरिए आजादी की बात कही। 'साप्ताहिक इंडिया' के द्वारा आजादी की प्राप्ति, जाति भेद को समाप्त करने और राष्ट्रीय जीवन में नयी शक्ति की पहचान के लिए वे जुटे रहे। आजादी के आंदोलन में 20 नवंबर, 1918 को वे जेल गए।

'स्वदेश गीतांगल' (स्वदेश गीत : 1908) तथा 'जन्मभूमि' (1909) उनके देशभक्तिपूर्ण काव्य माने जाते हैं, जिनमें राष्ट्रिय और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति ललकार के शब्द मौजूद हैं। आजादी की प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए तीन चीजों को वे मुख्य मानते थे- बच्चों के लिए मदरसे, कल-कारखानों के लिए औजार और अखबार छापने के लिए कागज। एक कविता में भारती ने 'भारत का जाप करो' की सलाह दी है।

"तुम स्वयं ज्योति हो माँ, शौर्य स्वरूपिणी हो तुम माँ,
दुःख और कष्ट की संहारिका हो माँ!"

डॉ. विठोदकर 20-24

333

2020-21

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

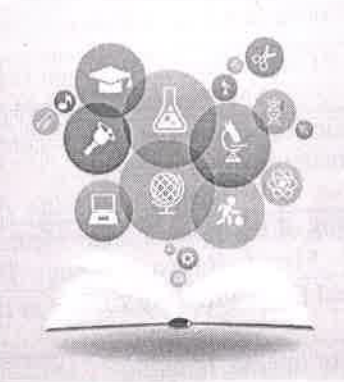
B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

August -2020 ✓

ISSUE NO-CCXLII (242)



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Dinesh W. Nicht
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm, Sci Collage,
Walgaon. Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr. Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
Head, Deptt. of Economics,
G.S. Tompe Arts Comm, Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

ds

Principal,

Bhaskar Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tel. Palus, Dist. Sangli.



INDEX

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|--|---|----------|
| 1 | Corona-19: Impact of Yoga and Exercise | Dr. Shridhar R. Dhakulkar | 1 |
| 2 | Economy of Maharashtra: A Study | Dr.Liladhar D. Kharपुरीये | 5 |
| 3 | Savarkar's thoughts on Nationalism | Dr. Maya S. Watane | 8 |
| 4 | Gender Inequality In India: Issues In Development | Dr. Sushma Bageshwar | 12 |
| 5 | The Translation Of Dalit Writings And Its Impact | Mr. Jeetendra K. Talreja | 17 |
| 6 | Geotourism for sustainable development of Tribes: an Overview | Mr. Dinu Laxman Patil | 20 |
| 7 | Impact of Covid-19 on Indian Film Industry | Dr. Renu A. Tiwari | 23 |
| 8 | Criminal Liability of Corporations : The Legal Dilemma | Mahendra U. Ingole /Dr. Pankaj D. Kakde | 27 |
| 9 | Effectiveness of Brain Based learning on the achievement in Mathematics of secondary school students | Nilima B. Rindhe /Dr. Hrushikesh Dalai | 30 |
| 10 | Legislative Framework of Freedom of Press/Media in India | Mr.Chaitanya A. Ghuge/ Dr.Pranay R. Malviya | 36 |
| 11 | Factors Influences and Motivational of Athlete in High Performance Sports | Ulhas V. Bramhe | 40 |
| 12 | The Indian Scenario of Internet Banking | Dr.Anil Satyanarayan Purohit | 43 |
| 13 | वेद नाकारणारा पहिला क्रान्तिकारी संत तुकाराम | डॉ. एन. एच. खोडे | 49 |
| 14 | कोरोनाच्या महामारीत असंघटित मजूरांचे स्थलांतर समस्या आणि उपाय | प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर | 55 |
| 15 | शिलालेखांमधील वारकरी संप्रदायाचा इतिहास | डॉ. अनिता देशमुख | 60 |
| 16 | कोरोनाच्या पार्श्वभूमीवर केंद्र - राज्य संबंधाचा आढावा | प्रा.डॉ. भगवान विश्वनाथ धोटे | 66 |
| 17 | 'महाराष्ट्राची माउली': वारकरी पंथ-संत आणि काव्य | प्रा.डॉ.वसंत रघुनाथ शेंडगे | 70 |
| 18 | नागपूर शहरातील मजूरी करणाऱ्या महिलांच्या कौटुंबिक व आर्थिक समस्या | डॉ. माया प्रभाकर शिरखेडकर | 75 |
| 19 | मराठी पौराणिक कादंबरीतील ययाती | डॉ. भारती खापेकर | 83 |



कोरोनाच्या महामारीत असंघटित मजूरांचे स्थलांतर समस्या आणि उपाय
प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी ता. पलूस, जि. सांगली

डिसेंबर २०१९ च्या पहिल्या आठ दहा दिवसांमध्ये जगातील पहिला कारोनाग्रस्त पॉझिटिव्ह रुग्ण चीन देशात वुहान व हुबेई या गहरात सापडला व पहाता पहाता हा कोविड-१९चा विषाणू संपूर्ण जगभर विषाणूने संपूर्ण जगावर आपली दहशत, साम्राज्य निर्माण केले आहे. या विषाणूच्या महामारीमुळे संपूर्ण जगाची अर्थ व समाज व्यवस्था विस्कळीत व्हाली आहे. शेती, उद्योग, व्यापार, वहतूक, दळणवळण, शिक्षण, आरोग्य, हॉटेल, पर्यटन या साख्या अनेक सूक्ष्म, लघु, मध्यम व मोठ्या उद्योग, व्यवहारावर याचा प्रतिकूल परिणाम झाला आहे. तसेच या महामारीमुळे माणसांच्या, आचार, विचार, मन, शरीर, आरोग्य, भावना, संस्कृती, माणूसकी यांच्यावर सुध्दा वाईट परिणाम झालेले आहेत. यामुळे प्रत्येकाच्या मनात भिती, संशय, दबाव, दडपण, उपासमार, तिरस्कार, राग, चिडचिडपणा या गोष्टी निर्माण झालेल्या आहेत.

संपूर्ण जगाला या महामारीने आपल्या विळख्यात घेतले आहे. त्यामुळे अनेक समस्या निर्माण झालेल्या आहेत. त्यामध्ये एक महत्वाची समस्या म्हणजे मजूरांचे स्थलांतर होय.

यापूर्वी जगातील असंख्य लोकांनी असंख्य संकटाला तोंड देवून आपले अस्तित्व टिकवून ठेवले आहे. उदा. पहिल्या महायुद्धाचे संकट, दुसऱ्या महायुद्धाचे संकट

१९२९ ची आर्थिक महामंदी, पूर, महापूर, दुष्काळ, ग्रेगरी ई. पण या सर्व संकटापेक्षा भयानक, विचित्र व अदृश्य संकट म्हणून "कोरोनाच्या (कोविड-१९)" च्या महामारीकडे पाहिले जाते. या विषाणूने गरीब-श्रीमंत, राजा-भिकाारी, शहर-ग्रामिण, गष्टपती, छत्रपती, काळा-गोय, स्त्री-पुरुष, मानव-प्राणी, अँक्टर-रेक्टर असा कोणता ही भेदभाव न करता सर्वांना आपले गुलाम (बंदी) बनविले आहे. यातून देव-देवता यांचे मंदीर सुध्दा सुटले नाहीत. सगळ्या व्यवस्थेला याने चेकमेट केले आहे.

१.१ स्थलांतराची संकल्पना :-

स्थलांतराची संकल्पना खूप व्यापक व गुंतागुंतीची आहे. लोकसंख्या शास्त्राच्या दृष्टिने स्थलांतर म्हणजे मानवाचे एका ठिकाणापासून दुसऱ्या ठिकाणी होणारे प्रयाण असा व्यापक अर्थ आहे. कारण जेथे लोक रहातात तेथे उपजिवीकेच्या साधनांचा अभाव, रोजगार संधीचा अभाव, शिक्षण, आरोग्य, वहतूक, दळणवळण साधनांचा अभाव, जीवनमान, रहाणीमान सुधारण्यासाठी सेवा, सवलती व संधीचा अभाव या साख्या अनेक गैरसंयोगीमुळे किंवा काही प्रसंगी दबाव, दडपण, अन्याय, भय, असुरक्षितपणाची जाणीव अशा कारणामुळे ही लोकांचे स्थलांतर होत असते. थोडक्यात स्थलांतर या संकल्पनेत दोन ठिकाणातील अंतर, स्थलांतराचा हेतू व कालावधी यांना महत्वाचे स्थान असते.

स्थलांतराचे दोन प्रकार पडतात

- १) राष्ट्रीय स्थलांतर
- २) अंतरराष्ट्रीय स्थलांतर

परिस्थितीनुसार देशांतर्गत स्थलांतर, राज्यांतर्गत, जिल्हाअंतर्गत, तालुकांतर्गत, ग्रामिक-शहरी, शहरी-ग्रामिण, शहरातून-शहराकडे, तात्पुरते किंवा कायम स्वरूपी स्थलांतर असणे वर्गीकरण केले जाते.

१.२ संशोधन अभ्यासाचा हेतू :-

- १) सीलांतरीत होणाऱ्या लोकांच्या स्थलांतरीत होण्यामागील कारणांचा अभ्यास करणे.
- २) कोविड-१९ च्या महामारीच्या काळात शासकीय धोरणांचा स्थलांतरीत झालेल्या परिणामांचा अभ्यास करणे.
- ३) असंघटित क्षेत्रात काम करणाऱ्या मजूरांच्या प्रश्नांचा अभ्यास करणे.

१.३ संशोधन अभ्यासाची गृहितके :-

- पुढील गृहितके धरून संशोधन समस्येचा अभ्यास केला आहे.
- १) लोकांच्या स्थलांतरीत होणे ते लोक जेथे राहतात तेथील परिस्थिती कारणीभूत असते.
 - २) कोविड-१९ च्या महामारी काळात सरकारचे अनिश्चित धोरण व लोकांच्या सहनशिल शक्तीचा अंत स्थलांतरीत कारणीभूत ठरले आहे.
 - ३) भारतात इतर राज्यांच्या तुलनेत महाराष्ट्र राज्यातून व शहरातून सीलांतरीत प्रमाण अधिक आहे.

१.४ संशोधन समस्येची व्याप्ती :-

मुंबई ही भारताची आर्थिक राजधानी समजली जाते. देश-विदेशातील लोक आपले नशिब अजमावण्यासाठी, अनेक स्वप्ने उगरी घेवून मुंबई शहरात येत असतात. इथेवाल्या पासून अभिनेता पर्यंत असंख्य कामगार, मजूर, व्यवसायीक, मुद्दम, लघु, मध्यम, उद्योजक, कारागिर, हमाल, चाकरमानी इत्यादी लोक आपल्या जीवाची मुंबई करून आपले मूळगाव परिवार मित्र, नातलग सोडून मुंबई सांख्या महागड्या शहरात कमी जागेत, कमी वेळेत, कमी पैशात, आपल्या गरजावर नियंत्रण ठेवून मनावर नियंत्रण ठेवून आपले अस्तित्व टिकविण्याचा प्रयत्न करीत असतात. यामध्ये काही मजूरांचे त्याग बलिदान, यातना दुःख, अश्रू, सहनशिलता दडलेली असते. कोकणस्थ लोकांचे, दुष्काळग्रस्त, धरणग्रस्त, सजेगारग्रस्त लोकांचे गेजगार मिळविण्याचे व स्वप्नाला आकार देण्याचे शहर म्हणून मुंबईकडे पाहिले जाते. पण २०१९-२० या कालावधीत आपल्या देशातील लोकांना खास करून मुंबईत राहणाऱ्या लोकांना अनेक संकटाना तोंड द्यावे लागले आहे. यामध्ये कोरोना महामारीने लोकांचे आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व औद्योगिक कंबरडे मोडून काढल्याने. भय, उपासमार, तिरस्कार, चिंता यामुळे स्थलांतर करणे लागत आहे. याचा आढावा घेतलेला आहे.

१.५ संशोधन अभ्यास पध्दती :-

संशोधन अभ्यास पध्दतीमध्ये दुय्यम साधन सामुग्रीचा अधिक वापर केलेला आहे. यामध्ये दैनिक वर्तमान पत्रातील लेख, अग्रलेख, टी.व्ही वर प्रसारित होणारी दृकश्राव्य साधनातून मिळणाऱ्या माहितीचा वापर, इंटरनेटवर उपलब्ध असलेल्या माहितीचा वापर केले आहे. काही संदर्भ पुस्तकांचा वापर केला आहे.



१.६ श्रमीकांचे अर्थ व समाजाच्या विकासातील महत्त्व :-

माणूस हा सगळ्यात बुद्धीमान प्राणी आहे. मानव अश्मयुगातून विज्ञान युगात प्रवेश केलेला आहे ते आपल्या बुद्धीच्या जोरावर. प्रसिध्द अर्थतज्ञ जॉन रस्कीन यांच्यामते या जगात मानवी संपत्ती शिवाय दुसरी कोणती ही श्रेष्ठ संपत्ती असू शकत नाही. तसेच प्रसिध्द अर्थतज्ञ अँड्रयु स्मिथ "Wealth of Nation" या ग्रंथात मानवी श्रमाला अधिक महत्त्व दिले आहे. त्याच्यामते "सर्व संपत्तीचा निर्माता श्रमीक आहे. सर्व विकासाचा केंद्र बिंदू माणूसच आहे (मजूर)". पण सगळ्यात अवघड व कठीण वहातूक म्हणजे श्रमीक किंवा मजूरांची असते असे ही म्हटले आहे. कारण श्रमीक (मजूर) हा सजिव वटक आहे. त्याला मन, भावना, विचार, संस्कृती, इतिहास, प्रेम, इज्जत, स्वाभिमान या गोष्टी त्याच्या जवळ असतात. त्यामुळे शक्यतो माणूस आपली शेती, गाव, नाती, परिवार सोडून दुसरीकडे जाण्यास तयार नसतो. समाजा परिस्थितीमुळे किंवा मजदूरीने गाव, घर, सोडून जावे लागले तरीसुद्धा ओढ असते ती गावाकडची हे मात्र नक्की.

जग प्रसिध्द साहित्यिक आण्णा भाऊ साठे यांनी म्हटले आहे. ही धरती नागशोपाच्या डोक्यावर तरलेली नसून दीन, दुवळ्या, दलित व कष्टकऱ्यांच्या तळहातावर तरलेली आहे. "कष्टकरी माणसा तू कुणांचा गुलाम नाहीस तर या वास्तव जगाचा धनी आहेस" तसेच प्रसिध्द अर्थतज्ञ रॉबर्ट ओवेन यांनी कामगारांच्या दुःखाला, वाचा फोडली होती. तसेच समाजवादाचा जनक जर्मन अर्थतज्ञ कार्ल मार्क्स यांनी श्रमीकांचे शोषण करणाऱ्या भांडवलदारांना सगईत चोर म्हटले होते.

थोडक्यात वरील विचारवंतांचा आढावा घेतल्यास श्रमीक (मजूर) संघटित असो किंवा असंघटित असो, शारीरिक काम करणारा असो किंवा बौद्धिक काम करणारा असो, हमाल असो किंवा वैमानिक. प्राप्त परिस्थितीनुसार, वेळ, काळ, ठिकाणानुसार प्रत्येक श्रमीकांच्या श्रमाला खूपच महत्त्व आहे. उदा. मुंबई शहरातील डबेवाले दिसायला त्यांचे काम साधे व हलके दिसते. पण संपूर्ण मुंबईच्या अर्थव्यवस्थेला ऊर्जा पुरविण्याचे कार्य ते करित असतात. सैन्य फक्त शास्त्रावर चालत नाही पोटावर चालते. कोणते ही यंत्र इंधन भरल्या शिवाय चालत नाही. तसे अन्ना शिवाय (ऊर्जा) कामगारांची कार्यक्षमता टिकत नाही. म्हणून आज मानवी साधनसंपत्ती टिकवून ठेवणे काळाची गरज आहे. भारतातील लोकडाऊनचा परिणाम देशातील ४ कोटी स्थलांतरीत मजूरांवर झाला.

१.७ मानवी स्थलांतरीची कारणे :-

मजूरांच्या स्थलांतरणाला अनेक कारणे आहेत. उदा. धरणग्रस्त, पूरग्रस्त, दुष्काळग्रस्त, रोगराई, रोजगारासाठी, नोकरी, लग्नामुळे, जातीय दंगली, भूकंपग्रस्त, वाढती लोकसंख्या, त्रंकागी, दारिद्र्य, शेतजमिनीचे तुकडीकरण, शेतीवरील अतिरिक्त भार, ग्रामीण भागात, शेतीचे अनिश्चित उत्पन्न, अनिश्चित वेतन, अनिश्चित काम, उद्योगधंद्यांचा अभाव, भांडवलशाहीचे टंचाई, वाढती महागाई, मुलांच्या पालन पोषणाचा वाढता खर्च, कर्जबाजारीपणा, मुलाबाळांची भविष्याची काळजी, आजारपणावर वाढणाऱ्या खर्च इत्यादी जेव्हा माणसाला माणसाच्या गरजा सहजासहजी भागविता येत नाहीत तेव्हा पर्यायी व्यवसायाचा, व्यवस्थेचा विचार करून माणूस शहराकडे, उद्योग व्यवसायाच्या ठिकाणी स्थलांतरीत होत असतात.

२००१ चा आकडेवारी नुसार आपल्या देशात स्थलांतरीत मजूरांची संख्या १४ कोटी होती. तर २०११ च्या आकडेवारी नुसार स्थलांतरीत मजूरांची संख्या ४५ कोटी होती. (एकूण लोकसंख्येच्या ३७ टक्के) एकूण मजूर पैकी ९० टक्के मजूर हे असंघटित क्षेत्रात काम

करतात. देशाच्या राष्ट्रिय उत्पन्नात मुंबई (महाराष्ट्र) चा ३५ टक्के वाटा आहे. म्हणून मुंबईला आर्थिक राजधानी म्हणतात. भारतात दिल्ली, मुंबई, पुणे, मद्रास, कोलकत्ता, हैद्राबाद, नागपूर, नाशिक, गुजरात, बेंगलोर, हुबळी, धारवाड, अशा मोठ्या शहरात विविध भागातील लोक नोकरी, धंदा, व्यवसाय, मोलमजूरी करण्यासाठी, आपली स्वप्ने साकार करण्यासाठी मोठ्या प्रमाणावर स्थलांतरीत झालेले आहेत.

१.८ कोविड-१९ च्या महामारीत सरकारचे धोरण व स्थलांतरीत लोकांचा उद्रेक व समस्या :- देशाचे मा. पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी अनेक महत्वाचे धाडसी निर्णय घेतले आहेत. पण धोरण, निर्णय, आखणी व अंमलबजावणी यामध्ये योग्य समन्वय नसल्याने सर्वसामान्य जनतेला त्याचा त्रास सहन करावा लागला. उदा. ८ नोव्हेंबर २०१६ ची नोटाबंदीचा निर्णय, २०१७ चा जी.एस.टी चा निर्णय व २०१९ चा कोविड-१९ च्या महामारीतील निर्णय जनतेला विषवासात न घेता अवलंबल्यामुळे जनतेला त्याचा खूप त्रास झाला.

डिसेंबर २०१९ मध्ये कोरोनाचा उगम चीन मध्ये झाला. त्याची झळ फेब्रुवारी २०२० मध्ये आपल्याला लागली होती. पण आपल्याला कोरोनाचे चढके जास्त बसणार नाहीत अशा फाजील आत्मविश्वासामुळे सरकारने विपाणूला महजतने घेतले होते. सरकारने पहिल्या लॉकडाऊनमध्ये (२२ मार्च ते १४ एप्रिल) परकियांना भारताच्या सीमा सर्व बाजूने बंद करून दिल्ली, मुंबई, पुणे, गुजरात, गुपी, एमपी, केरळ या राज्यातील शहरातील स्थलांतरीत मजुरांना त्यांच्या गावाकडे जाण्यासाठी परवानगी दिली असती तर कोरोनाचा प्रसार देशात इतका वाढला नसता. दरम्यानच्या काळात अनेक उद्योग, व्यवसाय, कंपन्या, रेल्वे, एस. टी, खाजगी वहाने, हॉटेल, पर्यटन, मॉल, दुकाने, शेतमालाची आयात, निर्यात, मंदीर, मस्जिद म्हणजे प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष उत्पादन, मागणी व पुरवठा करणाऱ्या व्यवस्थेला टाळेबंदी लावल्यामुळे लाखो लोकांच्या नोकरी, व्यवसाय, अडचणीत आले. हातावर पोट असणाऱ्या कष्टकरी कामगार, मजूर, यांची कार्यशक्ती व सहनशक्ती संपल्यामुळे असंख्य मजूर स्थलांतराचा मार्ग अवलंबला होता. लॉकडाऊन म्हणजे कोरोनाची साखळी तोडण्याचा प्रभावी मार्ग आहे असे समजून सरकारने लोकांच्या भावना, उद्रेक, उपायमार, अन्न-पाण्याची, यष्ट्याची आरोग्याची हेळसांड, मानसिक घालमेल लक्षात न घेता चार वेळा लॉकडाऊन केले. केंद्रसरकार व राज्यसरकार यांच्या निर्णयात समन्वय नसल्याने कष्टकरी मजुरांचे आर्थिक, मानसिक, शारिरिक हाले झाले. ज्या प्रमाणे मुंबयाच्या वारुळाला धक्का पोहचल्यानंतर मुंबया सैरभर होतात त्याप्रमाणे शहरातील उद्योग, व्यवसायातील निर्वासित मजूर सैरभर होवून रस्त्यावर गर्दीकरण येवू लागले. उदा. १५ एप्रिल २०२० रोजी मुंबईच्या वांद्रे रेल्वे स्टेशनवर लाखो लोकांची गर्दी झाली होती. त्यामुळे मोगाल डिस्टन्सचा फज्जा उडाला. त्यामुळे सरकारची झोप उडाली होती. लोकांना अन्न पाण्याची आम नव्हती फक्त आपल्या गावाकडची ओढ होती. असाहय, निरक्षर असंपत्तित मजूर भर उन्हात ५०० ते १००० किमी पायी चालत गाव गाठण्याचा प्रयत्न केला. काहीना यश आले तर काही चक्कर येवून, काही वाहनाखाली चिरडून मरण पावले, ३७ महिला श्रमिक रेल्वेने गावी जाताना प्रवासातच प्रस्नूत झाल्या काही स्थलांतरीत मजूर पाण्याच्या टँकरमध्ये, दुधाच्या टँकरमध्ये, डांबरीकरण कारणाच्या मिक्सरमध्ये, किडया मुंगी सारखे बसून प्रवास केले. काही मजुरांना आई-वडील यांच्या प्रेतावर ही जाता आले नाही. ग्रामिण भागातील लोक भितीपोटी पुणे, मुंबई, दिल्लीच्या लोकांना आपल्या गावात येवू देत नव्हते म्हणून स्थलांतराची आवस्था "न घर का न घाट का" अशी झाली होती. कावाड कष्ट करून दुःखात मुध्या मुख समजून मुखाने संसार करणाऱ्या लोकांना ग्रहण लागले होते. १४ मजूर चालून-चालून, थकून रेल्वे रुळावर

झोपली होती. गाढझोपेत असताना अंगावरून मालगाडी गेल्याने मृत्यूमुखी पडले. कीर्ती दुःख, यातना, तिग्स्कार, कष्ट त्यांना सोसावे लागले याची आपण कल्पना करू शकता? सरकारने मात्र एकच मंत्र जपला होता "घरात गहा, सुरक्षित गहा" आहे तेंधे गहा" पण कसे व किती दिवस हे मात्र निश्चित कोणी ही सांगावला तयार नव्हते. थोडक्यात सरकारचे धोरण म्हणजे आग एका बाजूला व थंब दुसऱ्या बाजूला किंवा जखम एका बाजूला व मलम किंवा शस्त्रक्रिया दुसऱ्या बाजूला अशा प्रकारचे होते. हे निश्चित.

१.९ स्थलांतरीत लोकांच्या समस्येवरील उपाय :-

भारत हा कृषीप्रधान, विकसनशील, मिश्र अर्थ व्यवस्थेचा देश आहे. भारतात प्रादेशिक असमतोल किंवा विषमता अधिक दिसून येते. उद्योगधंद्याचे स्थानिकीकरण व केंद्रीकरण एकाच भागात किंवा एकाच शहरात अधिक झाले आहे. उदा. दिल्ली, मुंबई, मद्रास, कलकत्ता, हुबळी, बेंगलोर, हैद्राबाद, पुणे, गुजरात इत्यादी पोटापाण्यासाठी लोक शहराकडे धाव घेतात. हे धांवविणे गरजेचे आहे. अनेक उद्योग, व्यवसाय, कंपन्या ग्रामिण भागात निघायला हवेत. खेड्यातील श्रमीकांचे श्रम खेड्यातच मुगविण्याचा प्रयत्न झाला पाहिजे. ज्या प्रमाणे शेतीवरचा अतिरिक्त भार कमी करण्यासाठी शहरात उद्योगधंदे काढतो त्याप्रमाणे शहरीकरणावरील भार कमी करण्यासाठी खेड्यामध्ये १० गांवाचा क्लस्टर (ग्रुप) तयार करून MIDC सुरु करावेत तरच आत्मनिर्भर भारताचे स्वप्न साकार होईल असे मला वाटते.

संदर्भ सूची :-

- १) दैनिक वर्तमान पत्रातील लेख. दि. व्दि वरील दृकश्राव्य प्रसारण माहितीचे संकलन, इंटरनेटवरील माहिती.
- २) प्रा. के. एच. टक्कर - "लोकसंख्याशास्त्र", फडके प्रकाशन - आवृत्ती

२००९

पान.३८



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palas, Dist. Sangli.

दैवानां भद्रा सुमतिर्दृश्यताम् ॥ क्र० १/द्वै/२



Impact Factor
3.811



ISSN : 2395-7115

APRIL-JUNE 2020

Vol. 11, Issue 4

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL



समादकः
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Publisher :

Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal Patas Dist Sindh

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
 JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
 MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Vol. 11, ISSUE-4

(APRIL-JUNE 2020)

ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :

डॉ. रामफल दलाल

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
 सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
 टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सह सम्पादिका :

डॉ. रेखा सोनी
 उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
 टांटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

सह सम्पादिका :

डॉ. सुशीला आर्या
 हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
 विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :

समुद्र सिंह

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)
 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)



अप्रैल-जून 2020

Vol. 11, Issue-4

(2)

26. **बाल साहित्य**
27. दर्द का हमदम – शिव कुमार 'बटालवी'
28. देश के सामाजिक व आर्थिक योगदान में डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर
29. सघन शोध साक्ष्य एवं विविध आयाम : सत्य – सिद्धांत प्रकाश
30. भाषा साहित्य और बदलता : सामाजिक परिदृश्य
31. भारत में पारिस्थिति की पर्यटन
32. महिला उत्पीड़न के प्रकार और कारण
33. IMPACT OF YOGA ON MENTAL HEALTH PROBLEMS IN ADOLESCENTS
34. श्रीमद्भगवद्गीता में दार्शनिक विचार और जीवन मूल्य
35. A Literary Tribute to Anton Pavlovich Chekhov (1860-1904) Approach of the contemporary Actor and the Director to Chekhovian Classics : An Inner Dialogue
36. जनजातीय हस्तशिल्प (छत्तीसगढ़ बस्तर संभाग के विशेष संदर्भ में)
37. पंचायतीराज एवं जनजातीय क्षेत्र (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)
38. अपना अधिकार प्राप्त एक नया दलित समाज का चित्रण : आत्मकथाओं के विशेष संदर्भ में
39. सूचना का अधिकार अधिनियम 2005
40. Problem and Prospects of Teacher Education at Elementary Level Primary Teacher As A Puppet in the hand of Government.
41. समकालीन कविता और पर्यावरण
42. Indira Gandhi Nahar Priyोजना environment and changing scenario of northern Rajasthan : A special reference to Hanumangarh and Sriganaganagar district.
43. गालिब के काव्य में प्रेम की अवधारणा
44. महात्मा गांधी की वर्तमान प्रासंगिकता
45. प्लासी और बक्सर का युद्ध और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय
46. Emerging India, Asserting China and Declining America
47. विनयचन्द्रसूरि कृत 'काव्यशिक्षा' ग्रन्थ में प्रतिपादित अनेकार्थक शब्दों में द्वयक्षरकाण्ड
48. Contentment : An Ultimate Purpose of A Peaceful Life
49. अपना अधिकार प्राप्त एक नया दलित समाज का चित्रण आत्मकथाओं के विशेष संदर्भ में
50. दलित कविता की भाषा में श्रम के सौंदर्य का प्रतिरोध
51. Introversion For Current Situation
52. विविध समाज सुधारकों का दृष्टिकोण – अस्पृश्यता निवारण के संदर्भ में
- डॉ. विजय महादेव गाडे 112-115
- डॉ. विवेक गुप्ता 116-119
- नसीब कुमार' पुष्पा रानी 120-122
- डॉ अशोक कुमार 'मंगलेश' 123-126
- उषा यादव 127-127
- रोहिताश यादव 128-132
- प्रेरणा जैन 133-135
- Naseeb Kumar, Manju Chaudhary 136-141
- डॉ. अमित कु.सिंह कुशवाहा 142-146
- Darshan
- Satishchandra Purohit 147-149
- शिव कुमार सिंघल 150-154
- डॉ. एल. आर. सिन्हा, सुरेश कुमार 155-161
- कार्तिका एम. एस. 162-166
- डॉ. एस. के. उपाध्याय 167-169
- Dr. Santosh Arora, Anit Kumar Srivastava 170-173
- Dr. Suma S 174-177
- Kamal Kant 178-182
- डॉ प्रणु शुक्ला 183-186
- डॉ. मोहम्मद हुसैन डायर 187-190
- Manjula Singh 191-194
- Dr. Balram Sharma 195-197
- डॉ० रश्मि रानी 198-201
- Mr. Jitender Singh, Dr. Dinesh K. Gautam 202-203
- कार्तिका एम. एस. 204-209
- कण्णन के.यू. 210-212
- Dr. Vinita Swarnkar 213-215
- कमल किशोर कण्डावरिया 216-219



बाल साहित्य

“बच्चे तो टी. वी. देखके खुश हुए जनाब
लेकिन दूख इस बात का बेवा हुई किताब!”

जफर गोरखपुरी की यह पंक्तियों समकालीन वातावरण में निश्चित ही अपनी अलग अहमियत रखती है इसके प्रति हमारे मन में कोई भी संदेह नहीं है।

बालसाहित्य का अपना महत्व इसलिए है कि सामाजिक विकास के लिए बाल साहित्य अपनी भूमिका निभाता है और इसके पीछे मूल तथ्य यह है कि बच्चों के विकास में ही समष्टि का विकास छिपा रहता है। बच्चों का मानसिक विकास यह सामाजिक विकास ही पहली सीढ़ी है ऐसा हम मानते हैं। ऐसी अवस्था में बाल साहित्य का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। बाल साहित्य की सीमा को कहीं तक खींचना है यह हर एक की अपनी अलग-अलग राय हो सकती है किंतु हमारी अवधारणा के अनुसार चौदह वर्ष के बच्चों के लिए लिखा साहित्य यह बालसाहित्य की श्रेणी में आ सकता है। बालसाहित्य यह एक प्रकार की अनौपचारिक शिक्षा का केंद्र ही है।

आज हिंदी साहित्य हो या हिंदी शोध क्षेत्र जहाँ विविधवादों एवं विमर्शों का कोहराम सुनाई दे रहा है किंतु ऐसी अवस्था में बाल साहित्य का जिक्र नहीं मिलता इसलिए ये जरूरी है कि हम बाल साहित्य की ओर भी ध्यान दें। क्योंकि बाल साहित्य ही मानव की पहली सीढ़ी है जब वह श्रवण करता है और बाद में पढ़ता भी है। बाल साहित्य से आदमी गंभीर एवं वैचारिक साहित्य की ओर चला जाता है किंतु समसामयिक चित्र तो इसके बिलकुल विपरीत दिखाई देता है। क्योंकि न आज बच्चे पढ़ते हैं और न बच्चों के लिए कोई लिखता है और ऐसी अवस्था में बाल साहित्य की बात तो बहुत दूर की मालूम पड़ती है।

बालसाहित्य का स्वरूप पहले मौखिक रूप में ही था। घर के बुजुर्ग सदस्य जैसे दादा-दादी, नाना-नानी से छोटे-छोटे बच्चे पहले कहानियाँ सुनते थे और कभी कभी बालगीत सुनकर उन्हें कंठस्थ कर पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने बच्चों को सुनाते थे। कभी पंचतंत्र की कहानी, कभी इस नीति तो कभी रामायण-महाभारत की कहानियाँ सुनकर बालक मन अनुभव एवं संस्कारों से समृद्ध होता है। कहानियों से बच्चे आदर्श ग्रहण करते हैं और आदर्श जीवन की ओर मूड़ जाते थे। बाल साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह साहित्य परंपरा से हमारी ओर आया है इसलिए यह एक तरह से लोक साहित्य ही है। 'बालसाहित्य' साहित्य विश्व में अपना अलग स्थान बना चुका है किंतु हमारी अवधारणा के मुताबिक बालसाहित्य और साहित्य का उर्वरित विश्व यह दोनों समानांतर चल रहे हैं। साहित्य की अपठनीयता का घोखा आज समाज में व्याप्त हुआ है। कोई भी नहीं पढ़ता यह वर्तमान पठन संस्कृति की सबसे बड़ी त्रासदी है। जब बड़े नहीं पढ़ते तो बच्चे क्या खाक पढ़ेंगे यह मंजर अब सरे आम दिखाई दे रहा है और ऐसे माहौल से अब हमें राह निकालनी है। बाल साहित्य पर निरंतर पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, इनके पढ़नेवालों की तादाद भी बढ़ रही है। किंतु इससे बाल साहित्य से संबंधित समस्याओं का अंत दिखाई नहीं देता क्योंकि आज बच्चे पुस्तकों को छोड़कर टी. वी. इंटरनेट की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं।

आज समुचे हिंदुस्तान में 'चंदामामा', 'चंपक', 'अभिनव बालमन', 'चित्रकथा' जैसी पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। इनमें से कुछ पत्रिकाओं का इतिहास पचास से भी अधिक वर्ष पुराना है और इन पत्रिकाओं के पढ़ते हुए कई पीढ़ियाँ समृद्ध भी हुई हैं। प्राचीन काल से हमारे देश में पंचतंत्र, परिकथा, पुराणकथा, नीतिकथा, बोधकथा, बैताल

ATTACHED

D. P. KHARADI
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi Tal Palus Dist Sangli

देवाना मद्रा सुभतिरुपयुताम्। ३६० १२६६२२

ISSN : 2395-7115
August 2020
Vol. 12, Issue 4

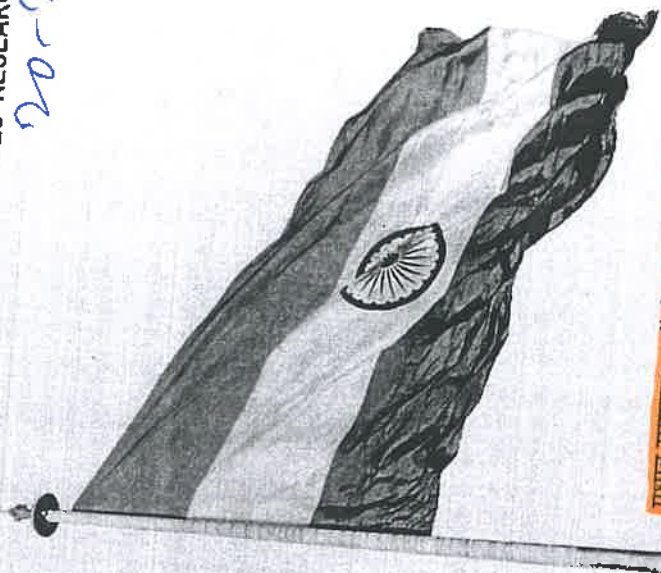


Impact Factor
3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFERRED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

20-21



प्रधान सम्पादक : डॉ. विजय प्रदादेव गाडे, एडवोकेट
सम्पादक : डॉ. नरेश कुमार सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

D. P. KHARADE
Lecturer in History,
Babusabhai Chauda Mahavidyalaya
Bhilawar, Dist Sangli

303

इण्डो - यूरोपियन लिटरेरी डिस्कॉर्स, यूक्रेन विषय- रूप जीवा : जीवन विमर्श अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

29 जुलाई 2020 को 11:00am to 01:30 pm

| | | | | | |
|--|--|---|---|--|---|
| | | | | | |
| अध्यक्ष : डॉ. विनोद शर्मा टाउटिग विद्यापीठान, श्रीगणपत | कीज वक्ता : डॉ. विनोद तनेजा एच विभागात, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद | मुख्य अतिथि : माई मनीषा महल अवध, बिहार अधिकार दल (एन।) | विषय विस्तार : राकेश शंकर भारती संस्कृत, हिन्दी इंग्लिश-यूरोपीय लिटरेरी डिस्कॉर्स, यूक्रेन | सोपान वक्ता : डॉ. अतुला भारकर एच विभागात, अहमदाबाद विश्वविद्यालय (गुजरात) | सोपान वक्ता : डॉ. शिवकण्ठ निमल अवध, उत्तर प्रदेश संस्कृत विभाग |
| मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक मंगलेश अवध एच विभागात (गुजरात) | सोपान वक्ता : डॉ. अतुला भारकर एच विभागात, अहमदाबाद विश्वविद्यालय (गुजरात) | मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक कुमार मंगलेश राजस्थान | सोपान वक्ता : डॉ. शिवकण्ठ निमल अवध, उत्तर प्रदेश संस्कृत विभाग | सोपान वक्ता : डॉ. शिवकण्ठ निमल अवध, उत्तर प्रदेश संस्कृत विभाग | सोपान वक्ता : डॉ. शिवकण्ठ निमल अवध, उत्तर प्रदेश संस्कृत विभाग |

समय सांणी निम्न प्रकार से है

| | | | |
|----------------|-----------------------------|-----------------------|---------------------|
| 11:00 से 11:10 | स्वागत एवं वेबिनार परियोजना | नरेश सोनी | हिसार (हरियाणा) |
| 11:10 से 11:30 | आशीर्वाचन/कीज वक्ता | डॉ. विनोद तनेजा | अमृतसर (पंजाब) |
| 11:30 से 11:50 | विशिष्ट वक्ता | राकेश शंकर भारती | यूक्रेन |
| 11:50 से 12:00 | विशिष्ट वक्ता | प्रो. सजय एल. मादार | घासवाड (कर्नाटक) |
| 12:00 से 12:10 | मुख्य वक्ता | डॉ. अशोक कुमार मंगलेश | दादरी (हरियाणा) |
| 12:10 से 12:20 | वक्ता | प्रो. शकुन्तला | पानीपत (हरियाणा) |
| 12:20 से 12:30 | वक्ता | डॉ. अतुला भारकर | अमृतसर (पंजाब) |
| 12:30 से 12:40 | वक्ता | डॉ. शिवकण्ठ निमल | राजस्थान |
| 12:40 से 12:50 | वक्ता | अनुपमा श्रीवास्तव | दिल्ली |
| 12:50 से 01:10 | मुख्य अतिथि सत्रोत्तम | माई मनीषा महल | मुना (हरियाणा) |
| 01:10 से 01:20 | अध्यक्षीय सत्र | डॉ. विनोद शर्मा | श्रीगणपत (राजस्थान) |
| 01:20 से 01:30 | धन्यवाद ज्ञापन | डॉ. नरेश सिहाग | बिवाली (हरियाणा) |

नोट :
वीनोद पेंडुपूर पर सायं 8:00 बजे प्रतिक्रिया देनी
उपरोक्त वक्ताओं के वक्ताओं को
अधिकार देना पर सायं 8:00 बजे देना
उपरोक्त वक्ताओं के वक्ताओं को

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी प्रति. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मन्भावत पिढवर्ण,
बिवाली के संपादक गीना प्रकाश, 202, पुराना हाउसिंग बोर्ड बिवाली-127021 (हरि.) के वित्तिका की।



ISSN 2395-7115

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येतओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतु दोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, ग्रंथ, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पर्यावरण, प्रकृति पर केन्द्रित इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है। आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फॉन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज नंबर या माइक्रोसॉफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : gsrsootha@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेंटर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाइल नोट :- हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं। हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र, टेलीफोन, मोबाइल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप कराकर भेजें।

शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-8 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है। देवी होधश्री सम्मान प्रदान किया जाएगा। शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होंगे। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का शायिल है। प्रत्येक विषय का व्याख्यान भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादकीय पद अत्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजे। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

सहयोग/सदस्यता राशि के ड्राफ्ट/बैंक/आई.पी.ओ. गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी के नाम भेजे तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें भेज कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रु. अतिरिक्त अवश्य जमा करवाये। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
 खाता धारक का नाम : गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी
 बैंक खाता संख्या : 1182000109078119
 IFSC Code : PUNB0118200
 MICR CODE : 127024003

शोध शोध मंजूषा Vol. 12, Issue-4 (1) अगस्त 2020 (4)

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|--|---------------------------|-------|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. नरेश सिंहा | 7-7 |
| 2. | दलित जीवन का आईना- ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ | डॉ. पूजा खोरवात | 8-10 |
| 3. | नाथ्यमिक स्तर के शास्त्रीय एवं अशास्त्रीय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन | डॉ. श्रीमती ममता बालकीवाल | 11-15 |
| 4. | जन्मवाणी में निहित मूल्यों की प्रस्ताविकता | डॉ. पूजा खोरवात | 16-22 |
| 5. | Role of Agricultural Produce Market Committee In Marketing | | |
| 6. | Development of Bihar | Dr. Santosh Kumar | 23-29 |
| 7. | अतिम दशक की कहानियों में स्त्री संवेदन | मधु गुप्ता | 30-32 |
| 8. | उषा शिमका के उपन्यासों में नारी चित्रण एवं सामाजिक चेतना | शुनीता साह | 33-37 |
| 9. | जंगल जहाँ शुरू होता है' में आदिवासी जीवन | डॉ. जयश्री एस टी | 38-40 |
| 10. | राजभाषा कार्यवाहन में नगर राजभाषा कार्यवाहन समितियों का योगदान | डॉ. स्या जी. एस. नायर | 41-43 |
| 11. | संकेत की आहट और पर्यावरण चिंतन | सोह लता | 44-46 |
| 12. | हिमाचली महिला रचनाकारों की कविताओं में लोकधर्मिता | डॉ. उरलीम लता | 47-51 |
| 13. | हरौश मल चौ की रचनाओं में राजनीतिक व्यंग्य | कुमुद भाटव | 52-55 |
| 14. | माता प्रसाद के कव्यों में दलित संघर्ष | मीसरी दास | 56-58 |
| 15. | कृष्णा सोबती के उपन्यासों की भाषा में पूर्णप्रत्यय प्रयोग | देवानन्द सिंह | |
| 16. | उदय प्रकाश की कहानियों में पारिवारिक जीवन | डॉ. जीत सिंह | 59-65 |
| 17. | लहरों के राजहंस में पद्यधर्मिता | सौम्या राणी | 66-68 |
| 18. | उत्तर प्रकाश की कहानियों में अस्था का अनुग्रहण | Post. Prof. Dr. Manu | 69-72 |
| 19. | Prominence of Women Characters in the Swapnāvāsvānā of Bhaas-A Study | सौम्या राणी | 73-76 |
| 20. | कनुनिया : प्रेम विमर्श की अनोखी पहल | Jyothi Lakshmi TM | 77-80 |

डॉ. विजय महारदेव गारु 81-84

दोहल शोध मंजूषा Vol. 12, Issue-4 (1) अगस्त 2020 (6)

A

सम्पादक
 डॉ. नरेश
 202, पुर
 भिवानी-

Email : r
 मो. 094६

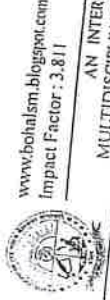
Publisher,
 Gangan
 202, Old
 Bhiwani
 Email :- g
 Facebook
 Website
 WhatsApp

All Right

Price
 Individual

Discount

Printed by
 दोहल शोध



www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
August 2020 Page No. : 81-84

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFERENCED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कनुप्रिया : प्रेम विमर्श की अनोखी पहल

प्रसोसिपेट प्रोफेसर, शोध-निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बाबासाहेब चितले महाविद्यालय, गिलबट्टी, जि. सांगली (महाराष्ट्र)

—डॉ. विजय महादेव गाडे

संकेत शब्द – कनुप्रिया, कृष्ण, सौंदर्य, प्रकृति, प्रेम, वृत्तन
कनुप्रिया एक प्रथात्मक काव्य कृति है। यह शृंगार-दर्शन की कृति है। इसकी शैली गीतात्मक है। महाभारत युद्ध के पूर्व और उसके पश्चात की पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह काव्य है। जिसके बीच प्रमुख हिस्से हैं जिसमें इसकी शीघ्र कथावस्तु है। युद्धोपसंगत की परिस्थिति तथा समाजिक एवं मानवीय अंतःसंघर्षों की वेदना इसमें वर्णित है। यहाँ कवि ने रामा तथा कृष्ण को लेकर मानवीय समाजिक संवेदनाओं को अंकित किया है।

डॉ. भारती के साहित्य में सनातनी पौराणिक कथाओं और कियों के प्रति एक सतत चिंतन प्रवाह रहता है। 'अंधायुग', 'कनुप्रिया' के पौराणिक प्रतीक इसका प्रमाण है। 'कनुप्रिया' काव्य-कृति पूर्ण पठने के बाद यही प्रतीत होता है कि कवि का उद्देश्य कथात्मक प्रबंध काव्य की रचना करना नहीं है बल्कि रामा की मानस-छवियों एवं उसके प्रेम-पल्लवों की सौंदर्य वर्णन और उसकी सामाजिक वृत्ति के रचनात्मक बोध का निर्देशक अधिक रहा है।

सौंदर्य वर्णन और उसकी सामाजिक वृत्ति के रचनात्मक बोध का निर्देशक अधिक रहा है।

कवि स्वयं कहता है – 'जिसने (रामा ने) अपने सहज मन से जीवन जीया है तन्मयता के क्षणों में झूझकर उसी सहज की कसौटी पर समस्त को कसेगा।'

कनुप्रिया में हमको दो केन्द्रबिंदु मिलते हैं – 'क्षण' और 'सहज'। कनुप्रिया कृष्ण की प्रिया है जिसमें केशव-पुलम मनस्थितियों विद्यमान हैं। जो विवेक से अधिक तन्मयता इतिहास की उपलब्धियों से अधिक सहज जीवन में सार्थकता पाती है। रामा-कृष्ण की प्रेमगाथा के मध्यम से भारती ने सौंदर्यव्यक्तिक ही की है। सौंदर्य स्वच्छंदतावादी काव्य की एक पृष्ठभूमि रही है, चाहे गरी सौंदर्य हो या प्रकृति सौंदर्य। भारती स्वच्छंदतावादी रचना शिल्पी हैं। यहाँ भारती ने रामा और कृष्ण के सौंदर्य रूप को मानवीय आधार पर अभिव्यक्त किया है। प्रथम गीत के माध्यम से कवि अपनी सौंदर्य वृत्ति का परिचय देता है –

'और अब समय आ गया की
में तुम्हारी नस-नस में पंच पवार पर उड़ूंगी
और तुम्हारी डाल-डाल में
गुच्छे-गुच्छे-लाल कलियों का खिलौनी।'

यहाँ यह अशोक वृक्ष कृष्ण का ही प्रतीक है जो 'सांख्य' के 'पुरुष' की स्थितियों को उजागर करता है।

'आम-बीर' का अर्थ कृष्ण समझ नहीं पाए हैं। इस गीत में कवि ने एकदम नई उपमान-योजना को अपनाते हुए रामा के आंग-प्रत्यंग का मनभावन सौंदर्य कथन किया है। यहाँ 'मंजरी' रामा का प्रतीक है। रामा अपने आप को 'मंजरी' समझ लेती है। वह मंजरी, जिसमें कृष्ण ने अपने प्रेम की गोंग भर दी थी। वह कहती भी है –
दर्द उस लिपि के अर्थ खोल रहा है

बोहल शोध मंजूषा

Vol. 12, Issue-4 (1)

अगस्त 2020 (81)

the distinction of being a drama with a positive ending among the works of Bhasa, it still cannot be said that it is a female oriented work as a lion's share of action and plot is revealed through the direct or indirect involvement of the male character of Yוגान्धारयाना.

Bhasa draws the drama to a conclusion in a rather melodramatic manner. The presentation is not only entertaining but thought-provoking also. The drama distinguishes itself with uniformity and directness of narration. The plot goes through the doldrums of complex emotions yet the dialogues between characters are simple and genuine. It is notable that neither time nor the changes in the approaches towards Sanskrit play, this drama by Bhasa still holds its own place.

End Notes :

1. अही अकरुणः हत्यौरवरा, रचनावसवदत्त, Chapter 3
2. का नवतः प्रिया, तवलीं तत्र भवतीं वसन्तसंगा इतानीं पदपावती, ok, Ibid, Chapter 4
3. दत्त रचनमस्य परिखेदस्य, Ibid, Chapter 4
4. मदनानिन्दितो अधिकतरं बधते, Ibid, Chapter 5
5. अतिसदृशी खलियपायाया अवन्तिकाया, Ibid, Chapter 6
6. कथं भ्रातृसन्पुत्रौ, देवी प्रदेष्य त्वमाभनरं पदपावला सह, Ibid, Chapter 6

Bibliography :

1. Bhasanatakachakram, Edited by Sudhakar Malaviya, Chawkhamba Krishnadas academy, Varanasi.
2. Swapnavasavadatta of Bhasa by T. Ganapati Sastri, Published at the Government Press, Travancore, 1912
3. Swapnavasavadattam, edited by Acharya Sree Sheshangasurama, Chawkhamba Stribharati Prakashan, Edition 2013.
4. Bhasapraneeham Swapna Vasavadattam, edited by Jaypal Vidyankar, Motilal Banarsidass, Delhi, Varanasi, Patna.

ATTESTED

D. P. KHASADE
Lecturer in History,
Babasaheb Chitale Malaviyatalaya
Bhilarwadi Tal Palus Dist Sangli

बोहल शोध मंजूषा

Vol. 12, Issue-4 (1)

अगस्त 2020 (80)

हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद से संबंधी कार्यक्रमों की झलकियाँ



हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद द्वारा संचालित परीक्षाओं की स्थायी मान्यता के संबंध में तेलंगाना राज्य के शिक्षामंत्री श्रीमती सविता इंद्रारेड्डी जी को ज्ञापन सौंपते हुए सभा के प्रधानमंत्री श्री जे. प्रेम कुमार, आंध्रप्रदेश हिंदी प्रचार सभा के मंत्री श्री एस. गैबुवली, तेलंगाना हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद के मंत्री श्री सुरेंद्र, कोषाध्यक्ष श्री राममोहनाचारी, कार्यालय मंत्री श्री फे. वेंकटेश्वर, रजिस्ट्रार नामदेव वाघमोडे, व्यवस्थापक महेश सिंह।

विवरण पत्रिका का शता :-

प्रेषक :

प्रधान संपादक

विवरण पत्रिका (मासिक)

हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद,

नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001.

दूरभाष : 23201956, 23201965

E-Mail : sabhanampally@gmail.com

स्वामित्व - हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, संपादक, मुद्रक, प्रकाशक : जे. प्रेम कुमार, हरिओम ऑफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित।

PRINTED BOOK

सेवा में,

श्री

सभा का अमृत पर्व 2011 से

जनवरी - 2020

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा- विभाग) भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित।



विवरण पत्रिका



हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद द्वारा डिग्री और पी.जी कोर्स हिंदी माध्यम से आरंभ करने की केंद्र सरकार से मान्यता माँग के संदर्भ में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी जी को ज्ञापन सौंपते हुए सभा के अध्यक्ष एवं ट्रस्ट चेयरमैन प्रो. चंद्रदेव, उपाध्यक्ष डॉ. श्रीरामुलु, प्रधान मंत्री श्री जे. प्रेम कुमार, संयुक्त मंत्री श्री फैयाजुद्दीन, परीक्षा मंत्री प्रो. सुरेश पुरी, साहित्य मंत्री श्री आर. विच्चय्या, आंध्र प्रदेश हिंदी प्रचार सभा के अध्यक्ष डॉ. चोंगा लक्ष्मुनायुडु, मंत्री श्री एस. गैबुवली, उपाध्यक्ष श्री पार्थसारथी, तेलंगाना हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद के अध्यक्ष श्री जी. गांधी, मंत्री श्री सुरेंद्र, कोषाध्यक्ष राममोहनाचारी, कार्यालय मंत्री श्री के. वेंकटेश्वर, रजिस्ट्रार श्री नामदेव वाघमोडे।

ATTESTED

D. F. KHARADE

Lecturer in History,

Baburabad Chaitan Mahavidyalaya

Baldevnagar, Dist. Warangal

समीक्षा के नये क्षितिज : एक दृष्टि

- डॉ. विजय महादेव गाडे

केवल कल्पनालोक में विचरण करने वाले कवि नहीं है अपितु उनकी नजर काफी पनी है जो समय की नब्ब पर हाथ रखती है और उसका निदान भी करती है। काव्य के माध्यम से उभरने वाली संवेदना गुरू के काव्य की आत्मा है।

इस कृति के दूसरे आलेख में समीक्षक ने नवगीत परंपरा और प्रयोग के माध्यम से अपने विचार स्पष्ट किए हैं। नवगीत, गीत, प्रगीत आदि भेद ही मूलतः भ्रामक है ऐसी हमारी अवधारणा है। जो गाया जाता है वह गीत है ऐसा हम मानते हैं। भले छंद, प्रयोग अलग-अलग हों। क्योंकि संसार के आदिकाव्य जैसे वेद भी गीत हैं। रामायण भी गीत है और अन्य काव्य जिसमें संगीत मचलता है। काव्य की पंक्ति जो संगीतात्मकता साथ ले आती है वह गीत है। ताल, लय, छंद, गेय आदि पर अब कोई अधिक गौर नहीं करता यह बात सही है लेकिन गीत विधा में चं. गिरिमोहन गुरू का अपना अलग स्थान उन्होंने स्पष्टास निर्माण किया है। केवल गीत ही नहीं अपितु गजल, दोहा, जनकछंद आदि के द्वारा उन्होंने गीतों में निहित संगीत परंपरा को आगे ले जाने का एक सफलतम प्रयास किया है। यह बात सही है कि समसामयिक गीतों में विसंगतियाँ अधिक हैं फिर भी आज गीत विधा लोकप्रिय है और भविष्य में रहेगी इसके प्रति हमारे मन में कोई आशंका नहीं है। गुरू के धार्मिक काव्य की समीक्षा करते समय हमने ही कभी लिखा था कि धार्मिक काव्य के लिए काव्यशास्त्र के नियम निरर्थक प्रतीत होते हैं। वहीं साधक के वैष्णवी संस्कारों की ही पहचान मिलती है। गुरू कवि बाद में हैं सर्वप्रथम वे एक साधक हैं और ईश्वर की आराधना करते हुए काव्य साधना करते हैं और अपनी आध्यात्मिक अवधारणाएँ स्पष्ट करते हैं। यहाँ हम एक बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि गुरू की साधना धार्मिक

चं. गिरिमोहन गुरू द्वारा प्रेषित और समीक्षक डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय द्वारा लिखित समीक्षा रचना 'समीक्षा के नए क्षितिज' प्राप्त हुई। इस रचना का संपादन सुश्री डॉ. भारती मिश्रा ने किया है। विवेच्य कृति शिवसंकल्प साहित्य परिषद नर्मदापुरम द्वारा अगस्त 2019 में प्रकाशित हुई है।

मूलतः किसी भी समीक्षामय कृति की समीक्षा बहुत बार मन में संकोच निर्माण करती है। लेकिन पंडित जी आग्रह करने के बजाय आज्ञा हम टाल नहीं सके इसलिए इस कृति पर हम अपनी बाल रखना चाहते हैं। इस कृति में कुल 10 आलेख हैं और इस रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सारे आलेख समीक्षक डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय की लिखावट ही है अर्थात् इनका संगणकीय संयोजन नहीं हुआ इसलिए इसे एक नया प्रयोग मानते हुए हम उन्हें सर्वप्रथम बधाई देते हैं और भविष्य में भी वे अपनी प्रयोगधर्मिता बरकरार रखेंगे यह आशा करते हैं।

पहले आलेख में समीक्षक ने काव्य-मीमांसा का तात्विक विश्लेषण किया है जिसमें प्राचीन आचार्यों के विवेचन को सामने रखते हुए उन्होंने अपनी बात स्पष्ट की है। प्रतिभा के दो भेद होते हैं, कारित्री और भाववित्री प्रतिभा। विवेच्य रचनाकार चं. गिरिमोहन गुरू की प्रतिभा को समीक्षक ने कारित्री प्रतिभा के अंतर्गत डाला है और यह उनकी अवधारणा है। लेकिन गुरू की साहित्य साधना में दोनों प्रतिभाएँ नजर आती हैं यह हमारी मान्यता है। चं. गिरिमोहन गुरू का काव्य कर्म पचास से अधिक वर्षों से चल रहा है और इसलिए उनका काव्य किसी बटवृक्ष के समान प्रतीत होता है। हमारी दृष्टि में मल्लि काव्य का अपवाद छोड़ दें तो अन्य सभी काव्य विधाओं में यथार्थ ही नजर आता है। वह यथार्थ भी कई स्थानों पर कठोर परिलक्षित होता है। चं. गुरू

विवरण पत्रिका / जनवरी-2020

ATTESTED

D. P. KISHANDE
Lecturer in English
Balasahab Chitale Mahavidyalaya,
Balsawadi Tal. Amn. Dist. Solapur

हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद से संबंधी कार्यक्रमों की झलकियाँ



दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सचिव श्री होसगोडर का सम्मान करते हुए सभा के प्रधान मंत्री श्री जे. प्रेम कुमार। साथ में आंध्र प्रदेश हिं. प्र. सभा के मंत्री श्री एस. गैबुवली, संयुक्त मंत्री श्री हज्जीवली, तेलंगाना हिं. प्र. सभा के संयुक्त मंत्री श्री ए.के. राजु, द.भा.हिं. प्र. सभा दूरस्थ शिक्षा विभाग के असिस्टेंट डायरेक्टर श्री शंकर सिंह ठाकुर, बी.एड. कॉलेज प्राचार्य श्री संजय मठ तेलंगाना हिं. प्र. सभा के कार्यकारीणी सस्य सादिक पाशा, रजिस्ट्रार नामदेव, शिवलिंगम।



आंध्र प्रदेश हिंदी प्रचार सभा के मंत्री श्री एस. गैबुवली का सम्मान करते हुए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सचिव श्री होसगोडर। साथ में सभा के प्रधान मंत्री श्री जे. प्रेम कुमार, आंध्र प्रदेश हिंदी प्रचार सभा संयुक्त मंत्री श्री हज्जीवली, तेलंगाना हिंदी प्रचार सभा के मंत्री श्री सुंदर, कोषाध्यक्ष श्री राममोहनचारी, संयुक्त मंत्री श्री ए.के. राजु, द.भा.हिं. प्र. सभा दूरस्थ शिक्षा के असिस्टेंट डायरेक्टर श्री शंकर सिंह ठाकुर, बी.एड. कॉलेज के प्राचार्य श्री संजय मठ, रजिस्ट्रार नामदेव।



दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के दूरस्थ शिक्षा विभाग के असिस्टेंट डायरेक्टर श्री शंकर सिंह ठाकुर का सम्मान करते हुए सभा के प्रधान मंत्री श्री जे. प्रेम कुमार। आंध्र प्रदेश हिं. प्र. सभा के मंत्री श्री एस. गैबुवली, संयुक्त मंत्री श्री हज्जीवली, तेलंगाना हिं. प्र. सभा के मंत्री श्री सुंदर, संयुक्त मंत्री श्री ए.के. राजु, द.भा.हिं. प्र. सभा बी.एड. कॉलेज प्राचार्य श्री संजय मठ कार्यालय मंत्री के. वेंकटेश्वर, रजिस्ट्रार नामदेव, शिवलिंगम।

म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रकाशन

| क्र. | पुस्तक का नाम | सम्पादक/लेखक | मूल्य |
|------|--|---|-------------------------|
| 1. | परिचय ग्रंथ | श्री वैजनाथ प्रसाद दुबे (सं.) | 40 |
| 2. | कौन किसका आदर्श | श्री कैलाशचन्द्र पन्त | 75 |
| 3. | धुंध के अर-पार | श्री कैलाशचन्द्र पन्त | 100 |
| 4. | शब्द का विचार पथ | श्री कैलाशचन्द्र पन्त | 200 |
| 5. | मालवीचल में कूर्मचल | डॉ. रयामसुन्दर निगम | 600 |
| 6. | डॉ. शिव चौंसिया (सं.) संवाद और हस्तक्षेप (खण्ड 1 से 10 एवं 12) संवाद और हस्तक्षेप (खण्ड 11 एवं 13,14,15,16,17,18,19, 20, 21, 22, 23 एवं 24) (संवाद और हस्तक्षेप फावस व्याख्यानमाला के अंतर्गत विद्वानों के द्वारा दिये गये विचारों का अनूठा संकलन) | श्री विजय कुमार देव (सं.) डॉ. सुनीता खत्री (सं.) | 250 (प्रति खण्ड) |
| 7. | सृजन यात्रा : (1) भोविन्द मिश्र | डॉ. उर्मिला शिरोष (सं.) | 75 |
| 8. | सृजन यात्रा : (2) नरेश मेहता | श्री प्रमोद त्रिवेदी (सं.) | 75 |
| 9. | सृजन यात्रा : (3) सैलेश मटियानी | श्री कैलाशचन्द्र पंत (सं.) | 100 |
| 10. | सृजन यात्रा : (4) डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन | डॉ. आशा शुक्ला (सं.) | 125 |
| 11. | सृजन यात्रा : (5) रमेशचन्द्र शाह | प्रो. रमेश दवे, विजय कुमार देव (सं.) | 145 |
| 12. | सृजन यात्रा : (6) डॉ. रामकमल राय | डॉ. सुनीता खत्री (सं.) | 150 |
| 13. | मंथन-1 बढ़ती हुई हिंसक : प्रवृत्तियाँ बुनियादी पड़ताल | डॉ. आशा शुक्ला (सं.) | 25 |
| 14. | मंथन-2 ... ताकि संवाद जारी रहे | डॉ. आशा शुक्ला (सं.) | 70 |
| 15. | मंथन-3 राजनीति, अपराध और समाज | डॉ. आशा शुक्ला (सं.) | 100 |
| 16. | मंथन-4 विज्ञान की विविध दिशाएँ | श्रीमती रक्षा सिंघोदिया (सं.) | 300 |
| 17. | मंथन-5 ज्ञान विषयों पर हिन्दी लेखन (मंथन 1 से 5 में बसंत एवं शारद व्याख्यानमाला के अंतर्गत दिये गये विद्वानों के विचारों का संकलन) | श्रीमती रक्षा सिंघोदिया (सं.) | 300 (प्रति खण्ड) |
| 18. | मालवी की उपखंडियाँ और उनका सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य | डॉ. रयामसुन्दर निगम (सं.) | 100 |
| 19. | बुन्देली के विविध आयाम चित्रा और फिल्म | श्री युगेश शर्मा (सं.) श्री युगेश शर्मा (सं.) | 150 200 |

जीयल म.प्र./भीवाल/4-478/2018-20
दिनांक : 27 दिसम्बर 2019, पृष्ठसं. 112
दिनांक : 20 से 25 प्रतिमाह

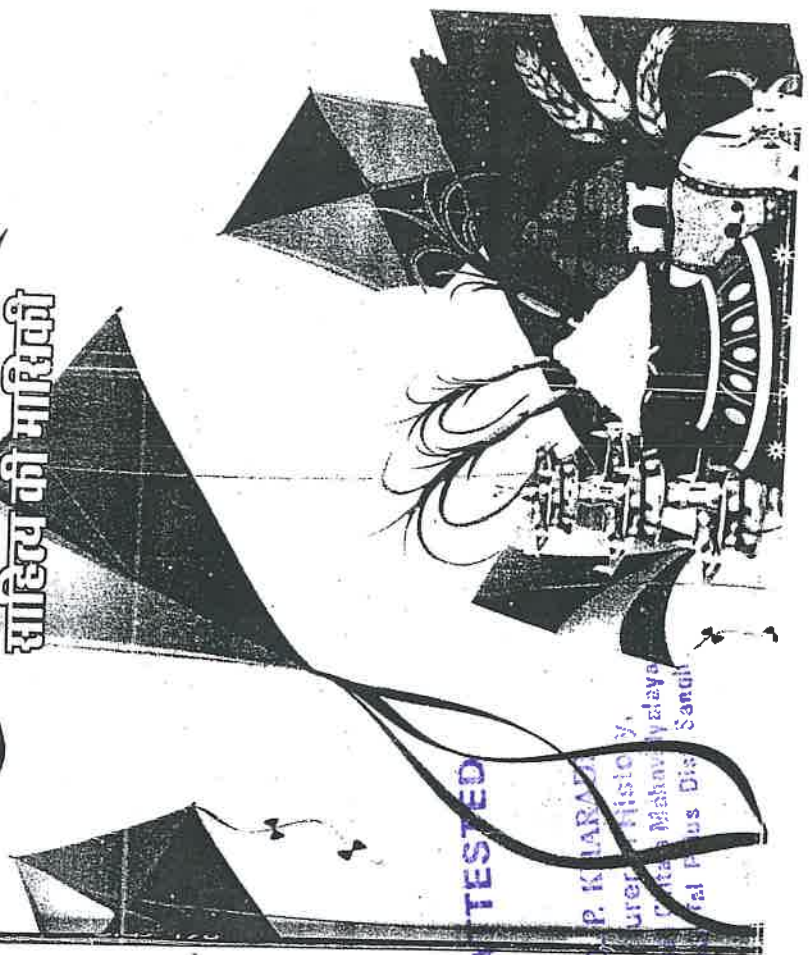
मूल्य 25/-

38
वाँ वर्ष

जनवरी 2020

178

साहित्य की भारिकी



ATTESTED

L.P. KUMAR, Lecturer in History, Central Mahavidyalaya, Bahawalpur, Punjab, India.

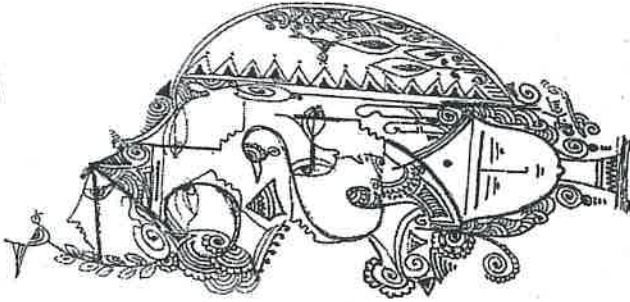
अक्षर

परिवार को और से

नव वर्ष 2020

को

मंगलकामनाएँ



केलाशचन्द्र पन्ना
प्रधान सम्पादक

सुनील कुमार केडिया
प्रबंध सम्पादक

डॉ. सुनीता खत्री
सम्पादक

श्रीमती-जया केतकी
सम्पादन सहयोग

करुणा सौधिया
ग्राहक-संयोजन

178

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 300 रुपए
दस वार्षिक सदस्यता शुल्क : 2500 रुपए

एक प्रति 25 रुपये

विदेशों के लिए : एक अंक : 5 डॉलर, वार्षिक : 60 डॉलर
चेक या ड्राफ्ट 'म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति- 'अक्षर' के नाम देय
ऑनलाइन पेमेंट के लिये- इलाहाबाद बैंक, हिंदी भवन आई शाखा, भोपाल
Ac/No. 50413818696, IFSC-ALLA 0212241

सम्पर्क : म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिंदी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002 (म.प्र.)
दूरभाष : 0755- 2660909, 2661087, ई-मेल - myakshar18@gmail.com

hindibhawan.2009@rediffmail.com
वेबसाइट - akshara.page, www.machyapradeshashrabhasha.com

प्रकाशक, मुद्रक केलाशचन्द्र पन्ना, भोपाल ग्राम, स्वतंत्रकरी नव्य प्रदेश ग्राम भाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, भोपाल से प्रकाशित एवं

श्रेय ऑफसेट, 4 सुबकस चमरा, बोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित

मुर्गे की आत्मकथा
 अतीत भविष्य
 अनुभव 30 वाक्यांश
 भाग 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000

मुर्गे की आत्मकथा

देश के जाने माने व्यंग्यकार अजीत श्रीवास्तव की यह कृति, वर्तमान मानव जीवन पर बेहतरीन 'सटायर' है जो मुर्गे को माध्यम बना रही गई है। मुर्गे के जन्म से लेकर अंत तक, बल्कि पुनर्जन्म तक की बात लेखक ने मुर्गे की आत्मा से साक्षात्कार के बाद, उसके द्वारा कही गई मनोवैज्ञानिक बातों को उसकी आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक ने स्वीकार किया कि मुर्गे की आत्मा से उसका साक्षात्कार सन ब्रयासी में हुआ, तब से अब तक छठीसठ वर्ष मनन के पश्चात् उस मुर्गे की इच्छा की कथा रूप दे पाया, लेखक का धीरज सरहर्षण्य है।

मुर्गे की आत्मा ने पहले लेखक की आत्मा को झकड़कर, फिर लेखक ने पाठकों की आत्माओं पर चोट की है कि मुर्गे जिस बात को समझ सकता है, मानव क्यों नहीं? कुछ बड़ा होने पर मुर्गे अपनी माँ एवं परिवार के बुजुर्गों से उनके अनुभवी ज्ञान में आदर सहित अपने मन के प्रश्नों के उत्तर ढूँढता 'यायव' हो फिरता है। वह समझ नहीं पाता कि मनुष्य बड़े-बड़े ग्रंथों, सतों से ज्ञान तो प्राप्त करता है पर व्यावहारिक जीवन में आदर्शों को नहीं मानता। अपनी विराटरी के ज्ञान से तुलना कर उसे लगता है कि वह मनुष्य से बेहतर है। संसार के समस्त पशु-पक्षी प्रकृति प्रदत्त वातावरण में खुरा हैं, स्वियम देपाया मानव के। लेखक ने विश्व की सबसे बड़ी बीमारी

पुरातक : सुपदीन यादव : स्त्री महाकथा की कहानियाँ।
 संपादक: डॉ. ललिता यादव/अधुरी ग्राम प्रकाशन : मान प्रकाशन, नई दिल्ली

सूर्यदीन यादव : स्त्री पक्षधरता की कहानियाँ

सूर्यदीन यादव हिंदी साहित्य के सशक्त कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार हैं। इस कहानी संग्रह में उनकी कुल 25 कहानियाँ हैं जो नारी की प्रतिमा को रूपाय तथा रेखांकित करती हैं। 'अपर-जमीन' कहानी में रघुमत दाना साँवरकी को उसके परिवार के जुल्मोसितम से आबाद करते हैं और बेटी का दर्जा देकर अपने घर में पगार देते हैं। 'वह रात', कहानी की नयिका चंदा की आपबीती है। यह कहानी एक नई नारी की तस्वीर को प्रस्तुत करती है। 'ईश की कहानी' पति-पत्नी के रिस्ते को रेखांकित करती है। देसुई ईश की प्रजाति भी है और नयिका का नाम भी इसलिए यह कहानी भी बड़ी सार्थक प्रतीत होती है।

'बिना बाप का बच्चा' बड़ी ही सशक्त ढंग से लिखी गई रचना है। इस कहानी की नयिका नईकी विधवा है। उसके मन में यही आकांक्षा है कि बुढ़ापे के लिए उसे पुत्र का सहारा चाहिए। 'परदेसी की एक रात' भी पति-पत्नी के रिस्ते को एक नया आयाम देती है। भोला और चंदा की बातों-बताओं में रात बीत जाती है और सुबह हो जाती है और यह सुबह भोला के मन में एक नई उमंग पैदा करती है। 'झोपड़ी का झरोखा' बेशकृति करते वाली शांति की कहानी है। शांति अपने जीवन संघर्ष में विश्राम नहीं लेती लेकिन उसकी निराह उसे

D. P. KHARADI
 Lecturer in History,
 Babasahab Chitale Mahavidyalaya
 Bahawadi Tal Palus Dist Sangli

2020-21

4. <https://www2.deloitte.com/global/en/pages/about-deloitte/articles/covid-19/understanding-covid-19-s-impact-on-the-sports-sector.html>
5. http://en.wikipedia.org/wiki/Impact_of_COVID_19
6. <https://indianexpress.com/article/explained/from-cricket-to-athletics-how-covid-19-has-hit-the-sporting-world-and-will-change-it>



dg

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

INDEX

| Sr. No. | Author | Title of Paper | Page No. |
|---------|--|---|----------|
| 1 | Mr. Amar Raju Jadhav Mr. Sanjay Maruti Patil | An Analytical Study Of Problems And Issues Of Labours In Kolhapur City | 13 |
| 2 | Dr. Sunita Hansraj Ambawade | Role Of Ict In Social Science Research | 17 |
| 3 | Mrs. Varsha Raghunath Shinde | Advantages And Disadvantages Of Social Media For Society | 20 |
| 4 | Dr. Sheikh Rashida Begum Rahematulla | Role Of Sports In Society | 24 |
| 5 | Mr. Abhijeet Sadashiv Kharade | A Brief Review On History And Skills Of Volley Ball | 28 |
| 6 | Mr. Birajdar Vijaykumar Govindrao | Recent Trends in social Science Research | 32 |
| 7 | Mr. Akhilesh V. Shinde | Clean Village Campaign and Environmental Awareness in Maharashtra | 39 |
| 8 | प्रा.डॉ.टी.के. उदगीरकर श्री.अभिषेक लक्ष्मण सुतार श्री.अखिलेश शिवाजी गुरव | भारतातील पीक विमा योजनेची प्रगती व आव्हाने | 42 |
| 9 | प्रा. सौ. डॉ. मंगल भास्कर माळगे | आर्थिक मंदी : भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील एक आव्हान | 46 |
| 10 | प्रेरणा दिलीप दीक्षित | २१ व्या शतकातील स्त्रीवादी चळवळी | 48 |
| 11 | प्रा. डॉ. ममता कार्तिक कन्नाडे प्रा.डॉ. शैलजा कालिदास माने | कोल्हापूर शहरातील गृहणीच्या सामाजिक दर्जाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास: विशेष संदर्भ सदर बाजार आणि ताराबाई पार्क प्रभाग | 52 |
| 12 | श्रीमती गावडे स्वाती आप्पासो | सॅन्ट्रिय शेती काळाची गरज | 56 |
| 13 | डॉ. चन्ने विद्या पी. | भारतीय कृषी पुरक इतर व्यवसाय आणि स्त्री उद्योजिका | 60 |
| 14 | डॉ. गौतम खु. कांबळे | श्रम अर्थशास्त्राचे वर्तमान स्वरूप : विश्लेषण | 65 |
| 15 | कु. राणी महादेव कांबळे | सांगली जिल्ह्यातील स्त्री कामगारांचे कृषीक्षेत्रातील योगदान | 69 |
| 16 | श्री. प्रसाद पांडुरंग दावणे | दारिद्र्य रेषा निश्चिती संदर्भात सुरेश तेंडुलकर आणि सी. रंगराजन समितीची तुलनात्मक अभ्यास | 73 |
| 17 | प्रा. डॉ. उल्हास महादेव माळकर | दुग्ध उत्पादन, प्रक्रिया व विक्री संस्था : व्यक्ति आर्थिक अभ्यास | 77 |
| 18 | प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर | आधुनिकीकरणाचा मानवाच्या आरोग्यावर व आर्थिक विकासावर झालेला परिणाम | 80 |

आधुनिकीकरणाचा मानवाच्या आरोग्यावर व आर्थिक विकासावर झालेला परिणाम

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी
ता. पलूस जि. सांगली पिन कोड ४१६३०३
मो. नं. ९९७०६४४२८१, ८५५२८४११३३

प्रस्तावना :-

बदल हा समाजाचा स्थायीभाव आहे. मानवजात अश्मयुगातून आधुनिक युगात (म्हणजे ज्ञान, विज्ञान, तंत्रज्ञान) उत्क्रांती व क्रांतीच्या मार्गाने पोहचली आहे. मध्ययुगात समाजात अज्ञान, अंधश्रद्धा, दुःख, दारिद्र्य, बेकारी, विषमता, वाढती लोकसंख्या, गुलामगिरी, निकृष्ट राहणीमान, अनेक सोयीसुविधांचा अभाव या सर्व कारणामुळे समाज अंधार युगात वावरत होता. लोकसंख्येच्या संक्रमण आवस्थेत जन्मदराचे प्रमाण जास्त व मृत्यू दराचे ही प्रमाण जास्त होते. परंतु उपलब्ध लोकांमध्ये सुविधा ही कमी व लोकांच्या गरजा ही कमी. त्यामुळे (पैशाचा वापर न करता) परस्परांच्या गरजा परस्परांमध्ये भागवून सुखी व स्वयंपूर्ण जीवन जगत होते. वेळ प्रसंगी झाडपाला, फळे, कंदमुळे, भाजीपाला (रानमेवा), मृत/सजिव प्राण्यांचे मांस खावून जगत होते. तरी सुद्धा त्यांची शरीर प्रकृती बळकट/कार्यक्षम होती. निसर्गातील कोणत्याही परिस्थितीला यशस्वीपणे तोंड देण्याची क्षमता लोकांच्याकडे होती.

पण सध्या आधुनिकीकरणामुळे विकासाच्या गोंडस नावाखाली मानवी जीवन विनाशाकडे वाटचाल करित आहे. "अति तिथं माती" ही म्हण रास्त ठरविली जात आहे किंवा प्रसिध्द अर्थतज्ञ कार्लमार्क्स यांनी म्हटल्याप्रमाणे "मानवाच्या विकासातच विनाशाची ही बीजे रूजलेली असतात" हे खरे ठरत आहे. Health is Wealth म्हणण्या ऐवजी Money is Wealth म्हणून व्यवहार करित आहे.

१.१ संशोधन अभ्यासाची उद्दिष्टे :-

- १) वेगवेगळ्या क्षेत्रातील आधुनिकीकरणामुळे मानवाच्या आरोग्यावर झालेल्या परिणामाचा अभ्यास करणे.
- २) मानवी आरोग्य व आर्थिक, सामाजिक विकास यांच्या सहसंबंधाचा अभ्यास करणे.
- ३) मानवाला अनावश्यक उपभोग प्रवृत्तीवर आळा घालण्यास प्रवृत्त करणे.

१.२ संशोधन अभ्यासाची गृहितके :-

- १) शेती, उद्योग व वहातूक क्षेत्रातील आधुनिकीकरणामुळे मानवी आरोग्य धोक्यात येत आहे.
- २) मानवाच्या अकार्यक्षम आरोग्याचा मानवी कल्याणावर परिणाम होत आहे.
- ३) आधुनिकीकरणाचा मानवी आरोग्यावर व विकासावर होत असलेल्या परिणामास समाज शासन जबाबदार आहे.

१.३ संशोधन अभ्यास पध्दती :-

संशोधन पध्दती मध्ये मी प्राथमिक व दुय्यम साधनाचा वापर केला आहे. कारण विकास ही एक प्रक्रिया आहे. कोणत्या ही एका घटकामुळे विकास घडून येत नाही व आरोग्य सुद्धा कोणत्या ही एका घटकामुळे विघडत नाही. दोन्ही घटकाला असंख्य घटक कारणीभूत असतात. म्हणून यामध्ये निरिक्षण, प्रत्यक्ष भेटीचा, मुलाखतीचा वापर केले आहे.

मांडला आहे. उदा. यूरोप खंडात भारतीय हापूस आंब्यावर, द्राक्षेवर घातलेली बंदी, तसेच आखाती देशात भारताच्या हिरव्या मिरचीवर घातलेली बंदी हे उत्तम उदाहरण आहे. भारतात मोठ्या प्रमाणावर केळी, आंबा, द्राक्ष, केमिकल वापरून पिकवितात (कॅल्शियम कार्बाईड, इथरेल, सुदानरेड, मॅथेनॉल यलो, लेड क्रोमेट इ.) तसेच डाळी, तेलबिया रिफाईन्ड पॉलिश करतात, संत्री, सफरचंद चमकण्यासाठी त्याला मेन लावतात. पुणे, मुंबई येथील भाजीपाल्याचे नमुने घेवून संशोधन केल्या नंतर भाजीपाला, टोमॅटो, वांगी, कारली, काकडी, मिरची, कोबी यामध्ये किटक नाशकांचे अंश सापडले आहेत. तसेच गाय किंवा म्हैस यांना जास्त दूध देण्यासाठी ऑक्सी टॉनिक नावाचे औषध देतात. थोडक्यात दूध सुध्दा आरोग्याला घातक आहे हे पेरु या संस्थेने सर्व्हेक्षणाने सिध्द केले आहे.

या गोष्टीचा परिणाम मानवाच्या आरोग्यावर होत आहे. उदा. थकवा, मळमळ, उलटी, अतिसार, मधुमेह, लकवा मारणे व किडनी हृदयरोग, चक्कर येणे, मेंदूज्वर, कॅन्सर इ. आजारांचे प्रमाण वाढले आहे. उदा. सध्या शिरोळ तालुका (जि. कोल्हापूर) हा कॅन्सरग्रस्त तालुका म्हणून घोषित केलेला आहे. थोडक्यात वेगवेगळ्या आजारांमुळे मानवाची प्रतिकार शक्ती व कामकरण्याची कार्यक्षमता कमी झाली आहे. यामुळे अर्थव्यवस्था बिघडली आहे. उदा. मानवाची कार्यक्षमता घटली की उत्पादन कमी—नफा कमी — उत्पन्न कमी— बचत कमी— निकृष्ट राहणीमान— दारिद्र्य— बेकारी, विषमता— खून— मारामारी— अपहरण— चोरी या सारख्या अनेक समस्या निर्माण होतात.

१.६ उपाय :-

वरील समस्या दूर करण्यासाठी खालील गोष्टी करावेत.

- १) शेतीचे उत्पादने घेण्यासाठी रासायनिक खते व किटक नाशकांचे प्रमाण कमी करावे.
- २) अन्न व प्रशासन विभाग सक्रीय होवून गैरव्यवहारावर कडक कारवाई करावी.
- ३) मानवाने फळे व भाजीपाला मिठाच्या पाण्यात धुऊन घेवून त्याचे सेवन करावे.
- ४) उत्पादक व व्यापाऱ्यांनी स्वहित साधण्या पेक्षा समाजहित अधिक साधावे.
- ५) भारतात ग्राहक संरक्षण कायदा व चळचळ जाणीवपूर्वक राबविले पाहिजे.
- ६) शेतकऱ्यांनी माती व पाणी परिक्षण करून घेणे आवश्यक आहे.

संदर्भसूची :-

- १) डॉ. सौ व श्री किशोर पवार — नलिनी पवार “प्रदूषणातून पर्यावरणाकडे — नचिकेत प्रकाशन नागपूर — प्रथम आवृत्ती
- २) कृषी सेवा केंद्र विक्रेत्याशी प्रत्यक्ष चर्चा.
- ३) दैनिक लोकमत लक्ष्मण वाघ यांचा लेख (संकलित अभ्यास)
- ४) इंटरनेट मधील माहितीचा वापर, विविध दै. वर्तमान पत्रातील संकलित माहितीचा वापर केला आहे.



ds
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palas, Dist. Sangli.

20-21

ऑन-महाराष्ट्र

3-3-19

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Online National
Conference

Vidyawarta®

June 2020
Special Issue



NATIONAL E-CONFERENCE ON "NEED OF SPORTS AND PHYSICAL EDUCATION IN CHANGING SCENARIO"

10th to 11th JULY, 2020 ✓

SCPETA 2020

CONFERENCE SOUVENIR

ISSN: 2319 9318

ORGANIZED BY

Senior College Physical Education Teachers Association (SCPETA)

and

Shivaji University, Kolhapur (Maharashtra)

scpeta2014@gmail.com



hod.sports.shivaji@gmail.com

dg

Principal,

Shivaji Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

Vidyawarta

: Interdisciplinary, Multilingual Refereed Journal

Impact Factor 7.041 (IIJIF)

INDEX

| Sr. No. | Athor | Tital Of Paper | Page No. |
|---------|---|--|----------|
| 1 | Dr.Arulmozhi Saravanan, | EFFICACY OF SUKSHMA VYAYAMA EXERCISES ON SELECTED PHYSIOLOGICAL VARIABLE AMONG THE SCHOOL OF MENTALLY RETARDED CHILDREN. | 17 |
| 2 | Dr. Mahendra A. Kadampatil Dr. Prakash Gaikwad | UNDERSTANDING THE IMPACT OF COVID-19 ON THE SPORTS INDUSTRY | 22 |
| 3 | Mr. Mahadeo Sukhadeo Suryawanshi | A STUDY OF COMPETITIVE ANXIETY OF ELITE RECURVE ARCHERS OF INDIA | 30 |
| 4 | Shri. Sameer Pawar Dr. Mahesh Deshpande | ANALYSIS OF LIFE SKILLS DEVELOPED AMONGST REGULAR STUDENTS, ATHLETES AND NCC CADETS OF KISAN VEER MAHAVIDYALAYA, WAI. | 32 |
| 5 | Pankaja Pandey Dr. (Prof.) Kalpana Sharma | ASSESSMENT EFFICACY IN PHYSICAL EDUCATION: THE INTERNATIONAL REVIEW | 39 |
| 6 | Dr. Deepak Patil Dange | INDIAN EXERCISES - PREVENTER OF COVID 19 | 48 |
| 7 | Dr.C.Uma Devi Dr.S.Ezhilarasi | NEED OF SPORTS AND PHYSICAL EDUCATION IN CHANGING SCENARIO | 52 |
| 8 | Dr. Suresh Kumar Malik | NEED OF NATION: TO DEFEAT COVID-19 THROUGH PHYSICAL EXERCISE | 56 |
| 9 | Ngamthen Serbum Moyon Dr. Ksh. Birbal Singh | A STUDY OF COMPARISON OF ANXIETY PROFILES OF HOCKEY AND HANDBALL PLAYERS OF MANIPUR | 62 |
| 10 | Dr. Shivraj Ramchandra Gaikwad | STRESS MANAGEMENT IN COLLEGE STUDENTS | 67 |
| 11 | Shri. Babasaheb Mhalu Sargar | MENTAL HEALTH DURING THE CORONA VIRUS LOCKDOWN PERIOD | 73 |
| 12 | Dr.Mahesh Rangrao Patil Mr.Kiran Bajirao Patil | IMPACT OF COVIOD-19 IN SPORTS | 78 |



dg
Principal,
Babasaheb Chitole Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Patne, Dist. Sangli.

IMPACT OF COVID-19 IN SPORTS

Dr. Mahesh Rangrao Patil

Director of Physical Education,

Babasaheb Chitale mahavidyalaya, Bhilawadi.

e-mail- maheshpatil1352@gmail.com

Mr. Kiran Bajirao Patil

Director of Physical Education,

Vivekanand College, Kolhapur

Introduction:-

Sport is a major contributor to economic and social development. The effects of COVID-19 continue to ripple through the world's health, educational, financial, and commercial institutions, and the sports ecosystem is no different. The nonstop sports entertainment we've come to expect has come to a halt.

Since its onset, the COVID-19 pandemic has spread to almost all countries of the world. Social and physical distancing measures, lockdowns of businesses, schools and overall social life, which have become common place to curtail the spread of the disease, have also disrupted many regular aspects of life, including sport and physical activity.

The COVID-19 pandemic has caused the most significant disruption to the worldwide sporting calendar since World War II. Across the world and to varying degrees, sports events have been cancelled or postponed. The 2020 Summer Olympics in Tokyo were rescheduled to 2021.

Covid-19 impact: Players on back foot; uncertainty problems nation's smaller leagues

Franchise leagues, modelled or inspired by the Indian Premier League (IPL) that began in 2008, have impacted the lives of India's sportspersons. Cricket leads the way followed by football, which has the Indian Super League, but kabaddi, badminton, table tennis, tennis, volleyball, wrestling and boxing too have helped many make a living from sport. A kho-kho league is also in the works.

The Covid-19 pandemic though threatens India's status as a nation of leagues. The big ticket IPL, valued at \$6.8 billion in 2019 by global advisory firm Duff and Phelps, has been postponed indefinitely and with corporate reeling from the economic impact of a lockdown it will be tough for many leagues.

Less than three years ago, Deepak Hooda, the only earning member of a large family, couldn't afford a bicycle. Today, India's kabaddi captain drives an SUV. Pro Kabaddi League (PKL) changed Hooda's life—the player fetching Rs.1.15 crore in the 2018 auction from Rs.12.6 lakh in 2014 which then was the second-highest price. Subhankar Dey, Ashmita Chaliha and Ajay Jayaram use earnings from the Premier Badminton League (PBL) to fund careers. It was with his Rs.7 lakh from the volleyball league that helped Rohit Kumar build the family home with in Uplani, Haryana.

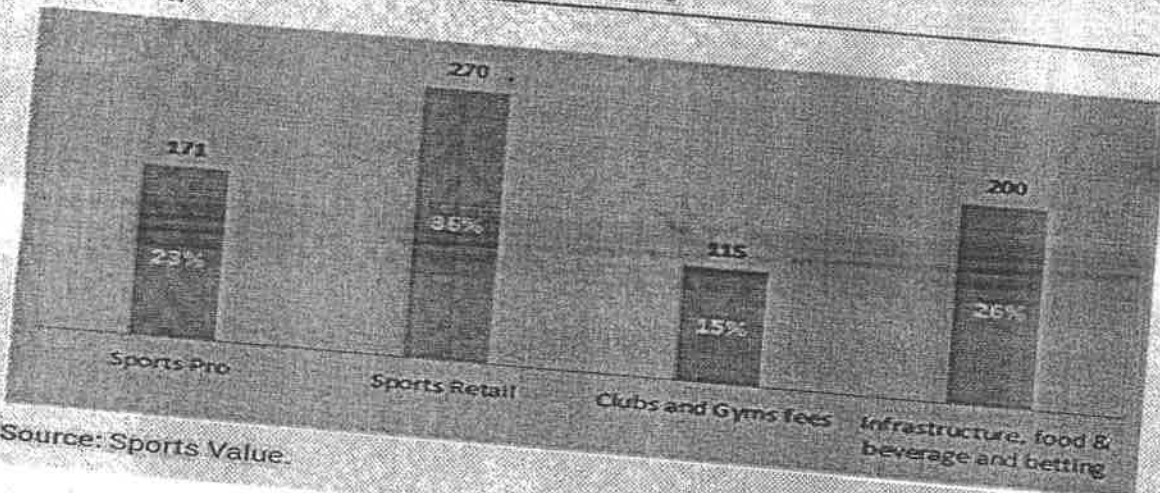
The impact of COVID-19 on sporting events and the implications for social development

To safeguard the health of athletes and others involved, most major sporting events at international, regional and national levels have been cancelled or postponed – from marathons to football tournaments, athletics championships to basketball games, handball to ice hockey, rugby, cricket, sailing, skiing, weightlifting to wrestling and more. The Olympics and Paralympics, for the first time in the history of the modern games, have been postponed, and will be held in 2021.

The global value of the sports industry is estimated at US\$756 billion annually. In the face of COVID-19, many millions of jobs are therefore at risk globally, not only for sports professionals but also for those in related retail and sporting services industries connected with leagues and events, which include travel, tourism, infrastructure, transportation, catering and media broadcasting, among others.

Global Revenues – Sports Industry

US\$ billion



Source: Sports Value.

In addition to economic repercussions, the cancellation of games also impacts many social benefits of global and regional sport events, which can cement social cohesion, contribute to the social and emotional excitement of fans, as well as their identification with athletes leading to greater physical activity of individuals.

Covid-19 cripples sports industry in India.

With Covid-19 lockdown resulting in a complete halt of trading activities, barring some essential commodities, the over Rs 2,000-crore sports industry of Jalandhar is having a harrowing time as the current situation has forced sport goods manufacturers to defer orders.

A sports goods manufacturing hub, Jalandhar produces nearly 70 per cent of total India's sports goods and is a leading name in national and international brands of cricket, hockey, football, rugby and fitness range.

The impact of COVID-19 on physical activity and well-being

The global outbreak of COVID-19 has resulted in closure of gyms, stadiums, pools, dance and fitness studios, physiotherapy centres, parks and playgrounds. Many individuals are therefore not able to actively participate in their regular individual or group sporting or physical activities outside of their homes. Under such conditions, many tend to be less physically active, have longer screen time, irregular sleep patterns as well as worse diets, resulting in weight gain and loss of physical fitness. Low-income families are especially vulnerable to negative effects of stay at home rules as they tend to have sub-standard accommodations and more confined spaces, making it difficult to engage in physical exercise.

The WHO recommends 150 minutes of moderate-intensity or 75 minutes of vigorous-intensity physical activity per week. There are concerns therefore that, in the context of the pandemic, lack of access to regular sporting or exercise routines may result in challenges to the immune system, physical health, including by leading to the commencement of or exacerbating existing diseases that have their roots in a sedentary lifestyle.

Lack of access to exercise and physical activity can also have mental health impacts, which can compound stress or anxiety that many will experience in the face of isolation from normal social life.

The global community has adapted rapidly by creating online content tailored to different people; from free tutorials on social media, to stretching, meditation, yoga and dance classes in

which the whole family can participate. Educational institutions are providing online learning resources for students to follow at home.

Conclusions and Recommendations

The COVID-19 pandemic has had and will continue to have very considerable effects on the sporting world as well as on the physical and mental well-being of people around the world.

- **Sporting federations and organizations.**

Governments and intergovernmental organizations may provide sports federations, clubs and organizations around the world with guidance related to safety, health, labour and other international standards and protocols that would apply to future sport events and related safe working conditions.

- **Professional sport ecosystem.**

The sport ecosystem, comprising of producers, broadcasters, fans, businesses, owners and players among others, need to find new and innovative solutions to mitigate the negative effects of COVID19 on the world of sport. This includes finding ways to engage with fans in order to ensure safe sport events in the future while maintaining the workforce, creating new operating models and venue strategies.

- **Promoting positive social attitudes and behaviour.**

Sport education is a powerful means to foster physical fitness, mental well-being, as well as social attitudes and behavior while populations are locked down. International rights and values based sport education instruments and tools, such as the International Charter of Physical Education, Physical Activity and Sport, the Quality Physical Education Policy package and the Values Education through Sport toolkit remain highly relevant references to ensure that the many online physical activity modules that are being currently deployed comply with gender equality, non-discrimination, safety and quality standards.

Stay Home – Stay Safe

References:-

- 1 <https://www2.deloitte.com/global/en/pages/about-deloitte/articles/covid-19/understanding-covid-19-s-impact-on-the-sports-sector.html>
2. <https://www.hindustantimes.com/other-sports/covid-19-impact-players-on-back-foot-uncertainty-plagues-nation-s-smaller-leagues/story-x8u4pgXfTRSsMVOz9soNIO.html>
3. <https://www.un.org/development/desa/dspd/2020/05/covid-19-sport/>

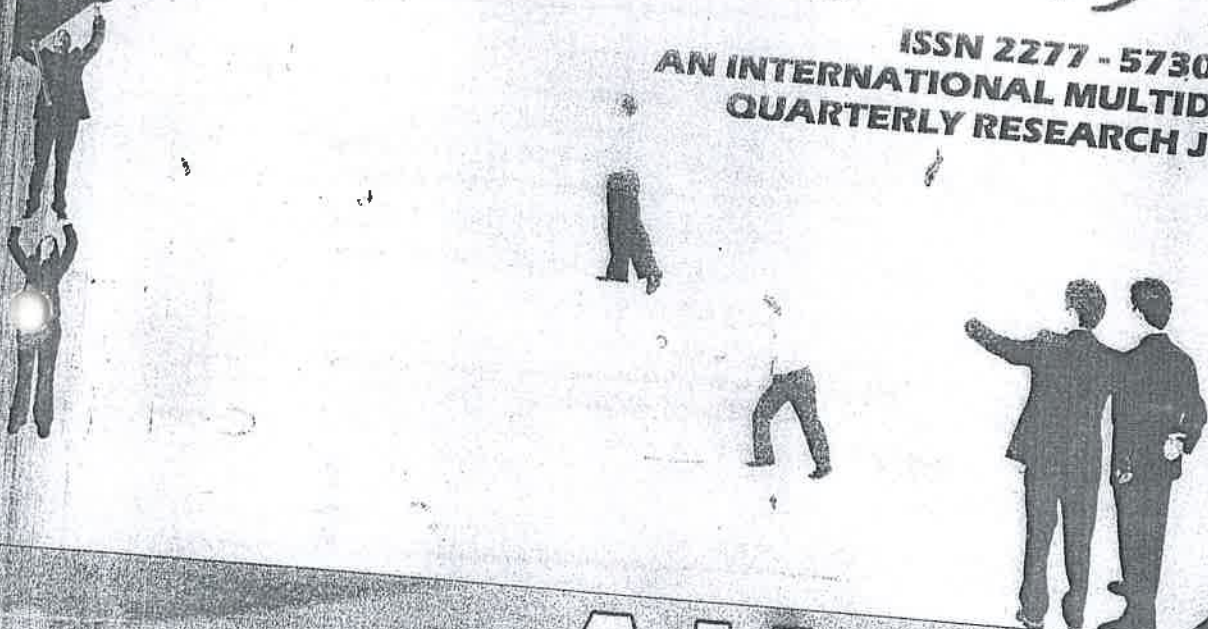
3.3.2-1
2020-21

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
English Part - I

Ajanta Prakashan

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❧ CONTENTS OF ENGLISH PART - I ❧

| S.No. | Title & Author | Page No. |
|-------|--|----------|
| 1 | Professional Life is Influenced by Human Values and Ethics Dr. Archana S. Chikhalikar | 1-7 |
| 2 | The Human Sensibility and Approaches : An Overview Dr. Balwant Bhimrao Landge | 8-13 |
| 3 | To Study the Role of 'Human Value Education' as the Part of Measures Taken by Government to Reduce Cyber-Crimes Dr. R. S. Salunkhe Mr. Bharat Nagargoje | 14-18 |
| 4 | Changing Role of Women in the Era of the Post - Globalization Dr. Prashant P. Lohar | 19-24 |
| 5 | Culture and Human Values Reflected in the Select Novels of T. M. Aluko Dr. Appasaheb S. Arbole | 25-30 |
| 6 | Reflection of Human Values in Ngugi's <i>Matigari</i> Dr. Balkrishna Dada Waghmare | 31-35 |
| 7 | Reflection of Human Values in Mulk Raj Anand's Fiction Dr. D. B. Thorbole | 36-41 |
| 8 | The Bhagwad Gita: An Epitome of Ethical Values Dr. Jayant Anant Kulkarni | 42-46 |
| 9 | The Impact of Partition on Women in Saadat Hasan Manto's Select Short Stories Dr. Namadev P. Khavare | 47-52 |
| 10 | Importance of Soft Skill and Human Values in Carrier Dr. Kishor Desarda | 53-58 |
| 11 | A Rebel for Women's Cause: A Feminist Review of Mahatma Jyotirao Phule's <i>Akhanda</i> Dr. Navanath Dnyandev Lokhande | 59-62 |
| 12 | Projection of Inculcating Human Values in the Poetry of Select Contemporary Indian English Poets Dr. Prakash A. Patil | 63-67 |
| 13 | Francis Bacon: A Product of Renaissance Dr. P. M. Patil | 68-74 |
| 14 | Creating Excellence through Human Values among College Students Dr. R. S. Salunkhe | 75-81 |

21. Role of Academic Libraries in the HRD and Information and Communication Technological Environment

Dr. V. V. Kharadea

Librarian, Babasaheb Chitale Mahavidyalay, Bhilwadi.

Dr. S. R. Mandaleb

Librarian, Bharati Vidyapeeth Institute of Technology, Sec-7 CBD Belpada, Navi Mumbai-
(M.S.) India.

Abstract

HRD and ICT have an importance part of all libraries operations and information services. ICT is a driving factor in the process of globalization in new digital era. ICT has become one of the basic tools and core of modern society in general educational and research activities. Developments in ICT have not only changed the way information is generated, organized, stored and distributed but more importantly have become an indispensable tool for teaching learning and research. Virtually all faculties, library professional staffs and researchers are aware of its impact and found it beneficially. The developments of ICTs in general and particularly are on e-resources. Libraries, Librarians and researchers have to cope with the challenge and make use of the advantages brought about by HRD and ICT environment.

Keywords: Academic Libraries, HRD, ICT, Environment.

Introduction

Nation's Development is solely dependent on the management of the human resources present in the nation. If this human resource is not coped properly then it is of no use to the nation. One of the fundamental primal matters for the better advancement of the society is the development of human being. HRD is organization, academic library professional staff development and new ICT concept training is the prominent fragment of the immense human resource development. HRD plays the significant role in the chrysalis of the library. HRD is a combination of management and operative functions. Any organization's success is solely dependent on the influence of human resource development as training of the employee's plays a worthy role in its effective development. Requirement of skilled and trained staff especially

is in this context librarian having to re-orient their services to provide easy access and conserve the time of research potential. Users need not commute to the library for information.

The electronic libraries will have to deliver a range of new non-core services internally spawned and externally acquired information. The cost of operations in future electronic libraries will be high and the investment will be continuous. Thus, the cost of information will be high as against the one time investment on documents in traditional library.

Need for HRD in Academic Libraries

1. Human resource development need is whereas traditional human resource development methods have their relevance and usefulness.
2. Human programmers bring about an organization-wide alteration which is envisaged in the thought of human resource development.
3. It is almost impossible for the organization to survive, to make a mark, on the society if their staffs are not proficient with the prerequisite understanding, abilities and approach.
4. The prime aim of the For-profit organization is to expand, evolve and develop their worksuch that they minimize the cost and delays while maximize the quality and customersatisfaction.

Functions of HRD in Academic Libraries

1. Training and Development: Training and development are meant for refining or moving the information skills and approaches of the library professional work in different libraries.
2. Training: Improving the library professional staff ICT based knowledge, skills and attitudeschanging training are following:
 1. Library Professional Staff is Orientation and refresher course training provided.
 2. Skills and technical training.
 3. Coaching.
 4. Library Management training.
 5. Library Supervisor development training.
3. Organization Development:
4. Career Development:

1. Pro-activity: Library professional staffs are action-oriented, willing to take the initiative and show high degree of pro-actively.
2. Openness and risk taking: Library staffs feel free to express their ideas and the organization is willing to take, risks, experiment with new ideas and new ways of doing things.
3. Collaboration: Library staffs collaboration with each other and have a feeling of belonging to the same family and working for a common cause.
4. Trust and Authenticity: Library staffs are his working departments and groups trust each other can be relied up onto do whatever they say they will do.
5. Confrontation: Library staffs face problems without hiding or avoiding them, these can be discussing with each other and superior.
6. Autonomy: Library staffs have some freedom to act independently within the boundaries of their role/job.

ICT Environment based Skill Requirement for the Academic Libraries Professional

- New technological innovations such as Internet -2, Web-2.0, Professional skills with practical approach.
- Cataloguing of web resources using metadata standards.
- Web page designing and maintenance.
- Preservation of ICT resources.
- Data base creation and various models of it.
- Attending to the trouble shooting systems.
- Scanning, Indexing, Conversion and linkage issue.
- To work in the ICT environment by using it today.
- Turning to the new environment by using it tools.
- User awareness to the library resources and services.
- Accessibility of information one-line.
- Improving the communication skills among the library professional staff, with user and the top management.
- Strengthening of Librarians Skills in dealing with copyright and negotiating with publishers.
- High priority must be given to library professional staff development.

Role of Librarian in ICT Environment

In the changed scenario under the influence of ICT the duties of the librarian have been changed. The librarian is going to work as information broker, navigator, market negotiator and information technology expert for example the services the librarian going to offer in the future shall compel them new methods of classification and cataloguing, Internet resource search engine, which specialize the certain subject areas only and interlink each bit of information which has relevance to anything else in the universe of knowledge. Now librarian should possess the following skill in the changed scenario since the librarian is going to be a highly skilled professional, whose total commitment is to be as a processor and disseminator of information to the user. There is a need to acquire soft skills that helps the librarian to deal effectively with their clientele; some of the soft skills are enumerated below in brief.

1. **Communication Skills:** The librarian should be able to achieve both verbal and written communication skills.
2. **Adaptation Skills:** Librarian should be ready to adopt new techniques and technologies on current trends.
3. **Management Skills:** Decides the traditional management skills, the librarian must achieve the special management skills as per the ICT.
4. **Marketing Skills:** The librarian must be able to promote his products and services hence, marketing skills which is essential for marketing of library services.
5. **Update of Knowledge:** Librarian should update their knowledge to provide better services to the users.

Tools of Information and Communication Technological Environment

- | | | | |
|-------------|-------------|------------------------|--------------|
| 1. Computer | 2. Internet | 3. Digital Camera | 4. Web Cam |
| Smart Card. | 6. Scanner | 7. E-book | 8. E-journal |
| Web-OPAC | 10. E-mail | 11. RFID Technologies. | |

Modern Library Professional Environment in ICT based Online Services in Academic Libraries

ICT based online services in library are now challenging for modern library professional environment. We have to remain with the latest technology and its use by competitors. These call centers and their work environment is totally different from library. All availability and money-based service are two main factors for them on which they are giving

Information communication technology is not a technology but also it manages with library objectives with the adoption of ICT, libraries can face the new information techniques. ICT has generally affected the information environment. The Librarians have to skillful awareness regarding the management of information, Due to skill up gradation among the library professional's library render the best service and give the more satisfaction of the library users.

References

1. Aalexa. (2012) Current Trend in Library Science, New Delhi, Elsevier India Pub. 2012. Peg. 174-189.
2. Alison, B. (2013) Preservation of Digital Information: Issues and Current status Network, Boston, Royal Pub. Peg. 228-239.
3. Bhatti, R. (2009), Study on Human Resources Skill Development and Information Dissemination, International Information & Library Review, 36 (3), 59-68.
4. Gaikwad and Wadje, (2014), Evaluation of Human Resource and Its Future. New Delhi, Journals of Scientific Research 12(3) peg: 89-96.
5. Karekar, S. (2014), Paper on LIS Professionals and I.T. Environment, National conference of ILA, Roorkee, peg 59-64.
6. Mahapatra, P K (2002) Human Resource Management in Libraries; ESS ESS Publications, New Delhi. P.11, 19
7. Namita Khot (2014) Changing Role of Library Professionals in the ICT Environment; 59th IL A International Conference, Roorkee. P.95-98.

November 2021

20-21

3-3-21

E-ISSN - 2348-7143

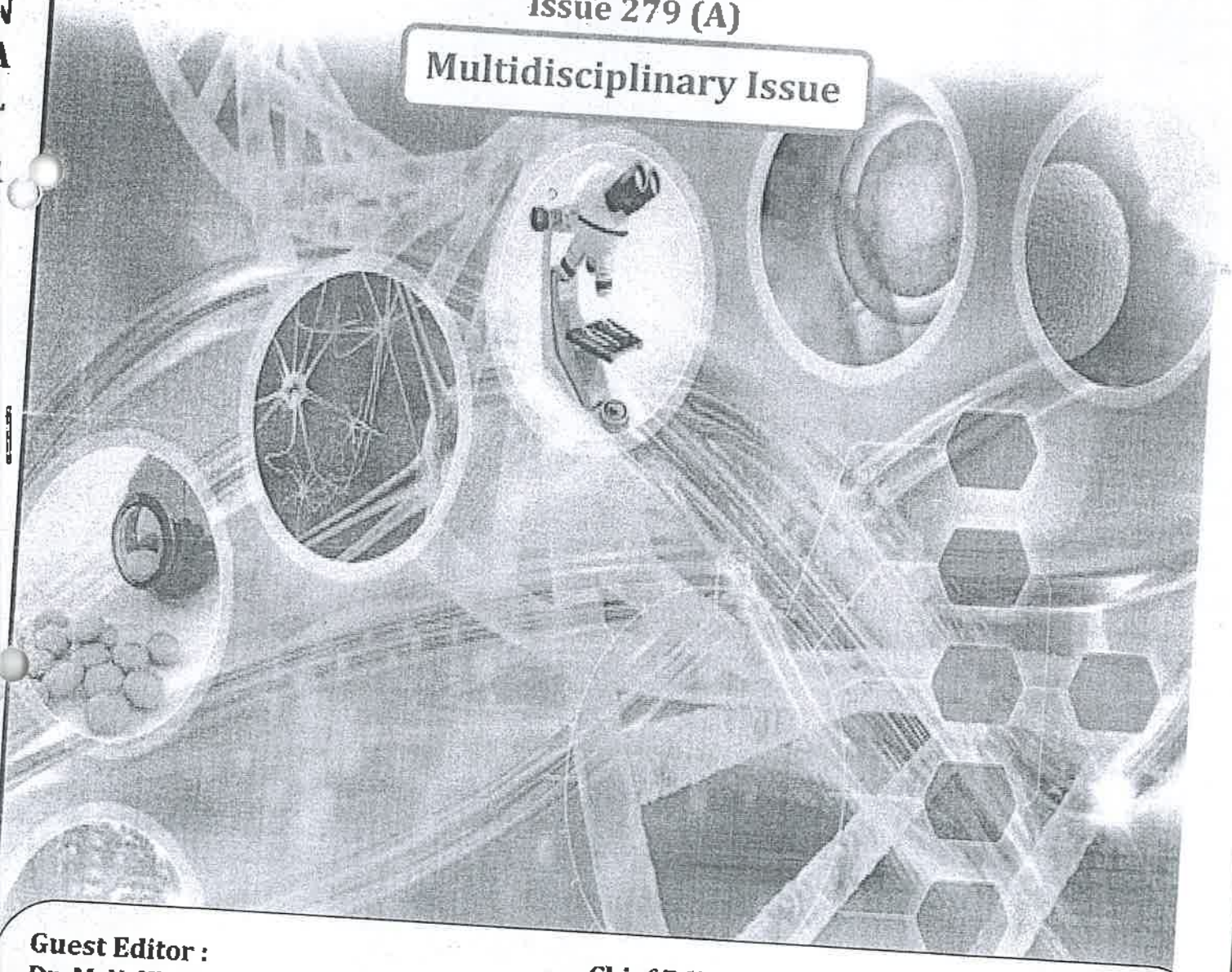
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue 279 (A)

Multidisciplinary Issue



Guest Editor :

Dr. M. N. Kharde

Director,

Shirdi Sai Rural Institute's

Rahata, Tal- Rahata Dist-Ahmednagar

Chief Editor :

Prof. S. V. Lahare,

Principal,

Arts, Science and Commerce College,

Rahata. Tal-Rahata Dist- Ahmednagar

Executive Editor : Dr. D. T. Satpute (Librarian), ASC College, Rahata.

Co-Editors : Dr. D. N. Dange, Prof C. M. Bansode

Hon. Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)



For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS



Editorial Board

Chief Editor -

Dr. Dhanraj T. Dhangar,

Assist. Prof. (Marathi)

MGV's Arts & Commerce College,

Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)

Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)

Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)

Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- ❖ Prof. Mohan S. - Dean faculty of Arts, Delhi University, **Delhi, India**
- ❖ Prof. Milena Brotaeva - Head, Classical East Department, Sofia University, **Sofia, Bulgaria**
- ❖ Dr. R. S. Sarraju - Center for Translation Studies, University of Hyderabad, **Hydrabad, India**
- ❖ Mr. Tufail Ahmed Shaikh - King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, **Saudi Arabia**
- ❖ Dr. Anil Dongre - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Shailendra Lende - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik. [M.S.] **India**
- ❖ Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] **India**
- ❖ Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India**
- ❖ Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, **Goa, India**
- ❖ Dr. G. Haresh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Munaf Shaikh - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Sanjay Kamble - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari [M.S.] **India**
- ❖ Prof. Vijay Shirsath - Nanasahab Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.] **India**
- ❖ Dr. P. K. Shewale - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Ganesh Patil - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.] **India**
- ❖ Dr. Sandip Mali - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.] **India**
- ❖ Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.] **India**
- ❖ Prof. K. M. Waghmare - Librarian, Anandibai Raorane College, Sawantwadi [M.S.] **India**

Advisory Board -

- ❖ Dr. Marianna Kotic - Scientific-Cultural Institute, Mandala, **Trieste, Italy**
- ❖ Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. R. P. Singh - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] **India**
- ❖ Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India**
- ❖ Dr. Pruthwiraj Taur - Chairman, BoS, Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- ❖ Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, **Coimbatore**
- ❖ Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University **Pune, [M.S.] India**
- ❖ Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- ❖ Dr. B. V. Game - Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- ❖ Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J. Somaiyya College, Kopergaon
- ❖ Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- ❖ Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- ❖ Dr. K.T. Khairnar - BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- ❖ Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon
- ❖ Dr. Sayyed Zakir Ali, HoD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- ❖ Dr. Amol Kategaonkar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik

Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

Website - www.researchjourney.net

Email - researchjourney2014@gmail.com



| | | | |
|----|---|---|------------|
| 25 | Role of Social Networking Sites in Libraries and Information Services | Dr. Bhagwan Doke | 132 |
| 26 | The Changing Role of Library with the Application of Web Resources and Its Services | Sandesh Dongare | 136 |
| 27 | Impact of ICT on Arts, Science and Commerce College Faculty for Using Electronic Resources: A Survey | Mrs. Manisha Gaikwad | 140 |
| 28 | Status of Rohingya Refugee in Bangladesh | Mrs. Gosha | 145 |
| 29 | Content Evaluation of Department of Library and Information Science Web Portal | Mrs. Samruddhi Hawaldar | 150 |
| 30 | Role of Standards in Special Libraries: A Comparative Study | Vishal Hawaldar, Prof (Dr) H. S. Waydande | 160 |
| 31 | The Challenges of Cultural Diversity in India | Dr. Sunita Jadhav | 166 |
| 32 | Content Analysis: An Overview | Vishal Vasant Jadhav | 172 |
| 33 | Stress Management Among Women Employees in Private Colleges A Study of Haryana and Ncr | Komal Jindal | 178 |
| 34 | Economic Reform Through Lpg in Indian Economy | Dr. V. Kalaiselvi | 182 |
| 35 | Replenishing Ecological Damage of Tree Cutting By Reintroduction of Ficus Benghalensis Trees in Kolhapur City- A Keystone Species for Urban Environment | Umesh Kamat1 & Sunil Penkar | 193 |
| 36 | Human Right and Women | Mrs. Surekha kamble | 197 |
| 37 | Innovative Practices in Mathematics Education | Mr. Gorakhanath Karadea | 205 |
| 38 | Property Rights of Daughter in The Light of Hindu Succession (Amendment) Act, 2005: an Analytical Study | Dr. Waseem Ullah Khan Inayat Ullah Khan | 208 |
| 39 | Issues and Challenges in E-Resource Management - An Overview. | Dr. V. V. Kharadea, Dr. S. R. Mandaleb, Dr. S. R. Mandaleb | 213 |
| 40 | MOOCs, Online Courses and Open Education Resources | Mr. Kharjule Rakhmaji | 217 |



Offline mail, offline media playing, offline-dictionary, CD-ROM, offline browsing, subject guides.

Advantages of E-Resources:

The following are the some of the advantages of e-resources. They are

- E-resources provide 24 X 7 access service.
- Multiaccess of e-resources is possible.
- It saves the time of the user.
- It allows various types of searching facilities.
- It can be downloaded instantly.
- It is more economic than the print version.
- It supports multimedia applications.
- It provides current information necessary for information work.

Disadvantages of E-Resources:

The following are the some of the disadvantages of e-resources. They are

- Need proper ICT infrastructure for accessing e-resources.
- Skilled manpower s requires for managing e-resources.
- It requires copyright issues.
- Security problem.
- Initial high infrastructure cost is required.
- Renewal of e-resources is required.
- High- Internet speed is required for online e-resources.
- Need proper preservation policies.
- Lack of standards.

Issues and challenges in E-Resources:

The adoption of the e-resources has made a great advantage over the library services for easy retrieval of required information within a short period of time. There is some of the challenges in offering the high level of the services to users. Some of the challenges facing with e-resources management are discussed below:

A. Shortage of library funds:

ICT demand more funds for its infrastructure and continuing services. Most of the libraries have inadequate fund for acquiring e-resources and so the users do not get their needy information at the right time. Therefore, shortage of library fund to establish and run the same is challenges were identified for implementation of the digital libraries.

B. Technical infrastructure:

In a digital information service system, infrastructure such as software, hardware, internet facilities and other physical equipment's are required to provide easier, faster and comprehensive access to information. Absence of stable technical network infrastructures in terms of servers, physical cabling and wireless access points are challenges were identified for implementation of the digital libraries.

C. Lack of professional skills:

Due to lack of management and technical skills, the academic library professionals are not able to handle the e-resources. Therefore, shortages of the professional skilled personnel who

As ICT advanced, the costs of hardware and software declined and the digital option became more attractive.

References:

1. Kathirvel, RShanmugam, A.PNatarajan, N.O Information Services and Facilities of the Professional College Libraries in Vinayaka Mission's University, Salem international Journal of Library Science and Research (IJLSR) ISSN(P): 2250- 2351; ISSN(E): 2321-0079 Vol. 5, Issue 1, Feb 2015, 9-18.
2. Kathirvel, RShanmugam, A.PNatarajan, N.O Information Services and Facilities of the Professional College Libraries in Vinayaka Mission's University, Salem international Journal of Library Science and Research (IJLSR) ISSN(P): 2250- 2351; ISSN(E): 2321-0079 Vol. 5, Issue 1, Feb 2015, 9-19.
3. Matto, G., & Bwabo, M. (2012). Prospects of digital libraries in enhancing academic materials access: A survey of libraries in higher learning institutions in Kilimanjaro region. Proceedings and Report of the 5th Ubuntu Net Alliance Annual Conference, 102-117.
4. Naik, R.R., & Horakeri, M.D. (2009, September 13). —Changing role of the college library professionals in the internet era: Trends, opportunities and challenges||. Retrieved from <http://dliskud.over-blog.com/article-36027362.html>.
5. Nallathambil, A., Shanthi, S.L and Shanmugam, A.P Use of Information and Communication Technology Among the Faculty Members of Leading Engineering Colleges in Namakkal District IJISS Vol.S No.1 Jan-June 2014 PP 46 – 49
6. Shanmugam, A.P Utilization of E-resources and Services by PG Students, Research Scholars and Faculty Members of Arts and Science Colleges, Coimbatore, Tamil Nadu A Study research journal of information science and technology Volume: 01 Issue: 01 January – June 2014 ISSN: 2348-1501 PP 65 -69
7. Shanmugam, A.P, Role of ICT on Information Seeking By Users in Higher Educational Institutions, Journal of Advances in Library and Information Science, Vol.5, No 2. April-June. 2016, pp-139-14.

20-21
डॉ. मेहुणाबाई

3-3-4

| | | |
|------------------|---|---|
| National Seminar | The New Miraj Education Society's Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra) | Special Issue 1 st February, 2020 |
|------------------|---|---|



The New Miraj Education Society's
Kanya Mahavidyalaya, Miraj
One Day National Multidisciplinary National Seminar
On
**Emerging Trends and Issues in Social
Sciences**
Saturday; 1st February, 2020

Organized by
Department of Economics, Geography, History, Political Science,
Psychology, Sociology and Physical Education & Sports

Editor
Prof. Babasaheb Sargar
Co-editor
Prof. Ramesh Kattimani



dg

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

| | | |
|---|----------------------------|------|
| VIDYAWARTA Peer Reviewed International Refereed Research Journal ISSN 2319 9318 | Impact Factor: 7.041(IJIF) | Page |
|---|----------------------------|------|

| | | | |
|----|---|--|-----|
| 42 | Mr. Sachin Suresh Sawakhande | Social Media in India : An Overview | 161 |
| 43 | Dr. Swapnil D. Patil | Health for one and all through Sports and Physical activities | 165 |
| 44 | Dr. Savita Madhavrao Gire | Use of ICT, Research in social Science | 167 |
| 45 | Prof. Vanita Kamble Mr. Munkir Mujawar | Cyber Bullying Global and an Indian Scenario | 171 |
| 46 | Shri. Bharat D. Mali | Role of Information communication technology (ICT) in Library and information science (LIS) careers in India | 175 |
| 47 | Dr. Sushant T. Magdum | Sport and Personality development | 177 |
| 48 | Dr. Shivanand B. Patil Mrs. Rekha B. Lonikar | Comparative Study of emotional intelligence between players and non players of Udgir | 179 |
| 49 | Mr. Sanjay Daulatrao Bagul | Define the effects of medicine ball throw daily practice is improving the selected school childrens's medicine ball standing throwing ability. | 181 |
| 50 | Mr. Ranjeetsingh K. Gavade | Physical Fitness and Mental health | 185 |
| 51 | Mr. Kundlik Ramchandra Gavade | Emerging area in physical education | 188 |
| 52 | Dr. Mahesh Rangrao Patil | Fitness is life long process- Obesity in the Men and Women | 191 |
| 53 | Mr. Sandip Shahadev Patil | Mental Toughness | 194 |
| 54 | Dr. Savita V. Bhosale | New Trends in Physical Fitness Training | 196 |
| 55 | Dr. M. P. Khobragade | Physical Fitness and Its effects on Mental health | 199 |
| 56 | Shri. Mahadev S. Suryawanshi | Tratak Yojana & Pranayam for best performance of Indian Archery Sportsman | 201 |

FITNESS IS A LIFE LONG PROCESS -OBESITY IN THE MEN AND WOMEN**INTRODUCTION****Dr. Mahesh Rangrao Patil**

Director Of Physical Education

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya, Bhilawadi

Email- maheshpatil13@gmail.com Mobile -9860851741

At beginning of the 21st century, for the first time in human history, more of the earth's population suffers from the too much food, rather than from its storage. This has resulted an increasing number of persons who are overweight and obese. This is the problem even amongst children. Precise Indian statistics are lacking but in U.S., over half the population is overweight enough to be defined as obese. This number increased by 50 % in the last decade of the 20th century. There are multitude of health complication from obesity.

Young adults can generally eat more and not gain weight, but metabolism tends slow in the mid-30's (middle-aged people become more inactive). One pound (0.5kg.) of fat has 3500k.cal. An excess intake of only 0.3 5% of calories eaten translate into a 20 pound (9.1 Kg) weight gain over the age range of 25 to 55 years. This average weight gain in young adults averages 0.2 to 0.8 Kg. per year.

Overweight people are more likely to have high blood pressure and high blood cholesterol, major risk factors for heart disease and stroke. As people gain weight, their glucose tolerance declines putting overweight people at twice risk for developing non-insulin dependent diabetes mellitus (NIDDM/Type -II Diabetes). Diabetes is a major cause of early death, heart disease, kidney disease, stroke and blindness.

Overweight

Overweight refers to increased body weight in relation to height or simply weight more than desirable. Overweight may or may not be due to increases a body fat. It may also be due to an increase in lean muscle. For Ex, Professional athletes may be very lean musculat with very little body fat, yet they may weight more than others of the same height.

Body Mass Index (BMI)

BMI is a common measure expressing the relationship (or ratio) of height & weight. It is a mathematical formula in which a person's body weight in kilograms is divided by the square of his or her height in meters (ie. $BMI = Kg/m^2$) although the BMI ranges shown in graph are not exact range of healthy and unhealthy weight, they are useful guidelines. A BMI of 25 to 29.9 indicates a person is overweight while a individuals with a BMI of 30 over more are considered obese.

BMI

Below 18.5

18.5 - 24.5

25.5 - 29.9

30.0 - and above

Weight status

Underweight

Normal

Overweight

Obese

BMI correlates with body fat. Women are more likely to have a higher percent of body fat than men for the same BMI

Obese

Obesity is defined as an excessively high amount of body fat or adipose tissue in relation to lean body mass. The amount of body fat includes concern for both the distribution of fat through out the body and the size of the adipose tissue deposits.

Measuring Obesity

1. Measuring skin-fold Thickness

It measures subcutaneous fat, which lies just under the skin, at targeted area such as the back of your upper arm, waist or thigh using calipers an instrument that looks like tongos measurement of skin-fold thickness depends on the skill of the examiner.

2. Waist Circumference

Waist circumference is a common measure used to assess abdominal fat content. Undesirable waist circumference differ for men and women. Men are at the risk who have a waist measurement greater than 40 inches (102cm) while women are risk who have a waist measurement greater than 35 inches (88cm).

3. Waist-to hip -ratio (WHR)

Waist-to-hip-ratio is the ratio of a person's waist circumference to hip circumference. For most people, carrying extra weight around their middle (Truncal Obesity) increases health risks more than carrying extra weight around their hip or thighs.

Contributing Factors For Obesity

Energy imbalance is caused when the number of calories consumed is not equal to the number of calories used.

1. Eating Habits

A changing environment and globalisation has broadened food options and eating habits. Pre packed food, fast food restaurants are also more accessible. While such food are fast and convenient they also tend to be high in fat, sugar and calories. Choosing many foods from these areas may contribute to an excessive calorie intake.

People may be eating more during a meal or snack because of portion sizes or comforts eating in front of the T.V. Regular physical activity decrease the risk for colon cancer, diabetes, and high blood pressure.

2. Genetics

Science shows that genetics plays a role in obesity. Adults who were adopted as children were found to have weights closer to their biological parents than their adoptive parents. In this case the person's genetic make-up had more influence on the development of obesity than the environment in the adoptive family home. Genes and behaviour may both be responsible for a person to be overweight.

3. Diseases and Drugs

Some illnesses may lead to obesity or weight gain. These may include hypothyroidism, Cushing's disease and polycystic ovarian disease. Drugs such as steroids, oral contraceptive pill, anti-epilepsy drugs and some antidepressants may also cause weight gain.

Complications Arising from Excess Weight Gain

There are some diseases that are seen with increased frequency in persons who are obese.

Cancer

Cancers of uterus, breast and the bowel are seen with increased frequency in person who are overweight. Breast cancer risk is increased with obesity for women who are past menopausal, especially in those with BMI greater than 29.

Diabetes Mellitus

Maturity-onset diabetes (Type II diabetes) 90 to 95 % are associated with obesity. The prevalence of this type of diabetes has increased by 25 % in the last decade of 20th century.

Other Diseases

Coronary artery disease, stroke, hypertension, Cardiomyopathy, Hepatitis and liver failure, reproductive problems, sleep apnea, physical disorders, bladder control problems etc.

Life-style Modification For Treatments Of Obesity

The best approach is prevention. Adopting a life style that includes a healthy diet and exercise will prevent obesity.

Diets

If you diet your body adopts to lower caloric intake and becomes more efficient at utilizing and storing as fat any calories taken in. Unfortunately if you go off the diet, you gain weight even faster than before. Dieting is more frustrating for women. Since women have twice as much fat, or lose weight half as fast as men. Thus when husband and wife adopt a new diet, to lose weight, the advantage is seen more quickly by the husband.

In the west, very Low Calorie Diets (VLCDS) occasionally used in patients with BMI more than 30. Such diets produce weight losses of 1.5- 2.5 Kg. per week compared to 0.5 on conventional regimes. These are used only for short term rapid weight loss as in athletes.

Drug Treatments

Drugs are now available which act to reduce food absorption by action on and blockage of fat absorption from the gut. Weight loss with these agents is effective and also cause improvement in the lipid profile. Side effects include dryness of mouth, constipation and insomnia. All drugs are dangerous without supervision and should only be taken on the advice of your doctor.

Surgical Therapies

Surgical therapies are drastic and may be only of value when other methods have failed and the BMI is greater than 40. These include stomach stapling operations.

Physical Activity Is The Best

Be physically active. Plan family activities that provide everyone with exercise and enjoyment. Encourage swimming, biking, and fun activities. Reduce the amount of time you and your family spend in lazy activities, such as watching limited Mobile and TV time to less than 2 hours a day.

The type of exercise recommended for weight loss is of the aerobic type, such as walking, jogging, swimming, cycling and aerobic dancing.

Exercise on the other hand, not only burns calories it also tempers the appetite. Exercise boosts metabolism, which dieting can impair, improves sleep and provides psychological benefits, such as an increased feeling of control and self-esteem, as well as stress reduction.

Exercise for burning calories are aerobic activities. Aerobics not only help to reduce body fat but also improve cardiovascular conditioning. Over 40 people consult a physician before begin your physical activity.

Conclusion:

To reduce obesity you have control your eating habits, change your modern life-style, intake of correct diet, use physical exercise in your daily routine. Fitness gain is not short term process. It starts from your birth to your death. It's life-long process.

References:-

1. Dr.R Kumar/Dr.Meenal Kumar 'Guide To Total Fitness Of Body and Mind'
2. Magazines Like- Wellbeing, Grushobhika.
3. Daily News Papers- Sakal, Pudhari, Maharashtra Times.



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

2020-21

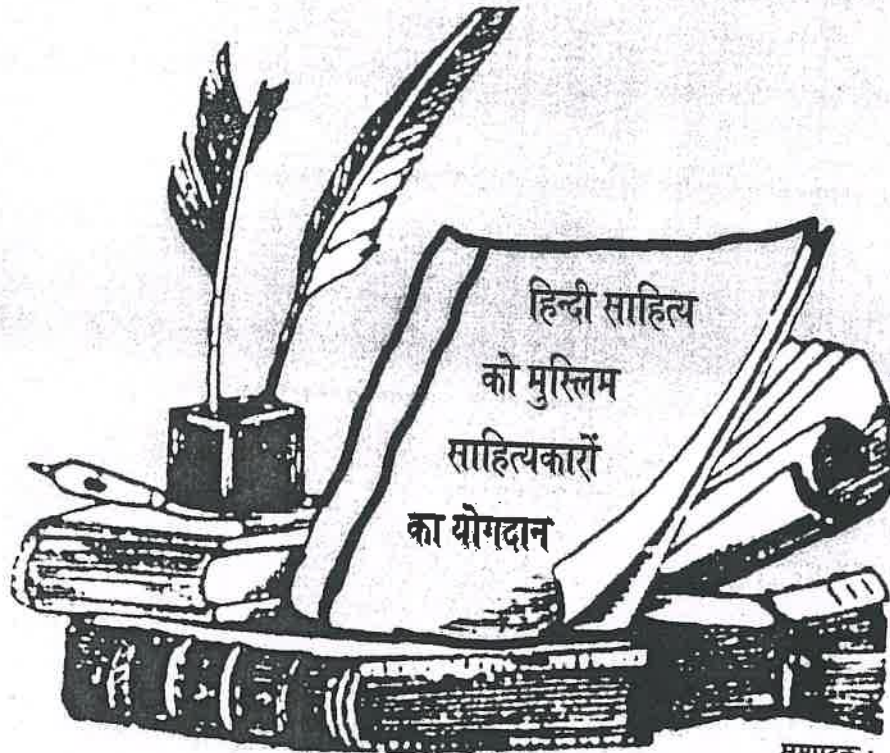


ISSN : 2395-7115

Impact Factor
3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL



सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

अतिथि सम्पादिका :

डॉ. शबाना हबीब

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhiwani

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhiwani

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

October 2020, Vol. 12, Issue 7(II)

ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :

डॉ. रामफल दलाल

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

अतिथि सम्पादिका :

डॉ. शबाना हबीब

राजकीय महिला महाविद्यालय
तिरुवन्तपुरम, केरल।

सह सम्पादिका :

डॉ. रेखा सोनी

उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टांटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

सह सम्पादिका :

डॉ. सुशीला आर्या

हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :

समुद्र सिंह

भिवानी।



प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

हिन्दी साहित्य को मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान October 2020, Vol. 12, Iss. 7(II) (3)

मुस्लिम विशेषांक

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|---|--------------------------------------|---------|
| 1. | सम्पादकीय | | |
| 2. | हिन्दी के मुस्लिम साहित्यकार | डॉ. नरेश कुमार सिहाग, डॉ. शबाना हबीब | 9-9 |
| 3. | मेराज अहमद कृत 'दावत' कहानी संग्रह में अवध की स्त्री | अर्जुन पासवान | 10-14 |
| 4. | सूफी काव्य परम्परा में मध्ययुगीन सूफी कवि 'कासिमशाह' कृत 'हंस जवाहिर' का स्थान | अकरम हुसैन | 15-26 |
| 5. | अब्दुल्ल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में मुस्लिम समाज | डॉ० परमजीत कौर | 27-33 |
| 6. | भारतीयता और मुस्लिम साहित्यकार | डॉ. एम. काला | 34-35 |
| 7. | भक्तिकाल आंदोलन और मुस्लिम साहित्यकार | प्रीति देवी | 36-38 |
| 8. | स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रेरक मुस्लिम शायर | श्रीमती रजनी सैनी | 39-41 |
| 9. | 'पदमावत' में भारतीयता | डॉ. इकबाल फातिमा | 42-45 |
| 10. | शानी के 'काला जल' उपन्यास में चित्रित मुस्लिम परिवेश एवं विसंगतियां | उर्मिला कुमारी | 46-49 |
| 11. | जायसी और लक्ष्मी-समुद्र खण्ड (निरवलम्बता की अनुभूति या राष्ट्रीयता का स्वर) | काजल | 50-52 |
| 12. | हिन्दी साहित्य को मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान जायसीकृत पदमावत में भारतीयता | डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी | 53-57 |
| 13. | विभाजन के बाद भारतीय मुसलमान : मुस्लिम उपन्यासकारों की रचनाओं के विशेष संदर्भ में | डॉ. राखी. के. शाह | 58-59 |
| 14. | राही मासूम रजा के उपन्यासों में चित्रित फिल्मी जीवन | Rubiya Jabak | 60-63 |
| 15. | हिंदी साहित्य को मुसलमान साहित्यकारों का योगदान | Dr. Shabana Habeeb | 64-66 |
| 16. | रसखान की भक्ति और उसकी प्रासंगिकता | शैलेश शुक्ला | 67-70 |
| 17. | भारतीयता एवं संस्कृति का प्रतीक : 'पदमावत' | डॉ. इब्रार खान | 71-74 |
| 18. | प्रवासी हिन्दी कहानीकार जकिया जुबैरी (मुस्लिम महिला हिन्दी कहानीकारों के संदर्भ में) | विपिन कुमार वी | 75-77 |
| 19. | कन्हावत और मलिक मुहम्मद जायसी | डॉ. मधु संघु | 78-81 |
| 20. | अमीर खुसरो की हिन्दवी कविता | डॉ. ज्ञानसिंह चन्देल | 82-85 |
| 21. | हिन्दी कथा साहित्य और मुस्लिम कथाकार | डॉ. विजय महादेव गाडे | 86-94 |
| 22. | पदमावत महाकाव्य में हिन्दू त्यौहारों की झलक | डॉ. अनिला मिश्रा | 95-98 |
| 23. | 'इनसानी नस्ल' में धार्मिक एकता का भाव | सुनील कुमार | 99-100 |
| | | सीमा देवी | 101-104 |



अमीर खुसरो की हिन्दवी कविता

"खुसरो दरिया प्रेम का, उलटी वा की धार।

जो उतर सो डूब गया, जो डूबा हुआ पार।।"

अबुल हसन अमीर खुसरू चौदहवीं सदी के एक प्रमुख शायर, गायक एवं संगीतज्ञ थे। खुसरों को हिन्दुस्तानी खड़ी बोली का पहला लोकप्रिय कवि माना जाता है। वे अपनी पहेलियाँ, और ढकोसला तथा सखुना के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने सर्वप्रथम अपनी भाषा को हिन्दवी कहते हुए सम्बोधित किया है। हिन्दवी के साथ वे फारसी के भी शायर थे। उन्हें दिल्ली के सुलतानों का आश्रय मिला था। यद्यपि इनके ग्रंथों की सूची काफी लम्बी है जिनकी प्रामाणिकता पर संदेह है। खुसरो अरबी, फारसी, तुर्की और हिन्दी आदि भाषाओं के विद्वान थे और संस्कृत का भी कुछ ज्ञान रखते थे। उन्होंने कविता की 99 पुस्तकें लिखी थीं जिनमें कई लक्ष शेर थे किन्तु अब उनकी केवल 22 रचनाएँ ही प्राप्त होती हैं जिनकी फेहरिस्त इस प्रकार है -

मसनवी किरानुरस्सादेन, मसनवी मतलउल अनवार, मसनवी शीरी व खुसरू, मसनवी लैला मजनूँ, मसनवी आईनैइस्कंदरी (सिकंदर नामा), मसनवी इश्तबिहिश्त, मसनवी खिजनामा, मसनवी नुह सिपहर, मसनवी तुगलकनामा, तारीखे अलाई, इशाए खुसरू, एजाजे खुसरबी, अफजलुलुफवायद, राहतुलमुर्जी, खलिकबारी, जवाहिरुलुबह, मुकालः किस्सा चहार दरवेश, दीवान तुहुपतुस्सग्र, दीवान वस्तुलहयात, दीवान गर्तुल्लकमाल, दीवान बकीयः नकीयः आदि।²

किशोर अवस्था से खुसरो ने कविता लिखना शुरू किया और बीस वर्ष की आयु में ही वे प्रसिद्ध कवि के रूप में सर्वपरिचित हो गए। खुसरो ने अपनी सम्पूर्ण जिन्दगी राज दरबार में ही व्यतीत की लेकिन राजदरबार में रहकर भी वे कवि, कलाकार, संगीतज्ञ और सैनिक ही रहे। भारतीय संगीत में कव्वाली और सितार उनकी देन माना जाता है। इन्होंने गीत की तर्जपर फारसी में और अरबी गजल के शब्दों को मिलाकर पहेलियाँ और दोहे लिखे।

खुसरों के वक्त सर्वसामान्य काव्य रचना ब्रजी में हुआ करती थी। बोलचाल की भाषा में खड़ी बोली का व्यवहार होता था। इसी बोलचाल की भाषा में उन्होंने अपनी काव्य रचना की। खुसरो के नाम पर जो रचनाएँ मिलती हैं उसका स्वरूप काफी आधुनिक प्रतीत होता है जिसके कारण इनकी भाषा के सन्दर्भ में भ्रांतियाँ पैदा होती हैं। लेकिन इसका समाधान केवल इतना ही दिया जा सकता है कि खुसरो की कविता जनसाधारण की जुबों पर चढ़ी थीं और पीढी-दर-पीढी यहीं हुआ और कुछ सदियों के बाद में इनका संकलन किया होगा लिहाजा इनकी भाषा आधुनिक प्रतीत होती है।

उर्दू वाले उर्दू की प्राचीनता और उद्भव की खोज करते हुए खुसरो तक पहुँचे हैं और गलत अवधारणा को मानते हुए उन्होंने उर्दू का आरम्भ खुसरों पूर्व माना है और खड़ी बोली का आरम्भ ब्रजभाषा से निर्धारित किया है। खुसरों की कई रचनाएँ ऐसी हैं जिसमें हिन्दी और फारसी दोनों भाषाओं का व्यवहार एकही छंद में अलग-अलग एक साथ किया गया है -

"जे हाल मिसकी मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाए बतियाँ,
किताबे हिजाँ न दारम ए जो न लेहु काहे लगाए छतियाँ।
शबान हिजाँ दराज चूँ जुल्फ व रोजे वसलत चूँ उम्र कोताह,
सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काटूँ अंधेरी रतियाँ।

हिन्दी साहित्य को मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान October 2020, Vol. 12, Iss. 7(II) (86)

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology.

Asst. Professor,

Babasaheb Chitamb Mahavidyalaya
Ehildwadi

देवानां भद्रा सुमतिर्वर्जयताम्॥ क्र० १/६६/२



Impact Factor
3.811



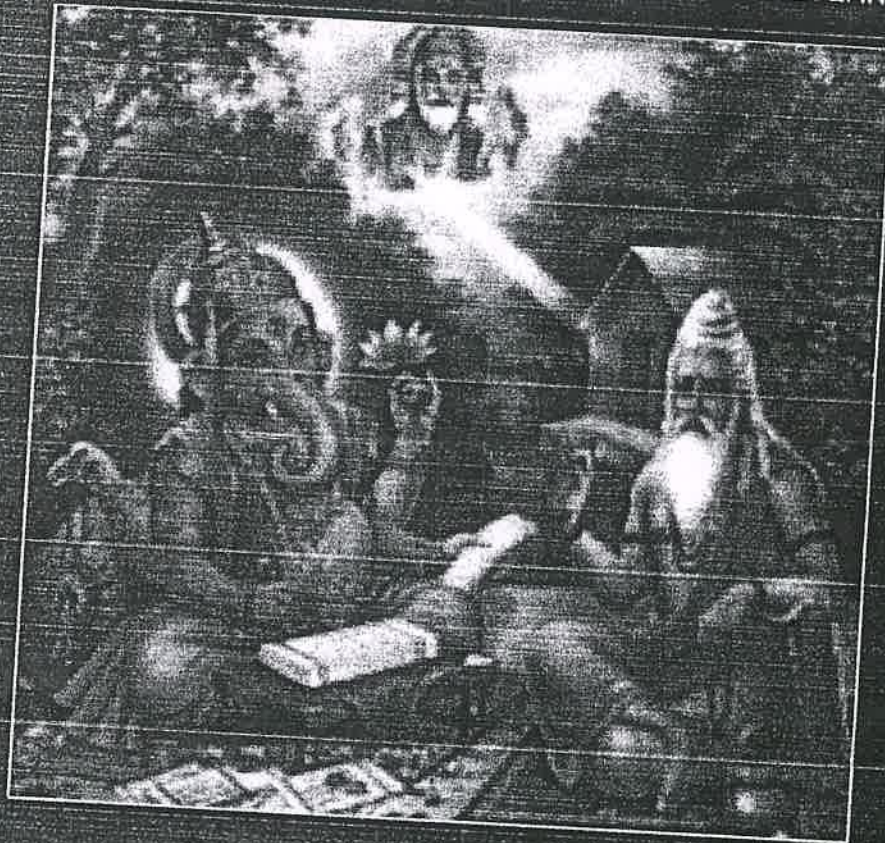
ISSN : 2395-7115

Mahabharat Visheshak

Volume 2021

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL



प्रधान सम्पादक :
डॉ. विजय महादेव गाडे
एडवांकेट

अतिथि सम्पादक :
डॉ. मान सिंह दहिया

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवांकेट

Publisher :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi

स्व. चौ. गुणनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
 JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
 MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 13,

ISSUE-3

(MARCH-2021)

ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :

डॉ. विजय महादेव गाडे

महाराष्ट्र

सम्पादक :

डॉ. नरेन्द्र सिहाग एडवोकेट

सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
 टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

अतिथि सम्पादक :

डॉ. मानसिंह दहिया

भिवानी (हरियाणा)

सह सम्पादिका :

डॉ. रेखा सौनी

उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
 टांटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

सह सम्पादिका :

डॉ. सुशीला आर्या

हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
 विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :

समुद्र सिंह

भिवानी (हरियाणा)

प्रकाशक :

गुणनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)



बोहल शोध मञ्जूषा

Vol. 13, Issue-3

महाभारत विशेषांक 2021 (2)

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|---|-------------------------------|--------------------|
| 1. | सम्पादकीय | डॉ. विजय महादेव गाडे | 7-7 |
| 2. | कौन कहता है कि द्रौपदी के पांच पति थे 200 वर्षों से प्रचारित झूठ का खंडन द्रौपदी का एक ही पति था- युधिष्ठिर | डॉ. विवेक आर्य | 8-10 |
| 3. | महाभारत : नारी उत्पीड़न का धार्मिक के संदर्भ में | बाबुलाल शूरा | 11-13 |
| 4. | महाभारत के लेखक गणपति | डॉ. विजय महादेव गाडे | 14-18 |
| 5. | श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित आत्मतत्त्व का विवेचन | डॉ. कमल बाई | 19-23 |
| 6. | MAHABHARATH KEE PRASANGIKATHA | Dr. K.S.Pranantharathiheran | 24-27 |
| 7. | महाभारत उपक्रमपुरःसरं कर्मचरितोपस्थापनम् | डॉ. रुरुकु मार महापात्रः | 28-30 |
| 8. | महाभारत में मूल्य शिक्षा | संजीता ठकुर | 31-35 |
| 9. | महाभारत कालीन सामाजिक व्यवस्था | रहिम | 36-39 |
| 10. | KARMAYOGAINMAHABHARATA: WITH REFERENCE TO BHAGAVAD GITA | DR. Panchal Chafi Sharma | 40-42 |
| 11. | महाभारत में पुरुषार्थ चतुष्टय | चन्दन कुमार द्विवेदी | 43-46 |
| 12. | महाभारत में राजनीतिक चेतना का स्वरूप : देवव्रत से पितामह तक (भारतीय संस्कृति : समाज राजनीति) | डॉ. रोहताश जमदग्नि | 47-53 |
| 13. | महाभारत में कर्मयोग गीता के संदर्भ में | डॉ. सरोज सिंह | 54-56 |
| 14. | महाभारत में कर्मयोग : गीता के संदर्भ में | प्रतिभा झा | 57-60 |
| 15. | Development of Indian Music in Mahabharata Period | Swarnil Chandrakant Chaphekar | 61-65 |
| 16. | महाभारतकाले युद्धपूर्व मंगलमंगलसूचकोत्पाता | डॉ. गोविन्द कुमार धारीवालः | 66-69 |
| 17. | महाभारत के मिथकाधारित हिंदी नाटक | डॉ. लव कुमार | 70-74 |
| 18. | महाभारत एक विमर्श | डॉ. धीरज वर्मा (सोनी) | 75-79 |
| 19. | महाभारत का कालक्रम एवं ऐतिहासिकता : एक ऐतिहासिक विश्लेषण | डॉ. सुखवीर सिंह | 80-84 |
| 20. | समघाटी सिंह दिनकर के खंडकाव्यों में महाभारत की प्रासंगिकता | डॉ. के.एस. प्रणतार्तिहरन | 85-95 |
| 21. | महाभारत का कालनिरूपण तथा महात्मा विदुर का स्थान | डॉ. नूतन कुमारी | 96-102 |
| 22. | THE ROLE OF INDIAN MYTHOLOGY IN PROPAGATING VALUE BASED EDUCATION | Nisha Yadav | 103-105 |
| 23. | भगवद्गीता और बौद्ध परम्परा में कर्म: एक अध्ययन | सोनल सिंह | 106-112 |
| 24. | श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति की श्रद्धात्रय का स्वरूप | आरती शर्मा, | |
| 25. | 'श्रीमद्भगवद्गीता' में प्रयुक्त विभिन्न 'शंखों' के आध्यात्मिक प्रतीकार्थ | डॉ. एच. आर. रैदासः | 113-118 |
| 26. | महाभारतकालीन सोलह संस्कार : एक अध्ययन | डॉ. मानसिंह दहिया | 119-122 |
| 27. | महाभारत में कर्मयोग : गीता के संदर्भ में | अनिरुद्ध सुजीत कुमार | 123-126 127-130 |



महाभारत के लेखक गणपति

-डॉ. विजय महादेव गाडे

एसोसिएट प्रोफेसर एवं शोध-निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, जि. सांगली (महाराष्ट्र)

संकेत शब्द : गणेश, गणपति, शिव, कुलचिह्न, प्रतीक, गणसमुह, वैदिक साहित्य आदि।

'वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटी समप्रभ,
निर्विघ्न कुरुमें देवं सर्व कार्येषु सर्वदा।'

गणेश वंदना में वर्णित गणपति के इस स्वरूप का रहस्य खोलने का प्रयास इसी आलेख के द्वारा हमने किया है। भगवान गणेश और महाभारत का रिश्ता अटूट है। महाभारत के लेखक के रूप में गणेश का परिचय मिलता है। यह भी कहा जाता है कि जब वेद व्यास के मन में महाभारत लिखने की इच्छा हुई उन्होंने भगवान शिव की आराधना की और महादेव ने उन्हें गणेश की सहायता लेने के लिए कह दिया। बुद्धि के स्वामी, विद्या सुखदाता भगवान गणेश के जीवन का हर पहलू उनके अनुपम रूप की तरह ही अद्भुत है। विद्या तथा लेखनी के अधिपति गणेश को सर्व देवताओं में सबसे अधिक धैर्यवान और स्थिर माना जाता है। उनकी लेखन की शक्ति भी अद्वितीय मानी गई है।


जब महर्षि वेद व्यास महाभारत नाम के महाकाव्य की रचना प्रारंभ करने जा रहे थे, अपने महाकाव्य के लिए वे एक ऐसा लेखक ढूंढ रहे थे जो उनके विचारों की गति को बीच में बाधित न करे। शिव जी की सिफारिश के अनुसार उन्होंने भगवान गणेश को आग्रह किया कि श्री. गणेश उनके महाकाव्य के लेखक बने। गणेश जी ने उनकी बात मान ली किन्तु साथ ही एक शर्त रख दी।

गणेश की शर्त थी कि महर्षि एक क्षण के लिए भी कथावाचन में विश्राम ना लेंगे। यदि वे एक क्षण भी रुके, तो गणेश वहीं लिखना छोड़ देंगे। महर्षि के उनकी बात मान ली लेकिन साथ में अपनी भी एक शर्त रख दी कि गणेश बिना समझे कुछ ना लिखेंगे। हर पंक्ति लिखने से पहले उन्हें उसका अर्थ समझना होगा। गणेश ने उनकी बात को स्वीकार किया।

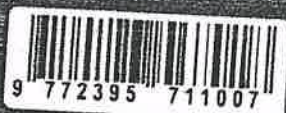
इसी तरह दोनों महानुभाव एक साथ आमने-सामने बैठकर अपनी भूमिका निभाने में लग गए। वेदव्यास ने बहुत अधिक गति से बोलना शुरू किया और उसी गति से गणेश ने महाकाव्य को लिखना जारी रखा। लेखन गति के कारण गणेश की कलम टूट गई, वे व्यास की गति के साथ तालमेल बनाने में चूकने लगे। इस स्थिति में हार ना मानते हुए गणेश ने अपना एक दाँत तोड़ दिया और उसे सियाही में डूबोकर लिखना जारी रखा। इसके साथ गणेश समझ गए कि उन्हें अपनी लेखन की गति पर थोड़ा अभिमान हो गया था और वे ऋषि की क्षमता को कम कर आँक रहे थे। महर्षि ने उनका गर्व हरण करने के लिए ही अत्यंत तीव्र गति से कथा कही थी। लेकिन व्यास को यह बात भी ज्ञात हुई कि गणेश की तीव्र बुद्धि और लगन का कोई मुकाबला नहीं है। इसी के साथ उन्होंने गणेश का नामकरण 'एकदंत' किया।

दोनों के द्वारा एक दूसरे की शक्ति, क्षमता और बुद्धि को स्वीकार किए जाने के बाद समान रूप से महाकाव्य के लेखन का कार्य होने लगा। कहा जाता है कि इस महाकाव्य को लेखन पूर्ण होने के लिए तीन वर्ष का समय व्यतीत हुआ। इन तीन वर्षों में गणेश ने एक बार भी व्यास को एक क्षण के लिए नहीं रोका। वही व्यास ने भी शर्त पूरी की।

ATTESTED


Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Assn. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi

वेदाणां महा सुमतिर्न्यूनतादा। नमो १/२६/२१



Impact Factor
3.811



ISSN : 2395-7115

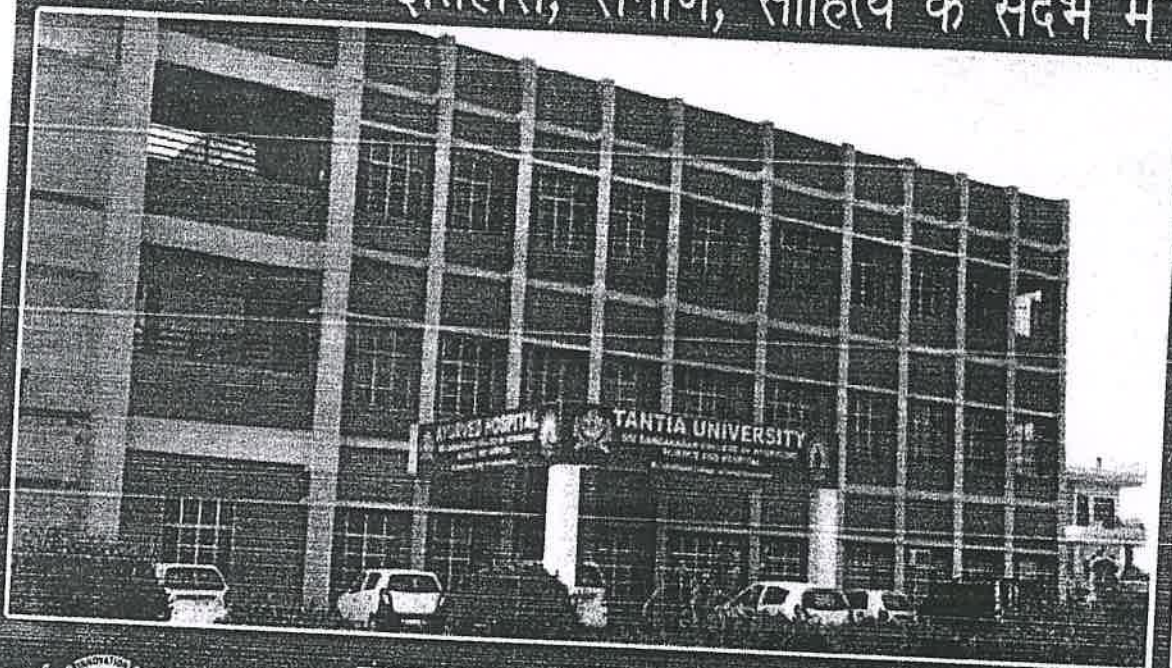
किन्नर महा-विशेषांक

March 2021. Vol. 13, Issue-3

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

किन्नर विमर्श : इतिहास, समाज, साहित्य के संदर्भ में



संरक्षक : प्रो० एम० एम० सक्सेना, कुलपति

प्रधान सम्पादक : डॉ० विनोद कुमार शर्मा, रजिस्ट्रार

सम्पादक : डॉ० नरेश सिहाग, एडवोकेट

सहसम्पादक : डॉ० मोहिनी दहिया, डॉ. पूजा धर्माजा, डॉ० भीमसिंह

हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर, राजस्थान

प्रकाशक : गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
 JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
 MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 13, ISSUE-3 (KINNER MAHA VISHESHANK 2021) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :

डॉ. विनोद कुमार शर्मा

रजिस्ट्रार,

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सह सम्पादिका :

डॉ. पूजा धमीजा

सह सम्पादिका :

डॉ. मोहिनी दहिया

सह सम्पादक :

डॉ. भीमसिंह



प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

क्रम मंजूषा किन्नर महाविशेषांक Vol. 13, Issue-3

| क्र. | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|------|--|------------------------------------|-------|
| 1. | शुभकामना संदेश | | 18-23 |
| 2. | सम्पादकीय | डॉ. मोहिनी दहिया | 24-25 |
| 3. | किन्नर विमर्श : एक चिंतन | डॉ. पूजा घमीजा | 26-26 |
| 4. | 21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श | MILAN BISHNOI | 27-29 |
| 5. | किन्नर ते समाज | कुमाल शर्मा | 30-32 |
| 6. | नालासोपाय में चित्रित पारिवारिक जीवन का अर्न्तद्वन्द्व | डॉ. सीमा चन्द्रन, सीमा दास | 33-35 |
| 7. | LAWS RELATED TO THIRD GENDER OR TRANSGENDERIN INDIA | Dr. Jyoti Boora | 36-41 |
| 8. | भारतीय साहित्य में किन्नर विमर्श | दिप्तीबद्ध एम. प्रजापति | 42-43 |
| 9. | किन्नर : तीसरी दुनिया के लोगों की दशा और दिशा (बस्तर के परिपेक्ष्य में) | विश्वनाथ देवांगन "मुक्तुयता बस्तर" | 44-46 |
| 10. | किन्नर विमर्श | अनिल कुमार साहू | 47-50 |
| 11. | THIRD GENDER UNDER CONSTITUTION OF INDIA-WAY TO GO AHEAD | Dr. Prem Chand | 51-56 |
| 12. | हिंदी सिनेमा और बर्ड जैंडर | प्रो. शिल्पा शर्मा | 57-60 |
| 13. | किन्नर समाज की दर्द भरी हिंदी कहानियां : एक विश्लेषण | सिराज | 61-63 |
| 14. | 'किन्नर कथा' उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन | सुरजीत कौर | 64-66 |
| 15. | किन्नर-विमर्श के विविध आयाम | पूनम पाषा | 67-68 |
| 16. | 'कुदरत ने मिमी केहू बगाया' डोगरी कहानी राहें किन्नर जाति पर विमर्श | सतीश कुमार | 69-71 |
| 17. | हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श | डॉ. नसरीन जान | 72-75 |
| 18. | हिंदी कविताओं में किन्नरों की सामाजिक मनोदशा | डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले | 76-79 |
| 19. | किन्नर - विशेष संदर्भ महाभारत | डॉ. विजय महादेव गाडे | 80-83 |
| 20. | किन्नर सामाजिक सन्दर्भों में | डॉ. मनीषा दुबे | 84-85 |
| 21. | किन्नर आधारित उपन्यास 'मैं पायल' की समाजशास्त्रीय समीक्षा | Milan Bishnoi | 86-89 |



किन्नर - विशेष संदर्भ महाभारत

-डॉ. विजय महोदय गाडे

एसोसिएट प्रोफेसर, शोध-निर्देशक और अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी (सांगली) महाराष्ट्र।

वैसे देखा जाए तो किन्नरों का वजूद चार हजार वर्ष पहले हुआ है इस कथन से कोई भी असहमत नहीं होगा। वर्तमान परिवेश में किन्नर विमर्ष एक बहुचर्चित विमर्ष रहा है। किन्तु इसका आगाज कब हुआ यह देखना अधिक महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में जब से मानव जाति इस धरती पर रहने लगी उसी समय किन्नरों का कहीं न कहीं अस्तित्व जरूर रहा होगा लेकिन इसके सबूत हमें अब तक नहीं मिले लिहाजा हमें पौराणिक साहित्य का आधार लेना जरूरी हो जाता है ऐसा हम मानते हैं।

किन्नर हिमालय के क्षेत्रों में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम है जिसके प्रधान केंद्र हिमवत और हेमकूट थे।¹ पौराणिक साहित्य में विशेषतः पुराण और महाभारत में इनका उल्लेख ही नहीं अपितु इनकी कहानियाँ प्राप्त होती हैं लेकिन वेद तथा उपनिषदों में इनका कहीं भी जिक्र नहीं मिलता यह आश्चर्य की विषयवस्तु है। बाण की 'कादंबरी' में उनके स्वरूप और क्रियाकलापों की जानकारी मिलती है लेकिन यह अस्पष्ट और धूमिल है। कई बार अंतर्साक्ष्य पर निर्भर रहकर इनपर विचार किया जा सकता है।

जैसे उनके नाम किन्नर से स्पष्ट है कि उनकी योनि और आकृति पूर्णतः मनुष्य की नहीं मानी जाती।² उनकी उत्पत्ति के बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। प्रथम यह है कि वे ब्रह्मा की छाया या उनके पैर के अंगूठे से निर्माण हुए और दूसरी यह कि आरिष्टा और कष्यप उनके माता पिता हैं। हिमालय का सबसे पवित्र शिखर कैलास इनका निवास स्थान माना जाता है। जहाँ रहकर वे भगवान शिव की आराधना करते थे। यह जाति संगीत और नृत्य दोनों कलाओं में प्रवीण मानी जाती थी या इन्होंने इन कलाओं में जो महारत हासिल की थी वह मानव जाति के पास नहीं है। केवल यक्ष और गंधर्व ही इन कलाओं में महारत हासिल कर चुके थे। इनके सैकड़ों गण थे और चित्ररथ इनका प्रमुख था।

उपरोक्त कथन हमें सही प्रतीत नहीं होते इसलिए और एक तीसरा तर्क यह भी दिया जाता है जो हमें सार्थक लगता है। सनातन धर्म की सबसे बड़ी देवता भगवान शिव को किन्नरों का जनक माना जाता है। भगवान शिव और पार्वती का संयुक्त रूप अर्धनारीश्वर के रूप में विष्वविख्यात है। भगवान शिव और भगवती पार्वती ने जो रूप धारण किया था ऐसा अन्यत्र दिखाई नहीं देता इसलिए यहाँ से किन्नर जाति का आगाज हुआ यह मत हमें अधिक उचित लगता है।

किन्नर इस शब्द का एक और अर्थ है न नर न मादा। उपरोक्त अर्धनारीश्वर इस संकल्पना में यही बात निहित है ऐसा हम मानते हैं। किन्नरों में पुरुष को किंपुरुष तथा स्त्री को किन्नरी अर्थात् किन्नारी कहा जाता है।

भारतीय साहित्य में अनेक विचित्र व्यक्तित्व नजर आते हैं जिनसे आम तौर पर हम सभी परिचित होने के कारण हमें इसमें कुछ भी विचित्र महसूस नहीं होता। जैसे वानर मुख के हनुमान, अश्व के मुख तुंबरू और हाथीमुख के गणेश आदि। वैसे यह फेहरिस्त और भी आगे बढ़ाई जा सकती है जैसे पंचानन शिव, त्रिमुखी दत्त, नरसिंह सहस्रत्रय नयन के इंद्र आदि। लेकिन यहाँ हमें सिर्फ पशुमुखाकृति वालों के संदर्भ में सोचना आवश्यक है। शतपथ ब्राह्मण में अश्वमुखी मानव

ATTESTED

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. of Psychology.

Asso. Professor,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilsawadi

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित
JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERCE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 13

ISSUE-01

(JANUARY 2021)

ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

अतिथि सम्पादक :

नरेन्द्र सोनी

शोधार्थी, पी-एच.डी. पत्रकारिता,
गुरु जम्भेश्वर वि.वि., हिसार

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)



प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

ATTESTED

Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi

ATTESTED

Shrikant B. Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya,
Bhilawadi

| | | |
|---|-----------------------------|-----------|
| 22. महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज का हिंदी के प्रचार प्रसार में योगदान | पूर्णमा कुमारी | 77 |
| 23. महर्षि दयानंद सरस्वती और हिन्दी | रजनी रजक | 81 |
| 24. नवजागरण काल और स्वामी दयानंद का नारी सुधार में योगदान | रोहिणी तिवारी | 85 |
| 25. महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी का हिन्दी में योगदान | संतोष कुमारी | 90 |
| 26. हिन्दी भाषा के उत्थान में महर्षि दयानंद सरस्वती का योगदान | डॉ. सुबोध कुमार | 93 |
| 27. महर्षि दयानंद सरस्वती और हिन्दी | डॉ. विजय महादेव गाडे | 96 |
| 28. गुरुकुल | अभय प्रताप | 99 |
| 29. वर्तमान में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की मजूता | रवि कुमार | 102 |
| 30. आर्य समाज : स्वदेशीयता का पुनर्जागरण | डॉ. अतुला भास्कर | 104 |
| 31. महर्षि दयानंद और हिन्दी | ज्योति कुमारी | 107 |
| 32. महर्षि दयानंद सरस्वती का हिन्दी साहित्य में योगदान | सुप्रिया कुमारी | 110 |
| 33. हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता पर महर्षि दयानंद सरस्वती का प्रभाव | डॉ. जी. मोहन नाथडू | 112 |
| 34. भारतीय शिक्षा के विकास में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान | डॉ. महक | 116 |
| 35. वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा का स्वरूप | डॉ. मधु बाला सांखला | 118 |
| 36. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास | डॉ. विजिता विजयन | 122 |
| 37. हिन्दी और आर्य समाज | शालिनी लोढी | 126 |
| 38. महर्षि दयानंद सरस्वती का हिन्दी साहित्य में योगदान | नीतू कुमारी | 131 |



महर्षि दयानंद सरस्वती और हिन्दी

डॉ. विजय महादेव गाडे

एसोसिएट प्रोफेसर, शोध-निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी जि. सांगली (महाराष्ट्र)

चलभाष-09860271909

Email : vijaygade2010@gmail-com

“ओ टंकारा की ज्वलित ज्योति। तू कभी नहीं बुझने वाली
तुझसे जगमग यह जगतीतल, तुझसे भारत गौरवशाली
तू दमक रही दुनिया भर में, तू चमक रही रन में, मन में,
अभ्युदय और निःश्रेयस बन, तू रमी हुई जग जीवन में।”

संकेत शब्द—महर्षि दयानंद सरस्वती, आर्य समाज, आर्यभाषा हिन्दी, वर्तमान परिप्रेक्ष्य।

उपर्युक्त पंक्तियाँ दयानंद सरस्वती के संदर्भ में लिखी गई हैं। इन पंक्तियों से दयानंद जी का व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाता है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म गुजरात के जीवापुर में सन 1824 में हुआ था। दयानंद के बचपन के संदर्भ में आर्य समाज के इतिहास लेखक पं. इंद्र विद्यावाचस्पती लिखते हैं—“दयानंद के चित्त में जो-जो विचार तरंगे उत्पन्न हुई, जो-जो क्रांतियाँ खड़ी हुई, वे आकस्मिक नहीं थीं, परन्तु हमें यह मान लेना चाहिए कि उनके कारणों पर पूरा प्रकाश डालने के साधनों का अभाव है। हम नहीं जानते कि मूलशंकर के प्रारंभिक गुरु कौन थे? और न हमें निश्चय पूर्वक यही ज्ञात है कि उनके खेल के कौन साथी किस श्रेणी के थे? यह जानने का कोई उपाय नहीं है कि दयानंद के अंदर जो दृढता और निर्भयता थी, वह माता की ओर से प्राप्त हुई थी या पिता की ओर से।”¹² महाशिवरात्रि के दिन जब उन्होंने एक चूहे को शिवलिंग पर चढ़े हुए नैवेद्य का भक्षण करते हुए देखा। इस घटना के कारण उनका मूर्तिपूजा से विश्वास उठ गया। यही कारण था जिससे उन्हें विचार करने की प्रेरणा मिली। 10 अप्रैल 1875 के दिन मुंबई में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और इसके माध्यम से अपने विचारों का प्रचार किया। आर्य समाज के द्वारा उन्होंने समाज में एक नई चेतना जगाने का प्रयास किया जो भविष्य में बहुत ही सफल हुआ।

किसी भी राष्ट्र की बुनियाद में स्वभाषा, ध्वज, स्वधर्म की अहमियत निहित होती है। एक भाषा का होना राष्ट्रीयता का एक बड़ा प्रबल अंग है। देश के मंगल और कल्याण के लिए, उसे सचेतन करने के लिए एक भाषा का होना परमावश्यक है। देश और भाषा की उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति है। भारत जैसे महान राष्ट्र की राष्ट्रभाषा में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक माना गया है—

- क. वह सरल, सुलभ, सुबोध और सुवाच्य हो।
- ख. उसका देश में सर्वाधिक प्रचार और प्रसार हो।
- ग. वह किसी प्रान्त विशेष से सम्बद्ध न हो।

इस सम्पूर्ण प्राक्कल्पना में अकेली हिन्दी भाषा में यह सारे गुण पाए जाते हैं। वैसे भी हिन्दी हमारी स्वाभाविक भाषा है और समुचे हिन्दुस्तान के साथ इसका सम्बन्ध है। इसलिए वहीं राष्ट्रभाषा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। लेकिन हमारे संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। संविधान का 343(1) अनुच्छेद कहता है—“संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होनेवाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।” हिन्दी की प्रगति एवं उन्नति में तथा उसे राष्ट्रभाषा बनाने में आर्य समाज का महान

पंजीयन संख्या / RNI No : GUJHIN / 2017 / 70792

UGC-CARE Listed

ISSN : 2582-0907

खंड - 4, अंक - 3, आषाढ - भाद्रपद 2077 / जुलाई - सितंबर 2020

समन्वय पश्चिम

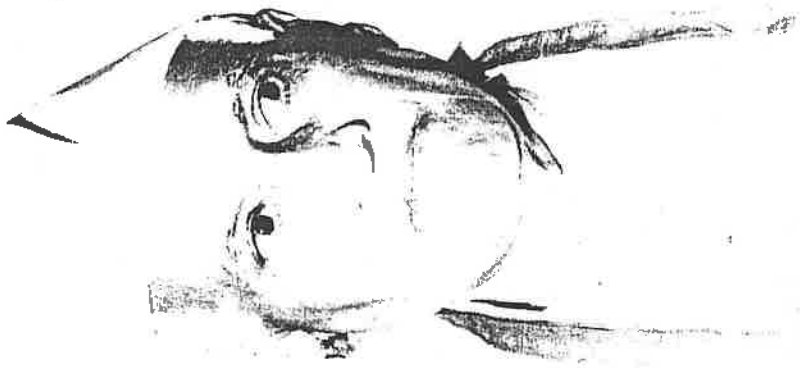
पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका



Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण



(2 फरवरी, 1902 - 6 मार्च, 1995)

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडु ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष भारतीय मूल के दो विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

RNL No.: GUJHIN/2017/70792

UGC - CARE Listed

ISSN : 2582-0907

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रीत पत्रिका
खंड-4, अंक-3, आषाढ-भाद्रपद, 2017/जुलाई-सितंबर, 2020

संरक्षक
श्री अनिल कुमार शर्मा
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल : vicechairmankhs@gmail.com

परामर्श मंडल
डॉ. रजना अराडे
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कला संकाय गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)
ई-मेल : argada_51@yahoo.co.in

डॉ. दयाशंकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर,
आणंद-388 120 (गुजरात)
ई-मेल : tripathidayashankar1@yahoo.com

डॉ. आलोक गुप्त
कुलसचिव, प्रोफेसर एवं डीन, धर्म्य-साहित्य एवं
संस्कृति संस्थान तथा छात्र कल्याण
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,
गोधीनगर-382 030 (गुजरात)
ई-मेल : dralokgupta@gmail.com

डॉ. प्रमोद शर्मा
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राष्ट्रीय संत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय,
नागपुर-440 033 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : prof.pramods@gmail.com
डॉ. जसवंतभाई डी. पंड्या
प्रोफेसर एवं डीन, कला संकाय
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : jlpandya1958@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
डॉ. स्वर्ण अनिल
एम.ए., पी-एच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई-मेल : swarnanilkh16@gmail.com
कला एवं परिकल्पना
डॉ. विजय एम. ढोरे

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
एम.ए., पी-एच.डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई-मेल : nkpandey65@gmail.com

संपादक
डॉ. सुनील कुमार
एम.ए., पी-एच.डी.
क्षेत्रीय निदेशक, के.हि.मं. अहमदाबाद केंद्र
ई-मेल : dskmeerul@gmail.com

उप-संपादक
डॉ. मनोज पांडेय
एम.ए., पी-एच.डी.
सहायक प्रोफेसर, रा.सं.तु.म.वि.वि., नागपुर
ई-मेल : mkpratinul@gmail.com

संपादक मंडल
डॉ. उषा उपाध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गुजराती विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14 (गुजरात)
ई-मेल : ushahupadhyay2009@yahoo.co.in

डॉ. करुणार्शंकर उपाध्याय
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई-98 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : drkarunpadhyay@gmail.com

डॉ. सदानंद काशीनाथ भोसले
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे-411 007 (महाराष्ट्र)
ई-मेल : skbhosal313@gmail.com

डॉ. राम गोपाल सिंह
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-380 014 (गुजरात)
ई-मेल : namgopalisingh1913@gmail.com

डॉ. ध्रुपण भावे
एक्सिसिट प्रोफेसर, कोकणी विभाग
पी.ई.एल.आर.एस.एन. आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज,
फर्मागुडी पोडा, गोवा-403 401
ई-मेल : bhushanbhavagoa@gmail.com



केंद्रीय हिंदी संस्थान

अहमदाबाद केंद्र
(पानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

383

पश्चिम भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-समन्वय परिचय

खंड-4, अंक-3, आषाढ-भाद्रपद, 2077/जुलाई-सितंबर, 2020

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शास्त्री स्टैडियम, बाल भवन, बापूनगर,
अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल : 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत : प्रति अंक रु. 40.00 वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250.00
(डॉक व्यय प्रति अंक रु. 35.00 तथा
वार्षिक रु. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10.00 वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक : पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कंपोजिंग : भानु ग्राफिक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

अनुक्रम

भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज

| | | |
|---|--------------------------|-----|
| संपादकीय आलेख | डॉ. सुनील कुमार | 04 |
| ✓ 1. कहे तु ना! | डॉ. विजय महादेव गाडे | 06 |
| 2. गुजराती दलित कहानी | डॉ. धनंजय चौहान | 11 |
| 3. हिंदी की गांधीवादी कव्यधारा | डॉ. प्रियंका कुमारी | 19 |
| 4. लोकधर्मी साहित्यकार झवेरचंद पेशाणी | डॉ. अनु मेहता | 27 |
| 5. विंदा कर्दीकर का बहुआयामी काव्य-संसार | ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह | 32 |
| 6. मालती जोशी की कहानियों में जीवन-यथार्थ : एक अनुरशीलन | डॉ. चित्रा वि. एस. | 39 |
| 7. हिंदी साहित्य और युगपुरस्च गांधी | डॉ. शृंखला | 46 |
| 8. मीरा के हिंदी-गुजराती पदों का तुलनात्मक अध्ययन | डॉ. जशवंत पंड्या | 53 |
| 9. राष्ट्रभाषा तथा लिपि का सवाल और महात्मा गांधी | डॉ. सत्यवीर सिंह | 63 |
| 10. महात्मा गांधी का भाषा-चिंतन | प्रा. दशरथ काशीनाथ खेमनर | 71 |
| 11. भूकंप का प्रत्यक्षीकरण : 'छावनी' | डॉ. भानुबहन वसावा | 77 |
| 12. महात्मा गांधी और हिंदी साहित्य | डॉ. सुनील कुमार | 84 |
| 13. नामदेव ढसाळ का काव्य : विद्रोह एवं आशावाद | डॉ. सदानंद भोसले | 92 |
| 14. प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में गांधी-दर्शन रंगभूमि | सुविद्य कुमार | 100 |
| 15. उपन्यास का अध्ययन | धारवाडकर | 108 |
| 16. फसकड़ फुत्तोर गांधी | डॉ. पार्वती जे. गोसाई | 113 |
| 17. अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी : महात्मा गांधी जी | डॉ. संगीता चौहान | 117 |
| 18. सत्य और अहिंसा की प्रतिमूर्ति : महात्मा गांधी जी | डॉ. देव्यानी महिडा | 121 |
| 19. महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा का प्रश्न | डॉ. वंदना श्रीवास्तव | 126 |
| 20. भारतीय नाटकों में मील का पत्थर 'नटसप्राट' | डॉ. लक्ष्मण माधवराव कदम | 133 |
| 21. सहजता और समानता के कवि : संत तुकाराम | डॉ. बिमलेन्दु तीर्थकर | 140 |
| 22. समरसता और समन्वय के सार्थक गुजराती साहित्यकार 'धूमकेतु' | प्रा. शारदादेवी राजपूत | 146 |
| 23. गुजराती वेदांती कवि अखो भगत और उनकी जीवन दृष्टि | डॉ. कल्पना गवली | 150 |
| लेखक सूची | | |

कहे तुका !

डॉ. विजय महारदेव गाड़े

भागवत में कहा गया है -

"न पापेभ्यं न महद्भिष्यं । न सार्वभौमं न रसाधिपत्यं ॥
न योगसिद्धिं पुनर्भवंवा । मर्यादात्सेच्छति मदवियन्तात् ॥"

अर्थात् जो मनुष्य स्वयं को मुझे समर्पित करता है, भरे सिवा किसी और वस्तु की कल्पना नहीं करता, वही भैया सच्चा भक्त है। हमें लगता है यह कथन संत तुकाराम के व्यक्तित्व पर पूर्णरूपेण सार्थक होता है।

महाराष्ट्र में जो भागवत वारकरी संप्रदाय आज भी लोकप्रिय है, उसी के बारे में तुकाराम की समकालीन बहिर्गाई ने कहा है - "इस भागवत मंदिर की नींव ज्ञानेश्वर ने डाली, नागदेव ने उसकी सफाई की, एकनाथ ने आधार स्तंभ का कार्य किया और तुकाराम उसके कलश हुए।" महाराष्ट्र में संत तुकाराम के अभंग गाना के गले में निवास करते हैं। तुकाराम स्वयं कुनबी जाति के थे इसीलिए उनके काव्य में स्वानुभूत तीव्र वेदनाओं का सहज प्रतिबिंब है। इस कारण उनका काव्य आज भी प्रासंगिक एवं लोकप्रिय है।

तुकाराम के अध्ययन के बारे में कुछ विशेष उल्लेखनीय सबूत नहीं मिलते। लेकिन फिर भी तुकाराम की काव्य रचना पढ़ने के बाद अनयास यह निष्कर्ष निकलता है कि तुकाराम ने निश्चित ही संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया था। ब्रह्मसिद्धि उपनिषद् में कहा गया है -

"ग्रंथमध्यस्य मेधावी ज्ञानिज्ञानतत्त्वतः
परालामिव ध्यानार्थी त्यजेद् ग्रंथ अशेषतः"

अर्थात् मेधावी मनुष्य ज्ञानिज्ञान की मदद लेकर ग्रंथों का अनुशीलन करता है और अज्ञान से जिस प्रकार से कूड़ा-थोथा निकला जाता है उसी प्रकार से ग्रंथ से सार ग्रहण करते हुए ग्रंथ को छोड़ देता है। हमारे मत से संत तुकाराम ऐसे ही मेधावी मानव थे।

मराठी संतों की बहुतांश रचनाएँ मराठी में ही हैं किन्तु भगवान भजन करने के लिए और भक्ति के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी का प्रयोग लाभान्वित हर एक मराठी संत ने किया है, जिसमें संत नामदेव, ज्ञानेश्वर, सेना, एकनाथ, रामदास के साथ-साथ तुकाराम भी आते हैं।

उन्होंने अपने पदों में हिंदी भक्त कवियों के प्रति सद्भाव व्यक्त किया है जिसमें विशेष कर सूरदास का नाम आता है। उनके द्वारा लिखित लगभग 100 हिंदी पद उपलब्ध होते हैं। उनकी हिंदी रचना पर मराठी का प्रभाव स्पष्ट है - अर्थात् व्यास का सुर उदाहरण-

"चित मिले तो सब मिले नहीं तो फेकट संग
पणी पथर एक हीटोर कोरन भीगे अंग !
तुका संग तीन्हसु करीए जीनर्थे सुखळ दुनय
दूर्जन तेरा मुष काला धईता प्रेम घटाय !"

ATTESTED



Dr. Shrikant S. Chavan

Head of the Department of Sanskrit

Association of Sanskrit Scholars

Sabhasahel Chitale Maharashtra Sahitya Akademi
Rajawadi

महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रकाशित उनके हिंदी पदों का विवरण निम्न प्रकार किया जा सकता है- मुद्रा 3 पद, डोईफेडा 1 पद, मलंग 1 पद, दरवेस 1 पद, उत्तराधिपद 22 पद, साखी 30 और 18 हिंदी पद हैं।

तुकाराम के अभंग संकलन को 'गाथा' कहते हैं। हजारी प्रसाद जी-की 'गाथा' शब्द की परिभाषा देखिए - "जिन दिनों यह जटिल खंडोबद्ध लौकिक संस्कृत में बहुत सफलता पूर्वक लिखा जाने लगा था उन्हीं दिनों लोकभाषा एक नए छंद से छंद को अं (मुद्रा गई। जिस प्रकार 'श्लोक' संस्कृत की मोड़ का सूचक है उसी प्रकार 'गाथा' प्राकृत की और शुकव का व्यंजक है। आगे चलकर श्लोक संस्कृत का और गाथा प्राकृत का प्रतीक हो गया। सन ईसवी के आरंभिक दिनों में गाथा का साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश हो चुका था।"

ऊपरी विवेचन से स्पष्ट होता है कि गाथा छंद बहुत प्राचीन है और इसी छंद को तुकाराम ने अपनाया था। तुकाराम की पदरचना पर मराठी का प्रभाव तो परिलक्षित होता ही है किन्तु इन पदों की भाषा फारसी उर्दू मिश्रित हिंदुस्तानी भाषा है। वह समय सुलतानों का रहा था इसीलिए इस्लाम राजधर्म था और फकीरों एवं दरवेशों को राजाश्रय मिलता था। ये सारे फकीर सर्वसाधारण हिंदुओं के संपर्क में आते थे और इस्लाम का प्रचार और प्रसार करने का प्रयास करते थे। उन्हीं की जुबान पर जो भाषा रहती थी ऐसी ही भाषा का तुकाराम ने प्रयोग किया है। तुकाराम की एक दरवेश रचना देखिए, दरवेश कह है जो अपने साथ भालू लेकर घूमता था। तुकाराम कहते हैं- सभी चेतन वस्तुओं की अंतराल्या अल्लाह है उसे याद करो। यह राज जिसे समझ आ गया वही सच्चा दरवेश है। तुकाराम लिखते हैं -

"जिकिर करो अल्ला की बाबा सबल्या अंदर भेस,
कहे तुका जो नर बुझे सोहि भया दरवेस ॥"

आश्चर्य की सबसे बड़ी बात यही है कि तुकाराम की हिंदी रचनाओं में उनके आराध्य श्री विदुल का कहीं भी जिक्र अथवा उल्लेख नहीं मिलता अपितु हर जगह पर 'राम और केवल 'राम' ही है। कुछ स्थानों पर तुकाराम ने 'गोपाल', 'सुगुज', 'गोविंद', 'हरि' ये शब्द प्रयुक्त किए हैं।


तुकाराम अपने समय के कठोर समाज सुधारक के रूप में भी प्रसिद्ध थे। क्योंकि सही अर्थ में 17वीं शती में विद्रोह की ज्वाला तुकाराम के काव्य में प्रकट हुई। जैसे पूरा संत साहित्य हमारी मान्यता के अनुसार विद्रोह साहित्य ही है किन्तु इसकी अंतिम परिणति 'प्रेम' में होती है और यही संत-साहित्य की विशेषता है। समाज सुधार, पाखंड का विरोध, बाबाइंबर की आलोचना आदि सारी बातें संत साहित्य में मिलती हैं, जिसमें तुकाराम भी अपवाद नहीं है-

"भरे राम को नाम जो लेवे दरबार । त्याके पाऊं भरे तन की पैवार ॥
हंसत खेलत चालत वाट । खना खाते सोते खाट ॥

जातनसू मुजे कछु नहीं प्यार । असतेके नहीं हेंदू देड चंभार ॥
जाक चित लगा भरे राम को नाम । कहे तुका भेर चित लगा त्याके पाव ॥"

गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी (हरियाणा) इण्डो - यूरोपियन लिटरेरी डिस्कोर्स, यूक्रेन विषय- रूप जीवा : जीवन विमर्श अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

29 जुलाई 2020 को 11:00am to 01:30 pm

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
|  |  |  |  |  |
| अवकाश : डॉ. विनोद शर्मा राष्ट्रीय विदेशीकरण संस्थान | वीज वल्लभ : डॉ. विनोद शर्मा एवं डॉ. विनोद शर्मा एवं डॉ. विनोद शर्मा | युवा अधीन : माई मनीषा महंत अमरा, सिन्धु अभिनेता ट्रेड (पब्लि.) | डॉ. अतुला शर्कर एवं डॉ. अतुला शर्कर | डॉ. शिवकाज निमल एवं डॉ. शिवकाज निमल |
| मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक मंगेशकर अमरा, सिन्धु एवं पंजाब (हरियाणा) | मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक मंगेशकर अमरा, सिन्धु एवं पंजाब (हरियाणा) | मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक मंगेशकर अमरा, सिन्धु एवं पंजाब (हरियाणा) | मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक मंगेशकर अमरा, सिन्धु एवं पंजाब (हरियाणा) | मुख्य वक्ता : डॉ. अशोक मंगेशकर अमरा, सिन्धु एवं पंजाब (हरियाणा) |

समय सारणी निम्न प्रकार से है

| | | | |
|----------------|--------------------------|------------------------|------------------------|
| 11:00 से 11:10 | स्वागत एवं वेबिनार परिचय | नरेश सोनी | हिसार (हरियाणा) |
| 11:10 से 11:30 | आशीर्वादन/वीज वल्लभ | डॉ. विनोद शर्मा | अमृतसर (पंजाब) |
| 11:30 से 11:50 | विश्लेषण वक्ता | राजेश शर्कर भारतीय | यूटैन |
| 11:50 से 12:08 | विश्लेषण वक्ता | प्रो. संजय एल. साहू | धारवाड़ (कर्नाटक) |
| 12:08 से 12:10 | मुख्य वक्ता | डॉ. अशोक कुमार मंगेशकर | दादरी (हरियाणा) |
| 12:10 से 12:20 | संवाद | प्रो. शकुंतला | पानीपत (हरियाणा) |
| 12:20 से 12:30 | वक्ता | डॉ. अतुला शर्कर | अमृतसर (पंजाब) |
| 12:30 से 12:48 | वक्ता | डॉ. शिवकाज निमल | राजस्थान |
| 12:48 से 12:50 | वक्ता | अनुपमा शीवास्तव | दिल्ली |
| 12:50 से 01:10 | मुख्य अतिथि सम्बोधन | माई मनीषा महंत | मुना (हरियाणा) |
| 01:10 से 01:30 | अध्यक्षीय भाषण | डॉ. विनोद शर्मा | श्रीगंगानगर (राजस्थान) |
| 01:30 से 01:30 | धन्यवाद आभार | डॉ. नरेश सोनी | भिवानी (हरियाणा) |

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुणदास सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सोनी एडवोकेट ने मनाभावन प्रिन्टर्स, भिवानी से संपादक जीना प्रकाशन, 202, पुराना हाउसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।



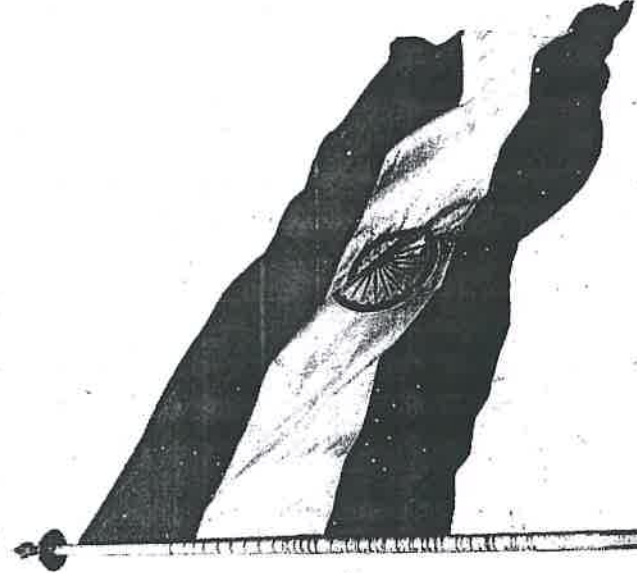
ISSN 2395-7115
Saurashtra, Ch...



ISSN : 2395-7115
August 2020
Vol. 12, Issue 4

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFERRED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL



प्रधान सम्पादक : डॉ. विजय महादेव गाडे, एडवोकेट
सम्पादक : डॉ. नरेश कुमार सिहाग, एडवोकेट

Impact Factor
3.811

Dr. Shri... Head of...
Dr. Chavan... Professor,
Mahavidyalaya
Publisher:
Dr. Chavan... Professor,
Mahavidyalaya

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्यापकों के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतु बोहल शोध मंजूषा (ISSN 2395-7115) नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, औद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केंद्रित इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फॉन्ट साईज 14, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसॉफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID: gsbobhal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट : उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र: टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान सक्षिप्तिकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जाएगा।

शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विचार का व्याख्यान भिवानी (हरियाणा) होगा।

सम्पादकीय पद अत्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि के ड्राफ्ट/बैंक/आई.पी.ओ. गुणराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी के नाम भेजें तथा ऑनलाइन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोकॉपी अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाइन सहयोग राशि के साथ \$0/- रु. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम : गुणराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या : 1182000109078119
IFSC Code : PUNB0118200
MICR CODE : 127024003

बोहल शोध मंजूषा

Vol. 12, Issue-4 (1)

अगस्त 2020 (4)

| क्र. क्र. विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---------------------------|-------|
| 1. सम्पादकीय | | |
| 2. दलित जीवन का आईना- ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहलियाँ | डॉ. नरेश सिहाग | 7-7 |
| 3. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन | डॉ. पूजा खोरवाल | 8-10 |
| 4. जम्शेदपुर में निहित मूल्यों की प्रासांगिकता | डॉ. श्रीमती भमता बाकलीवाल | 11-15 |
| 5. Role of Agricultural Produce Market Committee In Manufacturing Development of Bihar | डॉ. पूजा खोरवाल | 16-22 |
| 6. अंतिम रसाक की कहलियों में स्त्री संवेदना | Dr. Santosh Kumar | 23-29 |
| 7. उषा प्रियवदा के उपन्यासों में नारी विमर्श एवं सामाजिक क्रेता | मधु गुप्ता | 30-32 |
| 8. जंगल जहाँ शुरू होता है- नई आदिवासी जीवन | सुरीता साह | 33-37 |
| 9. राजभाषा कार्यन्वयन में नगर राजभाषा कार्यन्वयन समितियों का योगदान | डॉ. जयश्री एस टी | 38-40 |
| 10. संकट की आहट और पर्यावरण विज्ञान | डॉ. रम्या जी. एस. नायर | 41-43 |
| 11. हिमाचली महिला रचनाकारों की कविताओं में लोकधर्मिता | रंजिता लता | 44-46 |
| 12. हरीश नवल जी की रचनाओं में राजनीतिक व्यंग्य | डॉ. चरलेन लता | 47-51 |
| 13. माता प्रसाद के काव्यों में दलित संघर्ष | कुसुम यादव | 52-55 |
| 14. कृष्णा सेवती के उपन्यासों की भाषा में पूर्वप्रत्यय प्रयोग | भौसनी दास | 56-58 |
| | देवानन्द सिंह | |
| 15. उदय प्रकाश की कहलियों में परिवारिक जीवन | डॉ. जीत सिंह | 59-65 |
| 16. लहरों के राजहंस में प्रयोगधर्मिता | सीमा रानी | 66-68 |
| 17. उदय प्रकाश की कहलियों में आस्था का अनुग्रहण | Poet. Prof. Dr. Manu | 69-72 |
| 18. Prominence of Women Characters in the Swapnaveśavānātha of Bhamu - A Study | सीमा रानी | 73-76 |
| 19. कर्तुषिखः प्रेम विमर्श की अनोखी पहल | Jyothi Lekshmi TM | 77-80 |
| | डॉ. विजय महादेव गाडे | 81-84 |

बोहल शोध मंजूषा

Vol. 12, Issue-4(1)

अगस्त 2020 (6)



कनुप्रिया : प्रेम विमर्श की अनाखी पहल

एसीएफ्टि प्रोफेसर, शोध-निर्देशक एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
बाबासाहेब विश्वके महाविद्यालय, पिलखकी, चि. सागली (महाराष्ट्र)

-डॉ. विजय महर्देव गाडे

संकेत शब्द - कनुप्रिया, कृष्ण, सौंदर्य चेतना, प्रकृति, प्रेम, सृजन
'कनुप्रिया' एक प्रबन्धात्मक काव्य कृति है। यह श्रृंगार-दर्शन की कृति है। इसकी शैली गीतात्मक है। महात्मा
महात्मास्तोत्र के पूर्व और उसके पश्चात की पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह काव्य है। जिसके पाँच प्रमुख हिस्से हैं जिसमें
इसकी शीर्ष कथावस्तु है। युद्धोपनिषद् की परिस्थिति तथा समाजिक एवं मानवीय अंतःसंबंधों की वेदना इसमें वर्णित है।
यहाँ कवि ने राधा तथा कृष्ण को लेकर मानवीय समाजिक संवेदनाओं को अंकित किया है।

डॉ. भारती के साहित्य में समाज की पौराणिक कथाओं और विचारों के प्रति एक सतत चिंतन प्रवाह बहता है।
'अंधाधुन', 'कनुप्रिया' के पौराणिक प्रतीक इसका प्रमाण है। 'कनुप्रिया' काव्य-कृति पूर्ण रूप से के बाद यही प्रतीत होता
है कि कवि का उद्देश्य कथात्मक प्रबंध काव्य की रचना करना नहीं है बल्कि राधा की मानस-छावियों एवं उसके प्रेम-पत्रों
सौंदर्य दर्शन और उसकी समाजिक भूमि के स्वरूपक बोध का निर्देशक अंकित रहा है।

कवि स्वयं कहता है - "जिसने (राधा को) अपने सहज मन से जीवन जीया है तनयता के क्षणों में बुरकर
सार्थकता पाई है और जो अब उद्घोषित महानाओं से अभिभूत और आतंकित नहीं होता बल्कि आग्रह करता है कि यह
उसी सहज की कसौटी पर समस्त को कसेगा।"

कनुप्रिया में हमको दो केंद्रबिंदु मिलते हैं - 'क्षण' और 'सहज'। कनुप्रिया कृष्ण की प्रिया है जिसमें
केंद्रबिंदु-सुलभ मनस्थितियों विद्यमान हैं। जो विवेक से अधिक तन्मयता इतिहास की उपलब्धियों से अधिक सहज जीवन
में सार्थकता पाती है। राधा-कृष्ण की प्रेमगाथा के मध्यम से भारती ने सौंदर्याभिव्यक्ति दी है। सौंदर्य स्वच्छंदतावादी
काव्य की एक पहचान रही है, चाहे नारी सौंदर्य हो या प्रकृति सौंदर्य। भारतीय स्वच्छंदतावादी रचना शिल्पी हैं। यहाँ भारती
ने राधा और कृष्ण के सौंदर्य रूप को मानवीय अन्तःकरण पर अभिव्यक्त किया है। प्रथम गीत के मध्यम से कवि अपनी सौंदर्य
दृष्टि का परिचय देता है -

'और अब समय आ गया की
में तुम्हारी नस-नस में पल पसार कर लड़ूंगी
और तुम्हारी खाल-खाल में

तुम्हें-तुम्हें-नाल कलियों का लिखूंगी।"

यहाँ यह 'अशोक वृक्ष' कृष्ण का ही प्रतीक है जो 'संख्य' के 'पुरुष' की सृष्टियों को उजागर करता है।
'आम-नैर' का अर्थ कृष्ण समझ नहीं पाए हैं। इस गीत में कवि ने एकदम नई उपमान-योजना को अपनाते हुए
राधा के अंग-प्रत्यंग का नमोवाचन सौंदर्य कथन किया है। यहाँ 'मंजरी' राधा का प्रतीक है। राधा अपने आप को मंजरी
समझ लेती है। यह मंजरी, जिसमें कृष्ण ने अपने प्रेम की मीन कर दी थी। यह करती भी है -
'दर्द उस लिपि के अर्थ खोल रहा है

बोहल शोध मंजूषा

Vol. 12, Issue-4 (1)

अगस्त 2020 (61)

the distinction of being a drama with a positive ending among the works of Bhasa, it still cannot be said that it is a
female orientated work as a lion's share of action and plot is revealed through the direct or indirect involvement of the
male character of Young Adharjyana.

Bhasa draws the drama to a conclusion in a rather melodramatic manner. The presentation is not only
entertaining but thought-provoking also. The drama distinguishes itself with uniformity and directness of narration.
The plot goes through the doldrums of complex emotions yet the dialogues between characters are simple and
genuine. It is notable that neither time nor the changes in the approaches towards Sanskrit play, this drama by
Bhasa still holds its own place.

End Notes :

1. अहो अकरुणा: श्लोकीश्वराः, रघुनयासवदत्तम्, Chapter 3
2. का भवत प्रिया, तदानीं तत्र भवतीं दम्भसेना इदानीं पद्मावती ok, Ibid, Chapter 4
3. दत्त वेदनामस्य फरिखेदस्य, Ibid, Chapter 4
4. भदनामिन्द्रो अधिकतरं वधते, Ibid, Chapter 5
5. अतिसदृशी खलियमार्याया अन्तिकयाः, Ibid, Chapter 6
6. कथं महासेनपुत्रे, देवी प्रविश्य स्वभाष्यत्तरं पद्मावत्या सह, Ibid, Chapter 6

Bibliography:

1. Bhasanatakachakram, Edited by Sudhakar Malaviya, Chawakamba Krishnadas academy, Varanasi.
2. Swapnavasavadatta of Bhasa by T. Ganapati Sastri, Published at the Government Press, Travancore, 1912
3. Swapnavasavadattam, edited by Acharya Sree Shesharajasarma, Chawakamba Surbharati Prakashan,
Edition 2013.
4. Bhasapraneeham Swapna Vasavadattam, edited by Jaypat Vidyalkar, Motilal Banarsidass, Delhi,
Varanasi, Patna.

ATTESTED

Dr. Shikha B. Chavan

Dr. Shikha B. Chavan
Head of the Department,
Assistant Professor,

बोहल शोध मंजूषा
Vol. 12, Issue-4 (1)

Bhilarwadkar

अगस्त 2020 (60)

पंजीयन संख्या / RNI No : GUJHIN / 2017 / 70792

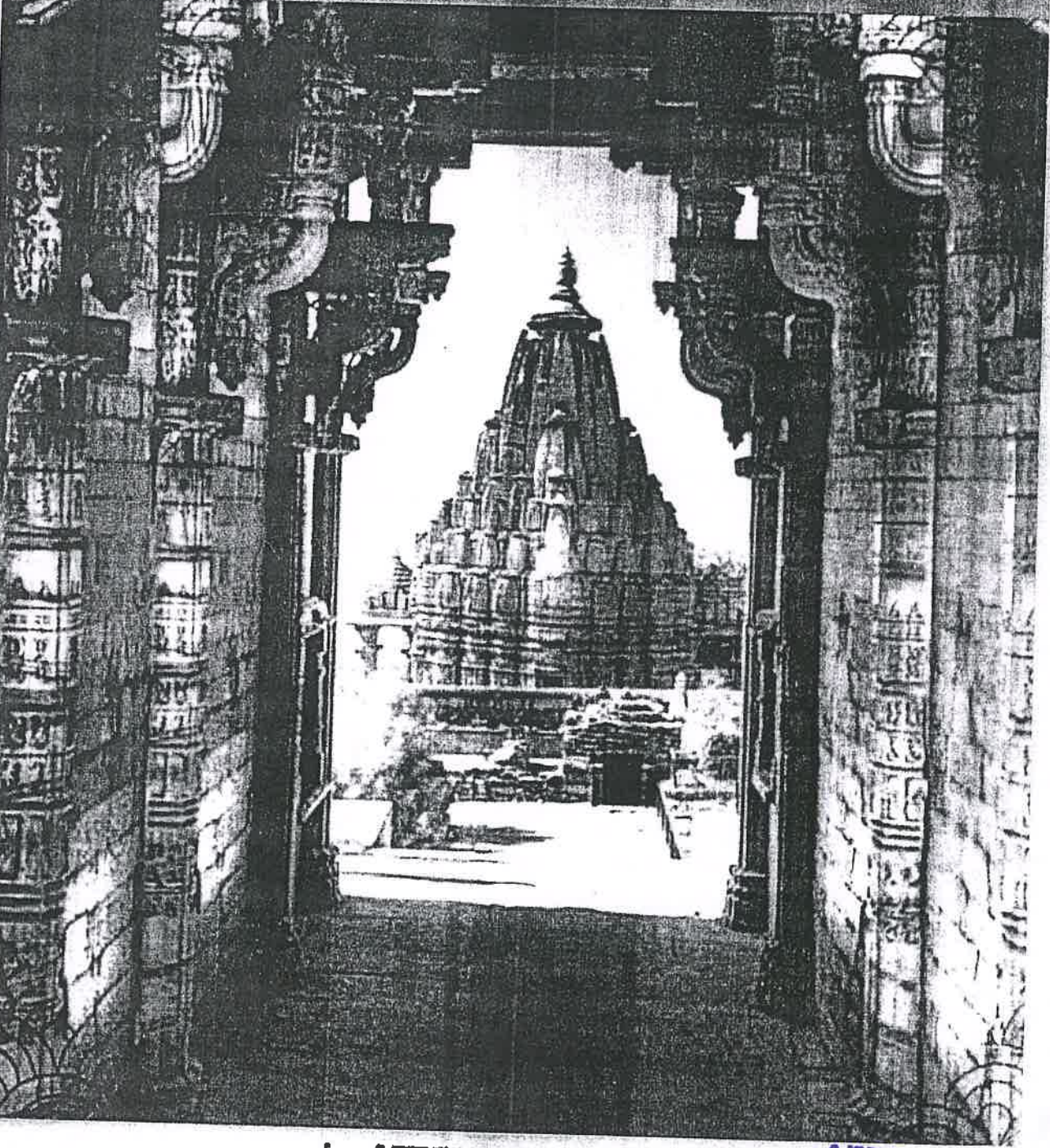
UGC - CARE Listed

ISSN : 2582-0907

खंड - 4, अंक - 2, चैत्र-ज्येष्ठ 2077 / अप्रैल-जून 2020

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका



ATTESTED

Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Saraswati Chitra Mahavidyalaya

ATTESTED

Chavan

Dr. Shrikant B. Chavan
Head Dept. of Psychology,
Asso. Professor,
Saraswati Chitra Mahavidyalaya
Bhilwadi

पश्चिम भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका-समन्वय पश्चिम

खंड-4, अंक-2, चैत्र-ज्येष्ठ, 2077/अप्रैल-जून, 2020

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, अहमदाबाद केंद्र
शाल्मी स्टेडियम, बाल भवन, बापूसागर,
अहमदाबाद-380 024 (गुजरात)
मोबाइल: 9774393498
ई-मेल : khs.ahmedabad@gmail.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत : प्रति अंक ₹. 40.00 वार्षिक ₹. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क ₹. 250.00
(डाक व्यय प्रति अंक ₹. 35.00 तथा
वार्षिक ₹. 100.00 अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक \$ 10.00 वार्षिक \$ 40.00

मुद्रक : पाटीदार ऑफसेट, अहमदाबाद

टाइपिंग/कंपोजिंग : भानु ग्रॉफ़िक्स

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

अनुक्रम

भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज

संपादकीय

प्रधान संपादक की कलम से...

अलेख

1. गुजराती उपन्यासों पर गांधी दर्शन का प्रभाव 10
2. गांधी जी और भारतीय समाज 16
3. महात्मा गांधी की दृष्टि में हिंदुस्तानी 22
4. गांधी, पथराव और प्रगतिवादी : 'बेनीमधो तिवारी' 28
5. 'अक्षर रिस्ते' : एक विशेष आत्मकथा 33
6. गोपंतकीय मंदिरों का स्थलांतरण 41
7. मैं खानाबदोश रहूँ अकेला 47
8. गांधीवाद और हिंदी कव्य 58
9. 'ग्रामगीता' मनुष्यता उद्धार का सूत्र 63
10. गांधीजी का राष्ट्रभाषा हिंदी संबंधी चिंतन 68
11. गांधीजी की विश्वव्यापी मान्यता 73
12. समर्थ रामदास रचित 'मनोबोध' और मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन 79
13. हिंदी और संस्कृत भाषा एवं साहित्य पारस्परिक संबंध 86
14. धूप के षडयंत्र के विरुद्ध मानवीय संघर्ष का कवि नागरक मुंबले 92
15. श्रीराम त्रिपाठी और उनकी 'पूख' कहानी 97
16. गांधीजी और सौ अर्थान के प्रयत्न 100
17. संस्कृत ऋष्य परंपरा और श्री मूलशंकर गणिकवल्स यादविक की तीन संस्कृत नाट्य कृतियों (गुजरात के संदर्भ में) 106
18. गांधीजी और एकदशी व्रत प्रसंग 112
19. हिंदी भाषा पर ग्रामोप मराठी की बोलियों का प्रभाव 120
20. विविध क्षेत्रों में सखार पटेल की श्रुतिक्रम 127
21. गांधीजी और राष्ट्रभाषा हिंदी 133
22. गुजराती लोक संस्कृति में गरवा 141
23. वर्तमान समय में वल्लभभाई की प्रासंगिकता 147
24. लेखक सूची 150

प्रो. नंद किशोर पाण्डेय 04

डॉ. अनुज प्रताप सिंह 10
डॉ. अनिल मिश्रा 16
डॉ. मनोहर भंडारे 22
डॉ. ललिता यादव 28
डॉ. रमा प्र. नखले 33
डॉ. भूषण भावे 41

डॉ. विजय महादेव गाडे 47

डॉ. सदानंद भोसले 58
दीनानाथ मुलीधर पटेल 63
डॉ. धीरज वाणकर 68
डॉ. समीर प्रजापति 73

डॉ. सुनील डहाळे 79
डॉ. उर्मिला पोरवाल 86

डॉ. सतीश पांडेय 92
संगीता यादव 97
डॉ. अनु मेहता 100

डॉ. ज्योत्सना शर्मा 106

डॉ. पूर्वा शर्मा 112

श्रुति शशिकंत चवटे 120

डॉ. आशु रानी 127

डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह 133

रुचि पटेल 141

डॉ. विजय एम. डारे 147

डॉ. बीना बुल्की 150

होने से मंदिर में अथवा उस जगह स्थानांतरित मंदिर में होने वाले उत्सव और कंल लेना, प्रसाद-फलकी लेना, पालकी पंग में चलते हुए लंका स्थानांतरित देवताओं को मूल स्थान के देवताओं से भेंट करना, पंचामृतार्घ्य सोपानक रूप करना आदि विधियाँ आज तक अतिरिक्त तरीके से चल रही हैं।

जना के स्मृती में स्थानांतरण का पूरा इतिहास जिन रखने का कार्य इन धार्मिक विधियों ने और कुलाचारों ने किया है। इस प्रकार से, देवताओं की दाही दिशा फिरत राहिले रे, दूर घर माझे का आक्रोश करते हुए हिंदू समाज ने इस आक्रमण का मुंह तोड़ जवाब दिया। अमरिका समान यहाँ की प्रजा नष्ट करके (Extermination of the population) यहाँ पूर्ण रूप से यूरोपीय प्रजा स्थापन करने का पुर्तुगीजों का कपटी उद्देश्य था। परंतु भारत (गोवा) अर्थात् अमरिका नहीं था; वहाँ भारतीय (गोवा वाले) अर्थात् Red indians नहीं थे। उच्च पद पर पहुँची यहाँ की संस्कृति ने यह आक्रमण भी सह लिया। मूर्तियाँ बावड़ी में फेंक कर, तकीये के पास लेकर, रतोरत सुरक्षित स्थान पर ले जाकर इस समय ने धर्म और संस्कृति का रक्षण किया। जो लोग दूसरी जगह भाग गए वो छूट गए। जो उसी स्थान पर रहे, उन्हें इनविजेशन की कूर यातनाओं का सामना करना पड़ा।

पंतु गोवा के स्वातंत्र्य के बाद, दमन की हुई धार्मिक भावनाओं को स्मृति मिली। नए मंदिर खड़े किए गये। जहाँ से मंदिर हिल गए, उसी मूलस्थान पर पुनः बनवाने का काम शुरू हुआ। आज मीरा, महालसा आदि मंदिर स्थानांतरित स्थान के साथ ही अपनी मूल जगह उसी शान में खड़े हैं। 450 सालों के शासन काल में, बहुत वर्षों से राजधानी 'गोवापुरी' इसी श्री 'गोवेश्वर' देवता के नाम से मिली हुई है। इस गाँव के नाम को पुर्तुगीज बदल नहीं सके, वैसे ही जवरदस्ती से बनाए हुए खिस्ती किए हुए समाज को हिंदू देवी-देवता और रीति-रिवाजों की श्रद्धा भी वे कम नहीं कर सके। आज भी बहुत से खिस्ती बंधु श्रद्धापूर्वक हिंदू देवों की प्रसन्न यात्राएँ हैं-फेड़ते हैं।

गोवा के मंदिरों के स्थानांतरणों का इतिहास गोमंतकीय हिंदू जनता के चरंत धर्मिभामन का और श्रद्धा का इतिहास है। दुनिया का ऐसा कूर आक्रमण एवं इनविजेशन को इस संस्कृति ने न केवल सहा है, बल्कि उसे मात भी दी है। काले मेघों से आच्छादित आसमान, वर्षा के बाद साफ और सुंदर हो जाए ऐसे ही गोवा का स्वातंत्र्य के बाद जीवन फिर एक बार मंदिरों के कारण धावन और पवित्र बन गया है।



ATTESTED

Authentic

Dr. Shrikant B. Chavan

Head Dept. of Psychology,

Asso. Professor,

Babasaheb Chhatrapati Bhabhavidyalaya

समन्वय पश्चिम

मैं खानाबदोश रहूँ अकेला !

डॉ. विजय महादेव गाडे

श्रीमान नरेंद्र मोदी का नाम किसी परिचय का महत्त्व नहीं है। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री के रूप में राजनीतिक जीवन से उनकी पहचान है लेकिन मोदी जी एक अच्छे कवि भी हैं इसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। एक कवि के साथ एक प्रखर राजनीति के रूप में आप की अलग पहचान है, जिसे आप ने बार-बार सिद्ध भी किया है।

एक साहित्यिक के रूप में आप ने राजनीति की आणधारी से तकनिकालकर लिखा है। हालाँकि संख्यात्मक दृष्टि से यह बात देखी जाए तो अलग है। लेकिन गुणवत्ता की दृष्टि से यह बात कर्षी अहमियत रखती है। 'आँख आ धव्य छे' सन 2007 में प्रकाशित उनका गुजराती काव्य संकलन है, जिसे सुश्री. डॉ. अंजना संधीर ने हिन्दी में अनूदित किया है, इस काव्य संकलन में कुल 67 कविताएँ हैं।

आज सारी दुनिया मोदी जी को जानती है। राजनीति मोदी बहिर्मुखी व्यक्तित्व है लेकिन कवि नरेंद्र अतुल्य व्यक्तित्व के स्वामी हैं, ऐसा हमें प्रतीत हो जाता है। भाषण देना, अपने 'मन की बग' बताना यह अलग विषयवस्तु है। लेकिन उनके मन की अवधारणाओं का पता इस काव्य संकलन से उजागर होता है। प्रसिद्ध राजनेता और कवि डॉ. कुमार विश्वास के अनुसार 'वे एक धुंधल कवि हैं और राजनीति में आने के कारण हिन्दी कविता ने एक धुंधल कवि खो दिया है।'

'अपनी बात' में नरेंद्र मोदी जी ने कहा है, 'वे सरस्वती के उपासक हैं और उनकी पद प्रतिष्ठा को न देखकर उनकी कविता के पदों का आनंद उठाने का कवि आवाहन करता है। उनके अनुसार दुनिया को उल्टे जैसा देखा, अनुभव किया, जैसा जाना, आनंद लिया उसी पर अक्षरों से अभिवेक किया है।' उनका यह कथन हमें अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है कि उनकी सभी रचनाएँ श्रेष्ठ हैं ऐसा नहीं। लेकिन कच्चे आम का स्वाद भी अलग तरह का स्वाद दे जाता है। उनकी कविता में यह बात सार्थक प्रतीत होती है।

पृथ्वी सुंदर है, आँहें धव्य हैं और जीवन सफ़र में भानव मेले में कवि अनेक लोगों से मिलता रहा। पर दूसरों के साथ कवि खुर को भी आंतरिक पीड़ा देता रहा और आंतरिक पीड़ा के बगैर काव्य सृजन सम्भव नहीं है। कवि का यह दवा गलत नहीं लगता। कवि खुर को चित्रकार के रूप में देखते हुए आंतरिक मनोभावों को रूपयित करता है। कवि कहता है -

"पौसम के सपने / सपनों का मौसम / सभी कुछ थाप हो जाना !" (पृ. 21)

कवि चिन्तनी से देखती करता है। इसलिए खुर को चिन्तनी का बिगारी या कहता है। उनका कोई किताब नहीं है और न किताबों को कोई आस है। वह रसिया के मझघार में रहना चाहता है क्योंकि किन्नाश शब्द का सही अर्थ है विश्राम और उन्हें आराम कर्षी पसंद नहीं है।

पद्म साखनलाल चतुर्वेदी

14 अप्रैल 1889-30 जनवरी 1968



स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कवि, लेखक एवं पत्रकार

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरवाला के गहनों में गुंथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर डोलाऊँ,

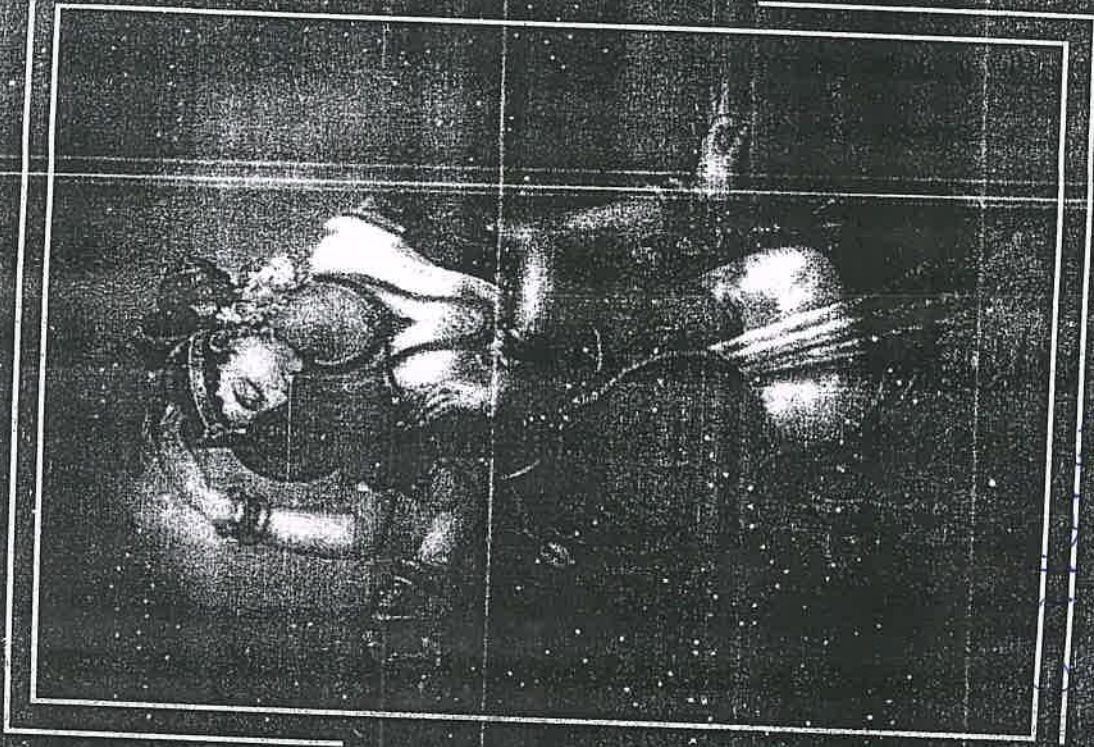
मुझे तोड़ लेना वनमाली !
उस पथ पर देना तुम फेंक !
मार्ग-भूमि पर शीश चढाने,
निस पथ जावें वीर अनेक ।

जन-जग की जित्वा पर चढ़ कर स्वतंत्रता के परवानों का प्रयाण गीत बनी यह कविता साखनलाल चतुर्वेदी के कारावास के दौरान 18 फरवरी 1922 को बिलासपुर जेल में लिखी गई।



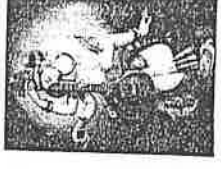
साहित्य सरस्वती

अप्रैल-जून 2020 वर्ष - सात अंक 26



साहित्य सरस्वती प्रकाशकालय एवं नवविद्यालय, बिलासपुर (म.प्र.)
Asso. Professor,
Bilaspur, C.P.

Dr. Hea abasa



साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - सात, अंक - छब्बीस, अप्रैल-जून 2020

संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

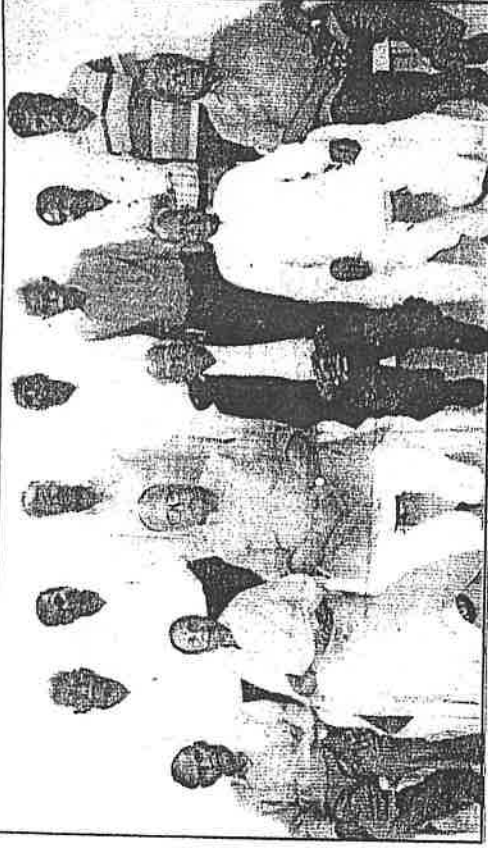
डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय



व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण चादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्मलापुरे, न्यासी
- पं. शुक्रदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

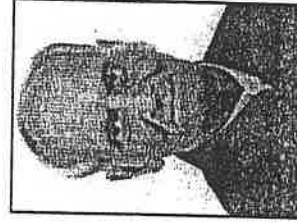
श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका



सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट सागर के पदाधिकारी गण

वैठे हुए (बाएं से दाएं) - श्री जी. एल. छलसाल (सह सचिव), डॉ. श्रीमती मीना पिम्मलापुरे, श्री लक्ष्मीनारायण चादव, पूर्व सांसद सदस्य (लोकसभा) एवं न्यासी, श्री के. के. सिलाकारी, एडवोकेट (अध्यक्ष) पं. शुक्रदेव प्रसाद तिवारी (सचिव) एवं डॉ. सुरेश आचार्य (न्यासी)

पीछे खड़े हुए (बाएं से दाएं) - श्री प्रभाकर राव भागवत, श्री जवाहरलाल चौरसिया, श्री जगदीश माहेश्वरी, श्री रामचन्द्र केशरवानी (न्यासी), श्री बी. एन. चौबे (कार्यालय प्रभारी), श्री राजू चौबे एवं श्री गुड्डा सैनी



अध्यक्ष

के. के. सिलाकारी (एड.)



सचिव

पं. शुक्रदेव प्रसाद तिवारी

साहित्य सरस्वती परिवार
परमपिता परमात्मा से
प्रार्थना करता है कि हमारा
भारत देश और पूरा विश्व
कोरोना मुक्त हो।
स्वस्थ हो। सुखी हो

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,

गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)

फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।
- सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।
- रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।

रचनाकारों से निवेदन

- कृपया इस त्रैमासिक पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ प्रेषित करें।
- रचनाएँ छोटी हो। लेख एवं कहानियाँ 7-8 पृष्ठों से अधिक न हों।
- रचनाएँ सुस्पष्ट हों, टंकित हों।
- पुस्तक-समीक्षा स्वयं करावा कर प्रेषित करें।
- रचनाएँ इस पते पर प्रेषित करें-

डॉ. सुरेश आचार्य

37, अन्नपूर्णा विद्यापुरम, मकरोनिया,

सागर (म.प्र.) पिन कोड - 470004

मो. : 09826221961

Email: shreesuryam@gmail.com

आकरण

असुर अहमद, सागर

Mob. 9926438999

asrarart@gmail.com

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण

अनुज्जा कुवस

1/10206, गली नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क

शाहदरा, दिल्ली-110032

संपादकीय

आवत ही हरसै नहीं

गोस्वामी तुलसीदास ने कभी लिखा था-

आवत ही हरसै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह।।

अर्थात् आपके आने पर जो खुश नहीं होता। जिसकी आँखों में प्रेम दिखाई नहीं देता। उसके घर चाहे सोना बरसता हो मगर तुलसीदास के अनुसार वहाँ कतई नहीं जाना चाहिए। सो वरोबर है। सड़ियाल आदमी के वहाँ धन बढ़ता है तो उसकी अकड़ भी बढ़ती है। समुद्र तो मर्यादा में रहता है मगर छोटे-छोटे नाले जरा सी वर्षा में इतराने लगते हैं। छुद्र नदी भीरि चलि उतराई। जिस थोरे धन खल बौराई।। आदमी लाचारी में, और कोई रास्ता न मिलने पर भले खल के पास चला जाए। पर अब ऐसा विकट टटा खड़ा हुआ है कि भाई-भाई को देखकर भागता है और बहिनें एक-दूसरे को दूरई की राम-राम कर रही हैं। भैया जान है तो जहान है। रुपैया, माल, मकान, गाड़ी, घोड़ों का जलवा तभी तक है जब तक जान है।

कई सञ्चन शूट बोलने से बचे। इधर आप उनके घर तशरीफ़ ले गए, उधर वे मन में बोलें-इसे भी अभी आकर मरना था। मगर दुनियादारी के चलते उजागर बोलते थे-आइए, आइए। धन्यभाग आप पधारें तो हम तो धन्य हो गए। इन बेचारे सञ्चनों की भी जान छूटी। वावू भैया यह जलवा है कोरोना बीमारी का। यह अल्लाह मियाँ का हट्ट है जो आदमी को होशियारी पर चला है। यह कुदरत की वह करवट है जो हुशियारों को अकल चरपट कर देती है। जो जितना चतुर है उस पर उनना वजन। दुनिया का सबसे खतरनाक प्राणी भी मनुष्य ही है। सबसे भला प्राणी भी मनुष्य ही है। अल्लाह मियाँ ने परिन्दे-चरिन्दे और दरिन्दे बनाए। वे आदमी के इलाके में कोई हस्तक्षेप नहीं करते। उधर चॉन में आदमी सबको हजम करने पर उतारू है। सौंप से मेंढक और मुर्ग से चमगादड़ तक उसके शोन्ध पदार्थ हैं। इसी चमगादड़ के जूस से कोरोना के विषाणु पैदा किए गए यानी बुहान-लैब का आधार मीट-मार्केट है। मनुष्य खुद को अगर खुदा नहीं समझता तो खुदा से कम भी नहीं समझता। अल्लाह मियाँ ने उसे दो पैर देकर जमीन पर चलने के लिए बनाया, मगर बन्दे ने पहिया बना लिया। पहियेदार गाड़ियों पर डटा वह सरपट दौड़ने लगा। किसी भी जानवर से ज्यादा तेज। उसने दरिन्दों के सङ्घ-दत्त से जोरदार तलवार-बन्दूकें बनाईं। अल्लाह ने उसे जमीन पर रहने के लिए बनाया। मगर बन्दे ने हवाई जहाज, हेलिकॉप्टर बनाकर पंखों का इंतजाम किया और अच्छे-अच्छे परवाल उसके सामने नक़्क़े राइते रह गए। अल्लाह ने पानी में रहने मछली, मगर, कछुवे और अन्य जल जंतु बनाए। आदमी ने नावें, स्टीमर और पनडुब्बियाँ बनाकर पानी के ऊपर और भीतर भी घूमना शुरू किया। उसने रकेट बनाए, चंद्रमा पर चढ़ दौड़ा और अब मंगल मिशन चल रहा है। अंतरिक्ष में विस्फोट करने की वैज्ञानिक योजनाएँ चल रही हैं। लम्बो-सुआव यह कि चाहे आप अल्लाह मियाँ ही क्यों न हों। अगर आप वाप है तो आपके बिगड़ैल बेटे जरूर होंगे जो आपकी नाक में दम किए रहेंगे। वाप जितने बड़े होंगे। उनके बेटे भी उतने ज्यादा बिगड़ैल होंगे। यों कुछ बेटे भले भी होते हैं मगर भलों को कौन पूछता है। काली खोपड़ी वाला जानवर सबसे खतरनाक, सबसे निर्धम और सर्वाधिक अविश्वसनीय होता है। इतिहास, पुराण, संस्कृति और साहित्य में ऐसे अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं। कंस ने अपने पिता उग्रसेन को जेल में डाला तो आलमगीर जिन्दा पौर औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को भीतर कर दिया। भीतर यानी बाहर निकलना बन्द। सीधे कैद। सो वरोबर है।

ये बड़ों की बातें हैं। बड़े दुनिया विगाड़ने पर तुले रहते हैं। उन्हें हिंसा, मारकाट, युद्ध और झगड़े प्रिय लगते हैं। मनुष्यता की परिभाषाएँ बदल रही हैं। हथियार बदल रहे हैं। सारी दुनिया जिस कोरोना वायरस को महामारी

साहित्य सरस्वती

कविताएँ

यह मूर्ति कल्प में स्थापित है, उनका घर है। देव, इतनी देह को धरती पर उठाए। शक्ति यह आत्मा जो परमात्मा का अंश है, उसका घर है। मन्दिर में सुरक्षा-व्यवस्था के प्रति सचेत रहने हे कोई मूर्ति और उनके आभूषण न सुरक्षित ले जाए। इतनी ही सतर्कता अपनी आत्मा, अपने जमीर, अपने ईमान की सुरक्षा के प्रति भी होनी चाहिए। कबीर सचेत करते हैं-

“मन रे जगल रहिए भाई,
गाफिल होइ वस्तु मन खोवै चोर घुरे घर जाई।”

यह कबीर का रहस्यवाद है। साधक को (यानी जीवन को जीवन की तरह जीने की साधना करने वाले को) जागृत रहना चाहिए। थोड़ा लापरवाह हुए कि इन्द्रियों पर से नियन्त्रण हट जाएगा। इन्द्रियों रूपी चोर हमारे संयम, धैर्य, निष्ठा, सत्य रूपी पूँजी को चुरकर ले जाएँगे...। लुटेरे यानी लालच, स्वार्थ, छल-कपट, झूठ, घर में यानी मन में घुसकर बैठ जाएँगे। हम गाफिल हो गए थे और ऐसा ही हुआ।

पारश्चात्य देशों से आगे निकल जाने की होड़, पारश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के प्रभाव से भटकते दिल्लीदिमाग ने हमारी आस्था को डगमगा दिया। हम अपना 'आपा' खो बैठे थे कि अचानक इस जासूसी ने झकझोर कर जग दिया। अब जाग गए हैं तो जागे रहें। समय के मूल्य को समझें, जो करना है, रहकर परमात्मा की निकटता को अनुभव करते रहें। उसके प्रति हमारी आस्था, निष्ठा, विश्वास ही हमारी इम्यूनिटी है। रोगों और दुःखों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता है, हमारा आत्मबल है... स्मरण रखें कि हम भारतीय हैं हमारा जीने का अन्दाज अलग है। अन्त में जगजीत सिंह की गाई एक गजल के साथ अपनी बात समाप्त करती हैं।

क्योंकि रोना चाहे पश्चाताप के लिए हो या दुःख-दर्द के चलते हो, रोने से मन के क्लेश धुल जाते हैं मन हल्का हो जाता है। इसलिए-

घर की तामीर चाहे जैसी हो, उसमें रोने की एक जगह रखना।
यदिबन्दे हैं जमजियों के लिए, अपने घर में कहीं खुला रखना।।

शेष श्रुत...

लक्ष्मी पाण्डेय
9753207910

- 3 सम्पादनकथ - सुरेश आचार्य
- 5 हस्तक्षेप - लक्ष्मी पाण्डेय
- धाराहर
- 11 मोहनदास करमचन्द्र गाँधी - अहिंसा की प्रमर्या
- 15 जयशंकर प्रसाद - नाटक : एक घूँट
- 29 धर्मजय वर्मा - साहित्य : समाज का प्रतिबिम्ब
- आलेख
- 33 अंजना वर्मा - मुक्ति-द्वार पर दस्तक देती स्त्री-कलमें
- 36 प्रो. सुरेश आचार्य - जो अन्यास पाँव छूता है : आदमी नहीं है, जूता है
- 38 डॉ. मनोहर अगानी - एक चहत् ऐसी है!
- कहानी
- 46 लालू - दौड़
- 51 इमलेश भारतीय - मैंने अपना नाम बदल रिया है
- 55 इमतीन्द्र नाडिग - चमक वृक्ष (अनुवादित कन्नड़ कहानी)
- 60 ब्या डुगडुनवाला - नैना
- 65 अजय कुमार दुबे - माँ का प्यार लघुकव्वाएँ
- 71 कबीर खालटा
- साक्षात्कार
- 73 बबिनारा मिश्र की उद्धान्त से बातचीत
- संस्मरण
- 83 हरeram वाजपेयी - माँगिशस जैस मैं देब कविताएँ
- 10 वन्दना नेमा
- 39 रवेकेश सिंहासने
- 40 डॉ. विजय महादेव गाडे
- 54 डॉ. जयसिंह अलवरी
- 59 फंज पटेरिया
- 70 हरि अग्रवाल
- 72 वीरन्द्र प्रधान
- 82 पुरुषोत्तम व्यास
- 87 डॉ. त्रिभुवन नाथ त्रिवेदी
- 88 रंशम रमानी
- 89 पुष्पा विले
- 90 नोन्द्र 'दीपक'
- 91 डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'
- 91 किशोर तिवारी 'केसू'
- 92 सर्वजीत 'सर्व' स्म्रीक्ष्वाएँ
- 93 डॉ. सीमा शर्मा - खिड़कियों से झंकती आँखें
- 98 डॉ. छाया चौकसे - सुलझे ...अनसुझे!!!
- 100 निरंजना जैन - मैं फिर मिलूँगी
- 103 डॉ. चंचला दवे - 'देनपा' तिब्बत की कवरी
- 107 प्रतिक्रिया
- 110 परिक्रमा

नवीन, पोहा, मुक्तक और गजल विधा के सशक्त हस्ताक्षरपत्र गिरिमोहन गुरु 'नगर श्री' की रचना 'गजल का दूसरा विवरण' प्राप्त हुई। 2003 सन् में प्रकाशित यह रचना अपनी अहमियत रखती है। वैसे 'गजल के छिलके' पर हमने पहले ही लिखा था, यह रचना इसकी पूर्ववर्ती रचना है। इस रचना में कुल 55 गजलें शामिल हैं। मंगलाचरण भी गजल में ही लिखा हुआ है जिसके माध्यम से गुरु ने माता सरस्वती की आराधना की है। मंगलाचरण में कवि लिखते हैं-

काम कीचड़ आँख में न आ सके
ज्ञान का कांजल लगादे शारदे।
मोह का कानन दुखी न कर सके
राम का सा मन बना दे शारदे॥ (पृ. 5)

वैसे गजल, उसका आगाज, उसके तत्त्व इस पर अब तक इतना लिखा जा चुका है कि इसे बार-बार दोहराना अच्छा नहीं लगता। केवल एक ही बात बताकर हम आगे जाना चाहते हैं। मूलरूपेण अरबी-फारसी की यह विधा दसखनी भाषा के द्वारा हिन्दुस्तान में अन्तर्गत हुई और अब यह विधा सारे भारतीय भाषाओं की विधा बन चुकी है। पहला गजलगी कौन है इस पर भी विवाद चलता है और भविष्य में भी चलता रहेगा। कोई कबीर, कोई शमशेर और कोई अमीर खुसरो को पहला गजलगी मानता है। हमने यहाँ अमीर खुसरो का जिक्र इसलिए किया कि बहुत सारे समीक्षक खुसरो को नहीं अपितु कबीर को पहला गजलगी मानते हैं और इस रचना का उदाहरण देते हैं-

सम्पर्क- B-1 चुंबारसलिका, 100 फुटा रोड, अमेजिट चेतना पेट्रोल पम्प, सींगली-416416, महाराष्ट्र मो. 9860279809
Gabasasheb Chitale Mahavidyalaya
अप्रैल-जून 2020

हमन है इश्क भरताना हमन को होशियारी क्या रहे आजद या जग से हमन दुनिया से यारी क्या।।
खुसरो के नाम पर इसलिए आपत्ति दर्ज होती है कि खुसरो की गजलों में फारसी के साथ हिन्दी का प्रयोग दिखाई देता है किन्तु हाल ही में जो अनुसन्धान हुआ है उसमें खुसरो की एक गजल सामने आई है जो इस प्रकार है-

जब यार देखा नैन भर दिल की गई चिन्ता उतर
ऐसा नहीं कोई अजब रखे उसे समझाया कर।
जब आँख से ओझल भया तड़पन लगा मेरा जिया
हक्का इलाही क्या किया आँसू चले भर लाय कर।
तू तो हमारा यार है तुझ पर हमारा प्यार है
तुझे दोसती बिसयार है इक शब मिलो तुम आयकर।
मेरा जो मन तुमने लिया, तुमने उठा गम को दिया
तुमने मुझे ऐसा किया जैसे पतंग आग पर।
खुसरो कहें नाते गजब दिल में न लाए कुछ अजब
कुदरत खुदा की है अजब जब जिवदिया गुल आयकर।
(अमीर खुसरो और उनका साहित्य, पृ. 40)
इसलिए अब हमारी नजर में पहला भारतीय गजलगी कौन है यह विवाद खत्म हुआ है।

हमारा देश कृषिप्रधान देश है। यह जुमला हम आए दिन सुनते रहते हैं। लेकिन वर्तमान परिस्थि में किसान की क्या स्थिति है इससे हम सभी बेखबर हैं। विवेच्य रचनाकार को इसका ज्ञान है और इसलिए वे लिखते हैं-

खेत जब-जब भी लहलहाता है
सेठ का कर्ज याद आता है।

Dr. Shrikant E. Chavan
Head Dept of Psychology
9860279809
Gabasasheb Chitale Mahavidyalaya
अप्रैल-जून 2020

श्री श्री कृष्ण
नौरवालों के
'नौरवाला' जन्म
श्री श्री आ गजलें

मनुष्य के अमान के खत्म नहीं होते या बहुत कम अमान कामयाब होते हैं। उसकी प्यास सदैव प्यासी ही रहती है और वह असाफलता के जंगल में भटकने के लिए लाचार एवं विवश हो जाता है-

एक असफलता के जंगल में भटकती जीखती
कामया हर एक प्यासी देखकर लिखना पड़ा।
अभावों की आँधियों में थथराती काँपती
विन्दत्री जलतीमिया सी देखकर लिखना पड़ा।

(पृ. 6)
साहित्य के क्षमने सबसे बड़ी समस्या है पाठकशून्यता की। एक ओर बहुत सारी कित्तबे प्रकाशित होती हैं लेकिन पढ़ने वाले नदारद हैं और दूसरी ओर पाठकों की यह शिकायत है कि अच्छी पुस्तकें बनार में अलभ्य नहीं हैं और इस कारण इस चक्रव्यूह से फिलहाल अब आसान नहीं है। एक ओर कई प्रकाशक ऐसे भी हैं कि जो लेखक से पैसा लेकर उनकी कित्तबें छापते हैं और खुद मालामाल हो जाते हैं। लेकिन सभी प्रकाशक ऐसे नहीं होते जिसे खुद हमने अनुभव किया है। इसलिए गजलगी का दावा शतप्रतिशत नहीं होता-

गीत विज्ञापन दूरों में छप रहे हैं
इस तरह साहित्य में हम खप रहे हैं।
किसी दिन तो कभी भी सम्मान दुनिया
उसी दिन के लिए माला जप रहे हैं। (पृ. 7)

आम आदमी की ओर कोई भी नहीं देखता और न उसकी पूछताछ की जाती है। समाज का 'खास वर्ग' आम आदमी की ओर कहीं ध्यान दे पाता है जिससे कुम्भित होकर कवि लिखता है-

कठक अमान के कठक सुपली रहे हैं
कम-कम अमान हम को रहे हैं।
वही अमान में हमें नीचा दिखाती
श्री श्री अमान की रहे हैं। (पृ. 6)

इस सर्वसाधारण आदमी के अनेक चित्र विवेच्य रचनाकार ने अपनी गजलों में खींचे हैं-

मार महंगाई की खाकर सपने
दुकड़े-दुकड़े दिखाई देते हैं।
मेरे मात से यूँ एक जैसे ही
सब के दुखड़े दिखाई देते हैं। (पृ. 8)

आदव का दायरा विस्तृत होता हुआ दिखाई देता है इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन वर्तमान साहित्यिक दायरा गुट बाजी से त्रस्त है। किसी एक तथाकथित प्रसिद्ध समीक्षक को पकड़कर उसका दामन थामकर, साम, दाम, दंड, भेद आदि में से किसी एक नीति का उपयोग करते हुए उसकी शानि की जाती है और वह आपको रातोरात फर्क से आँ पर लेकर जाता है। वैसे यह बात कड़वे या बटु प्रतीत होगी परन्तु यही वर्तमान सच्चाई है जिसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता और उस स्वल्पमन्य समीक्षक की मदद से बहुत रचनाकार अब खुद को शहनशाह मानते हैं परन्तु सच्चाई अलग ही होती है-

कठने को ही सख्खन्द है मेरे शहर के लोग
गुट बन्दियों में बन्द है मेरे शहर के लोग।
सरसिमिंधें में डूबे हैं साहित्य की जब से
कुछ छन्द कुछ छल छन्द है मेरे शहर के लोग।
लसु और गुरु का इन्हें अन्तर नहीं पता
इस दर्ज अकल मन्द है मेरे शहर के लोग। (पृ. 9)

कभी हमारा देश कृषि प्रधान था, अब वह कृषिप्रधान देश हुआ है। राजनीति ने जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को ग्रस लिया है। राजनीति के

21-22- 3.3.3.

ISSN No-2347-7073
Impact Factor-07123
Volume-2 Issue-15

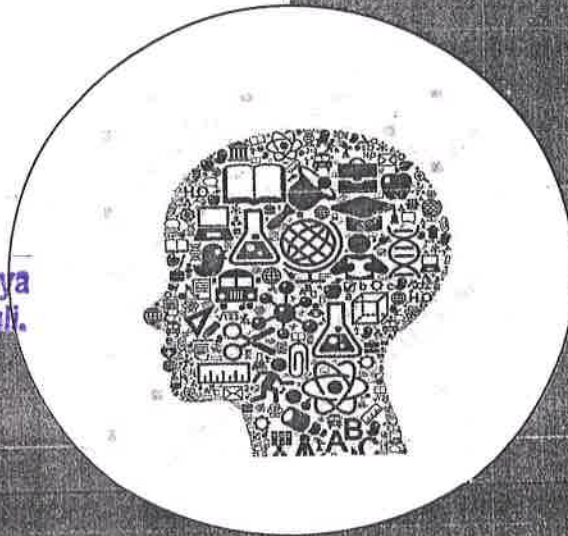
INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH



dg

Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Pauni, Dist. Sangli.



Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance
and Applied Research (IJAAR)

Peer Reviewed Bi-Monthly



ISSN - 2347-7075

Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue-15 May-Jun -2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

May-Jun -2022 Volume-2 Issue-15

On

*Relevance of Work and Thoughts of Rajarshi Chhatrapati
Shahu Maharaj*

Chief Editor

P. R. Talekar

Secretary,

Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor

Dr. Sunil Helkar

Principal,

Prof. Dr. N.D.Patil Mahavidyalaya, Malkapur – Perid
Tal. Shahuwadi Dist. Kolhapur

Co- Editors

Dr. Supriya Khole

M.L.Sontakke

Published by- P. R. Talekar, Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors



CONTENTS

| Sr No | Paper Title | Page No. |
|-------|---|----------|
| 1 | "Chh. Shahu Maharaj and the people from VJNT community" Dr. Vijay Jaysing Mane | 1-3 |
| 2 | Relevance of Rajarshi Chha. Shahu Maharaja's Thoughts on Emancipation of Women Dr. Mrs. Vaishali Abhijit Sarang | 4-5 |
| 3 | छत्रपती शाहू महाराज यांची भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील भूमिका : चिकित्सक अभ्यास प्रा. महादेव लिंगराज सोनटके, प्रा.किरण सर्जेराव पवार | 6-8 |
| 4 | सामाजिक सगतेचे पुरस्कर्ते - छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे | 9-11 |
| 5 | राजर्षी शाहू महाराजांचे कृषी विषयक धोरण डॉ.डी.आर.पाटील | 12-15 |
| 6 | राजर्षी छ. शाहू महाराज यांचे अस्पृश्य उद्धारासाठी केलेले शैक्षणिक कार्य डॉ. गीतम नामदेव ढाले | 16-19 |
| 7 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचा भोफत व मक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा अंध्यादेश आणि कोल्हापूर संस्थानी राज्यातील शैक्षणिक विकास डॉ. रामचंद्र बसंत कुंभार | 20-24 |
| 8 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे अस्पृश्योद्धाराचे कार्य डॉ. ज्योती जयवंत ष्टकर | 25-28 |
| 9 | पुरोगामी धोरणाचा दीपस्तंभ - छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा.केशव धोंडीबा टिपरसे | 29-31 |
| 10 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे आदर्श आपत्ती व्यवस्थापन डॉ. मधुकर विठोबा जाधव | 32-35 |
| 11 | राजर्षी छ. शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार | 36-39 |
| 12 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक कार्य प्रा.रमेश शंकर माने | 40-42 |
| 13 | कोल्हापूर संस्थानातील शैक्षणिक क्रांती डॉ. उत्तरा खातीलकर | 43-44 |
| 14 | राजर्षी शाहू महाराज यांचे सत्यशोधक समाजातील योगदान डॉ. राजश्री दिलीप निकम | 45-47 |
| 15 | सामाजिक क्रांतीचे जनक राजर्षी शाहू महाराजांचे कोल्हापूर संस्थानातील सामाजिक व शैक्षणिक योगदान संदीप बळवंत गुरव | 48-50 |
| 16 | दूरदृष्टीचे लोकनेते राजश्री शाहू महाराज राजेंद्र भिकू महानवर | 51-55 |
| 17 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान प्रा.विनोद आघाडे | 56-58 |
| 18 | "राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांच्या आपत्ती व्यवस्थापन कार्याची सद्यकालीन प्रस्तुतता" डॉ. जनार्दन श्रीकांत जाधव | 59-63 |
| 19 | राजर्षी शाहू महाराज : वसा आणि वारसा डॉ. विन्हाधार रामराज देशमुख | 64-66 |
| 20 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे सार्वजनिक आरोग्य क्षेत्रातील कार्य प्रा. किरण गणपत कुंभार | 67-70 |

| Sr. No. | Name of Author | Title of Paper | Page No. | View/Download |
|---------|--|--|--------------|---------------|
| | | | 922 | |
| 205 | प्रा. पियुष सिताराम घोडे | आंतराष्ट्रीय विपणनाचे फायदे व आव्हाने | 923 to 924 | Download |
| 206 | डॉ. गिरीश मोरे | संदर्भनिर्देशनाचे विविध प्रकार | 925 to 928 | Download |
| 207 | श्रीमती. प्रीती, डॉ. रवीन्द्र कुमार | पुस्तकालय स्वचालन में बारकोडिंग की आवश्यकता एवं उपयोगिता | 929 to 932 | Download |
| 208 | सुभाष ज्ञानेश्वरराव गोडफोडे, प्रा. डॉ. किशोर वि. साबळे | छत्रपती शिवाजी महाराजांचे आर्थिक विचार | 933 to 942 | Download |
| 209 | प्रा.सौ. हेमलता यु. मुकणे | आदिवासी वारली समाज - जंगल व पर्यावरण | 943 to 946 | Download |
| 210 | सुधीर तुळशीदास न्हावेलकर | महाराष्ट्रातील सामाजिक सुधारणा व जातीव्यवस्थेचे उच्चाटन | 947 to 950 | Download |
| 211 | डॉ. खंडेराव शिंदे | रुकडी जि.कोल्हापूर येथील राजेबागस्वार दर्गा एक ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन | 951 to 953 | Download |
| 212 | डॉ. रमाकांत शिवाजीराव शातलवार | दौलताबाद किल्ला: मध्ययुगीन पुरातत्वीय स्थळ | 954 to 956 | Download |
| 213 | डॉ. सी. वंदना राजेश शिंदे | महाराष्ट्राचा दीपस्तंभ माननीय श्री वसंतराव नाईक यांचे सामाजिक क्षेत्रातील योगदान | 957 to 961 | Download |
| 214 | प्रा. डॉ. कळसकर सूर्यकान्त नागनाथ | प्लास्टिक कचरा आणि पर्यावरण | 962 to 965 | Download |
| 215 | प्रितेशकुमार बी. पटेल, डॉ. डी. पी. माच्छी | बृहद संहिता में भूजल विज्ञान | 966 to 969 | Download |
| 216 | पंचाल अमिता | पिछले दस वर्षों में किये गये हिन्दी बाल साहित्य के अभ्यासों का मूल्यांकन | 970 to 972 | Download |
| 217 | प्रा. बाळासाहेब म्हाळू सारगर | बॅटल रोप प्रशिक्षण कार्यक्रमाचा कळडी खेळाडूंच्या कारक क्षमतेवर होणाऱ्या परिणामाचा अभ्यास | 973 to 978 | Download |
| 218 | डॉ. गणेश रमेश सिंहासने, डॉ. महेश रंगराव पाटील | कोरोना महामारी च्या काळात वाढलेल्या तनाव व जीवनाच्या गुणवत्तेवर व्यायामाचा होणारा होणारा परिणामाचा अभ्यास | 979 to 981 | Download |
| 219 | डॉ. लता शिवाजी पाटील, श्रीमती संगीता बाबासो माने | शिक्षण शास्त्र विषयातील संशोधन क्षेत्राचे विश्लेषण | 982 to 985 | Download |
| 220 | अमर अण्णा बुल्ले | युरोपीयन, अमेरिकन, भारतातील कामगार संघटना यांचा तुलनात्मक अभ्यास | 986 to 994 | Download |
| 221 | Dr. Ajay Tiwari | Conducting Literature Review: Purpose And Process A Study Of Research Methodology In Geography With Reference Nep 2020 | 995 to 996 | Download |
| 222 | Dr. Nidhi Mishra | Major Trends In Elt In 21st Century | 997 to 999 | Download |
| 223 | Dr. Asmita Prajakt Patil | Relevance Of Comparative Research In Law | 1000 to 1002 | Download |
| 224 | Rajpriya Laxmichand Patel, Dr. Jagdishbhai K. Patel | A Comparative Analysis Of Redington Ltd And Compuage Infocom Ltd On The Base Of Liquidity | 1003 to 1006 | Download |
| 225 | Mr. Sanjay A Patel, Dr. Jogendra Sing | Effect Of Strength Training On Physical Fitness Variables Of Intercollegiate Volleyball Players | 1007 to 1009 | Download |
| 226 | Mr. Sonu Cherian | A Study On The Effect Of Online Marketing On Present Generation Customer Buying Behaviour | 1010 to 1011 | Download |
| 227 | Dr. Sushant T. Magdum | Positive Impact Of Psychological Healthiness Of Diabetic Patient Through Meditation | 1012-1014 | Download |
| 228 | Dr.Pankaj Chaudhary | Achievement Motivation Of Inter College Cricket Sports Participants A Study | 1015-1017 | Download |



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palus, Dist. Sangli





‘कोरोना महामारीच्या काळात वाढलेल्या तणाव व जीवनाच्या गुणवत्तेवर व्यायामाचा होणाऱ्या परिणामाचा अभ्यास’

डॉ. गणेश रमेश सिंहासने^१ डॉ. महेश रंगराव पाटील^२

^१शारीरिक शिक्षण संचालक, कला, वाणिज्य व विज्ञान महिला महाविद्यालय, तासगांव

^२शारीरिक शिक्षण संचालक, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी

Corresponding Author- डॉ. गणेश रमेश सिंहासने

Email- ganesh1516@yahoo.com

Email- maheshpatil1352@gmail.com



dg
Principal

Babasahob Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Talus, Dist. Sangli.

गोपवारा

हा लेख तणाव आणि जीवनाच्या गुणवत्तेचे विहंगावलोकन प्रदान करतो. तणाव ही जीवनाच्या मागण्यांसाठी एक सामान्य मानसिक व शारीरिक प्रतिक्रिया आहे. या कोरोना महामारीच्या काळात लोक अधिक तणावपूर्ण जीवन जगत आहेत. तणावपूर्ण जीवनामुळे मानसिक त्रास वाढून अनेक व्याधि उद्भवतात आणि यामध्ये लोक मृत झालेले आहेत. या सर्व प्रभावातून बाहेर पडायचे असेल तर व्यायाम करणे अत्यंत गरजेचे आहे. आठवड्यातून पाच दिवस किमान ३० मिनिटे मध्यम प्रकारचा व्यायाम करणे गरजेचे आहे. व्यायाम मानसिक व शारीरिक आरोग्यासाठी महत्त्वाचे मानले जाते. व्यायाम म्हणजे शारीरिक हालचाली होय. अनेक प्रकारे शारीरिक हालचाली करून आपण क्रियाकलाप करू शकतो. चालणे, धावणे, सूर्य नमस्कार इत्यादी हालचाली करून आपण शरीर तंदुरुस्त ठेवून आपला ताण कमी करू शकतो.

प्रस्तावना

२१ व्या शतकाच्या आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या युगात मानसिक ताणतणाव आरोग्यासाठी मोठी डोकेदुखी ठरली आहे. माझ्यामते त्याचे महत्त्वाचे कारण म्हणजे सततची होणारी धावपळ आणि स्पर्धात्मक स्वरूपाचे जीवन या दोन्हीमुळे आरोग्यावर मोठा परिणाम झालेला दिसून येतो आणि एकंदरीत याचा परिणाम जीवनशैलीवर होताना दिसत आहे. त्यात मानसिक ताणतणावही फार मोठी समस्या आहे. कारण मानसिक ताणतणावात वावरणाऱ्या व्यक्तीची निर्णय क्षमता खूप ढासाळलेली असते. त्यामुळे तो व्यक्ती आत्महत्या सारखे पर्याय निवडू शकतो किंवा आरोग्याच्या समस्या त्याला सतत उद्भवतात. असे होत असताना अचानक सर्व जगावर आणखीन एक संकट ओढावले आहे ते म्हणजे कोरोना महामारी. कोरोना महामारीने लोकांची जीवनशैली बदलून गेली आहे. लॉकडाऊन मध्ये लोक घरी बसून होते. त्यामुळे कोणत्याही प्रकारचे शारीरिक कार्य, हालचाली करता आल्या नाहीत. शरीर अकार्यक्षम राहील्याने स्थूलता वाढून मानसिक ताणतणाव वाढलेले आणि यातूनच लोकांना अनेक व्याधि होऊ लागल्या आहेत. म्हणून आज तणावमुक्त जीवनशैली व मानसिक संतुलन टिकवून ठेवायचे असेल तर व्यायामाशी मैत्री करावीच लागणार नियमित योग व व्यायाम शारीरिक हालचाली केल्याने व शारीरिक उपक्रमात सहभागी झाल्याने तणावाचे प्रमाण नियंत्रित ठेवता येते. जीवनाचा दर्जा म्हणजे नक्की काय? अनेक परिणामांची बेरीज म्हणजे जीवनाची गुणवत्ता. “यामध्ये मानसिक,

शारीरिक, भावनीक, सामाजिक, वर्तणूक इत्यादींचा समावेश होता.” (JANSE), २००४, P ६५४५.

जीवनाची गुणवत्ता

जीवनाची गुणवत्ता हा शब्द लोक आणि समाजाच्या सामान्य कल्याणासाठी वापरला जातो. हे सहसा “जीवनमानाचा दर्जा” या संज्ञेशी आहे, परंतु दोन्हीचा अर्थ एकच असेल असे नाही. राहणीमानाचा दर्जा म्हणजे समाजातील व्यक्तीच्या संपत्तीचे आणि नोकरीच्या स्थितीचे मूल्यांकन. जीवनाची गुणवत्ता निर्धारित करणारे दोन्ही घटक असले तरी, हे त्याचे एकमेव सूचक नाहीत. एखाद्या व्यक्तीचे वातावरण, शारीरिक आणि मानसिक आरोग्य, शिक्षण, मनोरंजन, सामाजिक कल्याण, स्वातंत्र्य, मानवी हक्क आणि आनंद हे देखील महत्त्वाचे घटक आहेत.

तणाव :

तणाव म्हणजे वैचारीक दृष्ट्या कमी झालेला खंड आहे. वेगवान प्रवाहात हा एक अडथळ आहे. पर्यावरणीय मागण्या किंवा दबावांना जीवसृष्टीचा एकूण प्रतिसाद म्हणून तणावाची व्याख्या केली जाते.

तणाव ही जीवनाच्या मागण्यांविषयी एक सामान्य मानसिक आणि शारीरिक प्रतिक्रिया आहे. थोड्या प्रमाणात तणाव चांगले असू शकते, जे तुम्हाला उत्कृष्ट कामगिरी करण्यास प्रवृत्त करते. परंतु दररोज अनेक आव्हाने जसे की, उशीर झाल्यानंतर रहदारीमध्ये सापडणे, एखादे काम मुदतीत पूर्ण करणे, खेळातील कार्यमान, एखाद्याशी भांडण आणि कधी महत्त्वाची कामे करताना येणारा तणाव हा क्षमते पलीकडचा असतो. लहानपणापासून माणूस

अनेक गोष्टी करत असतो. त्यामुळे चांगले काय आणि वाईट काय हे कळत नाही. पण जसजसे आपण मोठे होतो तसतसे आपल्याला चांगल्या-वाईटाची जाणीव होत जाते. मग तुम्ही तुमचे जीवन योग्य आणि चांगले जगण्याचा प्रयत्न करू शकता. येथूनच तुमच्या जीवनाचा यशस्वी प्रवास सुरू होतो. हाच यशस्वी प्रवास माणसाला मोठ्या उंचीवर घेऊन जातो. म्हणजेच जीवनाचा दर्जा तयार होतो.

व्यायाम :

व्यायाम म्हणजे लयबद्ध व शास्त्रशुद्ध पध्दतीने केल्या जाणाऱ्या शारीरिक हालचाली होय. शारीरिक स्वास्थ्य वाढविणारी आणि आरोग्य चांगले ठेवणारी क्रिया म्हणजे व्यायाम. नियमित व्यायामाने अनेक रोग टाळता येतात आणि शरीर निरोगी ठेवण्यास मदत होते. व्यायामाने शारीरिकच नव्हे तर मानसिक आरोग्य उत्तम राहते. नियमित व्यायामाचे ताणण्याचे व्यायाम, एरोबिक्स व श्वसनाचे व्यायाम यांचा समावेश असावा. व्यायाम केल्याने माणसाला नवीन उर्जा मिळते. व्यायामहा कोणत्याही वयातील व्यक्ती करू शकतो. बैठे व्यायामही करता येतात. व्यायामामुळे रोगप्रतिकारक शक्ती वाढते. यामुळे माणूस आनंदी रहातो. व्यायामामुळे आपली मानसिक व शारीरिक शक्ती वाढते.

व्यायामाचे प्रकार :

1. ताणण्याचे व्यायाम - योगासने, सुर्यनमस्कार.
2. एरोबिक्स व्यायाम - चालणे, धावणे, नृत्य, पोहणे, सायकल चालविणे.
3. श्वसनाचे व्यायाम - प्राणायाम.
4. शक्तीचे व्यायाम - वनज उचलणे.

निष्कर्ष :

कोरोना महामारीच्या काळात लोक अधिक तणावपूर्ण जीवन जगत आहेत. तणावपूर्ण जीवनामुळे मानसिक त्रास वाढून अनेक व्याधि उद्भवतात आणि यामध्ये लोक मृत झालेले आहेत. या सर्व प्रभावातून बाहेर पडायचे असेल तर व्यायाम करणे अत्यंत गरजेचे आहे. आठवड्यातून पाच दिवस किमान ३० मिनिटे मध्यम प्रकारचा व्यायाम करणे गरजेचे आहे. व्यायाम मानसिक व शारीरिक आरोग्यासाठी महत्त्वाचे मानले जाते. व्यायाम म्हणजे शारीरिक हालचाली होय. अनेक प्रकारे शारीरिक हालचाली करून आपण क्रियाकलाप करू शकतो. चालणे, धावणे, सुर्य नमस्कार इत्यादी हालचाली करून आपण शरीर तंदुरुस्त ठेवून आपला ताण कमी करू शकतो. व्यायामामुळे रोगप्रतिकारक शक्ती वाढते. यामुळे माणूस आनंदी रहातो. व्यायामामुळे आपली मानसिक व शारीरिक शक्ती वाढते. असे दिसून आले. शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास होऊन चारित्र्यसंपन्न व आरोग्य संपन्न व्हायचे असेल तर शारीरिक हालचालींची गुणात्मक वाढ व विकास होणे गरजेचे आहे. कारण यावरच कोणत्याही सामर्थ्य व बलशाली आणि आरोग्य संपन्न राष्ट्राची निर्माती होत असते म्हणून व्यायाम करणे गरजेचे आहे.

डॉ. गणेश रमेश सिंहासने डॉ. महेश रंगराव पाटील

संदर्भ :

1. बात्रा, एस. (२०१२) २० मिनिटे तंदुरुस्तीसाठी, ३ री आवृत्ती, मेहता पब्लिकेशन हाउस, पुणे.
2. जीवनाची गुणवत्ता एक अभ्यास आंतरराष्ट्रीय सामाजिक संस्थेचा.
3. Beers, Mark H., MD, and Robert Berkow, MD., editors. "Psychiatry in Medicine." In *The Merck Manual of Diagnosis and Therapy*. Whitehouse Station, NJ: Merck Research Laboratories, 2004.
4. Patwardhan, S. (2001). *Income for whom? Why stress for doctors for themselves - the root and cure of many disease*.
5. Pelletier, Kenneth R., MD. *The Best Alternative Medicine, Part I, "Spirituality and Healing*.
6. "New York: Simon & Schuster, 2002.
7. Organizations
8. Centers for Disease Control and Prevention. 1600 Clifton Rd., NE, Atlanta, GA 30333. (800) 311-3435, (404) 639-3311. <http://www.cdc.gov>.
9. National Child Traumatic Stress Initiative. Center for Mental Health Services, Substance Abuse and Mental Health Services Administration, Department of Health and Human Services, 5600 Fishers Lane, Parklawn Building, Room 17 C-26, Rockville, MD 20857. (301) 443-2940. http://www.nctsnct.org/nctsnct/nav.do?pid=hom_main.
10. National Institute of Mental Health (NIMH). 6001 Executive Boulevard, Room 8184, MSC 9663, Bethesda, MD 20892-9663. (301) 443-4513. <http://www.nimh.nih.gov>.
11. medical-dictionary.thefreedictionary.com/stress
12. The American Institute of Stress. 124 Park Avenue, Yonkers, NY 10703 (914) 963-1200. Fax: (914) 965-6267. <http://www.stress.org>.
13. <https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/stress-management/>
14. www.health.harvard.edu/healthbeat/exercise-advice-for-people-with-heart-problems

15. <https://www.wisegeek.com/what-is-quality-of-life.htm>
16. <https://www.health.harvard.edu/healthbeat/exercise-advice-for-people-with-heart-problems>



dg
T314

Principal,
Babasaheb Chitole Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

INDEX

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|---|-----------------------------------|----------|
| 1 | Working Women: Problems and Solutions | Dr. Abhay Shinde | 1 |
| 2 | SHGs: Women Empowerment and Managerial Approach | Prof. Sulakshana Hari Koli | 4 |
| 3 | Guardians of the Green -Contribution of Indian Women Environmentalist | Dr.Prachi Sharad Patharkar | 7 |
| 4 | The Role of Women in Agricultural Marketing | Dr. Durga Anil Pande | 10 |
| 5 | Women Empowerment In India With Economic Perspective | Dr. Sujata Shivaji Gadakh | 15 |
| 6 | प्रजासत्ताक भारत आणि महिलांचा मताधिकार | प्रा. डॉ. बबिता प्र. येवले | 19 |
| 7 | भारतीय समाजात महिलांची स्थिती | प्रा.डॉ.शरद जा.वाघोळे | 23 |
| 8 | भारत की नं. १ मुस्लिम महिलाएँ | डॉ. शाहेदा मुनाफ | 26 |
| 9 | महिलांचे आर्थिक सबलीकरण | प्रा.सौ.सुषमा सु. जाजु | 29 |
| 10 | भारतीय संविधान व महिला | प्रा. प्रफुल ई. ढोके | 33 |
| 11 | महिला बचतगट : समस्या व उपाय आणि सबलीकरण | प्रा.चव्हाण ओ.डी. | 38 |
| 12 | महिला सक्षमीकरणाची दशा व दिशा : ऐतिहासिक परामर्श | प्रा. शरद बाबुराव सोनवणे | 42 |
| 13 | भारतीय महिलांचा दर्जा व राजकीय सहभाग | प्रा.शहाणे रंजना प्रल्हादराव | 47 |
| 14 | ग्रामगीतेतील स्त्री विषयक दृष्टीकोण. | डॉ. प्रवीन कारंजकर | 50 |
| 15 | महिलाओं की सामाजिक व राजनीतिक उडान | डॉ.विभा देशपांडे | 56 |
| 16 | भारतीय महिलांच्या दिशा आणि दशा | डॉ. देविदास श्रीराम भगत | 59 |
| 17 | तीन तलाख कायदा आणि मुस्लीम स्त्री | प्रा.तळणीकर एस.जी. | 63 |
| 18 | घरेलू हिंसा और महिला संरक्षण अभिनियम | डॉ. सविता व्ही. रूक्के | 66 |
| 19 | पर्यावरण संरक्षणात महिलांची भूमिका | डॉ. मीना कृष्णराव रोकडे | 71 |
| 20 | आर्थिक विकासात महिलांचे योगदान | प्रा.डॉ.कृष्णा शंकर शहाणे | 76 |
| 21 | पर्यावरण संरक्षणात महिलांची भूमिका | प्रा.डॉ. दिलीप निळकंठराव लांजेवार | 80 |
| 22 | 'मुस्लीम निकाह में महिलाओं की स्थिती' | डॉ. फिरोज एस. खान | 86 |
| 23 | भारतीय समाजात महिलांची स्थिती | प्रा. स्नेहा शामकुवर | 91 |

| | | | |
|----|---|-----------------------------------|-----|
| 24 | पंचायती राज .आणि महिला सक्षमिकरण | प्रा. नथ्यु पाचुसिंग पडवाल | 96 |
| 25 | भारतीय समाजात कोलाम आदिवासी महिलांचे स्थान | प्रा.डॉ.रश्मी प्रविण गजरे | 100 |
| 26 | स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्त्री स्वतंत्रता का विकास : विश्लेषणात्मक अध्ययन | प्रा.सौ. प्रतिभा टावरी | 104 |
| 27 | महिला सक्षमीकरण आणि भारत सरकारच्या विविध योजना — एक अभ्यास | डॉ.ओमप्रकाश बबनराव मुंदे | 110 |
| 28 | महिला सक्षमीकरण और हमारे मौलिक अधिकार | प्रा. डॉ. कु. अंजुम नाहीद रउफ खान | 116 |
| 29 | Portrayal of Exploitation of Tribal Women in The Adivasi Will Not Dance | Dr.Umesh P. Patil | 118 |
| 30 | महिला सबलीकरण आणि वास्तव | डॉ.माया एस. वाटाणे | 122 |
| 31 | Role of Women in Indian Polifics | Dr. P. N. Ladhe | 126 |
| 32 | Women's contribution in Indian politics and Panchayat Raj | Dr.R.P.Gawande | 131 |
| 33 | गानसरस्वती सौ. किशोरी अमोनकर यांचे सांगीतिक योगदान | प्रा. शिवदास वि.शिंदे | 134 |
| 34 | महिला चळवळीचा उदय : एक संक्षिप्त आढावा | डॉ. बालाजी भोसले | 137 |
| 35 | प्रतिभावंत महिला डॉ. आनंदीबाई जोशी प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर | | 140 |
| 36 | Women and the protecting laws | Dr. Suyog S. Ingle | 144 |

प्रतिभावंत महिला डॉ. आनंदीबाई जोशी

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी ता. पलूस, जि. सांगली

मोबाईल नं. ९९७०६४४२८१

देशात आणि विदेशात अनेक धाडसी, कल्पक, हुशार, कर्तबगार, प्रतिभासंपन्न महिला होवून गेल्या आहेत. होवून गेलेल्या महिलांची प्रेरणा, आचार, विचार, ज्ञान, अनुभव, शिक्षण आणि संस्कार आत्मसात करून सध्या असंख्य महिला विविध क्षेत्रात अतुलनीय कार्य करीत आहेत.

स्वातंत्र्य पूर्व काळात स्त्रियांच्याकडे पाहण्याचा दृष्टिकोन, नकारात्मक, संकुचित व पूर्वग्रह दूषित होता. उदा. स्त्री म्हणजे फक्त एक उपभोगाची वस्तू आहे. स्त्री ची जागा ही चुली जवळच असते. चूल आणि मूल सांभाळणे हेच तिचे काम आहे. स्त्रीयानी कोणत्याही कामात पुढे पुढे करू नये, पतीच्या धाकात व मर्जीतच राहावे इत्यादी नियम, बंधने पारंपारिक व बुरसटलेल्या, कर्मठ विक्षिप्त, मनोवृत्तीच्या लोकांनी स्त्रीयाना गुलामगिरीच्या बेडीत जखडून ठेवले होते. त्यामुळे स्त्रियाची प्रगती होत नव्हती. पण बदल हा समाजाचा स्थायीभाव आहे.

भारतीय प्रतिभावंत स्त्रीयांचा विचार केल्यास “तमसो मा ज्योतिर्गमय” समाजातील स्त्रीयांनी अंधारातून प्रकाशाकडे घेवून जाण्याचे काम बहिणाबाई चौधरी, जनाबाई, मुक्ताबाई, पं रमाबाई, सावित्रीबाई फुले, राणी लक्ष्मीबाई, इंदिरा गांधी, किरण बेदी, सुनिता विल्यम्स इ. अशी हजारो नावे सांगता येतील.

सध्या महिलांनी “हम भी कुछ कम नहीं”, “स्त्री म्हणजे अबला नाही तर जी सबला” आहे हे आपल्या कर्तृत्वाने सिद्ध केले आहे. स्त्रिया पुरुषांच्या बरोबरीने किंवा त्या ही पेक्षा सरस कार्य करून आपले अस्तित्व टिकवून ठेवले आहे. सध्या शेती, उद्योग, व्यापार, वहातूक, दळणवळण, शिक्षण, आरोग्य, शोध, संशोधन, कला, साहित्य, संगीत, समाजकारण, अर्थकारण, व राजकारण या सारख्या क्षेत्रात आपल्या कार्याचा ठसा उमटविले आहेत. थोडक्यात सायकलचे पंचर काढण्याच्या कामापासून विमान चालविण्या पर्यंतचे कार्य स्त्रिया करीत आहेत. अशीच एक जिद्दी, धाडसी, कल्पक व हुशार प्रतिभासंपन्न भारतातील पहिल्या महिला डॉ. म्हणजे आनंदी बाई जोशी होय.

१.१ शोधनिबंधाची उद्दिष्ट्ये :

- १ डॉ. आनंदीबाई जोशीच्या काळातील तत्कालीन परिस्थितीचा अभ्यास करणे.
- २ डॉ. आनंदीबाई जोशी यांच्या गुण वैशिष्ट्ये यांचा अभ्यास करणे.
- ३ डॉ. आनंदीबाई जोशीना शिक्षण घेण्यासाठी प्रेरणा देणाऱ्या घटकांचा अभ्यास करणे.

१.२ संशोधन, शोधनिबंधांची गृहितके :

- १ स्त्रीयांच्या मनात प्रबळ इच्छाशक्ती असल्यास कोणत्या ही परिस्थितीवर मात करता येते.
- २ डॉ. आनंदीबाईना वैदयकिय क्षेत्रात यश मिळाले पण समाधान मिळाले नाही.
- ३ डॉ. आनंदीबाई जोशी यांच्यावर पतीच्या अपेक्षांचे ओझे होते.
अधिक पडलेला आहे.

१:३ संशोधन अभ्यास पध्दती :

संशोधन अभ्यासामध्ये दुय्यम साधन सामुग्रीचा वापर केला आहे. यामध्ये संदर्भ ग्रंथ, पुस्तके, यु ट्युब व इंटरनेट वरील माहिती, दैनिक वर्तमानपत्र इ. वापर केला आहे.

१:४ समस्यासूत्रन :

स्माजात अशा अनेक स्त्रीया आहेत ज्यांच्याकडे अनेक सुप्त कलागुण आहेत. मनामध्ये जिद्द आहे. कष्ट करण्याची धमक आहे. उच्च शिक्षण घेवून सावित्रीबाई फुले यांनी स्त्री शिक्षणाचा घालून दिलेला पाया भक्कम करून घराण्याचे व देशाचे नाव उज्वल करु. पण दुर्दैवाने काही स्त्रीयांना, आई वडील, काहीना आपल्या पतीची, काहीना आपल्या समाजातील लोकांची तर काहीना सख्या भावाची योग्य वळी योग्य पध्दतीने साथ मिळत नाही. दबाव, दडपण, भिती, अहंकार किंवा चांगली वाईट परिस्थिती यामुळे इच्छा, आकांक्षा व स्वप्नांना मुरड घालवी लागते किंवा जाणीव पूर्वक घातली जाते. अशा असंख्य स्त्रीयांचा अभ्यास करणे हा संशोधन अभ्यासाचा हेतू आहे पण संशोधन अभ्यासाला शेवटी मर्यादा असल्याने असंख्य प्रतिभासंपन्न स्त्रीया पैकी स्वताच्या कर्तृत्वाने, जिद्द, चिकाटी व प्रामाणिक प्रयत्न करून, समाजाचा दबाव, पतीचे अपेक्षांचे ओझे, यातना, तिरस्कार दुःख, भिती, संशयीवृत्ती, त्याग, बलिदान या सारख्या असंख्य गोष्टीला यशस्वीपणे टक्कर देवून परदेशात जावून वैदयकिय क्षेत्रातील (M.D) एम. डी. ची पदवी घेणारी भारतातील पहिली महिला डॉक्टर म्हणून जे यश मिळविले आहे ही अभिमान स्पद कागगिरी वर्तमानकाळातील व भविष्यकाळातील महिलांना प्रेरणा देणारी ठरली आहे.

संध्या सावित्रीबाई, आनंदीबाई, राणी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई यांनी घालून दिलेल्या पायावर सध्या असंख्या स्त्रीया आपल्या कार्याने कळस चढविण्याचे काम करीत आहेत. उदा. डॉक्टर, वकील, जज्ज, इंजिनियर, शिक्षिका, महापौर, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, पंतप्रधान, राष्ट्रपती पर्यंत स्त्रीयांनी मजल मारली आहे.

१:५ डॉ आनंदीबाई जोशी यांची गुण वैशिष्टे:

आनंदीबाई जोशी यांचा जन्म १८६५ मध्ये पुण्यात झाला. त्यांचा कालखंड १८६५ ते १८८७ पर्यंत आहे. म्हणजे अवघ्या २२ वर्षांच्या काळात जे कार्य केले आहे त्याला इतिहासात तोड नाही. आनंदीबाईंची घरची परिस्थिती बेताची होती. लहानपणापासून हुशार, जिज्ञासू, कल्पक व धाडसी होती. त्यांना लहानपणी उंची कपडे परिधान करणे, अलंकार घालून नटने, विविध प्रकारचे मैदानी खेळ खेळणे, व्यायाम करणे, पुस्तके वाचण्याचा खूप छंद होता. त्या काळात स्त्रियांच्याकडे पाहण्याचा दृष्टीकोन पूर्वग्रहदूषित होता. शिक्षण घेणे, घरा बाहेर बिनधास्त बाहेर जाणे. अनोळखी पुरुषाबरोबर संवाद साधणे, समाजातील नियमां विरुद्ध कपडे परिधान करणे इ. गोष्टीला पांढिंबा दिला जात नव्हता. लहानपणी मुलींची लग्ने लावून देण्याची पध्दत होती. याला आनंदीबाईंचे घर सुध्द अपवाद नव्हते. "घरात नऊ वर्षांची पोर म्हणजे बापाच्या जीवाला घोर" अशी अवस्था होती. आनंदी बाईंचे वडिल लवकरात लवकर तिचे लग्न लावून देण्याच्या तयारीत होते व आई तिला शाळा शिकण्यासाठी परवानगी देत नव्हती. सतत मारहाण करून घरातील कामाला लावत असे. मध्यम शरीर प्रकृती, सावळा रंग पण कुशाग्रबुद्धीची आनंदीबाई होती. वडील लग्नासाठी उताविळ होते पण कुठे ही लग्न जुळत नव्हते. शेवटी नऊ वर्षांच्या आनंदीचे लग्न तिच्या पेक्षा वयाने १५ वर्षांनी मोठा व विधुर गोपाळराव जोशी या व्यक्ती बरोबर विवाह संपन्न झाला होता.

१:६ नाव आनंदी पण जीवनात दुःखच अधिक :

आई वडिलांनी आपल्या लाडक्या कन्येचे नावे "आनंदी" ठेवले होते पण दुर्दैवाने या नावाला गालंबोट लागले. आनंदीबाईंच्या बालपणात, संसायत; शिक्षणात, पती पत्नी यांच्या सहवासात सुख, शांती, आनंद या पेक्षा दुःख, यातना, तिरस्कार, संशय, भिती, दबाव, दडपण, आज्ञापालने, मनाविरुद्ध घडणाऱ्या गोष्टी जास्त होत्या. तिचा पती खूप विक्षिप्त स्वभावाचा होता. संशयी स्वभावाचा होता. मनात चांगले विचार पण कृती वेगळी केली जात होती. उदा. आनंदीबाईंचे शिक्षण पुढे चालू ठेवण्याच्या अटीवर आनंदीबाई बरोबर विवाह संपन्न झाला होता. पण सुरुवाती पासून विधवा विवाहाचा पुरस्कार त्यांनी केल्या होता व विधवा महिला बरोबर लग्न करणार असे म्हणत होते. पण शेवटी मूळ विचार बाजूला ठेवून नऊ वर्षांच्या आनंदीला ते करून घेतले होते. पण लग्नानंतर आनंदीबाईंचे खूप शिकावे व मोठी डॉक्टर व्हावी अशी त्यांची इच्छा होती. पण या कामासाठी त्यांनी आपल्या पत्नीवर खूपच दबाव व दडपण आणले होते. यामुळे आनंदी या नावाचे दुःखात रूपांतर झाले होते. आई शिक्षण घेवू देत नव्हती तर पती शिक्षणासाठी घरातील कामे करू देत नव्हता. त्यामुळे आनंदीबाईंचे जीवन म्हणजे एक फूटबॉल झाले होते. यामुळे आनंदीबाईंना त्यांच्या जीवनात फारसा आनंद कधी मिळाला नाही हे सत्य आहे. इच्छा असताना सुध्दा त्यांना अनेक गोष्टीवर मुरड घालून घ्यावी लागत होती. इच्छा, आकांक्षा, स्वताचे मत, भावना यांना फारसे महत्व कधी मिळाले नाही.

१:७ आनंदीबाईंची कथा आणि व्यथा :

आनंदीबाईंचे पती खूप हुशार व अभ्यासू होते. विधवा पुनर्विवाहाला चालना देणारे होते. पोस्टात नोकरी करीत होते. प्रबोधन करण्याची आवड होती. आनंदीबाई वैद्यकीय शिक्षण घेवून, डॉक्टर व्हावे ही त्यांची इच्छा होती. त्यासाठी त्यांनी सुरुवातीला खूप प्रयत्न केले. ख्रिस्तमशनच्याकडे पत्र व्यवहार करून अमेरिकेला शिक्षणासाठी पाठविण्याचा पर्यंत त्यांचा महत्वाचा वाटा होता.

पण आनंदीबाईंचे पती खूप विक्षिप्त स्वभावाचे व संशयी वृत्तीचे होते. आनंदीबाईंना ते सतत दबाव व दडपणाखाली ठेवण्याचा त्यांनी प्रयत्न केला होता. त्यामुळे अप्रत्यक्षपणे आनंदीबाईंचे नटने, चांगली कपडे परिधान करणे, त्यांना आवडत नसे. अलंकार घातलेले आवडत नव्हते. सुरुवातीला पत्नीला सोबतीने फिरायला घेवून जाणे, अभ्यास करण्यास वेळ मिळावा म्हणून घरातील काम करून देणे अशा प्रकारचे सहकार्य केले. पण स्वताच्या अपेक्षेचे ओझे सतत तिच्यावर लादले होते. त्यामुळे पतीची सेवा करणे व मर्जी सांभाळण्यात तिची शक्ती व्यर्थ जात होती. उदा. आनंदीबाईंना झाला होता. पण तो लहान असताना आजारी पडला होता. दुर्दैवाने त्याला वेळेवर वैद्यकीय उपचार न मिळाल्यामुळे तिला आपला मुलगा गमवावा लागला होता. या दुःखातून तिला बाहेर पडण्यापूर्वी तिच्या विक्षिप्त व लहरी स्वभावाच्या पतीने दबाव टाकून जबरदस्तीने अभ्यास करण्यास सांगितले होते. जेव्हा आनंदीबाई अमेरिकेत वैद्यकीय शिक्षण घेत होत्या तेव्हा वेश बदलून संन्याशीचे रूप घेवून अमेरिकेत त्यांना भेटले होते. तसेच एकदा आनंदीबाई अमेरिकेत समुद्र किनारी फिरत असताना (पामिलाने) फोटोग्राफरने फोटो घेतला. तो फोटो आनंदीबाईंने आपुलकीने, प्रेमाने आपल्या पतीला (गोपाळराव) पाठविला होता गावाकडे. फोटोत तिचा चेहरा हसरा होता व साडीचा पदर वाऱ्यावर उडत होता. फोटो पाहून विक्षिप्त मनाच्या पतीने पत्नीवर संशय घेतला व अमेरिकेत तिला एक पत्र लिहून पाठविले व म्हणाले फोटोत हसरा चेहरा दिसतोय पण तुम्ही कोणाकडे पाहून हसत होता ते सांगा? कोण आहे तो भाग्यवान? आपला पदर ढळला आहे. ऋषीमुनींना कसे वाटेल? असे पत्र वाचून आनंदीबाईंच्या मनाच्या अक्षरशः विध्या झाल्या होत्या. मनाला खूप वेदना होत होत्या पण अशा वाईट मनस्थितीत सुध्दा आनंदीबाई प्रथम

M.D वर्गात ची परीक्षा पास झाली. या सर्व घडामेडींवरून लक्षात येते की आनंदीबाईंच्या जीवनात, संसारात व शिक्षणात किती दुःख, तिरस्कार, अपमान सहन करावा लागला होता.

१:८ अमेरिकेतील मेरी कार्पेंटर महिलेची साथ :

स्त्री म्हणजे त्याग, नम्रता, श्रद्धा व सुजाणपणा याची मुर्ती असते. समाजातील सर्वच लोक वाईट नसतात व सर्वच लोक चांगली नसतात. म्हणून हे विश्व तरले आहे. आनंदीबाईंच्या वैदिकीय क्षेत्रातील यशात अमेरिकेतील कार्पेंटर बाईंचा सिंहाचा वाटा आहे. जेव्हा आनंदीबाई परदेशात शिक्षणासाठी एकटी जाण्यास निघाली तेव्हा समाजात मोठे वादळ निर्माण झाले होते. आई वडील, सासू सासरें, समाज या सर्वांनी धर्मबुडीचे वादळ उठविले. पत्येक जन विरोध केला होता. काहींनी तर आनंदीच्या विरोधात पोलिसात तक्रार केली. पण आनंदीबाई आपल्या निर्णयावर ठाम होत्या. त्यांनी धाडस करून एकटीने अमेरिके पर्यंतचा प्रवास केला. तिथे कार्पेंटर बाईंनी स्वताच्या मुली प्रमाणे तिचा संभाळ केला. तिच्या सुख दुःखात आधार देवून प्रोत्साहन देवून डॉक्टर होण्याचे स्वप्न पूर्ण केले. अमेरिकेत असताना सुध्दा आनंदीबाईंनी भारतीय रितीरिवाज सोडले नाहीत. आपले पावित्र्य अबाधित राखले होते. आनंदीबाईंचा आपल्या धर्मावर खूप विश्वास होता. देशावर खूप प्रेम व श्रद्धा होती. डॉक्टर होवून देशसेवा करता यावे म्हणून अनेक संकटावर मात करून भारतातील पहिला महिला (M.D) डॉक्टर होण्याचा मान मिळविला. जगभर तिचे कौतुक, मानसन्मान होवू लागले.

१:९ देश सेवेचे स्वप्न अपुरे राहिले :

आनंदीबाई जेव्हा डॉक्टर झाल्या तेव्हा तिचे यश, किर्ती, पद, प्रतिष्ठा सर्वत्र होणारे सत्कार समारंभ हे तिच्या विक्षिप्त स्वभावाच्या पतीला बघविले नाही. पतीच्या मनात तिच्या यशाबद्दल तिरस्कार निर्माण झाला होता. आनंदीबाईंनी यश मिळविले पण आनंद, समाधान हरविले होते. कारण त्याची शरीर प्रकृती त्यांना साथ देत नव्हती. त्यांना क्षयरोगाने गाठले होते. मनातल्या मनात काळजीने खंगत होत्या. कारण देशाची सेवा करता येत नाही हे त्यांना दिसून आले होते. देशात परतल्यावर त्यांचा सन्मान करण्यात आला होता. आनंदीबाईंचे बालपणापासून ते डॉक्टर होवू पर्यंतचा प्रवास थक्क करणारा होता. आनंदीबाईंनी स्वताच्या जीवनातला आनंद हरविला होता. तरी सुध्दा त्यांनी भारतातील पहिली डॉक्टर महिला होण्याचा जो मान मिळविला आहे. त्यातून देशाला व देशातील महिलांना जो आनंद मिळवून दिला आहे. त्याला इतिहासात तोड नाही. त्यांनी इतिहासाच्या पानावर दिव्य आनंद व कर्तृत्व कोरले आहे.

संदर्भसूची :

- १ डॉ. यशवंत पाटणे "चैतन्याचे चांदणे" संस्कृती प्रकाशन पंधरावी आवृत्ती २०१७ पान ७९
- २ सौ. माधवी कवि (संपादन) "१०१ श्रेष्ठ महिला संक्षिप्त चरित्र व विचारधन" विद्या भारती प्रकाशन पान ११३
- ३ डॉ. स्वाती कर्वे "१०१ कर्तृत्वान स्त्रीया" उत्कर्ष प्रकाशन
- ४ इंटरनेटवर उपलब्ध माहिती संकलन
- ५ यु टयुबवरील उपलब्ध माहिती संकलन



Principal,
Babasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Bhlwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

| | | |
|------------------|---|---|
| National Seminar | The New Miraj Education Society's Kanya Mahavidyalaya, Miraj (Maharashtra) | Special Issue 1 st February, 2020 |
|------------------|---|---|

INDEX

| Sr. No. | Author | Title of Paper | Page No. |
|---------|---|---|----------|
| 1 | Mr. Amar Raju Jadhav Mr. Sanjay Maruti Patil | An Analytical Study Of Problems And Issues Of Labours In Kolhapur City | 13 |
| 2 | Dr. Sunita Hansraj Ambawade | Role Of Ict In Social Science Research | 17 |
| 3 | Mrs. Varsha Raghunath Shinde | Advantages And Disadvantages Of Social Media For Society | 20 |
| 4 | Dr. Sheikh Rashida Begum Rahematulla | Role Of Sports In Society | 24 |
| 5 | Mr. Abhijeet Sadashiv Kharade | A Brief Review On History And Skills Of Volley Ball | 28 |
| 6 | Mr. Birajdar Vijaykumar Govindrao | Recent Trends in social Science Research | 32 |
| 7 | Mr. Akhilesh V. Shinde | Clean Village Campaign and Environmental Awareness in Maharashtra | 39 |
| 8 | प्रा.डॉ.टी.के. उदगीरकर श्री.अभिषेक लक्ष्मण सुतार श्री.अखिलेश शिवाजी गुख | भारतातील पीक विमा योजनेची प्रगती व आव्हाने | 42 |
| 9 | प्रा. सौ. डॉ. मंगल भास्कर माळगे | आर्थिक मंदी : भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील एक आव्हान | 46 |
| 10 | प्रेरणा दिलीप दीक्षित | २१ व्या शतकातील स्त्रीवादी चळवळी | 48 |
| 11 | प्रा. डॉ. ममता कार्तिक कन्नाडे प्रा.डॉ. शैलजा कालिदास माने | कोल्हापूर शहरातील गृहणीच्या सामाजिक दर्जाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास: विशेष संदर्भ सदर बाजार आणि ताराबाई पार्क प्रभाग | 52 |
| 12 | श्रीमती गावडे स्वाती आप्पासो | सेंट्रिय शेती काळाची गरज | 56 |
| 13 | डॉ. चन्ने विद्या पी. | भारतीय कृषी पुरक इतर व्यवसाय आणि स्त्री उद्योजिका | 60 |
| 14 | डॉ. गौतम खु. कांबळे | श्रम अर्थशास्त्राचे वर्तमान स्वरूप : विश्लेषण | 65 |
| 15 | कु. राणी महादेव कांबळे | सांगली जिल्ह्यातील स्त्री कामगारांचे कृषिक्षेत्रातील योगदान | 69 |
| 16 | श्री. प्रसाद पांडुरंग दावणे | दारिद्र्य रेषा निश्चिती संदर्भात सुरेश नेडुलकर आणि सी. रंगराजन समितीची तुलनात्मक अभ्यास | 73 |
| 17 | प्रा. डॉ. उल्हास महादेव माळकर | दुग्ध उत्पादन, प्रक्रिया व विक्री संस्था : व्यष्टि आर्थिक अभ्यास | 77 |
| 18 | प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर | आधुनिकीकरणाचा मानवाच्या आरोग्यावर व आर्थिक विकासावर झालेला परिणाम | 80 |



आधुनिकीकरणाचा मानवाच्या आरोग्यावर व आर्थिक विकासावर झालेला परिणाम

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी
ता. पलूस जि. सांगली पिन कोड ४१६३०३
मो. नं. ९९७०६४४२८१, ८५५२८४११३३

प्रस्तावना :-

बदल हा समाजाचा स्थायीभाव आहे. मानवजात अश्मयुगातून आधुनिक युगात (म्हणजे ज्ञान, विज्ञान, तंत्रज्ञान) उत्क्रांती व क्रांतीच्या मार्गाने पोहचली आहे. मध्ययुगात समाजात अज्ञान, अंधश्रद्धा, दुःख, दारिद्र्य, बेकारी, विषमता, वाढती लोकसंख्या, गुलामगिरी, निकृष्ट राहणीमान, अनेक सोयीसुविधांचा अभाव या सर्व कारणामुळे समाज अंधार युगात वावरत होता. लोकसंख्येच्या संक्रमण आवस्थेत जन्मदराचे प्रमाण जास्त व मृत्यू दराचे ही प्रमाण जास्त होते. परंतु उपलब्ध लोकामध्ये सुविधा ही कमी व लोकांच्या गरजा ही कमी. त्यामुळे (पैशाचा वापर न करता) परस्परांच्या गरजा परस्परांमध्ये भागवून सुखी व स्वयंपूर्ण जीवन जगत होते. वेळ प्रसंगी झाडपाला, फळे, कंदमुळे, भाजीपाला (रानमेवा), मृत/सजिव प्राण्यांचे मांस खावून जगत होते. तरी सुध्दा त्यांची शरीर प्रकृती बळकट/कार्यक्षम होती. निसर्गातील कोणत्याही परिस्थितीला यशस्वीपणे तोंड देण्याची क्षमता लोकांच्याकडे होती.

पण सध्या आधुनिकीकरणामुळे विकासाच्या गोंडस नावाखाली मानवी जीवन विनाशाकडे वाटचाल करित आहे. "अति तिथं माती" ही म्हण रास्त ठरविली जात आहे किंवा प्रसिध्द अर्थतज्ञ कार्लमार्क्स यांनी म्हटल्याप्रमाणे "मानवाच्या विकासातच विनाशाची ही बीजे रूजलेली असतात" हे खरे ठरत आहे. Health is Wealth म्हणण्या ऐवजी Money is Wealth म्हणून व्यवहार करित आहे.

१.१ संशोधन अभ्यासाची उद्दिष्टे :-

- १) वेगवेगळ्या क्षेत्रातील आधुनिकीकरणामुळे मानवाच्या आरोग्यावर झालेल्या परिणामाचा अभ्यास करणे.
- २) मानवी आरोग्य व आर्थिक, सामाजिक विकास यांच्या सहसंबंधाचा अभ्यास करणे.
- ३) मानवाला अनावश्यक उपभोग प्रवृत्तीवर आळा घालण्यास प्रवृत्त करणे.

१.२ संशोधन अभ्यासाची गृहितके :-

- १) शेती, उद्योग व वहातूक क्षेत्रातील आधुनिकीकरणामुळे मानवी आरोग्य धोक्यात येत आहे.
- २) मानवाच्या अकार्यक्षम आरोग्याचा मानवी कल्याणावर परिणाम होत आहे.
- ३) आधुनिकीकरणाचा मानवी आरोग्यावर व विकासावर होत असलेल्या परिणामास समाज शासन जबाबदार आहे.

१.३ संशोधन अभ्यास पध्दती :-

संशोधन पध्दती मध्ये मी प्राथमिक व दुय्यम साधनाचा वापर केला आहे. कारण विकास ही एक प्रक्रिया आहे. कोणत्या ही एका घटकामुळे विकास घडून येत नाही व आरोग्य सुध्दा कोणत्या ही एका घटकामुळे बिघडत नाही. दोन्ही घटकाला असंख्य घटक कारणीभूत असतात. म्हणून यामध्ये निरीक्षण, प्रत्यक्ष भेटीचा, मुलाखतीचा वापर केले आहे.

मांडला आहे. उदा. यूरोप खंडात भारतीय हापूस आंब्यावर, द्राक्षेवर घातलेली बंदी, तसेच आखाती देशात भारताच्या हिरव्या मिरचीवर घातलेली बंदी हे उत्तम उदाहरण आहे. भारतात मोठ्या प्रमाणावर केळी, आंबा, द्राक्ष, केमिकल वापरून पिकवितात (कॅल्शियम कार्बाईड, इथरेल, सुदानरेड, मॅथेनॉल यलो, लेड क्रोमेट इ.) तसेच डाळी, तेलबिया रिफाईन्ड पॉलिश करतात, संत्री, सफरचंद चमकण्यासाठी त्याला मेन लावतात. पुणे, मुंबई येथील भाजीपाल्याचे नमुने घेवून संशोधन केल्या नंतर भाजीपाला, टोमॅटो, वांगी, कारली, काकडी, मिरची, कोबी यामध्ये किटक नाशकांचे अंश सापडले आहेत. तसेच गाय किंवा म्हैस यांना जास्त दूध देण्यासाठी ऑक्सी टॉनिक नावाचे औषध देतात. थोडक्यात दूध सुद्धा आरोग्याला घातक आहे हे पेरा या संस्थेने सर्वेक्षणातून सिध्द केले आहे.

या गोष्टीचा परिणाम मानवाच्या आरोग्यावर होत आहे. उदा. थकवा, मळमळ, उलटी, अतिसार, मधुमेह, लकवा मारणे व किडनी हृदयरोग, चक्कर येणे, मेंदूज्वर, कॅन्सर इ. आजारांचे प्रमाण वाढले आहे. उदा. सध्या शिरोळ तालुका (जि. कोल्हापूर) हा कॅन्सरग्रस्त तालुका म्हणून घोषित केलेला आहे. थोडक्यात वेगवेगळ्या आजारांमुळे मानवाची प्रतिकार शक्ती व कामकरण्याची कार्यक्षमता कमी झाली आहे. यामुळे अर्थव्यवस्था बिघडली आहे. उदा. मानवाची कार्यक्षमता घटली की उत्पादन कमी—नफा कमी — उत्पन्न कमी— बचत कमी— निकृष्ट राहणीमान— दारिद्र्य— बेकारी, विषमता— खून— मारामारी— अपहरण— चोरी या सारख्या अनेक समस्या निर्माण होतात.

१.६ उपाय :-

वरील समस्या दूर करण्यासाठी खालील गोष्टी करावेत.

- १) शेतीचे उत्पादने घेण्यासाठी रासायनिक खते व किटक नाशकांचे प्रमाण कमी करावे.
- २) अन्न व प्रशासन विभाग सक्रीय होवून गैरव्यवहारावर कडक कारवाई करावी.
- ३) मानवाने फळे व भाजीपाला मिठाच्या पाण्यात धुऊन घेवून त्याचे सेवन करावे.
- ४) उत्पादक व व्यापाऱ्यांनी स्वहित साधण्या पेक्षा समाजहित अधिक साधावे.
- ५) भारतात ग्राहक संरक्षण कायदा व चळवळ जाणीवपूर्वक राबविले पाहिजे.
- ६) शेतकऱ्यांनी माती व पाणी परिक्षण करून घेणे आवश्यक आहे.

संदर्भसूची :-

- १) डॉ. सौ व श्री किशोर पवार — नलिनी पवार “प्रदूषणातून पर्यावरणाकडे — नचिकेत प्रकाशन नागपूर — प्रथम आवृत्ती
- २) कृषी सेवा केंद्र विक्रेत्याशी प्रत्यक्ष चर्चा.
- ३) दैनिक लोकमत लक्ष्मण वाघ यांचा लेख (संकलित अभ्यास)
- ४) इंटरनेट मधील माहितीचा वापर, विविध दै. वर्तमान पत्रातील संकलित माहितीचा वापर केला आहे.



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

International Journal of Advance and Applied Research

Search

Volume 10(1) - 2021 - 2022 | ISSN: 2347-7075 | Monthly Review | (1007-0410)

HOME

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAAR) is a **multidisciplinary** research journal, published **bi-monthly**. This is a double-blind peer-reviewed refereed journal. Our Editorial and Advisory members are leading investigators in universities, research institutes of government, and industry with research interests in the general subjects.

ISSN - 2347-7075
Impact Factor - 7.328

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

Journal Indexing

Publisher: P. R. Talekar,
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur (MS)

Young Researcher Association

+ journal indexing



dg
Principal,
Bahasaheb Chitambar Mahavidyalaya
Bhilawadi, Tal. Palas, Dist. Sangli.

| Sl. No. | Author Name | Title of the Paper | Page No. | Download Link |
|---------|---|--|--------------|---------------|
| 208 | डॉ. अशोक शिंदे | पर्यावरण प्रदूषण: वर्तमान स्थिति व भविष्यवाणी | 950 to 951 | Download |
| 209 | डॉ. अशोक शिंदे | पर्यावरण प्रदूषण: वर्तमान स्थिति व भविष्यवाणी | 952 to 960 | Download |
| 215 | डॉ. अशोक शिंदे | पर्यावरण प्रदूषण: वर्तमान स्थिति व भविष्यवाणी | 960 to 969 | Download |
| 216 | डॉ. अशोक शिंदे | पर्यावरण प्रदूषण: वर्तमान स्थिति व भविष्यवाणी | 970 to 972 | Download |
| 217 | डॉ. अशोक शिंदे | पर्यावरण प्रदूषण: वर्तमान स्थिति व भविष्यवाणी | 973 to 978 | Download |
| 218 | डॉ. अशोक शिंदे | पर्यावरण प्रदूषण: वर्तमान स्थिति व भविष्यवाणी | 979 to 981 | Download |
| 219 | डॉ. लता शिवाजी पाटील, श्रीमती संगीता बाबासाहेब माने | शिक्षण शास्त्र विषयातील संशोधन क्षेत्राचे विश्लेषण | 982 to 985 | Download |
| 220 | अपर अण्णा बुल्ले | युरोपीयन, अमेरिकन, भारतातील कामगार संघटना यांचा तुलनात्मक अभ्यास | 986 to 994 | Download |
| 221 | Dr. Ajay Tiwari | Conducting Literature Review: Purpose And Process A Study Of Research Methodology In Geography With Reference Nep 2020 | 995 to 996 | Download |
| 222 | Dr. Nidhi Mishra | Major Trends in ELT In 21st Century | 997 to 999 | Download |
| 223 | Dr. Asmita Prajakt Patil | Relevance Of Comparative Research In Law | 1000 to 1002 | Download |
| 224 | Rajniya I axmichand Patel, Dr Jagdishbhai K. Patel | A Comparative Analysis Of Redington Ltd And Compuage Infocom Ltd On The Base Of Liquidity | 1003 to 1006 | Download |
| 225 | Mr. Sanjay A Patel, Dr. Jogendra Sing | Effect Of Strength Training On Physical Fitness Variables Of Intercollegiate Volleyball Players | 1007 to 1009 | Download |
| 226 | Mr. Sonu Chenan | A Study On The Effect Of Online Marketing On Present Generation Customer Buying Behaviour | 1010 to 1011 | Download |
| 227 | Dr. Sushant T. Magdum | Positive Impact Of Psychological Healthiness Of Diabetic Patient Through Meditation | 1012-1014 | Download |
| 228 | Dr. Pankaj Chaudhary | Achievement Motivation Of Inter College Cricket Sports Participants A Study | 1015-1017 | Download |
| 229 | डॉ. अशोक शिंदे | शैलापरु जिल्ह्यात पंचवीन वैदिक धर्माचा प्रसार | 1018 to 1021 | Download |
| 230 | Sabuj Sau, Dr. Kedar Nath Dey | Technological Competencies Of Teachers For The Use Of ICT | 1022 to 1028 | Download |
| 231 | Dr. Ramesh B. Jaybhaye, Geeta P. Kharat | Searching For Identity: Indian Women In Dilemma 'Identity Of Woman In Society | 1029 to 1031 | Download |
| 232 | डॉ. आनंद बाबिया | मातृभाषांनी दायश्रीरा कविता - मडक टेकारवीना सर्जन संदर्भ अथवा अर्थ संदर्भ. | 1032 to 1034 | Download |
| 233 | भा.म.टी. प्रभु अशोकसाठ | भेवडी भूमिका लजवती स्त्रीओनी भूमिका संघर्ष-श्रेक समाजशास्त्रीय अर्थ्यास | 1035 to 1041 | Download |
| 234 | Da^..sapkaL ra,maoSvar ivak'ma | Da^..baabaasaahoba AaMbaoDkr yaaMcao kamagaarivaYayak ivacaar va kaya- | 1042 to 1044 | Download |

'कोरोना महामारीच्या काळात वाढलेल्या तणाव व जीवनाच्या गुणवत्तेवर व्यायामाचा होणाऱ्या परिणामाचा अभ्यास'

डॉ. गणेश रमेश सिंहासने^१ डॉ. महेश रंगराव पाटील^२

^१शारीरिक शिक्षण संचालक, कला, वाणिज्य व विज्ञान महिला महाविद्यालय, तामगाव

^२शारीरिक शिक्षण संचालक, सावायसहेतू नितले महाविद्यालय, भिलवडो

Corresponding Author- डॉ. गणेश रमेश सिंहासने

Email- ganesh1516@yahoo.com

Email- maheshpatil1352@gmail.com

गोषवारा

हा लेख तणाव आणि जीवनाच्या गुणवत्तेचे विव्हावलोकन प्रदान करतो. तणाव ही जीवनाच्या मागण्यांसाठी एक सामान्य मानसिक व शारीरिक प्रतिक्रिया आहे. या कोरोना महामारीच्या काळात लोक अधिक तणावपूर्ण जीवन जगत आहेत. तणावपूर्ण जीवनामुळे मानसिक त्रास वाढून अनेक व्याधि उद्भवतात आणि यामध्ये लोक मृत झालेले आहेत. या सर्व प्रभावातून बाहेर पडायचे असेल तर व्यायाम करणे अत्यंत गरजेचे आहे. आठवडयातून पाच दिवस किमान ३० मिनिटे मध्यम प्रकारचा व्यायाम करणे गरजेचे आहे. व्यायाम मानसिक व शारीरिक आरोग्यासाठी महत्त्वाचे मानले जाते. व्यायाम म्हणजे शारीरिक हालचाली होय. अनेक प्रकारे शारीरिक हालचाली करून आपण क्रियाकलाप करू शकतो. चालणे, धावणे, सूर्य नमस्कार इत्यादी हालचाली करून आपण शरीर तंदुरूस्त ठेवून आपला ताण कमी करू शकतो.

प्रस्तावना

२१ व्या शतकाच्या आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या युगात मानसिक ताणतणाव आरोग्यासाठी मोठी डोकंदुखी ठरली आहे. माझ्यामते त्याचे महत्त्वाचे कारण म्हणजे मततची होणारी धावपळ आणि स्पर्धात्मक स्वरूपाचे जीवन या दोन्हीमुळे आरोग्यावर मोठा परिणाम झालेला दिसून येतो आणि एकंदरीत याचा परिणाम जीवनशैलीवर होताना दिसत आहे. त्यात मानसिक ताणतणावही फार मोठी समस्या आहे. कारण मानसिक ताणतणावात वावरणाऱ्या व्यक्तीची निर्णय क्षमता खूप ढासाळलेली असते. त्यामुळे ती व्यक्ती आत्महत्या सारखे पर्याय निवडू शकते किंवा आरोग्याच्या समस्या त्याला सतत उद्भवतात, असे होत असताना अचानक सर्व जगावर आणखीन एक संकट ओढावले आहे. ते म्हणजे कोरोना महामारी. कोरोना महामारीने लोकांची जीवनाशीली बदलून गेली आहे. लॉकडाऊन मध्ये लोक घरी बसून होते. त्यामुळे कोणत्याही प्रकारचे शारीरिक कार्य, हालचाली करता आल्या नाहीत. शरीर अकार्यक्षम राहिल्याने स्थूलता वाढून मानसिक ताणतणाव वाढलेले आणि यातूनच लोकांना अनेक व्याधि होऊ लागल्या आहेत. म्हणून आज तणावमुक्त जीवनशैली व मानसिक संतुलन टिकवून ठेवायचे असेल तर व्यायामाशी मैत्री करावीच लागणार नियमित योग व व्यायाम शारीरिक हालचाली केल्याने व शारीरिक उपक्रमात सहभागी झाल्याने तणावाचे प्रमाण नियंत्रित ठेवता येते. जीवनाचा दर्जा म्हणजे नक्की काय? अनेक परिणामांची वेरीज म्हणजे जीवनाची गुणवत्ता. "यामध्ये मानसिक,

शारीरिक, भावनीक, सामाजिक, वर्तणूक इत्यादींचा समावेश होता." (JANSE), २००४, P ६५४५.
जीवनाची गुणवत्ता

जीवनाची गुणवत्ता हा शब्द लोक आणि समाजाच्या सामान्य कल्याणासाठी वापरला जातो. हे सहसा "जीवनमानाचा दर्जा" या संज्ञेशी आहे, परंतु दोन्हीचा अर्थ एकच असेल असे नाही. राहणीमानाचा दर्जा म्हणजे समाजातील व्यक्तीच्या संपत्तीचे आणि नोकरीच्या स्थितीचे मूल्यांकन. जीवनाची गुणवत्ता निर्धारित करणारे दोन्ही घटक असले तरी, हे त्याचे एकमेव सूचक नाहीत. एखाद्या व्यक्तीचे वातावरण, शारीरिक आणि मानसिक आरोग्य, शिक्षण, मनोरंजन, सामाजिक कल्याण, स्वातंत्र्य, मानवी हक्क आणि आनंद हे देखील महत्त्वाचे घटक आहेत.

तणाव :

तणाव म्हणजे वैयक्तिक दृष्ट्या कमी झालेला खंड आहे. वेगवान प्रवाहात हा एक अडथळ आहे. पर्यावरणीय मागण्या किंवा दबावांना जीवसृष्टीचा एकूण प्रतिसाद म्हणून तणावाची व्याख्या केली जाते.

तणाव ही जीवनाच्या मागण्यांविषयी एक सामान्य मानसिक आणि शारीरिक प्रतिक्रिया आहे. थोड्या प्रमाणात तणाव चांगले असू शकते, जे तुम्हाला उत्कृष्ट कामगिरी करण्यास प्रवृत्त करते. परंतु दररोज अनेक आव्हाने जसे की, उशीर झाल्यानंतर रहदारीमध्ये सापडणे, एखादे काम मुदतीत पूर्ण करणे, खेळातील कार्यमान, एखादयाशी भांडण आणि कही महत्त्वाची कामे करताना येणारा तणाव हा क्षमते पलीकडचा असतो. लहानपणापासून माणूस

अनेक गोष्टी करून असतो. व्यायामे चांगले काम आणि चाईत काम हे कळत नाही. पण जसजस आवणं सोडते होतो तसतसे आवाक्याला चांगल्या-चाईत्याची जाणवित होत जाते. पण तुम्ही तुमचे जीवन योग्य आणि चांगले जगण्याची प्रयत्न करू शकता. येशूनच तुमच्या जीवनाचा परास्वी प्रवास सुरू होतो. हाच परास्वी प्रवास माणसाला मोठ्या उंचीवर घेऊन जातो. म्हणजेच जीवनाचा दर्जा तयार होतो.

व्यायाम :

व्यायाम म्हणजे लयबध्द व शास्त्रसुद्ध पध्दतीने केल्या जाणाऱ्या शारीरिक हालचाली होय. शारीरिक स्वास्थ्य वाढविणारी आणि आरोग्य चांगले ठेवणारी क्रिया म्हणजे व्यायाम. नियमित व्यायामाने अनेक रोग टाळता येतात आणि शरीर निरोगी ठेवण्यास मदत होते. व्यायामाने शारीरिकच नव्हे तर मानसिक आरोग्य उत्तम राहते. नियमित व्यायामाध्ये ताणण्याचे व्यायाम, एरोबिक्स व श्वसनाचे व्यायाम यांचा समावेश असावा. व्यायाम केल्याने माणसाला नवीन उर्जा मिळते. व्यायामहा कोणत्याही वयातील व्यक्ती करू शकतो. बैठे व्यायामही करता येतात. व्यायामामुळे रोगप्रतिकारक शक्ती वाढते. यामुळे माणूस आनंदी रहातो. व्यायामामुळे आपली मानसिक व शारीरिक शक्ती वाढते.

व्यायामाचे प्रकार :

1. ताणण्याचे व्यायाम — योगासने, सुर्यनमस्कार.
2. एरोबिक्स व्यायाम — चालणे, धावणे, नृत्य, पोहणे, सायकल चालविणे.
3. श्वसनाचे व्यायाम — प्राणायाम.
4. शक्तीचे व्यायाम — वनज उचलणे.

निष्कर्ष :

कोरोना महामारीच्या काळात लोक अधिक तणावपूर्ण जीवन जगत आहेत. तणावपूर्ण जीवनामुळे मानसिक त्रास वाढून अनेक व्याधि उद्भवतात आणि यामध्ये लोक मृत झालेले आहेत. या सर्व प्रभावातून बाहेर पडायचे असेल तर व्यायाम करणे अत्यंत गरजेचे आहे. आठवड्यातून पाच दिवस किमान ३० मिनिटे मध्यम प्रकारचा व्यायाम करणे गरजेचे आहे. व्यायाम मानसिक व शारीरिक आरोग्यासाठी महत्त्वाचे मानले जाते. व्यायाम म्हणजे शारीरिक हालचाली होय. अनेक प्रकारे शारीरिक हालचाली करून आपण क्रियाकलाप करू शकतो. चालणे, धावणे, सुर्य नमस्कार इत्यादी हालचाली करून आपण शरीर तंदुरुस्त ठेवून आपला ताण कमी करू शकतो. व्यायामामुळे रोगप्रतिकारक शक्ती वाढते. यामुळे माणूस आनंदी रहातो. व्यायामामुळे आपली मानसिक व शारीरिक शक्ती वाढते. असे दिसून आले. शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास होऊन चारित्र्यसंपन्न व आरोग्य संपन्न व्हायचे असेल तर शारीरिक हालचालींची गुणात्मक वाढ व विकास होणे गरजेचे आहे. कारण यावरच कोणत्याही सामर्थ्य व बलशाली आणि आरोग्य संपन्न राष्ट्राची निर्माती होत असते म्हणून व्यायाम करणे गरजेचे आहे.

डॉ. गणेश रमेश सिंहासने डॉ. महेश रंगराव पाटील

संदर्भ :

1. पात्र, एम. (२०१२) ३० मिनिटे मंत्रालयासाठी, ३ वे आवृत्ती, मेडना पब्लिकेशन हाउस, पुणे.
2. जीवनाची गुणवत्ता एक अभ्यास आवाक्याचा सामाजिक संश्लेष.
3. Beers, Mark H., MD, and Robert Berkow, MD., editors. "Psychiatry in Medicine." *In The Merck Manual of Diagnosis and Therapy*. Whitehouse Station, NJ: Merck Research Laboratories, 2004.
4. Patwardhan, S. (2001). *Income for whom? Why stress for doctors for themselves - the root and cure of many disease*.
5. Pelletier, Kenneth R., MD. *The Best Alternative Medicine, Part I, "Spirituality and Healing*.
6. "New York: Simon & Schuster, 2002.
7. Organizations
8. Centers for Disease Control and Prevention. 1600 Clifton Rd., NE, Atlanta, GA 30333. (800) 311-3435, (404) 639-3311. <http://www.cdc.gov>.
9. National Child Traumatic Stress Initiative. Center for Mental Health Services, Substance Abuse and Mental Health Services Administration, Department of Health and Human Services, 5600 Fishers Lane, Parklawn Building, Room 17C-26, Rockville, MD 20857. (301) 443-2940. http://www.ncetsnet.org/ncets/nav.do?pid=hom_main.
10. National Institute of Mental Health (NIMH). 6001 Executive Boulevard, Room 8184, MSC 9663, Bethesda, MD 20892-9663. (301) 443-4513. <http://www.nimh.nih.gov>.
11. medical-dictionary.thefreedictionary.com/stress
12. The American Institute of Stress. 124 Park Avenue, Yonkers, NY 10703 (914) 963-1200. Fax: (914) 965-6267. <http://www.stress.org>.
13. <https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/stress-management/>
14. www.health.harvard.edu/healthbeat/exercise-advice-for-people-with-heart-problems

15 <https://www.wisegeek.com/what-is-quality-of-life.htm>

16 <https://www.health.harvard.edu/healthbeat/exercise-advice-for-people-with-heart-problems>



Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Talus, Dist. Sangli.



Search mail

3.3.21
of 2022

Compose

Inbox 9,521

Starred

Snoozed

Important

Sent

Drafts 62

Categories

Social 6,260

Updates 7,616

Forums 1,799

Promotions 13,220

More

Labels

CURRENT ISSUE – International Journal of and Applied Research

Inbox x



Vikas Kharade <vikaskharade3570@gmail.com>
to me

10:16 AM (15 min)

✓ <https://ijaar.co.in/current-issue/>

Reply

Forward

International Journal of Advance and Applied Research

ISSN - 2347-7075 (DOUBLE BLIND Peer Review) (E-ISSN: 2347-7075) (Research Journal)

Search...

Home

HOME

AIM & SCOPE

AUTHOR INFO

EDITORIAL BOARD

CURRENT ISSUE

PREVIOUS ISSUES

CURRENT ISSUE

Vol. 10 No. 1

September - October 2022

TABLE OF CONTENT

| Sr. No. | Name of Author | Title of Paper | Page No. | View/Download |
|---------|--------------------------------------|--|----------|---------------|
| 1 | Dr. Prakash Bhairu Bilawar | Cobot and Libraries | 1 to 6 | Download |
| 2 | Dr. Dhananjay Bhagwan Sutar | Web Scale Discovery Services in LIS: A New Platform for Effective and Remote Access to E-Resources | 7 to 9 | Download |
| 3 | Harshai Bhimsen Pawar | Implementation of Japanese 5S Methodology in the Libraries | 10 to 15 | Download |
| 4 | Vishwas Hase | Reading Club: An Alternative Framework for Academic Enhancement | 16 to 22 | Download |
| 5 | Arvind N. Dagale | The Impact of Book Club Conversations on Reluctant or Struggling Readers | 23 to 31 | Download |
| 6 | Mrs. Satvashila T. Salgar | Scamper Technique: In Perspective of Recent Trends in US Profession | 32 to 38 | Download |
| 7 | Mrs. Rupali Shyam Bhosale | Massive Open Online Courses (MOOCs) in India: A Golden Chance for Teachers, Students and Educators | 39 to 43 | Download |
| 8 | Dr. Vikas Vasant Rao Kharade | Best Practices and Quality Library Services | 44 to 49 | Download |
| 9 | Mr. Tanaji L. Kamble | Best Practices in the Modern Library | 50 to 54 | Download |
| 10 | Rajesh P. | Best Practices and Qualitative Library Services in Academic Libraries | 55 to 59 | Download |
| 11 | Sanjay N. More | Best Practices in the Chetana's Staff Mansabdhal Chhaganlal Library | 60 to 66 | Download |
| 12 | Ravindra R. Mangale | A Review of Best Practices in Library Resources in Academic Libraries | 67 to 74 | Download |
| 13 | Deepak S. Darandale Dr. R. H. Thorwe | Best Practices and Quality Library Services in Academic Libraries | 75 to 80 | Download |
| 14 | Mrs. Rupali Sanjaykumar Bansode | Best Practices for Quality Enhancement in S.S.G.M. Library | 81 to 84 | Download |
| 15 | Priyanka V. Hase Sandeep D. Walunj | Information Resources and Services in Engineering and Management Institutes: A Study | 85 to 91 | Download |

100% Double Blind Peer Reviewed
 100% Double Blind Peer Reviewed
 100% Double Blind Peer Reviewed



ISSN-2377-5

YOUNG RESEARCHER

International Journal of Advance and Applied Research





BEST PRACTICES AND QUALITY LIBRARY SERVICES

Dr. Vikas Vasant Rao Kharade

Babasaheb Chitale, Mahavidyalaya, Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

Corresponding Author - Dr. Vikas Vasant Rao Kharade

Email - vikaskharade3570@gmail.com

DOI - 10.5281/zenodo.7161125

Abstract:

In case of the Library the Librarian has to play very important and vital role. ICT plays important role in the development and best Practices in the sector of Library.

In the 21st century new Trends in Technology development, various ways like microforms, magnetic, apparatus, sound recording films, photos, and anther, Electronic media. In short Library of 21st century becomes paperless Library through internet.

Today so many ICT's are available in the service of Library in following manner.

Internet, News paper clipping service, Digitalization, Electronic reference, Inter Library loan, Electronic document delivery system, Electronic thesis and Dissertation, OPAC, E-Learning, Wi-Fi-Technology, 3m security system, C. C. T. V., Internet Based Service.

NAAC accreditation has truly managed to stir the academic Librarians to assume a proactive role in supporting the cause of higher education which aims at knowledge empowerment of the students.

These models and Techniques play vital role in best practices in the Library service. Internet and related with other facility. The Library works smoothly in day to days communication. According to NAAC the Library is important for all student in 21st century. The Library is not only the book circulation but it is the bank of knowledge. That is the main theme of the best practices of the Library. Library and Information science as an integral part for information profession of not only "Education for all" but also "Tomorrow".

Key Words: Best Practices, ICT, Internet Based service Librarian Role, Resources.

Introduction:

In the present day scenario and digital explosion, Library has become very important platform for the sharing new ideas, new information and new knowledge. Library and information services plays vital role in academic institution and research organization for the students, faculty member sand research scholars. Hence, higher education department of India has established NAAC (National accreditation for assessment

council) for improving quality based education in colleges and institutions. In NAAC there is separate section for the library & information services. So library plays on important role in providing right information to the user at right time, and also Library and information system management provides to the user community to indentify & acces the relevant knowledge resources. ¹If Librarian and library staff change their mentality then every library can create

the development & statistics of the libraries. Now a day's library has to collect feedback from their users and to analyze it. This response of users is also to be documented.

Library Book Exhibition:

It provides an open platform to faculty members or students and staff members of institution to know recent editions of published books on their area. It also facilitates to review and recommend the books for the library to strengthen the collection. It also helps to develop the reading habits among institute fraternity.

Hand on Training Programme:

The aim of this programme is to educate library staff members to look at the work practice followed by other college libraries. Library staff members can visit other institutional libraries to learn about their library services and activities & the techniques they adopted for providing better services. Library staff can provide quality services to their patrons. Co-ordination among the members is necessary for this activity.

Library Best User Award:

This is a very good option as because of this many students can get easily attracted to visit library & use of resources. It increases the user statistics.

Maintenance of Services Areas:

Library is a place where to read. Consult & borrow reading materials, so atmosphere should be clean and calm. It provides suitable atmosphere for reading and searching for the users. Library should provide quiet space for group discussions & research scholars and chairs are important for increasing the comfort level for reading.

User's Feedback:

Through feedback system we can access & increase the quality in services delivered by the library. User's feedback is necessary to understand, what we can improve & make changes according to it.

Information Communication Technology (ICT) based Best Practice:

The term ICT is defined as a diverse set of technological tools and resources used to communicate and create, store and manage information.

ICT in Libraries:

It can be used in libraries and information centres for the development of new information service and computerization of library services. ICT is useful for. –

- Saving the space using the electronic storage.
- Provision of quality information.
- Improving of co-operation in sharing of resources.
- Improving productivity & efficiency of library services effectively.

Today so many ICTs are available in the services of Library of following manner. –

- 1) Library webpage.
- 2) Institutional Repository.
- 3) Computerized Library with Library software.
- 4) Internet.
- 5) Electronic reference.
- 6) News paper clipping service.
- 7) OPAC service
- 8) C. C. T. V.
- 9) Digitalization
- 10) Electrical thesis & Dissertation.
- 11) E-learning
- 12) Inter-Library loan.
- 13) Wi-Fi technology.
- 14) 3 M security System.
- 15) Electronic document delivery system.

10) Electronic Thesis and Dissertation:

Now days there are some many research publications available on online service. Indian institute of science institute of science invited this type of project to collect the same material through Electronic thesis and Dissertation of Indian institute of science with the help of the same website. We can search biological science, chemical sci., Mechanical Sci., Physical & mathematical science project.

11) E-Learning:

The information can be accessed by any one, at any time and from anywhere. It is effective and time saving when using information system one is more innovative and interactive. It is a self paced learning. Inter Library Loan (H. L.) is facilitated. Instruction - quality is consistent. The information can be shared by more than one user at a time. It offers an piecemeal learning.

12) Inter Library Loan:

The needs of readers are very important and one Library cannot fulfill the same so there is necessary of Inter Library loan. In Great Britain there is British Library Leading Division (B.L.L.D.). In this system there is on main Library and through this Library the reader can collect the information and knowledge from the Library.

13) Wi-Fi- Technology:

In short the full freedom use of internet is known as "Wi-Fi Technology" with the use of portal system. Through these Technology two computers connected with each other. It is available from 2.4 to 5 GHz Radio Band Frequency.

14) 3M Security System:

This system includes the following magnetic tools.

- i) Security strips.
- ii) 3M diction system.
- iii) 3M sensitizing machine.
- iv) 3M self check out machine.

These systems are very useful for the security of the books. Through these systems, we can avoid the loss of books. It is also useful for the circulation of the books. At the time of stock verification with help of scanner. We can confirm whether the book is available or not.

15) Electronic Document Delivery System:

Access to full text E-Journals / data base. The user demand to access information at their desktops that too into electronic journals electronic journals are available journals; 1. locally held electronic journals; These include full texts to journals covered by ABI / INFORM of Bell+Howell, and more 2. Electronic journals in Internet base databases; these include over 7000 journals held in the Proquest Direct of Bell + Howell 3. Consortia's like UGC Infonet CeRA, INDEST are also available.

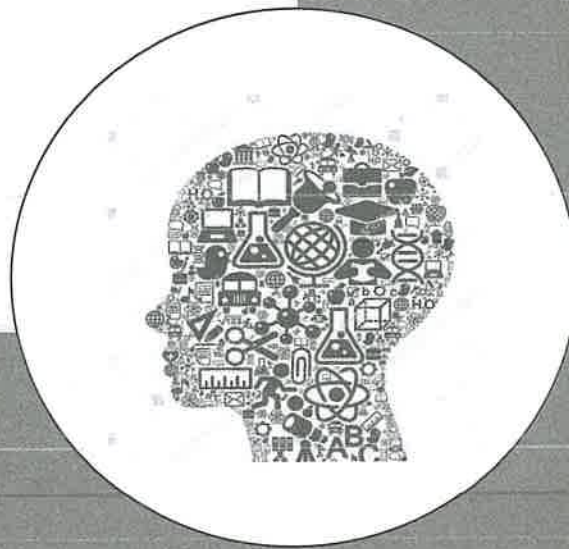
Internet based Services; The internet has become the most largest flow of information and has provided the various services to the user like-mail chat list serves remote log on free journal services, virtual reference desk subject portals and gateways electronic publishing services business and trade information, TOC service, blogging Bulletin board, Push and Pull services, OPAC housekeeping operation full text downloads etc.

NAAC accreditation has truly managed to stir the academic Librarians to assume a pro-active role in supporting the cause of higher education which aims at knowledge empowerment of the student. ⁴"LIS professionals need to play a crucial role in the education process by making people aware of a need and motivating the use of information a new knowledge. For successful implementation of digital library." (Krishnamurthy, M. 2005)

21-22

ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-15

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH



Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

**International Journal of Advance
and Applied Research (IJAAR)**

Peer Reviewed Bi-Monthly



ISSN – 2347-7075

Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue-15 May-Jun -2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

May-Jun -2022 Volume-2 Issue-15

On

*Relevance of Work and Thoughts of Rajarshi Chhatrapati
Shahu Maharaj*

Chief Editor

P. R. Talekar

Secretary,

Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor

Dr. Sunil Helkar

Principal,

Prof. Dr. N.D.Patil Mahavidyalaya, Malkapur – Perid

Tal. Shahuwadi Dist. Kolhapur

Co- Editors

Dr. Supriya Khole

M.L.Sontakke

Published by- P. R. Talekar, Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors



CONTENTS

| Sr No | Paper Title | Page No. |
|-------|--|----------|
| 1 | "Chh. Shahu Maharaj and the people from VJNT community" Dr. Vijay Jaysing Mane | 1-3 |
| 2 | Relevance of Rajarshi Chha. Shahu Maharaja's Thoughts on Emancipation of Women Dr. Mrs. Vaishali Abhijit Sarang | 4-5 |
| 3 | छत्रपती शाहू महाराज यांची भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील भूमिका : चिकित्सक अभ्यास प्रा. महादेव लिंबराज सोनटके, प्रा.किरण सर्जेराव पवार | 6-8 |
| 4 | सामाजिक समतेचे पुरस्कर्ते - छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा. डॉ. वसुधाकर पांडुरंग खराडे | 9-11 |
| 5 | राजर्षी शाहू महाराजांचे कृषी विषयक धोरण डॉ.डी.आर.पाटील | 12-15 |
| 6 | राजर्षी छ. शाहू महाराज यांचे अस्पृश्य उद्धारासाठी केलेले शैक्षणिक कार्य डॉ. गौतम नामदेव डाले | 16-19 |
| 7 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचा मोफत व सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा अद्ययादेश आणि कोल्हापूर संस्थानी राज्यातील शैक्षणिक विकास डॉ. रामचंद्र नरत कुंभार | 20-24 |
| 8 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे अस्पृश्योद्धारार्थे कार्य डॉ. ज्योती जयवंत न्हटकर | 25-28 |
| 9 | पुरोगामी धोरणाचा दीपस्तंभ -- छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा.केशव धोंडीबा टिपरसे | 29-31 |
| 10 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे आदर्श आपत्ती व्यवस्थापन डॉ. मधुकर विठोबा जाधव | 32-35 |
| 11 | राजर्षी छ. शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान प्रा. आप्पासाहेब नामदेव कैंगार | 36-39 |
| 12 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक कार्य प्रा.रमेश शंकर माने | 40-42 |
| 13 | कोल्हापूर संस्थानातील शैक्षणिक क्रांती डॉ. उत्तरा खाडीलकर | 43-44 |
| 14 | राजर्षी शाहू महाराज यांचे सत्यशोधक समाजातील योगदान डॉ. राजश्री दिलीप निकम | 45-47 |
| 15 | सामाजिक क्रांतीचे जनक राजर्षी शाहू महाराजांचे कोल्हापूर संस्थानातील सामाजिक व शैक्षणिक योगदान संदीप बळवंत गुरव | 48-50 |
| 16 | दूरदृष्टीचे लोकनेते राजश्री शाहू महाराज राजेंद्र भिकू महानवर | 51-55 |
| 17 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान प्रा.विनोद आखाडे | 56-58 |
| 18 | "राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांच्या आपत्ती व्यवस्थापन कार्याची सद्यकालीन प्रस्तुतता" डॉ. जनार्दन श्रीकांत जाधव | 59-63 |
| 19 | राजर्षी शाहू महाराज : वसा आणि वारसा डॉ. विश्वाधार रामराव देशमुख | 64-66 |
| 20 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे सार्वजनिक आरोग्य क्षेत्रातील कार्य प्रा. किरण गणपत कुंभार | 67-70 |

| | | | |
|----|--|--------------------------------------|--------|
| 21 | राजर्षी छ. शाहू महाराज आणि पद्मभूषण डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील | डॉ. सुप्रिया चंद्रशेखर खोले | 71-74 |
| 22 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे शेतीविषयक धोरण | लेफ्टनंट डॉ. रणजीत माने | 75-78 |
| 23 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांच्या काळातील कला क्षेत्राचा विकास | त्रियांका राजाराम पाटील | 79-82 |
| 24 | छ.शाहू महाराज यांचे क्रीडा क्षेत्रातील योगदान | श्री. संजय पाटील, श्री. गणेश लबंगारे | 83-85 |
| 25 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांच्या जलसिंचन धोरणाची प्रस्तुतता | प्रथमेश राजेंद्र सुतार | 86-88 |
| 26 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज आणि शिक्षणव्यवस्था | सिद्धनाथ मधुकर गाढे | 89-92 |
| 27 | राजर्षी शाहू महाराज यांचे पत्रकारितेच्या क्षेत्रातील योगदान | शंकर हरिदास पवार | 93-98 |
| 28 | छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज आणि पर्यावरण | चंद्रशेखर काशिनाथ काटे | 99-103 |



राजर्षी छ. शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान

प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार

सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी.

Email- ankengar@gmail.com

प्रस्तावना

समाज ही काही विशिष्ट विचारधारांवर आधारित पर्यावरण-राजकीय-सांस्कृतिक व्यवस्था आहे. त्याचे स्वरूप पितृसत्ताक आहे. जे विविध प्रकारच्या गुप्त माध्यमांद्वारे श्रेणीबद्ध करण्याचे कार्य करते - जीवशास्त्र, राजकारण आणि सामाजिक व्यवस्था विशेषतः कौटुंबिक, सामाजिक आणि राजकीय असमानता यामुळे जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात महिला बहिष्कृत, उपेक्षित आणि नियंत्रित आहेत. यामुळे त्यांचे जीवन दयनीय बनले आहे. त्यांना अशा परिस्थितीतून बाहेर काढणे गरजेचे होते. कोल्हापूरचे राजे आणि बहुजनांचे नेते शाहू महाराज यांनी महिला सक्षमीकरणासाठी काम केले. त्यांनी कायदे आणले, शिक्षण संस्था स्थापन केल्या, फेलोशिप आणि शिष्यवृत्ती दिल्या आणि समकालीन समाजाला (विशेषतः महिला वर्गाला) वाईट प्रथांची जाणीव करून दिली.

कोल्हापुरातील शाहू महाराजांच्या कालखंडातील सामाजिक स्थितीचे वर्णन 1855 ते 1965 या बॉम्बे स्टेटमधील शिक्षणाचा आढावा या ग्रंथात केले आहे: एकोणिसाव्या शतकाच्या सुरुवातीला या राज्यातील स्त्रियांची सामाजिक स्थिती फारशी समाधानकारक नव्हती. हिंदूंमध्ये स्त्रियांना संपत्तीचे कोणतेही अधिकार नव्हते; बालविवाह हे अत्यंत सामान्य बाब होती; बहुपत्नीत्वाची पद्धत ही उच्च किंवा चांगल्या वर्गात सामान्य होती; स्त्रियांसाठी क्वचितच कोणताही व्यवसाय खुला होता आणि सामाजिक आणि नैतिक संहिता त्यांच्याबद्दल अत्यंत भेदभाव करत होती, उच्च जाती किंवा उच्च वर्गीय कुटुंबांमध्ये विधवाविवाह आणि घटस्फोट निषिद्ध होता. स्त्रियांसाठी चूल आणि मूल हे त्यांच्या जीवनाचे क्षेत्र मानले जात असे. ते घरच्या जाळ्यात अडकले होते. शाहू महाराजांनी महिलांच्या सक्षमीकरणासाठी सहकार्यांचे हात पुढे करायला सुरुवात केली. शिक्षणाने महिलांच्या जीवनात बदल घडवून आणू शकतात, याची जाणीव त्यांना झाली. त्यामुळे त्यांनी आपल्या शैक्षणिक धोरणाद्वारे महिला सक्षमीकरणाच्या दिशेने पहिले पाऊल टाकले. ते म्हणाले: ब्राह्मणेतर आणि दलितंमध्ये शिक्षणाच्या अभावामुळे राष्ट्राचे मोठे नुकसान झाले. मंदिरांमध्ये पुजारी असंख्य झाले आणि आमच्या शाळांना आमची मंदिरे करून त्यांची ढवळाढवळ थांबवली पाहिजे, खऱ्या धर्माचे ज्ञान समोर आले पाहिजे.

सर्वांना मोफत आणि सक्तीचे प्राथमिक शिक्षण :

शाहू महाराजांनी स्त्रियांना शिक्षण घेण्यास प्रोत्साहन दिले, तसेच सर्वांना प्राथमिक शिक्षण सक्तीचे केले. त्यांनी ८ सप्टेंबर १९१७ रोजी कोल्हापूर राज्यातील सर्वांना मोफत व सक्तीचे प्राथमिक शिक्षण देण्याचा आदेश मंजूर केला. त्यांनी सक्तीचा आणि मोफत शिक्षणाचा कायदा तर केलाच पण पालकांना त्यांच्या मुलांना गैरहजर राहिल्याबद्दल दरमहा एक रुपया या दराने दंड ठोठावून त्याची कठोर अंमलबजावणी केली. त्यांच्या मते "शिक्षणाशिवाय कोणत्याही देशाचा विकास अशक्य आहे. निरक्षरतेने ग्रासलेल्या देशात चांगले नेते कधीच उदयास येत नाहीत. त्यामुळे हिंदुस्थानात मोफत आणि सक्तीचे शिक्षण सुरू करणे आवश्यक आहे." हा आदेश ३० सप्टेंबर १९१७ पासून अंमलात आणण्यात आला.

उच्च शिक्षणावर भर : त्यांनी केवळ प्राथमिक शिक्षणच नव्हे तर उच्च शिक्षणाचाही प्रचार केला. महिला शिक्षकांची गरज भागवण्यासाठी त्यांनी महिलांसाठी प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थापन केले. विद्यार्थ्यांचे शिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर मुलींना शाळेत शिकवणे बंधनकारक करण्यात आले होते. त्यांनी कृष्णाबाई केळवकर यांना

वैद्यकीय शिक्षणासाठी ग्रॅट मेडिकल कॉलेजमध्ये पाठवले. १९०२ मध्ये त्यांनी तिची 'अल्बर्ट एडवर्ड मेडिकल हॉस्पिटल'मध्ये सहाय्यक वैद्यकीय अधिकारी म्हणून नियुक्ती केली. त्याने तिला लंडनला गायनकॉलॉजीमध्ये स्पेशलायझेशनसाठी पुन्हा शिष्यवृत्ती दिली. अभ्यासक्रम यशस्वीरीत्या पूर्ण केल्यानंतर १९०३ मध्ये त्या पुन्हा कर्तव्यात रुजू झाल्या. १९१०-११ मध्ये त्यांनी १५ विद्यार्थी आणि १९११-१२ मध्ये १० विद्यार्थी उच्च शिक्षणासाठी मुंबई, पुणे, मद्रास आणि इतर ठिकाणी पाठवले. त्यांनी काही विद्यार्थ्यांना मेडिकल कॉलेज, बॉम्बे, मेडिकल स्कूल, पुना ट्रेनिंग कॉलेज आणि डेक्कन कॉलेज, पुणे येथे पाठवले. एकदा तोफखाने आणि भास्करराव जाधव यांच्याशी झालेल्या चर्चेत ते म्हणाले, 'महिलांना चांगले आणि वाईट यातील फरक समजेल असे योग्य शिक्षण मिळाले असते तर; चांगल्या नैतिकतेच्या शिक्षकांकडून ते मिळाले तर ते कधीही चुकीच्या मार्गावर जाणार नाहीत.'

वसतिगृहांची स्थापना :

शिक्षण संस्थांसोबतच राहण्याची सोयही आवश्यक आहे. त्यामुळे त्यांनी विद्यार्थ्यांसाठी वसतिगृहे उभारण्याचा निर्णय घेतला. १८ एप्रिल १९०१ रोजी मराठा विद्यार्थ्यांसाठी व्हिक्टोरिया मराठा बोर्डिंग हाऊस सुरू करण्यात आले. नंतर त्यांनी लिंगायत, सारस्वत, पांचाळ, जैन, मुस्लिम, नामदेव शिंपी, दैवज्ञ, वैश्य, डोर-चांभार, सुतार, नाभिक इत्यादींसाठी वसतिगृहाची सुविधा सुरू केली.

शिष्यवृत्ती आणि शिष्यवृत्ती :

त्यांनी बहुजनांना शिक्षण घेण्यास प्रोत्साहित करण्यासाठी फेलोशिप आणि शिष्यवृत्ती दिली. त्यांनी 20 मे 1911 रोजी 15% विद्यार्थ्यांना आर्थिक मदत जाहीर केली; ते प्रथम गरीब विद्यार्थ्यांना आणि नंतर इतर विद्यार्थ्यांना देण्यात आले. त्यांनी कृष्णाबाई केळवकर या हुशार विद्यार्थिनीला स्त्रीरोगात विशेषीकरणासाठी शिष्यवृत्ती दिली आणि लंडनला पाठवले. तसेच त्यांना शिष्यवृत्ती जाहीर केली. श्री राधाबाई अक्कासाहेब महाराज शिष्यवृत्ती आणि श्री नंदकुंवर महाराणी भावनगर शिष्यवृत्ती या नावाने कोल्हापूर आणि बावडा येथील मराठी माध्यमांच्या शाळांतील मुलींना शिष्यवृत्ती जाहीर केली.

आंतरजातीय आणि आंतरधर्मीय विवाह :

आंतरजातीय आणि आंतरधर्मीय विवाह आणि विवाह नोंदणी कायदा १२ जुलै १९१९ रोजी लागू करण्यात आला, ज्या काळात बालविवाहांची परंपरा होती. विठ्ठलभाई पटेल यांनी १९१८ मध्ये केंद्रीय विधिमंडळात मांडलेल्या पटेल विधेयकाचा प्रभाव पडून हा कायदा करण्याचा निर्णय शाहू महाराजांनी घेतला. यापद्धतीने महाराजांनी जातीचे उच्चाटन आणि धर्मांमधील एकात्मतेच्या दिशेने पाऊल टाकले.

विधवा पुनर्विवाह :

मागास जातींमध्ये पुनर्विवाहाचे स्वातंत्र्य होते, तथापि, उच्च जातीमध्ये कठोर पितृसत्ताक पद्धत होती जी विधवांच्या पुनर्विवाहास परवानगी देत नव्हती. या व्यतिरिक्त ब्राह्मणांमध्ये विधवांचे केस (केशवपन) काढण्याची परंपरा होती, विधवा स्त्रियांना अत्यंत वंचित, राखीव आणि अलिप्त जीवन जगावे लागत होते. अशा भक्कम पितृसत्ताक पद्धतीच्या बेड्या शाहू महाराजांनी तोडल्या. विधवा पुनर्विवाहाशी संबंधित कायदा १९१७ मध्ये त्यांच्या कोल्हापूर राज्यात मंजूर केला. त्यात राज्यातील विधवांची संख्याही नोंदवली. नुसताच हा कायदा करून महाराज थांबले नाहीत तर आपली सृष्टा इंदुमातीसाहेब यांच्या समोर त्यांनी पुनर्विवाहाचा पर्याय ठेवला होता. स्त्री उद्धाराबरोबर राष्ट्राच्या एकात्मतेला पुष्टी देणारा आंतरजातीय, आंतरधर्मीय विवाह कायदा शाहू महाराजांनी १९१९ साली केला.

बुरखा परंपरा : बुरखा परंपरा उच्च जातींमध्ये, विशेषतः खानदानी कुटुंबे, मराठा आणि वतनदारांमध्ये पाळली जात होती. हे स्त्रियांच्या घरगुती आणि बाहेरच्या क्षेत्रात मुक्त हालचालींवर ओझे आणि निर्बंध होते. त्याचा स्त्रियांवर विपरीत परिणाम होत होता, म्हणून शाहू महाराजांनी या पद्धतीचा निषेध केला.

घटस्फोट कायदा आणि घटस्फोटानंतर महिला अधिकारांची सुरक्षा :

त्यांनी घटस्फोट कायदा आणि घटस्फोटानंतर महिला हक्कांची सुरक्षा आणली. हा कायदा ख्रिश्चन आणि पारशी वगळता सर्व धर्मांना लागू होता. या कायद्यांतर्गत मुस्लिम महिलांना तलाकची प्रथा असली तरी त्यांना संरक्षण देण्यात आले होते; त्यांना त्यांच्या मुलांसह संरक्षण मिळाले. १९२० मध्ये त्यांनी वंशानुगत कायद्यात सुधारणाही केल्या.

महिलांच्या छळाविरोधात कायदा :

२ ऑगस्ट १९१९ रोजी महिलांच्या छळ प्रतिबंधाशी संबंधित कायदा लागू करण्यात आला. कायदानुसार पुरुषांकडून अपमान, शिवीगाळ, शाब्दिक हल्ले आणि महिलांच्या चारित्र्यावर संशय घेणे हे क्रौर्य कृत्य मानले गेले. यात महिलांवरील जवळपास सर्व प्रकारच्या क्रौर्याचा आणि छळाचा समावेश होता. त्यातून मागासवर्गीय समाज आणि महिलांमध्ये बदल घडून आला.

देवदासी परंपरेचा निषेध :

समकालीन समाजात, मुलींना देवाच्या नावाने अर्पण करण्याची परंपरा होती, ती मोठ्या प्रमाणात मागासवर्गीयांकडून पाळली जात होती. त्यातून देवदासींच्या परंपरा निर्माण झाल्या. जगतीन, मुरली, भावीन, इ. मुलीला देवाच्या नावावर अर्पण करणे म्हणजे ती आपल्या नैसर्गिक आई-वडिलांशी असलेले सर्व संबंध तोडून देवाची संतती बनते आणि तिला वारसा किंवा वारसा हक्क नसतो, तर दुसरीकडे तिला देवावर सोडण्यात आल्यापासून तिला संबंधित मंदिरांमध्ये काही विशिष्ट अधिकार मिळत आहेत आणि सामाजिक कायदेशीर दर्जाही मिळत आहे. परंतु त्यांचे लैंगिक शोषण होते आणि विशिष्ट क्षेत्रात त्यांना उपेक्षित केले गेले. तोही अस्पृश्यतेसारखा कलंक होता. हा कलंक दूर करण्यासाठी शाहू महाराजांनी संबंधित कायदा आणला.

जातीचे उच्चाटन :

जातिव्यवस्थेतील स्त्रियांची स्थिती आणि त्यांचे अनुलंब आणि शोषण करणारी वर्णव्यवस्था त्यांनी गांधीयांने विचारात घेतली. वर्ण व्यवस्थेवर आधारित जातिव्यवस्था वैचारिकदृष्ट्या तयार केली गेली आहे जी विशिष्ट विभागाला चुकीची ठरवते आणि दुसऱ्याला टाकून देते. जातिव्यवस्था श्रेष्ठ पितृसत्ताशी जोडलेली आहे जी महिलांना उपेक्षित करते, बहिष्कृत करते आणि विवश करते. त्यांना दोनदा उपेक्षित केले जाते, प्रामुख्याने, बाहेरील लोकांकडून स्त्री म्हणून आणि दुसरे म्हणजे कुटुंबातील स्त्री सदस्य म्हणून तिच्या पुरुष नातेवाईकांकडून. त्यामुळे जातीचे उच्चाटन आणि पितृसत्ताक वैचारिक संस्था नष्ट करणे हे स्त्रीमुक्तीसाठी आवश्यक घटक आहेत. म्हणून त्यांनी जातिव्यवस्थेचा नायनाट करण्याचा प्रयत्न केला.

निष्कर्ष :

थोडक्यात, शाहू महाराजांनी विविध जाती, वर्ग, धर्म, लिंग इत्यादींमध्ये विभागलेल्या समाजाला एकत्र करण्याचा प्रयत्न केला. स्त्रियांची स्थिती ओळखून त्यांनी विशेषतः शिक्षण सुरू करून आणि काही कायदे करून महिला सक्षमीकरणाकडे लक्ष दिले. शाहू महाराजांनी महिलांसाठी केवळ कायदेच केले नाही तर त्यांना संरक्षण आणि सुरक्षा देखील दिली. महिला सक्षमीकरणासाठी त्यांचे योगदान ऐतिहासिक दृष्टिकोनातून आणि सामाजिक अर्थाने महत्त्वाचे आहे.

संदर्भ :

1. मुंबई राज्यातील शिक्षणाचा आढावा. 1855 ते 1965 (बॉंबे: बॉम्बे सरकार) 1958.
2. भागवत R.T., शिक्षण विशायक विचार आणि कार्य. चैतन्य प्रकाशन कोल्हापूर. 1981. भिडे जी.आर.कोल्हापूर दर्शन. आंतरराष्ट्रीय प्रकाशन, पुणे. १९७१.
3. भोसले नारायण. महाराष्ट्रातील स्त्रीविषयक सुधर्णवादाचे सत्ताकारण। तैचि प्रकाशन। पुणे. 2008.
4. डेव्हिड एम.डी. आधुनिक भारताचा सांस्कृतिक इतिहास. 3रा एड. बॉम्बे. 1973.

5. कराडकर K. S. मंगुडकर M. P. (Ed). महाराष्ट्रतील समाजप्रबोधन आणि छत्रपती शाहू महाराजांचे कार्य. पुणे विद्यापीठ. पुणे. १९७५.
6. कीर धनंजय. राजश्री शाहू छत्रपती : एक समाजक्रांतीकार राजा. पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई. 2001.
7. पानसरे गोविंद. राजर्षी शाहू : वसा आणि वारसा । लोकमय वाङ्मय गृह. मुंबई.
8. फडके वाय.डी. शाहू छत्रपती आणि लोकमान्य, श्रीविद्या प्रकाशन. पुणे. पहिली एड. 1986. सवनीस. कोल्हापूरवर आर. व्ही. नोदस. बाँम्बे. टाईम्स प्रेस. 1928.
9. साळुंखे हिंदुराव. छत्रपती शाहू स्मृतीदर्शन, महाराष्ट्र ग्रंथ भंडार. कोल्हापूर. 1989.



Shivaji University, Kolhapur, India (SUK)

The Department of Foreign Languages & Department of Marathi

&

Russian State University for the Humanities, Moscow, Russia (RSUH)

Faculty of International Relations, Political and Foreign Area Studies
of the Institute of History and Archives

&

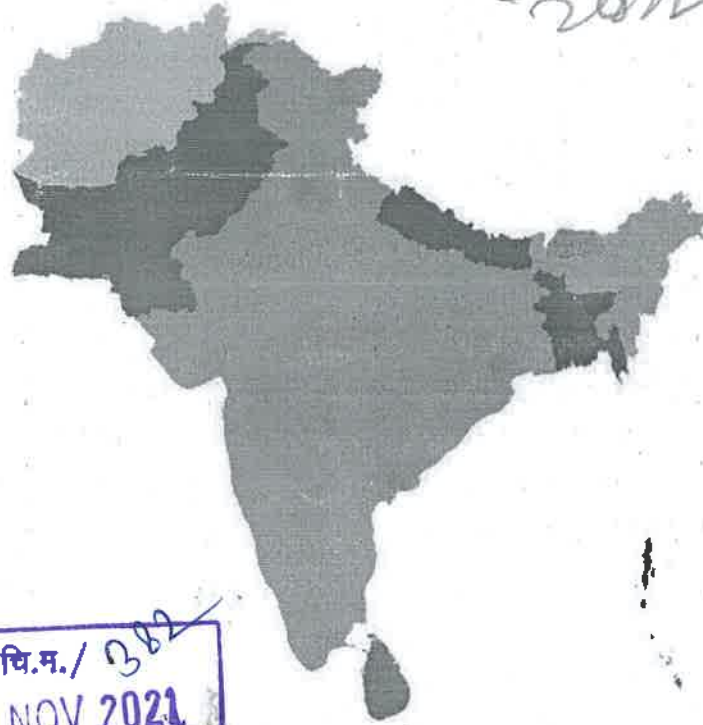
The International Centre for South Asian Studies

The International Multidisciplinary Symposium
"Open Pages in South Asian Studies - IV", Kolhapur, India

Call for Papers

Mar
2022

3.3.3
2021-22



आवक क्र.: बा.चि.म./ 382
दिनांक 29 NOV 2021

SBR
Staff/
do
28/11/21

The Theme:
THE CONTEMPORARY
DYNAMICS OF SOUTH ASIA - 2022

29 - 31 January, 2022

Shivaji University, Kolhapur, Maharashtra, India.

"Open Pages in the South Asian Studies" is a series of International Symposia organized by the Russian State University for the Humanities (RSUH), Moscow, Russia in collaboration with other universities from the South Asia. The previous symposia of this series "Open Pages in South Asian Studies - I" (Moscow, 2011), "Open Pages in South Asian Studies - II" (Moscow, 2013) and "Open Pages in South Asian Studies - III" (Guwahati, Assam, India, 2019) were highly successful in presenting an image of hitherto 'unknown' South Asia that is to be 'discovered' and 'described'. To continue, we are organizing the fourth symposium in the series.

The experienced researchers and young specialists working in various academic and professional areas of language, literature, arts, history, social science and humanities are invited to participate in the Symposium.

The South Asia as a Region

The contemporary South Asia comprises of eight countries namely Afghanistan, Bangladesh, Bhutan, India, Maldives, Nepal, Pakistan and Sri Lanka, which share a common origin and history as part of the Indus Valley Civilisation. This common geographical location unites these countries culturally, socially and politically as a sub-region of Asia.

Within this region, two of the world's great religions namely Hinduism and Buddhism originated, but there are also immense Muslim, Christian and Sikh populations and large groups of followers of various other religions as well.

Ethno-linguistic pluralism is a hallmark of the South Asian countries whereas it is also a prime factor of contentious relations among the member countries and intra-country conflicts in the form of sub-nationalist and secessionist movements. The region is also home to the problem of terrorism that has paralysed not only the human and national development, but also has derailed the mutual understanding and harmonious relations of the countries in the region. Besides these, the border conflicts among the South Asian countries make this region more volatile and strategically significant in the contemporary global order. The South Asian Association for Regional Cooperation (SAARC), mandated to integrate the countries of South Asia politically and economically, has merely failed to bring in the desired results of integration and cooperation due to these contentious relations.

The nature of the political systems in the South Asian countries makes this region even more politically and geo-strategically unique. It has a long history of democratic transition and consolidation along with periodic authoritarian and military rule in the countries like Bangladesh, Pakistan, Afghanistan and Maldives. Though Bhutan is a small country in terms of its territorial size, the innovation of Gross National Happiness (GNH) has drawn considerable global attention towards this region in ensuring and promoting a culture of sustainable development and peace.

Migration across borders has been an issue of contention in the region. Consolidation of the neo-liberal economic policies across the countries in the region has

brought both opportunities and challenges. In terms of Gross Domestic Product (GDP), many countries in the region witnessed marked progress. But, this has been accompanied by inequality both in income and in other social security domains. Growth with inequality has brought in popular outrage in the region. Informalization of labour, and growing privatization of essential services added new forms of inequality and insecurity, apart from raising concerns over ecology and common resources.

The proposed symposium, which will be interdisciplinary in nature, will endeavour to address these critical issues both from the perspective of the respective countries as well as from the perspective of South Asia as a transnational regional entity.

The issues and areas, the Symposium endeavours to deliberate are the following:

South Asian Countries: Common Historical Connections

- Ancient, colonial and post-colonial linkages of the South Asian region in the light of new theoretical research
- The impact of colonization and the processes of decolonization
- South Asian regionalism and integration: trends, problems and prospects

Art, Language, Literature and Translation: Towards Progress and Peace

- The 21st Century: New trends. New directions. New experiments.
- Breaking the stereotypes. Creation and transfer of new ideas.
- The languages of South Asia today in the global perspective
- Language and Education
- Artists / writers / poets / translators as a catalyst for progressive change and peace.

South Asia: Society and Culture

- The cultural legacy of South Asian culture in the global context.



- The challenges to Ethnic Pluralism, Cultural Diversity and Multiculturalism.
- Globalization and cultures in transition.
- Migration and Conflicts. The Minority and Marginalized section.
- Religion & Caste. Superstitions and Scientific Temper.
- Nationalism & Trans-nationalism

Human Rights

- Peoples' Struggle for Human Rights.
- The challenges to Freedom of Speech and Expression.

Gender and Power

- Peculiar forms of Patriarchy in South Asia.

- Gender and class/ caste/ religion.
- Breaking the stereotypes and struggle of women / LGBTQ+ community for human rights.
- Gender Identity. Towards gender equality.

Environment and Sustainable Development:

- Challenges and Responses of the 21st Century.

Economics:

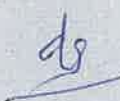
- South Asia and the Economy in the 21st century
- Neo-liberal economic policies and South Asian Countries

Russia and South Asia: Relations and Interconnection.

South Asia between Central and Eastern Asia: Past and Present

General Instructions

- The symposium will be held at the Shivaji University, Maharashtra, India.
- Link to the university website: <http://www.unishivaji.ac.in/default.aspx>
- Teachers, research students, postgraduate students are also invited to take part in the symposium.
- The student researchers are also invited to take part in the **Poster Session** of this Symposium. The accepted posters will be exhibited during the symposium.

| | | |
|-----|---|---|
| 1. | Languages of the Conference | Russian / English/ Hindi/ Marathi |
| 2. | Registration Fee | Rs. 1000/- |
| 3. | Mode of Payment | Online |
| 4. | Maximum number of participants | 200 |
| 5. | Last date to register online for participation | 25 December, 2021 |
| 6. | Online Registration Link. (Sign up and Login) | http://www.unishivaji.ac.in:81/LoginPage.aspx |
| 7. | Last date to submit the Abstract (300 words) | 20 December, 2021 |
| 8. | Selection of Abstracts on the basis of their relevance to the theme of the symposium, significance and academic originality. | By Panel of Experts |
| 9. | Notification of Acceptance of Abstracts | 25 December, 2021 |
| 10. | Full paper of not more than 5000 words having footnotes reference style as per MLA format to be submitted by email. | 10 January, 2022 |
| 11. | Duration of each presentation: | 15 Min. + 05 Min. Questions - Answers |
| 12. | Selection of Posters: Poster along with Abstracts of not more than 300 words should be emailed on or before | 20 December, 2021 |
| 13. | Notification of Acceptance of Poster | 25 December, 2021 |
| 14. | Abstracts and Full Papers may be sent by email to: | openpages.iv@gmail.com |
| 15. | Local Contact:  | Department of Foreign Languages Department of Marathi V.S. Khandekar Bhasha Bhavan, Shivaji University, KOLHAPUR-416004 India Office: 0231-2609237 & 2609215 WhatsApp only: 9001077676 for.lang@unishivaji.ac.in marathi@unishivaji.ac.in |



यशवंतराव आणि महाराष्ट्राचा विकास

श्री. विश्वास शहाजीराव यादव

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय भिलवडी, ता. पलूस, जि. सांगली.

dg
Principal,

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र राज्याचे पहिले मुख्यमंत्री १ मे १९६० रोजी महाराष्ट्र राज्य निर्मितीचा कलश आणणारे मुख्यमंत्री अर्थात १ मे १९६० पूर्वी देखील यशवंतराव चव्हाणच या राज्याचे मुख्यमंत्री होते. बालवयापासूनच यशवंतराव हे अत्यंत कुशाग्र बुद्धीचे आणि अत्यंत स्पष्टवक्ते होते. कराड येथे शाळेत असताना पासून यशवंतराव राष्ट्रप्रेमाने अत्यंत भारलेले होते. लाहोरच्या तुरुंगात यतींद्र दास यांनी मातृभूमीसाठी केलेले प्राणार्पण यशवंतरावांना स्वातंत्र्य चळवळीत ओढणारे ठरले. (१) शालेय जीवनातच यशवंतरावांनी स्वातंत्र्य मिळवण्यासाठीच्या प्रयत्नांना यशस्वी अशी सुरुवात केली. २६ जानेवारी १९३० रोजी यशवंतरावांनी शाळेत तिरंगा फडकवला. भगतसिंग यांची अटक आणि फाशी यामुळे आता आपले आयुष्य स्वातंत्र्य लढ्याला वाहून घेण्याची प्रतिज्ञा केली. (२) याकाळात यशवंतरावांनी कराडमध्ये पूर्ण स्वातंत्र्यासाठी हजारो लोकांना एकत्र केले होते. २६ जानेवारी १९३१ रोजी यशवंतरावांच्या नेतृत्वाखाली कराडच्या शाळेत तिरंगा फडकावून 'वंदेमातरम' च्या घोषणा दिल्या. शाळेत पोलीस आले आणि विचारणा केली. निडर यशवंतरावांनी पोलिसांना स्पष्टपणे सांगितले, 'हो मी झेंडा फडकावला आहे. आणि पुढचे स्वातंत्र्य चळवळीचे काम मी करत राहणार आहे.' (३) यशवंतरावांना १८ महिन्यांची शिक्षा झाली. यशवंतरावांना येरवडा कारागृहात नेण्यापूर्वी त्यांच्या मातोश्री आणि शिक्षक त्यांना भेटायला गेले. मास्तर म्हणाले, 'यशवंता साहेब चांगले आहेत. माफी मागशील तर सोडून देतील.' यशवंतरावांच्या मातोश्री म्हणाल्या, 'काय सांगताय मास्तर माफी मागण्याचे काही एक कारण नाही, यशवंता तुरुंगात तब्येतीची काळजी घे म्हणजे झाले. देव आपल्या पाठीशी आहे. (४) यशवंतरावांनी अत्यंत बाणदारपणे तुरुंगवास सहन केला. मात्र, 'तुरुंगानीच मला प्रगल्भकेल असे स्वतः यशवंतराव म्हणत.' (५)

स्वातंत्र्यप्राप्ती नंतर यशवंतराव महाराष्ट्राच्या विकासाची स्वप्ने पाहू लागले. स्वातंत्र्य चळवळीच्या कालखंडात त्यांनी संपूर्ण महाराष्ट्र पादाक्रांत केला होताच. प्रत्येक खेडी, शहर यांचे प्रश्न याबाबत यशवंतराव अत्यंत जागरूक होते. यशवंतराव राजकारणात आले मात्र यशवंतराव हे बेरजेचे आणि तत्वाचे राजकारण करणारे, तत्व सांभाळणारे मात्रमाणुसकी प्रथम हे ध्येय ठेऊन वागणारे मोठे राजकारणी होते.

१९५६ मध्ये यशवंतराव चव्हाण पहिल्याचद्विभाषिक महाराष्ट्राच्या मुख्यमंत्री पदी आरूढ झाले (६) महाराष्ट्राच्या विकासाची उत्तम संकल्पना यशवंतरावांच्या डोक्यात तयार होती. मात्र संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ सुरू झाली. वाढली आणि यशस्वी झाली. १ मे १९६० रोजी महाराष्ट्र राज्य स्थापन झाले आणि यशवंतराव चव्हाण पुन्हा राज्याच्या मुख्यमंत्री पदी आरूढ झाले. (७)

१९६० मध्ये यशवंतराव चव्हाण हे महाराष्ट्रातील सर्वात प्रभावी नेते होते, मात्र असे असूनही राजकीय नेत्यांमध्ये अभावाने असणारे मार्दव, ऋजुता, जनसामान्यांविषयीचे ममत्व, कळवळा, असामान्य बुद्धिमत्ता असूनही सर्वांमध्ये मिळून मिसळून राहण्याची सहज प्रवृत्ती असे अनेकशेकडो गुण यशवंतरावांमध्ये होते. (८) मुख्यमंत्री पदाची शपथ घेतल्यानंतर महाराष्ट्रच्या सर्वांगीण विकासाकडे यशवंतरावांनी कटाक्षाने लक्ष द्यायला सुरुवात केली. यशवंतरावांना जसे शेतीचे महत्व जात होते तसेच राज्याच्या सर्वांगीण विकासासाठी औद्योगिकीकरण ही जोड दिली पाहिजे याबाबत अत्यंत आग्रही होते. पं. नेहरूंच्या अत्यंत जवळचे असल्याने आर्थिक विकासमध्ये शेती आणि उद्योग हे हातात हात घालूनच प्रगती करते झाले पाहिजेत हे या तिघांचेही मत होते. त्यामुळे नेहरूंच्या मार्गदर्शनाखाली यशवंतरावांनी महाराष्ट्र राज्याच्या सुधारणांचा वेग उत्तम राखलेला दिसतो. कृषी आणि उद्योग यांचा योग्य विकास सुकर व्हावा यासाठी यशवंतराव चव्हाणांनी महाराष्ट्राच्या विकासासाठी त्रिसुत्री ठरवली. त्यात १. लोकशाहीचे विकेंद्रीकरण (पंचायत



राज्य) शिक्षण विकास २. सहकार चळवळीचा विकास (यातच महाराष्ट्राचा औद्योगिक विकास) (८)यात्रीसुत्रीप्रमानेमहाराष्ट्रात अत्यंत नियोजनबद्ध विकास घडवण्यात यशवंतरावांनी स्वतःला झोकून दिले.वरील त्रीसुत्री अंतर्गत १९६२ पासून पंचायत राज पद्धती अस्तित्वात आणून यशवंतरावांनी सत्तेचे पूर्ण विकेंद्रीकरण घडवून आणले ग्रामीण भागातील सर्व लोकप्रतिनिधिनाही काही अधिकार मिळावे यासाठी मुख्यमंत्री स्वतः आग्रही होते. या विकास प्रक्रियेत सामान्य माणसाला देखील त्यांनी सहज सामावून घेतले. हे यशवंतरावांचे आगळे-वेगळे वैशिष्ट्य होय.यातून जिल्हा नियोजन आणि विकास नियोजन सहज शक्य झालेले दिसते. यशवंतरावांनी सहकार क्षेत्र विकसीत करण्यासाठी अत्यंत मोठे कष्ट घेतलेले दिसतात. १९६० च्या कोऑपरेटिव्ह ॲक्ट प्रमाणे कृषीमाल प्रक्रिया, पतपुरवठा, विपणन या क्षेत्रात पूर्ण महाराष्ट्रभर हजारो सहकारी संस्थांचे जाळेच निर्माण केले हे यशवंतरावांच्या दूरदृष्टीचेच अत्यंत कमी काळात मिळालेले फळ होय. शेतीला पूरक उद्योगांचे मोठे जाळे निर्माण झाले. गाव तिथे पतसंस्था, बँका, सहकारी सोसायट्या पाणीपुरवठा संस्था, जिल्हा बँक यांची निर्मिती महाराष्ट्राचा मोठा विकास घडवणारी ठरली. मुख्यमंत्री म्हणून अजून एक मोठे काम यशवंतरावांनी केले ते म्हणजे महाराष्ट्र राज्य औद्योगिक विकासमहामंडळाची स्थापना(MIDC)यशवंतरावांनी अत्यंत दूरदृष्टीनी पूर्ण महाराष्ट्रभर लाखो उद्योग निर्माण होण्याचीसहज साध्य पार्श्वभूमी महाराष्ट्रऔद्योगिक विकास मंडळाच्या स्थापनेनी निर्माण करून दिली. (९)

विना सरकार नाही उध्दार या उक्तीला पूर्ण न्याय देण्याचा प्रयत्न यशवंतरावांनी मुख्यमंत्री म्हणून केलेला दिसतो. १९६० ते १९७० या दशकात महाराष्ट्रात अनेक सहकारी साखर कारखाने उभे राहिले त्यांच्या निर्मितीत देखील मुख्यमंत्र्यांचा सिंहाचा वाटा होता. या काळात जवळपास १७ सहकारी कारखाने उभे राहिले. हे यशवंतरावांच्या दूरदृष्टीचेअत्यंत बोलके उदाहरण आहे. यशवंतरावांनी १९६०च्या सहकारी संस्था कायद्याअंतर्गत साखर कारखान्यांना कर्ज पुरवठा केलाअनेक कारखाने पुढे अनेक वर्षे चालावेत यासाठी प्रत्येक कारखान्याला भाग-भांडवल गोळा करायला देखील मदत केली.(१०)यशवंतरावांनी अत्यंत बारकाईनी महाराष्ट्राच्या सर्वांगीण विकासाचा विचार मनात ठेवला होता असे पदोपदी त्यांच्या विचारांवरून लक्षात येते. महाराष्ट्रातील एक अर्थतज् डॉ. राजन तुंगारे म्हणतात, महाराष्ट्राच्या कृषीव औद्योगिक धोरणाचा पाया यशवंतरावांनी घातला व त्यामध्येकृषीव औद्योगिक वाढ परस्परांना पोषक व पूरक ठरेल असे सूत्र त्यांनी ठरवले होते. (११)

यशवंतरावांनी महाराष्ट्रातील शिक्षण क्षेत्रात देखील अत्यंत मुलगामी काम किलेले दिसते, शेती, सहकार आणि औद्योगिक विकासासंदर्भात जितके महत्वाचे कार्य यशवंतरावांनी केले तितकेच मूलगामी कार्य त्यांनी शिक्षण क्षेत्राच्या विकासासाठी केलेले दिसते. (१२)शिक्षण क्षेत्रातील विस्कळीतपणा दूरकेला, उच्च शिक्षण समाजातील शेवटच्या घटकापर्यंत सर्वांना सहजतेने उपलब्ध कसे होईल, गरीब विद्यार्थ्यांना सवलतीन काय-कायदेता येईल?, S.C.&S.T.साठी अनेकसवलतीसुरुकेल्या. O.B.C. ना E.B.C लागूकेली. शाळा, कॉलेजेस,अनेकवसतीगृहेस्थापन केली. सैनिकी शाळा, कहाडचे अभियांत्रिकीमहाविद्यालय स्थापनकेले.. २३ ऑगस्ट १९५८ रोजीमराठवाडा विद्यापीठ औरंगाबाद, २८ नोव्हेंबर १९६२रोजी शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूरची स्थापना केली.

यशवंतरावांचे शिक्षणाबद्दल अत्यंत परखड असेविचार होते. यशवंत म्हणतात'', माझ्या मतेशिक्षण हे आर्थिक विकासाचे एक मूलभूत साधन आहे. (१३) आमच्यामध्ये शक्ती निर्माण करण्याकरिता आमच्या जवळ मनुष्य बळाशिवाय दुसरे काही साधन नसल्यामुळे आमहाला या धनाचा विकास करण्यासाठीत्याला शिक्षणाची जोड द्यायची आहे, (१४)खेड्यात बिजलीनेउन पोहचवल्या शिवाय ज्याप्रमाणे शेतीचा विकास होणार नाही, त्याप्रमाणे आमच्या नापीकपडलेला मनुष्यबळाचा हा जो मोठा साधनसंपत्तीचा भाग आहे त्यात शिक्षणाची बिजली नेल्याशिवाय सामर्थ्य निर्माण होणार नाही. शिक्षणाचा प्रश्न हामहाराष्ट्राच्या आताच्या संदर्भात अत्यंतक्रांतिकारक प्रश्न आहेअसे मी म्हणतो. यशवंतरावांनी महाराष्ट्राच्या सर्वांगीण विकासासाठी स्वतःच्या पूर्ण अभ्यासांनी तयार झालेल्या त्रीसूत्री प्रारूपाप्रमाणे अत्यंत नियोजनबद्ध विकास घडवून आणलेला दिसतो. महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री अत्यंत प्रगल्भ राजकीय नेते, सर्वसामान्यांमध्ये अत्यंत लोकप्रिय, मंत्रिमंडळातील सर्वापुढे अत्यंत आदर्शवत असणारे अफाट कार्यशक्ती असणारे महान राजकीय नेते म्हणून यशवंतरावांनी आधुनिक महाराष्ट्राच्या विकासावर स्वतःची सोडलेली अमीट छाप अजूनही तसूच असलेली



दिसते. यशवंतराव चव्हाण आणि महाराष्ट्राचा विकास याजणू एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत एवढे घट्ट नाते त्यांचे महाराष्ट्राच्या विकासाशी होते.

- (१) कृष्णाकाठ, यशवंतराव चव्हाण आत्मचरित्र, पृ. ४४.
- (२) लोकराज्य, मार्च २०१२, पृ. १०.
- (३) उपरोक्त, पृ. १०.
- (४) कृष्णाकाठ - उपरोक्त, पृ. ११७.
- (५) उपरोक्त, पृ. ११९.
- (६) लोकराज्य - उपरोक्त, पृ. १२.
- (७) कृष्णाकाठ - उपरोक्त, पृ.
- (८) भोळे भा. ल., यशवंतराव चव्हाण, राजकारण आणि साहित्य; साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद, १९८५ पृ. ५४.
- (९) लोकराज्य - उपरोक्त, पृ. २८.
- (१०) कल्याणकर वा. इ. (संपादक), यशवंतराव चव्हाण, पृ. ८१.
- (११) लोकराज्य - उपरोक्त, पृ. २८.
- (१२) कृष्णाकाठ - उपरोक्त, पृ.
- (१३) काँग्रेस कार्यकर्त्यांचे शिबीर, महाबळेश्वर, ७/१०/१९६०.

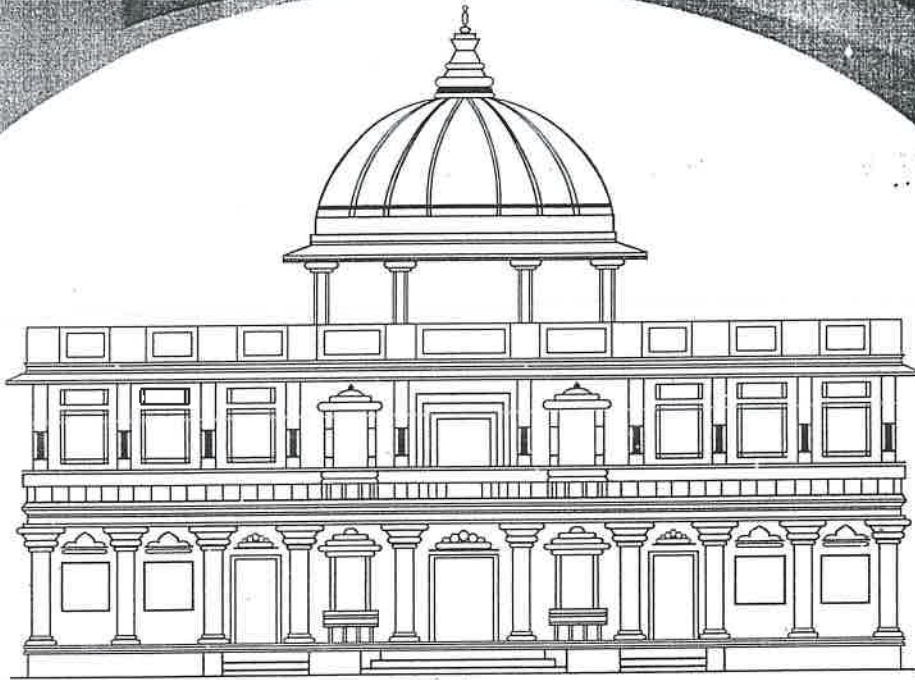


dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

20-22 3-3-3
● वर्ष : १० ● मार्च २०२२ ● पुरवणी विशेषांक ०५



ds

Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi



स्थापना : १ जानेवारी १९६०

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे



UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

॥ संशोधक ॥

पुरवणी अंक - मार्च २०२२ (त्रैमासिक)

● शके १९४४ ● वर्ष : १० ● पुरवणीअंक : ५

संपादक मंडळ

● प्राचार्य डॉ.सर्जेराव भामरे ● प्रा.डॉ.मृदुला वर्मा ● प्रा.श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक :

● प्रा.डॉ.पी.जी.गायकवाड ● प्रा.डॉ.गोवर्धन दिकोंडा ● प्रा.डॉ.सुरेश रामचंद्र ढेरे

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ.वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१.

दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवार सुटी)

मूल्य ₹ १००/-

वार्षिक वर्गणी ₹ ५००/-; आजीव वर्गणी ₹ ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्ट ने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळवणी : अनिल साठये, बावधन, पुणे २१.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

अनुक्रमणिका

- १ महात्मा फुले यांचे शेती समस्येबाबत विचार
- डॉ.अनिल कांबळे, सोलापूर ----- ११
- २ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत 'भूकनायक' या वृत्तपत्राचे योगदान
- प्रा. आप्पासाहेब केंगार, भिलवडी, ता.पलूस, जि.सांगली ----- १५
- ३ महात्मा ज्योतिराव फुले : २१ व्या शतकात समजून घेतांना
- प्रा.अरुणा वाघोले, आळे, ता.जुन्नर, जि.पुणे ----- २०
- ४ महात्मा जोतीराव फुले यांचे शैक्षणिक विचार आणि कार्य : ऐतिहासिक अभ्यास
- डॉ.बाळासाहेब काळे, इंदापूर, जि.पुणे ----- २७
- ५ डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्यातील विचार आणि योगदान
- प्रा.शैलेश भालेराव, पाषाण, जि.पुणे----- ३१
- ६ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कामगार कल्याणविषयक योगदान
- डॉ.चंद्रकांत भारसाकळे, इस्लामपूर, जि.सांगली ----- ३६
- ७ महात्मा ज्योतिबा फुले : एक थोर समाजसुधारक
- श्री.अजित चव्हाण, बार्शी, जि.सोलापूर----- ४१
- ८ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अनुसूचित जातींसाठी सामाजिक न्यायाचे योगदान
- प्रा.गीतांजली चव्हाण, लोणी काळभोर, ता.हवेली, जि.पुणे ----- ४६
- ९ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची भारतीय संसदीय लोकशाही विषयीचे विचार
- प्रा.दादासाहेब हाके, माढा, जि.सोलापूर ----- ४९
- १० डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे धर्मविषयक व व्यक्तिविषयक विचार - एक सामाजिक आकलन
- प्रा.दशरथ रसाळ, सोलापूर ----- ५३
- ११ महात्मा फुले - एक कृतिशील समाजसुधारक
- प्रा.बाळासाहेब देवकाते, कर्जत, जि.अहमदनगर ----- ५६
- १२ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे समाजशास्त्र व समाज कार्यातील योगदान
- डॉ.नागोराव भुरके, सोलापूर ----- ५९
- १३ महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले : लोकोत्तर पुरुष
- डॉ.अतुल कदम, भोसरे, कुर्डुवाडी, ता.माढा, जि.सोलापूर ----- ६२
- १४ सत्यशोधक समाज आणि क्रियाशील सत्यशोधक
- डॉ.गोवर्धन दिर्कोडा, माढा, जि.सोलापूर ----- ६६
- १५ आधुनिक भारताच्या विकासात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान
- प्रा.महादेव डिसले, बार्शी, जि. सोलापूर ----- ७०
- १६ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाही समाजवाद आणि आर्थिक विषमतेबाबतचे विचार
- प्रा.महेंद्र गजधाने, पंढरपूर ----- ७५
- १७ महात्मा फुले यांच्या साहित्यातील मानवतावाद - डॉ.नामदेव शिंदे, माढा, जि.सोलापूर ----- ७७
- १८ महिलांच्या शैक्षणिक सक्षमीकरणासाठी महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे योगदान
- डॉ.पौर्णिमा चव्हाण, आष्टा, ता.वाळवा, जि.सांगली ----- ८०



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत 'मूकनायक' या वृत्तपत्राचे योगदान

प्रा. केंगार आप्पासाहेब नामदेव

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता.पलूम, जि.सांगली ४१६३०३

Email: ankengargmail.com Ph.No.9960635877

प्रस्तावना :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कार्य आणि कर्तृत्व आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत अतिशय महत्त्वाचे मानले जाते. भारतीय समाज जीवनात स्थित्यंतर घडवून आणण्यात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यशस्वी ठरले. महाराष्ट्रातील समाज जीवन हे धार्मिक चालीरिती रुढी, रितीरीवाज, रूढी-परंपरा यांच्या आधारे चाललेले होते. या समाजामध्ये गतिशीलता व परिवर्तनाचा अभाव होता. समाज कोणताही नवीन बदल स्वीकारण्यास तयार नव्हता. मुळातच भारतीय समाजावर धर्माचा पगडा मोठ्या प्रमाणात होता. अशा परिस्थितीमध्ये समाजसुधारणेचा प्रामाणिक प्रयत्न करण्याचा पहिला प्रयत्न महात्मा फुले यांच्या सामाजिक, शैक्षणिक मूलगामी परिवर्तनाच्या कार्यापासून यांच्यापासून झाला. आधुनिक कालखंडामध्ये ब्रिटिशांच्या राजवटीत सर्वांना शिक्षणाचा अधिकार मिळाल्याने शिक्षणातून समाजजागृतीला खऱ्या अर्थाने चालना मिळाली. त्यातूनच पुढे समाज सुधारणा करण्याच्या उद्देशाने अनेक समाजसुधारकांनी महत्त्वपूर्ण कामगिरी बजावली. राजाराममोहन राय, नाना शंकर शेठ, महात्मा फुले, सयाजीराव गायकवाड, गोपाळकृष्ण गोखले, विठ्ठल रामजी शिंदे, शाहू महाराज, दलित समाजातील काही समाजसुधारक, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सारखे विचारवंत निर्माण झाले. या समाजसुधारकांनी सामाजिक क्रांतीचे बीज पेरले. या कालखंडामध्ये समाजामध्ये वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, अस्पृश्यता यांचा मोठा पगडा भारतीय समाज जीवनावर होता. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पूर्व कालखंडात महाराष्ट्रातील समाज जीवन हे धार्मिक चालीरिती, रितीरीवाज, परंपरा यांच्या आधारे चालत होते पुढे जनजागृती व आंदोलने अथवा चळवळी यामुळे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या दलित चळवळीचा विकास होत गेला.

बाबासाहेब आंबेडकर यांनी स्वअनुभवातून अस्पृश्यांना गुलामगिरीतून मुक्त करण्याचा मोठा प्रयत्न केला. अस्पृश्यांमध्ये वैचारिक जागृती, संघटन, शिक्षणाचा प्रसार

व प्रचार, या माध्यमातून या समाजामध्ये आत्मसन्मान व जागृती निर्माण करण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला. अस्पृश्यांना संघटित करण्यासाठी त्यांच्यामध्ये वैचारिक जागृती निर्माण करण्यासाठी सभा, संघटना, परिषदा, सत्याग्रह या माध्यमातून या वर्गाला जागृत करण्याचा प्रयत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी केला. त्यांच्या या कार्यामध्ये वृत्तपत्रांना अतिशय महत्त्वाचा दर्जा व स्थान होते. वृत्तपत्रे समाजप्रबोधनाचे प्रभावी माध्यम व साधन होते. या सर्व पार्श्वभूमीवर आधारित डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी मूकनायक, प्रबुद्ध भारत, समता, बहिष्कृत भारत वृत्तपत्रांची निर्मिती त्यांनी केली. वृत्तपत्रांचे महत्त्व लोकजागृतीचा प्रभावीपणे वापर करण्यासाठी होऊ शकते हा विचार त्यांच्या वृत्तपत्रांच्या निर्मितीमागे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी ठेवलेला होता.

प्रस्तुत शोध निबंधाच्या माध्यमातून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत मूकनायक या वृत्तपत्राचे योगदान याचा आढावा घेतलेला आहे.

१. संशोधनाचे उद्देश :

१. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता व संदर्भ जाणून घेणे.
२. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मूकनायक, बहिष्कृत भारत, प्रबुद्ध भारत, समता, वृत्तपत्रांची माहिती जाणून घेणे.
३. मूकनायक या वृत्तपत्रामधील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी अस्पृश्य वर्गाची मांडलेली स्थिती स्पष्ट करणे.
४. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या समाज विषयक, आर्थिक, राजकीय कार्याचा 'मूकनायक' वृत्तपत्रामधून घेतलेला आढावा जाणून घेणे.
५. अस्पृश्यांच्या उन्नतीसाठी अस्पृश्यांनी चालविलेल्या वृत्तपत्रात 'मूकनायक' पत्राला विशेष स्थान होते हे स्पष्ट करणे.
६. दलितांच्या उद्धारासाठी सुरु केलेल्या चळवळीचे 'मूकनायक' हे मुखपत्र बनले होते हे स्पष्ट करणे.



अंकात त्यांनी केले. या मधून स्वराज्याचे माता पिता, प्रसिद्ध क्रिकेटपटू श्री. बाळू बाबाजी पालवणकर आणि त्यांचे बंधू यांना रोहिदास विद्यावर्धक समाजाच्या विद्यमानाने मानपत्र देण्याचा समारंभ २५ जानेवारी १९२० रोजी मुंबई येथे करीमबाही इब्राहिम कामगार समाजाच्या लायब्ररीत करण्यात आलेला आहे. याबद्दल माहिती या अंकात दिलेली आहे. या अंकाच्या शेवटी राजस्थान मधील मजूर वर्गाची सामाजिक व आर्थिक राजकीय परिस्थिती सुधारावी त्यांना प्रतिष्ठित पणाची वागणूक मिळवून हिंदुस्थानच्या राजकारणात योग्य स्थान प्राप्त व्हावे याच हेतूने देशभर मजूर संघाची स्थापना करण्यात आलेली होती. यामध्ये काँग्रेसची भूमिका कोणती होती हेही विशद केलेले आहे. दि.३ दिनांक १८ फेब्रुवारी १९२० रोजी निघालेल्या मूकनायक या अंकामध्ये त्यांनी 'हे स्वराज्य नव्हे हे तर आमच्यावर राज्य' या शीर्षकाखाली स्वराज्याचे व्यवहारिक रूपांतर कशा पद्धतीने असेल, हिंदुस्थानची सांपत्तिक स्थिती, दारिद्र्याची मूळ कारणे, ब्रिटिश राज्यकारभारातील दोषविवरण, स्वराज्यवादी विचारसरणीचा मूलभूत अर्थ, सामाजिक परिषद व तिची भूमिका, प्रत्येक नागरिकाला वैयक्तिक स्वातंत्र्य, संरक्षण, खाजगी मालमत्ता बाळगण्याचा हक्क, समता, भाषण स्वातंत्र्य व मतस्वातंत्र्य, सभा भरवण्याचा हक्क याबद्दलची चर्चा त्यांनी याच लेखामध्ये केलेली आहे. याशिवाय अस्पृश्य समाजावर होणारा आघात स्वकीय लोकांचे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जुलम पद्धती कशा पद्धतीने घातक आहे. याचे स्पष्टीकरण त्यांनी केले आहे. विविध विचार अंतर्गत त्यांनी यांचा ब्राह्मण वर्ग असावा खास, वैच्यांनी की नेला कैवारी, या शब्दातून मार्मिक विवेचन केलेले दिसते. या अंकाच्या शेवटी सोमवंशीय निराश्रित मित्र समाज मुंबई या संस्थेच्या माध्यमातून बहिष्कृत वर्गाच्या झालेल्या सभा व त्यांनी मांडलेले ठराव यासंदर्भात विवेचन दिलेले आहे.

दि. २७ मार्च १९२० मधील मूकनायक अंकात त्यांनी स्वराज्यातील आमचे आरोहण त्यांचे प्रमाण व त्याची पद्धती शीर्षकाखाली ब्राह्मणेतर व बहिष्कृत लोक यांची प्रत्यक्ष स्थिती त्यांनी वर्णन केलेले आहे. त्याचबरोबर जातींची संख्या व तिच्या गरजा यांचे प्रमाण लक्षात घेऊनच जातवार प्रतिनिधी नियुक्त करावेत व प्रांतिक कायदेमंडळात प्रत्येक जातीचे प्रतिनिधी असले पाहिजेत असा विचार या अग्रलेखातून त्यांनी मांडलेला आहे. पुढे विविध विचार या अंतर्गत अपराध कोणता, मूळ शोधा बाद मिटेल म्हणजेच हा देश जातीभेदाने व धर्म विधाने कशा पद्धतीने ग्रस्त झाला

आहे. याबद्दल प्रत्येकाने विचार विनिमय करावा असे मार्मिक विवेचन या मधून केलेले दिसते. १० एप्रिल १९२० च्या अंकात राष्ट्रातील विविध पक्ष या अग्रलेखामधून देशाचा राज्यकारभार व तेथील राज्यपद्धती यांचा समर्पक शब्दात अन्वयार्थ त्यांनी मांडलेला आहे. म्हणजेच एका देशाचा राज्यकारभार दुसऱ्या देशातील लोक चालवत असतील तर त्या स्थितीला राज्य असे नाव देता येणार नाही. याचेही विवेचन त्यांनी सविस्तरपणे मांडलेले आहे.

दक्षिण महाराष्ट्रातील बहिष्कृत वर्गाची परिषद माणगाव, संस्थान कागल येथे दि. २१ व २२ मार्च १९२० रोजी पार पडली. या सभेत जमलेला समुदाय पाच हजारांपेक्षाही जास्त होता. या सभेत दादासाहेब राजेसाहेब इनामदार यांच्यानंतर परिषदेचे अध्यक्ष डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी अध्यक्ष भाषणामध्ये परिषदेचे महत्त्व मुंबई इलाख्यातील परिषदेचा पहिला प्रसंग यांचे विवेचन करून बहिष्कृत वर्गाची सद्यस्थिती त्यांनी मांडलेली आहे. या परिषदेत सर्व मागासलेल्या जातींचा परामर्श त्यांनी घेतला. त्याच्या दुसऱ्या दिवशी राजश्री शाहू महाराजांनी अस्पृश्य लोकांची हजेरी माफ करण्याची कोल्हापूर संस्थानात पद्धत बंद झाल्याचे राजश्री शाहू महाराजांनी सांगितले. प्रत्यक्ष बलुतेदार वर्गाची स्थिती, समाजातील सुधारित वतनदार यांनी गुलामगिरी ची कामे बलुतेदार वर्गावर लावू नयेत अशा सूचना त्यांनी या परिषदेमध्ये केल्या. त्यानंतर या परिषदेतच विविध महत्त्वाचे ठरावही पास झाले. बहिष्कृत लोक हे हिंदी समाजाचे घटक आहेत व इतर हिंदी लोकांप्रमाणे त्यांना सार्वजनिक सोयींचा उपभोग घेण्याचा हक्क आहे. गुण सिद्ध व्यापार करण्याचा व नोकरी मिळवण्याचा हक्क, प्राथमिक शिक्षणाचा हक्क, तसेच शिक्षक डेपोटी असिस्टंट, डेपोटी एज्युकेशनल इंस्पेक्टर अशा विविध पदावर अस्पृश्य समाजातील लोकांची नियुक्ती केली जावी. तलाठ्यांच्या जाग्यावर बहिष्कृत वर्गाच्या नेमणुका होत जाव्यात भावी कायदे - कौन्सिल मध्ये बहिष्कृत त्यांचे प्रतिनिधी त्यांच्या लोकसंख्या व गरजेच्या प्रमाणात स्वतंत्र मतदार संघातून निवडून यावेत. अशा वेगवेगळ्या मागण्या या परिषदेतून केल्या गेल्या त्यामुळे ही परिषद परिपूर्ण बनली असे विवेचन १० एप्रिल १९२० च्या मूकनायक अंकातून दिसून येते. ५

दिनांक ५ जून १९२० च्या मूकनायक अंकामध्येयामध्ये अखिल भारतीय बहिष्कृत समाज परिषद नागपूर या परिषदेचा अहवाल सविस्तर रीत्या वर्णन केलेला आहे ही परिषद दि. ३० व ३१ मे आणि एक जून १९२० रोजी छत्रपती शाहू



संशोधक

संशोधक

श त्यांनी दिलेले
भावी-पिढीच्या
अशा वेगळ्या
ज हितचिंतनाचे
ची प्राण प्रतिष्ठा
नीच्या हातातील
जातील तरुणांना
करून देतात.
पत्रकारितेमध्ये
माजाची स्थिती
पूर्ण प्रयत्न या

ने 'मूकनायक',
पत्रांचा नावे

समता, बंधुता
कार आपल्या

कशा पद्धतीने
अंकामधून

कारक आहेत
हानिशा डॉ.
वृत्तपत्रातून

मध्ये तय्य
श देतात.

केलेल्या

बोलक्या
त्यांच्यात
मी दि. ३१
क्षक सुरू
साहाय्य
केलेल्या
स्यांच्या
नायक'
जकीय
२०२२

नेतृत्वाच्या अगदी प्रारंभ काळातील एक उपक्रम म्हणूनही या पत्राला महत्त्व आहे. अस्पृश्यांच्या चळवळीला त्यांच्यासारख्या त्यांचे नेतृत्व लाभल्याने चळवळीला जे नवे वळण मिळाले व त्यातून जो इतिहास घडला त्यातले हे पहिले पाऊल होते. पत्राचे 'मूकनायक' नावही विशेष बोलके होते. हिंदुधर्मातील सनातनी आचार-विचारांनी व रूढिबंधनांनी त्रस्त झालेल्या आपल्या हतबल समाजाला वाचा असूनही आपले दुःख, यातना व मानहानी बोलून दाखविता येत नाही. मुक्या बनलेल्या आपल्या बांधवांना बोलते होऊन आपली सुखदुःखे धैर्याने वेशीवर टांगता यावीत म्हणून हे पत्र 'मूकनायक' नाव घेऊन जन्मास आले होते. केवळ सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रात चळवळ करून भागणार नाही. राजकीय क्षेत्रातही उतरून प्रस्थापितांना टक्कर दिली नाही, तर काहीच साधणार नाही अशी नवी जाणीव घेऊन ते राजकारणाकडे ओढले गेले. परिस्थितीने त्यांना राजकारणाच्या प्रवाहात उडी घेण्यास भाग पाडले. त्या नवीन जाणीवेचे, नव्या परिस्थितीचे 'मूकनायक' हे पत्र प्रतीक होते. हिंदुस्थानच्या राजकारणात बहुजन समाजाच्या पाठोपाठ अस्पृश्य वर्गाचीही उपेक्षा करून चालणार नाही, त्या वर्गात नवी जागृती येत आहे, तिची दखल सर्वांनी घेणे आवश्यक होते. 'मूकनायक' पत्र 'मूक' जनांचे प्रतिनिधित्व करित होते.

संदर्भ :

१. जाधव चसंत किशनराव, महाराष्ट्रातील परिवर्तनाचा इतिहास १८१८ ते १९६० विद्या प्रकाशन नागपूर, प्रथमावृत्ती २००५.

२. नरके हरी, कासारे म.ल., कांबळे एन. जी. संपादक, डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता १९२० ते १९२८.
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र साधने, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन समिती मुंबई, प्रथम आवृत्ती २००५, पृष्ठ क्रमांक ३४५.
३. बहिष्कृत भारत मधील अग्रलेख, ०३ एप्रिल १९२७ चा अग्रलेख, पृष्ठ क्रमांक ०४.
४. नरके हरी, कासारे म.ल., कांबळे एन. जी. संपादक, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता १९२० ते १९२८.
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र साधने, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन समिती मुंबई, प्रथम आवृत्ती २००५, अंक 'मूक नायक', पृष्ठ क्रमांक ३५६.
५. अंक १५ - मूकनायक पृष्ठ क्रमांक ३८०.(८)
६. अंक १७.- मूकनायक पृष्ठ क्रमांक. ४३०(८)
६. अंक १७.- मूकनायक पृष्ठ क्रमांक. ४३४(४)
७. ले. ले. रा.के. मराठी वृत्तपत्रांचा इतिहास, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन पुणे, प्रथम आवृत्ती १९८४, पृष्ठ क्रमांक ५८३.
८. डॉ. सिंगारे अनिल व घुले, महाराष्ट्रातील आंबेडकरी चळवळीचा इतिहास, विठ्ठल अरुण प्रकाशन लातूर, प्रथमावृत्ती नोव्हेंबर २००९.



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.



B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

ISSUE No- (CCCXLIX) 348 -B

**Sciences, Social Sciences, Commerce,
Education, Language & Law**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Prof. Sujata Awati

Editor

The New Miraj Education Society's

Kanya Mahavidyalaya, Miraj

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



**INDEX**

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|--|---|----------|
| 1 | स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्रियांचे योगदान | लेफ्ट. डॉ. अर्चना टाक | 1 |
| 2 | स्वातंत्र्याची ७५ वर्षे | सहा. प्रा. अस्मिता संजय कोडग | 4 |
| 3 | 'हॅन्डबॉल खेळाडूंच्या वेग या घटकावर टायर प्रशिक्षणाचा होणारा परिणाम: एक अभ्यास' | प्रा. बाबासाहेब म्हाळू सरगर, डॉ. सुनिल दत्तात्रय चव्हाण | 7 |
| 4 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राष्ट्रीय सुरक्षेबाबतचे विचार | प्रा. बाबासाहेब शात्रू पाटील | 12 |
| 5 | प्रसूतीपूर्व आणि प्रसूतीनंतरच्या तंदुरुस्तीसाठी विशेष परिस्थितीमध्ये व्यायामाचे नियम आणि व्यायामाची पद्धत. | डॉ. भारत राजाराम चालसे | 14 |
| 6 | आदिवासींचे सण व उत्सव | भोई रविंद्र रतिलाल | 19 |
| 7 | सामाजिक समस्या, लिंगभाव आणि समाज | प्रा. बिजली श्रीपाल दडपे | 22 |
| 8 | राजर्षि शाहूंची कोल्हापूर संस्थानातील कामगार विषयक भूमिका | प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे | 25 |
| 9 | लिंग, लिंगभाव आणि हिंसाचार | दिपाली शंकर वाघमारे | 29 |
| 10 | छत्रपती शाहू महाराज यांचा सामाजिक न्यायाचा विचार | डॉ. अण्णासाहेब हरदारे | 33 |
| 11 | समकालीन समाज आणि संत साहित्यातील सामाजिक विज्ञान | डॉ. चंद्रशेखर आत्माराम भगत | 36 |
| 12 | शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान | डॉ. गौतम नामदेव ढाले | 40 |
| 13 | सामाजिक चळवळींचा चिकित्सक अभ्यास | प्रा. डॉ. गंगाधर बालू चव्हाण | 44 |
| 14 | शिक्षण व शारीरिक शिक्षणाची कोरोना काळातील भूमिका | डॉ. महादेव सुखदेव सुर्यवंशी | 47 |
| 15 | कोविड-१९ चा भारतीय उद्योगांवरील परिणाम | डॉ. तेजस्विनी बी. मुडेकर | 51 |
| 16 | महिलांच्या सर्वांगीण विकासात क्रीडा व शारीरिक शिक्षणाची भूमिका : एक अभ्यास | डॉ. प्रिया प्रकाश टेळे | 55 |
| 17 | गुणग्राहक राजा छत्रपती शाहू महाराज | डॉ. रामदास वैद्य | 60 |
| 18 | जातीव्यवस्था व अस्पृश्यता - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर | डॉ. सुरेवाड संजय गंगाराम | 63 |



| | | |
|----|--|-----|
| 19 | फलटण तालुक्यातील शेतीच्या विकासामध्ये कृषी सहकारी सोसायट्यांचे योगदान (सन १९४८-२०००) प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम | 66 |
| 20 | महाराष्ट्रातील सामाजिक हिंसाचार: एक ऐतिहासिक दृष्टीक्षेप डॉ. शुभांगी सदाशिव माने , प्रा.दिग्विजय दत्तात्रय कुंभार | 69 |
| 21 | छत्रपती शाहू महाराज : सामाजिक विचार व कार्य डॉ.वसंत निवृत्ती बंडे | 75 |
| 22 | जलसिंचनाचा सांगली जिल्ह्यातील पीक प्रारुपावर झालेला परिणामाचा एक चिकित्सक अभ्यास डॉ. विनायक तुकाराम पवार | 77 |
| 23 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक योगदान प्रा.डॉ. विजयसिंग भाबरदोडे | 81 |
| 24 | महिलांच्या सामाजिक समस्या प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर सोनवणे | 85 |
| 25 | शाहू महाराज यांचे आरक्षण धोरण डॉ.लखन दादासो भोगम | 89 |
| 26 | महिला अत्याचार : कारणे आणि उपाय प्रा.डॉ.प्रवीण भोसले | 92 |
| 27 | लिंगभाव,दारिद्र्य,दिव्यांगत्व, आक्रमकता, हिंसा आणि मानसिक आरोग्याबाबतच्या समस्या एकनाथ गंगाराम गायकवाड | 97 |
| 28 | भारतामधील सहकार चळवळीच्या समस्या प्रा.डॉ. गव्हाळे बी.व्ही | 100 |
| 29 | राजश्री छत्रपती शाहू महाराज : विचार आणि सामाजिक योगदान सहा . प्राध्या. गोपाल यशवंत कबनुरकर | 107 |
| 30 | महिलांच्या विकासामध्ये शारीरिक शिक्षणाचे महत्त्व प्रा. ज्योती तानाजी गावडे | 112 |
| 31 | राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक धोरण प्रा किशोर लक्ष्मण साळवे | 115 |
| 32 | भारताचे परराष्ट्र धोरण निर्णायक वळणावर प्रा.एम.एम.सूर्यवंशी | 118 |
| 33 | भारतातील शाश्वत विकास आणि कृषी क्षेत्र कु.माधुरी परशराम देशमुख , डॉ. शिवशंकर सीताराम लेकुरवाळे | 122 |
| 34 | डॉ. वानलेस व राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज स्नेह प्रा.डॉ.मजिरी कुलकर्णी | 126 |
| 35 | डॉ.वसंतदादा पाटील यांची महाराष्ट्र सहकारी चळवळ व ग्रामीण विकासातील भूमिका: कु. निकिता बसर्गे | 129 |
| 36 | राजश्री शाहू महाराज आणि जातीभेद निवारण सहा.प्रा. पांडुरंग भिवाजी गोरे | 134 |
| 37 | शेती आणि शाश्वत विकास सौ.प्राची पंकज नांदेकर | 136 |
| 38 | सकारात्मक मानसिकतेसाठी खेळ प्रशांत विभीषण पाटील | 140 |
| 39 | छत्रपती शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उद्धाराचे कार्य प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार | 143 |
| 40 | तैत्तिरीय उपनिषदातील सामाजिक आचाराची तत्वे प्रा रचना सौरभ शहा | 148 |

**छत्रपती शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उद्धाराचे कार्य****प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार**

सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी., मोबाईल - ९९६०६३५८७७

1. गोषवारा :

महात्मा फुलेंनी अत्यंत सूक्ष्मपणे अस्पृश्यांसाठी शाळा उघडून त्यांच्या मुक्तीचा मार्ग आखला. महात्मा फुलेंचे हे कार्य छत्रपती शाहू महाराजांनी पुढेचालू ठेवले. आपल्या प्रांतात अस्पृश्यांसाठी शाळा आणि वसतिगृहे उभारून त्यांनी कोल्हापूर प्रांतातील अस्पृश्यता निर्मूलनासाठी कंबरकसली होती. त्यांनी महार समाजातील शिक्षित लोकांना (एक अस्पृश्य जात) वकिलांच्या सनदादिल्यातसेचतलाठी (स्थानिक महसूल अधिकारी) पदे दिली आणि त्यांनी सामाजिक आणि आर्थिक गुलामगिरीच्या वेड्या तोडल्या. अस्पृश्यांच्या जीवनातील सुधारणांसाठी त्यांनी अनेक ठराव जारी केले आणि त्याची प्रभावीपणे अंमलबजावणी केली. अस्पृश्यांना स्वावलंबी बनवण्यासाठी त्यांनी शिक्षणाची सोय केली. त्यांनी ठिकठिकाणी वसतिगृहेही उघडली. त्यांना समान बागणूक देण्यासाठी ते पुढे आले. शिवाय, त्यांच्यामध्ये वैचारिक जागृती करण्यासाठी त्यांनी विविध सभा आणि परिषदांमध्ये भाग घेतला. या उल्लेखनीय कार्यामुळे अस्पृश्यांच्या चळवळीला चालना मिळाली. त्यांच्या कर्तृत्वामुळे अस्पृश्य समाज त्यांना ईश्वरी अवतारमानत असे. तर, प्रस्तुत संशोधन लेखात अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक, सामाजिक आणि वैचारिक जागृतीबाबत शाहू महाराजांचे उल्लेखनीय कार्य संशोधनाच्या दृष्टीकोनातून समोर आणण्याचा प्रयत्न आहे.

❖ प्रस्तावना :

ब्रिटीश राजवटीत आपले अस्तित्व टिकवण्यासाठी अनेक जहागीरदारांनी आपले जीवन संपवले. भारतीय राजकारणही त्याच परिस्थितीतून जात होते. पण, त्याला काही अपवाद आहेत. त्यात कोल्हापूरचे छत्रपती शाहू महाराज यांचे नाव अग्रगण्य आहे. शाहू महाराजांनी अस्पृश्यांच्या सन्मानजनक जीवनासाठी जीवनाच्या शेवटच्या श्वासापर्यंत चळवळ चालवली. त्यांनी अस्पृश्यांना मुख्य प्रवाहातील लोकांप्रमाणे शैक्षणिक सुविधा उपलब्ध करून दिल्या. अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक, सामाजिक आणि वैचारिक जागृतीबद्दल त्यांना काळजी होती. कारण ते इतरांवर अवलंबून होते. थोडक्यात, वर्तमान संशोधन शाहू महाराजांच्या अस्पृश्य उद्धार या उल्लेखनीय कार्यावर प्रकाश टाकते. वर्तमान संशोधन लेख तीन भागात विभागलेला आहे. पहिला भाग अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक विकासासाठी शाहू महाराजांच्या कार्याशी संबंधित आहे. दुसरा भाग सामाजिक समतेसाठी केलेल्या त्यांच्या प्रयत्नांवर प्रकाश टाकतो. तिसऱ्या भागात अस्पृश्यांमध्ये वैचारिक जागृतीसाठी शाहू महाराजांच्या कार्याचा समावेश आहे. शेवटी, या सर्व पैलूंचे मूल्यमापन त्यात दिले आहे.

❖ शैक्षणिक कार्य :

छत्रपती शाहू महाराजांनी अस्पृश्यांसाठी शाळा आणि वसतिगृहे उघडून त्यांच्या विकासाचा मार्ग मोकळा केला. हे करत असताना त्यांनी अस्पृश्य समाजातील पूर्वग्रह नष्ट करण्यासाठी कठोर परिश्रम घेतले आणि शिक्षणात समान संधी उपलब्ध करून देण्याचा आग्रह धरला. त्यांनी आपल्या प्रांतात शिक्षणाच्या माध्यमातून मागासलेल्या समाजाच्या उन्नतीचे धोरण स्वीकारले. यासाठी अनेक वसतिगृहे स्थापन केली.

कोल्हापुरातील विविध समाजातील विद्यार्थ्यांसाठी त्यांनी शाळा आणि वसतिगृहे उभारली. १९०८ मध्ये त्यांनी भास्कररावबाधव, महादेव डोंगरे, बागल, शिंदे इत्यादी सहकाऱ्यांना सहभागी करून अस्पृश्यांसाठी वसतिगृहेही उघडली. या कामासाठी त्यांनी 'शिक्षण प्रसार मंडळ' (विद्या प्रसारक मंडळ) नावाची संस्था स्थापन केली. या लोकांनी अस्पृश्यांची मुले वसतिगृहासाठी शोधून काढण्यासाठी खूप धडपड केली, तसेच त्यांचा शैक्षणिक दर्जा मुख्य प्रवाहातील लोकांच्या मुलांच्या बरोबरीने वाढवण्याचा प्रयत्न केला. परंतु, अस्पृश्यांची शिक्षणाबाबत उदासीनता असल्याने त्यांना शिक्षणाचे महत्त्व पटवून देणे कठीण काम होते. त्यामुळे या अडचणींवर मात करण्यासाठी शाहू महाराजांनी अथक परिश्रम घेतले. त्यांच्या राज्याभिषेकाच्या वेळी त्यांच्या प्रांतात अस्पृश्यांसाठी फक्त पाच





शाळा होत्या आणि विद्यार्थ्यांची संख्या 168 होती. 1907-1908 दरम्यान अस्पृश्यांसाठीच्या शाळांची संख्या 16 आणि विद्यार्थ्यांची संख्या 416 होती. महाराजांच्या अविरत प्रयत्नांमुळे अस्पृश्यांसाठीच्या शाळांची संख्या हळूहळू वाढत गेली. 1912 मध्ये अस्पृश्यांसाठी शाळांची संख्या चार वर्षांत 27 झाली आणि विद्यार्थ्यांची संख्या 636 होती.

अस्पृश्यांसाठी शाळा उघडण्यासाठी त्यांनी मनापासून पाठिंबा दिला. या योजनांच्या आर्थिक तरतुदींचे ते स्वतः निरीक्षण करत होते. छत्रपती शाहू महाराज आणि भाऊराव पाटील यांनी सातारा जिल्ह्यातील शैक्षणिकदृष्ट्या मागासलेल्या समाजातील शिक्षणाच्या प्रसारासाठी निधी संकलनाची अनोखी योजना आखली. त्यांना कुस्तीची खूप आवड होती आणि त्यांच्या आश्रयाखाली अनेक पैलवान होते. त्यांनी कुस्तीपटूंच्या 4-5 जोड्यांची किंमत घेतली आणि नियुक्त केलेल्या समितीकडे सोपवली. कोल्हापूर प्रांतात लोकांना कुस्तीबद्दल खूप रस होता. त्यांनी विविध गावांमध्ये कुस्तीच्या सामन्यांची तिकिटे विकण्याची योजना राबवली आणि त्यातून मिळणारे उत्पन्न शिक्षणाच्या प्रसारावर खर्च केले.

सामाजिक विषमतेचे निर्मूलन शाहू महाराजांनी हिंदू समाजातील पारंपारिक जातीव्यवस्थेचे उल्लंघन करून समानतेवर आधारित नवा समाज निर्माण करण्याचा सदैव प्रयत्न केला. जातीचे उच्चाटन, अस्पृश्यता निर्मूलन, श्रेष्ठ आणि कनिष्ठ, उच्च आणि खालच्या वर्गातील कृत्रिम भिंती नष्ट करण्याच्या विचारांनी ते प्रेरित होते. शाहू महाराजांनी कोणीही अस्पृश्यांचा अपमान करणार नाही असा आदेश जारी केला. प्रांतात असे घडल्यास त्याला गावातील मजूर, पोलीस सहाय्यक आणि स्थानिक महसूल कर्मचारी जबाबदार राहतील, असा आदेश काढला होता. त्यांनी प्रांतातील सर्व सार्वजनिक ठिकाणे अस्पृश्यांसाठी खुली केली. त्यांनी अस्पृश्यांसाठी सार्वजनिक नळ, विहिरी, तलाव, सराया, रुग्णालये, शाळा आणि कार्यालये उघडून त्यांना समान अधिकार बहाल केले. त्यांनी अस्पृश्यांबद्दल भाष्य केले, "माझा विश्वास आहे की खरी राष्ट्रसेवा ही त्यांच्या बेड्या तोडण्यात आहे. अमानुष अत्याचार ज्याने अस्पृश्यांना पूर्णपणे गुलाम केले. खालच्या जातीचे लोक त्यासाठी अविरत प्रयत्न करूनही ते करू शकत नाहीत. उच्चवर्गीय लोकांनी प्राचीन काळापासून वारसा हक्काने उपभोगलेले हक्क सोडून द्यावेत. अस्पृश्यांच्या मुलांना इतरांप्रमाणेच सरकारी शाळांमध्ये आणि उघडलेल्या सर्व स्वतंत्र शाळांमध्ये प्रवेश द्यावा, असा आदेश त्यांनी जारी केला. तसेच, विविध जाती-धर्मांच्या मुलांना कोणत्याही प्रकारचा अपमान न करता एकत्रितपणे बसवले पाहिजे. अस्पृश्यांना धार्मिक शिक्षण देण्यामागचा त्यांचा हेतू हा होता की समाजात समानता प्रस्थापित करावी.

समाज म्हणून, त्यांनी धार्मिक शिक्षण सुरू करण्यापूर्वी अस्पृश्य विद्यार्थ्यांसाठी धागा समारंभ (उपनयन विधी) आयोजित केला. शाहू महाराज हे इतिहासातील पहिले सुप्रसिद्ध राजा होते ज्यांनी अस्पृश्यांसाठी धागा समारंभ आयोजित करून वेद संथा दिली आणि त्यांना ब्राह्मणांच्या तथ्याकथित श्रेष्ठ दर्जाच्या बरोबरीने वर आणले. त्यांचा कोल्हापुरातील समाजव्यवस्थेवर अपरिहार्यपणे परिणाम झाला आणि ब्राह्मणवादाची मुळं उद्ध्वस्त झाली. त्यामुळे पुण्यातील काही ब्राह्मणांनी शाहू महाराजांबद्दल तक्रार केली.

महाराजांनी इंग्रजांना राजकीय दृष्ट्या दडपण्याचा प्रयत्न केला. त्यावेळी ते म्हणाले, "मागासवर्गीयांसाठी सेवा करताना मला पदच्युत झाले तरी मला पर्वा नाही. त्यांनी विरोधी आणि समकालीन ब्रिटीशांना इशारा दिला की शेवटच्या श्वासापर्यंत मी सदैव प्रयत्नशील राहीन."

त्यांनी सामाजिक समतेची चळवळ उभी केली. या चळवळीने अस्पृश्यता निर्मूलनाला संवैधानिक स्वरूप दिले होते. शाहू महाराजांनी हिंदू समाजात प्रचलित असलेल्या हानिकारक रूढी आणि परंपरांना आवर घालून सामाजिक समता विकसित करण्यावर ठळकपणे भर दिला.

❖ वैचारिक जाणीव :

शाहू महाराजांनी आपल्या प्रांतातील अस्पृश्यांना शिक्षण आणि रोजगाराच्या समान संधी उपलब्ध करून देण्याचा प्रयत्न केला. या ऐतिहासिक कार्यासाठी संपूर्ण अस्पृश्य समाज कायम ऋणी होता. या कामाचे उत्तम उदाहरण म्हणजे बस्तवाडपेटा रायबाग भागातील करवीर येथील महार जहागीरदारांनी २७ जुलै १९२१ रोजी महारहिवासीबाबत अर्ज सादर केला होता. शाहू महाराजांच्या अस्पृश्यांच्या उन्नतीसाठी केलेल्या कार्याचा उल्लेख करताना ते म्हणाले की, "उदार राजाने अनेक प्रकारे प्रयत्न केले. आमच्या उन्नतीसाठी आणि सुधारणेसाठी. तुम्ही



बोर्डिंग, शाळा उघडल्या, अनेकांना रोजगार उपलब्ध करून दिला, काहींनी वकिलीच्या व्यवसायात प्रवेश केला आणि कोणत्याही प्रकारचा भेदभाव बाजूला सारून राजा आम्हाला आपल्या मुलांप्रमाणे समान प्रेमाने वागवतो. म्हणून, आमचा समाज तुमची देवाप्रमाणे पूजा करतो आणि या उल्लेखनीय कार्यासाठी सदैव ऋणी राहील" (बहिष्कृत भारत पाक्षिक (मराठी) ११). अस्पृश्य हे शाहू महाराजांच्या कार्यापुढे नतमस्तक होते असे सूचित करते. परंतु, अस्पृश्यांमध्ये वैचारिक जागृती करण्यासाठी त्यांनी अविरत प्रयत्न केले. अस्पृश्यतेच्या परंपरेवद्दल ते म्हणाले की, 'महाभारतानंतर वैदिक धर्माचा ज्ञास झाला तेव्हा द्विज लोक स्वतःला जन्माने श्रेष्ठ आणि शूद्रांपेक्षा (अस्पृश्य) कनिष्ठ समजत होते. त्यामुळे भारतातील बहुतांश लोकसंख्या शिक्षण, धर्म आणि समृद्धीपासून वंचित होती. पण, अस्पृश्यांवर अत्याचार झाले.

बुद्धाच्या काळात ते थांबले. त्यानंतर, वेदांवर आधारित धर्मांध हिंदू धर्माची भरभराट झाली, ज्याची पराकाष्ठा समाजातील वाढत्या जातिवादात झाला. त्याच्या फांद्याही मोठ्या प्रमाणावर फोफावल्या. आजकाल, अस्पृश्यांवर होणारे जातिवाद आणि अत्याचार ही हिंदू धर्मातील आज्ञा मानली जाते". या समस्येवर मात करण्यासाठी मुख्य प्रवाहातील लोकांनी पुढे आले पाहिजे असे शाहू महाराजांना वाटत होते. तसेच, खालच्या जातीतील लोकांनी स्वतःच्या उन्नतीसाठी आणि वारसाचा दर्जा वाढवण्यासाठी कठोर परिश्रम केले पाहिजेत आणि उच्च जातीच्या लोकांनीही खालच्या जातीतील लोकांसोबत एकत्रितपणे काम केले पाहिजे. हे पद्धतशीरपणे आणि सौहार्दपूर्णपणे जातिवादाचा नायनाट करण्यास मदत करेल. तसेच शाहू महाराजांनी समाजातून जातिवाद नष्ट करण्यासाठी आंतरजातीय संबंध प्रस्थापित केले पाहिजेत असे सुचवले. आंतरजातीय विवाह वाढवण्यासाठी कायदेशीर अडथळे दूर केले पाहिजेत, जे या समस्येवर मात करण्यासाठी फायदेशीर ठरतील. त्यासाठी कायदेशीर तरतुदी कराव्यात. शाहू महाराजांनी मे १९२० मध्ये अखिल भारतीय मागासवर्गीय परिषदेचे अध्यक्षपद भूषवले. त्यांनी परिषदेत स्पष्ट केले की, 'जातिवाद निर्मूलनाच्या प्रमाणावर राष्ट्राचा विकास अवलंबून आहे'.

दिल्ली येथील अखिल भारतीय मागासवर्गीय परिषदेत राजश्री शाहू महाराज म्हणाले, "ब्रिटिश साम्राज्याचा उदय आपल्या जीवनात जागृती आणि पुनर्जागरणाकडे नेतो. आपण ते विसरता कामा नये. तसेच, देशाचे राजकीय भवितव्य संबंधित राष्ट्रांच्या नागरिकांच्या चारित्र्यावर अवलंबून असते. त्यामुळे प्रत्येकाने स्वतःचे चारित्र्य सुधारण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. प्रत्येकाने दिलेले अधिकार वापरण्याची त्यांची क्षमता त्यांच्या वर्तनातून सिद्ध करावी". या कार्यात त्यांनी मोलाचे योगदान दिले असले तरी त्यांनी कधीही अस्पृश्यांचे नेते म्हणून स्वतःचा प्रचार केला नाही. त्यांनी नेहमीच अस्पृश्यांचे सेवक म्हणून काम केले.

शाहू महाराजांनी नागपुरातील अखिल भारतीय मागासवर्गीय परिषदेत आपले विचार व्यक्त करताना म्हटले होते, "कोणतीही आपत्ती आली तरतुझी सेवा करण्यासाठी मी माझे साम्राज्य राजपुत्राच्या स्वाधीन करीन. " अस्पृश्यांच्या चळवळीचे नेतृत्व अस्पृश्य समाजातून बाहेर पडल्यास अस्पृश्य मुक्तीचा मार्ग अधिक मोलाचा होईल, असे शाहू महाराजांना नेहमीच वाटत होते. गवई यांना लिहिलेल्या पत्रातून त्यांना हाच संदेश सुचवायचा होता. यामध्ये दिलेल्या पत्रात ते म्हणाले, "तुम्ही तुमच्या समाजाच्या चळवळीचे नेतृत्व इतरांकडे देऊ नका. विश्वासाह् आणि योग्य नेता स्वतःच्या समाजातून नियुक्त केला पाहिजे. अन्यथा, इतर समाजाचे नेते तुमच्या आणि चळवळीच्या भविष्याशी खेळतील". त्यामुळे त्यांच्या अध्यक्षतेखाली झालेल्या माणगाव परिषदेत त्यांनी डॉ. आंबेडकरांना अस्पृश्यांचे नेते म्हणून जाहीरपणे घोषित केले. त्यानंतर अस्पृश्य समाज निर्धाराने डॉ. आंबेडकरांच्या पाठीशी उभा राहिला परिणामी इतर नेत्यांची कीर्ती हळूहळू कमी होत गेली. डॉ. आंबेडकरांच्या नेतृत्वाखाली मानवमुक्तीची चळवळ चालवली.

❖ निष्कर्ष :

शाहू महाराजांनी महात्मा फुलेंची सत्यशोधक (सत्यशोधक) चळवळ अविरतपणे वाढवली. त्यांनी समाजातील विषमता संपुष्टात आणण्यासाठी आपली शक्ती वापरली. अवंत-गार्डेची प्रमुख भूमिका म्हणजे लोकांच्या जीवनात रूपांतरित बदल घडवून आणणे, त्यांना मानवतेवद्दल जागरूक करून प्रगतीकडे नेणे. या दृष्टीकोनातून छत्रपती शाहू महाराज हे एक आयकॉनोक्लास्ट होते. ज्या काळात शाहू महाराजांनी अस्पृश्यता निर्मूलनाचा मुद्दा उपस्थित केला तो काळ आजच्यासारखा अनुकूल आणि पुरोगामी नव्हता. केसरीच्या वृत्तपत्रातील शाहू महाराजांच्या



मृत्यूच्या लेखात त्याचे बारकाईने वर्णन केले आहे. केसरीचे लेखक म्हणाले, "कोणीही याला मागे टाकू शकत नाही. आजच्या युगातील ज्ञानशास्त्र, राजकारण आणि समाजशास्त्र यातील शाहू महाराजांचे कौशल्य आणि बौद्धिक क्षमता. लोक त्याच्या प्रचंड आणि कठोर परिश्रमाचे साक्षीदार आहेत" (प्रबोधन पाक्षिक 117). प्रचारक आणि समाजसुधारक ठाकरे यांनी छत्रपती शाहू महाराजांच्या कार्याकडे विविध समाजाचे लोक व्यापक दृष्टिकोनातून कसे पाहतात हे दाखवण्याचा प्रयत्न केला होता. या संदर्भात ते म्हणाले, "तो चित्पावन समाजातील लोकांचा शत्रू होता. देशस्थ समाजासाठी ते धार्मिक क्षेत्रात बंडखोर होते. ते मुंबई आणि भारत सरकारचे प्रिय मित्र होते, ब्राह्मणेतारांचे पिता होते तर अस्पृश्यांसाठी देवाचे देवदूत होते" (प्रबोधनपाक्षिक (मराठी) 116). हे शाहू महाराजांच्या कार्याकडे लोकांचे विविध दृष्टीकोन स्पष्ट करते. 6 मे 1922 रोजी शाहू महाराजांच्या निधनानंतर त्यांना श्रद्धांजली अर्पण करताना 'बहिष्कृत भारत'मध्ये लिहिले होते, "ते आमचे अब्राहम लिंकन होते ज्यांनी हे सिद्ध केले आहे की जर तुम्ही प्रेमाची बीजे रुजवली तर ती तुम्हाला द्वेषाची फळे कधीच देणार नाही. ; तो आमचा गौरव आहे; हिंदूंच्या मनावरील अस्पृश्यतेचा डाग त्यांनी पुसून टाकला आहे. तो आमचा देव होता..." (बहिष्कृत भारत पाक्षिक). डॉ. आंबेडकर यांनी टिपणी केली, "शाहू महाराजांनी सामाजिक विषमता नष्ट करण्यासाठी अविरत प्रयत्न केले आणि ब्राह्मणांचे गड उध्वस्त केले". अशा प्रकारे, छत्रपती शाहू महाराजांनी नेहमीच अस्पृश्यांच्या विकासाची काळजी घेतली असे सध्याच्या अभ्यासातून स्पष्ट झाले आहे. अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक, सामाजिक आणि वैचारिक जागृतीसाठी त्यांनी खूप प्रयत्न केले. शाहू महाराजांचे हे मोठे कार्य आगामी पिढीसाठी प्रेरणादायी आहे.

❖ संदर्भ सूची :

1. प्रबोधन पाक्षिक (मराठी), 1 जून 1922, 122.
2. गरुड साप्ताहिक, 13 मे 1954.
3. बहिष्कृत भारत पाक्षिक (मराठी), 4 नोव्हेंबर 1927, 4थी आवृत्ती.
4. मूकनायक पाक्षिक (मराठी), 5 जून 1920.
5. बहिष्कृत भारत पाक्षिक (मराठी), 3 जून 1922.
6. गरुड साप्ताहिक, (मराठी), 13 मे 1954.
7. प्रबोधन पाक्षिक, 16 मे 1922, 117.
8. बागल, के. एम., एड. (1933). सत्यशोधक हिरक महोत्सव ग्रंथ (मराठी), हीरक महोत्सवी ग्रंथ समिती.
9. बनसोडे, आर. एच. (1930). अस्पृश्यांची देशभूल (मराठी). गिरिजाशंकर मारुती शिवदास, मुंबई.
10. गोरे, जी. आणि शिरूभाऊ एल. (1973). महाराष्ट्रातील दलित-शोध आनी बोध (मराठी), सहध्यायन पब्लिकेशन, मुंबई.
11. खैरमोडे, C. B. (1978). डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर: चरित्र (मराठी). 3रा. खंड. I. प्रताप पब्लिकेशन, मुंबई.
12. खरात, एस. (1966). डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धर्मांतर (मराठी). ठोकळ भवन, श्री लेखन वाचनघर, पुणे.
13. चंद्र, व्ही., एड. (2002). डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लेखण आणि भाषाने-भाग दुसरा (मराठी). खंड. 18. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर छोट साहित्य प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.
14. पवार, जे., एड. (2001). राजश्री शाहू स्मारक ग्रंथ. महाराष्ट्र इतिहास अकादमी, कोल्हापूर.
15. "प्रबोधन मासिक (मराठी)." (१९२६), ६४.
16. शेंडे, एन. आर. (1963). विदर्भातील एक थोर दलित पुढारी G. A. गवई: Vyakti Aani Karya (Marathi). प्रभाकर पांडुरंग भाटकर, अमरावती, ४१.



17. शिंदे, दिठुल रामजी (1976). भारतीय अस्पृश्यतेचा प्रश्न (मराठी). समाज कल्याण, क्रीडा आणि पर्यटन विभाग, मुंबई, २४३.
18. वरखेडे, रमेश (2017). "महाराजा सयाजीराव गायकवाड यांच भाषासंग्रह (मराठी)." खंड. II. सचिव, महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र प्रकाशन समिती, औरंगाबाद, ३४.



dg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.

4-2

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

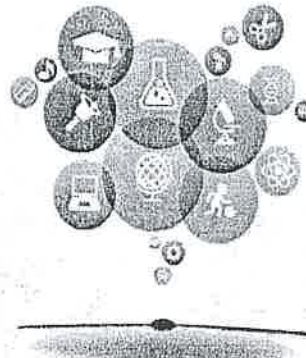
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2022

ISSUE No- (CCCXXXIV) 334



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr. Dinesh W. Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm, Sci Collage,
Walgaon, Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr. Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S. Tompe Arts Comm, Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

INDEX

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|--|--|----------|
| 1 | Causes And Problems Of Street Children In India | Dr. Vinod Kumar Cherukuri | 1 |
| 2 | The Future of the Global Economy | Prof. Pandhari G. More | 7 |
| 3 | Different Types of Diodes and Usages in Modern Age of Physics | Pallavi Narayan Gote | 10 |
| 4 | A Study - Of Some Etiological Factors In Property Crime | Milli Baby/ Amrit Walia | 15 |
| 5 | A Study Of Stress Management- Impact On Collegiate Students | Dr. Vishakha A. Joshi | 21 |
| 6 | Nutrition for Fitness, Athletics and Sports | Dr. Nitin N. Jangitwar / Dr. Ashlesha Ingole | 28 |
| 7 | The Role Of Communicaiton In Effective Crisis Management | Dr. Sou. Parvati Bhagwan Patil | 32 |
| 8 | Skill Development : The Future Of India | Dr. Patil Bhagwan Shankar | 39 |
| 9 | Stress Management For Library Professionals | Dr. Shubhangi Pramod Ingole | 46 |
| 10 | Review Article on the Perception of God in Eleven Principal Upanishads | Dr Shradha Patelia/ Bhagyabati Patelia | 50 |
| 11 | A Prayer for the Universe: Pasaydan | Nakul D. Gawande | 54 |
| 12 | The Comparative Study of Rural and Urban Population in Jalgaon District | Dr. Pankaj Y. Shinde | 57 |
| 13 | Effect of Fungicide Folicure on Oxygen consumption of Fresh water Fish Channa Gachuva | Humaira Badruzzama | 62 |
| 14 | Relationship of Anthropometric Measurements and Flexibility with Performance of Football Players | Prof. Dr. Pradeep Kachruji Ingole | 66 |
| 15 | Eudora Welty's Place in the Oral Tradition | Mrs. Namita Rupesh Shah / Dr. Ulka S. Wadekar | 70 |
| 16 | आभासी चलन, वास्तव आणि समस्या | प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर | 74 |
| 17 | ग्राम सक्षमीकरणातून ग्रामविकासाला चालना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन | प्रा. शैलेश बाबुराव पाटील/ प्रा. डॉ. नितीन रामदास बडगुजर | 78 |
| 18 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्रीयांच्या विकासात योगदान | डॉ. नरेंद्र के. पाटील | 83 |
| 19 | मधुमेही व्यक्तींच्या मधुमेह विषयक ज्ञानाचा अभ्यास करणे. | डॉ. वंदना फटाले | 86 |
| 20 | मानसिक आरोग्यासाठी ताण व्यवस्थापनाच्या आधुनिक दृष्टीकोनाचा दैनंदिन जीवनात उपयोग | स. प्रा. मोरे तुकाराम सुर्यभानराव | 91 |
| 21 | बालकामगारांच्या समस्यांचे चिकीत्सक अध्ययन | प्रा. डॉ. तिर्थनंद रा. बन्नगरे | 99 |

आभासी चलन, वास्तव आणि समस्या

प्रा. डॉ. विजयकुमार सुरेंद्र विनोदकर

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी ता. - पलूस, जि. - सांगली

मौ. नं. ९९७०६४४२८१

जगाच्या अर्थव्यवस्थेत पैशाला किंवा चलनाला खूप महत्वाचे स्थान आहे. चलनाला अर्थव्यवस्थेचा कणा किंवा इंधन असे म्हणतात. प्रत्येक देशाची चलने वेगवेगळी आहेत. पैसा किंवा चलन हे प्रत्येक देशात विनिमयाचे महत्वाचे साधन, मूल्यमापन व हस्तांतराचे एक महत्वाचे साधन म्हणून वापरले जाते. कोणत्या ही वस्तूचे मूल्य (किंमत) आपण पैशामध्ये व्यक्त करत असतो.

पैशाचा शोध लावण्यापूर्वी वस्तूविनिमय पध्दत अस्तित्वात होती. यामध्ये येणा-या समस्या दूर करण्यासाठी धातू पैसा नंतर कागदी पैसा अस्तित्वात आला. मानवाच्या कल्याणासाठी व मानवाच्या विकासासाठी अग्नीचा शोध, शेतीचा शोध, चाकाचा शोध व पैशाचा शोध खूप महत्वाचा मानला जातो.

बदल हा समाजाचा स्थायी स्वभाव आहे. माणूस या बुद्धीमान प्राण्याने शेती, उद्योग, व्यापार, वहातूक व दळणवळण क्षेत्रात असामान्य क्रांती घडवून आणली आहे. सध्याचे युग हे तंत्रज्ञानाचे, संगणकाचे, डिजिटल साक्षरतेचे आहे. याला पैशाची/चलनाची क्रांती सुद्धा अपवाद नाही.

सध्या संपूर्ण जगात ज्या ज्या देशामध्ये जी चलने अधिकृतित्या देशातील मध्यवर्ती बँकेच्या व सरकारच्या नियंत्रणाखाली अस्तीत्वात आहेत, कार्यरत आहेत अशा चलनाला एक पर्यायी चलन व्यवस्था म्हणून सध्या "आभासी चलनाची संकल्पना" डोके वर काढून संपूर्ण जगात आपले स्थान निर्माण करत आहे. सध्या जगातील असंख्य लोक या चलना विषयी अनभिज्ञ किंवा निरक्षर असले तरी जनतेच्या मनात या चलना विषयी भिती व संशय असले तरी भविष्य काळात लोकांच्या प्रवृत्तीत व सरकारच्या धोरणात बदल झाल्यास या चलनाचा विस्तार वाढण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. कारण सध्या जगातील काही देशानी याला मूक सहमती दिली आहे. तर काही देशानी या चलनाला विरोध दर्शविला आहे. तर काही देशानी हाताची घडी व तोंडावर बोट ठेवले आहे. उदा. अमेरिका, कॅनडा, स्वित्झर्लंड, जपान, थायलंड या देशानी पनवानगी दिली आहे व चीन, भारत, रशिया यांनी याला विरोध दर्शविला आहे.

१.१) संशोधन अभ्यासाची गृहितके :

आभासी चलनाच्या संकल्पनेचा वस्तूनिष्ठ पध्दतीने अभ्यास करण्यासाठी काही गृहितके गृहित धरली आहेत.

१. जगातील असंख्य देशातील असंख्य जनता आभासी चलना बाबत अनभिज्ञ (निरक्षर) आहेत.
२. सर्वसामान्य व निरक्षर व्यक्तींना हे चलन वापरता येत नाही.
३. सध्या प्रत्येक देशातील सरकारच्या, मध्यवर्ती बँकांच्या व जनतेच्या मनामध्ये या चलना बद्दल भिती व संशय निर्माण झाला आहे.
४. सध्या कार्यरत असलेल्या व अधिकृत चलनाच्या तुलनेत आभासी चलनाचा प्रभाव आपल्या देशात कमी आहे.

१.२) संशोधन अभ्यासाची उद्दिष्टे :

आभासी चलनाचा अभ्यास करण्यासाठी काही उद्दिष्टे डोळ्यासमोर ठेवून शोध निबंधाचे लेखन केले आहे.

१. आभासी चलनाच्या स्वरूपाचा व व्याप्तीचा अभ्यास करणे.

dg

Principal

Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Palus, Dist. Sangli.





२. आभासी चलनाच्या फायदा व तोट्याचा अभ्यास करणे.
३. आपल्या देशातील रिझर्व्ह बँकेने घेतलेल्या घोरणात्मक निर्णयाचा अभ्यास करणे.
४. सर्वसामान्य जनतेला आभासी चलनाच्या वास्तवतेची जाणीव करून देणे.

१.३) संशोधन अभ्यास पध्दतीचा वापर :

आभासी चलनाची संकल्पना, वास्तव, स्वरूप व व्याप्तीचा सविस्तर अभ्यास करण्यासाठी अद्यावत माहिती संकलित करण्यासाठी दुय्यम साधन सामुग्रीचा जास्त वापर केला आहे. यामध्ये तज्ञ व जाणकार व्यक्तीने लिहिलेले दै. वर्तमान पत्रामध्ये प्रकाशित केलेले लेख, मासिके व इंटरनेटवर उपलब्ध असलेल्या माहितीच्या आधार घेवून विविध स्तरावर माहिती संकलित करून शोध निबंध लिहिण्याचा प्रयत्न केलेला आहे.

१.४) आभासी चलनाची व्याप्ती :

सध्या प्रत्येक देशात अधिकृत व सर्वसामान्यानी स्विकृत केलेल्या ख-या चलनाला एक पर्यायी चलन व्यवस्था म्हणून आभासी चलनाची एक नवीन संकल्पना जगासमोर येत आहे. या आभासी चलनाला अधिकृत चलनाच्या तुलनेत जगाने अद्याप फारसे महत्व दिले नाही किंवा मिळाले नाही. पण अधिकृत चलनाला शोषून घेणारे एक पर्यायी चलन निर्माण होत आहे ते आभासी चलन होय अशी भिती या चलनाने अल्पावधित निर्माण केले आहे.

आभासी चलन निर्मात्यानी आभासी चलनाच्या मोहात/प्रेमात पाडण्याचा किती ही प्रयत्न केला व चलनाचा पूरवठा वाढविण्याचा प्रयत्न केला तरी सुध्दा सर्वसामान्य जनता या चलनाला मागणी किती व कशासाठी करतात यावर या चलनाचे महत्व व अस्तित्व अवलंबून आहे. कारण अर्थशास्त्रातील बरेच मुद्दे मागणीवर अवलंबून असतात. जगातील असंख्य जनता आभासी चलनाच्या व्यवहारा बाबत खूप निरक्षर आहेत. त्यामुळे या चलना बाबत लोकांच्या मनात भिती व संशय अधिक आहे. हा प्रश्न जागतिक पातळीवरचा आहे. पण याची माहिती अद्याप तळागाळातील लोकांच्या पर्यंत पोहचली नाही. त्यामुळे सध्या याची व्याप्ती मूठभर लोकांच्या व्यवहारा पर्यंत मर्यादित आहे हे निश्चित.

१.५) आभासी चलनाचा इतिहास व वास्तवता :

यूरोपीय मध्यवर्ती बँकेने म्हटल्या प्रमाणे आभासी चलन म्हणजे विनियमित, संगणकीय पैसा जो विशिष्ट विकासक नियंत्रित करतात व ज्यांची स्विकृती विशिष्ट सदस्या पर्यंत मर्यादित असते असे चलन होय. उदा. बिटकॉइन किंवा क्रिप्टोकरन्सी होय.

१९९८ मध्ये वैदई या संशोधकाने आभासी चलनासाठी क्रिप्टोकरन्सी हा शब्द शोधून काढला आहे व सातोशी नाकामोटो या संशोधकाने २००९ मध्ये Bitcoin हे क्रिप्टोकरन्सी चे स्वरूप प्रकाशित केले. आभासी चलनाला वैध चलन आहे असे कुठल्याही देशाने म्हटले नाही. आभासी चलन अधिकृत आहे की अनाधिकृत आहे, शाप आहे कि वरदान आहे, तंत्रज्ञान आहे की, दुसरे काय हे नक्की कळत नाही त्यामुळे लोकांना याची भिती वाटत आहे.

सध्या अमेरिका, कॅनडा, स्वित्झर्लंड, जपान, थायलंड यांनी या चलनाला परवानगी दिली आहे व भारत, चीन, रशिया यांनी विरोध केला आहे.

सध्या आंतरराष्ट्रीय व्यवहारात रिपल, नेम, डॅश, डॉजकॉइन, लॉटकॉइन, ब्लॅक कॉइन, मोनेरो, बिटकॉइन अशा नावाने आभासी चलने कार्य करत आहेत. सध्या फेसबुकने लिब्रा नावाचे आभासी चलन निर्माण करण्याचे ठरविले होते. त्या ऐवजी डेम (Diem) हे चलन घोषित केले आहे. २०१७ मध्ये १ लाखा पेक्षा अधिक सुपर मार्केटनी व मोठय व्यापा-यानी या चलनाला मान्यता दिली होती.

आभासी चलनाचे मूल्य

| अ. नं. | वर्ष | आभासी चलन व त्याचे मूल्य (डॉलरमध्ये) |
|--------|------------------|--------------------------------------|
| १ | ११ जानेवारी २००९ | एक आभासी चलन = २५ डॉलर किंमत |
| २ | १६ डिसेंबर २०१७ | एक आभासी चलन = १९२१३ डॉलर किंमत |
| ३ | डिसेंबर २०२० | एक आभासी चलन = २९००० डॉलर किंमत |
| ४ | जानेवारी २०२० | एक आभासी चलन = ४०००० डॉलर किंमत |
| ५ | १६ एप्रिल २०२१ | एक आभासी चलन = ६३३४७ डॉलर किंमत |



संदर्भ - डॉ. किरण देसले "स्पर्धा परीक्षा अर्थशास्त्र -१ दिपस्तंभ प्रकाशन, १० वी आवृत्ती, ऑगस्ट

२०२१ - पान ७५

वरील तकत्याचा विचार केल्यास आभासी चलनाचे मूल्य सुध्दा चलनाला असलेली मागणी व त्या चलनाचा पूरवठा या वरून ठरते. आभासी चलनाचा वापर करताना संगणकीय सॉफ्टवेअरची गरज असते. बिकॉईन चलनाचा वापर सध्या अवैध धंद्यासाठी केला जात आहे. उदा. अमली पदार्थाची तस्करी करणे, बेकायदेशीर व्यवहार करणे इ. आभास चलनाचे व्यवहार इतर चलना प्रमाणे प्रत्यक्ष दृश्य स्वरूपात करता येत नाही. इंटरनेटच्या माध्यमातून अदृश्य पध्दतीने केला जातो. या चलनाला स्वःताचे अस्तित्व मूल्य नाही किंवा अधिकृत, कायदेशीर मान्यता ही नसते त्यामुळे यामध्ये फायदया बरोबर धोका ही जास्त आहे.

१.६) आभासी चलनाच्या व्यवहार पध्दती :

सध्या आभासी चलनाकडे संपत्तीची गुंतवणूक म्हणून पाहिले जाते. याचा वापर चांगल्या व वाईट कामासाठी ही होत आहे. प्रथम या व्यवहारासाठी, वस्तूच्या खरेदी विक्रीसाठी संगणक प्रणालीचे उत्तम ज्ञान असावे लागते. सर्व व्यवहार वर्षभर २४ तास ऑनलाईनवर सुरु असतात. यामध्ये १) गुंतवणूकदार व्यक्ती → गुंतवणूक करून घेणारी कंपनी → गुंतवणूक व्यक्तीचे एक डिजिटल वॉलेट → एका डिजिटल वॉलेटमध्ये २ गुंतवणूकदाराचा समावेश बिकॉईन अॅप डाउनलोड करून घेणे → कंपनीकडून गुंतवणूकदाराला ५१ अंकी खाजगी पत्ता मिळतो → २७ ते ३४ अंकी सार्वजनिक पत्ता दिला जातो → ब्लॉक चेन (नोंदणीचा डाटा- रिकॉर्ड फाईल)

ब्लॉकमध्ये १) डेटा २) हॅश ३) ब्लॉकचेन → मिनिंग → मिनर्स. अशा पध्दतीने मध्यस्थाच्या साखळी शिवाय व्यवहार अदृश्य पध्दतीने होतात. या मधील कोणत्या व्यवहाराची कायदेशीर नोंद नसते. परस्पर विश्वासावर जोखमीवर व्यवहार होतात. हे व्यवहार फक्त आभासी चलनाचे स्विकृत सभासदासाठी मर्यादित स्वरूपाचे असते. सरकारचे किंवा मध्यवर्ती बँकेचे यावर नियंत्रण नसते.

१.७) आभासी चलनाची वैशिष्ट्ये :

आभासी चलन हे शाप व वरदान आहे.

- १) आभासी चलन हे अधिकृत चलनाला एक डिजिटल पर्यायी चलन व्यवस्था आहे.
- २) या चलनाला कायदेशीर मान्यता नाही.
- ३) मायनिंगद्वारे, ब्लॉकचेनद्वारे वस्तूची व चलनाची देवाण घेवाण होते.
- ४) डिजिटल संगणकाचा वापर व विशेष कोडचा वापर करावा लागतो.
- ५) या व्यवहारात मध्यस्थ नसतो व सरकारचे ही नियंत्रण नसते.
- ६) बिकॉईनचे क्लासिक बिकॉईन २. हार्डफोर्क बिकॉईन हे प्रकार आहेत.
- ७) सध्या रिपल, नेम डॅश, डॉजकार्ड, ब्लॉककार्ड, लॉटकार्ड, मोनेरो, लिब्रा, इथेरिअम व बिकॉईन चलन व्यवहार करत आहेत.

१.८) आभासी चलनाचे फायदे :

आभासी चलनाचे फायदे फक्त हे चलन स्विकृत करणाऱ्या गुंतवणूकदारा पर्यंत मर्यादित आहेत किंवा Block चेन मध्ये समाविष्ट गुंतवणूकदारा पर्यंत मर्यादित आहेत.

- १) Block चेनमध्ये एकदा नोंदणी झाल्यास त्यामध्ये फेरफार होत नाही.
- २) सरकारी सुट्टीचा, बँकांना असलेल्या सुट्टीचा व्यवहारावर परिणाम होत नाही.
- ३) आभासी चलन व्यवहारात, राजकारण, नोकरशाही, मध्यस्थ यांचा परिणाम होत नाही.
- ४) आधार कार्ड, पॅनकार्ड, मतदानकार्ड याची गरज नाही.
- ५) यामध्ये सर्व व्यवहार गुप्त ठेवले जातात.



- ६) Block चेनमध्ये स्विकृत सभासदांचे व्यवहार सुरक्षित असतात.
- ७) बिटकॉइन ची किंमत मागणी व पूरवल्यावरून ठरते.
- ८) व्यवहार २४ तास व सुलभ होतात.
- ९) ७/१२ वरील नोंदी, मेडिकल रिकॉर्ड्स, कंपन्यांचे व्यवहार यामध्ये होतात.

१.९) आभासी चलनाचे तोटे :

- १) या चलनाला अधिकृत मान्यता नाही म्हणून धोके अधिक आहेत.
- २) सामान्य व निरक्षर लोकांना यामध्ये भाग घेता येत नाही.
- ३) संस्था या चलनाचा वापर गैरमार्गासाठी केला जात आहे.
- ४) गैरव्यवहार करणा-याना पकडता येत नाही.
- ५) या चलनावर सरकारचे व RBI चे नियंत्रण नसते.
- ६) सायबर गुन्हे/हल्ले होतात. त्यामुळे फसवणूक होवू शकते.
- ७) आभासी चलन देशातील ख-या अधिकृत चलनाला शोषण्याची दाट शक्यता आहे.

१.१०) आपल्या देशातील सरकारची भूमिका :

RBI ने या चलनाला मान्यता दिलेली नाही. २४/१२/२०१३ ला एक परिपत्रक काढून या बाबत जनजागृती केली आहे. २०१८ मध्ये भारतातील बँकांना RBI ने आभासी चलना बरोबर व्यवहार करण्यास बंदी घातली आहे व बँकांना सावध होण्यास सांगितले आहे. या बंदी बाबत इंटरनेट व मोबाईल संघटनेने सुप्रीम कोर्टात दावा ठोकल्याने मार्च २०२० ला सुप्रीम कोर्टाने आभासी चलनाला मान्यता दिली आहे.

१.११) निष्कर्ष :

- १) या चलनाला अजून जगातील सर्व देशांनी मान्यता दिली नाही.
- २) या चलना बद्दल सरकारच्या, बँकांच्या व जनतेच्या मनात भीती व संशय अधिक आहे.
- ३) भारत सरकारने व RBI ने सावध पवित्रा घेतला आहे.
- ४) हे चलन म्हणजे हातचे सोडून पळत्याच्या मागे धावण्या सारखे आहे.
- ५) या चलनातील व्यवहार सामान्य लोकांच्या क्षमते पलाकडील आहेत.

१.१२) उपाय :

प्रत्येक देशातील सरकारने, मध्यवर्ती बँकेने सावध पवित्रा न घेता हे चलन बेकायदेशीर असेल, दिशाभूल करणारे असेल, आपली अर्थव्यवस्था यामुळे बिघडणार असेल तर वेळीच याला कादेशीर लगाम घालणे गरजेचे आहे व याबाबत देशात तळागाळा पर्यंत जनजागृती होणे गरजेचे आहे.

संदर्भ :-

- १) आभासी चलना बाबत विचारवंतांचे दै. वर्तमान पत्रात प्रसिध्द झालेले लेख, मासिके, इंटरनेट मधील उपलब्ध माहितीचा आधार घेतला आहे.
- २) जयराम साळगावकर "क्रिप्टो करन्सी चलन क्रांतीच्या एक पाउल पुढे" Youtube वरील माहितीचा आधार.
- ३) डॉ. किरण देसले "स्पर्धा परीक्षा अर्थशास्त्र -१ दिपस्तंभ प्रकाशन, १० वी आवृत्ती, ऑगस्ट २०२१ - पान

७५.



tg
Principal,
Babasaheb Chitale Mahavidyalaya
Bhilwadi, Tal. Peins, Dist. Sangli.

21-22

(SJIF) Impact Factor-8.575
ISSUE No- (CCCXVIII) 348

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

'Role of Social Sciences in Contemporary Society'



Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Prof. Sujata Awati
Editor

The New Miraj Education Society's
Kanya Mahavidyalaya, Miraj

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

ISSUE No- (CCCXLIX) 348 -B

**Sciences, Social Sciences, Commerce,
Education, Language & Law**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Prof. Sujata Awati

Editor

The New Miraj Education Society's

Kanya Mahavidyalaya, Miraj

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

**INDEX**

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|---|---|----------|
| 1 | स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्रियांचे योगदान | लेफ्ट. डॉ. अर्चना टाक | 1 |
| 2 | स्वातंत्र्याची ७५ वर्षे | सहा. प्रा. अस्मिता संजय कोडग | 4 |
| 3 | 'हॅन्डबॉल खेळाडूंच्या वेग या घटकावर टायर प्रशिक्षणाचा होणारा परिणाम: एक अभ्यास' | प्रा. बाबासाहेब म्हाळू सरगर, डॉ. सुनिल दत्तात्रय चव्हाण | 7 |
| 4 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राष्ट्रीय सुरक्षेबाबतचे विचार | प्रा. बाबासाहेब शात्रू पाटील | 12 |
| 5 | प्रसूतीपूर्व आणि प्रसूतीनंतरच्या तंदुरुस्तीसाठी विशेष परिस्थितींमध्ये व्यायामाचे नियम आणि व्यायामाची पद्धत. | डॉ. भारत राजाराम चालसे | 14 |
| 6 | आदिवासींचे सण व उत्सव | भोई रविंद्र रतिलाल | 19 |
| 7 | सामाजिक समस्या, लिंगभाव आणि समाज | प्रा. बिजली श्रीपाल दडपे | 22 |
| 8 | राजर्षि शाहूंची कोल्हापूर संस्थानातील कामगार विषयक भूमिका | प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे | 25 |
| 9 | लिंग, लिंगभाव आणि हिंसाचार | दिपाली शंकर बाघमारे | 29 |
| 10 | छत्रपती शाहू महाराज यांचा सामाजिक न्यायाचा विचार | डॉ. अण्णासाहेब हरदारे | 33 |
| 11 | समकालीन समाज आणि संत साहित्यातील सामाजिक विज्ञान | डॉ. चंदशेखर आत्मराम भगत | 36 |
| 12 | शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान | डॉ. गौतम नामदेव ढाले | 40 |
| 13 | सामाजिक चळवळींचा चिकित्सक अभ्यास | प्रा. डॉ. गंगाधर बालू चव्हाण | 44 |
| 14 | शिक्षण व शारीरिक शिक्षणाची कोरोना काळातील भूमिका | डॉ. महादेव सुखदेव सुर्यवंशी | 47 |
| 15 | कोविड-१९ चा भारतीय उद्योगांवरील परिणाम | डॉ. तेजस्विनी बी. मुडेकर | 51 |
| 16 | महिलांच्या सर्वांगीण विकासात क्रीडा व शारीरिक शिक्षणाची भूमिका : एक अभ्यास | डॉ. प्रिया प्रकाश टेळे | 55 |
| 17 | गुणग्राहक राजा छत्रपती शाहू महाराज | डॉ. रामदास वैद्य | 60 |
| 18 | जातीव्यवस्था व अस्पृश्यता - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर | डॉ. सुरेवाड संजय गंगाराम | 63 |



| | | |
|----|---|-----|
| 19 | फलटण तालुक्यातील शेतीच्या विकासामध्ये कृषी सहकारी सोसायट्यांचे योगदान (सन १९४८-२०००) प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम | 66 |
| 20 | महाराष्ट्रातील सामाजिक हिंसाचार: एक ऐतिहासिक दृष्टीक्षेप डॉ. शुभांगी सदाशिव माने, प्रा.दिग्विजय दत्तात्रय कुंभार | 69 |
| 21 | छत्रपती शाहू महाराज : सामाजिक विचार व कार्य डॉ.वसंत निवृत्ती बंडे | 75 |
| 22 | जलसिंचनाचा सांगली जिल्ह्यातील पीक प्रारुपावर झालेला परिणामाचा एक चिकित्सक अभ्यास डॉ. विनायक तुकाराम पवार | 77 |
| 23 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक योगदान प्रा.डॉ. विजयसिंग भाबरदोडे | 81 |
| 24 | महिलांच्या सामाजिक समस्या प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर सोतवणे | 85 |
| 25 | शाहू महाराज यांचे आरक्षण धोरण डॉ.लखन दादासो भोगम | 89 |
| 26 | महिला अत्याचार : कारणे आणि उपाय प्रा.डॉ.प्रवीण भोसले | 92 |
| 27 | लिंगभाव,दारिद्र्य,दिव्यांगत्व, आक्रमकता, हिंसा आणि मानसिक आरोग्याबाबतच्या समस्या एकनाथ गंगाराम गायकवाड | 97 |
| 28 | भारतामधील सहकार चळवळीच्या समस्या प्रा.डॉ. गव्हाळे बी.व्ही | 100 |
| 29 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज : विचार आणि सामाजिक योगदान सहा . प्राध्या. गोपाल यशवंत कबनुरकर | 107 |
| 30 | महिलांच्या विकासामध्ये शारीरिक शिक्षणाचे महत्त्व प्रा. ज्योती तानाजी गावडे | 112 |
| 31 | राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक धोरण प्रा किशोर लक्ष्मण साळवे | 115 |
| 32 | भारताचे परराष्ट्र धोरण निर्णायक बळगावर प्रा.एम.एम.सूर्यवंशी | 118 |
| 33 | भारतातील शाश्वत विकास आणि कृषी क्षेत्र कु.माधुरी परशराम देशमुख , डॉ. शिवशंकर सीताराम लेकरवाळे | 122 |
| 34 | डॉ. वानलेस व राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज स्नेह प्रा.डॉ.मंजिरी कुलकर्णी | 126 |
| 35 | डॉ.वसंतदादा पाटील यांची महाराष्ट्र सहकारी चळवळ व ग्रामीण विकासातील भूमिका: कु. निकिता बसर्गे | 129 |
| 36 | राजर्षी शाहू महाराज आणि जातीभेद निवारण सहा.प्रा. पांडुरंग भिवाजी गोरे | 134 |
| 37 | शेती आणि शाश्वत विकास सौ.प्राची पंकज नांदेकर | 136 |
| 38 | सकारात्मक मानसिकतेसाठी खेळ प्रशांत बिभीषण पाटील | 140 |
| 39 | छत्रपती शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उद्धाराचे कार्य प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार | 143 |
| 40 | तैत्तिरीय उपनिषदातील सामाजिक आचाराची तत्वे प्रा रचना सौरभ शहा | 148 |

**छत्रपती शाहू महाराज्यांचे अस्पृश्य उद्धाराचे कार्य****प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार**

सहाय्यक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी., मोबाईल – ९९६०६३५८७७

1.गोषवारा :

महात्मा फुलेंनी अत्यंत सूक्ष्मपणे अस्पृश्यांसाठी शाळा उघडून त्यांच्या मुक्तीचा मार्ग आखला. महात्मा फुलेंचे हे कार्य छत्रपती शाहू महाराजांनी पुढेचालू ठेवले. आपल्या प्रांतात अस्पृश्यांसाठी शाळा आणि वसतिगृहे उभारून त्यांनी कोल्हापूर प्रांतातील अस्पृश्यता निर्मूलनासाठी कंबरकसली होती. त्यांनी महार समाजातील शिक्षित लोकांना (एक अस्पृश्य जात) वकिलांच्या सनदादिल्यातसेचतलाठी (स्थानिक महसूल अधिकारी) पदे दिली आणि याद्वारे त्यांनी सामाजिक आणि आर्थिक गुलामगिरीच्या वेड्या तोडल्या. अस्पृश्यांच्या जीवनातील सुधारणांसाठी त्यांनी अनेक ठराव जारी केले आणि त्याची प्रभावीपणे अंमलबजावणी केली. अस्पृश्यांना स्वावलंबी बनवण्यासाठी त्यांनी शिक्षणाची सोय केली. त्यांनी ठिकठिकाणी वसतिगृहेही उघडली. त्यांना समान वागणूक देण्यासाठी ते पुढे आले. शिवाय, त्यांच्यामध्ये वैचारिक जागृती करण्यासाठी त्यांनी विविध सभा आणि परिषदांमध्ये भाग घेतला. या उल्लेखनीय कार्यामुळे अस्पृश्यांच्या चळवळीला चालना मिळाली. त्यांच्या कर्तृत्वामुळे अस्पृश्य समाज त्यांना ईश्वरी अवतारमानत असे. तर, प्रस्तुत संशोधन लेखात अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक, सामाजिक आणि वैचारिक जागृतीबाबत शाहू महाराजांचे उल्लेखनीय कार्य संशोधनाच्या दृष्टीकोनातून समोर आणण्याचा प्रयत्न आहे.

❖ प्रस्तावना :

ब्रिटीश राजवटीत आपले अस्तित्व टिकवण्यासाठी अनेक जहागीरदारांनी आपले जीवन संपवले. भारतीय राजकारणही त्याच परिस्थितीतून जात होते. पण, त्याला काही अपवाद आहेत. त्यात कोल्हापूरचे छत्रपती शाहू महाराज यांचे नाव अग्रगण्य आहे. शाहू महाराजांनी अस्पृश्यांच्या सन्मानजनक जीवनासाठी जीवनाच्या शेवटच्या श्वासापर्यंत चळवळ चालवली. त्यांनी अस्पृश्यांना मुख्य प्रवाहातील लोकांप्रमाणे शैक्षणिक सुविधा उपलब्ध करून दिल्या. अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक, सामाजिक आणि वैचारिक जागृतीबद्दल त्यांना काळजी होती. कारण ते इतरांवर अवलंबून होते. थोडक्यात, वर्तमान संशोधन शाहू महाराजांच्या अस्पृश्य उद्धार या उल्लेखनीय कार्यावर प्रकाश टाकते. वर्तमान संशोधन लेख तीन भागात विभागलेला आहे. पहिला भाग अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक विकासासाठी शाहू महाराजांच्या कार्याशी संबंधित आहे. दुसरा भाग सामाजिक समतेसाठी केलेल्या त्यांच्या प्रयत्नांवर प्रकाश टाकतो. तिसऱ्या भागात अस्पृश्यांमध्ये वैचारिक जागृतीसाठी शाहू महाराजांच्या कार्याचा समावेश आहे. शेवटी, या सर्व पैलूंचे मूल्यमापन त्यात दिले आहे.

❖ शैक्षणिक कार्य :

छत्रपती शाहू महाराजांनी अस्पृश्यांसाठी शाळा आणि वसतिगृहे उघडून त्यांच्या विकासाचा मार्ग मोकळा केला. हे करत असताना त्यांनी अस्पृश्य समाजातील पूर्वग्रह नष्ट करण्यासाठी कठोर परिश्रम घेतले आणि शिक्षणात समान संधी उपलब्ध करून देण्याचा आग्रह धरला. त्यांनी आपल्या प्रांतात शिक्षणाच्या माध्यमातून मागासलेल्या समाजाच्या उन्नतीचे धोरण स्वीकारले. यासाठी अनेक वसतिगृहे स्थापन केली.

कोल्हापुरातील विविध समाजातील विद्यार्थ्यांसाठी त्यांनी शाळा आणि वसतिगृहे उभारली. १९०८ मध्ये त्यांनी भास्कररावजाधव, महादेव डोंगरे, बागल, शिंदे इत्यादी सहकाऱ्यांना सहभागी करून अस्पृश्यांसाठी वसतिगृहेही उघडली. या कामासाठी त्यांनी 'शिक्षण प्रसार मंडळ' (विद्या प्रसारक मंडळ) नावाची संस्था स्थापन केली. या लोकांनी अस्पृश्यांची मुले वसतिगृहासाठी शोधून काढण्यासाठी खूप धडपड केली, तसेच त्यांचा शैक्षणिक दर्जा मुख्य प्रवाहातील लोकांच्या मुलांच्या बरोबरीने वाढवण्याचा प्रयत्न केला. परंतु, अस्पृश्यांची शिक्षणाबाबत उदासीनता असल्याने त्यांना शिक्षणाचे महत्त्व पटवून देणे कठीण काम होते. त्यामुळे या अडचणीवर मात करण्यासाठी शाहू महाराजांनी अथक परिश्रम घेतले. त्यांच्या राज्याभिषेकाच्या वेळी त्यांच्या प्रांतात अस्पृश्यांसाठी फक्त पाच



शाळा होत्या आणि विद्यार्थ्यांची संख्या 168 होती. 1907-1908 दरम्यान अस्पृश्यांसाठीच्या शाळांची संख्या 16 आणि विद्यार्थ्यांची संख्या 416 होती. महाराजांच्या अविरत प्रयत्नांमुळे अस्पृश्यांसाठीच्या शाळांची संख्या हळूहळू वाढत गेली. 1912 मध्ये अस्पृश्यांसाठी शाळांची संख्या चार वर्षात 27 झाली आणि विद्यार्थ्यांची संख्या 636 होती.

अस्पृश्यांसाठी शाळा उघडण्यासाठी त्यांनी मनापासून पाठिंबा दिला. या योजनांच्या आर्थिक तरतुदींचे ते स्वतः निरीक्षण करत होते. छत्रपती शाहू महाराज आणि भाऊराव पाटील यांनी सातारा जिल्ह्यातील शैक्षणिकदृष्ट्या मागासलेल्या समाजातील शिक्षणाच्या प्रसारासाठी निधी संकलनाची अनोखी योजना आखली. त्यांना कुस्तीची खूप आवड होती आणि त्यांच्या आश्रयाखाली अनेक पैलवान होते. त्यांनी कुस्तीपटूंच्या 4-5 जोड्यांची किंमत घेतली आणि नियुक्त केलेल्या समितीकडे सोपवली. कोल्हापूर प्रांतात लोकांना कुस्तीबद्दल खूप रस होता. त्यांनी विविध गावांमध्ये कुस्तीच्या सामन्यांची तिकिटे विकण्याची योजना राबवली आणि त्यातून मिळणारे उत्पन्न शिक्षणाच्या प्रसारावर खर्च केले.

सामाजिक विषमतेचे निर्मूलन शाहू महाराजांनी हिंदू समाजातील पारंपारिक जातीव्यवस्थेचे उल्लंघन करून समानतेवर आधारित नवा समाज निर्माण करण्याचा सदैव प्रयत्न केला. जातीचे उच्चाटन, अस्पृश्यता निर्मूलन, श्रेष्ठ आणि कनिष्ठ, उच्च आणि खालच्या वर्गातील कृत्रिम भिंती नष्ट करण्याच्या विचारांनी ते प्रेरित होते. शाहू महाराजांनी कोणीही अस्पृश्यांचा अपमान करणार नाही असा आदेश जारी केला. प्रांतात असे घडल्यास त्याला गावातील मजूर, पोलीस सहाय्यक आणि स्थानिक महसूल कर्मचारी जबाबदार राहतील, असा आदेश काढला होता. त्यांनी प्रांतातील सर्व सार्वजनिक ठिकाणे अस्पृश्यांसाठी खुली केली. त्यांनी अस्पृश्यांसाठी सार्वजनिक नळ, विहिरी, तलाव, सराया, रुग्णालये, शाळा आणि कार्यालये उघडून त्यांना समान अधिकार बहाल केले. त्यांनी अस्पृश्यांबद्दल भाष्य केले, "माझा विश्वास आहे की खरी राष्ट्रसेवा ही त्यांच्या बेड्या तोडण्यात आहे. अमानुष अत्याचार ज्याने अस्पृश्यांना पूर्णपणे गुलाम केले. खालच्या जातीचे लोक त्यासाठी अविरत प्रयत्न करूनही ते करू शकत नाहीत. उच्चवर्णीय लोकांनी प्राचीन काळापासून वारसा हक्काने उपभोगलेले हक्क सोडून द्यावेत. अस्पृश्यांच्या मुलांना इतरांप्रमाणेच सरकारी शाळांमध्ये आणि उघडलेल्या सर्व स्वतंत्र शाळांमध्ये प्रवेश द्यावा, असा आदेश त्यांनी जारी केला. तसेच, विविध जाती-धर्माच्या मुलांना कोणत्याही प्रकारचा अपमान न करता एकत्रितपणे बसवले पाहिजे. अस्पृश्यांना धार्मिक शिक्षण देण्यामागचा त्यांचा हेतू हा होता की समाजात समानता प्रस्थापित करावी.

समाज म्हणून, त्यांनी धार्मिक शिक्षण सुरू करण्यापूर्वी अस्पृश्य विद्यार्थ्यांसाठी धागा समारंभ (उपनयन विधी) आयोजित केला. शाहू महाराज हे इतिहासातील पहिले सुप्रसिद्ध राजा होते ज्यांनी अस्पृश्यांसाठी धागा समारंभ आयोजित करून वेद संथा दिली आणि त्यांना ब्राह्मणांच्या तथाकथित श्रेष्ठ दर्जाच्या बरोबरीने वर आणले. त्याचा कोल्हापुरातील समाजव्यवस्थेवर अपरिहार्यपणे परिणाम झाला आणि ब्राह्मणवादाची मुळ उद्ध्वस्त झाली. त्यामुळे पुण्यातील काही ब्राह्मणांनी शाहू महाराजांबद्दल तक्रार केली.

महाराजांनी इंग्रजांना राजकीय दृष्ट्या दडपण्याचा प्रयत्न केला. त्यावेळी ते म्हणाले, "मागासवर्गीयांसाठी सेवा करताना मला पदच्युत झाले तरी मला पर्वा नाही. त्यांनी विरोधी आणि समकालीन ब्रिटीशांना इशारा दिला की शेवटच्या श्वासापर्यंत मी सदैव प्रयत्नशील राहीन."

त्यांनी सामाजिक समतेची चळवळ उभी केली. या चळवळीने अस्पृश्यता निर्मूलनाला संवैधानिक स्वरूप दिले होते. शाहू महाराजांनी हिंदू समाजात प्रचलित असलेल्या हानिकारक रूढी आणि परंपरांना आवर घालून सामाजिक समता त्रिकसित करण्यावर ठळकपणे भर दिला.

❖ वैचारिक जाणीव :

शाहू महाराजांनी आपल्या प्रांतातील अस्पृश्यांना शिक्षण आणि रोजगाराच्या समान संधी उपलब्ध करून देण्याचा प्रयत्न केला. या ऐतिहासिक कार्यासाठी संपूर्ण अस्पृश्य समाज कायम ऋणी होता. या कामाचे उत्तम उदाहरण म्हणजे बस्तवाडपेटा रायबाग भागातील करवीर येथील महार जहागीरदारांनी २७ जुलै १९२१ रोजी महारहिवासीबाबत अर्ज सादर केला होता. शाहू महाराजांच्या अस्पृश्यांच्या उन्नतीसाठी केलेल्या कार्याचा उल्लेख करताना ते म्हणाले की, "उदार राजाने अनेक प्रकारे प्रयत्न केले. आमच्या उन्नतीसाठी आणि सुधारणेसाठी. तुम्ही



बोर्डिंग, शाळा उघडल्या, अनेकांना रोजगार उपलब्ध करून दिला, काहींनी वकिलीच्या व्यवसायात प्रवेश केला आणि कोणत्याही प्रकारचा भेदभाव बाजूला सारून राजा आम्हाला आपल्या मुलांप्रमाणे सभान प्रेमाने वागवतो. म्हणून, आमचा समाज तुमची देवाप्रमाणे पूजा करतो आणि या उल्लेखनीय कार्यासाठी सदैव ऋणी राहील" (बहिष्कृत भारत पाक्षिक (मराठी) ११). अस्पृश्य हे शाहू महाराजांच्या कार्यापुढे नतमस्तक होते असे सूचित करते. परंतु, अस्पृश्यांमध्ये वैचारिक जागृती करण्यासाठी त्यांनी अविरत प्रयत्न केले. अस्पृश्यतेच्या परंपरेबद्दल ते म्हणाले की, 'महाभारतानंतर वैदिक धर्माचा ज्हास झाला तेव्हा द्विज लोक स्वतःला जन्माने श्रेष्ठ आणि शूद्रांपेक्षा (अस्पृश्य) कनिष्ठ समजत होते. त्यामुळे भारतातील बहुतांश लोकसंख्या शिक्षण, धर्म आणि समृद्धीपासून वंचित होती. पण, अस्पृश्यांवर अत्याचार झाले.

बुद्ध्याच्या काळात ते थांबले. त्यानंतर, वेदांवर आधारित धर्माध हिंदू धर्माची भरभराट झाली, ज्याची पराकाष्ठा समाजातील वाढत्या जातिवादात झाला. त्याच्या फांद्याही मोठ्या प्रमाणावर फोफावल्या. आजकाल, अस्पृश्यांवर होणारे जातिवाद आणि अत्याचार ही हिंदू धर्मातील आज्ञा मानली जाते". या समस्येवर मात करण्यासाठी मुख्य प्रवाहातील लोकांनी पुढे आले पाहिजे असे शाहू महाराजांना वाटत होते. तसेच, खालच्या जातीतील लोकांनी स्वतःच्या उन्नतीसाठी आणि वारसाचा दर्जा वाढवण्यासाठी कठोर परिश्रम केले पाहिजेत आणि उच्च जातीच्या लोकांनीही खालच्या जातीतील लोकांसोबत एकत्रितपणे काम केले पाहिजे. हे पद्धतशीरपणे आणि सौहार्दपूर्णपणे जातिवादाचा नायनाट करण्यास मदत करेल. तसेच शाहू महाराजांनी समाजातून जातिवाद नष्ट करण्यासाठी आंतरजातीय संबंध प्रस्थापित केले पाहिजेत असे सुचवले. आंतरजातीय विवाह वाढवण्यासाठी कायदेशीर अडथळे दूर केले पाहिजेत, जे या समस्येवर मात करण्यासाठी फायदेशीर ठरतील. त्यासाठी कायदेशीर तरतुदी कराव्यात. शाहू महाराजांनी मे १९२० मध्ये अखिल भारतीय मागासवर्गीय परिषदेचे अध्यक्षपद भूषवले. त्यांनी परिषदेत स्पष्ट केले की, 'जातिवाद निर्मूलनाच्या प्रमाणावर राष्ट्राचा विकास अवलंबून आहे'.

दिल्ली येथील अखिल भारतीय मागासवर्गीय परिषदेत राजश्री शाहू महाराज म्हणाले, "ब्रिटिश साम्राज्याचा उदय आपल्या जीवनात जागृती आणि पुनर्जागरणाकडे नेतो. आपण ते विसरता कामा नये. तसेच, देशाचे राजकीय भवितव्य संबंधित राष्ट्रांच्या नागरिकांच्या चारित्र्यावर अवलंबून असते. त्यामुळे प्रत्येकाने स्वतःचे चारित्र्य सुधारण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. प्रत्येकाने दिलेले अधिकार वापरण्याची त्यांची क्षमता त्यांच्या वर्तनातून सिद्ध करावी". या कार्यात त्यांनी मोलाचे योगदान दिले असले तरी त्यांनी कधीही अस्पृश्यांचे नेते म्हणून स्वतःचा प्रचार केला नाही. त्यांनी नेहमीच अस्पृश्यांचे सेवक म्हणून काम केले.

शाहू महाराजांनी नागपुरातील अखिल भारतीय मागासवर्गीय परिषदेत आपले विचार व्यक्त करताना म्हटले होते, "कोणतीही आपत्ती आली तरतुझी सेवा करण्यासाठी मी माझे साम्राज्य राजपुत्रांच्या स्वाधीन करीन." अस्पृश्यांच्या चळवळीचे नेतृत्व अस्पृश्य समाजातून बाहेर पडल्यास अस्पृश्य मुक्तीचा मार्ग अधिक मोलाचा होईल, असे शाहू महाराजांना नेहमीच वाटत होते. गवई यांना लिहिलेल्या पत्रातून त्यांना हाच संदेश सुचवायचा होता. यामध्ये दिलेल्या पत्रात ते म्हणाले, "तुम्ही तुमच्या समाजाच्या चळवळीचे नेतृत्व इतरांकडे देऊ नका. विश्वासाहून आणि योग्य नेता स्वतःच्या समाजातून नियुक्त केला पाहिजे. अन्यथा, इतर समाजाचे नेते तुमच्या आणि चळवळीच्या भविष्याशी खेळतील". त्यामुळे त्यांच्या अध्यक्षतेखाली झालेल्या माणगाव परिषदेत त्यांनी डॉ. आंबेडकरांना अस्पृश्यांचे नेते म्हणून जाहीरपणे घोषित केले. त्यानंतर अस्पृश्य समाज निर्धाराने डॉ. आंबेडकरांच्या पाठीशी उभा राहिला परिणामी इतर नेत्यांची कीर्ती हळूहळू कमी होत गेली. डॉ. आंबेडकरांच्या नेतृत्वाखाली मानवमुक्तीची चळवळ चालवली.

❖ निष्कर्ष :

शाहू महाराजांनी महात्मा फुलेंची सत्यशोधक (सत्यशोधक) चळवळ अविरतपणे वाढवली. त्यांनी समाजातील विषमता संपुष्टात आणण्यासाठी आपली शक्ती वापरली. अवंत-गार्डेची प्रमुख भूमिका म्हणजे लोकांच्या जीवनात रूपांतरित बदल घडवून आणणे, त्यांना मानवतेबद्दल जागरूक करून प्रगतीकडे नेणे. या दृष्टीकोनातून छत्रपती शाहू महाराज हे एक आयकॉनोक्लाम्स्ट होते. ज्या काळात शाहू महाराजांनी अस्पृश्यता निर्मूलनाचा मुद्दा उपस्थित केला तो काळ आजच्यासारखा अनुकूल आणि पुरोगामी नव्हता. केसरीच्या वृत्तपत्रातील शाहू महाराजांच्या



मृत्यूच्या लेखात त्याचे बारकाईने वर्णन केले आहे. केसरीचे लेखक म्हणाले, "कोणीही याला मागे टाकू शकत नाही. आजच्या युगातील ज्ञानशास्त्र, राजकारण आणि समाजशास्त्र यातील शाहू महाराजांचे कौशल्य आणि बौद्धिक क्षमता. लोक त्याच्या प्रचंड आणि कठोर परिश्रमाचे साक्षीदार आहेत" (प्रबोधन पाक्षिक 117). प्रचारक आणि समाजसुधारक ठाकरे यांनी छत्रपती शाहू महाराजांच्या कार्याकडे विविध समाजाचे लोक व्यापक दृष्टिकोनातून कसे पाहतात हे दाखवण्याचा प्रयत्न केला होता. या संदर्भात ते म्हणाले, "तो चित्पावन समाजातील लोकांचा शत्रू होता. देशस्थ समाजासाठी ते धार्मिक क्षेत्रात बंडखोर होते. ते मुंबई आणि भारत सरकारचे प्रिय मित्र होते, ब्राह्मणतरांचे पिता होते तर अस्पृश्यांसाठी देवाचे देवदूत होते" (प्रबोधनपाक्षिक (मराठी) 116). हे शाहू महाराजांच्या कार्याकडे लोकांचे विविध दृष्टीकोन स्पष्ट करते. 6 मे 1922 रोजी शाहू महाराजांच्या निधनानंतर त्यांना श्रद्धांजली अर्पण करताना 'बहिष्कृत भारत'मध्ये लिहिले होते, "ते आमचे अब्राहम लिंकन होते ज्यांनी हे सिद्ध केले आहे की जर तुम्ही प्रेमाची बीजे रुजवली तर ती तुम्हाला द्वेषाची फळे कधीच देणार नाही. ; तो आमचा गौरव आहे; हिंदूंच्या मनावरील अस्पृश्यतेचा डाग त्यांनी पुसून टाकला आहे. तो आमचा देव होता..." (बहिष्कृत भारत पाक्षिक). डॉ.आंबेडकर यांनी टिपणी केली, "शाहू महाराजांनी सामाजिक विषमता नष्ट करण्यासाठी अविरत प्रयत्न केले आणि ब्राह्मणांचे गड उध्वस्त केले". अशा प्रकारे, छत्रपती शाहू महाराजांनी नेहमीच अस्पृश्यांच्या विकासाची काळजी घेतली असे सध्याच्या अभ्यासातून स्पष्ट झाले आहे. अस्पृश्यांच्या शैक्षणिक, सामाजिक आणि वैचारिक जागृतीसाठी त्यांनी खूप प्रयत्न केले. शाहू महाराजांचे हे मोठे कार्य आगामी पिढीसाठी प्रेरणादायी आहे.

❖ संदर्भ सूची :

1. प्रबोधन पाक्षिक (मराठी), 1 जून 1922, 122.
2. गरुड साप्ताहिक, 13 मे 1954.
3. बहिष्कृत भारत पाक्षिक (मराठी), 4 नोव्हेंबर 1927, 4थी आवृत्ती.
4. मूकनायक पाक्षिक (मराठी), 5 जून 1920.
5. बहिष्कृत भारत पाक्षिक (मराठी), 3 जून 1922.
6. गरुड साप्ताहिक, (मराठी), 13 मे 1954.
7. प्रबोधन पाक्षिक, 16 मे 1922, 117.
8. बागल, के. एम., एड. (1933). सत्यशोधक हिरक महोत्सव ग्रंथ (मराठी), हीरक महोत्सवी ग्रंथ समिती.
9. बनसोडे, आर. एच. (1930). अस्पृश्यांची देशभूल (मराठी). गिरिजाशंकर मारुती शिवदास, मुंबई.
10. गोरे, जी. आणि शिरूभाऊ एल. (1973). महाराष्ट्रातील दलित-शोध आनी बोध (मराठी),सहध्यायन पब्लिकेशन, मुंबई.
11. खैरमोडे, C. B. (1978). डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर: चरित्र (मराठी). 3रा. खंड. I. प्रताप पब्लिकेशन, मुंबई.
12. खरात, एस. (1966). डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे धर्मांतर (मराठी). ठोकळ भवन, श्री लेखन वाचनघर, पुणे.
13. चंद्र, व्ही., एड. (2002). डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर लेखण आणि भाषाने-भाग दुसरा (मराठी). खंड. 18. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर स्रोत साहित्य प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र शासन, मुंबई.
14. पवार, जे., एड. (2001). राजश्री शाहू स्मारक ग्रंथ. महाराष्ट्र इतिहास अकादमी, कोल्हापूर.
15. "प्रबोधन मासिक (मराठी)." (१९२६), ६४.
16. शेंडे, एन.आर. (1963). विदर्भातिल एक थोर दलित पुढारी G. A. गवई: Vyakti Aani Karya (Marathi). प्रभाकर पांडुरंग भाटकर, अमरावती, ४१.

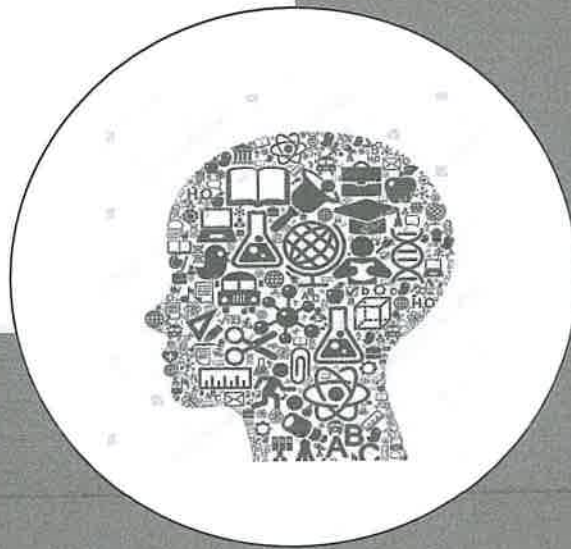


17. शिंदे, विठ्ठल रामजी (1976). भारतीय अस्पृश्यतेचा प्रश्न (मराठी). समाज कल्याण, क्रीडा आणि पर्यटन विभाग, मुंबई, २४३.
18. वरखेडे, रमेश (2017). "महाराजा सयाजीराव गायकवाड यांचा भाषासंग्रह (मराठी)." खंड. II. सचिव, महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र प्रकाशन समिती, औरंगाबाद, ३४.

21-22

ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-15

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH



Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

**International Journal of Advance
and Applied Research (IJAAR)**

Peer Reviewed Bi-Monthly



ISSN – 2347-7075

Impact Factor –7.328

Vol.2 Issue-15 May-Jun -2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

May-Jun -2022 Volume-2 Issue-15

On

*Relevance of Work and Thoughts of Rajarshi Chhatrapati
Shahu Maharaj*

Chief Editor

P. R. Talekar

Secretary,

Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor

Dr. Sunil Helkar

Principal,

Prof. Dr. N.D.Patil Mahavidyalaya, Malkapur – Perid

Tal. Shahuwadi Dist. Kolhapur

Co- Editors

Dr. Supriya Khole

M.L.Sontakke

Published by- P. R. Talekar, Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors



CONTENTS

| Sr No | Paper Title | Page No. |
|-------|--|----------|
| 1 | "Chh. Shahu Maharaj and the people from VJNT community" Dr. Vijay Jaysing Mane | 1-3 |
| 2 | Relevance of Rajarshi Chha. Shahu Maharaja's Thoughts on Emancipation of Women Dr. Mrs. Vaishali Abhijit Sarang | 4-5 |
| 3 | छत्रपती शाहू महाराज यांची भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील भूमिका : चिकित्सक अभ्यास प्रा. महादेव लिवराज सोनटके, प्रा. किरण सजेंराव पवार | 6-8 |
| 4 | सामाजिक समतेचे पुरस्कर्ते - छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे | 9-11 |
| 5 | राजर्षी शाहू महाराजांचे कृषी विषयक धोरण डॉ. डी. आर. पाटील | 12-15 |
| 6 | राजर्षी छ. शाहू महाराज यांचे अस्पृश्य उद्धारासाठी केलेले शैक्षणिक कार्य डॉ. गीतम नामदेव ढाले | 16-19 |
| 7 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचा मोफत व सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा अष्टादेश आणि कोल्हापूर संस्थानी राज्यातील शैक्षणिक विकास डॉ. रामचंद्र वसंत कुंभार | 20-24 |
| 8 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे अस्पृश्योद्धाराचे कार्य डॉ. ज्योती जयवंत व्हटकर | 25-28 |
| 9 | पुरोगामी धोरणाचा दीपस्तंभ - छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा. केशव धोंडीबा टिपरसे | 29-31 |
| 10 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे आदर्श आपत्ती व्यवस्थापन डॉ. मधुकर बिठोबा जाधव | 32-35 |
| 11 | राजर्षी छ. शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार | 36-39 |
| 12 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक कार्य प्रा. रमेश शंकर माने | 40-42 |
| 13 | कोल्हापूर संस्थानातील शैक्षणिक क्रांती डॉ. उत्तरा खाडीलकर | 43-44 |
| 14 | राजर्षी शाहू महाराज यांचे सत्यशोधक समाजातील योगदान डॉ. राजश्री दिलीप निकम | 45-47 |
| 15 | सामाजिक क्रांतीचे जनक राजर्षी शाहू महाराजांचे कोल्हापूर संस्थानातील सामाजिक व शैक्षणिक योगदान संदीप बळवंत गुरव | 48-50 |
| 16 | दूरदृष्टीचे लोकनेते राजश्री शाहू महाराज राजेंद्र भिकू महानवर | 51-55 |
| 17 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे शैक्षणिक क्षेत्रातील योगदान प्रा. विनोद आबाडे | 56-58 |
| 18 | "राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांच्या आपत्ती व्यवस्थापन कार्याची सद्यकालीन प्रस्तुतता" डॉ. जनार्दन श्रीकांत जाधव | 59-63 |
| 19 | राजर्षी शाहू महाराज : वसा आणि वारसा डॉ. विश्वाधार रामराव देशमुख | 64-66 |
| 20 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज यांचे सार्वजनिक आरोग्य क्षेत्रातील कार्य प्रा. किरण गणपत कुंभार | 67-70 |



सामाजिक समतेचे पुरस्कर्ते – छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज

प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे
इतिहास विभाग प्रमुख बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी.

Email- dattatrayakharade@gmail.com

प्रस्तावना :

एकोणिसाव्या शतकात भारतात बरेच संस्थानिक होते. परंतु प्रजेच्या हितासाठी आपल्याकडे असलेल्या सत्तेचा वापर करणारे बडोद्याचे सयाजीराव महाराज व कोल्हापूरचे राजर्षी शाहू महाराज असे संस्थानिक मात्र इतकितेच होते. सयाजीराव गायकवाड यांनी महाराष्ट्रातील माणसांचा संबंध आपल्या संस्थानाशी नसला तरी त्यांनी महाराष्ट्रातील मराठी माणसाच्या उत्कर्षासाठी भोलाचे कार्य केले. सयाजीराव गायकवाड यांच्या प्रमाणेच प्रजेच्या हितासाठी झटणारे दुसरे संस्थानिक शाहू महाराज यांचा उल्लेख केला जातो. आपल्याकडील सत्तेचा त्यांनी पददलितांच्या उन्नतीसाठी उपयोग केला. माणसातला राजा व राजामधील माणूस असे त्याचे वर्णन केले जाते. शाहू महाराजांचे कार्य केवळ कोल्हापूर या त्यांच्या संस्थानापुरते मर्यादित नव्हते. कायद्याचा आधार घेऊन ज्या सुधारणांचा अंमल त्यांना करण्याचा होता तो त्यांनी कोल्हापूर संस्थानात केलाच परंतु संस्थानाची सरहद्द ओलांडून ब्रिटिश अंमलाखालच्या महाराष्ट्रातील बहुजन समाजात जागृती करण्याचे त्यांना मार्गदर्शन करून त्यांच्या उद्धाराची दिशा दाखवण्याचे कार्य ही त्यांनी केले. एका संस्थानाचा अधिपती असून सामाजिक जागृतीचे प्रचंड कार्य करणारी शाहू महाराज ही अपवादात्मक व्यक्ती होती. छत्रपती शाहू महाराजांची विचार सरणी आणि कार्य प्रखर होते. त्यांनी तत्कालीन समाजातील घनिष्ठ प्रथा, परंपरा आणि सामाजिक भेदभाव संपुष्टात आणण्याकरिता कठोर कायदे केले. त्याचबरोबर त्यांनी संस्थानातील कारभार पारदर्शक आणि सामान्य नागरीकांना न्याय मिळवून देण्याकरिता सर्वच जाती धर्मातील स्त्री-पुरुषांना सत्तेत सहभागी होता यावे, याकरिता आरक्षणाची सुविधा केली. शाहू महाराजांनी सर्वच जनतेच्या विकासाकरिता शैक्षणिक सुविधा, शैक्षणिक कायदे, अस्पृश्यता निर्मूलन कायदे, अस्पृश्यांना राजकीय व शासकीय कार्यात सहभाग, स्त्रियांना पुरुषांसमान अधिकार, जातीभेदाचे निर्मूलन इत्यादीचे विचार प्रखंड मांडून आपल्या संस्थानात सामाजिक समता प्रस्थापित करणेचा प्रयत्न केला. त्या धोरणाची अंमलबजावणी चोख व्हावी या करिता कायदे केले. कायद्याचे पालन व्हावे याकरिता स्वतः त्यावर नियंत्रण ठेवले. असा जनहितवादी शाहू महाराजांच्या सामाजिक समतेच्या विचाराचा कार्याचा आढावा प्रस्तुत शोध निबंधात घेतला आहे.

समाज परिवर्तन ही केवळ भौतिक गरजांच्या पूर्ततेसाठी करावयाची चळवळ नाही. ती माणसांच्या मुलभूत प्रेरणांच्या पूर्तीसाठी त्यांच्यातील सुप्त शक्तींना मुक्त वाव देण्यासाठी, त्यांच्यामध्ये स्वातंत्र्याची उर्मी निर्माण करण्यासाठी, त्यांचे हरवलेले माणुसपण पुन्हा मिळवून देण्यासाठी समुह शक्तीच्या जोरावर मानवमुक्तीसाठी उचलावयाचे क्रांतिकारक पाऊल आहे. आजचा हा क्रांतिकारी बदल आपोआप झालेला नाही. तो माणसांनीच घडविला आहे. आणि त्या बदलाबरोबरच माणुस स्वतःही बदललेला आहे. म्हणून आज परिवर्तन करणा-या लोकांचे नव्याने प्रबोधन होण्याची गरज आहे. वास्तवातील बदल आणि माणसातील बदल त्यांच्यातील एकरूपतेकडे क्रांतिकारी कृती म्हणून पाहिल्याशिवाय तो नीट समजू शकणार नाही.¹ राजर्षी शाहू महाराज हे महाराष्ट्रातील परिवर्तनवादी विचारांचे भोक्ते होते. 20 व्या शतकाच्या पहिल्या दोन दशकात राजर्षी शाहू महाराजांनी अखिल भारतातील परिवर्तनवादी चळवळींना चालना दिली. त्यांना प्रोत्साहन दिले आणि लोकांच्या मनातील आकांक्षा जागृत केल्या. 20 व्या शतकाच्या पहिल्या पंचवीस वर्षात महाराष्ट्राचे सामाजिक जीवन ढवळून टाकणारी सामाजिक समतेची प्रतिष्ठापना करण्यासाठी अविश्रांत परिश्रम करणारी, बहुजन समाजाच्या उद्धारासाठी तळमळणारी व मार्गदर्शन करणारी लोकोत्तर व्यक्ती म्हणजे राजर्षी शाहू महाराज होत.

हिंदू धर्मात सामाजिक विषमता मोठ्या प्रमाणात होती. जाती व पोटजातींमुळे सामाजिक ऐक्य राहिले नव्हते याचा राष्ट्रीय ऐक्याला मोठा परिणाम होत होता तेव्हा शाहू महाराजांनी समाजातील जातिप्रथेचे उच्चाटन करण्याचे कार्य हाती घेतले सामाजिक विषमते विरुद्ध संघर्ष केला. समाजातील जातिभेद नष्ट करण्यासाठी त्यांनी विविध मार्गांचा अवलंब केला. जातीयतेचे उच्चाटन करण्यासाठी स्वतःच्या कृतीने उदाहरण घालून दिले. जातीयतेची बंधने तोडून टाकण्यासाठी अनेक व्याख्याने दिली. तसेच अनेक ठिकाणी सामाजिक विषमतेविरुद्ध परिषदा आयोजित केल्या. सार्वजनिक ठिकाणे सर्वांसाठी खुली केली. आपल्या संस्थानात माणगांव येथे 1920 मध्ये सर्व धर्मातील लोकांची परिषद भरवून अस्पृश्य बांधवांना डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे नेतृत्व स्विकारण्यास सांगितले. राजर्षी

प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे

शाहूंनी आपल्या संस्थानात रयतेचा सर्वांगीण विकास व्हावा म्हणून विविध सुधारणा केल्या.² महात्मा ज्योतिबा फुले यांच्या सामाजिक क्रांतीचा वारसा ख-या अर्थाने शाहू महाराजांनी पुढे चालू ठेवला. राजाच्या सामाजिक कार्यामुळे बहुजन समाजाची प्रगती झाली. महाराष्ट्रात सामाजिक व राजकीय चळवळी पुढे निघाल्या त्यांचा पाया घालण्याचे श्रेय छत्रपती राजर्षी शाहू महाराजांना द्यावे लागते.

धर्मसत्ता-जातसत्ता आणि पुरुषसत्ता यांच्या मगरमिठीतून बाहेर काढण्यासाठी शाहू महाराजांनी सातत्याने प्रयत्न केले. कारण त्यांची विचारधारा मानवमुक्तीच्या ध्येयाप्रत होऊन जाणारी होती. त्यासाठी समताधिष्ठित शोषणमुक्त निर्णय व विवेकनिष्ठ समाजनिर्मित मार्ग त्यांनी दाखविलेला होता. त्यातून त्यांना अभिप्रेत असलेला सम्यक समाज व प्रगत क्रांतिकारी तत्त्वज्ञान मांडून त्यांनी संबंध महाराष्ट्राला अस्पृश्यता निवारण्याचा एक नवा विचार दिलेला आहे. राजर्षी शाहू महाराज करवीर संस्थानाचा राजा म्हणून नाही तर भारतातील प्रगतिशील राजा म्हणून त्यांची किर्ती जास्त महत्त्वाची आहे.³

शाहू महाराजांनी खामगाव येथील अखिल भारतीय मराठा शिक्षण परिषदेच्या 11 व्या अधिवेशनातील भाषणामध्ये शिक्षण विषयक जे विचार मांडले आहेत त्यात त्यांनी शिक्षणाशिवाय तरणोपाय नाही. शिक्षण हे अविभाज्य भाग समजून हे प्रत्येकांनी घ्यावे असे ठणकावून सांगितले. त्याशिवाय पुढील भाषणात ते म्हणतात, "अज्ञानात बुडून गेलेल्या देशात उत्तम मुत्सद्दी व लढवय्ये, वीर कधीही निपजणार नाहीत म्हणून सक्तीच्या व मोफर शिक्षणाची हिंदुस्थानला अत्यंत गरज असून याबाबतीत आमचा गतकाळ म्हटला म्हणजे इतिहासातील एक अंधारी रात्र आहे."⁴ शिक्षण घेवून रयत सुधारली पाहिजे व तिने लोकशाहीची पुरस्कार केला पाहिजे. समाज सुशिक्षित साक्षर झाला तरच लोकशाही यशस्वीपणे राबविला जाऊ शकते व यशस्वी लोकशाहीच देशाला चांगले दिवस आणू शकते. यासाठी त्यांनी लोकांना शिक्षणाचे महत्त्व पटवून दिले. ख-या अर्थाने शाहू महाराजांनी शिक्षण विषयक विचारांची बैठक ही महात्मा ज्योतिबा फुले यांच्या विचारावर आधारलेली होती.

राजर्षी शाहू महाराज 17 मार्च 1884 रोजी दत्तक विधी पूर्ण होवून कोल्हापूरच्या गादीवर बसले. पुणे सार्वजनिक सभेसह संपूर्ण महाराष्ट्राला आनंद झाला. याच काळात 1895 साली सर जेम्स फर्ग्युसन यांच्या नावाने पहिले स्वदेशी कॉलेज उघडले गेले. त्याचे उदघाटक राजर्षी शाहू महाराज होते. त्यामुळे त्या काळातील पहिल्या पिढीतील कर्त्या स्त्री-पुरुषांना शिक्षण घेता आले. राजर्षी शाहू महाराजांनी जाती निर्मूलन व अस्पृश्य उच्चार केल्यामुळे फुले-आगरकर-लोकहितवादी पुरस्कारित सुधारणांचे राजकीय पुरस्कर्ते म्हणून ते ओळखले जातात.⁵

राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांनी बहुजन समाजाच्या शिक्षण प्रसाराच्या कार्याला सुरुवात केली त्यांनी शैक्षणिक कार्याद्वारे सामाजिक लोकशाही निर्माण करण्याचा प्रयत्न केला. अस्पृश्य समाजातील मुलांना शिक्षणाची संधी उपलब्ध करून दिली. त्यांनी प्राथमिक शिक्षण सक्तीचे व मोफत केले. अस्पृश्यांच्या मुलांकरिता स्वतंत्र वस्तीगृहाची स्थापना करून दिली. समाजातील सर्व वर्गांना शिक्षण मिळाले पाहिजे अशी त्यांची भूमिका होती.⁶

राजर्षी शाहू महाराजांनी 1884-1922 या आपल्या 28 वर्षांच्या राजवटीत समाज सुधारणेसाठी व प्रशासन सुधारण्यासाठी अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय घेतले. प्रजाहित दक्ष प्रशासक असा त्यांचा नावलौकिक होता. स्त्री शिक्षणाचे, त्यातून स्त्री सक्षमीकरणाचे कार्य हे मौलिक होते. कारण "शिक्षणाशिवाय आमचा तरणोपाय नाही असे माझे ठाम मत आहे. शिक्षणा शिवाय कोणत्याच देशाची प्रगती झाली नाही असा इतिहास सांगतो. अज्ञानात बुडून गेलेल्या देशाची उन्नती झाली नाही म्हणून सक्तीच्या व मोफत शिक्षणाची हिंदुस्थानला नितांत आवश्यकता आहे."⁷ म्हणजे स्त्रियांच्या शिक्षणासाठी ते आग्रही होते, हे मान्य करावे लागते. त्यांनी स्त्री शिक्षणासाठी काही उपाय योजना केल्या. त्यात सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा कायदा मुलींच्या शिक्षणाला उत्तेजन व विशेष प्रयत्नही त्यांनी केले. मोफत शिक्षण, विधवा पुर्नविवाहाचा कायदा, आंतरजातीय विवाह कायदा, पडदा पद्धतीस विरोध, काडीमोड व घटस्फोट कायदा, अनौरस संतती व देवदासी जोगीण या विषयांचा कायदा, शिमग्यातील शिब्याना प्रतिबंध, कोल्हापूर संस्थानात मागास जातीला 50 % आरक्षण व त्यांची अंमलबजावणी याबाबतचे निर्णय घेणारे स्वातंत्र्य पूर्व काळातील ते एकमेव संस्थानिक होते. त्याचबरोबर कुलकर्णी वतन नष्ट केले, अस्पृश्यता निवारण्याचे जाहीरनामे काढले. सत्यशोधक चळवळ व ब्राह्मणेतर चळवळ यामध्ये प्रचंड बदल व त्यांच्या विचारावर ह्या दोन्ही चळवळींनी महाराष्ट्रातील ब्राह्मणांची मत्तदारी मोडून नवीन दिशा समाज व्यवस्थेला दिली. त्याचबरोबर संस्थानातील शेती व सहकार व दुष्काळ याबाबत महत्त्वपूर्ण योगदान होते. संस्थानातील मुस्लीम समाजाच्या कल्याणासाठी झटणारे शाहू महाराज हिंदु मुस्लीम ऐक्याचे पुरस्कर्ते होते. राजर्षी शाहू महाराजांचे समाजक्रांतीच्या वाटचालीतील योगदान अतन्व साधारण आहे. सामाजिक न्यायाची प्रस्थापना करण्यासाठी साधनसंपत्तीच्या समान वाटपासाठी आणि नव्या संस्कृतीच्या निर्मितीसाठी, पददलित, सामाजिक आणि आर्थिक दृष्ट्या अभावग्रस्त वर्ग प्रस्थापितांशी जोराने संघर्ष

करीत आहे. या संघर्षांना वैचारिकदृष्ट्या मजबुत करण्यासाठी क्रांतीकारक प्रगतशील मार्ग दाखविण्यासाठी शाहू महाराजांच्या विचारांची गरज समाजाला मोठ्या प्रमाणात आहे. आज आपणास असे दिसून येते की महाराष्ट्रातील काही विचारवंतांवर शाहू महाराजांच्या विचारांचा आणि कार्याचा प्रभाव दिसून येतो. तसेच देशाच्या विकास प्रक्रियावर महाराजांच्या विचार आणि कार्याचा प्रभाव आहे. आजच्या पुरोगामी महाराष्ट्राच्या निर्मितीस राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांच्या कार्याचे योगदान आहे. समाज आपोआप घडत नाही तो घडवावा लागतो. समाज घडवणारी माणसं कुणी वेगळी नसतात. समाजासाठी समाजातूनच आकाराला आलेल्या या माणसाला आपण सुधारक म्हणतो आणि म्हणून स्वतंत्र भारताची सामाजिक विकास (उन्नती) होण्यात ज्यांनी महत्त्वपूर्ण योगदान दिले त्यात राजर्षी शाहू महाराज अग्रगण्य असलेले दिसून येतात.

संदर्भ

- 1) डॉ. कांबळे नारायण व इतर (संपा.) राजर्षी शाहू, नव्या दिशा नवे चिंतन, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, 2008 पृष्ठ क्र. 137.
- 2) डॉ. निंबाळकर नाईक सुवर्णा - 'समाज क्रांतीकारक राजर्षी शाहू महाराज', संस्कृती प्रकाशन, पुणे, 2014 पृष्ठ क्र. 76.
- 3) कीर धनंजय, राजर्षी शाहू छत्रपती, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, 1992 पृष्ठ क्र. 117.
- 4) राजर्षी शाहू महाराजांचे खामगाव शिक्षण परिषदेतील भाषण, 17 डिसेंबर 1917.
- 5) डॉ. भोसले एस. एस. (संपा.), क्रांतीसुक्ते राजर्षी शाहू, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, 1975 पृष्ठ क्र. 89.
- 6) भगत रा. तू., राजर्षी शाहू छत्रपती - जीवन व शिक्षणकार्य, रिया पब्लिकेशन, कोल्हापूर, 2016 पृष्ठ क्र. 142.
- 7) पवार जयसिंगराव (संपा.), राजर्षी शाहू स्मारक ग्रंथ, महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधिनी कोल्हापूर 2001 पृष्ठ क्र. 38.

21-22



UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक
॥ संशोधक ॥

पुरवणी अंक - मार्च २०२२ (त्रैमासिक)

● शके १९४४ ● वर्ष : ९० ● पुरवणीअंक : ४

संपादक मंडळ

● प्राचार्य डॉ.सर्जेराव भामरे ● प्रा.डॉ.मृदुला वर्मा ● प्रा.श्रीपाद नांदेडकर
अतिथी संपादक :

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ.वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१.

दूधवनी (०२५६२) २३३८४८, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवार सुटी)

मूल्य ₹ १००/-

वार्षिक वर्गणी ₹ ५००/-; आजीव वर्गणी ₹ ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्ट ने

'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळवणी : अनिल साठये, बावधन, पुणे २१.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.



अनुक्रमणिका

| | | |
|----|---|----|
| १ | महात्मा फुले यांचे शेती समस्येबाबत विचार - डॉ.अनिल कांबळे, सोलापूर ----- | ११ |
| २ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत 'मूकनायक' या वृत्तपत्राचे योगदान - प्रा. आप्पासाहेब केंगार, भिलवडी, ता.पलूस, जि.सांगली ----- | १५ |
| ३ | महात्मा ज्योतिराव फुले : २१ व्या शतकात समजून घेतांना - प्रा.अरुणा वाघोले, आळे, ता.जुन्नर, जि.पुणे ----- | २० |
| ४ | महात्मा जोतीराव फुले यांचे शैक्षणिक विचार आणि कार्य : ऐतिहासिक अभ्यास - डॉ.बाळासाहेब काळे, इंदापूर, जि.पुणे ----- | २७ |
| ५ | डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्यातील विचार आणि योगदान - प्रा.शैलेश भालेराव, पाषाण, जि.पुणे----- | ३१ |
| ६ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कामगार कल्याणविषयक योगदान - डॉ.चंद्रकांत भारसाकळे, इस्लामपूर, जि.सांगली ----- | ३६ |
| ७ | महात्मा ज्योतिबा फुले : एक थोर समाजसुधारक - श्री.अजित चव्हाण, बार्शी, जि.सोलापूर ----- | ४१ |
| ८ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अनुसूचित जातींसाठी सामाजिक न्यायाचे योगदान - प्रा.गीतांजली चव्हाण, लोणी काळभोर, ता.हवेली, जि.पुणे ----- | ४६ |
| ९ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची भारतीय संसदीय लोकशाही विषयीचे विचार - प्रा.दादासाहेब हाके, माढा, जि.सोलापूर ----- | ४९ |
| १० | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे धर्मविषयक व व्यक्तिविषयक विचार - एक सामाजिक आकलन - प्रा.दशरथ रसाळ, सोलापूर ----- | ५३ |
| ११ | महात्मा फुले -एक कृतिशील समाजसुधारक - प्रा.बाळासाहेब देवकाते, कर्जत, जि.अहमदनगर ----- | ५६ |
| १२ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे समाजशास्त्र व समाज कार्यातील योगदान - डॉ.नागोराव भुरके, सोलापूर ----- | ५९ |
| १३ | महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले : लोकोत्तर पुरुष - डॉ.अतुल कदम, भोसरे, ता.माढा, जि.सोलापूर ----- | ६२ |
| १४ | सत्यशोधक समाज आणि क्रियाशील सत्यशोधक - डॉ.गोवर्धन दिकोंडा, माढा, जि.सोलापूर ----- | ६६ |
| १५ | आधुनिक भारताच्या विकासात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान - प्रा.महादेव दिसले, बार्शी ----- | ७० |
| १६ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाही समाजवाद आणि आर्थिक विषमतेबाबतचे विचार - प्रा.महेंद्र गजधाने, पंढरपूर ----- | ७५ |
| १७ | महात्मा फुले यांच्या साहित्यातील मानवतावाद - डॉ.नामदेव शिंदे, माढा, जि.सोलापूर ----- | ७७ |
| १८ | महिलांच्या शैक्षणिक सक्षमीकरणासाठी महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे योगदान - डॉ.पौर्णिमा चव्हाण, आष्टा, ता.वाळवा, जि.सांगली ----- | ८० |



- १९ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे मानव मुक्तीचे लढे - डॉ.विजय रेवजे, सोलापूर ----- ८३
- २० डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा राष्ट्रवादी दृष्टीकोण
- डॉ.वासुदेव डोंगरदिवे, विक्रमगड, जि. पालघर ----- ८५
- २१ महात्मा फुले यांचे पददलितांच्या शिक्षणासंबंधीचे योगदान - प्रा.आनंद शिंदे, सोलापूर ----- ९०
- २२ महात्मा जोतीराव फुले - एक दृष्टा और स्रष्टा युगपुरुष - डॉ.दत्तात्रय अनारसे, माढा, जि.सोलापूर- ९३
- २३ डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि बहिष्कृत हितकारिणी सभा
- डॉ.दिगंबर वाघमारे, टेंभुर्णी, ता.माढा, जि.सोलापूर ----- ९६
- २४ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सशक्तिकरण
- डॉ.दिलीप बिराजदार, माकणी, ता.लोहारा, जि.उस्मानाबाद ----- १०१
- २५ महात्मा जोतीराव फुले यांच्या कुळंबीण' अखंडातील जातीव्यवस्था व स्त्री शोषणाचा विचार
- डॉ.दिनकर मुरकुटे, हडपसर, पुणे ----- १०५
- २६ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक व कृषिविषयक विचारांचा विश्लेषणात्मक अभ्यास
- डॉ.स्मीता पाकधाने, नाशिक ----- १०९
- २७ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : बौद्ध धम्म प्रभाव आणि वारसा, सामाजिक अस्तित्वाचा पर्यायी समृद्ध मार्ग
- डॉ.प्रभाकर कोळेकर, सोलापूर ----- ११६
- २८ आंबेडकरवादी इतिहास पद्धतीचे वैचारिक तत्त्वज्ञान व त्याची मिमांसा
- डॉ.प्रविण बोरकर, उल्हासनगर ----- १२३
- २९ आधुनिक भारताच्या सामाजिक चळवळीचा दीपस्तंभ महात्मा फुले कृत सत्यशोधक समाज
- डॉ.राजेंद्र गायकवाड, टेंभुर्णी, . ----- १२९
- ३० महात्मा जोतीराव फुले यांचे सत्यशोधक समाजाबाबतचे विचार
- डॉ. सुशिल शिंदे, पंढरपूर ----- १३१
- ३१ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे दलित चळवळीतील योगदान
- डॉ.संजीव बोधे, खटाव, जि.सातारा ----- १३६
- ३२ महात्मा ज्योतीराव फुले यांचे सामाज सुधारणाविषयक विचार
- प्रा.दत्तू शेंडे, कर्जत, जि.अहमदनगर. ----- १३९
- ३३ आधुनिक भारताच्या संविधान निर्मितीत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान
- डॉ.सुभाष वाघमारे, सातारा. ----- १४१
- ३४ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य
- डॉ.प्रमोद परदेशी, कर्जत, जि.अहमदनगर. ----- १४५
- ३५ समाज परिवर्तनाच्या चळवळीचे आद्य प्रवर्तक महात्मा फुले यांचे विचार व कार्य : एक अभ्यास
- डॉ.गौतम ढाले, जयसिंगपूर, जि.कोल्हापूर. ----- १४९
- ३६ महात्मा फुले यांचे शेतकऱ्यांच्या प्रगतीबाबत विचार - डॉ.घनश्याम महाडीक, अमरावती ----- १५४
- ३७ महात्मा फुले यांचे भारतीय शेती व शेतकऱ्याविषयीचे विचार
- १) डॉ.उद्धव घोडके, पुणे; २) डॉ.पांडुरंग लोहोटे, पुणे. ----- १५६
- ३८ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय समाजाच्या शिक्षणाचा हक्क
- डॉ.संतोष जाधव, मोखाडा, जि.पालघर. ----- १५९



| | | |
|----|---|-----|
| ३९ | महात्मा जोतीराव फुले यांचे कृषिविषयक विचार - डॉ.प्रदीप जगताप, सोलापूर ----- | १६१ |
| ४० | डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांच्या पत्रकारीतेचा चिकित्सक अभ्यास - डॉ.जयपाल सावंत, कोरेगाव, जि.सातारा ----- | १६५ |
| ४१ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार आणि योगदान: संक्षिप्त आढावा - डॉ.अशोक कदम, माढा, जि.सोलापूर ----- | १६९ |
| ४२ | महात्मा फुलेनी केलेली समाजक्रांती : एक ऐतिहासिक अध्ययन - डॉ.प्रज्ञा कामडी, मोवाड, ता.नरखेड, जि.नागपूर ----- | १७३ |
| ४३ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या कृषी विचारांची प्रासंगिकता - डॉ.अंकुश करपे, करमाळा, जि.सोलापूर ----- | १७८ |
| ४४ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषीविषयक विचार - डॉ.काशिनाथ तलंगे, गडहिंगलज, जि.कालहापूर ----- | १८३ |
| ४५ | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची धर्मविषयक भूमिका - डॉ.डी.पी.खराडे, भिलवडी, जि.सांगली ----- | १८८ |
| ४६ | राज्य-समाजवादाबाबत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार - डॉ.पंडित लावंड, बाशी, जि.सोलापूर ----- | १९१ |
| ४७ | स्त्री शिक्षणाचे कैवारी महात्मा फुले यांचे स्त्री शिक्षणाचे कार्य - डॉ.एम.एस.जडल, पंढरपूर --- | १९४ |
| ४८ | महात्मा फुलेंची वैचारिकता - डॉ.मोहन चव्हाण, सोलापूर ----- | २०० |
| ४९ | महात्मा फुले यांचे साहित्य - एक अभ्यास - १) प्रा.बजरंग मोरे, कोल्हापूर, २) प्रा.प्रकाश जमदाडे, दहिवडी, जि.सातारा. ----- | २०३ |
| ५० | डॉ. आंबेडकरांचे सत्ताकारण व शिक्षण यांच्या सहसंबंधाचे विचार - प्रा.सचिन मोरे, अहमदनगर | २०६ |
| ५१ | म. फुले यांचे 'शेतकऱ्यांचा असूड' ग्रंथातील शेतकरी वर्गाविषयीचे विचार - प्रा.नील नागभिडे, उस्मानाबाद ----- | २०९ |
| ५२ | कामगारांचे भाग्यविधाते डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर - प्रा.नारायण बनसोड, सोलापूर ----- | २१४ |
| ५३ | राष्ट्रपुरूष महात्मा जोतीराव फुले यांचे सामाजिक कार्य : विशेष संदर्भ तळेगाव ढमढेरे गाव - - डॉ.पद्माकर गोरे, तळेगाव ढमढेरे, ता.शिरूर, जि.पुणे ----- | २१९ |
| ५४ | महात्मा जोतीराव फुले यांचे स्त्री शिक्षण विषयक विचार - प्रा.संगिता पैकेकरी, माढा, जि.सोलापूर | २२३ |
| ५५ | डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या लोकशाही दृष्टिकोनाची समकालीन प्रस्तुतता - - प्रा.पद्माकर पाटील, सोलापूर ----- | २२६ |
| ५६ | महात्मा फुले यांचे कृषी व उद्योगाविषयक विचार - प्रा.वनदास पुंड, कर्जत, जि.अ.नगर ----- | २३१ |
| ५७ | महिलांच्या सक्षमीकरणात डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान - डॉ.अरविंद पुनवटकर, सावनेर ----- | २३३ |
| ५८ | डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचा भटक्या विमुक्त जमाती विषयक दृष्टीकोण - - प्रा.राजेश लोखंडे, कोरेगाव, जि.सातारा ----- | २३७ |
| ५९ | डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार - प्रा.कैलास रोडगे, कर्जत, जि.अहमदनगर --- | २४३ |
| ६० | भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार - प्रा.रूपाली डिकोंडा, माढा, सोलापूर | २४६ |



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची धर्मविषयक भूमिका

प्रा. डॉ. डी. पी. खराडे

इतिहास विभाग प्रमुख, बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, जि.सांगली

मो. नं. ९९२१२९७७८०

प्रस्तावना :

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे नाव केवळ भारतीयांच्या दृष्टीचेच नव्हे तर संपूर्ण जगाच्या दृष्टीकोणातून महत्त्वाचे नाव आहे. डॉ.आंबेडकर म्हणजे उपेक्षित आणि शोषित राहिलेल्या दलित समाजाला सन्मानाने आणि संविधानात्मक पध्दतीने इतर भारतीयांच्या बरोबरीने आणणारा थोर समाजशास्त्रज्ञ, हिंदू धर्मातील सर्व अनिष्ट रूढी परंपरेचा धिक्कार करून भारतीय समाजाला आधुनिक बनवणारा भारतीय राज्यघटनेचा शिल्पकार अशा कितीतरी पदव्यांनी बाबासाहेब भारताला आणि जगाला ज्ञात आहेत. डॉ.आंबेडकरांनी आधुनिक भारतावर केलेले जे प्रचंड उपकार आहेत. त्याचा विचार केला तर बुद्धानंतरचा मानवता धर्म समजलेला महामानव हाच असे म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही. डॉ.आंबेडकरांचे बालपण ज्या वातावरणात गेले त्या वातावरणात बाबासाहेबांचा लहान वयापासूनच धर्म म्हणजे काय? धर्माची मानवी जीवनात भूमिका काय? धर्माची माणसाला कशासाठी गरज असते. धर्म हे मानवाच्या शोषणाचे आणि पिळवणुकीचे साधन कसे काय होऊ शकते? धर्म आणि नैतिकता यांचा संबंध काय? हे सर्व प्रश्न अत्यंत समंजस असलेल्या बाबासाहेबांना लहानपणीच सतावू लागले. घरातील वातावरण अत्यंत धार्मिक असले तरी आणि त्यांचे वडील रोज भजन किर्तन आणि धार्मिक, अध्यात्मिक व दार्शनिक चर्चा आणि वाचनात व्यस्त असले तरी भक्ती चळवळी विशेषतः मुक्तीच्या संकल्पने बाबासाहेब लहानपणापासूनच प्रभावित झाले होते. आपला धर्म चुकीच्या गोष्टींसाठी माणसाकडून माणसावर अन्याय करवितो ही गोष्टच बाबासाहेबांच्या बालमनाने नाकारली. बाल वयापासूनच चातुर्वर्ण्य व्यवस्थेचा अत्यंतिक तिटकारा बाबासाहेबांच्या मनात निर्माण झाला. बालवयातच दापोली परिसरातील धार्मिक वाद-विवाद बाबासाहेबांच्या मनात हिंदू धर्माबद्दल साशंकता निर्माण करून गेले. पुढे सातारा येथे आंबेडकरांच्या वडीलांनी नाथ पंथ सोडून कबीर पंथाची दीक्षा घेतली.^१ हे असे का होते किंवा का करावे लागते यामुळे बाबासाहेब बेचैन झाले.

बाबासाहेबांनी लहान वयापासूनच अस्पृश्यतेचे प्रचंड

चटके सहन केले होते. हिंदूना कुत्रा, मांजर, गाय या पाळीव जनावरांचा स्पर्श जर विटाळ वाटत नाही तर अस्पृश्यांचा स्पर्श का विटाळ वाटतो? स्पृश्य हिंदू मुंग्याना देखील साखर अर्पण करतो. मात्र अस्पृश्यांची सावली देखील वावरू शकतात मात्र अस्पृश्यांना तेथे प्रवेश नसतो. असे का? एवढेच नव्हे तर अस्पृश्यांच्या मूलांना शाळेत प्रवेश नाही. देवळात प्रवेश नाही.^३ ढवळून निघाले आणि बालवयातच त्यांनी प्रतिज्ञा केली. मी अस्पृश्यांना चातुर्वर्ण्य व्यवस्था नाकारून स्पृश्यांच्या बरोबरीने स्थान प्राप्त करून देईन.

डॉ.आंबेडकरांनी विद्यार्थी दशेपासूनच हिंदू धर्मातील या प्रचंड विषमतेवर आधारलेल्या समाज व्यवस्थेचा धर्म व्यवस्थेचा धिक्कार करायला सुरुवात केली. आंबेडकरांच्या सातारा मुक्कामी आंबेडकरांच्या वैचारिक जडणघडणीला सुरुवात झाली. बाबासाहेबांच्या मातोश्रीचे झालेले निधन आणि वडीलांनी केलेला पुनर्विवाह याचाही मोठा आघात बाबासाहेबांच्या बालमनावर झाला. बालवयातच अस्पृश्यतेच्या मिळणाऱ्या वागणुकीबद्दलच्या अनेक नोंदी बाबासाहेबांनी मनात करून ठेवल्या त्यातीलच एक प्रसंगच म्हणजे आई सोबत बाबासाहेब बाजारात कपडे घ्यायला गेले. दुकानदाराने आईच्या पुढे लांबूनच कापड टाकले.^५ ही गोष्ट बाबासाहेबांना अस्पृश्यतेची जाणीव देऊन गेली. पुढे अनेक वेळेला बाबासाहेब असे अपघात्मक प्रसंगाना तोंड द्यावे लागले. बाबासाहेबांनी जरी हे चटके सहन केले तरी त्यांनी अनेक वर्षे हिंदू धर्मातील सुधारणांचा अव्याहत पाठलाग केलेला दिसतो. बाबासाहेबांनी घेतलेली प्रारंभिक भूमिका धर्मविरोधी नव्हती. हिंदू धर्म मार्तंडाकडून बाबासाहेबांना अपेक्षित प्रतिसाद कधीच मिळाला नाही. म्हणून डॉ.बाबासाहेबांची मी हिंदू म्हणून जन्माने असलो तरी हिंदू म्हणून मरणार नाही ही प्रतिज्ञा केली.

बाबासाहेबांनी लहान वयापासूनच सर्व वाईट अनुभव फक्त मनात नोंद केले असे नाही तर त्या प्रत्येक अनुभवाला कोणताही आणि कसलाही धार्मिक आधार नाही हे ही बाबासाहेबांनी शोधून काढले. बाबासाहेबांनी या ही संदर्भात अनेक वेळेला हिंदू मार्तंडाशी विचार विनिमय करायला



प्रयत्न केला मात्र हिंदू धर्म मार्तंडानी एका अस्पृश्य विद्यार्थ्यांशी काय बोलायचे म्हणून त्याची बोळवण केली. शाळातील अनेक शिक्षकां पैकी एक शिक्षक त्यांना म्हणत अरे तु महार तुला शिकून काय करायचे आहे? तू आपला शाळा सोडून जा! तेजस्वी बाबासाहेबांनी उत्तर दिले, “महाराज, तुम्ही आपलं काम करा कसं, नस्ती उठाटेव करायला तुम्हाला सांगितले कुणी?”^५ या उत्तराने इतरही शिक्षकांना योग्य ते उत्तर मिळाले. शाळेत पेंडसे ब्राह्मण शिक्षक बाबासाहेबांवर मनस्वी प्रेम करत असत. पुढे माध्यमिक शाळेत डॉ. आंबेडकर नावाचे ब्राह्मण शिक्षक बाबासाहेबांवर प्रचंड प्रेम करित. याच आंबेडकर गुरूजींनी भिमरावाचे आडनाव आंबावडेकर हे ठीक नाही म्हणून त्याने आंबेडकर हे सुटसुटीत नाव लावावे असे गुरूजींनी सुचविले.^६ आणि त्यानंतरचा आंबेडकर या नावाचा इतिहास आपल्या समोर आहेच. या गुरूजींचे आणि आंबेडकरांचे प्रेम पुढे आयुष्यभर टिकले. बाबासाहेब गोलमेज परिषदेला दलितताचे प्रतिनिधी म्हणून जायला निघाले. तेव्हा या गुरूजींनी बाबासाहेबांना शुभेच्छा दर्शक आणि अभिनंदन पत्र पाठविले होते. हे पत्र एक आमोल ठेवा म्हणून बाबासाहेबांनी ठेवले होते. कदाचित काही सवर्ण शिक्षकांकडून मिळालेल्या या प्रेमळ वागणुकीमुळेच आंबेडकरांच्या मनात पार कटुता सवर्णांबद्दल राहिली नाही असे वाटते.

इ.स. १९०७ साली बाबासाहेब मॅट्रिकची परीक्षा उत्तीर्ण झाले. अस्पृश्य समाजातील मॅट्रिक पास होणारे हे पहिलेच विद्यार्थी ठरले. पुढे बाबासाहेबांनी महाविद्यालयातील शिक्षण १९१२ मध्ये पूर्ण करून बी.ए. ची पदवी मिळविली.^७ पदवीधर झालेल्या बाबासाहेबांना वडिलांच्या इच्छेविरुद्ध बडोदे सरकारच्या मृत्युमुळे ही नोकरी त्यांना सोडावी लागली मात्र बडोदा संस्थाने त्यांनी शिष्यवृत्ती देऊन अमेरिकेत पुढील अभ्यासाला पाठवले.^८ त्यावेळी बडोदे संस्था तशी बाबासाहेबांनी पुढील दहा वर्षे नोकरी करण्याचा करार शिष्यवृत्तीच्या बदल्यात केला. १९१३ मध्ये बाबासाहेब न्यूयॉर्कला पोहोचले. पाश्चात्य खुल्या वातावरणाचा, तेथील समानतेचा, विद्याभ्यासाचा महत्त्वाचा मोठा पगडा बाबासाहेबांच्या मनावर निर्माण झाला. अमेरिकेतील या वास्तव्यात बाबासाहेब या मताला येऊन पोहोचले की आपल्या अस्पृश्य समाजातील प्रत्येक कार्यकर्त्यांने शिक्षण प्रसारासाठी झटले पाहिजे. शेक्सपिअरच्या नाटकातील एका वाक्याने बाबासाहेबांना झपाटून टाकले. ते वाक्य म्हणजे, प्रत्येक माणसाच्या आयुष्यात जेव्हा संधीची लाट येते.

तेव्हा त्या संधीचा योग्य प्रकारे उपयोग त्याने केला तर या मनुष्यास वैभव प्राप्त होते.^९ अस्पृश्य समाजातील प्रत्येकांनी शिक्षणाची संधी घ्यावी, त्याचा आपल्या बांधवांमध्ये प्रसार आणि प्रचार करावा. आपल्या मुलींच्याही शिक्षणाचा अधिक विचार, प्रसार-प्रचार करावा असे प्रतिपादन बाबासाहेबांनी अमेरिकेतून केलेल्या पत्रव्यवहारातून केली.

बाबासाहेबांनी या कालावधीतच खुल्या वातावरणाशी भारतीय वातावरण आणि भारतीय धर्मसंकल्पना पडताळून पाहिल्या. परदेशातील माणसांमाणसामधील समानता, प्रत्यक्ष जीवनात धर्मकारण व राजकारण यांच्यामध्ये झालेली फारकत बाबासाहेबांनी अनुभवली होती. परदेशात बाबासाहेब एक कष्टाळू आणि अभ्यास विद्वान होते. तेच बाबासाहेब भारतात आल्यावर मात्र केवळ अस्पृश्यच होते.^{१०} बाबासाहेबांना हा फरक वेदनादायी तर ठरलाच ठरला. तसेच बडोदा आणि मुंबईत झालेली कटु अनुभव पाहता बाबासाहेब या मताला पोहोचले. जो पर्यंत हिंदू धर्मातील जाती व्यवस्था नष्ट होत नाही तो पर्यंत या समाजाची प्रगती होणे शक्य नाही.^{११} अर्थातच या सर्व कटु अनुभवा नंतर ही आंबेडकरांची विद्या अभ्यासाची आणि धर्म सुधारणांची भूक वाढतच होती. १९१८ च्या अस्पृश्यता विवरण परिषदेत डॉ. आंबेडकरांनी भूमिका योग्य आहे आणि अस्पृश्यता निवारण झालेच पाहिजे या गोष्टीला परिषदेतच लोकमान्य टिळकांनी आणि बाबासाहेब खापर्डे यांनी मान्यता दिली. स्वतः बाबासाहेबांनी मात्र या परिषदेत भाग घेतला नव्हता. कारण बाबासाहेब स्वतः अस्पृश्य उध्दारासाठी सर्वांनी चालविलेल्या चळवळी विषयी उदासीन आणि साशंक होते.^{१२} बाबासाहेब परदेशात असताना सुद्धा त्यांचे लक्ष भारतीय अस्पृश्यांच्या विकासाकडेच होते. भारतात परत आल्यानंतर बाबासाहेबांनी अस्पृश्यांना हक्क मिळवून देण्यासाठी आक्रमक भूमिका स्विकारून, बाबासाहेबांनी धार्मिक सुधारणा आणि अस्पृश्यांचे शिक्षण यावर भर दिला. महाडच्या चवदार तळ्यावरून झालेल्या सर्व गोष्टी पाहिल्यानंतर बाबासाहेबांनी असे ठरविले. की अस्पृश्यांना स्पृश्याच्या बरोबरची हक्क मिळवून देण्यासाठी संघर्षच करावा लागणार. महाड नगरपालिकेने अनेक चांगल्या गोष्टी एकत्रित करून काही चांगल्या गोष्टी ठरावात आणल्या मात्र चवदार तळे अस्पृश्यांना खुले करण्याबाबत मात्र एकमत होत नव्हते. बाबासाहेब म्हणतात चवदार तळ्यातील पाणी पशुपक्षी, गोहत्या करणारे मुसलमान आणि ख्रिश्चन या सर्वांना खुले आहे मात्र अस्पृश्यांना नाही.^{१३} बाबासाहेबांनी तमाम हिंदूंचा विरोध



पत्करून चवदार तळ्यातील एक ओंजळभर पाणी प्राशन करून ते तळे दि. २० मार्च १९२७ रोजी अस्पृश्यासाठी खुले केले.

बाबासाहेबांची ही कृती तमाम हिंदूना अस्पृश्य विरोधी करणारी ठरली. मात्र बाबासाहेबांनी यातील एकाही गोष्टीला न जुमानता पुढे जाऊन नाशिकच्या काळाराम मंदिराची सहज प्रवेश उपलब्धी अस्पृश्यना करून दिली या काळात संपूर्ण महाराष्ट्रात आंबेडकरी विचारावर मंथन होऊ लागले. आणि दुसऱ्या बाजूने आंबेडकरी विचारांच्या बाजूनी देखील विचार मंथन सुरू झाले. बहिष्कृत भारतातून बाबासाहेब म्हणतात. जो पर्यंत आम्ही आपणास हिंदू म्हणवित आहोत आणि तुम्ही आम्हास हिंदू समजत आहात, तो पर्यंत देवळात जाऊन देवदर्शन घेणे हा आमचा हक्क आहे. आम्हाला जे समाज हक्क हवेत ते आम्ही हिंदू समाजात राहूनच मिळविणार, न मिळाल्यास हिंदुत्वावर पाणी सोडण्याची वेळ आली तरी ते सोडून आम्ही आमचे अधिकार मिळवणारच^{१४} बाबासाहेबांच्या मनात या प्रसंगापासूनच हिंदू धर्म सोडण्याचे विचार येवू लागले होते. असे असले तरी पुढची २५ वर्षे हिंदू धर्म सुधारणांसाठी घालविलेली दिसतात. या २५ वर्षात बाबासाहेब बौद्ध धर्माकडे आकर्षक झालेले दिसतात. या दरम्यान बाबासाहेबांनी इस्लामचा स्वीकार करावा. शीख धर्माचा स्वीकार करावा. यासाठी शेकडो धर्मगुरूंनी प्रयत्न केलेला दिसतो. १९९६ च्या पुणे येथील महाराष्ट्र अस्पृश्य युवक परिषदेत बाबासाहेबांचे बौद्ध धर्मांतर घोषणेच्या पाठिंब्याची शेकडो भाषणे झाली. या परिषदेतील बाबासाहेबांचे भाषण झाले ते म्हणाले मुसलमान झाल्यावर सर्वच नबाब होत नाही, शीख झाल्यावर सरदार होत नाहीत आणि ख्रिश्चन झाल्यावर पोप होत नाहीत. दुसऱ्या धर्मीयांनी किती ही आमिषे दाखविली. तरीही मी समतावादी धर्मच स्विकारेन. आपला निर्णय ठाम आहे. आपण बौद्ध धम्मच स्वीकारणार आहोत.^{१५} अर्थात या परिषदेनंतर देखील अनेक वर्षांनी बाबासाहेबांनी बौद्ध धम्म

स्वीकारला. दि. १४ ऑक्टोबर १९५६ या विजयादशमी दिवशी बाबासाहेबांनी दिक्षा घेतली आणि त्यानंतर त्यांच्या लाखो अनुयायांनी बौद्ध धर्म स्वीकारला. बाबासाहेबांची ही भूमिका विचारात घेता, आज २०२२ मध्ये ही असे म्हणावे लागते की ज्या हिंदू धर्मात बाबासाहेबांना अपमानास्पद वागणूक दिली तो हिंदू धर्म जरी बाबासाहेबांनी त्यातला तरी या मातीतीलच बौद्ध धर्म स्विकारून भारतीय राष्ट्र एक राहण्याची हमीच या रूपाने बाबासाहेबांनी दिली असे म्हटल्यास वावगे ठरू नये.

संदर्भ :

- १) गायकवाड किशोर, घटनेचे शिल्पकार बाबासाहेब आंबेडकर, महाराष्ट्र चरित्र, ग्रंथमाला, गंधर्व व वेद प्रकाशन, पुणे प्रथम आवृत्ती, २०१०, पृ. १०३.
- २) गायकवाड किशोर, उपरोक्त पृ. ९८
- ३) कीर धनंजय, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, सहावी आवृत्ती, १९८९, पृ. ३, ४.
- ४) गायकवाड किशोर, उपरोक्त, पृ. १८.
- ५) खैरमोडे चांगदेव भगवानराव, डॉ. भीमराव रावजी आंबेडकर, खंड २, तृतीय आवृत्ती, सुगावा, पुणे, २००३, पृ. ५२.
- ६) कीर धनंजय, उपरोक्त, पृ. २०.
- ७) खैरमोडे, उपरोक्त, पृ. ५८.
- ८) गायकवाड किशोर, उपरोक्त, पृ. १०३.
- ९) कीर धनंजय, उपरोक्त, पृ. ३, ए. ३३.
- १०) गायकवाड किशोर, उपरोक्त, पृ. ३३
- ११) कीर धनंजय, उपरोक्त पृ. १४२
- १२) गायकवाड किशोर, उपरोक्त पृ. ६१.
- १३) कीर धनंजय, उपरोक्त, पृ. ७५.
- १४) किता पृ. ८२.
- १५) गायकवाड किशोर, पृ. १०४.



21-22

(SJIF) Impact Factor-8.575
ISSUE No- (CCCXVIII) 348

ISSN-2278-9308

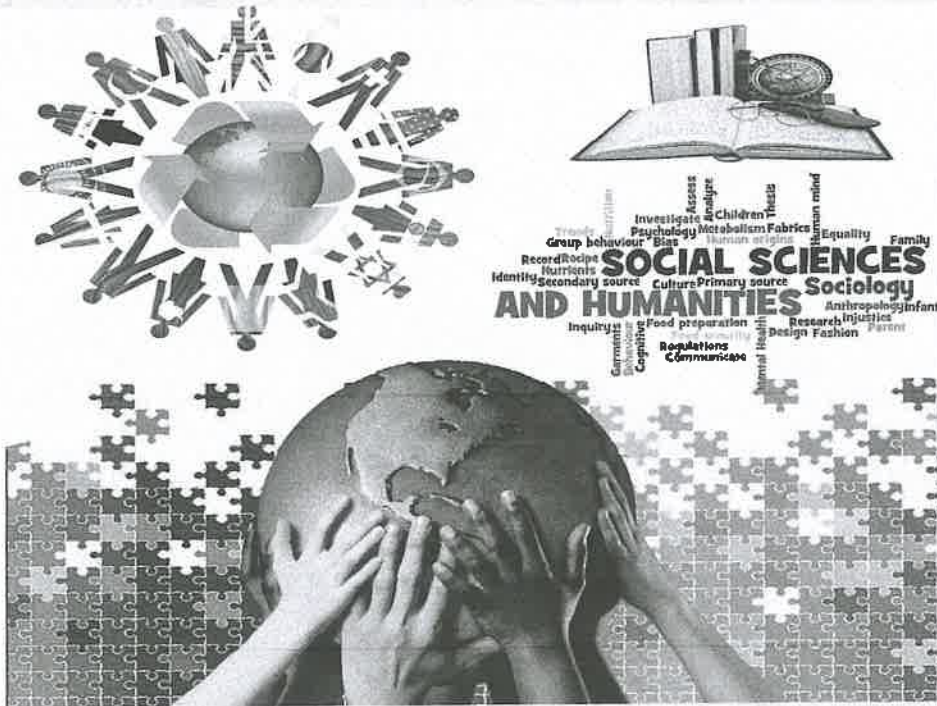
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

'Role of Social Sciences in Contemporary Society'



Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

Prof. Sujata Awati
Editor

The New Miraj Education Society's
Kanya Mahavidyalaya, Miraj

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

May -2022

ISSUE No- (CCCXLIX) 348 -B

**Sciences, Social Sciences, Commerce,
Education, Language & Law**

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Prof. Sujata Awati

Editor

The New Miraj Education Society's

Kanya Mahavidyalaya, Miraj

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

**INDEX**

| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|-----|---|---|----------|
| 1 | स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्रियांचे योगदान | लेफ्ट. डॉ. अर्चना टाक | 1 |
| 2 | स्वातंत्र्याची ७५ वर्षे | सहा. प्रा. अस्मिता संजय कोडग | 4 |
| 3 | 'हॅन्डबॉल खेळाडूंच्या वेग या घटकावर टायर प्रशिक्षणाचा होणारा परिणाम: एक अभ्यास' | प्रा. बाबासाहेब म्हाळू सरगर ,डॉ. सुनिल दत्तात्रय चव्हाण | 7 |
| 4 | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राष्ट्रीय सुरक्षेबाबतचे विचार | प्रा. बाबासाहेब शात्रू पाटील | 12 |
| 5 | प्रसूतीपूर्व आणि प्रसूतीनंतरच्या तंदुरुस्तीसाठी विशेष परिस्थितींमध्ये व्यायामाचे नियम आणि व्यायामाची पद्धत. | डॉ.भारत राजाराम चालसे | 14 |
| 6 | आदिवासींचे सण व उत्सव | भोई रविंद्र रतिलाल | 19 |
| 7 | सामाजिक समस्या, लिंगभाव आणि समाज | प्रा. बिजली श्रीपाल दडपे | 22 |
| 8 | राजर्षि शाहूंची कोल्हापूर संस्थानातील कामगार विषयक भूमिका | प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे | 25 |
| 9 | लिंग,लिंगभाव आणि हिंसाचार | दिपाली शंकर वाघमारे | 29 |
| 10 | छत्रपती शाहू महाराज यांचा सामाजिक न्यायाचा विचार | डॉ. अण्णासाहेब हरदारे | 33 |
| 11 | समकालीन समाज आणि संत साहित्यातील सामाजिक विज्ञान | डॉ. चंदशेखर आत्माराम भगत | 36 |
| 12 | शाहू महाराजांचे महिला सक्षमीकरणातील योगदान | डॉ. गौतम नामदेव ढाले | 40 |
| 13 | सामाजिक चळवळींचा चिकित्सक अभ्यास | प्रा. डॉ. गंगाधर बालू चव्हाण | 44 |
| 14 | शिक्षण व शारीरिक शिक्षणाची कोरोना काळातील भूमिका | डॉ.महादेव सुखदेव सुर्यवंशी | 47 |
| 15 | कोविड-१९ चा भारतीय उद्योगांवरील परिणाम | डॉ.तेजस्विनी बी. मुडेकर | 51 |
| 16 | महिलांच्या सर्वांगीण विकासात क्रीडा व शारीरिक शिक्षणाची भूमिका :एक अभ्यास | डॉ. प्रिया प्रकाश टेळे | 55 |
| 17 | गुणग्राहक राजा छत्रपती शाहू महाराज | डॉ रामदास वैद्य | 60 |
| 18 | जातीयव्यवस्था व अस्पृश्यता - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर | डॉ. सुरेवाड संजय गंगाराम | 63 |



| | | |
|----|--|-----|
| 19 | फलटण तालुक्यातील शेतीच्या विकासामध्ये कृषी सहकारी सोसायट्यांचे योगदान (सन १९४८-२०००) प्रा.डॉ. संतोष तुकाराम कदम | 66 |
| 20 | महाराष्ट्रातील सामाजिक हिंसाचार: एक ऐतिहासिक दृष्टीक्षेप डॉ. शुभांगी सदाशिव माने , प्रा.दिग्विजय दत्तात्रय कुंभार | 69 |
| 21 | छत्रपती शाहू महाराज : सामाजिक विचार व कार्य डॉ.वसंत निवृत्ती बंडे | 75 |
| 22 | जलसिंचनाचा सांगली जिल्ह्यातील पीक प्रारूपावर झालेला परिणामाचा एक चिकित्सक अभ्यास डॉ. विनायक तुकाराम पवार | 77 |
| 23 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराजांचे सामाजिक योगदान प्रा.डॉ. बिजयसिंग भाबरदोडे | 81 |
| 24 | महिलांच्या सामाजिक समस्या प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर सोनवणे | 85 |
| 25 | शाहू महाराज यांचे आरक्षण धोरण डॉ.लखन दादासो भोगम | 89 |
| 26 | महिला अत्याचार : कारणे आणि उपाय प्रा.डॉ.प्रवीण भोसले | 92 |
| 27 | लिंगभाव,दारिद्र्य,दिव्यांगत्व, आक्रमकता, हिंसा आणि मानसिक आरोग्याबाबतच्या समस्या एकनाथ गंगाराम गायकवाड | 97 |
| 28 | भारतामधील सहकार चळवळीच्या समस्या प्रा.डॉ. गव्हाळे बी.व्ही | 100 |
| 29 | राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज : विचार आणि सामाजिक योगदान सहा . प्राध्या. गोपाल यशवंत कबनुरकर | 107 |
| 30 | महिलांच्या विकासामध्ये शारीरिक शिक्षणाचे महत्त्व प्रा. ज्योती तानाजी गावडे | 112 |
| 31 | राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक धोरण प्रा किशोर लक्ष्मण साळवे | 115 |
| 32 | भारताचे परराष्ट्र धोरण निर्णायक वळणावर प्रा.एम.एम.सूर्यवंशी | 118 |
| 33 | भारतातील शाश्वत विकास आणि कृषी क्षेत्र कु.माधुरी परशराम देशमुख , डॉ. शिवशंकर सीताराम लेकुरवाळे | 122 |
| 34 | डॉ. वानलेस व राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज स्नेह प्रा.डॉ.मंजिरी कुलकर्णी | 126 |
| 35 | डॉ.वसंतदादा पाटील यांची महाराष्ट्र सहकारी चळवळ व ग्रामीण विकासातील भूमिका: कु. निकिता बसर्गे | 129 |
| 36 | राजर्षी शाहू महाराज आणि जातीभेद निवारण सहा.प्रा. पांडुरंग भिवाजी गोरे | 134 |
| 37 | शेती आणि शाश्वत विकास सौ.प्राची पंकज नादिकर | 136 |
| 38 | सकारात्मक मानसिकतेसाठी खेळ प्रशांत बिभीषण पाटील | 140 |
| 39 | छत्रपती शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उद्धाराचे कार्य प्रा. आप्पासाहेब नामदेव केंगार | 143 |
| 40 | तैत्तिरीय उपनिषदातील सामाजिक आचाराची तत्वे प्रा रचना सौरभ शहा | 148 |



राजर्षि शाहूंची कोल्हापूर संस्थानातील कामगार विषयक भूमिका

प्रा. डॉ. दत्तात्रय पांडुरंग खराडे

इतिहास विभाग प्रमुख बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, मो. नं. 9921297780

Email :- dattatrayakharade@gmail.com

प्रस्तावना -

कोल्हापूर हे जसे कलापूर म्हणून प्रसिद्ध आहे तसेच ते उद्योगपुर म्हणूनही प्रसिद्ध आहे. मराठी माणूस, स्थानिक माणूस उद्योग व्यवसायात दिसत नाही असे आपण म्हणतो. पण कोल्हापूर बद्दल मात्र असे म्हणता येणार नाही. येथील उद्योजक मराठी भाषिक आहेत. उद्योगातच नव्हे तर व्यापारातही ते मोठ्या संख्येने दिसतात. विशेष म्हणजे कोल्हापूर येथील मंडळीची एक विशिष्ट यंत्र परंपरा आहे. तिचा वारसा एका पिढीकडून दुस-या पिढीकडे आला आहे. तंत्रज्ञानाची, यंत्रकुशल माणसांची यंत्रांशी झटापट करून त्यात सुधारणा किंवा नवे करणा-या माणसांची कोल्हापूरला एक परंपरा आहे.

कोल्हापूरच्या औद्योगिक विकासात राजर्षि छत्रपती शाहू महाराजांचा सिंहाचा वाटा आहे. राजर्षि शाहू महाराजांनी जात-पात न पाहता कर्तबगार, हुशार माणसांना उत्तेजन दिले. राजर्षि छत्रपती शाहू महाराजांनी आर्थिक विकासातील औद्योगिकीकरणे महत्त्व ओळखले होते. त्यामुळे त्यांनी त्यावेळच्या काळाप्रमाणे लघुउद्योगांना, सरकारी क्षेत्रातील उद्योगांना आर्थिक सहाय्य देवून चालना दिली. 1920 साली राजर्षि शाहूंनी सार्वजनिक क्षेत्रातील उद्योगांचा शुभारंभ केला. राजर्षि शाहूंच्या शेती विकासातील नवनव्या योजनांचा शुभारंभ केला. राजर्षि शाहूंच्या शेती विकासातील नवनव्या योजनांचा तर महाराष्ट्रातच नव्हे, महाराष्ट्राबाहेर आजही पुरस्कार केला जात आहे. थोडक्यात म्हणजे राजर्षि शाहू महाराजांची ही परंपरा टिकविण्याचे आणि त्यामध्ये प्रगती करण्याचे काम शासनाने, जनतेने केले म्हणून कोल्हापूर जिल्ह्यात औद्योगिकीकरण मोठ्या प्रमाणावर झाले आहे. आणि या औद्योगिकीकरणतून बहुसंख्येने कामगार वर्ग निर्माण झाला आहे. अशा राजर्षि शाहू महाराजांच्या कारकिर्दीतील कोल्हापूर संस्थानातील कामगार विषयक भूमिकेचा आढावा या शोध निबंधात घेण्यात आला आहे.

राजर्षि शाहूंच्या कारकिर्दीत ब्रिटीशांचे भारतावर राज्य होते. त्याकाळात ब्रिटिश सरकारचे कामगार विकासा संदर्भातील धोरण अत्यंत प्रतिकूल स्वरूपाचे होते. राजर्षिंच्या संपूर्ण कारकिर्दीत ब्रिटीशांचे भारतावर राज्य होते. त्या काळात ब्रिटिश सरकारचे कामगार विकासासंदर्भातील धोरण अत्यंत प्रतिकूल स्वरूपाचे होते. किंबहुना कामगार विकासाकडे ब्रिटिशांनी पूर्णतः दुर्लक्ष केले होते असे म्हटले तरी चालेल. भारतातील कामगारांचा फक्त आपल्या फायद्यासाठी वापर करून घेणे, कामगारांना विशेष सोयी सुविधा न पुरविणे, कामगार संघटना निर्माण होऊ न देणे, कामगार चळवळी दडपून टाकणे असा प्रकारचे विविध मार्ग अवलंबून ब्रिटिशांनी भारतीय कामगारांना मागासलेले ठेवले होते. कोणत्याही मार्गाने भारतीय कामगारांचे जास्तीत जास्त शोषण करणे हा प्रमुख उद्देश ब्रिटिशांचा तर होताच, परंतु भारतीय कामगारांचे भारतीय भांडवलदार देखील मोठ्या प्रमाणात शोषण करत होते. यावरून त्या काळात कामगारांचे ब्रिटिश व भारतीय भांडवलदार या दोहोंकडून दुहेरी शोषण होत होते ही गोष्ट लक्षात येते. या काळात मुंबईमध्ये कापड गिरणी कामगारांची कामाचे तास कमी करण्यासंदर्भात, वेतन वाढीसंदर्भात संप करण्यास सुरुवात केली होती. परंतु ब्रिटिश सरकार व मालक वर्ग काही ठराविक लोकांना हाताशी धरून हे संप मोडून काढत होते. त्या काळात फारसे कामगार कायदे अस्तित्वात नव्हते आणि अशा वातावरणात राजर्षींनी कामगार चळवळीस प्रारंभ केला होता.

ब्रिटिशांचा वाढता अत्याचार व कामगारांच्या मागण्यांकडे मालक वर्गाचे दुर्लक्ष या धर्तीवर 27 ऑक्टोबर, 1905 रोजी बंगालमध्ये गव्हर्नमेंट प्रेस अँड बंग सेक्रेटरीएट प्रेस मधील टंकलेखकांनी (Compositers) एकत्रित येवून बाबू चारूचंद्र मित्रल यांच्या अध्यक्षतेखाली कामगार युनियनची (Trade Union) स्थापना केली.¹ पुढे 4 डिसेंबर 1917 रोजी अहमदाबाद येथील मिल्स कामगारांनी एकत्रित येवून आपल्या मागण्या मान्य करून घेण्यासाठी श्रीमती अनुसयाबेन या मिल एजंटच्या मुलीच्या अध्यक्षतेखाली कामगार युनियनची स्थापना केली.² अशा प्रकारे भारतातील विविध भागांमध्ये कामगार एकत्रित येण्यास नुकतीच कोठे सुरुवात झाली होती.

अशा वातावरणात 10 नोव्हेंबर, 1918 रोजी मुंबई (परळ) येथे मागासलेल्या लोकांची व कामगारांची जाहीर सभा आयोजित करण्यात आली होती व या सभेचे अध्यक्षस्थान राजर्षिंना देण्यात आले होते. सदर सभेस 10



हजार कामगार व इतर लोक उपस्थित होते. या सभेत भाषण करत असताना राजर्षी म्हणाले होते "मी कोल्हापूरच्या राज्य पदावर असतानाही शिपाई, शेतकरी किंवा मजूर म्हणवून घेण्यात मला अभिमान वाटतो.... माझ्या हाडामाशी शिपाईगिरी, शेतकरी यांचे रक्त खेळत आहे."³ राजर्षींच्या या विधानातून राजर्षींचे कामगार, शेतकरी यांच्याशी किती जवळीकतेचे नाते होते हे स्पष्ट होते. कामगार चळवळीसंदर्भातील राजर्षींचा विचार फक्त संस्थानापुरता मर्यादित नव्हता तर त्याची व्याप्ती संपूर्ण देशभर होती. राजर्षी युरोप दौरा करून आले होते. तेथील मालक-मजूर संबंध त्यांनी स्वतः पाहिले होते. तेथील कामगारांच्या स्थितीची जाणीव त्यांना होती. या सर्व अनुभवांच्या आधारावर राजर्षी कामगारांना उद्देशून म्हणाले, पाश्चात्य देशात भांडवलवाले व मजूर असे दोन वर्ग आहेत. तिकडेही भांडवलदार लोकांची मजूरदार लोकांवर बेसुमार सत्ता चाले पण त्या मजूरदार लोकांनी आपले संबंध बनविले आहेत. पुढे राजर्षी म्हणतात, इंग्लंडात मजूरदारांनी आपल्या उन्नतीकरीता आपले संघ स्थापन करून स्वावलंबनाचे मार्ग स्वीकारले. त्याप्रमाणे आपण आपले सुव्यवस्थितपणे संघ तयार केले पाहिजेत. आपल्या मुलाबाळास शिक्षण देवून व आपले आरोग्य वाढविण्याचे प्रयत्न करून आपली उन्नती आपणच करून घेतली पाहिजे. दुसरा आपल्याकरीता काही करेल अशी अपेक्षा करणे केंव्हाही कमीपणाचे आहे ही गोष्ट अहर्निश लक्षात ठेवा.⁴

राजर्षी शाहूंच्या वरील विधानावरून 1918 साली देशात नवीन 7 कामगार संघटना स्थापन झाल्या. यामधील 4 मद्रासमध्ये, 2 मुंबईमध्ये तर 1 कलकत्ता मध्ये स्थापन झाली.⁵ याचा अर्थ असा होतो की, मुंबईत 1918 मध्ये ज्या दोन संघटना स्थापन झाल्या होत्या त्यापैकी एक राजर्षींच्या प्रेरणेतून निर्माण झाली होती. राजर्षींनी संस्थानाबाहेर जसे कामगार चळवळींना प्रोत्साहन दिले तसेच संस्थानात देखील शेतकरी व मजूरांनी स्थापन केलेल्या संघांना प्रोत्साहन दिले होते. संस्थानातील शेतकरी व मजूरदार संघांच्या अध्यक्षांनी श्री. रावबहादूर डोंगरे यांना सस्थेच्या कामाकरीता मागितले होते. राजर्षींनी त्यांच्या या मागणीला परवानगी देवून संघाच्या कामानिमित्त बाहेर जावे लागल्यास आपला कामचलावू चार्ज असिस्टंटकडे देवून बाहेर जाण्यासही परवानगी दिली होती.⁶ यावरून राजर्षींची कामगार चळवळ वाढीस लागण्यासंदर्भातील भूमिका स्पष्ट होते.

राजर्षींच्या कामगार चळवळीसंदर्भातील वरील सर्व प्रयत्नांचा विचार केल्यास ब्रिटिश अधिपत्याखाली असणारा एक संस्थानिक त्या काळात भारतातील कामगारांना इंग्लंड व रशियामधील कामगार संघटनांची आणि मालकमजूर संघटनांची उदाहरणे देवून त्यांची सुप्त शक्ती जागृत करतो व संघटित होण्याचा सल्ला देतो यातच त्यांचा पुरोगामी दृष्टिकोन दिसून येतो. ज्या काळात फक्त महाराष्ट्रच नव्हे तर संपूर्ण भारतात कामगार संघटना व्यापक स्वरूपात पसरलेल्या नव्हत्या तर फक्त प्रारंभीची अवस्था होती. त्या काळात राजर्षींनी ही पावले उचलली होती. भारतात राष्ट्रीय स्तरावर सर्व भारतीय कामगारांचे प्रतिनिधित्व करणारी "ऑल इंडिया ट्रेड युनियन काँग्रेस" (A. I. T. U. C.) ची स्थापना होण्यासाठी जर 1920 सालापर्यंत वाट पहावी लागत असेल तर त्यापूर्वी हिंदुस्थानातील कामगारांना संघटित होण्याचा उपदेश करणारा हिंदुस्थानातील हा पहिलाच संस्थानिक होता असे म्हणावयास हरकत नाही आणि म्हणूनच राजर्षी भारतीय कामगार चळवळीचे आद्य जनक ठरतात. त्या काळात संस्थानात अकुशल मजूरांचे प्रमाण मोठे होते. राजर्षींना अकुशल मजूरांचे रूपांतर कुशल मजूरांमध्ये करावयाचे होते. विद्यार्थ्यांना प्रथमपासूनच तांत्रिक ज्ञान मिळवून उद्योगधंद्यांच्या वाढीसाठी आणि विकासासाठी त्यांचा ज्ञानाचा उपयोग व्हावा म्हणून संस्थानात राजर्षींनी 'जयसिंगराव घाटगे टेक्निकल इन्स्टिट्यूट' व 'राजाराम इंडस्ट्रियल स्कूल' कार्यरत ठेवली होती. या इन्स्टिट्यूटमधील विद्यार्थ्यांमध्ये उत्तरोत्तर वाढ होत गेलेली होती.

संस्थानातील शेजमजूरांना व शेतक-यांना शेतीतल सुधारित तंत्राचे व आधुनिक यंत्रे चालविण्याचे प्रशिक्षण देण्यात यावे म्हणून राजर्षींनी संस्थानात 1912 साली "द किंग एडवर्ड अग्रीकल्चरल इन्स्टिट्यूटची" स्थापना केली होती. या इन्स्टिट्यूटमध्ये खास प्रशिक्षक (Demonstrator) नेमला होता. जो संस्थानातील शेतक-यांना व शेतमजूरांना शेती प्रात्यक्षिके करून दाखवत असे. तसेच शेती प्रशिक्षण सुद्धा देत असे. संस्थानातील शिक्षकांसाठी सुद्धा राजर्षींनी प्रशिक्षण वर्ग आयोजित केले होते.⁷ पूर्वीपासून कोल्हापूर संस्थानात पंचगंगा नदीकाठची सुपीक जमीन व योग्य हवामान यामुळे उसाचे पीक मोठ्या प्रमाणात येत असे. या उसापासून गूळ तयार करण्यासाठी त्याचा घाण्यातून रस काढावा लागत असे. यातून अनेक शेतमजूरांना रोजगार उपलब्ध होत असे. कारण कोल्हापूरी गुळाला इतरत्र मोठ्या प्रमाणात मागणी होती, परंतु दुर्दैवाने उसाचे रस काढण्याचे हे घाणे असुरक्षित होते. त्यामुळे कधी कधी अपघाताने त्या घाण्यावर काम करणा-या कामगाराची बोटे त्यामध्ये सापडून त्याला कायमचे अपंगत्व येत असे. ही गोष्ट राजर्षींच्या लक्षात आली आणि अल्पावधीतच राजर्षींनी संस्थानातील कारागीर लोकांना आव्हान करणारा एक जाहिरनामा काढला. त्यानुसार "घाण्यामध्ये हात सापडणार नाही, अगर सापडलाच तर त्यास इजा होणार नाही अशा त-हेची यांत्रिक युक्ती तारीख 1 जानेवारी, 1896 च्या आत कोणी शोधून काढल्यास ज्याची युक्ती सोपी,



थोडक्या खर्चात होणारी व पसंत अशी ठरेल त्यास चांगले बक्षिस देण्यात येईल.”⁸ अशा प्रकारचे आव्हान केल्यानंतर संस्थानातील चांगल्या कारागिरांनी व तज्ञांनी विविध युक्त्यांचा वापर करून घाणे तयार केले आणि संस्थानला सादर केले.

सदर जाहीरनाम्यातून राजर्षिनी अप्रत्यक्षरित्या सुरक्षित घाणे वापरण्याची कामगारांना सक्ती केल्याचे दिसून येते. म्हणजेच संस्थानातील कामगारांना जेवढी स्वतःची काळजी वाटत नव्हती त्यापेक्षा कितीतरी अधिक प्रमाणात कामगारांची काळजी राजर्षी घेत होते याची सिद्धता पटते.

राजर्षिच्या कारकिर्दीत उच्च स्तरापासून कनिष्ठ स्तरापर्यंतची अनेक कामे लोक करीत होते. परंतु राजर्षिनी कामाच्या बाबतीत खालच्या दर्जाचे काम वरिष्ठ दर्जाचे काम असा दुजाभाव केला नाही. काम हे काम आहे. त्याला कोणताही दर्जा नसतो. त्यामुळे व्यक्तीने कोणत्याही प्रकारचे काम करताना लाज बाळगण्याचे कारण नाही असे राजर्षिचे मत होते. “एकदा राजर्षिचा एक हत्ती मेला होता. तो ओढण्यास तुरूंगाचे सर्व कैदी लागले होते. जुन्या राजवाड्यातून रविवार बुरुजापर्यंत त्याला ओढत आणले होते. त्यावेळी महाराज आपल्या रथातून येत होते. त्यांनी हे पाहिल्याबरोबर ते स्वतः रथातून उतरले व या कैद्यांबरोबर त्यांनीही कासरा धरला व मेलेला हत्ती ओढण्यास मदत केली.”⁹ जगात कोणतेही काम कमी दर्जाचे किंवा उच्च दर्जाचे नसते ही गोष्ट कामगारांना उदरनिर्वाहाचे साधन निर्माण व्हावे म्हणून आर्थिक मदत केलेली होती. राजर्षिनी तसेच एका महार समाजातील गंगाराम कांबळे नावाच्या व्यक्तीला चहाचे दुकान काढण्यास आर्थिक सहाय्य दिले होते. पुढे याच दुकानात त्याचा व्यवसाय वाढवा म्हणून राजर्षिनी त्याला सोडा वॉटरचं मशीन बसवून दिले होते. विशेष म्हणजे त्या काळात मागासलेल्या जातीतील लोकांचा स्पर्श सुधा करून घेतला जात नव्हता. तेव्हा राजर्षि स्वतः गंगाराम कांबळेच्या चहाच्या गाडीवर चहा पित असत व दुस-यांना सुद्धा प्यायला लावत असत. या कृतीतून राजर्षिनी समाजातील जातीभेद नष्ट करण्याची वृत्ती दिसून येते. त्या काळात भारतात बडोदा, म्हैसूर, ब्रावणकोर, कोचीन ही संस्थाने विकसित संस्थाने म्हणून ओळखली जात होती. परंतु “कृषी आणि औद्योगिक क्षेत्रात गरीब कारागिरांना सहाय्य करण्याची कसलीही योजना त्यावेळच्या म्हैसूर सरकारजवळ नव्हती. ब्रावणकोर, कोचीन आणि म्हैसूर संस्थानात मागासलेल्या वर्गांना निश्चितपणे फायदेशीर ठरेल अशा रोजगारासंबंधीच्या संवैधानिक धोरणाचा (कायदे करून ठरविलेल्या) संपूर्ण अभाव होता. याउलट कोल्हापूर संस्थानात अशा धोरणाचा 1902 पासूनच अंगीकार करण्यात आलेला होता.”¹⁰ राजर्षिनी दुष्काळाच्या काळात शिक्षक, दरबारी नोकर व इतर कामगारांना दुष्काळी भत्ता व दुष्काळ निवारणात्मक मदत दिलेली होती. जेणेकरून संस्थानातील कामगारांचे व लोकांचे दुष्काळामुळे हाल होवू नयेत.

अशा प्रकारे राजर्षिनी कामगारांचे होणारे अतिरिक्त शोषण थांबविण्याच्या उद्देशाने, त्यांना जास्तीत जास्त सोयी सुविधा व सहाय्य देण्याच्या उद्देशाने संस्थानातील कामगारविषयक धोरण राबविले होते. परंतु या धोरणाबरोबर संस्थानातील कामचुकार व व्यवस्थित काम न करणा-या कामगारांना राजर्षिनी दंड केला होता. तर काही ठिकाणाच्या कामगारांना कामावरून काढून टाकले होते. याचा पुरावा म्हणजे संस्थानातील कासावाडी व यवलूज येथील जनावरांच्या थट्टीतील जनावरांची जोपासना करणा-या कामगाराला वारंवार सूचना देऊन सुद्धा जनावरांची योग्य प्रकारे जोपासना न केल्याने कामावरून काढून टाकले होते. तर सुरक्षा रक्षक म्हणून काम करणारे काही कामगार रात्र पाळीला न सांगता गैरहजर राहिल्यामुळे त्या कामगारांना प्रत्येकी 1 रूपया दंड करून कामावर ठेवण्यात यावे असा आदेश राजर्षिनी दिल्याची नोंद आढळते.¹¹ यावरून राजर्षी कामाच्या शिस्तीबाबत किती चोख होते याची कल्पना येते.

निष्कर्ष -

भारतीय कामगार संघटना चळवळीच्या विकासाचे स्वातंत्र्यपूर्व काळ आणि स्वातंत्र्योत्तर काळ असे दोन टप्पे करता येतात. स्वातंत्र्यपूर्व काळात झालेला विकास अतिशय मंदगतीचा असून स्वातंत्र्योत्तर काळात मात्र कामगार संघटना चळवळीच्या विकासाची गती वाढली आहे. राजर्षि शाहूंनी जनकल्याणासाठी केलेले कार्य अब्द्वितीय आहे. राजर्षि शाहूंनी शेती, सहकार, उद्योग, व्यापार यांच्या विकासासाठी जसे जाणीवपूर्वक प्रयत्न केले. त्याप्रमाणे राजर्षि शाहूंनी आपल्या कारकिर्दीत अनेक कामगारांना व कामगार संघटनांना प्रेरणा, स्फूर्ती दिली होती. त्याच्या या कार्याचा परिणाम आजही महाराष्ट्रात मोठ्या प्रमाणात पडलेला दिसून येतो.

संदर्भ

1. हर्डिकर बी. एल. - ‘भारतातील कामगार चळवळ’, नगरी सेवा प्रबोधिनी, मुंबई, डिसेंबर 2000 पृष्ठ क्र. 43.
2. Ramanujan G. - Indian Labour Movement, Sterling Publishers Pvt. New Delhi, 1990 Page No. 9.
3. येडेकर श्याम - राजर्षि शाहू छत्रपतींची भाषणे, मंगल प्रकाशन, कोल्हापूर, 1971 पृष्ठ क्र. 26.
4. कित्ता - पृष्ठ क्र. 14, 16.



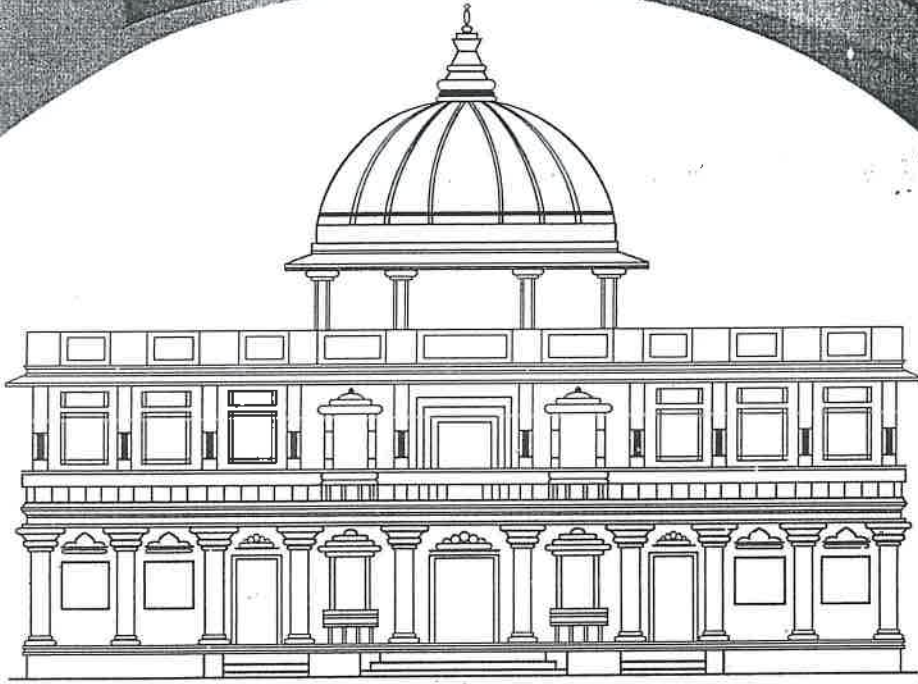
5. उपरोक्त – Rammanujan G. Page No. 10.
6. देसाई संजीव पी. – शाहू छत्रपतींचे निवडक आदेश, 1989 पृष्ठ क्र. 95.
7. पवार जे. के. - 'कामगार विश्व' राज प्रकाशन, कोल्हापूर, 1993 पृष्ठ क्र. 78, 79.
8. कित्ता – पृष्ठ क्र. 23.
9. कित्ता – पृष्ठ क्र. 256.
10. साळुंखे पी. बी. – राजर्षी शाहू गौरव ग्रंथ, महाराष्ट्र शिक्षण विभाग सचिवालय, मुंबई 1976 पृष्ठ क्र. 188.
11. धटावकर भास्कर – शाहू छत्रपतींचे निवडक आदेश, महाराष्ट्र शासन मुंबई 1988 पृष्ठ क्र. 32.

UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

21-22

● वर्ष : १० ● मार्च २०२२ ● पुरवणी विशेषांक ०५



इतिहासकार्य वि. का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे



UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

॥ संशोधक ॥

पुरवणी अंक - मार्च २०२२ (त्रैमासिक)

● शके १९४४ ● वर्ष : ९० ● पुरवणीअंक : ५

संपादक मंडळ

● प्राचार्य डॉ.सर्जेराव भामरे ● प्रा.डॉ.मृदुला वर्मा ● प्रा.श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक :

● प्रा.डॉ.पी.जी.गायकवाड ● प्रा.डॉ.गोवर्धन दिकोंडा ● प्रा.डॉ.सुरेश रामचंद्र ढेरे

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ.वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१.

दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवार सुटी)

मूल्य ₹ १००/-

वार्षिक वर्गणी ₹ ५००/-; आजीव वर्गणी ₹ ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्ट ने
'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळवणी : अनिल साठये, बावधन, पुणे २१.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.



अनुक्रमणिका

- १ महात्मा फुले यांचे शेती समस्येबाबत विचार
- डॉ.अनिल कांबळे, सोलापूर ----- ११
- २ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत 'मूकनायक' या वृत्तपत्राचे योगदान
- प्रा. आप्पासाहेब केंगार, भिलवडी, ता.पलूस, जि.सांगली ----- १५
- ३ महात्मा ज्योतिराव फुले : २१ व्या शतकात समजून घेतांना
- प्रा.अरुणा वाघोले, आळे, ता.जुन्नर, जि.पुणे ----- २०
- ४ महात्मा जोतीराव फुले यांचे शैक्षणिक विचार आणि कार्य : ऐतिहासिक अभ्यास
- डॉ.बाळासाहेब काळे, इंदापूर, जि.पुणे ----- २७
- ५ डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्यातील विचार आणि योगदान
- प्रा.शैलेश भालेराव, पाषाण, जि.पुणे----- ३१
- ६ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कामगार कल्याणविषयक योगदान
- डॉ.चंद्रकांत भारसाकळे, इस्लामपूर, जि.सांगली ----- ३६
- ७ महात्मा ज्योतिबा फुले : एक थोर समाजसुधारक
- श्री.अजित चव्हाण, बार्शी, जि.सोलापूर----- ४१
- ८ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे अनुसूचित जातींसाठी सामाजिक न्यायाचे योगदान
- प्रा.गीतांजली चव्हाण, लोणी काळभोर, ता.हवेली, जि.पुणे ----- ४६
- ९ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची भारतीय संसदीय लोकशाही विषयीचे विचार
- प्रा.दादासाहेब हाके, माढा, जि.सोलापूर ----- ४९
- १० डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे धर्मविषयक व व्यक्तीविषयक विचार - एक सामाजिक आकलन
- प्रा.दशरथ रसाळ, सोलापूर ----- ५३
- ११ महात्मा फुले -एक कृतिशील समाजसुधारक
- प्रा.बाळासाहेब देवकाते, कर्जत, जि.अहमदनगर ----- ५६
- १२ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे समाजशास्त्र व समाज कार्यातील योगदान
- डॉ.नागोराव भुरके, सोलापूर ----- ५९
- १३ महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले : लोकोत्तर पुरुष
- डॉ.अतुल कदम, भोसरे, कुर्डुवाडी, ता.माढा, जि.सोलापूर ----- ६२
- १४ सत्यशोधक समाज आणि क्रियाशील सत्यशोधक
- डॉ.गोवर्धन दिर्कोडा, माढा, जि.सोलापूर ----- ६६
- १५ आधुनिक भारताच्या विकासात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान
- प्रा.महादेव डिसले, बार्शी, जि. सोलापूर ----- ७०
- १६ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे लोकशाही समाजवाद आणि आर्थिक विषमतेबाबतचे विचार
- प्रा.महेंद्र गजधाने, पंढरपूर ----- ७५
- १७ महात्मा फुले यांच्या साहित्यातील मानवतावाद - डॉ.नामदेव शिंदे, माढा, जि.सोलापूर ----- ७७
- १८ महिलांच्या शैक्षणिक सक्षमीकरणासाठी महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे योगदान
- डॉ.पौर्णिमा चव्हाण, आष्टा, ता.वाळवा, जि.सांगली ----- ८०



डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत 'मूकनायक' या वृत्तपत्राचे योगदान

प्रा. केंगार आप्पासाहेब नामदेव

बाबासाहेब चितळे महाविद्यालय, भिलवडी, ता.पलूस, जि.सांगली ४१६३०३

Email: ankengargmail.com Ph.No.9960635877

प्रस्तावना :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे कार्य आणि कर्तृत्व आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत अतिशय महत्त्वाचे मानले जाते. भारतीय समाज जीवनात स्थित्यंतर घडवून आणण्यात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यशस्वी ठरले. महाराष्ट्रातील समाज जीवन हे धार्मिक चालीरिती रूढी, रितीरीवाज, रूढी-परंपरा यांच्या आधाराने चाललेले होते. या समाजामध्ये गतिशीलता व परिवर्तनाचा अभाव होता. समाज कोणताही नवीन बदल स्वीकारण्यास तयार नव्हता. मुळातच भारतीय समाजावर धर्माचा पगडा मोठ्या प्रमाणात होता. अशा परिस्थितीमध्ये समाजसुधारणेचा प्रामाणिक प्रयत्न करण्याचा पहिला प्रयत्न महात्मा फुले यांच्या सामाजिक, शैक्षणिक मूलगामी परिवर्तनाच्या कार्यापासून यांच्यापासून झाला. आधुनिक कालखंडामध्ये ब्रिटिशांच्या राजवटीत सर्वांना शिक्षणाचा अधिकार मिळाल्याने शिक्षणातून समाजजागृतीला खऱ्या अर्थाने चालना मिळाली. त्यातूनच पुढे समाज सुधारणा करण्याच्या उद्देशाने अनेक समाजसुधारकांनी महत्त्वपूर्ण कामगिरी बजावली. राजाराममोहन राय, नाना शंकर शेठ, महात्मा फुले, सयाजीराव गायकवाड, गोपाळकृष्ण गोखले, विठ्ठल रामजी शिंदे, शाहू महाराज, दलित समाजातील काही समाजसुधारक, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सारखे विचारवंत निर्माण झाले. या समाजसुधारकांनी सामाजिक क्रांतीचे बीज पेरले. या कालखंडामध्ये समाजामध्ये वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, अस्पृश्यता यांचा मोठा पगडा भारतीय समाज जीवनावर होता. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पूर्व कालखंडात महाराष्ट्रातील समाज जीवन हे धार्मिक चालीरिती, रितीरीवाज, परंपरा यांच्या आधारे चालत होते पुढे जनजागृती व आंदोलने अथवा चळवळी यामुळे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या दलित चळवळीचा विकास होत गेला.

बाबासाहेब आंबेडकर यांनी स्वअनुभवातून अस्पृश्यांना गुलामगिरीतून मुक्त करण्याचा मोठा प्रयत्न केला. अस्पृश्यांमध्ये वैचारिक जागृती, संघटन, शिक्षणाचा प्रसार

व प्रचार, या माध्यमातून या समाजामध्ये आत्मसन्मान व जागृती निर्माण करण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला. अस्पृश्यांना संघटित करण्यासाठी त्यांच्यामध्ये वैचारिक जागृती निर्माण करण्यासाठी सभा, संघटना, परिषदा, सत्याग्रह या माध्यमातून या वर्गाला जागृत करण्याचा प्रयत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी केला. त्यांच्या या कार्यामध्ये वृत्तपत्रांना अतिशय महत्त्वाचा दर्जा व स्थान होते. वृत्तपत्रे समाजप्रबोधनाचे प्रभावी माध्यम व साधन होते. या सर्व पार्श्वभूमीवर आधारित डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी मूकनायक, प्रबुद्ध भारत, समता, बहिष्कृत भारत वृत्तपत्रांची निर्मिती त्यांनी केली. वृत्तपत्रांचे महत्त्व लोकजागृतीचा प्रभावीपणे वापर करण्यासाठी होऊ शकते हा विचार त्यांच्या वृत्तपत्रांच्या निर्मितीमागे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी ठेवलेला होता.

प्रस्तुत शोध निबंधाच्या माध्यमातून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या पत्रकारितेत मूकनायक या वृत्तपत्राचे योगदान याचा आढावा घेतलेला आहे.

१. संशोधनाचे उद्देश :

१. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता व संदर्भ जाणून घेणे.
२. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मूकनायक, बहिष्कृत भारत, प्रबुद्ध भारत, समता, वृत्तपत्रांची माहिती जाणून घेणे.
३. मूकनायक या वृत्तपत्रामधील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी अस्पृश्य वर्गाची मांडलेली स्थिती स्पष्ट करणे.
४. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या समाज विषयक, आर्थिक, राजकीय कार्याचा 'मूकनायक' वृत्तपत्रामधून घेतलेला आढावा जाणून घेणे.
५. अस्पृश्यांच्या उन्नतीसाठी अस्पृश्यांनी चालविलेल्या वृत्तपत्रात 'मूकनायक' पत्राला विशेष स्थान होते हे स्पष्ट करणे.
६. दलितांच्या उद्वारासाठी सुरू केलेल्या चळवळीचे 'मूकनायक' हे मुखपत्र बनले होते हे स्पष्ट करणे.



अंकात त्यांनी केले. या मधून स्वराज्याचे माता पिता, प्रसिद्ध क्रिकेटपटू श्री. बाळू बाबाजी पालवणकर आणि त्यांचे बंधू यांना रोहिदास विद्यावर्धक समाजाच्या विद्यमानाने मानपत्र देण्याचा समारंभ २५ जानेवारी १९२० रोजी मुंबई येथे करीमबाही इब्राहिम कामगार समाजाच्या लायब्ररीत करण्यात आलेला आहे. याबद्दल माहिती या अंकात दिलेली आहे. या अंकाच्या शेवटी राजस्थान मधील मजूर वर्गाची सामाजिक व आर्थिक राजकीय परिस्थिती सुधारावी त्यांना प्रतिष्ठित पणाची वागणूक मिळवून हिंदुस्थानच्या राजकारणात योग्य स्थान प्राप्त व्हावे याच हेतूने देशभर मजूर संघाची स्थापना करण्यात आलेली होती. यामध्ये काँग्रेसची भूमिका कोणती होती हेही विशद केलेले आहे. दि.३ दिनांक १८ फेब्रुवारी १९२० रोजी निघालेल्या मूकनायक या अंकामध्ये त्यांनी 'हे स्वराज्य नव्हे हे तर आमच्यावर राज्य' या शीर्षकाखाली स्वराज्याचे व्यवहारिक रूपांतर कशा पद्धतीने असेल, हिंदुस्थानची सांपत्तिक स्थिती, दारिद्र्याची मूळ कारणे, ब्रिटिश राज्यकारभारातील दोषविवरण, स्वराज्यवादी विचारसरणीचा मूलभूत अर्थ, सामाजिक परिषद व तिची भूमिका, प्रत्येक नागरिकाला वैयक्तिक स्वातंत्र्य, संरक्षण, खाजगी मालमत्ता बाळगण्याचा हक्क, समता, भाषण स्वातंत्र्य व मतस्वातंत्र्य, सभा भरवण्याचा हक्क याबद्दलची चर्चा त्यांनी याच लेखामध्ये केलेली आहे. याशिवाय अस्पृश्य समाजावर होणारा आघात स्वकीय लोकांचे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जुलम पद्धतीने कशा पद्धतीने घातक आहे. याचे स्पष्टीकरण त्यांनी केले आहे. विविध विचार अंतर्गत त्यांनी यांचा ब्राह्मण वर्ग असावा खास, वैन्यांनी की नेला कैवारी, या शब्दातून मार्मिक विवेचन केलेले दिसते. या अंकाच्या शेवटी सोमवंशीय निराश्रित मित्र समाज मुंबई या संस्थेच्या माध्यमातून बहिष्कृत वर्गाच्या झालेल्या सभा व त्यांनी मांडलेले ठराव यासंदर्भात विवेचन दिलेले आहे.

दि. २७ मार्च १९२० मधील मूकनायक अंकात त्यांनी स्वराज्यातील आमचे आरोहण त्यांचे प्रमाण व त्याची पद्धती शीर्षकाखाली ब्राह्मणेतर व बहिष्कृत लोक यांची प्रत्यक्ष स्थिती त्यांनी वर्णन केलेले आहे. त्याचबरोबर जातींची संख्या व तिच्या गरजा यांचे प्रमाण लक्षात घेऊनच जातवार प्रतिनिधी नियुक्त करावेत व प्रांतिक कायदेमंडळात प्रत्येक जातीचे प्रतिनिधी असले पाहिजेत असा विचार या अग्रलेखातून त्यांनी मांडलेला आहे. पुढे विविध विचार या अंतर्गत अपराध कोणता, मूळ शोधा वाद मिटेल म्हणजेच हा देश जातीभेदाने व धर्म विधाने कशा पद्धतीने ग्रस्त झाला

आहे. याबद्दल प्रत्येकाने विचार विनिमय करावा असे मार्मिक विवेचन या मधून केलेले दिसते. १० एप्रिल १९२० च्या अंकात राष्ट्रातील विविध पक्ष या अग्रलेखामधून देशाचा राज्यकारभार व तेथील राज्यपद्धती यांचा समर्पक शब्दात अन्वयार्थ त्यांनी मांडलेला आहे. म्हणजेच एका देशाचा राज्यकारभार दुसऱ्या देशातील लोक चालवत असतील तर त्या स्थितीला राज्य असे नाव देता येणार नाही. याचेही विवेचन त्यांनी सविस्तरपणे मांडलेले आहे.

दक्षिण महाराष्ट्रातील बहिष्कृत वर्गाची परिषद माणगाव, संस्थान कागल येथे दि. २१ व २२ मार्च १९२० रोजी पार पडली. या सभेत जमलेला समुदाय पाच हजारांपेक्षाही जास्त होता. या सभेत दादासाहेब राजेसाहेब इनामदार यांच्यानंतर परिषदेचे अध्यक्ष डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी अध्यक्ष भाषणामध्ये परिषदेचे महत्त्व मुंबई इलाख्यातील परिषदेचा पहिला प्रसंग यांचे विवेचन करून बहिष्कृत वर्गाची सद्यस्थिती त्यांनी मांडलेली आहे. या परिषदेत सर्व मागासलेल्या जातींचा परामर्श त्यांनी घेतला. त्यांच्या दुसऱ्या दिवशी राजश्री शाहू महाराजांनी अस्पृश्य लोकांची हजेरी माफ करण्याची कोल्हापूर संस्थानात पद्धत बंद झाल्याचे राजश्री शाहू महाराजांनी सांगितले. प्रत्यक्ष बलुतेदार वर्गाची स्थिती, समाजातील सुधारित वतनदार यांनी गुलामगिरी ची कामे बलुतेदार वर्गावर लावू नयेत अशा सूचना त्यांनी या परिषदेमध्ये केल्या. त्यानंतर या परिषदेतच विविध महत्त्वाचे ठरावही पास झाले. बहिष्कृत लोक हे हिंदी समाजाचे घटक आहेत व इतर हिंदी लोकांप्रमाणे त्यांना सार्वजनिक सोयींचा उपभोग घेण्याचा हक्क आहे. गुण सिद्ध व्यापार करण्याचा व नोकरी मिळवण्याचा हक्क, प्राथमिक शिक्षणाचा हक्क, तसेच शिक्षक डेपोटी असिस्टंट, डेपोटी एज्युकेशनल इंस्पेक्टर अशा विविध पदावर अस्पृश्य समाजातील लोकांची नियुक्ती केली जावी. तलाठ्यांच्या जाग्यावर बहिष्कृत वर्गाच्या नेमणुका होत जाव्यात भावी कायदे - कौन्सिल मध्ये बहिष्कृत त्यांचे प्रतिनिधी त्यांच्या लोकसंख्या व गरजेच्या प्रमाणात स्वतंत्र मतदार संघातून निवडून यावेत. अशा वेगवेगळ्या मागण्या या परिषदेतून केल्या गेल्या त्यामुळे ही परिषद परिपूर्ण बनली असे विवेचन १० एप्रिल १९२० च्या मूकनायक अंकातून दिसून येते.

दिनांक ५ जून १९२० च्या मूकनायक अंकामध्येयामध्ये अखिल भारतीय बहिष्कृत समाज परिषद नागपूर या परिषदेचा अहवाल सविस्तर रीत्या वर्णन केलेला आहे ही परिषद दि. ३० व ३१ मे आणि एक जून १९२० रोजी छत्रपती शाहू



श त्यांनी दिलेले
 भावी पिढीच्या
 अशा वेगळ्या
 ज हितचिंतनाचे
 गची प्राण प्रतिष्ठे
 नीच्या हातातील
 जातील तरुणांना
 करून देतात.
 पत्रकारितेमध्ये
 माजाची स्थिती
 पूर्ण प्रयत्न या
 'मूकनायक',
 पत्रांची नावे
 समता, बंधुता
 हार आपल्या
 कशा पद्धतीने
 अंकामधून
 तारक आहेत
 हानिशा डॉ.
 वृत्तपत्रातून
 मध्ये काय
 श देतात.
 केलेल्या
 बोलक्या
 त्यांच्यात
 मी दि. ३१
 क्षक सुरू
 साहाय्य
 केलेल्या
 श्यांच्या
 नायक'
 राजकीय
 २०२२

नेतृत्वाच्या अगदी प्रारंभ काळातील एक उपक्रम म्हणूनही या पत्राला महत्त्व आहे. अस्पृश्यांच्या चळवळीला त्यांच्यासारख्या त्यांचे नेतृत्व लाभल्याने चळवळीला जे नवे वळण मिळाले व त्यातून जो इतिहास घडला त्यातले हे पहिले पाऊल होते. पत्राचे 'मूकनायक' नावही विशेष बोलके होते. हिंदुधर्मातील सनातनी आचार-विचारांनी व रूढिबंधनांनी त्रस्त झालेल्या आपल्या हतबल समाजाला वाचा असूनही आपले दुःख, यातना व मानहानी बोलून दाखविता येत नाही. मुक्या बनलेल्या आपल्या बांधवांना बोलते होऊन आपली सुखदुःखे धैर्याने वेशीवर टांगता यावीत म्हणून हे पत्र 'मूकनायक' नाव घेऊन जन्मास आले होते. केवळ सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रात चळवळ करून भागणार नाही. राजकीय क्षेत्रातही उतरून प्रस्थापितांना टक्कर दिली नाही, तर काहीच साधणार नाही अशी नवी जाणीव घेऊन ते राजकारणाकडे ओढले गेले. परिस्थितीने त्यांना राजकारणाच्या प्रवाहात उडी घेण्यास भाग पाडले. त्या नवीन जाणीवेचे, नव्या परिस्थितीचे 'मूकनायक' हे पत्र प्रतीक होते. हिंदुस्थानच्या राजकारणात बहुजन समाजाच्या पाठोपाठ अस्पृश्य वर्गाचीही उपेक्षा करून चालणार नाही, त्या वर्गात नवी जागृती येत आहे, तिची दखल सर्वांनी घेणे आवश्यक होते. मूकनायक' पत्र' मूक 'जनांचे प्रतिनिधित्व करित होते.

संदर्भ :

१. जाधव वसंत किशनराव, महाराष्ट्रातील परिवर्तनाचा इतिहास १८१८ ते १९६० विद्या प्रकाशन नागपूर, प्रथमावृत्ती २००५.

२. नरके हरी, कासारे म.ल., कांबळे एन. जी. संपादक, डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता १९२० ते १९२८.
 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र साधने, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन समिती मुंबई, प्रथम आवृत्ती २००५, पृष्ठ क्रमांक ३४५.
३. बहिष्कृत भारत मधील अग्रलेख, ०३ एप्रिल १९२७ चा अग्रलेख, पृष्ठ क्रमांक ०४.
४. नरके हरी, कासारे म.ल., कांबळे एन. जी. संपादक, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता १९२० ते १९२८.
 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र साधने, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन समिती मुंबई, प्रथम आवृत्ती २००५, अंक 'मूक नायक', पृष्ठ क्रमांक ३५६.
५. अंक १५ - मूकनायक पृष्ठ क्रमांक ३८०.(८)
६. अंक १७.- मूकनायक पृष्ठ क्रमांक. ४३०(८)
६. अंक १७.- मूकनायक पृष्ठ क्रमांक. ४३४(४)
७. ले. ले रा.के. मराठी वृत्तपत्रांचा इतिहास, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन पुणे, प्रथम आवृत्ती १९८४, पृष्ठ क्रमांक ५८३.
८. डॉ. सिंगारे अनिल व घुले, महाराष्ट्रातील आंबेडकरी चळवळीचा इतिहास, विठ्ठल अरुण प्रकाशन लातूर, प्रथमावृत्ती नोव्हेंबर २००९.

